मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

6 तफ़सीर इब्ने कसीर

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द 6

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिरान-ناشران

شعبہ نشر واشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

بِسْــــــمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़्सीर
इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द
6

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिर-ناشر

شعبہ نشرو اشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

सर्वाधिकार हकाशनाधीन सुरक्षित हज
इस किताब के हकाशन सबैंधी सर्वाधिकार हकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई यख्रि/सैं–था/हकाशन आदि इस किताब को मु ित/हकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उ लैंघन करने वालों के ख़िलाफ़ कठोर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके सम–त हर्ज द्रख़र्च के वे –वयैं उलरदायी होंगे। सभी विवादों का यायक्षग जोधपुर (राज–थान) होगा।

नाम किताब: **तफ़सीर इब्ने कसीर**

मुरलिब (अरबी): **एमामुद्दीन इब्ने कसीर (रह.)**

उर्दू तर्जुमा: **माजाना मुहम्मद जुनागढ़ी (रह.)**

हि दी तर्जुमा: **दा तद्रतर्जुमा, शोबा न रो इशाअत**
जमीअत अहले हदीस, जोधपुर (राज.)

त–हीह व नज़रे सानी: **माजाना जमशेद आलम स फ़ी, 97857-69878**

लेज़र टाइपसेटिंग़ृ **मोहम्मद अकबर, 85030-26306**

मेनेजिंग डायरेप्टरृ **अली हम्ना, 82338-55857**

ह्रिटिंग: **अनमोल ह्रिटर्स, बासनी इण्ड–टील एरिया,**
9414131426 जोधपुर (राज.)

बाईंडिंगृ **मो. शाहिद, कमाल बाईंडिंग हाउस,**
9351668223 जोधपुर (राज.)

तादाद पेज: 536

हकाशन (हथम सैं–करण) रबीउल आख़िर 1439 हिजरी (दिसम्बर 2017 इ–वी)

ता'दाद: 1100 कौपी क़ीमत: 500 रुपये

प्रकाशक

शहरी जमीअत अहले हदीस, जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस, राजस्थान

अधिकृत विक्रेता

अलकिताब इ टरनेशनल जामिया नगर, नई दि ली	011-26986973
मकतबा तर्जुमान 4116 उर्दू बाजार, नई दि ली	011-23273407
अल हीरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू मार्केट, मटिया महल,जामा म–जिद, दि ली	09015382970
माबूदी पब्लिकेशन दरियागँज, नई दि ली	09582340921
मा ाना शकील मेरठी, **दा ल कुतुब इ–लामिया,** मटिया महल,दि ली	09910889357
मकतबा अ–सु नह मुम्बई	08097444448
दा ल इ म नागपाृडा, मुम्बई	022-23088989 022-23082231
उमरी बुक डिपो, मुम्बई	09819961879
मकतबा अलफहीम मऊनाथ, भँजन, यू.पी.	0547-2222013
मा ाना खुर्शीद मुहम्मदी मिर्जापुर, यू.पी.	09919737053
शख़ सुहल स फ़ी, मकतबा सलफ़िया वाराणासी	09451915874
ता ीद किताब से टर, सीकर, राज–थान	08003972503
अल का र टेडर्स	09414920119
आई.आई.सी, कच्छ नूरानी होटल के पास, डाय्डा बाजार, भुज, कच्छ (गुजरात)	09429017111
कलीम बुक डिपो सीकर, राज–थान	07014898515

फेहरिस्ते-मज़ामीन

तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द : 6

तफ्सीर सूरह फ़ुरक़ान	13
अल्लाह तआला की ज़ाते अक्दस बाबरकत है (आ. 1, 2)	15
बेइख़्तियार, मअबूद कैसे? (आयत 3)	17
रसूलुल्लाह (ﷺ) की सदाक़त का बयान (आ. 4 से 6)	18
मक़ामाते नबुव्वत और जाहिलाना ऐतिराज़ात (आ. 7 स 14)	20
जन्नत और अहले जन्नत (आ. 15, 16)	22
मुश्रिक और उनके मअबूद अल्लाह तआला की अदालत में (आ. 17 से 19)	24
यह सब कुछ नबुव्वत के मनाफ़ी नहीं (आ. 20)	25
कुफ्फ़ार का एक अजीब मुतालबा (माँग) (आ. 21 से 24)	26
अक़ीद-ए-तौहीद के बग़ैर तमाम नेक आमाल बेफ़ायदा हैं	28
क़ियामत की होलनाकियाँ और ज़ालिम आदमी का अंजाम (आ. 25 से 29)	30
कुरआने करीम को पसे पुश्त डालने वालों के ख़िलाफ़ नबी (ﷺ) की शिकायत(आ. 30, 31)	32
काफ़िरों का ऐतिराज़ और क़ुरआन मजीद को थोड़ा थोड़ा नाज़िल करने की हिक्मत (आ. 32 से 40)	34
अम्बिया (عليهم السلام) की दुश्मन क़ौमें तबाह व बर्बाद हुईं	35
नाआक़िबत अंदेश का नबी (ﷺ) से इस्तिहज़ा (आ. 41 से 47)	38
अल्लाह तआला की क़ुदरत के दलाइल	38
बारिश अल्लाह तआला का बहुत बड़ा इन्आम है (आ. 48 से 50)	39
कुदरते इलाही की एक और अजीब निशानी (आ. 51 से 54)	41
अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए (आ. 55 से 60)	43
आफ़ताब व महताब और दिन रात अल्लाह तआला की क़ुदरत के दलाइल (आ. 61, 62)	45
अल्लाह के बन्दों के औसाफ़ (ख़ूबियाँ) (आ. 63 से 67)	47
चंद बड़े बड़े गुनाह (आ. 68 से 71)	50
नेक लोगों की मज़ीद चंद निशानियाँ (आ.72 से 74)	52
यह पाकबाज़ गिरोह जन्नती है(आ. 75 से 77)	57
तफ्सीर सूरह शोअरा	58
रसूल (ﷺ) को झुठलाने वालों से इंतिक़ाम लिया जाएगा (आ. 1 से 9)	60
हज़रत मूसा (عليه السلام) और फ़िरओन का क़िस्सा (आ. 10 से 22)	63
शाने रब्बुल आलमीन बज़ुबाने मूसा (عليه السلام) (आ. 23 से 28)	64
यदे बैज़ाअ (सफ़ेद रोशन हाथ) मूसा (عليه السلام) का अज़ीम मोजिज़ा (आ. 29 से 37)	66
मूसा (عليه السلام) और जादूगरों के बीच मुक़ाबला (आ. 38 से 48)	68
हक़ ग़ालिब और बातिल मग्लूब हो गया (आ. 49 से 59)	70
फ़िरओन के चंगुल से बनी इस्राईल की आज़ादी	70
फ़िरओन और उसकी क़ौम का इबरतनाक अंजाम (आ. 60 से 68)	75
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की दावते तौहीद (आ. 69 से 77)	75
अल्लाह कौन है? (78 से 82)	76
इब्राहीम (عليه السلام) की प्यारी दुआएँ (आ. 83 से 89)	77
नेकी और बुराई का बदला (आ. 90 से 104)	79

नूह (अलैहि.) की ज़बरदस्त दअवते तौहीद (आ. 105 से 110)	80
क़ौम का सफ़ीहाना (बेवकुफी भरा) जवाब (आ. 111 से 122)	82
नूह (अलैहि.) की अपनी क़ौम को बद्दुआ	82
हज़रत हूद (अलैहि.) का अपनी क़ौम को वअज़ (आ. 123 से 135)	83
क़ौमे हूद ने नसीहत हासिल न की और तबाह हो गए (आ. 136 से 140)	85
हज़रत सालेह (4) का क़ौम से ख़िताब (आ. 141 से 152)	86
दुनिया की नापायदारी	87
सालेह (अलैहि.) का मोजिज़ा और क़ौम की हठधर्मी (आ. 153 से 159)	88
क़ौमे लूत भी अपने नबी की नाफ़र्मान थी (आ. 160 से 164)	89
क़ौमे लूत की बदख़स्लती (आ. 165 से 180)	90
शुऐब (अलैहि.) का अपनी क़ौम से वअज़ (नसीहत)	91
नाप तोल में कमी की मुमानिअत (आ. 181 से 184)	92
क़ौमे शुऐब को भी जड़ से मिटा दिया गया (आ. 185 से 191)	93
हुज़ूर (सल्ल.) का दिल कुरआन का मस्कन (आ. 192 से 199)	95
कुरआन की हक्क़ानियत के ठोस सबूत	95
अज़ाब इत्मामे हुज्जत के बाद आता है (आ. 200 से 209)	97
कुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िलकर्दा है (आ. 210 से 212)	98
सफ़ा पहाड़ी पर नबी (सल्ल.) का ऐलाने तौहीद (आ. 213 से 220)	99
कुरआन किसी काहिन शायर या शैतान का कलाम हर्गिज़ नहीं है (आ. 221 से 227)	104
तफ्सीर सूरह नम्ल	**109**
मुत्तक़ी (परहेज़गार) और बुरे लोग(आ. 1 से 6)	111
मूसा (अलैहि.) को नबुव्वत अता होती है (आ. 7 से 14)	113
हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान (अलैहि.) पर अल्लाह तआला के एहसानात (आ. 15 से 19)	116
सुलेमान (अलैहि.)के वाक़ियात (आ. 20, 21)	118
हुदहुद का मलिक-ए-सबा के बारे में ख़बर देना (आ. 22 से 26)	120
सुलेमान (अलैहि.)का मलिका सबा के नाम पैग़ाम (आ. 27 से 31)	122
बिलक़ीस का दरबारियों से मश्वरा करना (आ. 32 से 35)	123
सुलेमान (अलैहि.) का तोहफ़ा क़बूल करने से इंकार (आ. 36, 37)	124
कुदरते इलाही और तख़्ते बिलक़ीस (आ. 38 से 40)	126
बिल्क़ीस का सुलेमान (अलैहि.)की ख़िदमत में हाज़िर होकर ईमान लाना (आ. 41 से 44)	128
सालेह (अलैहि.)का क़िस्सा (आ. 45 से 47)	131
क़ौमे समूद का गुनाह और अल्लाह ज़ुल जलाल की पकड़ (आ. 48 से 53)	133
लूत (अलैहि.)का अपनी क़ौम को नसीहत (आ. 54 से 59)	135
सलामती सिर्फ़ अल्लाह के बन्दों के लिए	136
ख़ालिक़े हक़ीक़ी अल्लाह तआला ही है (आ. 60)	136
ज़मीन, नहरें, पहाड़ और समुन्द्र अल्लाह तआला ने ही पैदा किये (आ. 61, 62)	138
तारीकी में हिदायत और बारिश के लिए ठण्डी हवाएँ कौन चलाता है (आ. 63 से 66)	142
दोबारा पैदा होने पर एक ख़ूबसूरत मिसाल	143
इल्मे ग़ैब अल्लाह तआला का ख़ास्सा है	143
क़ियामत के मुंकिर दर्दनाक अंजाम से दोचार हुए (आ. 67 से 75)	145
जल्दी क्यूँ मचाते हो क़ियामत क़रीब है	146
हक़ व बातिल का फ़ैसलकुरआन है (आ. 76 से 81)	147
क़ियामत की निशानियाँ (आ. 82)	148
यह हश्र का मैदान है (आ. 83 से 86)	150
क़ियामत की कुछ और निशानियाँ (आ. 87 से 90)	152

कअबा की इज़्ज़त व हुर्मत (आ. 91 से 93)	154
तफ़्सीर सूरह क़सस	156
फ़िरओन के बनी इस्राईल पर मज़ालिम (आ. 1 से 6)	159
जिसको अल्लाह बचाना चाहे उसे कोई नहीं मार सकता (आ. 7 से 9)	160
मूसा (ﷺ) की परवरिश फ़िरओन के घर में (आ. 10 से 13)	163
मूसा (ﷺ) के हाथों क़िब्ती का क़त्ल (आ. 14 से 19)	166
क़त्ल का राज़ फ़ाश हो गया	167
एक ख़ैरख़्वाह का तज़्किरा (आ. 20 से 24)	168
मदयन का मुश्किल भरा सफ़र	168
शैख़े कबीर (हज़रत शुऐब ﷺ) और निकाहे मूसा (ﷺ) (आ. 25 से 28)	170
मूसा(ﷺ) का बीवी के साथ सफ़र और इन्आमे नबुव्वत (आ. 29 से 32)	174
मूसा (ﷺ) की बिअसत और अपने भाई के लिए मक़ामे नबुव्वत की दुआ (आ. 33 से 35)	177
अल्लाह तआला की वहदानियत पर क़ौम का ताज्जुब (आ. 36 से 42)	179
फ़िरओन की हद से ज़्यादा सरकशी	179
आसमानी किताब तौरात की ख़ुसूसियात (आ. 43 से 47)	181
मूसा (ﷺ) के वाक़ियात की ख़बर नबी अकरम (ﷺ) की नबुव्वत की दलील है	182
कुफ़्फ़ार के एक सवाल का जवाब (आ. 48 से 51)	184
अहले किताब को नेक आमाल पर दोहरा अज्र (आ. 52 से 55)	187
हिदायत नबी (ﷺ) के इख़्तियार में नहीं बल्कि अल्लाह तआला के इख़्तियार में है (आ. 56, 57)	189
सरकशों की बस्तियाँ निशाने इबरत बन गईं (आ. 58, 59)	191
दुनिया फ़ानी जबकि आख़िरत बाक़ी रहने वाली है (आ. 60, 61)	192
मुश्रिकीन और उनके मअबूदाने बातिला अल्लाह तआला के सामने (आ. 62 से 67)	194
मुख़्तारे कुल अल्लाह की ज़ात है (आ. 68 से 73)	196
अल्लाह तआला की क़ुदरत के नाक़ाबिले तर्दीद दलाइल	197
क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के शरीक नज़र न आएँगे (आ. 74, 75)	197
क़ारून कौन और क्या था? (आ. 76, 77)	198
क़ारून का मुतकब्बिराना जवाब (आ. 78)	199
ऐश का सामान और क़ारून (आ. 79 से 82)	201
तकब्बुर की सज़ा यही है	202
परहेज़गारों पर इन्आमात का तज़्किरा (आ. 83 से 88)	205
महशर के दिन अम्बिया (ﷺ) का सवाल और लोगों की हालत	205
तफ़्सीर सूरह अन्कबूत	208
मोमिनों का अभी तो इम्तिहान होगा (आ. 1 से 4)	210
नेक काम करना भी जिहाद है (आ. 5 से 9)	211
माँ बाप की मशरूत इताअत वाजिब है	212
अहले ईमान की आज़माइश और मुनाफ़िक़ (आ. 10, 11)	213
आमाल ही काम आएँगे (आ. 12, 13)	214
नूह (ﷺ) का लम्बी मुद्दत वअज़ करना (आ. 14, 15)	215
इमामुल मुवह्हिदीन हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की दावते तौहीद (आ. 16 से 18)	217
अदम से वुजूद बख़्शने वाला ही इबादत के लायक़ है (आ. 19 से 23)	219
आतिशे नमरूद और इब्राहीम (ﷺ) (आ. 24, 25)	220
हज़रत इब्राहीम (ﷺ) और हज़रत लूत (ﷺ) (आ. 26, 27)	222
क़ौमे लूत की मशहूर बदख़स्लती (आ. 28 से 30)	224

क़ौमे लूत की तबाही व बर्बादी (आ. 31 से 35)	225
मदयन वालों का हाल (आ. 36, 37)	227
आदी और समूदी भी फ़ना के घाट में (आ. 38 से 40)	228
शिर्क की हक़ीक़त पर एक उम्दा मिसाल (आ. 41 से 43)	229
खालिक़े हक़ीक़ी का ज़िक्र (आ. 44)	230
नमाज़ बेहयाई से रोकती है (आ. 45)	230
अहले किताब से मुनाज़िरे के उसूल (आ. 46)	232
क्या आप (ﷺ) लिखना पढ़ना जानते थे (आ. 47 से 49)	234
क्या कुरआन का मोजिज़ा काफ़ी नहींहै? (आ. 50 से 52)	237
मुश्रिकीन की हठधर्मी और अज़ाब का मुतालबा (आ. 53 से 55)	239
मौत क़रीब है, आख़िरत की तैयारी करो (आ. 56 से 60)	240
रिज़्क़ की फ़राख़ी और तंगी अल्लाह के इख़्तियार में है (आ. 61 से 63)	243
मुश्रिकीन बवक़्ते मुसीबत अल्लाह तआला को पुकारते थे (आ. 64 से 66)	244
मेरी नेअमत याद करो और मेरे नबी पर ईमान लाओ (आ. 67 से 69)	245
तफ्सीर सूरह रूम	247
रूमियों के ग़ालिब होने की अज़ीम पेशीनगोई (आ. 1 से 7)	249
अल्लाह की निशानियों में ग़ौरो फ़िक्र करो (आ. 8 से 10)	258
क़ियामत के दिन आमाल के मुताबिक़ फ़ैसले होंगे (आ. 11 से 19)	259
अल्लाह तआला की कुदरत की निशानियाँ	260
इंसानी जिस्म की पैदाइश तौहीदे बारी तआला की दलील है (आ. 20, 21)	261
ज़ुबानों और रंगतों का अलग अलग होना कुदरते इलाही का मज़्हर है (आ. 22, 23)	262
आमसानी बिजली अल्लाह तआला की अज़्मत की दलील है (आ. 24 से 27)	264
दूसरी बार की पैदाइश तो अल्लाह तआला पर बहुत आसान है	265
अल्लाह तआला शिर्क बर्दाश्त नहीं करता (आ. 28, 29)	266
फ़ित्रत से क्या मुराद है (आ. 30 से 32)	267
इंसान की अजीब हालत का तज़्किरा (आ. 33 से 40)	271
क़राबतदारों से सिलारहमी और हुस्ने सुलूक का हुक्म	272
गुनाहों का अंजाम (आ. 41, 42)	274
क़ियामत अल्लाह तआला के एक हुक्म से आ जाएगी (आ. 43 से 47)	275
बारिश अल्लाह की कुदरत की निशानी और नेअमत है	276
ठण्डी ठण्डी हवाएँ और बारिश अल्लाह तआला का इन्आम (आ. 48 से 51)	277
क्या मुर्दे भी सुनते हैं? (आ. 52, 53)	278
इंसान की असल क्या है? (आ. 54 से 57)	279
मुजरिम की दुनिया और आख़िरत में झूठी क़समें	280
नबी (ﷺ) को सब्र की तल्क़ीन (आ. 58 से 60)	281
तफ्सीर सूरह लुक्मान	282
कुरआन मजीद हिदायत, रहमत और शिफ़ा है (आ. 1 से 7)	284
गाने, म्यूज़िक, मूसीक़ी कुफ्फ़ार का शेवा है	285
मुहसिन और मुनइमे हक़ीक़ी (वास्तविक अता करने वाला) अल्लाह ही है (आ. 8, 9)	286
ज़मीनो आसमान का ख़ालिक़ अल्लाह है (आ. 10, 11)	287
क्या हज़रत लुक्मान (عليه السلام) नबी थे (आ. 12)	287
हज़रत लुक्मान (عليه السلام) की अपने बेटे को नसीहत (आ. 13 से 15)	290
मज़ीद ईमान अफ़रोज़ नसीहत (आ. 16 से 19)	293

❀ हज़रत लुक्मान (ؑ) के अक्वाले ज़र्री (बेशकीमती बात)	295
❀ तवाज़ोअ और फ़रोतनी का बयान	295
❀ अच्छे अख़्लाक़ का बयान	298
❀ तकब्बुर की मज़म्मत का बयान	300
❀ फ़ख़्र व घमण्ड की मज़म्मत का बयान	300
❀ अल्लाह तआला का अपनी नेअमतों का इज़्हार (आ. 20 से 24)	302
❀ अल्लाह तआला फ़र्मांबरदार बन्दे की हिफ़ाज़त करता है	302
❀ जब ख़ालिक़ अल्लाह तआला है तो मअबूद क्यूँ नहीं(आ. 25, 26)	303
❀ क़लम और क़िरतास अल्लाह तआला की ता'रीफ से आजिज़ हैं (आ. 27, 28)	304
❀ दिन, रात और मौसमी तग़य्युरात (चेलेन्ज) अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला की निशानी (आ. 29, 30)	305
❀ तलातुमखेज़ समुन्द्र और कश्तियाँ (आ. 31, 32)	306
❀ क़ियामत के दिन नफ्सा नफ्सी का आलम होगा (आ. 33, 34)	308
❀ ग़ैब के ख़ज़ानों की कुँजियाँ अल्लाह तआला के पास हैं	308
❀ **तफ्सीर सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा**	311
❀ सूरह सज्दा की फ़ज़ीलत	313
❀ क़ुरआन हकीम अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िलशुदा है (आ. 1 से 6)	314
❀ ज़मीन व आसमान की तख़्लीक़ का तज़्किरा	314
❀ उसकी हर तख़्लीक़ शाहकार है (आ. 7 से 11)	315
❀ मौत के फ़रिश्ते से मुलाक़ात	316
❀ क़ियामत के दिन गुनहगारों की हालत ज़ार (आ. 12 से 14)	317
❀ रज़ा-ए-इलाही की तलाश का हुक्म (आ. 15 से 17)	319
❀ मोमिन और फ़ासिक़ बराबर नहीं (आ. 18 से 22)	323
❀ मेअराज की रात आप (ﷺ) की मूसा (ؑ) से मुलाक़ात (आ. 23 से 25)	324
❀ रसूलों की मुख़ालिफ़त का अंजाम (आ. 26, 27)	326
❀ यह नदी नाले आबशार और समुन्द्र क़ुदरते इलाही की निशानी	326
❀ काफ़िरों को हुक्म कि क़ियामत का इंतिज़ार करो (आ. 28 से 30)	328
❀ **तफ्सीर सूरह अहज़ाब**	329
❀ अल्लाह तआला पर तवक्कल रखो (आ. 1 से 3)	331
❀ गोद लिए लड़के हक़ीक़ी बेटे नहीं हो सकते (आ. 4, 5)	333
❀ रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपनी उम्मत पर मेहरबान होना (आ. 6)	336
❀ ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों और दीगर नबियों से अहद (आ. 7, 8)	339
❀ जंगे ख़ंदक़ में अल्लाह की मदद का नुज़ूल (आ. 9, 10)	340
❀ मुनाफ़िक़ों का मैदाने जंग से फ़रार (आ. 11 से 13)	346
❀ जिहाद से फ़रार होने की साज़िश (आ. 14 से 17)	347
❀ जिहाद से फ़रार हक़ीक़त में ईमान से फ़रार होना है (आ. 18, 19)	348
❀ निफ़ाक़ बुज़दिली है (आ. 20 से 22)	350
❀ मोमिनों और काफ़िरों में फ़र्क़ (आ. 23, 24)	351
❀ जंगे अहज़ाब में अल्लाह की मदद का नुज़ूल (आ. 25)	353
❀ बनू क़ुरैज़ा का मुहासिरा (घेराव) (आ. 26, 27)	355
❀ उम्महातुल मोमिनीन (रज़ि.) के फ़ज़ाइल (आ. 28, 29)	360
❀ उम्महातुल मोमिनीन आम औरतों की तरह नहीं हैं (आ. 30)	362
❀ फ़र्मांबरदारों के लिए दोहरा अज्र है (आ. 31 से 34)	364
❀ नबी (ﷺ) की बीवियों के लिए आदाब	364
❀ अहले बैत की फ़ज़ीलत	366
❀ अहले बैत से कौन लोग मुराद हैं?	368
❀ मोमिनों की अलामात और फ़ज़ाइल (आ. 35)	371
❀ पैग़म्बर (ﷺ) के हुक्म के आगे किसी को कुछ इख़्तियार नहीं (आ. 36)	374

हज़रत ज़ेद (रज़ि.) का वाक़िया (आ. 37)	376
अहकामे इलाही ही नाफ़िज़ होने वाले हैं (आ. 38 से 40)	379
औलिया अल्लाह की सिफ़तें	379
आंहजरत (ﷺ) की औलाद	380
हुज़ूर (ﷺ) आख़िरी नबी हैं	380
हुज़ूर (ﷺ) के चंद नाम	381
आप (ﷺ) के बाद जो नबुव्वत का दावा करे वह झूठा है	382
ज़िक्रे इलाही के फ़ज़ाइल व मसाइल (आ. 41 से 44)	383
सलात के मअनी	385
नबी (ﷺ) की सिफ़ाते आलिया (आ. 45 से 48)	386
अगर जिमाअ से पहले तलाक़ दे तो कैसा है? (आ. 49)	388
पैग़म्बर (ﷺ) को कसरते अज़्वाज की इजाज़त (आ. 50)	390
पैग़म्बर (ﷺ) को बीवियोंको रखने या न रखने में इख़्तियार (आ. 51)	394
अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए इन्आमे रब्बानी (आ. 52)	395
पर्दे का हुक्म और पैग़म्बर (ﷺ) के घर का एहतिराम (आ. 53, 54)	398
जिनसे पर्दा न करने की इजाज़त है (आ. 55, 56)	402
आयते दुरूद और सलात के मआनी	403
दुरूद के अल्फ़ाज़	403
सलाम के अल्फ़ाज़	404
अल्लाह तआला, रसूल (ﷺ) और मोमिनों को ईज़ा देना गुनाह है (आ. 57, 58)	415
मोमिन औरतों को पर्दे का हुक्म (आ. 59, 62)	417
क़ियामत क़ायम होने का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है (आ. 63 से 68)	418
हज़रत मूसा (عليه السلام) का एक अजीब वाक़िया (आ. 69)	420
मोमिन को सीधी बात करनी चाहिए (आ. 70 से 73)	422
अल्लाह तआला की अमानत से क्या मुराद है	422
तफ्सीर सूरह सबा	**426**
तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं (आ. 1, 2)	428
क़ियामत बरहक़ है (आ. 3 से 6)	429
मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना हक़ है	430
दोबारा जी उठने पर कुफ्फ़ार का मज़ाक़ (आ. 7 से 9)	431
हज़रत दाऊद (عليه السلام) की फ़ज़ीलत (आ. 10, 11)	432
हज़रत सुलेमान (عليه السلام) पर अल्लाह तआला के इन्आमात (आ. 12, 13)	434
हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की मौत का ज़िक्र (आ. 14)	436
क़ौमे सबा का तज़्किरा (आ. 15 से 17)	438
क़ौमे सबा पर इन्आमाते इलाही (आ. 18, 19)	441
शैतान का बहकावा (आ. 20, 21)	444
सब इख़्तियारात अल्लाह ही के पास हैं (आ. 22, 23)	445
कुछ सिफ़ाते इलाही का बयान (आ. 24 से 27)	448
पैग़म्बर (ﷺ) नज़ीर व बशीर हैं (आ. 28 से 30)	449
काफ़िरों की हठधर्मी व सरकशी (आ. 31 से 33)	451
रसूलुल्लाह (ﷺ) को तसल्लियाँ (आ. 34 से 39)	453
अल्लाह तआला फ़रिश्तों से सवाल करेगा (आ. 40 से 42)	456
कुरआन किताबे हक़ है (आ. 43 स 45)	457
पैग़म्बर (ﷺ) मज्नून नहीं हैं (आ. 46)	458
पैग़म्बर (ﷺ) मुहसिने इंसानियत हैं (आ. 47 से 50)	460
क़ियामत के दिन पशेमानी और ईमान का इक़रार नफ़ा न देगा (आ. 51 से 54)	461
तफ्सीर सूरह फ़ातिर	**465**
अल्लाह तआला की ता'रीफ़ (आ. 1, 2)	467
अल्लाह तआला हर चीज़ पर ग़ालिब है	468
अल्लाह की नेअमतों से अल्लाह की पहचान (आ. 3 से 6)	469
शैतान लोगों का वाज़ेह दुश्मन है	469

दुनिया की ज़िन्दगी आरज़ी है (आ. 7, 8)	471
अल्लाह तआला की क़ुदरतोंका बयान (आ. 9 से 11)	472
अल्लाह तआला की अजीब क़ुदरत का बयान (आ. 12)	475
दिन और रात की तख़्लीक़ क़ुदरते इलाही की निशानी है (आ. 13, 14)	476
अल्लाह तआला सबको फ़ना करने पर क़ादिर है (आ. 15 से 18)	478
ज़िन्दा और मुर्दा बराबर नहीं (आ. 19 से 26)	479
मुख़्तलिफ़ रंग भी अल्लाह तआला की क़ुदरत है (आ. 27, 28)	480
मोमिनों की सिफ़ात (आ. 29 से 32)	482
क़ुरआन अल्लाह का सच्चा कलाम है	483
क़ुरआन पर अमल करने वाले लोग	483
अहले जन्नत पर इन्आमात (आ. 33 से 35)	487
अहले जहन्नम की सज़ा (आ. 36, 37)	488
अल्लाह तआला दिलों के भेदों को जानता है (आ. 38 से 41)	491
कुफ़्फ़ार का हिदायत को क़बूल करने की क़समें खाना (आ. 42 से 43)	494
गुज़िश्ता क़ौमों के अंजाम से इबरत पकड़ो (आ. 44, 45)	495
तफ्सीर सूरह यासीन	**496**
सूरह यासीन की फ़ज़ीलत (आ. 1 से 7)	499
कुफ़्फ़ार की हटधर्मी का ज़िक्र और उनका बुरा अंजाम (आ. 8 से 12)	500
एक बस्ती वालों का वाक़िया (आ. 13 से 17)	504
अहले कुफ़्र रसूलों के बारे में बदशगूनी लेते रहे (आ. 18 से 21)	505
हज़रत हबीब का ज़िक्र	506
इबादत सिर्फ़ अल्लाह तआला का हक़ है (आ. 22 से 25)	507
मोमिन के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी (आ. 26 से 29)	508
अम्बिया-ए-किराम की बात न मानने वालों पर हसरत व अफ़सोस (आ. 30 से 36	512
वुजूदे बारी तआला की अज़ीम निशानी	512
एक और निशानी का ज़िक्र (आ. 37 से 40)	514
कश्ती और क़ुदरते इलाही (आ. 41 से 44)	517
कुफ़्फ़ार की हठधर्मी (आ. 45 से 47)	518
मुंकिरीने क़ियामत का मुतालबा (आ. 48 से 54)	519
दूसरा सूर फूँकने का वक़्त	520
अहले जन्नत पर इन्आमात (आ. 55 से 58)	521
क़ियामत के दिन नेक और बद में इम्तियाज़ (आ. 59 से 62)	523
मुजरिमों के मुँह बंद कर दिये जाएँगे (आ. 63 से 67)	524
जवानी और बुढ़ापा (आ. 68 से 70)	527
शायरी पैग़म्बर की शायाने शान नहीं	527
जानवरों की पैदाइश, अल्लाह का बंदों पर एहसान हैं (आ. 71 से 76)	531
पहली पैदाइश का सानेअ दोबारा ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है (आ. 77 से 80)	532
क़ुदरते इलाही के मुशाहिदा की दलील	534
आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ मर्द व ज़न को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है (आ. 81 से 83)	535

सूरह फ़ुरक़ान

سورة الفرقان

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह फ़ुरकान- 25

आयातः 77 मक्की सूरह, पैराग्राफः 6

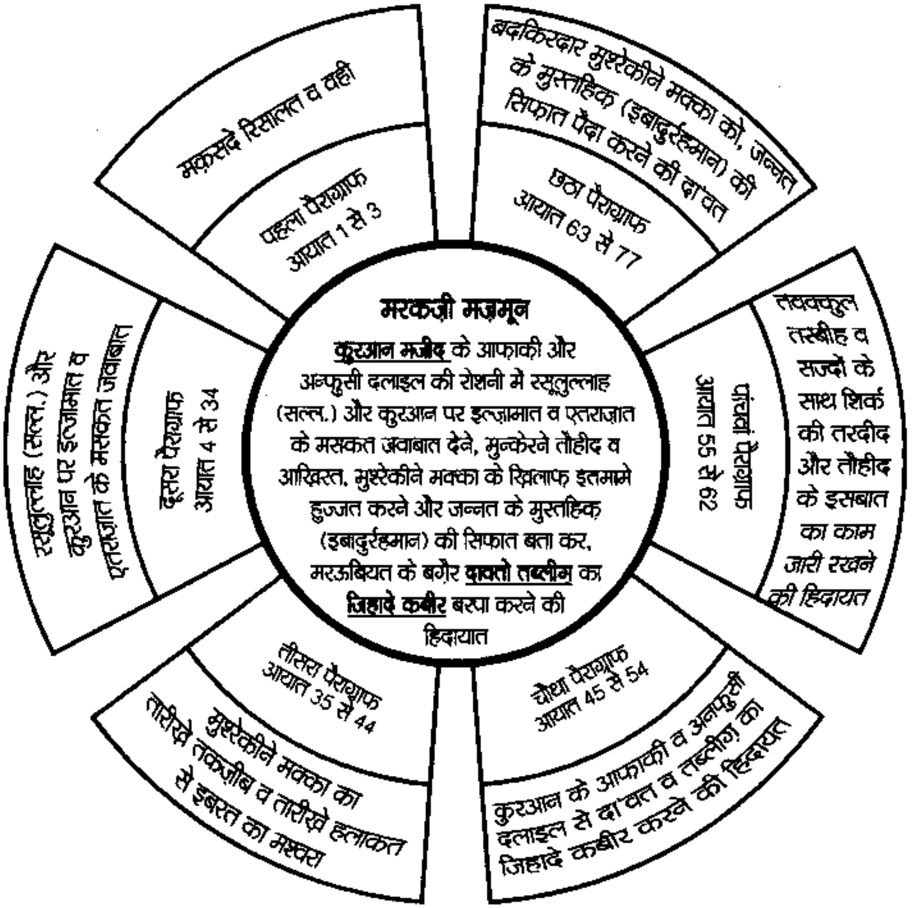

जमानए नुज़ूल :

सूरह (फुरकान) सूरह (अलमोमिनून) के साथ रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के तीसरे दौर (6 ता 10 नबवी) में हज़रत उमर के कबूले इस्लाम (जुलहिज्जा 6 नबवी) के बाद ग़ालिबन सात नबवी में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) पर (मसहूर) और (मुफ्तरी) होने का इल्ज़ाम था। चुनांचे इस सूरत में आप (सल्ल.) और कुरआन पर किए गए एतराज़ात का जवाब दिया गया। ये वही ज़माना था जब नौ मुस्लिम सहाबा (रजि.) की तरबियत मकसूद थी। इस सूरत में रसुलुल्लाह (सल्ल.) को सारी दुनिया के लिए नज़ीर (लिलआलमीन नज़ीरन) ठहराया गया। ये वही ज़माना है, जब सूरह अंबिया और सूरह मोमिनुन नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह फ़ुरक़ान

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

تَبٰرَكَ الَّذِیۡ نَزَّلَ الۡفُرۡقَانَ عَلٰى عَبۡدِهٖ لِيَكُوۡنَ لِلۡعٰلَمِيۡنَ نَذِيۡرًا ۙ ① الَّذِیۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَلَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ شَرِيۡكٌ فِى الۡمُلۡكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىۡءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقۡدِيۡرًا ②

तर्जुमा : "बहुत बाबरकत है वह अल्लाह जिसने अपने बन्दों पर क़ुरआन उतारा ताकि वह तमाम लोगों के लिए आगाह करने वाला बन जाए। (1) उसी अल्लाह की सल्तनत है आसमानों और ज़मीन की वह कोई औलाद नहीं रखता, न उसकी सल्तनत में कोई उसका साझी है, हर चीज़ को उसने पैदा करके एक मुनासिब अंदाज़े से ठहरा दिया है।" (2)

अल्लाह तआला की ज़ाते अक़्दस बाबरकत है (आ. 1, 2) : अल्लाह तआला अपनी रहमत का बयान करता है ताकि लोगों पर उसकी बुज़ुर्गी ज़ाहिर हो जाए कि उसने इस पाक कलाम को अपने बंदे हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल किया है। सूरह कहफ़ के शुरू में भी अपनी हम्द इसी वस्फ़ से बयान की है यहाँ अपनी ज़ात का बाबरकत होना बयान किया है और यही वस्फ़ बयान किया यहाँ लफ़्ज़ (नज़्ज़ल) फ़र्माया जिससे बार बार बकसरत उतरना साबित होता है। जैसे फ़र्मान है (وَ الۡكِتٰبِ الَّذِیۡ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ وَ الۡكِتٰبِ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ مِنۡ قَبۡلُ) (4/निसाअ : 136) पस पहली किताबों को लफ़्ज़ (अंज़ला) से और इस आख़िरी किताब को लफ़्ज़ (नज़्ज़ला) से बयान करना इसीलिए है कि पहली किताबें एक साथ उतरती रहीं और क़ुरआन करीम थोड़ा थोड़ा करके हस्बे ज़रूरत उतरता रहा। कभी कुछ आयतें कभी कुछ सूरतें कभी कुछ अहकाम। इसमें एक बड़ी हिक्मत यह भी थी कि लोगों को इस पर अमल मुश्किल न हो और ख़ूब याद हो जाए और मान लेने के लिए दिल खुल जाए जैसे कि इसी सूरत में फ़र्माया है कि काफ़िरों का एक ऐतिराज़ यह भी है कि क़ुरआने करीम इस नबी (ﷺ) पर एक साथ क्यूँ न उतरा? जवाब दिया गया है कि इस तरह इसलिए उतरा कि इसके साथ तेरी दिल बस्तगी रहे और हमने ठहरा ठहराकर नाज़िल किया यह जो भी बात बनाएँगे हम उसका सही और जचा तुला जवाब देंगे जो ख़ूब तफ़्सील वाला होगा। (25/फ़ुरक़ान : 32, 33) यही वजह है कि यहाँ इस आयत में इसका नाम फ़ुरक़ान रखा इसलिए कि यह हक़ और बातिल में हिदायत व गुमराही में फ़र्क़

करने वाला है इससे भलाई बुराई में हलाल व हराम में तमीज़ होती है, क़ुरआने करीम की यह पाक सिफ़त बयान करके जिस पर क़ुरआन उतरा उनकी एक पाक सिफ़त बयान की गई है कि वह ख़ास उसकी इबादत में लगे रहने वाले हैं उसके मुख़्लिस बन्दे हैं यह वस्फ़ सबसे आला वस्फ़ है इसीलिए बड़ी बड़ी नेअमतों के बयान के मौक़े पर हुज़ूर (ﷺ) का यही वस्फ़ बयान किया गया है जैसे मेअराज के मौक़े पर फ़र्माया (سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ/बनी इस्राईल : 1) (17) और जैसे अपनी ख़ास इबादत नमाज़ के मौक़े पर फ़र्माया (وَّ اَنَّہٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰہِ/जिन्न : 19) (72) और जब अल्लाह के बन्दे यानी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह की इबादत करने खड़े होते हैं, आख़िर तक। यही वस्फ़ क़ुरआने करीम के उतरने और आपके पास बुज़ुर्ग फ़रिश्ते के आने के इकराम के बयान के मौक़े पर बयान किया। फिर इर्शाद हुआ कि इस पाक किताब का आप (ﷺ) की तरफ़ उतरना इसलिए है कि आप (ﷺ) तमाम जहान के लिए आगाह करने वाले बन जाएँ ऐसी किताब जो सरासर हिक्मत व हिदायत वाली है जो मुफ़स्सल मुअज़्ज़म व मुबीन और मुहकम है जिसके आसपास भी बातिल फटक नहीं सकता जो हकीम व हमीद अल्लाह तआला की तरफ़ से उतारी हुई है। आप (ﷺ) उसकी तब्लीग़ दुनिया भर में कर दें। हर सुर्ख़ व सफ़ेद को हर दूर व नज़दीक वाले को अल्लाह के अज़ाबों से डरा दें। जो भी आसमान के नीचे और ज़मीन के ऊपर है उसकी तरफ़ आप (ﷺ) की रिसालत है जैसे कि ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "मैं तमाम सुर्ख़ व सफ़ेद इंसानों की तरफ़ भेजा गया हूँ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अल्मसाजिदु व मवाज़िउस्सलात : 521; अहमद : 4/416; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/258) और फ़र्मान है कि मुझे पाँच बातें ऐसी दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गईं थीं उनमें से एक यह है कि हर नबी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा लेकिन मैं तमाम दुनिया की तरफ़ भेजा गया हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तयम्मुम, बाब नम्बर 1; हदीस : 335; अहमद : 3/304; इब्ने हिब्बान : 6398) ख़ुद क़ुरआन कहता है (قُلْ یٰٓاَیُّھَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ اِلَیْکُمْ جَمِیْعًا/आराफ़ : 158) (7) ऐ नबी (ﷺ)! ऐलान कर दो कि ऐ दुनिया के लोगों! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का पैग़म्बर हूँ।" फिर फ़र्माया कि मुझे रसूल बनाकर भेजने वाला मुझ पर यह पाक किताब उतारने वाला वह अल्लाह है जो आसमान व ज़मीन का तंहा मालिक है जो जिस काम को करना चाहे उसे कह देता है कि हो जा वह उसी वक़्त हो जाता है, वही मारता और ज़िन्दा करता है, उसकी कोई औलाद नहीं न उसका कोई शरीक है हर चीज़ उसी की मख़्लूक़ और उसी के ज़ेरे परवरिश है सबका ख़ालिक़ मालिक, रज़्ज़ाक़, मअबूद रब वही है हर चीज़ का अंदाज़ा मुक़र्रर करने वाला और तदबीर करने वाला वही है।

***

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِہٖٓ اٰلِھَۃً لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّھُمْ یُخْلَقُوْنَ وَلَا یَمْلِکُوْنَ لِاَنْفُسِھِمْ ضَرًّا

وَّلَا نَفْعًا وَّلَا یَمْلِکُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَیٰوۃً وَّلَا نُشُوْرًا ③

तर्जुमा : ''इन लोगों ने अल्लाह के सिवा जिन्हें अपने मअ़बूद ठहरा रखे हैं वह किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह ख़ुद पैदा किये गए हैं। यह तो अपनी जान के नुक़्सान नफ़ा का भी इख़्तियार नहीं रखते, न मौत व हयात के और दोबारा जी उठने के वह मालिक हैं।'' (3)

बेइख़्तियार, मअ़बूद कैसे? (आयत 3) : मुश्रिकों की जिहालत बयान हो रही है कि वह ख़ालिक़ मालिक क़ादिर मुख़्तार बादशाह को छोड़कर उनकी इबादतें करते हैं जो एक मच्छर का पर भी नहीं बना सकते बल्कि वह ख़ुद अल्लाह तआ़ला के बनाये हुए और उसी के पैदा किये हुए हैं वह अपने आपको भी किसी नफ़ा नुक़्सान के पहुँचाने के मालिक नहीं तो फिर कैसे दूसरे का भला कर दें या दूसरे का नुक़्सान कर दें या दूसरी कोई बात कर सकें, वह अपनी मौत ज़ीस्त (ज़िन्दगी) का या दोबारा जी उठने का भी इख़्तियार नहीं रखते फिर अपनी इबादत करने वालों की उन चीज़ों के मालिक वह कैसे हो जाएँगे? बात यही है कि इन तमाम कामों का मालिक अल्लाह ही है वही जिलाता और मारता है वही अपनी तमाम मख़्लूक़ को क़ियामत के दिन नए सिरे से पैदा करेगा, उस पर यह काम मुश्किल नहीं एक का पैदा करना और सबको पैदा करना एक को मौत के बाद ज़िन्दा करना और सबको करना उस पर एक जैसा और बराबर है एक आँख झपकाने में उसका हुक्म पूरा हो जाता है सिर्फ़ एक आवाज़ के साथ तमाम मरी हुई मख़्लूक़ ज़िन्दा होकर उसके सामने एक चटयल मैदान में खड़ी हो जाएगी और आयत में फ़र्माया है सिर्फ़ एक बार की एक आवाज़ होगी कि सारी मख़्लूक़ हमारे सामने हाज़िर हो जाएगी। (36/यूनुस : 53) वही मअ़बूदे बरहक़ है उसके सिवा न कोई रब है न लायक़े इबादत है, उसका चाहा हुआ होता है बग़ैर उसके चाहे कुछ भी नहीं होता वह माँ बाप से लड़की लड़कों से अ़दील व बदील से वज़ीर व नज़ीर से शरीक व सहीम से पाक है, वह अहद व समद है वह लम यलिद वलम यूलद है, उसका कोई हमसर नहीं।

***

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ④ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ⑤ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑥

तर्जुमा : ''काफ़िर कहने लगे यह तो बस ख़ुद इसका गढ़ा गढ़ाया झूठ है जिस पर और लोगों ने भी इसकी हिम्मत अफ़ज़ाई की है दरअस्ल यह काफ़िर बड़े ही ज़ुल्म और सर तासिर झूठ के मुर्तकिब हुए हैं। (4) और यह भी कहते हैं यह तो अगलों के अफ़साने हैं जो इसने लिख रखे हैं बस वही सुबह शाम इसके सामने पढ़े जाते हैं। (5) जवाब दे कि इसे तो अल्लाह तआ़ला ने उतारा है जो आसमान व ज़मीन की तमाम पोशीदगियों को जानता है बेशक वह बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है।'' (6)

रसूलुल्लाह (ﷺ) की सदाक़त का बयान (आ. 4 से 6) : मुश्रिकीन की एक जिहालत ऊपर की आयतों में बयान हुई जो ज़ाते बारी की निस्बत थी यहाँ दूसरी जिहालत बयान हो रही है जो ज़ाते रसूल (ﷺ) की निस्बत है वह कहते हैं कि इस क़ुरआन को तो उसने औरों की मदद से ख़ुद ही झूठ मूट गढ़ लिया है। अल्लाह तआला फ़र्माता है यह है इनका ज़ुल्म और झूठ जिसके बातिल होने का ख़ुद इन्हें भी इल्म है। कहते हैं लेकिन ख़ुद अपनी मालूमात के भी ख़िलाफ़ कहते हैं कभी हाँक लगाने लगते हैं कि अगली किताबों के क़िस्से इसने लिखवा लिए हैं वही सुबह शाम इसकी मज्लिस में पढ़े जा रहे हैं यह झूठ भी वह है जिसमें किसी को कोई शक न हो सके, इसलिए कि सिर्फ़ अहले मक्का ही नहीं बल्कि दुनिया जानती है कि हमारे नबी उम्मी थे न लिखना जानते थे न पढ़ना चालीस साल की नबुव्वत से पहले की ज़िन्दगी आप (ﷺ) ने उन्हीं लोगों में गुज़ारी थी और वह इस तरह कि इतनी मुद्दत में एक वाक़िया भी आप (ﷺ) की ज़िन्दगी का एक लम्हा भी ऐसा न था जिस पर कोई उँगली उठा सके एक एक वस्फ़ आपका वह था जिस पर ज़माना शैदा था जिस पर अहले मक्का रश्क करते थे, आपकी आम मक़्बूलियत और महबूबियत बुलंद अख़्लाक़ी और ख़ुश मामलगी इतनी बढ़ी हुई थी कि हर हर दिल में आपके लिए जगह थी, आम ज़ुबानें आपको मुहम्मद अमीन के प्यारे ख़िताब से पुकारती थीं दुनिया आप (ﷺ) की क़दमों तले आँखें बिछाती थी कौनसा दिल था जो मुहम्मद (ﷺ) की बुज़ुर्गी सदाक़त अमानत नेकी और भलाई का क़ाइल न हो? फिर जबकि अल्लाह की बुलंदतरीन इज़्ज़त से आप (ﷺ) मुअज़्ज़ज़ किये गए आसमानी वह्यी के आप अमीन बनाए गए तो सिर्फ़ बाप दादों की रविश को पामाल होते हुए देखकर यह बेवक़ूफ़ बग़ैर पेंदे के लौटे की तरह लुढ़क गए, थाली के बेगन की तरह इधर उधर हो गए। लगे बातें बनाने और ऐबजूई करने लेकिन झूठ के पैर कहाँ? कभी आप (ﷺ) को शायर कहते, कभी साहिर (जादूगर), कभी मज्नून और कभी कज़्ज़ाब। हैरान थे कि क्या कहें? और किस तरह अपनी जाहिलाना रविश को बाक़ी रखें और अपने मअबूदाने बातिल के झण्डे ओंधे न होने दें? और किस तरह ज़ुल्मत कदा दुनिया को नूरे अल्लाह से न जगमगाने दें अब इन्हें जवाब मिलता है कि क़ुरआन की सच्ची मुताबिक़ वाक़ेअ और हक़ ख़बरें अल्लाह की दी हुई हैं जो आलिमुल ग़ैब है जिससे एक ज़र्रा पोशीदा नहीं जो गुज़िश्ता का बयान इसमें है हक़ है जो आइन्दा की ख़बर इस में है सच है अल्लाह के सामने हो चुकी हुई और होने वाली बात एक जैसी है वह ग़ैब को भी उसी तरह जानता है जिस तरह ज़ाहिर को।

इसके बाद अपनी शाने ग़फ़्फ़ारियत और शाने रहमो करम बयान किया ताकि बुरे लोग भी इससे मायूस न हों कुछ भी किया हो, अब भी उसकी तरफ़ झुक जाएँ तौबा करें, अपने किये पर पछताएँ नादिम हों और रब की रज़ा चाहें, रहमते रहीम के क़ुर्बान जाइए कि ऐसे सरकश व दुश्मने अल्लाह व रसूल ऐसे बोहतानबाज़, इस क़द्र ईज़ाएँ देने वाले लोगों को भी अपनी आम रहमत की दावत देता है औरअपने करम की तरफ़ उन्हें बुलाता है, वह अल्लाह को बुरा कहें, वह रसूल (ﷺ) को बुरा कहें, वह कलामुल्लाह पर बातें बनाएँ और अल्लाह तआला उन्हें अपनी रहमत की तरफ़ रहनुमाई करे, अपने फ़ज़्लो करम की तरफ़ दावत दे, इस्लाम और हिदायत उन पर पेश करे, अपनी भली बातें उनको सुझाए और समझाए। चुनाँचे और आयत में ईसाइयों की तस्लियत परस्ती का ज़िक्र करके उनकी सज़ा का बयान करके फ़र्माया (أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَ

5) (وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَسْتَغْفِرُوْنَهٗ/माइदा : 74) यह लोग क्यूँ अल्लाह तआला से तौबा नहीं करते और क्यूँ उसकी तरफ़ झुककर उससे अपने गुनाहों की माफ़ी तलब नहीं करते? वह तो बड़ी ही बख़्शिश वाला और बहुत ही मेहरबान है। मोमिनों को सताने और उन्हें फ़ित्ने में डालने वालों का ज़िकर करके सूरह बुरूज में फ़र्माया कि ऐसे लोग भी तौबा कर लें अपने बुरे कामों से हट जाएँ तो मैं भी उन पर से अपने अज़ाब हटा लूँगा और रहमतों से नवाज़ दूँगा। इमाम हसन बसरी (रह.) ने कैसे मज़े की बात फ़र्माई है आप फ़र्माते हैं अल्लाह के रहमो करम को देखो, यह लोग उसके नेक चहीते बंदों को सताएँ मारें पीटें क़त्ल करें और वह इन्हें तौबा की तरफ़ और अपने रहमो करम की तरफ़ बुलाए, फ़सुब्हानहू आज़मा शानुहू।

***

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ
فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝ اَوْ يُلْقٰۤى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ
الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ تَبٰرَكَ الَّذِيْۤ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ
كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝
وَاِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝

तर्जुमा : "कहने लगे कि यह कैसा रसूल है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है, इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यूँ नहीं भेजा जाता कि वह भी इसके साथ होकर डराने वाला बन जाता। (7) या इसके पास कोई खज़ाना ही डाल दिया जाता या इसका कोई बाग़ ही होता जिसमें से यह खाता। यह ज़ालिम कहने लगे कि तुम तो ऐसे आदमी के पीछे हो लिए हो जिस पर जादू किया गया है। (8) ख़्याल तो कर कि यह लोग तेरी निस्बत कैसी कैसी बातें बनाते फिरते हैं जिससे ख़ुद ही बहक रहे हैं और किसी तरह राह पर नहीं आ सकते। (9) अल्लाह तो

बरकत वाला है कि अगर चाहे तो तुझे बहुत से ऐसे बाग़ात इनायत कर दे जो उनके कहे हुए बाग़ से बहुत ही बेहतर हों जिनके नीचे नहरें लहरें ले रही हों और तुझे बहुत से पुख़्ता महल भी दे दे। (10) बात यह है कि यह लोग क़ियामत को झूठ समझते हैं और क़ियामत के झुठलाने वालों के लिए हमने भड़कती हुई दोज़ख़ तैयार कर रखी है। (11) जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो यह उसका ग़ुस्से से झुंझलाना और चिल्लाना सुनेंगे। (12) और जबकि यह जहन्नम की किसी तंग व तारीक जगह में मश्कें कसकर फेंक दिये जाएँगे तो वहाँ अपने लिए मौत ही मौत पुकारेंगे। (13) आज एक ही मौत को न पुकारो बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो।" (14)

मक़ामाते नबुव्वत और जाहिलाना ऐतिराज़ात (आ. 7 स 14) : इस हिमाक़त को मुलाहिज़ा कीजिए कि रसूले अकरम (ﷺ) की रिसालत के इंकार की वजह यह बयान करते हैं कि यह खाने पीने का मोहताज क्यूँ है और बाज़ारों में तिजारत व लेन देन के लिए आता जाता क्यूँ है इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यूँ नहीं उतारा गया कि वह इसके दावे की तस्दीक़ करता और लोगों को इसके दीन की तरफ़ बुलाता और अज़ाबे इलाही से आगाह करता। फ़िरओन ने भी यही कहा था कि (43) (فَلَوْلَآ أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ/ज़ुख़रुफ़ : 53) इस पर सोने के कंगन क्यूँ नहीं डाले गए? या इसकी इम्दाद के लिए आसमान से फ़रिश्ते क्यूँ नहीं उतारे गए चूँकि दिल इन तमाम काफ़िरों के यक्साँ हैं, हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने के कुफ़्फ़ार ने भी कहा कि अच्छा यह नहीं तो इसे कोई ख़ज़ाना ही दे दिया जाता कि यह ख़ुद आराम के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करता और दूसरों को भी देता या उसके साथ कोई चलता फिरता बाग़ होता कि यह अपने खाने पीने से तो बेफ़िक्र हो जाता, बेशक यह सबकुछ अल्लाह तआला पर आसान है लेकिन सरेदस्त इन चीज़ों के न देने में भी हिक्मत है, यह ज़ालिम मुसलमानों को भी बहकाते हैं और कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे शख़्स के पीछे लग गए हो जिस पर किसी ने जादू किया है, देखो तो सही, कैसी बेबुनियाद बातें बनाते हैं? किसी एक बात पर जम ही नहीं सकते, इधर उधर करवटें ले रहे हैं कभी जादूगर कह दिया तो कभी जादू किया हुआ बता दिया कभी शायर कह दिया कभी जिन्न का सिखाया हुआ कह दिया, कभी कज़्ज़ाब कहा, कभी मज्नून कहा, हालाँकि यह सब बातें सिर्फ़ लग़्व हैं और इनका ग़लत होना इससे भी वाज़ेह है कि ख़ुद इनमें तज़ाद है किसी एक बात पर ख़ुद इन मुश्रिकीन का ऐतिमाद नहीं गढ़ते हैं फिर छोड़ते हैं फिर गढ़ते हैं फिर बदलते हैं, किसी ठीक बात पर जमते ही नहीं, जिधर मुतवज्जह होते हैं राह भूलते हैं और ठोकरें खाते हैं हक़ तो एक होता है उसमें तख़ालुफ़ और तआरुज़ नहीं हो सकता, नामुम्किन है कि यह लोग इन भूल भुलय्यों से निकल सकें, बेशक अगर रब तआला चाहे तो जो यह काफ़िर कहते हैं इससे बहुत बेहतर अपने नबी (ﷺ) को दुनिया में ही दे दे वह बड़ी बरकतों वाला है, पत्थर से बने हुए घर को अरब क़स्र कहते हैं ख़्वाह वह बड़ा हो या छोटा। (तब्री : 19/343) हुज़ूर (ﷺ) से तो जनाब बारी तआला की जानिब से फ़र्माया गया था कि अगर आप (ﷺ) चाहें तो ज़मीन के ख़ज़ाने और यहाँ की कुँजियाँ आप (ﷺ) को दे दी जाएँ और इस क़द्र दुनिया का मालिक कर दिया जाए कि किसी और को इतनी न मिली हो साथ ही आख़िरत की आप (ﷺ) की तमाम नेअमतें ज्यों की त्यों बरक़रार रहें लेकिन आप (ﷺ) ने इसे पसंद न किया और जवाब दिया कि नहीं! मेरे लिए तो सब कुछ आख़िरत में ही जमा हो। (सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी और हबीब बिन अबी साबित दोनों मुदल्लस हैं।)

फिर फ़र्माता है कि यह जो कुछ कहते हैं यह सिर्फ़ तकब्बुर इनाद और हट के तौर पर कहते हैं, यह नहीं कि इनका कहा हुआ हो जाए तो यह मुसलमान हो जाएँगे। उस वक़्त फिर और कुछ हीला बहाना टटोल निकालेंगे, इनके दिल में तो यह ख़्याल जमा हुआ है कि क़ियामत होने की नहीं और ऐसे लोगों के लिए हमने भी अज़ाबे अलीम तैयार कर रखा है जो इनकी बर्दाश्त के बाहर है जो भड़काने और सुलगानो वाली झुलसा देने वाली तेज़ आग का है अभी तो जहन्नम इनसे सौ साल की दूरी पर होगी जो उसकी नज़रें इन पर और इसकी निगाहें उन पर पड़ेंगी वहीं जहन्नम पेच व ताब खाएगी और जोश ख़रोश से आवाज़ें निकालेगी जिसे यह बदनसीब सुन लेंगे और इनके ओसान ख़ता हो जाएँगे, होश जाते रहेंगे हाथों के तोते उड़ जाएँगे। जहन्नम इन बदकारों पर दाँत पीस रही होगी और ग़ुस्से के मारे बल खा रही होगी और शोर मचा रही होगी कि कब इन कुफ़्फ़ार का निवाला बनाऊँ और कब इन ज़ालिमों से इंतिक़ाम लूँ? सूरह तबारक में है जब यह लोग उसमें डाले जाएँगे तो दूर ही से उसकी ख़ौफ़नाक आवाज़ें सुनेंगे और वह ऐसी भड़क रही होगी कि अभी अभी मारे जोश के फट पड़ेगी। (67/मुल्क : 7, 8) इब्ने अबी हातिम में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स मेरा नाम लेकर मेरे ज़िम्मे वह बात कहे जो मैंने न कही हो और जो शख़्स अपने माँ बाप के सिवा दूसरों को अपना माँ बाप कहे और जो ग़ुलाम अपने आक़ा के सिवा और की तरफ़ अपनी ग़ुलामी की निस्बत करे वह जहन्नम की दोनों आँखों के बीच अपना ठिकाना बना ले। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या जहन्नम की भी आँखें हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! क्या तुमने अल्लाह तआला के कलाम की यह आयत नहीं सुनी (इज़ा रअत्हुम मिम मकानिम बईद...) (तब्री : 19/244) एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) हज़रत रबीअ (रह.) वग़ैरह को साथ लिये हुए कहीं जा रहे थे, रास्ते में लौहार की दुकान आई आप वहाँ ठहर गए और लोहा जो आग में तपाया जा रहा था उसे देखने लगे। हज़रत रबीअ (रह.) का तो बुरा हाल हो गया, अज़ाबे रब का नक़्शा आँखों के सामने आ गया, क़रीब था कि बेहोश होकर गिर पड़ें। उसके बाद आप फ़रात के किनारे गए वहाँ आपने तन्नूर को देखा कि उसके बीच में आग शोले मार रही है बेसाख़्ता आपकी ज़ुबान से यह आयत निकल गई उसे सुनते ही हज़रत रबीअ (रह.) बेहोश होकर गिर पड़े, चारपाई पर डालकर आपको घर पहुँचाया गया। सुबह से लेकर दोपहर तक हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) उनके पास बैठे रहे और चाराजोई करते रहे लेकिन हज़रत रबीअ (रह.) को होश न आया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जब जहन्नमी को जहन्नम की तरफ़ घसीटा जाएगा, जहन्नम चीखेगी और एक ऐसी झुरझुरी लेगी कि तमाम अहले महशर ख़ौफ़ज़दा हो जाएँगे। और रिवायत में है कि ''कुछ लोगों को जब दोज़ख़ की तरफ़ ले चले दोज़ख़ सिमट जाएगी अल्लाह तआला मालिक व रहमान उससे पूछेगा, यह क्या बात है? वह जवाब देगी कि या अल्लाह! यह तो अपनी दुआओं में तुझसे जहन्नम से पनाह माँगा करता था, आज भी पनाह माँग रहा है। अल्लाह तआला को रहम आ जाएगा हुक्म होगा कि इसे छोड़ दो। कुछ और लोगों को ले चलेंगे, वह कहेंगे परवरदिगार! हमारा गुमान तो तेरी निस्बत यह न था। अल्लाह तआला कहेगा फिर तुम क्या समझ रहे थे? यह कहेंगे यही कि तेरी रहमत हमें छुपा लेगी, तेरा करम हमारे शामिले हाल होगा, तेरी वसीअ रहमत हमें अपने दामन में ले लेगी। अल्लाह तआला उनकी आरज़ू भी पूरी करेगा और हुक्म दे देगा कि मेरे इन बन्दों को भी छोड़ दो। कुछ और लोग घसीटते हुए आएँगे, उन्हें देखते ही जहन्नम उनकी तरफ़ शोर मचाती हुई बढ़ेगी और

इस तरह झुरझुरी लेगी कि तमाम मज्मआ महशर ख़ौफ़ज़दा हो जाएगा।'' हज़रत उबेद बिन उमेर (रह.) फ़र्माते हैं कि जब जहन्नम मारे गुस्से के थरथराएगी और शोरो गुल और चीख़ पुकार और जोश व ख़रोश शुरू करेगी उस वक़्त तमाम मुक़र्रब फ़रिश्ते और रुत्बा वाले अम्बिया काँपने लगेंगे यहाँ तक कि ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) भी अपने घुटनों के बल गिर पड़ेंगे और कहने लगेंगे कि या अल्लाह! मैं आज तुझसे सिर्फ़ अपनी जान का बचाव चाहता हूँ और कुछ नहीं माँगता। यह लोग जहन्नम के ऐसे तंग व तारीक मकान में ठूँस दिये जाएँगे जैसे भाला किसी सूराख़ में। और रिवायत में ''हुज़ूर (ﷺ) से इस आयत की बाबत सवाल होना और आप (ﷺ) का यह फ़र्माना मरवी है कि जैसे कील दीवार में बमुश्किल गाड़ी जाती है उस तरह उन दोज़ख़ियों को ठूँसा जाएगा, यह उस वक़्त ख़ूब जकड़े हुए होंगे बाल बाल बँधा हुआ होगा। हाँ! वह मौत को, फ़ौत को, हलाकत को हसरत को पुकारने लगेंगे।'' उनसे कहा जाएगा एक मौत को क्यूँ पुकारो? क्यूँ न सदहा हज़ार हा मौतों को पुकारो? मुस्नद अहमद में है ''सबसे पहले इब्लीस को जहन्नमी लिबास पहनाया जाएगा, यह उसे अपनी पेशानी पर रखकर पीछे से घसीटता हुआ अपनी ज़ुर्रियत को पीछे लगाए हुए मौत व हलाकत को पुकारते हुए दौड़ता फिरेगा।'' उसके साथ ही उसकी औलाद भी सब हसरत व अफ़सोस मौत व ग़ारत को पुकार रहे होंगे। उस वक़्त उनसे यह कहा जाएगा (मुस्नद अहमद : 3/152; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/392; मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 7/55; इसकी सनद में अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/37; रक़म : 342) सुबूर से मुराद मौत, हलाकी, वैल, हसरत, ख़सारा बर्बादी वग़ैरह है। जैसे हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़िरऔन से कहा था (17) (وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا/बनी इस्राईल : 102) फ़िरऔन! मैं तो समझता हूँ कि तू मिटकर बर्बाद होकर ही रहेगा। शायर भी लफ़्ज़ सुबूर को हलाकत व बर्बादी के मअनी में लाये हैं।

***

قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُوْلًا ﴿١٦﴾

तर्जुमा : ''पूछ तो कि क्या यह बेहतर है या वह हमेशगी वाली जन्नत जिसका वादा परहेज़गारों से किया गया है। जो इनका बदला है और इनके लौटने की असली जगह है। (15) वह जो चाहेंगे उनके लिए वहाँ मौजूद होगा हमेशा यह तो तेरे रब तआला के ज़िम्मे वादा है जिसका मुतालबा किया जा सकता है।'' (16)

जन्नत और अहले जन्नत (आ. 15, 16) : ऊपर बयान फ़र्माया, इन बदकारों का जो ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ औंधे मुँह जहन्नम की तरफ़ घसीटे जाएँगे और सर के बल वहाँ फेंक दिये जाएँगे। बंधे बँधाए होंगे और तंग व तारीक जगह होंगे। न छूट सकें न हरकत कर सकें, न भाग सकें, न निकल सकें। फिर फ़र्माता है बतलाओ

यह अच्छे हैं या वह जो दुनिया में गुनाहों से बचते रहे अल्लाह तआला का डर दिल में रखते रहे और आज उसके बदले अपने असली ठिकाने पहुँच गए यानी जन्नत में जहाँ मनमानी नेअमतें अबदी लज़्ज़तें, दाइमी मसर्रतें उनके लिए मौजूद हैं, उम्दा खाने अच्छे बिछौने बेहतरीन सवारियाँ पुर तकल्लुफ़ लिबास बहुत बेहतर मकानात बनी सँवरी पाकीज़ा हूरें राहत अफ़्ज़ा मंज़र उनके लिए मुहय्या हैं जहाँ तक किसी की निगाहें तो कहाँ ख़्यालात भी नहीं पहुँच सकते, न उन राहतों के बयानात किसी कान में पहुँचे। फिर उनके कम हो जाने ख़राब हो जाने टूट जाने, ख़त्म हो जाने का भी कोई ख़तरा नहीं, न वह वहाँ से निकाले जाएँ, न वह नेअमतें कम हों। लाज़वाल बेहतरीन ज़िन्दगी, अबदी रहमत, हमेशगी की दौलत उन्हें मिल गई और उनकी हो गई। यह रब का एहसान व इन्आम है जो उन पर हुआ और जिसके यह मुस्तहिक़ थे। रब तआला का वादा है जो उसने अपने ज़िम्मे कर लिया है। जो होकर रहने वाला है जिसका अदम ऐसा नामुम्किन है जिसका ग़लत होना महाल है। इससे इसके वादे के पूरा करने का सवाल करो इससे जन्नत तलब करो। इसे उसका वादा याद दिलाओ। यह भी उसका फ़ज़्ल है कि उसके फ़रिश्ते उससे दुआएँ करते हैं कि रब्बुल आलमीन मोमिन बन्दों से जो तेरा वादा है उसे पूरा कर और उन्हें जन्नते अद्न में ले जा। क़ियामत के दिन मोमिन कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे वादे को सामने रखकर हम अमल करते रहे, आज तू अपना वादा पूरा कर। यहाँ पहले जहन्नमियों का ज़िक्र करके फिर सवाल के बाद जन्नतियों का ज़िक्र हुआ। सूरह साफ़्फ़ात में जन्नतियों का ज़िक्र करके फिर सवाल के बाद जहन्नमियों का ज़िक्र हुआ कि क्या यही बेहतर है या ज़क्कूम का दरख़्त? जिसे हमने ज़ालिमों के लिए फ़ित्ना बना रखा है जो जहन्नम की जड़ से निकलता है जिसके फल ऐसे बदनुमा हैं जैसे साँप के फन। दोज़ख़ी उसे खाएँगे और उसी से पेट भरना पड़ेगा फिर खोलता हुआ गर्म पानी पीप वग़ैरह से मिला जुला पीने को दिया जाएगा फिर उनका ठिकाना जहन्नम होगा। उन्होंने अपने बाप दादों को गुमराह पाया और बेतहाशा उनके पीछे लपकना शुरू कर दिया। (37/साफ़्फ़ात : 62 से 70)

***

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ
هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ
اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ
كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ
عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "जिस दिन अल्लाह तआला उन्हें और सिवाय अल्लाह तआला के जिन्हें यह पूजते रहे, उन्हें जमा करके पूछेगा कि क्या मेरे इन बंदों को तुमने गुमराह किया या यह ख़ुद ही राह से गुम हो गए? (17) वह जवाब देंगे कि तू पाक ज़ात है ख़ुद हमें ही यह ज़ेबा न था कि तेरे सिवा औरों को अपना कारसाज़ बनाते, बात यह है कि तूने इन्हें और इनके बाप दादों को आसूदगियाँ अता कीं यहाँ तक कि वह नसीहत भुला बैठे। यह लोग थे ही हलाक होने वाले।(18) तो इन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी तमाम बातों में झूठा कहा। अब न तो तुममें अज़ाबों के फेरने की ताक़त है न मदद करने की। तुममें से जिस जिसने ज़ुल्म किया है हम उसे सख़्त अज़ाब चखाएँगे।" (19)

मुश्रिक और उनके मअबूद अल्लाह तआला की अदालत में (आ. 17 से 19) : बयान हो रहा है कि मुश्रिक जिन जिनकी इबादतें अल्लाह तआला के सिवा करते रहे, क़ियामत के दिन उन्हें उनके सामने उस पर अलावा अज़ाब के ज़ुबानी सरज़निश भी की जाएगी ताकि वह नादिम हों। हज़रत ईसा, हज़रत उज़ेर (عليه السلام) और फ़रिश्ते जिन जिनकी इबादत हुई थी। (तब्री : 19/247) सब मौजूद होंगे और आबिद भी सब उसी मज्मअे में हाज़िर होंगे। उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआला इन मअबूदों से पूछेगा कि क्या तुमने मेरे इन बन्दों से अपनी इबादत करने को कहा था या यह ख़ुद से ऐसा करने लगे? चुनाँचे और आयत में है कि हज़रत ईसा (عليه السلام) से भी यही सवाल होगा। जिसका वह जवाब देंगे कि मैंने उन्हें हर्गिज़ इस बात की तालीम नहीं दी जैसाकि तुझ पर ख़ूब रोशन है मैंने तो उन्हें वही कहा था जो तूने मुझसे कहा था कि इबादत के लायक़ फ़क़त अल्लाह तआला ही है। (5/माइदा : 117) यह सब मअबूद जो अल्लाह तआला के सिवा थे और अल्लाह तआला के सच्चे बन्दे थे और शिर्क से बेज़ार थे जवाब देंगे कि किसी मख़्लूक़ को हमको या उनको यह लायक़ ही न था कि तेरे सिवा किसी और की इबादत करें। हमने हर्गिज़ इन्हें शिर्क की तालीम नहीं दी। ख़ुद ही इन्होंने अपनी ख़ुशी से दूसरों की पूजा पाठ शुरू कर दी थी हम इनसे और इनकी इबादतों से बेज़ार हैं हम इनके इस शिर्क से बरिउज़्ज़िमा हैं हम तो ख़ुद तेरे बन्दे हैं फिर कैसे मुम्किन था कि मअबूदियत के मंसब पर आ जाते? यह तो हमारे लायक़ ही न था। तेरी ज़ात इससे बहुत पाक और बरतर है कि कोई तेरा शरीक हो। चुनाँचे और आयत में सिर्फ़ फ़रिश्तों से इस सवाल जवाब का होना भी बयान हुआ है। (नुत्तख़ज़) भी है यानी यह किसी तरह नहीं हो सकता था न यह हमारे लायक़ था कि लोग हमें पूजने लगें और तेरी इबादत छोड़ दें। क्योंकि हम तो ख़ुद तेरे बंदे हैं, तेरे दर के भिखारी हैं। मतलब दोनों सूरतों में क़रीब क़रीब एक ही है। उनके बहकने की वजह हमारी समझ में तो यह आती है कि इन्हें उम्रें मिलीं खाने पीने को मिलता रहा बदमस्ती में बढ़ते गए यहाँ तक कि जो नसीहत रसूलों की मअरिफ़त पहुँची थी उसे भुला दिया तेरी इबादत से और सच्ची तौहीद से हट गए यह लोग थे ही बेख़बर, हलाकत के गढ़े में गिर पड़े तबाह व बर्बाद हो गए। (बूरन) से मतलब हलाकत वाले ही है। (तब्री : 19/248) जैसे इब्ने ज़ब्अरी (रह.) ने अपने शेअर में इस लफ़्ज़ को इस मअनी में बाँधा है। अब अल्लाह तआला इन मुश्रिकों से फ़र्माएगा, लो अब तो तुम्हारे यह मअबूद ख़ुद तुम्हें झुठला रहे हैं तुम तो इन्हें अपना समझकर इस ख़याल से कि यह तुम्हें अल्लाह तआला के मुक़र्रब बना देंगे इनकी पूजा पाठ करते रहे आज यह तुमसे कोसों दूर भाग रहे हैं, तुमसे यक्सू हो रहे हैं और बेज़ारी ज़ाहिर कर रहे हैं। जैसे इर्शाद है (وَ مَنْ

أَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَ هُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝ وَ اِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّ كَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝) (46/ज़ुख़रुफ़ : 5, 6) यानी उससे ज़्यादा गुमराह कौन है जो अल्लाह तआला के सिवा ऐसों को पुकारता है जो क़ियामत तक इसकी चाहत पूरी न कर सकें बल्कि वह तो इनकी दुआ से सिर्फ़ ग़ाफ़िल हैं और महशर के दिन यह सब इन सबके दुश्मन हो जाएँगे और इनकी इबादतों के साफ़ मुंकिर हो जाएँगे पस क़ियामत के दिन यह मुश्रिकीन न तो अपनी जानों से अज़ाबे इलाही हटा सकेंगे और न अपनी मदद कर सकेंगे न किसी को अपना मददगार पाएँगे तुममें से जो भी अल्लाह वाहिद के साथ शिर्क करे हम उसे ज़बरदस्त और निहायत सख़्त अज़ाब करेंगे।

***

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝

तर्जुमा : ''हमने तुझसे पहले जितने रसूल भेजे सबके सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते फिरते थे हमने तुममें से हर एक को दूसरे की आज़माइश का ज़रिया बना दिया, क्या तुम सब्र करोगे? तेरा रब सब कुछ देखने वाला है।'' (20)

यह सब कुछ नबुव्वत के मनाफ़ी नहीं (आ. 20) : काफ़िर जो इस बात पर ऐतिराज़ करते थे कि नबी को खाने पीने और तिजारत व्यापार से क्या मतलब? इसका जवाब दिया जा रहा है कि अगले सब पैग़म्बर भी इंसानी ज़रूरतें रखते थे, खाना पीना उनके साथ भी लगा हुआ था। व्यापार तिजारत और कस्बे मआश वह भी किया करते थे यह चीज़ें नबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं। हाँ! अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल अपनी इनायते ख़ास से इन्हें वह पाकीज़ा औसाफ़, नेक ख़साइल, उम्दा क़ौल, मुख़्तार अफ़आल, ज़ाहिर दलीलें, आला मोजिज़े देता है कि हर अक़्ले सलीम रखने वाला हर दाना बीना मजबूर हो जाता है कि उनकी नबुव्वत को तस्लीम कर ले और उनकी सच्चाई को मान ले। इसी आयत जैसी और आयत (وَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا) (12/यूसुफ़ : 109) यानी तुझसे पहले भी जितने नबी आए सब शहरों में रहने वाले इंसान ही थे। और आयत में है (وَ مَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ) (21/अम्बिया : 8) हमने उन्हें ऐसे जस्से नहीं बनाए थे कि खाने पीने से वह आज़ाद हों। हम तो तुममें से एक एक की आज़माइश एक एक से कर लिया करते हैं ताकि फ़र्मांबरदार और नाफ़र्मान ज़ाहिर हो जाएँ। साबिर और ग़ैर साबिर मालूम हो जाएँ। तेरा रब तआला दाना बीना है। ख़ूब जानता है कि मुस्तहिक़े नबुव्वत कौन है? जैसे फ़र्माया(اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ) (6/अन्आम : 124) मंसबे रिसालत की अहलियत किसमें है? उसे अल्लाह तआला ही जानता है उसको उसका भी इल्म है कि मुस्तहिक़े हिदायत कौन हैं और कौन नहीं। चूँकि अल्लाह तआला का इरादा बन्दों का इम्तिहान लेने का है इसलिए नबियों को उमूमन मामूली हालत में रखता है वरना अगर उन्हें बकसरत दुनिया देता तो उनके माल

की लालच में बहुत से उनके साथ हो जाते तो फिर सच्चे झूठे मिल जाते। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि मैं ख़ुद तुझे और तेरे ज़रिये से और लोगों को आज़माने वाला हूँ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अस्सिफ़ातुल् लती युअरफु बिहा फ़िदुनिया अहलुल जन्नत व अहलुन्नार : 2865) मुस्नद में है कि "आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि अगर मैं चाहता तो मेरे साथ सोने चाँदी के पहाड़ चलते रहते।" (मुस्नदे अबी यअला : 4920; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबू मअशर ज़ईफ़ रावी है।) और सहीह हदीस शरीफ़ में है कि "हुज़ूर (ﷺ) को नबी और बादशाह बनने में और नबी और बन्दा बनने में इख़्तियार दिया गया तो आप (ﷺ) ने बन्दा और नबी बनना पसंद किया।" (अहमद : 2/231; इब्ने हिब्बान : 6331; व सनदुहू सहीहुन) (फ़सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन)

अल्हम्दु लिल्लाह अठारहवाँ पारा मुकम्मल हुआ।

***

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "जिन्हें हमारी मुलाक़ात की तवक़्क़ो नहीं उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यूँ नहीं उतारे जाते? या हम अपनी आँखों से अपने रब को देख लेते? उन लोगों ने अपने आपको ही बहुत बड़ा समझ रखा है और सख़्त सरकशी कर ली है। (21) जिस दिन यह फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन उन गुनहगारों को कोई ख़ुशी न होगी और कहेंगे कि यह महरूम ही महरूम किये गए। (22) उन्होंने जो जो आमाल किये थे हमने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर उन्हें परागन्दा ज़र्रों की तरह कर दिया। (23) अल्बत्ता उस दिन जन्नतियों का ठिकाना भी बहुत बेहतर होगा और ख़्वाबगाह भी उम्दा होगी।" (24)

कुफ़्फ़ार का एक अजीब मुतालबा (माँग) (आ. 21 से 24) : काफ़िर लोग इंकारे नबुव्वत का एक बहाना यह भी बनाते थे कि अगर अल्लाह को कोई रसूल भेजना ही था तो किसी फ़रिश्ते को क्यूँ न भेजा। चुनाँचे और आयत में है कि वह एक बहाना यह भी करते थे कि (لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ) (6/अन्आम : 124) यानी जब तक ख़ुद हमें वह न दिया जाए जो रसूलों को दिया गया है हम हर्गिज़ ईमान न लाएँगे मतलब यह है कि जिस तरह नबियों के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़रिश्ता वह़ी लेकर आता है

हमारे पास भी आए और यह भी हो सकता है कि उनका मुतालबा यह हो कि फ़रिश्तों को देख लें ख़ुद फ़रिश्ते आकर हमें समझाएँ और हुज़ूर (ﷺ) की नबुव्वत की तस्दीक़ करें तो हम आपको नबी मान लेंगे जैसे और आयत में है कि कुफ़्फ़ार ने कहा (اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ قَبِیْلًا) (17/बनी इस्राईल : 92) यानी तू अल्लाह को ले आया फ़रिश्तों को अयानन (आँखों के सामने) हमारे पास ले आ। इसकी पूरी तफ़्सीर सूरह सुब्हान में गुज़र चुकी है यहाँ भी इनका यही मुतालबा बयान हुआ है कि या तो हमारे ऊपर फ़रिश्ते उतरें या हम अपने रब को देख लें, यह बात इसलिए इनके मुँह से निकली कि यह अपने आपको बहुत कुछ समझने लगे थे और इनका ग़ुरूर हद से बढ़ गया था इनकी ईमान लाने की निय्यत न थी जैसे फ़र्मान है (وَ لَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَاۤ اِلَیْهِمُ الْمَلٰٓىٕكَةَ)(6/अन्आम : 111) यानी अगर हम इन पर फ़रिश्तों को भी उतारते और इनसे मुर्दे बातें करते और भी तमाम चीज़ें हम इनके सामने कर देते जब भी इन्हें ईमान लाना नसीब न होता। अल्लाह तआला फ़र्माता है फ़रिश्तों को यह देखेंगे लेकिन उस वक़्त इनके लिए उनका देखना कुछ अच्छा न होगा इससे मुराद सकराते मौत का वक़्त है जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों के पास आते हैं और अल्लाह तआला के ग़ज़ब की और जहन्नम की आग की उन्हें ख़बर देते हैं और कहते हैं कि ऐ ख़बीस नफ़्स! जो नापाक और ख़बीस जिस्म में था गर्म हवाओं और गर्म पानी की तरफ़ और गर्म सायों की तरफ़ चल। वह निकलने से रुकती है और बदन में छुपती फिरती है।

इस पर फ़रिश्ते उनके चेहरों पर और उनकी कमरों पर मार मारते हैं। जैसे फ़र्मान है (وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ) (6/अन्आम : 93) यानी काश कि तू ज़ालिमों को उनकी सकरात के वक़्त देखता जबकि फ़रिश्ते उन्हें मारने के लिए हाथ उठाते हुए होंगे और कह रहे होंगे अपनी जानें निकालो आज तुम्हें ज़िल्लत के अज़ाब चखने पड़ेंगे क्योंकि तुम अल्लाह तआला के ज़िम्मे नाहक़ इल्ज़ामात तराशते थे और उसकी आयतों को झुठलाते थे मोमिनों का हाल इनसे बिलकुल उल्टा होगा। वह अपनी मौत के वक़्त ख़ुशख़बरियाँ सुनाए जाते हैं और अबदी मसर्रतों की बशारतें दिये जाते हैं। जैसे फ़र्मान है (اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ) (41/हामीम सज्दा : 30 से 32) जिन्होंने अल्लाह तआला को अपना रब कहा और माना फिर उस पर जमे रहे उनके पास हमारे फ़रिश्ते आते हैं और कहते हैं कि तुम न करो बल्कि उन जन्नतों में जाने की ख़ुशी मनाओ जिनका तुम्हें वादा दिया जाता रहा हम तुम्हारे वाली हैं दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी तुम जो कुछ चाहोगे पाओगे और जिस चीज़ की ख़्वाहिश करोगे मौजूद हो जाएगी। यह तुम्हारी मेहमानदारी होगी बख़्शने वाले मेहरबान अल्लाह तआला की तरफ़ से। सहीह हदीस में है कि "फ़रिश्ते मोमिन की रूह से कहते हैं ऐ पाक रूह! जो पाक जिस्म में थी तू अल्लाह तआला के रहम और रहमत की तरफ़ चल जो तुझसे नाराज़ नहीं है।" (मुस्लिम : 4/2022; नसाई, किताबुल जनाइज़, बाब मा युल्क़ी बिहिल मोमिनु मिनल करामति इन्द ख़ुरूजि नफ़्सिही : 1834; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 4262) सूरह इब्राहीम की आयत (یُثَبِّتُ اللّٰهُ) (14/इब्राहीम : 27) की तफ़्सीर में यह सब हदीसें मुफ़स्सल (सविस्तार) बयान हो चुकी हैं कुछ ने कहा कि मुराद इससे क़ियामत के दिन फ़रिश्तों का देखना है हो सकता है कि दोनों मौक़ों पर फ़रिश्तों को देखना मुराद हो उसमें एक क़ौल की दूसरे क़ौल से मनाफ़ात नहीं क्योंकि दोनों मौक़ों पर हर नेक व बद फ़रिश्तों को देखेंगे मोमिनों को रहमत व रिज़्वान की ख़ुशख़बरी के साथ फ़रिश्तों का दीदार होगा और काफ़िरों को लअनत व फटकार और

अज़ाबों की ख़बरों के साथ। फ़रिश्ते उस वक़्त उन काफ़िरों से साफ़ कह देंगे कि अब फ़लाह व बहबूद तुम पर हराम है। हिज्रुन के लफ़्ज़ी मअ़नी रोक हैं चुनाँचे क़ाज़ी जब किसी को उसकी मुफ़्लिसी या हिमाक़त या बचपन की वजह से माल के तसर्रुफ़ से रोक दे तो कहते हैं हजरल क़ाज़ी अ़ला फ़ुलान हतीम को भी हिज्र कहते हैं इसलिए कि वह तवाफ़ करने वालों को अपने अंदर तवाफ़ करने से रोक देता है बल्कि उसके बाहर से तवाफ़ किया जाता है अक़्ल को भी अ़रबी में हिज्र कहते हैं इसलिए कि वह भी इंसान को बुरे कामों से रोक देती है। पस फ़रिश्ते उनसे कहते हैं कि जो ख़ुशख़बरियाँ मोमिनों को उस वक़्त मिलती हैं उससे तुम महरूम हो यह मअ़नी तो इस बिना पर हैं कि इस जुम्ला को फ़रिश्तों का क़ौल कहा जाए। दूसरा क़ौल यह है कि यह मक़ूला उस वक़्त काफ़िरों का होगा। (तब्री : 19/254) वह फ़रिश्तों को देखकर कहेंगे कि अल्लाह करे तुम हमसे आड़ में रहो, तुम्हें हमारे पास आना न मिले। भले यह मअ़नी भी हो सकते हैं लेकिन हैं यह दूर के मअ़नी। बिलख़ुसूस उस वक़्त कि जब उसके ख़िलाफ़ वह तफ़्सीर जो हमने ऊपर बयान की सलफ़ से मरवी है अल्बत्ता हज़रत मुजाहिद (रह.) से एक क़ौल ऐसा मरवी है लेकिन इन ही से सराहत के साथ यह भी मरवी है कि यह क़ौल फ़रिश्तों का होगा, वल्लाहु आलम!

अक़ीद-ए-तौहीद के बग़ैर तमाम नेक आमाल बेफ़ायदा हैं : फिर क़ियामत के दिन आमाल के हिसाब के वक़्त उनके आमाल ग़ारत और अकारत हो जाएँगे यह जिन्हें अपनी नजात का ज़रिया समझे हुए थे वह बेकार हो जाएँगे क्योंकि या तो वह ख़ुलूस वाले न थे या सुन्नत के मुताबिक़ न थे और जो अमल इन दोनों से या इनमें से एक चीज़ से ख़ाली हो वह अल्लाह तआला के नज़दीक क़ाबिले क़बूल नहीं इसलिए काफ़िरों के नेक आमाल भी मर्दूद हैं हमने इनके आमाल का मुलाहिज़ा किया और इनको मिस्ल बिखरे हुए ज़र्रों के कर दिया कि वह सूरज की शुआएँ जो किसी सूराख़ में से आ रही हों उनमें नज़र तो आते हैं लेकिन कोई उन्हें पकड़ना चाहे तो हाथ नहीं आते। (तब्री : 19/257) जिस तरह पानी जो ज़मीन पर बहा दिया जाए वह फिर हाथ नहीं आ सकता या ग़ुबार जो हाथ नहीं लग सकता या दरख़्तों के पत्तों का चूरा जो हवा में बिखर गया हो या राख और ख़ाक जो उड़ती फिरती हो इसी तरह इनके आमाल हैं जो सिर्फ़ बेकार हो गए इनका कोई सवाब इनके हाथ नहीं लगेगा इसलिए कि या तो इनमें ख़ुलूस न था या मुताबिक़ते शरीअ़त न थी या दोनों वस्फ़ न थे पस जब यह आलिम व आदिल हाकिमे हक़ीक़ी के सामने पेश किये जाएँगे तो सिर्फ़ निकम्मे साबित होंगे इसलिए इसे रद्दी और हाथ न लगने वाली चीज़ से तश्बीह दी गई। जैसे और जगह है (مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ) (14/इब्राहीम : 18) काफ़िरों के आमाल की मिसाल राख जैसी है जिसे तेज़ हवा उड़ा दे। इंसान की नेकियाँ कुछ बदियों से भी ज़ाया हो जाती हैं जैसे सदक़ा ख़ैरात कि वह एहसान जतलाने से और तक्लीफ़ पहुँचाने से बर्बाद हो जाता है। जैसे फ़र्मान है (يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى) (2/बक़रह : 264) पस इनके आमाल में से आज यह किसी अमल पर क़ादिर नहीं। और आयत में इनके आमाल की मिसाल उस रेत के टीले से दी गई जो दूर से मिस्ल दरिया के लहरें मारता हुआ दिखाई देता है जिसे देखकर प्यासा आदमी पानी समझता है लेकिन पास आता है तो उम्मीद टूट जाती है। इसकी तफ़्सीर भी बफ़ज़्लिही गुज़र चुकी है।

फिर फ़र्माया कि इनके मुक़ाबले में जन्नतियों की भी सुन लो क्योंकि यह दोनों फ़रीक़ बराबर के नहीं, जन्नती तो बुलंद दर्जों में आला बालाख़ानों में अम्नो अमान राहृत व आराम के साथ ऐशो इशरत में होंगे, मक़ाम अच्छा मंज़र दिलपसंद हर राहृत मौजूद हर दिल ख़ुशकुन चीज़ सामने जगह अच्छी मकान तय्यब मंज़िल मुबारक सोने बैठने रहने सहने का आराम बरख़िलाफ़ इसके जहन्नमी कि दोज़ख़ के नीचे के तब्क़ों में जकड़बंद ऊपर नीचे दाएँ बाएँ आग हृसरत अफ़सोस रंज ग़म फुकना जलना बेक़रारी जिगर सोज़ी मक़ामे बद मंज़िल बड़ी मंज़र ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब सख़्त। नेक लोगों के जिनके दिल में ईमान था आमाल मक़्बूल हुए अच्छी जज़ाएँ दी गईं बदले मिले जहन्नम से बचे जन्नत के वारिस व मालिक बने। पस यह जो तमाम भलाईयों को समेट बैठे और वह जो हर नेकी से महृरूम रहे कहीं बराबर हो सकते हैं? पस नेकों की सआ़दत बयान करके बुरों की शक़ावत पर तम्बीह कर दी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि कोई साअ़त ऐसी भी होगी कि जन्नती अपनी हूरों के साथ दिन दोपहर को आराम फ़र्माएँ और जहन्नमी शैतानों के साथ जकड़े हुए दोपहर को घबराएँ।

सईद बिन जुबेर (रह़.) कहते हैं कि ''अल्लाह तआ़ला आधे दिन में बन्दों के हि़साब से फ़ारिग़ हो जाएगा पस जन्नतियों के लिए दोपहर के सोने का वक़्त जन्नत में होगा और जहन्नम वालों को जहन्नम में।'' हृज़रत इक्रिमा (रह़.) फ़र्माते हैं ''मुझे मालूम हुआ है कि किस वक़्त जन्नती जन्नत में जाएँगे और जहन्नमी जहन्नम में, यह वह वक़्त होगा जो यहाँ दुनिया में दोपहर का वक़्त होता है कि लोग अपने घरों को दो घड़ी आराम हृासिल करने की ग़र्ज़ से लौटते हैं जन्नतियों का यह क़ैलूला जन्नत में होगा मछली की कलेजी उन्हें पेट भरकर खिलाई जाएगी।'' हृज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) का बयान है कि ''दिन आधा हो उससे पहले ही पहले जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में क़ैलूला करेंगे।'' फिर आपने यही आयत पढ़ी और आयत (ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاْ إِلَى الْجَحِيمِ) (37/साफ़्फ़ात : 68) भी पढ़ी जन्नत में जाने वाले सि़र्फ़ एक मर्तबा जनाब बारी तआ़ला के सामने पेश होंगे यही आसानी से हि़साब लेना है फिर यह जन्नत में जाकर दोपहर का आराम करेंगे जैसे फ़र्माने इलाही है (فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿٩﴾) (84/इंशिक़ाक़ : 7 से 9) यानी जो शख़्स़ अपना आ़मालनामा दाहिने हाथ में दिया जाएगा उससे बहुत आसान हि़साब लिया जाएगा और वह अपने वालों की त़रफ़ ख़ुशी ख़ुशी लौटेगा उसका ठिकाना और मंज़िल बेहतर है। स़फ़्वान बिन मेहृरिज़ (रह़.) फ़र्माते हैं कि ''क़ियामत के दिन दो शख़्सों को लाया जाएगा एक तो वह जो सारी दुनिया का बादशाह था उससे हि़साब लिया जाएगा तो उसकी पूरी उ़म्र में एक नेकी भी न निकलेगी पस उसे जहन्नम के दाख़िले का हुक्म मिलेगा फिर दूसरा शख़्स़ आएगा जिसने एक कम्बल में दुनिया गुज़ार दी थी जब उससे हि़साब लिया जाएगा अल्लाह तआ़ला कहेगा यह सच्चा है इसे छोड़ दो, उसे जन्नत में जाने की इजाज़त दे दी जाएगी फिर कुछ अ़र्सा के बाद दोनों को बुलाया जाएगा तो जहन्नमी बादशाह तो मिस्ल सोख़्ता कोयले के हो गया होगा उससे पूछा जाएगा, कहो किस हृाल में हो, यह कहेगा निहायत बुरे हृाल में और निहायत ख़राब जगह में। फिर जन्नती को बुलाया जाएगा उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की त़रह चमकता होगा, उससे पूछा जाएगा कहो कैसी गुज़र रही है? यह कहेगा अल्हृम्दु लिल्लाह! बहुत अच्छी

और निहायत बेहतर जगह में हूँ। अल्लाह तआला कहेगा जाओ अपनी जगह फिर चले जाओ।'' सईद सव्वाफ़ (रह.) का बयान है कि ''मोमिन पर तो क़ियामत का दिन ऐसा छोटा हो जाएगा जैसे अ़सर से मग़रिब तक का वक़्त। यह जन्नत की क्यारियों में पहुँचा दिये जाएँगे। यहाँ तक कि और मख़्लूक़ के हिसाब हो जाएँ पस जन्नती बेहतर ठिकाने वाले और उम्दा जगह वाले होंगे।''

***

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ﹰالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ
وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى
اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ
عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''जिस दिन आसमान बादल पर फट जाएगा और फ़रिश्ते लगातार उतरेंगे। (25) उस दिन सही तौर पर मुल्क सिर्फ़ रहमान का ही होगा, यह दिन काफ़िरों पर बड़ा भारी होगा। (26) उस दिन सितमगर शख़्स अपने हाथों को चबा चबाकर कहेगा कि हाय काश! मैंने रसूल की राह ली होती। (27) हाय! अफ़सोस कि काश के मैंने फ़लाँ को दोस्त बनाया हुआ न होता। (28) उसने तो मुझे इसके बाद गुमराह कर दिया कि नसीहत मेरे पास आ पहुँची थी शैतान तो इंसान को वक़्त पर दग़ा देने वाला है।'' (29)

क़ियामत की होलनाकियाँ और ज़ालिम आदमी का अंजाम (आ. 25 से 29) : क़ियामत के दिन जो होलनाक उमूर होंगे उनमें से एक आसमान का फट जाना और नूरानी बादल का नमूदार होना भी है जिसकी रोशनी से आँखें चकाचौंध हो जाएँगी फिर फ़रिश्ते उतरेंगे और मैदाने महशर में तमाम इंसानों को घेर लाएँगे। फिर अल्लाह तबारक व तआला अपने बन्दों में फ़ैसले के लिए तशरीफ़ लाएगा जैसे फ़र्मान है (هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ) (2/बक़रह : 210) यानी क्या इन्हें उस बात का इंतिज़ार है कि अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते बादलों में आएँ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला अपनी तमाम मख़्लूक़ को सब इंसानों और कुल जिन्नात को एक ही मैदान में जमा करेगा तमाम जानवर चौपाये दरिन्दे परिन्दे और कुल मख़्लूक़ वहाँ होगी, फिर पहला आसमान फटेगा, और उसके फ़रिश्ते उतरेंगे जो तमाम मख़्लूक़ को चारों ओर से घेर लेंगे और वह गिनती में बहुत ज़्यादा होंगे फिर दूसरा आसमान फटेगा, उसके फ़रिश्ते आएँगे जो ज़मीन की और पहले आसमान की तमाम मख़्लूक़ की गिनती से भी ज़्यादा होंगे फिर तीसरा आसमान फटेगा, उसके फ़रिश्ते दोनों आसमानों के फ़रिश्तों और ज़मीन की मख़्लूक़ से भी ज़्यादा होंगे सबको घेरकर खड़े हो जाएँगे फिर इसी

तरह चौथा फिर पाँचवाँ फिर छटा फिर सातवाँ फिर हमारा रब अ़ज़्ज़ व जल्ल बादल के साये में तशरीफ़ लाएगा, उसके आसपास बुज़ुर्ग तरीन पाक फ़रिश्ते होंगे जो सातों आसमानों और सातों ज़मीनों की तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा होंगे उन पर सींगों जैसे निशान होंगे, वह अल्लाह के अ़र्श के नीचे अल्लाह की तस्बीह़ व तहलील व तक़्दीस बयान करेंगे उनके तलवे से लेकर टख़्ने तक का फ़ासला पाँच सौ साल का होगा और टख़्ने से घुटने तक का भी उतना ही। और घुटने से नाफ़ तक का भी उतना ही फ़ासला होगा और नाफ़ से गर्दन तक का भी उतना ही फ़ासला होगा और गर्दन से कान की लौ तक का भी उतना ही फ़ासला होगा और उसके ऊपर से सर तक का भी उतना ही फ़ासला होगा। (इस रिवायत में अ़ली बिन ज़ेद ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 2/37) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान है कि क़ियामत का नाम (यौमत्तलाक़) (40/ग़ाफ़िर : 15) इसीलिए है कि उसमें ज़मीन व आसमान वाले मिलेंगे उन्हें देखकर पहले तो मह़शर वाले समझ लेंगे कि हमारा परवरदिगार आया।

लेकिन यह समझाएँगे कि वह आने वाला है अभी तक नाज़िल नहीं हुआ। फिर जबकि सातों आसमानों के फ़रिश्ते आ जाएँगे अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श पर तशरीफ़ लाएगा, जिसे आठ फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे जिनके टख़्ने से घुटने तक सत्तर साल का रास्ता है और रान और मूँढे के बीच भी सत्तर साल का रास्ता है। हर फ़रिश्ता दूसरे से अलग और जुदागाना है हर एक की ठोड़ी सीने से लगी हुई है और ज़ुबान पर (सुब्ह़ानल् मलिकिल क़ुद्दूस) का वज़ीफ़ा है। उनके सरों पर एक फैली हुई सी चीज़ है जैसे क़नात, उसके ऊपर अ़र्श होगा इसमें रावी अ़ली बिन ज़ेद बिन जिदआ़न हैं जो ज़ईफ़ हैं और इस ह़दीस में बहुत ही नकारत है। सूर की मशहूर ह़दीस में भी इसी के क़रीब क़रीब मरवी है। (देखिए सुनन इब्ने माजा : 4077; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस्माईल बिन राफ़ेअ़ ज़ईफ़ और मुह़ारिबी मुदल्लस रावी है।) वल्लाहु आलम! और आयत में है कि उस दिन हो पड़ने वाली हो पडेगी और आसमान फुसफुसा जाएगा और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे और उस दिन तेरे रब का अ़र्श आठ फ़रिश्ते लिए हुए होंगे। शहर बिन हुवेशिब कहते हैं कि उनमें से चार की तस्बीह़ तो यह होगी ''सुब्ह़ानकल्लाहुम्म व बि ह़म्दिका लकल ह़म्दु अ़ला ह़िल्मिका बअ़द इ़ल्मिका'' ऐ अल्लाह! तू पाक है तू क़ाबिले सताइश व तअ़रीफ़ है बावजूद इ़ल्म के फिर भी बुर्दबारी बरतना तेरा वस्फ़ है जिस पर हम तेरी तारीफ़ बयान करते हैं और चार की तस्बीह़ यह होगी ''सुब्ह़ानकल्लाहुम्मा वबि ह़म्दिका लकल ह़म्दु अ़ला अ़फ़्विका बअ़दा क़ुदरतिका'' ऐ अल्लाह! तू पाक है और अपनी तारीफ़ों के साथ है, तेरे ही लिए सब तारीफ़ है कि तू बावजूद क़ुदरत के माफ़ करता रहता है।'' अबूबक्र बिन अ़ब्दुल्लाह (रह़.) कहते हैं कि ''अ़र्श को उतरता देखकर अहले मह़शर की आँखें फट जाएँगे जिस्म काँप उठेंगे, दिल दहल जाएँगे।'' अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) कहते हैं कि ''जिस वक़्त अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल मख़्लूक़ की त़रफ़ उतरेगा तो बीच में सत्तर हज़ार पर्दे होंगे, कुछ नूर के कुछ ज़ुल्मत के उस ज़ुल्मत में से एक ऐसी आवाज़ निकलेगी कि जिससे दिल पाश पाश हो जाएँगे।'' शायद उनकी यह रिवायत उनके दो थेलों में से ली हुई होगी, वल्लाहु आलम! उस दिन सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ही बादशाहत होगी। जैसे फ़र्मान है (لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ) (40/मोमिन : 16) आज मुल्क किसके लिए है? सिर्फ़ अल्लाह ग़ालिब व क़ह्हार के लिए। सही ह़दीस में है ''अल्लाह तआ़ला आसमानों को अपने

दाहिने हाथ से लपेट लेगा और ज़मीनों को अपने दूसरे हाथ में ले लेगा फिर कहेगा मैं मालिक हूँ मैं फ़ैसला करने वाला हूँ, ज़मीन के बादशाह कहाँ हैं? तकब्बुर करने वाले कहाँ हैं। (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सिफ़तुल क़ियामति वल जन्नति वन्नार : 2787, 2788; अबूदाऊद : 4732; मुस्नदे अबी यअ़ला : 5558) वह दिन कुफ़्फ़ार पर बड़ा भारी पड़ेगा।'' इसी का बयान और जगह भी है कि काफ़िरों पर वह दिन बहुत गिराँ गुज़रेगा, हाँ! मोमिनों को उस दिन मुत्लक़ घबराहट या परेशानी न होगी। हुज़ूर (ﷺ) से कहा गया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! पचास हज़ार साल का दिन बहुत ही लम्बा होगा, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मोमिन पर तो वह एक वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ से भी हल्का और आसान होगा। (अहमद : 3/75; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह रिवायत दराज अन अबी हिशाम की वजह से ज़ईफ़ है।) पैग़म्बर (ﷺ) के तरीक़े से और आप (ﷺ) के लाये हुए खुले हक़ से हटकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की राह के सिवा दूसरी राहों पर चलने वाले उस दिन बड़े ही नादिम होंगे और हसरत व अफ़सोस के साथ अपने हाथ चबाएँगे। भले उसका नुज़ूल उक़्बा बिन अबी मुईत के बारे में हो या किसी और के बारे में लेकिन हुक्म के ऐतिबार से यह हर ऐसे ज़ालिम को शामिल है जैसे फ़र्मान है (يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ) (33/अहज़ाब : 66) पूरी दो आयतों तक। पस हर ज़ालिम क़ियामत के दिन पछताएगा अपने हाथों को चबाएगा और आहवज़ारी करके कहेगा कि काश! मैंने नबी करीम (ﷺ) की राह ली होती, काश कि मैंने फ़लाँ की अक़ीदतमंदी न की होती, जिसने मुझे राहे हक़ से भटका दिया। उमय्या बिन ख़ल्फ़ का और उसके भाई उबय बिन ख़ल्फ़ का भी यही हाल होगा। और उनके सिवा ऐसे लोगों का भी यही हाल होगा, कहेगा कि उसने मुझे ज़िक्र यानी क़ुरआन से बेराह कर दिया हालाँकि वह मुझे पहुँच चुका था। अल्लाह तआला फ़र्माता है शैतान इंसान को रुस्वा करने वाला है, वह उसे नाहक़ की तरफ़ बुलाता है और हक़ से हटा देता है।

***

وَقَالَ الرَّسُولُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

तर्जुमा : ''रसूल (ﷺ) कहेंगे कि ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक मेरी उम्मत ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था। (30) इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन कुछ गुनहगारों को बना दिया है तेरा रब ही हिदायत करने वाला और मदद करने वाला काफ़ी है।'' (31)

क़ुरआने करीम को पसे पुश्त डालने वालों के ख़िलाफ़ नबी (ﷺ) की शिकायत (आ. 30, 31) : क़ियामत के दिन अल्लाह के सच्चे रसूल मुहम्मद (ﷺ) अपनी उम्मत की शिकायत जनाब बारी में करेंगे कि न यह लोग क़ुरआन की तरफ़ झुकते थे न रग़बत से क़बूलियत के साथ सुनते थे बल्कि औरों को भी उसके सुनने से रोकते थे, जैसे कि कुफ़्फ़ार का मक़ूला ख़ुद क़ुरआन में है कि वह कहते थे (لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ)

(الْغَوْا فِيْهِ) (41/हामीम सज्दा : 26) इस कुरआन को न सुनो और इसके पढ़े जाने के वक़्त शोरो गुल करो। यही इसका छोड़ रखना था न इस पर ईमान लाते थे न इसे समझने की कोशिश करते थे, न इस पर अ़मल था, न इसके अह़काम को बजा लाते थे, न इसके मनाकर्दा कामों से रुकते थे बल्कि इसके सिवा और कलामों में मशग़ूल व मुन्हमिक रहते थे जैसे शेअ़र अश्आर, ग़ज़लियात, बाजे गाजे, राग रागनियाँ इसी त़रह़ और लोगों के कलाम से दिलचस्पी लेते थे और उन पर आ़मिल थे यही इसे छोड़ देना था हमारी दुआ है कि अल्लाह तआ़ला करीम व मन्नान जो हर चीज़ पर क़ादिर है हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इसकी नामर्ज़ी के कामों से दस्तबरदार हो जाएँ और इसके पसंदीदा कामों की त़रफ़ झुक जाएँ वह हमें अपने कलाम की समझ दे और दिन रात इसी पर अ़मल करने की हिदायत दे जिससे वह ख़ुश हो वह करीम वह्हाब है। फिर फ़र्माया जिस त़रह़ ऐ नबी (ﷺ)! आपकी क़ौम में कुरआन को नज़रअंदाज़ कर देने वाले लोग हैं उसी त़रह़ अगली उम्मतों में भी ऐसे लोग थे जो ख़ुद कुफ़्र करके दूसरों को अपने कुफ़्र में शरीक किया करते थे और अपनी गुमराही के फैलाने की फ़िक्र में लगे रहते थे जैसे फ़र्मान है (وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا) (6/अन्आम : 112) यानी इस त़रह़ हमने हर नबी के दुश्मन शयात़ीन व इंसान बना दिये हैं। फिर फ़र्माया जो रसूल की ताबेदारी करे, किताबुल्लाह पर ईमान लाए अल्लाह की वह़ी पर यक़ीन करे, उसका हादी और नासिर ख़ुद अल्लाह तआ़ला है। मुश्रिकों की जो ख़स्लत ऊपर बयान हुई उससे उनकी ग़र्ज़ यह थी कि लोगों को हिदायत पर न आने दें और आप मुसलमानों पर ग़ालिब रहें, इसलिए कुरआन ने फ़ैसला किया कि यह नामुराद ही रहेंगे। अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों को ख़ुद हिदायत करेगा और मुसलमानों की ख़ुद मदद करेगा यह मामला और ऐसों का मुक़ाबला कुछ तुझसे ही नहीं तमाम अगले नबियों के साथ भी यही होता रहा है।

***

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ
فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا
﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۗ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ
اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ

وَّاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝٣٨ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا

تَتْبِيْرًا ۝٣٩ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ

كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝٤٠

तर्जुमा : "काफ़िर कहने लगे कि इस पर क़ुरआन सारा का साररा एक साथ ही क्यूँ न उतारा गया? इसी तरह हमने थोड़ा थोड़ा करके उतारा ताकि उससे हम तेरा दिल क़वी रखें हमने इसे ठहर ठहरकर ही पढ़ सुनाया है। (32) यह तेरे पास जो कोई मिसाल लाएँगे हम इसका सच्चा जवाब और उम्दा तौजीह तुझे बता देंगे। (33) जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किये जाएँगे वही बदतर मकान वाले और गुमराहतर रास्ते वाले हैं। (34) बिला शुब्हा हमने मूसा (अ.) को किताब दी और उनके साथ उनके भाई हारून (عليه السلام) को उनका वज़ीर बना दिया। (35) और कह दिया कि तुम दोनों उन लोगों की तरफ़ जाओ जो हमारी आयतों को झुठला रहे हैं फिर हमने उन्हें बिलकुल ही पामाल कर दिया। (36) क़ौमे नूह ने भी जब रसूलों को झूठा कहा तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें निशाने इब्रत बना दिया, हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब मुहय्या कर रखे हैं। (37) और आदियों और समूदियों और कूएँ वालों को और उनके बीच की बहुत सी उम्मतों को हलाक कर दिया। (38) हमने हर एक के सामने मिसालें बयान कीं फिर हर एक को बिलकुल ही तबाह व बर्बाद कर दिया। (39) यह लोग उस बस्ती के पास से भी आते जाते हैं जिन पर बुरी तरह की बारिश बरसाई गई क्या यह फिर भी उसे देखते नहीं? हक़ीक़त यह है कि इन्हें मरकर जी उठने का यक़ीन ही नहीं।" (40)

काफ़िरों का ऐतिराज़ और क़ुरआन मजीद को थोड़ा थोड़ा नाज़िल करने की हिक्मत (आ. 32 से 40) : काफ़िरों का एक ऐतिराज़ यह भी था कि जैसे तौरात, इंजील, ज़बूर वग़ैरह एक साथ पैग़म्बरों पर नाज़िल होती रहीं यह क़ुरआन एक ही दफ़ा हज़रत (ﷺ) पर क्यूँ नाज़िल न हुआ अल्लाह तआला ने इसके जवाब में फ़र्माया कि हाँ! वाक़ेई यह मुतफ़र्रिक़ तौर पर उतरा है तैइस बरस में नाज़िल हुआ है जैसी जैसी ज़रूरत पड़ती गई जो जो वाक़ियात होते रहे अह्काम नाज़िल होते गए ताकि मोमिनों का दिल जमा रहे। ठहर ठहरकर अह्काम उतरें ताकि एक दम अमल मुश्किल न हो पड़े वज़ाहत के साथ बयान हो जाए, समझ में आ जाए। तफ़्सीर भी साथ ही साथ होती रहे। हम इनके कुल ऐतिराज़ात का सही और सच्चा जवाब देंगे जो इनके बयान से भी ज़्यादा वाज़ेह होगा जो कमी यह बयान करेंगे हम इनकी तसल्ली कर देंगे। सुबह शाम, रात दिन, सफ़र हज़र में बार बार इस नबी (ﷺ) की इज़्ज़त और अपने ख़ास बन्दों की हिदायत के लिए हमारा कलाम हमारे नबी (ﷺ) की पूरी ज़िन्दगी तक उतरता रहेगा जिससे हुज़ूर (ﷺ) की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत भी ज़ाहिर होती रहेगी और अम्बिया (عليهم السلام) पर एक मर्तबा ही सारा कलाम आ गया और इस बेहतरीन नबी (ﷺ) से

बार बार अल्लाह तआला ख़िताब करता रहा और इस क़ुरआन की अज़्मत भी आशकारा हो जाए कि यह इतनी लम्बी मुद्दत में नाज़िल हुआ पस नबी (ﷺ) नबियों में आला और क़ुरआन भी सब कलामों में बाला और लतीफ़ा यह है कि क़ुरआन को दोनों बुज़ुर्गियाँ मिलीं। यह एक साथ लोहे महफ़ूज़ से मल-ए-आला में उतरा, लोहे महफ़ूज़ से पूरा का पूरा आसमाने दुनिया तक पहुँचा फिर ह़स्बे ज़रूरत थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल होता रहा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "सारा क़ुरआन एक दफ़ा ही लैलतुल क़द्र में आसमाने दुनिया पर नाज़िल हुआ फिर बीस साल तक ज़मीन पर उतरता रहा।" फिर इसके सबूत में आपने (وَ قُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ) (17/बनी इस्राईल : 106) तिलावत की। (ह़ाकिम : 2/368; व सनदुहू ह़सन) (अख़्रजहू नसाई अ़न अबी अ़ब्बास) इसके बाद काफ़िरों की जो दुर्गत क़ियामत के दिन होने वाली है उसका बयान फ़र्माया कि बदतरीन ह़ालत और क़बीह़तर ज़िल्लत में उनका ह़श्र जहन्नम की त़रफ़ होगा यह औंधे मुँह घसीटे जाएँगे, यही बुरे ठिकाने वाले और सबसे बढ़कर गुमराह हैं। एक शख़्स ने नबी अकरम (ﷺ) से पूछा कि काफ़िरों का ह़श्र मुँह के बल कैसे होगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जिसने इन्हें पैर के बल चलाया है वह सर के बल चलाने पर भी क़ादिर है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़ुरक़ान, बाब क़ौलुहू (अल्लज़ीना यह़शुरूना अ़ला वुजूहिहिम इला जहन्नम...) : 4760)

अम्बिया (عليهم السلام) की दुश्मन क़ौमें तबाह व बर्बाद हुईं : अल्लाह तआला मुश्रिकीन को और आप (ﷺ) के मुख़ालिफ़ीन को अपने अ़ज़ाबों से डरा रहा है कि तुमसे पहले के जिन लोगों ने मेरे नबियों की न मानी, उनसे दुश्मनी की, उनकी मुख़ालिफ़त की, मैंने उन्हें तहस नहस कर दिया। फ़िरऔनियों का ह़ाल तुम सुन चुके हो कि मूसा और हारून (عليهم السلام) को उनकी त़रफ़ नबी बनाकर भेजा लेकिन उन्होंने न माना जिसकी वजह से अ़ज़ाबे इलाही आ गया और सब हलाक कर दिये गए। क़ौमे नूह़ को देखो, उन्होंने भी हमारे रसूल को झुठलाया और चूँकि एक रसूल का झुठलाना तमाम नबियों का झुठलाना है इस वास्ते यहाँ रुसुल जमा करके कहा गया और यह इसलिए भी कि अगर बिलफ़र्ज़ इनकी त़रफ़ तमाम रसूल भी भेजे जाते तो भी यह सबके साथ वही सुलूक करते जो नूह़ (عليه السلام) के साथ किया, यह मत़लब नहीं कि उनकी त़रफ़ बहुत से रसूल भेजे गए थे उनके पास ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) ही आए थे, जो साढ़े नौ सौ साल तक उनमें रहे हर त़रह़ उन्हें समझाया बुझाया लेकिन सिवाए मअ़दूदे चंद के कोई ईमान न लाया, इसलिए अल्लाह तआला ने सबको डुबो दिया सिवाय उनके जो ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) के साथ कश्ती में थे। एक बनी आदम रूए ज़मीन पर बाक़ी न रहा, लोगों के लिए उनकी हलाकत इ़ब्रत की वजह बना दी गई। जैसे फ़र्मान है कि पानी की तुग़्यानी के वक़्त हमने तुम्हें कश्ती में सवार कर लिया यहाँ तक कि तुम उसे अपने लिए बाइ़से इ़ब्रत बनाओ और कश्ती को हमने तुम्हारे लिए उस तूफ़ान से नजात पाने और लम्बे लम्बे सफ़र तै करने का ज़रिया बना दिया ताकि तुम अल्लाह की नेअ़मत को याद रखो कि उसने आ़लमगीर तूफ़ान से तुम्हें बचा लिया और ईमान वालों और ईमान वालों की औलाद में रखा। आ़दियों और समूदियों का क़िस्सा तो बहुत बार बयान हो चुका है जैसे कि सूरह आ़राफ़ वग़ैरह में (अस्ह़ाबुर्रस्स) की बाबत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि "यह समूदियों की एक बस्ती वाले थे।" (त़ब्री : 19/269)

इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि "यह फ़ल्ज (यमामा) वाले थे जिनका ज़िक्र सूरह यासीन में है" इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि "आज़रबाइजान के एक कूएँ के पास इनकी बस्ती थी।" इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं "इन्हें कूएँ वाले इसलिए कहा जाता है कि इन्होंने अपने पैग़म्बर (ﷺ) को कूएँ में डाल दिया था।" इब्ने इस्हाक़ मुहम्मद बिन कअब (रह.) से नक़्ल करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया "एक स्याह फ़ाम गुलाम सबसे पहले जन्नत में जाएगा। अल्लाह तआला ने एक बस्ती वालों की तरफ़ अपना नबी भेजा था लेकिन उस बस्ती वालों में से सिवाय उसके कोई भी ईमान न लाया बल्कि उन्होंने अल्लाह के नबी को एक ग़ैर आबाद कूएँ में वीरान मैदान में डाल दिया और उसके मुँह पर एक बड़ी भारी चट्टान रख दी कि यह वहीं मर जाएँ यह गुलाम जंगल में जाता, लकड़ियाँ काटकर लाता उन्हें बाज़ार में बेचता और रोटी वग़ैरह ख़रीदकर कूएँ पर आता, उस पत्थर को सिरका देता जो कई आदमियों से खिसक न सकता था लेकिन अल्लाह तआला उसके हाथों सिरका देता, यह एक रस्सी में लटकाकर रोटी और पानी उस पैग़म्बर (ﷺ) के पास पहुँचा देता जिसे वह खा पी लेते मुद्दतों तक यूँ ही होता रहा एक मर्तबा यह गया, लकड़ियाँ काटीं चुनीं जमा कीं गठरी बाँधी इतने मे नींद का ग़ल्बा हुआ सो गया अल्लाह तआला ने उस पर नींद डाल दी सात साल तक वह सोता रहा सात साल के बाद फिर लकड़ियाँ बेचीं हस्बे आदत खाना ख़रीदा और वहीं पहुँचा, देखता है कि कुआँ तो वहाँ नहीं बहुत ढूँढ़ा लेकिन न मिला, यहाँ यह हुआ था कि क़ौम के दिल ईमान की तरफ़ राग़िब हुए उन्होंने जाकर अपने नबी (ﷺ) को कूएँ से निकाला, सबके सब ईमान लाए फिर नबी अपनी वफ़ात फ़ौत हो गए, नबी (ﷺ) भी अपनी ज़िन्दगी में उस हब्शी गुलाम को तलाश करते रहे लेकिन उसका पता न चला। फिर उस नबी के इंतिक़ाल के बाद यह शख़्स अपनी नींद से जगाया गया, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं पस यह हब्शी गुलाम है जो सबसे पहले जन्नत में जाएगा।" (तब्री : 19/271; यह रिवायत इब्ने इस्हाक़ के अन्अना और मुर्सल होने की वजह से ज़ईफ़ है।) यह रिवायत मुर्सल है और इसमें ग़राबत व नकारत है और शायद इदराज भी है, वल्लाहु आलम! इस रिवायत को इन अस्हाबे रस्स पर चस्पा भी नहीं कर सकते इसलिए कि यहाँ तो मज़्कूर है कि उन्हें हलाक कर दिया गया हाँ! यह एक तौजीह तो हो सकती है कि यह लोग तो हलाक कर दिये गए फिर उनकी नस्ल ठीक हो गईं और उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ मिली। इमाम इब्ने जरीर (रह.) का फ़र्मान है कि "अस्हाबे रस्स वही हैं जिनका ज़िक्र सूरह बुरूज में है, जिन्होंने ख़ंदक़ें खुदवाई थीं।" वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माया कि और भी उनके बीच बहुत सी उम्मतें आई जो हलाक कर दी गईं हमने उन सबके सामने अपना कलाम बयान किया था दलीलें पेश की थीं, मोजिज़े दिखाए थे उज़्र मिटा दिये थे फिर सबको ग़ारत और बर्बाद कर दिया। जैसे फ़र्मान है कि नूह (ﷺ) के बाद की भी बहुत सी बस्तियाँ हमने ग़ारत कर दीं, क़र्न कहते हैं उम्मत को जैसे फ़र्मान है कि इनके बाद हमने बहुत सी क़र्न यानी उम्मतें पैदा कीं। क़र्न की मुद्दत कुछ के नज़दीक एक सौ बीस साल हैं, कोई कहता है सौ साल कोई कहता है अस्सी साल कोई कहता है चालीस साल और भी बहुत से क़ौल हैं ज़्यादा ज़ाहिर बात यह है कि एक ज़माना वाले एक क़र्न हैं जब वह सब मर जाएँ तो दूसरा क़र्न शुरू होता है जैसे बुख़ारी व मुस्लिम में है सबसे बेहतर ज़माना मेरा ज़माना है। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले अस्हाबिन्नबी (ﷺ) : 3651; सहीह मुस्लिम : 2535)

फिर फ़र्माता है कि सदूम नामी बस्ती के पास से तो यह अ़रब बराबर गुज़रते रहते हैं यहीं लूती आबाद थे जिन पर ज़मीन उलट दी गई और आसमान से पत्थर बरसाये गए और बुरी बारिश उन पर बरसी जो संगलाख़ पत्थरों की थी यह दिन रात वहाँ से आते जाते रहते हैं फिर भी अ़क़्ल को काम में नहीं लेते। यह बस्तियाँ तो तुम्हारी गुज़रगाह हैं, इनके वाक़ियात मशहूर हैं, क्या तुम इन्हें नहीं देखते? यक़ीनन देखते हो लेकिन इब्रत की आँखें ही नहीं कि समझ सको और ग़ौर कर सको कि अपनी बदकारियों की वजह से वह अल्लाह के अ़ज़ाबों के शिकार हो गए भुस उड़ा दिया गया। बेनिशान कर दिये गए बुरी तरह खोजड़ा निकाल दिया गया, उसे सोचे तो वह जो क़ियामत का क़ाइल हो लेकिन इन्हें क्या इब्रत हासिल होगी जो क़ियामत ही के इंकारी हैं दोबारा ज़िन्दा होने पर यक़ीन नहीं रखते।

***

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾ إِنْ كَادَ
لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾ أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾ أَمْ
تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ
سَبِيلًا ﴿٤٤﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا
الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "तुम्हें जब कभी देखते हैं तो तुमको चिढ़ाने लगते हैं। कि क्या यही वह शख़्स है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने रसूल बनाकर भेजा है। (41) वह तो कहिये कि हम जमे रहे वरना इन्होंने तो हमें बहका देने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी यह जब अ़ज़ाबों को देखेंगे तो इन्हें साफ़ मालूम हो जाएगा कि पूरी तरह राह से भटका हुआ कौन था? (42) क्या तूने उसे भी देखा है जो अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को अपना मअ़बूद बनाए हुए है, क्या तू उसका ज़िम्मेदार हो सकता है? (43) क्या तू इसी ख़्याल में है कि इनमें के अक्सर सुनते या समझते हैं वह तो निरे चौपाये जैसे हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा भटके हुए। (44) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने साये को किस तरह

फैला दिया है? अगर चाहता तो उसे ठहरा हुआ ही कर देता। फिर हमने आफ़ताब को उसका रहनुमा बनाया। (45) फिर हमने उसे सहज सहज अपनी तरफ़ खींच लिया। (46) वही है जिसने रात को तुम्हारे लिए पर्दा बनाया और नींद राहत बनाई और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त।'' (47)

नाआक़िबत अंदेश का नबी (ﷺ) से इस्तिहज़ा (आ. 41 से 47) : काफ़िर लोग अल्लाह के बरतर व बेहतर पैग़म्बर हज़रत अहमद मुज्तबा मुहम्मद (ﷺ) को देखकर हंसी मज़ाक़ उड़ाते थे ऐबजोई करते थे और आप (ﷺ) में नुक़्सान बतलाते थे। यही हालत हर ज़माने के कुफ़्फ़ार की अपने नबियों के साथ रही। जैसे फ़र्मान है (وَ لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ) (6/अन्आम : 10) तुझसे पहले के रसूलों का भी मज़ाक़ उड़ाया गया। कहने लगे वह तो कहिए कि हम जमे रहे वरना इस रसूल (ﷺ) ने तो हमें बहकाने में कोई कमी न रखी थी। अच्छा इन्हें अन्क़रीब मालूम हो जाएगा कि हिदायत पर यह कहाँ तक थे? अज़ाब को देखते ही आँखें खुल जाएँगी, असल यह है कि उन लोगों ने ख़्वाहिशपरस्ती शुरू कर रखी है। नफ़्स व शैतान जिस चीज़ को अच्छी ज़ाहिर करता है यह भी उसे अच्छी समझने लगते हैं, भला इनका ज़िम्मेदार तू कैसे ठहर सकता है? हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) का बयान है कि ''जाहिलियत में अरब की यह हालत थी कि जहाँ किसी सफ़ेद गोल मोल पत्थर को देखा उसकी डँडवत करने लगे, उससे अच्छा कोई नज़र पड़ गया तो उसके सामने झुक गए और पहले को छोड़ दिया।'' (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/260) फिर फ़र्माता है यह तो चौपायों से भी बदतर हैं, न इनके कान हैं, न दिल हैं, चौपाये तो ख़ैर क़ुदरतन आज़ाद हैं लेकिन यह जो इबादत के लिए पैदा किये गए थे यह उनसे भी ज़्यादा बहक गए बल्कि अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत करने लगे और क़ियामे हुज्जत के बाद रसूलों के पहुँच चुकने के बाद भी अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं झुकते उसकी तौहीद और रसूल (ﷺ) की रिसालत को नहीं मानते।

अल्लाह तआला की क़ुदरत के दलाइल : अल्लाह तआला के वुजूद और उसकी क़ुदरत पर दलीलें बयान हो रही हैं कि मुख़्तलिफ़ और मुतज़ाद चीज़ों को वह पैदा कर रहा है। साये को वह बढ़ाता है कहते हैं कि यह वक़्त सुबह सादिक़ से लेकर सूरज के निकलने तक का है अगर वह चाहता तो उसे एक ही हालत पर रख देता। जैसे फ़र्मान है कि अगर वह रात ही रात रखे तो कोई दिन नहीं कर सकता और अगर वह दिन ही दिन करे तो कोई रात नहीं ला सकता। अगर सूरज न निकलता तो साये का हाल ही मालूम न होता हर चीज़ अपनी ज़द से पहचानी जाती है साये के पीछे धूप, धूप के पीछे साया, यह भी क़ुदरत का निजाम है। फिर सहज सहज हम इसे यानी साये को या सूरज को अपनी तरफ़ समेट लेते हैं एक घटता जाता है दूसरा बढ़ता जाता है और यह इंक़िलाब तेज़ी से होता जाता है। कोई जगह सायादार बाक़ी नहीं रहती सिर्फ़ घरों के छप्परों के और दरख़्तों के नीचे साया रह जाता है और इनके भी ऊपर धूप खुली हुई होती है। आहिस्ता आहिस्ता थोड़ा थोड़ा करके हम इसे अपनी तरफ़ समेट लेते हैं। उसी ने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया है कि वह तुम्हारे वुजूद पर छा जाती है और उसे ढाँप लेती है। जैसे फ़र्मान है क़सम है रात की जबकि ढाँप ले, उसी ने नींद को सबबे राहत व सुकून बनाया है कि उस वक़्त हरकत मौक़ूफ़ हो जाती है और दिन भर के काम काज से जो थकन चढ़ गई थी

वह उस आराम से उतर जाती है और बदन को और रूह को राहत हासिल हो जाती है। फिर दिन को उठ खड़े होते हो, फैल जाते हो। और रोज़ी की तलाश में लग जाते हो। जैसे फ़र्मान है कि उसने अपनी रहमत से रात दिन मुक़र्रर कर दिया है कि तुम सुकून व आराम भी हासिल कर लो और अपनी रोज़ियाँ भी तलाश कर लो।

***

وَهُوَ الَّذِیْٓ اَرْسَلَ الرِّیٰحَ بُشْرًا بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا
۴۸ لِّنُحْیِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّیْتًا وَّنُسْقِیَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِیَّ كَثِیْرًا ۴۹ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ
بَیْنَهُمْ لِیَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۵۰

तर्जुमा : "वही है जो रहमत की बारिश से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवाओं को भेजता है और हम आसमान से पाक पानी बरसाते हैं। (48) ताकि उसके ज़रिये से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें और उसे हम अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से चौपायों और इंसानों को पिलाते हैं। (49) बेशक हमने इसे इनके दरम्यान तरह तरह से बयान किया ताकि वह नसीहत हासिल करें। मगर फिर भी अकसर लोगों ने सिवाय नाशुक्री के माना नहीं।" (50)

बारिश अल्लाह तआला का बहुत बड़ा इन्आम है (आ. 48 से 50) : अल्लाह तआला अपनी एक और क़ुदरत बयान कर रहा है कि वह बारिश से पहले बारिश की ख़ुशख़बरी देने वाली हवाएँ चलाता है उन हवाओं में रब ने बहुत से ख़्वास रखे हैं। कुछ बादलों को परागंदा कर देती हैं कुछ उन्हें उठाती हैं कुछ उन्हें ले चलती है, कुछ उन्हें ख़नक और भीगी हुई चलकर लोगों को बाराने रहमत की तरफ़ मुतवज्जह कर देती हैं। कुछ उससे पहले ज़मीन को तैयार कर देती हैं कुछ बादलों को पानी से भर देती हैं और उन्हें बोझल कर देती हैं। आसमान से हम पाक साफ़ पानी बरसाते हैं कि वह पाकीज़गी का आला बने यहाँ तहूर ऐसा ही है जैसा सहूर और वजूर वग़ैरह। कुछ ने कहा है कि यह फ़ऊल मअनी में फ़ाइल के है या यह मुबालग़ा के लिए मब्नी है या मुतअद्दी के लिए यह सब क़ौल लुग़त और हुक्म के ऐतिबार से मुश्किल हैं पूरी तफ़्सील के लायक़ यह मक़ाम नहीं, वल्लाहु आलम! हज़रत साबित बिनानी (रह.) का बयान है कि "मैं हज़रत अबुल आलिया (रह.) के साथ बारिश के ज़माने में निकला, बसरा के रास्ते उस वक़्त बड़े गंदे हो रहे थे आपने ऐसे रास्ते पर नमाज़ अदा की मैंने आपको तवज्जोह दिलाई तो आपने फ़र्माया इसे आसमान के पाक पानी ने पाक कर दिया। अल्लाह फ़र्माता है कि हम आसमान से पाक पानी बरसाते हैं।" हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह ने इसे पाक उतारा है इसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती।"

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया कि बीरे बोज़ाआ से वुज़ू कर लें? यह एक कुआँ है जिसमें गंदगी और कुत्तों के गोश्त फेंके जाते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "पानी

पाक है इसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती।'' (अह़मद : 3/15, 31; अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाब मा जाअ फ़ी बीरे बोज़ाआ : 66; व सनदुहू ह़सन; तिर्मिज़ी : 66; नसाई : 327; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1304; मआनियल आसार : 1/12; बैहक़ी : 1/257; इब्नुल जारूद : 47; दारे क़ुत्नी : 1/29) इमाम शाफ़ेई (रह़.) और इमाम अह़मद (रह़.) ने इसे रिवायत किया है। अबूदाऊद और इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) ने इसे सही कहा है नसाई में भी यह रिवायत है अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के दरबार में एक बार पानी का ज़िक्र छिड़ा तो ख़ालिद बिन यज़ीद (रह़.) ने कहा कुछ पानी आसमान के होते हैं कुछ पानी वह होता है जिसे बादल समुन्द्र से पीता है और उसे गरज कड़क और बिजली मीठा कर देती है लेकिन इससे ज़मीन में पैदावार नहीं होती, हाँ! आसमानी पानी से पैदावार उगती है। इक्रिमा (रह़.) फ़र्माते हैं कि आसमान के पानी के हर क़तरा से चारा घास वग़ैरह पैदा होता है या समुन्द्र में लूअ लूअ और मोती पैदा होते हैं यानी फ़िल बर्रि वल बह़रि दुर्रुन' ज़मीन में गेहूँ और समुन्द्र में मोती। फिर फ़र्माया कि इसी से हम ग़ैर आबाद बंजर ख़ुश्क ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं वह लहलहाने लगती है और तरोताज़ा हो जाती है। जैसे फ़र्मान है (فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ وَرَبَتْ) (22/ह़ज्ज : 5) मुर्दा ज़मीन के ज़िन्दा हो जाने के अलावा यह पानी ह़ैवानों और इंसानों के पीने के काम में आता है, उनके खेतों और बाग़ात को पिलाया जाता है। जैसे फ़र्मान है कि वह अल्लाह वही है जो लोगों की कामिल नाउम्मीदी के बाद उन पर बारिशें बरसाता है। और आयत में है कि अल्लाह के आसारे रह़मत को देखो कि किस तरह़ मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है। फिर फ़र्माता है साथ ही मेरी क़ुदरत का एक नज़ारा यह भी देखो कि बादल उठता है गरजता है लेकिन जहाँ मैं चाहता हूँ बरसता है इसमें ह़िक्मत व ह़ुज्जत है।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि ''कोई साल किसी साल से कमो बेश बारिश का नहीं लेकिन अल्लाह तआ़ला जहाँ चाहे बरसाये जहाँ से चाहे फेर ले।'' (त़ब्री : 19/280; बैहक़ी : 1/257; इब्नुल जारूद : 47; दारे क़ुत्नी : 1/29) पस चाहिए था कि उन निशानात को देखकर अल्लाह की उन ज़बरदस्त ह़िक्मतों को और क़ुदरतों को सामने रखकर इस बात को भी मान लेते कि बेशक हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे और यह भी जान लेते कि बारिशें हमारे गुनाहों की शामत से बंद कर ली जाती हैं तो हम गुनाह छोड़ दें लेकिन उन लोगों ने ऐसा न किया बल्कि हमारी नेअ़मतों पर और नाशुक्री की।

एक मुर्सल ह़दीस इब्ने अबी ह़ातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत जिब्रईल (عليه السلام) से कहा कि ''मैं बादल की निस्बत कुछ पूछना चाहता हूँ'' ह़ज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, बादलों पर जो फ़रिश्ता मुक़र्रर है वह यह है आप इनसे जो चाहें पूछ लें। उसने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे पास तो अल्लाह का ह़ुक्म आता है कि फ़लाँ फ़लाँ शहर में इतने इतने क़त़रे बरसाओ। (यह रिवायत मुर्सल है और इसकी सनद में उ़मर मौला ग़फ़रुह ज़ईफ़ और कसीरुल इर्साल रावी है। (तक़्रीब : 2/59; रक़म : 469) हम तअ़मीले इर्शाद करते हैं। बारिश जैसी नेअ़मत के वक़्त अक्सर लोगों को कुफ़्र का एक त़रीक़ा यह भी है कि वह कहते हैं कि हम फ़लाँ फ़लाँ सितारे की वजह से बारिश किये गए। (त़ब्री : 19/280) चुनाँचे स़ह़ीह़ ह़दीस में है कि एक बार बारिश बरस चुकने के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''लोगों! जानते हो तुम्हारे रब ने क्या फ़र्माया?'' उन्होंने कहा अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानने वाला है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सुनो! अल्लाह ने

फ़र्माया, मेरे बन्दों में से बहुत से मेरे साथ मोमिन हो गए और बहुत से काफ़िर हो गए जिन्होंने कहा कि सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़्लो करम से यह बारिश हम पर बरसी है वह तो मेरे साथ ईमान रखने वाले और सितारों से कुफ़्र करने वाले हुए और जिन्होंने कहा कि हम पर फ़लाँ फ़लाँ सितारे की वजह से पानी बरसाया गया, उन्होंने मेरे साथ कुफ़्र किया और तारों के साथ ईमान लाए।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब यस्तक़्बिलुल इमामुन्नास इज़ा सल्लम : 846; सहीह मुस्लिम : 71; अबूदाऊद : 3906; अहमद : 4/117; इब्ने हिब्बान : 188)

***

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾

तर्जुमा : ''अगर हम चाहते तो हर हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51) पस तू काफ़िरों का कहना न कर और बहुक्मे इलाही उनसे पूरी ताक़त से बड़ा जिहाद कर। (52) वही है जिसने दो समुन्द्र आपस में मिला रखे हैं यह है मीठा और मज़ेदार और यह है खारी कड़वा और इन दोनों के बीच एक पर्दा और मज़बूत ओट कर दी। (53) वह है जिसने पानी से इंसान को पैदा किया फिर उसे नसब वाला और ससुराली रिश्तों वाला कर दिया तेरा परवरदिगार हर चीज़ पर क़ादिर है।'' (54)

क़ुदरते इलाही की एक और अजीब निशानी (आ. 51 से 54) : अगर रब चाहता तो हर हर बस्ती में एक एक नबी भेज देता लेकिन उसने तमाम दुनिया की तरफ़ सिर्फ़ एक ही नबी भेजा है और फिर उसे हुक्म दे दिया है कि इस क़ुरआन का वअ़ज़ सबको सुना दे जैसे फ़र्मान है कि मैं इस क़ुरआन से तुम्हें और जिस जिसको यह पहुँचे होशियार कर दूँ और उन तमाम जमाअ़तों में से जो भी इससे कुफ़्र (इंकार) करे उसके ठहरने की जगह जहन्नम है। और फ़र्मान है कि तू मक्का वालों को और चारों तरफ़ के लोगों को आगाह कर दे। और आयत में है कि ऐ नबी (ﷺ)! आप कह दीजिए कि, ''ऐ तमाम लोगों! मैं तुम सबकी तरफ़ रसूलुल्लाह बनकर आया हूँ।'' बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है ''मैं लाल व काले सबकी तरफ़ भेजा गया हूँ।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अल्मसाजिदु व मवाज़िउ़स्सलात : 521) बुख़ारी व मुस्लिम की और हदीस में है कि ''तमाम अम्बिया अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते रहे और मैं आ़म (तमाम) लोगों की तरफ़ भेजा गया हूँ।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तयम्मुम, बाब 1; हदीस 335; सहीह मुस्लिम : 521) फिर फ़र्माया, काफ़िरों का कहना न मानना और इस क़ुरआन के साथ उनसे बहुत बड़ा जिहाद करना। जैसे इर्शाद है (يَاَيُّهَا

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ (66/तहरीम : 9) यानी ऐ नबी (ﷺ)! काफ़िरों से और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करते रहो। उसी रब ने पानी को दो तरह का कर दिया है मीठा और खारी और बदमज़ा होता है। अल्लाह तआला की इस नेअमत पर भी शुक्र करना चाहिए कि उसने मीठे पानी की चारों तरफ़ रेल पेल कर दी कि लोगों को नहाने धोने और अपने खेत और बाग़ात को पानी देने में आसानी रहे। मश्रिक़ों और मग़्रिबों में मुहीत समुन्द्र खारी पानी के उसने बहा दिये जो ठहरे हुए हैं इधर उधर बहते नहीं लेकिन लहरें मार रहे हैं। तलातुम पैदा कर रहे हैं कुछ में मद्दो जज़्र है। हर महीने की शुरुआती तारीख़ों में तो उनमें ज़्यादती और बहाव होता है फिर चाँद के घटने के साथ वह घटता जाता है यहाँ तक कि आख़िर में अपनी हालत पर आ जाता है फिर जहाँ चाँद चढ़ा यह भी चढ़ने लगा चौदह तारीख़ तक बराबर चाँद के साथ चढ़ता रहा। फिर उतरना शुरू हुआ। इन तमाम समुन्द्रों को उसी अल्लाह ने पैदा किया है वह पूरी और ज़बरदस्त क़ुदरत वाला है। खारी और गर्म पानी भले पीने के काम नहीं आता लेकिन हवाओं को साफ़ कर देता है जिससे इंसानी ज़िन्दगी हलाकत में न पड़े उसमें जो जानवर मर जाते हैं उनकी बदबू दुनिया वालों को सता नहीं सकती और खारी पानी के सबब से उसकी हवा सेहत बख़्श और उसका मज़ा पाक तय्यिब होता है। हुज़ूर (ﷺ) से जब समुन्द्र के पानी की निस्बत सवाल हुआ कि क्या हम इससे वुज़ू कर लें? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "इसका पानी पाक है और इसका मुर्दा हलाल है।" (अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाबुल वुज़ू, बिमाइल बह्र : 83; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 69; नसाई : 333; इब्ने माजा : 386) मालिक, शाफ़ेई और अहले सुनन (रह.) ने इसे रिवायत किया है और इस्नाद भी सही है। फिर उसकी इस क़ुदरत को देखो कि महज़ अपनी ताक़त से और अपने हुक्म से एक को दूसरे से अलग रखा है न खारी मीठे में मिल सके न मीठा खारी में मिल सके। जैसे फ़र्मान है (مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۝) (55/रहमान : 19, 20) उसने दोनों समुन्द्र जारी कर दिये कि दोनों मिल जाएँ और उन दोनों के बीच एक पर्दा क़ायम कर दिया है कि हद से न बढ़ें, फिर तुम अपने रब की किस नेअमत के इंकारी हो? और आयत में है कि कौन है वह जिसने ज़मीन को जाए क़रार बनाया और उसमें जगह जगह दरिया जारी कर दिये उस पर पहाड़ क़ायम कर दिये और दो समुन्द्रों के बीच ओट कर दी, क्या अल्लाह के साथ और कोई मअबूद भी है? बात यह है कि इन मुश्रिकीन के अक्सर लोग बेइल्म हैं उसने इंसान को कमज़ोर नुत्फ़े से पैदा किया है फिर उसे ठीक ठाक और बराबर बनाया है और अच्छी पैदाइश में पैदा करके फिर उसे मर्द या औरत बनाया। फिर उसके लिए नसब के रिश्तेदार बना दिये फिर कुछ मुद्दत बाद ससुराली रिश्ते क़ायम कर दिये। इतने बड़े क़ादिर अल्लाह की क़ुदरतें तुम्हारे सामने हैं।

***

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝٥٥ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٥٦ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ

اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝٥٧ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ وَكَفٰى

بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَا ۝٥٨ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ

اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْــَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٩ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا

لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۤ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۝٦٠ (السجدہ)

तर्जुमा : "यह अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं जो न तो कोई नफ़ा दे सकें, न कोई नुक़्सान पहुँचा सकें। काफ़िर तो है ही अपने रब की त़रफ़ पीठ करने वाला। हमने तो तुझे ख़ुशख़बरी और डर सुनाने वाला नबी बनाकर भेजा है। (56) कह दे कि मैं क़ुरआन के पहुँचाने पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर जो शख़्स अपने रब की त़रफ़ राह पकड़ना चाहे। (57) उस हमेशा ज़िन्दा अल्लाह पर भरोसा कर जिसे कभी मौत नहीं आनी और उसकी ता'रीफ़ बयान करता रह, वह अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी ख़बरदार है। (58) वही है जिसने आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की सब चीज़ों को छः दिन में पैदा कर दिया। फिर अ़र्श पर जलवा फ़र्मा हुआ। वह रह़मान है, तू उसके बारे में किसी ख़बरदार से पूछ ले। (59) इनसे जब भी कहा जाता है कि रह़मान को सज्दा करो तो जवाब देते हैं रह़मान है? क्या हम उसे सज्दा करें जिसका तू हमें हुक्म दे दे इनका तो बिदकना ही बढ़ता है।" (60)

अल्लाह तआ़ला पर ही भरोसा करना चाहिए (आ. 55 से 60) : मुश्रिकों की जिहालत बयान हो रही है कि वह बुतपरस्ती करते हैं। और बग़ैर दलील व हुज्जत उनकी पूजा करते हैं, जो न नफ़ा के मालिक न नुक़्सान के, सिर्फ़ बाप दादों की देखा देखी नफ़्सानी ख़्वाहिशात से उनकी मुह़ब्बत व अ़ज़्मत दिल में जमाये हुए हैं और अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह (ﷺ) से दुश्मनी और मुख़ालिफ़त रखते हैं। शैत़ानी लश्कर में शामिल हो गए हैं और रह़मानी लश्कर के मुख़ालिफ़ हो गए हैं लेकिन याद रखें कि अंजामकार ग़ल्बा अल्लाह वालों को ही होगा। यह इस उम्मीद में है कि यह मअ़बूदाने बात़िल इनकी मदद करेंगे ह़ालाँकि सिर्फ़ ग़लत़ है यह ख़्वाह मख़्वाह इनकी त़रफ़ से सीना सिपर हो रहे हैं। अंजामकार मोमिनों के ही हाथ रहेगा, दुनिया व आख़िरत में इनका परवरदिगार इनकी मदद करेगा। इन कुफ़्फ़ार को तो शैत़ान सिर्फ़ अल्लाह की मुख़ालिफ़त पर उभारता है और कुछ नहीं। सच्चे अल्ल्लह की अ़दावत इनके दिल में डाल देता है। शिर्क की मुह़ब्बत बिठा देता है यह अल्लाह के अह़काम से पीठ फेर लेते हैं फिर अल्लाह तआ़ला रसूल (ﷺ) से ख़ित़ाब करके फ़र्माता है कि हमने तुम्हें मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और काफ़िरों को डराने वाला बनाकर भेजा है। इत़ाअ़तगुज़ारों को जन्नत की ख़ुशख़बरी दीजिए और नाफ़र्मानों को जहन्नम के अ़ज़ाबों से ख़बरदार कर दीजिए। लोगों में आ़म त़ौर पर ऐलान कर दीजिए कि मैं अपनी तब्लीग़ का बदला अपने वअ़ज़ का मुआ़वज़ा तुमसे नहीं चाहता।

मेरा इरादा इससे सिवाय अल्लाह तआला की रज़ामंदी की तलश के ऊपर कुछ नहीं। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तुममें से जो राहे रास्त पर आना चाहे उसके सामने सही रास्ता नुमायाँ कर दूँ। ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! अपने तमाम कामों में उस अल्लाह पर भरोसा रखिए जो हमेशगी और दवाम वाला है जो मौत व फ़ौत से पाक है जो पहले और आख़िर, खुले व छुपे और हर चीज़ का आलिम है जो दाइम, बाक़ी, समरदी, अबदी, ह़य्य व क़य्यूम है। जो हर चीज़ का मालिक है और रब है उसको अपना मावा मल्जा ठहरा ले। उसी की ज़ात ऐसी है कि उस पर भरोसा किया जाए हर घबराहट में उसी की त़रफ़ झुका जाए। वह काफ़ी है वही नासिर है। वही मुईद व मुज़्फ़िर है। जैसे फ़र्मान है (يَاأَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ) (5/माइदा : 67) ऐ नबी (ﷺ)! जो कुछ आपकी त़रफ़ आपके रब की जानिब से उतारा गया है उसे पहुँचा दीजिए। अगर आपने यह न किया तो आपने ह़क़्क़े रिसालत अदा नहीं किया। आप बेफ़िक्र रहिए, अल्लाह आपको लोगों के बुरे इरादे से बचा लेगा। एक मुर्सल ह़दीस में है कि मदीना त़य्यिबा की किसी गली में ह़ज़रत सलमान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) को सज्दा करने लगे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ऐ सलमान! सज्दा न कर सज्दे के लायक़ तो वह है जो हमेशा की ज़िन्दगी वाला है, जिस पर कभी मौत नहीं।'' (इब्ने अबी ह़ातिम) और उसकी तस्बीह़ व ह़म्द बयान करता रह। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) उसकी तअमील में फ़र्माया करते थे (सुब्ह़ान-कल्लाहुम्मा रब्बना वबि ह़म्दिका) (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अदुआउ फ़िर्रुकूअ : 794; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 484; अबूदाऊद : 877; इब्ने माजा : 889; अह़मद : 6/43; इब्ने ह़िब्बान : 1929; बैहक़ी : 2/109) मुराद इससे यह है कि इबादत अल्लाह ही की कर, भरोसा सिर्फ़ उसी की ज़ात पर कर। जैसे फ़र्मान है मश्रिक मग़्रिब का रब वही है। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, तू उसी को अपना कारसाज़ समझ और जगह है (فَاعْبُدْهُ وَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ) (11/हूद : 123) उसी की इबादत कर उसी पर भरोसा रख। और आयत में है कि ऐलान कर दे कि उसी रह़मान के हम बंदे हैं और उसी पर हमारा कामिल भरोसा है उस पर बन्दों के करतूत ज़ाहिर हैं कोई ज़र्रा उससे छुपा हुआ नहीं कोई भेद की बात भी उससे मख़्फ़ी नहीं। वही तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ मालिक क़ाबिज़ है, वही हर जानदार का रोज़ीरसाँ है उसने अपनी कुदरत व अज़्मत से आसमान व ज़मीन जैसी ज़बरदस्त मख़्लूक़ को छः दिन में पैदा कर दिया है फिर अर्श पर क़रार पकड़ा है, कामों की तदबीरों का अंजाम उसी की त़रफ़ से और उसी के हुक्म और तदबीर का मरहून है। उसका फ़ैसला सच्चा और अच्छा होता है, जो ज़ाते बारी का आलिम हो जो सिफ़ाते इलाही से आगाह हो, तू उससे उस रब की शान पूछ ले। यह ज़ाहिर है कि अल्लाह की ज़ात की पूरी ख़बरदारी रखने वाले उसकी ज़ात से पूरे त़ौर पर वाक़िफ़ हुज़ूर (ﷺ) ही थे जो दुनिया व आख़िरत में तमाम औलादे आदम के अलल इत़्लाक़ सरदार थे, जो एक बात भी अपनी त़रफ़ से नहीं कहते थे बल्कि जो फ़र्माते थे वह फ़र्मूदा रह़मान ही होता था। आपने जो जो सिफ़तें अल्लाह की बयान की हैं सब ह़क़ हैं। आप (ﷺ) ने जो ख़बरें दीं सब सच हैं, सच्चे इमाम आप (ﷺ) ही हैं तमाम झगड़ों का फ़ैसला आप (ﷺ) ही के हुक्म से किया जा सकता है। जो आप (ﷺ) की बात बतलाये वह सच्चा जो आपके ख़िलाफ़ कहे, वह मर्दूद ख़्वाह कोई भी हो। अल्लाह का फ़र्मान वाजिबुल इज़्आन खुले त़ौर से स़ादिर हो चुका (فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ) (4/निसाअ : 59) तुम अगर किसी चीज़ में झगड़ो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की त़रफ़ लौटाओ।

और फ़र्मान है (وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ) (42/शूरा : 10) तुम जिस चीज़ में भी इख़्तिलाफ़ करो उसका फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ है और फ़र्मान है (وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا) (6/अन्आम : 115) तेरे रब की बातें जो ख़बरों में सच्ची और हुक्म व मुमानिअत में अदल की हैं, पूरी हो चुकीं। यह भी मरवी है कि मुराद इससे क़ुरआन है मुश्रिकीन अल्लाह के सिवा औरों को सज्दे करते थे उनसे जब रहमान को सज्दा करने को कहा जाता था तो कहते थे कि हम रहमान को नहीं जानते। वह इससे इंकारी थे कि अल्लाह का नाम रहमान है जैसे हुदेबिया वाले साल हुज़ूर (ﷺ) ने सुलहनामा के लिखने वाले से फ़र्माया (बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम) लिखो। तो मुश्रिकीन ने कहा, न हम रहमान को जानते हैं न रहीम को, हमारे रिवाज के मुताबिक़ बिइस्मिकल्लाहुम्मा लिखें। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूत फ़िल जिहादि वल मुसालिहति अहलुल हर्ब व किताबतिश्शुरूत : 2731, 2732; सहीह मुस्लिम : 1784) इसके जवाब में यह आयत उतरी (17/बनी इस्राईल : 110) कह दे कि अल्लाह को पुकारो या रहमान को जिस नाम से उसे चाहो पुकारो, उसके बहुत से बेहतरीन नाम हैं। वही अल्लाह है वही रहमान है। पस मुश्रिकीन कहते थे कि क्या सिर्फ़ तेरे कहने से हम ऐसा कर लें। अल्ग़र्ज़ वह और नफ़रत में बढ़ गए। बरख़िलाफ़ मोमिनों के कि वह अल्लाह की इबादत करते हैं जो रहमान व रहीम है उसी को इबादत के लायक़ समझते हैं और उसी के लिए सज्दे करते हैं। उलमा (रह.) का इत्तिफ़ाक़ है कि सूरह फ़ुरक़ान की इस आयत के पढ़ने और सुनने वाले पर सज्दा शर्त है जैसे कि उसकी जगह इसकी तफ़्सील मौजूद है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

***

تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : "बाबरकत है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें आफ़ताब बनाया और मुनव्वर महताब भी। (61) उसी ने रात और दिन को एक दूसरे का ख़लीफ़ा बनाया, उस शख़्स की नसीहत के लिए जो नसीहत हासिल करने या शुक्रगुज़ारी करने का इरादा रखता हो।"(62)

आफ़ताब व महताब और दिन रात अल्लाह तआला की क़ुदरत के दलाइल (आ. 61, 62) : अल्लाह तआला की बड़ाई, अज़्मत, क़ुदरत, रिफ़अत को देखो कि उसने आसमान में बुर्ज बनाए। इससे मुराद या तो बड़े बड़े सितारे हैं या चौकीदारी के बुर्ज हैं। पहला क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है। और हो सकता है कि बड़े बड़े सितारों से मुराद भी यही बुर्ज हों। और आयत में है कि आसमाने दुनिया को हमने सितारों के साथ मुज़य्यन बनाया। सिराज से मुराद सूरज है जो चमकता रहता है। और मिस्ल चराग़ के है। जैसे फ़र्मान है (وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا) (78/नबा : 13) और हमने रोशन चराग़ यानी सूरज बनाया। और चाँद बनाया जो मुनव्वर और रोशन है दूसरे नूर से जो सूरज के सिवा है। जैसे फ़र्मान है उसने सूरज को रोशन बनाया और चाँद को नूर बनाया।

हज़रत नूह (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया (اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝ وَّ جَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّ جَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝) (71/नूह : 15, 16) क्या तुम देख नहीं रहे कि अल्लाह तआला ने ऊपर तले सात आसमान पैदा किये और उनमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को चराग़ बनाया। दिन रात एक दूसरे के पीछे आने जाने वाले हैं, उसकी क़ुदरत का निज़ाम है, यह जाता है वह आता है उसका जाना इसका आना है। जैसे फ़र्मान है उसने तुम्हारे लिए सूरज चाँद पे दर पे आने जाने वाले बनाए हैं। और जगह है रात दिन को ढाँप लेती है और जल्दी जल्दी उसे तलब करती आती है, न सूरज चाँद से आगे बढ़ सके, न रात दिन से पहले आ सके। इसी से उसकी इबादतों के वक़्त उसके बन्दों को मालूम होते हैं, रात को फ़ौतशुदा अमल दिन में पूरा कर लें। दिन का रह गया हुआ अमल रात को अदा कर लें। सहीह हदीस में है अल्लाह तआला रात को अपने हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबा कर ले और दिन को हाथ फैलाता है कि रात का गुनहगार तौबा कर ले। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौबा, बाब क़ुबूलुत्तौबा मिनज़्ज़ुनूबि व इन तकर्ररतिज़्ज़ुनूब वत्तौबता : 2758; इब्ने माजा : 195; अहमद : 4/395; शुअबुल ईमान : 7075; बैहक़ी : 8/136; अल्ईमानु : 779; मुस्नदे तयालिसी : 390)

''हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने एक दिन ज़ुहा (चाश्त) की नमाज़ में बड़ी देर लगा दी। सवाल पर फ़र्माया कि रात का मेरा वज़ीफ़ा कुछ बाक़ी रह गया था तो मैंने चाहा कि उसे पूरा या क़ज़ा कर लूँ फिर आपने यह आयत तिलावत की (ख़िल्फ़तन) का एक मतलब यह भी है कि मुख़्तलिफ़ यानी दिन रोशन रात तारीक इसमें उजाला उसमें अंधेरा यह नूरानी वह ज़ुलुमाती। (तब्री : 19/290)

***

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا

سَلٰمًا ۝٦٣ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝٦٤ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝٦٥ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٦٦ وَالَّذِيْنَ

اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝٦٧

तर्जुमा : ''रहमान के सच्चे बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलते हैं और जब बेइल्म लोग उनसे बातें करने लगते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है। (63) और जो अपने रब के सामने सज्दे और क़याम करते हुए रातें गुज़ार देते हैं। (64) और जो यह दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे दोज़ख़ का अज़ाब दूर ही दूर रख। क्योंकि उसका अज़ाब चिमट जाने वाला है। (65) वह जाये क़रार और मक़ाम दोनों के लिहाज़ से बदतरीन जगह है। (66) और

जो ख़र्च करते वक़्त भी न तो इस्राफ़ (फ़िजूलख़र्ची) करते हैं न बख़ीली (कंजूसी) बल्कि इन दोनों के बीच मुअतदिल (मध्यम/average) राह होती है।" (67)

अल्लाह के बन्दों के औसाफ़ (ख़ूबियाँ) (आ. 63 से 67) : अल्लाह तआला के मोमिन बन्दों के औसाफ़ बयान हो रहे हैं कि वह ज़मीन पर सकून व वक़ार के साथ, तवाज़ोअ, आजिज़ी, मिस्कीनी और फ़रोतनी से चलते फिरते हैं। तकब्बुर, तजब्बुर, फ़साद और ज़ुल्मो सितम नहीं करते, जैसे हज़रत लुक़मान (عليه السلام) ने अपने लड़के से फ़र्माया था कि अकड़कर न चलाकर। यह मतलब हर्गिज़ नहीं कि तस्नोअ और बनावट से कमर झुकाकर बीमारों की तरह क़दम बक़दम चलना, यह तो रियाकारों का काम है कि वह अपने आपको लोगों के दिखाने के लिए और दुनिया की नज़रें अपनी ओर उठाने के लिए ऐसा करते हैं। हुज़ूर (ﷺ) की आदते मुबारका इसके बिलकुल उलट थी आपकी चाल ऐसी थी कि गोया आप (ﷺ) किसी ऊँचाई से उतर रहे हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब वस्फ़ अलन्नबी (ﷺ) : 3637; वहुव हसन; अहमद : 2/144) और गोया कि ज़मीन आप (ﷺ) के लिए लिपटी जा रही है। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, क़ौल अबी हुरैरत मा रऐतु शैअन अहसन... : 3648; वहुव सहीहुन) सलफ़े सालेहीन ने बीमारों की सी तक्लीफ़ वाली चाल को मकरूह बताया है। हज़रत फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) ने एक नौजवान को देखा कि वह बहुत आहिस्ता आहिस्ता चल रहा है। आपने उससे पूछा कि क्या तू कुछ बीमार है? उसने कहा, नहीं! आपने फ़र्माया, फिर यह क्या चाल है? ख़बरदार! जो अब इस तरह चला तो कोड़े खाएगा, ताक़त के साथ जल्दी जल्दी चला करो। पस यहाँ मुराद तस्कीन वक़ार के साथ आओ जो जमाअत के साथ मिल जाए अदा कर लो और जो फ़ौत हो जाए पूरी कर लो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब ला यस्आ इलस्सलाति वलियातिहा बिस्सकीनति वल वक़ार : 636; सहीह मुस्लिम : 602; अबूदाऊद : 572; तिर्मिज़ी : 327; इब्ने माजा : 775; अहमद : 2/238; इब्ने हिब्बान : 2145) हसन बसरी (रह.) ने इस आयत की तफ़्सीर में निहायत ही उम्दा बात इर्शाद की है कि मोमिनों की आँखें और उनके कान और उनके हिस्से झुके हुए और रुके हुए रहते हैं। यहाँ तक कि गँवार और बेवक़ूफ़ लोग उन्हें बीमार समझ लेते हैं। हालाँकि वह बीमार नहीं और यहाँ के ठाठ से उन्हें रोके हुए है। यह क़ियामत के दिन कहेंगे कि अल्लाह का शुक्र है कि जिसने हमसे ग़म को दूर कर दिया उससे कोई यह न समझ ले कि उन्हें दुनिया में खाने पीने वग़ैरह का ग़म लगा रहता था, नहीं! नहीं! अल्लाह की क़सम! दुनिया का कोई ग़म उनके पास भी नहीं फटकता था। हाँ! उन्हें आख़िरत का खटका हर वक़्त लगा रहता था, जन्नत के किसी काम को वह भारी नहीं जानते थे, हाँ! जहन्नम का डर उन्हें रुलाता रहता था जो शख़्स अल्लाह के ख़ौफ़ दिलाने से भी ख़ौफ़ न खाये उसका नफ़्स हसरतों का मालिक है जो शख़्स खाने पीने को ही अल्लाह की नेअमत समझे वह कम इल्म है और अज़ाबों में फंसा हुआ है। फिर अपने नेक बन्दों का वस्फ़ बयान किया कि जब जाहिल लोग उनसे जिहालत की बातें करते हैं तो यह भी उनकी तरह जिहालत पर नहीं उतर आते बल्कि दरगुज़र कर लेते हैं, माफ़ कर देते हैं और सिवाय भली बात के गंदी बातों से अपनी ज़ुबान ख़राब नहीं करते जैसे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की आदते मुबारका थी कि ज्यों ज्यों दूसरा आप पर तेज़ होता आप उतने ही नर्म होते। यही वस्फ़ क़ुरआने करीम की इस आयत में बयान हुआ है (و

(إِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ) (28/क़सस : 55) मोमिन लोग बेहूदा बातें सुनकर मुँह फेर लेते हैं। एक हसन सनद से मुस्नद अहमद में मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने किसी शख़्स ने दूसरे को बुरा भला कहा लेकिन उसने पलटकर जवाब दिया कि तुझ पर सलाम हो। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया "तुम दोनों के बीच फ़रिश्ता मौजूद था वह तेरी तरफ़ से गालियाँ देने वाले को जवाब देता था जो गाली तुझे देता था फ़रिश्ता कहता था यह नहीं बल्कि तू और जब तू कहता था तुझ पर सलाम तो फ़रिश्ता कहता था उस पर नहीं बल्कि तुझ पर, तू ही सलामती का पूरा हक़दार है।" (अहमद : 5/445; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/75) पस फ़र्मान है कि यह अपनी ज़ुबान को गंदी नहीं करते, बुरा कहने वालों को बुरा नहीं कहते, सिवाए भले कलिमे के ज़ुबान से और कोई लफ़्ज़ नहीं निकालते। हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं दूसरा उन पर ज़ुल्म करे यह सुलह और बर्दाश्त करते हैं, दिन को अल्लाह के बन्दों के साथ इस तरह गुज़ारते हैं कि उनकी कड़वी कसैली सुन लेते हैं और रात को जिस हालत में गुज़ारते हैं उसका बयान अगली आयत में है। फ़र्माता है कि रात अल्लाह तआला की इबादत और उसकी इताअत में बसर होती है बहुत कम सोते हैं सुबह को इस्तिग़फ़ार करते हैं करवटें बिस्तरों से अलग रहती हैं दिलों में अल्लाह का डर होता है। उम्मीदे रहमत होती है और रातों की घड़ियों को अल्लाह की इबादतों में गुज़ारते हैं। दुआएँ माँगते हैं कि ऐ अल्लाह! अज़ाबे जहन्नम हमसे दूर रखियो वह तो दाइमी और लाज़मी अज़ाब है। जैसे कि शायर ने शाने बारी तआला बताई है इंय्युअज़्ज़िब यकुन ग़रामन व इंय्युअति जज़ीलन फ़ इन्नहू ला युबाली यानी उसके अज़ाब भी सख़्त और लाज़मी और अबदी और उसकी अता और इन्आम भी बेहद अनगिनत और बेहिसाब। जो चीज़ आए और हट जाए वह ग़राम नहीं ग़राम वह है जो आने के बाद हटने और दूर होने का नाम ही न ले। (तब्री : 19/297) यह मअनी भी किये गए हैं कि अज़ाबे जहन्नम तावान है जो कुफ़्राने नेअमत से लिया जाएगा उन्होंने बारी तआला के दिये को उसकी राह में नहीं लगाया, लिहाज़ा आज उसका हर्जाना यह भरना पड़ेगा कि जहन्नम को भर कर दें, वह बुरी जगह है, बद मंज़र है, तक्लीफ़देह है, मुसीबत की जगह है, मालिक बिन हारिस का बयान है कि जब दोज़ख़ी को दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा, अल्लाह ही जानता है कि कितनी मुद्दत तक वह नीचे ही नीचे चला जाएगा उसके बाद जहन्नम के एक दरवाज़े पर उसे रोक दिया जाएगा और कहा जाएगा कि आप बहुत प्यासे हो रहे होंगे, लो एक जाम तो पी लो, यह कहकर उन्हें काले नाग और ज़हरीले बिच्छुओं के ज़हर का एक प्याला पिलाया जाएगा जिसके पीते ही उनकी खालें अलग झड़ जाएँगी बाल अलग हो जाएँगे रगें अलग जा पड़ेगी, हड्डियाँ अलग अलग हो जाएँगी। हज़रत उबेद बिन उमेर (रह.) फ़र्माते हैं कि "जहन्नम में गढ़े हैं कूएँ जैसे, उनमें साँप हैं जैसे बुख़्ती ऊँट और बिच्छू हैं जैसे ख़च्चर, जब किसी जहन्नमी को जहन्नम में डाला जाता है तो वहाँ से निकल कर आते और उन्हें लिपट जाते हैं, होंटों पर, सरों पर, जिस्म के हिस्सों पर डसते और डंक मारते हैं जिससे उनके सारे बदन में ज़हर फैल जाता है और फटने लगते हैं, सारे सर की खाल झुलसकर गिर पड़ती है, फिर वह साँप चले जाते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जहन्नमी एक हज़ार साल तक जहन्नम में चिल्लाता रहेगा। (या हन्नानु या मन्नान) तब अल्लाह तआला हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) से कहेगा, जाओ देखो यह क्या कह रहा है आकर देखेंगे कि सब जहन्नम बुरे हाल सर झुकाये आहवज़ारी कर रहे हैं, जाकर जनाब बारी तआला में ख़बर करेंगे। अल्लाह तआला कहेगा फिर जाओ फ़लाँ फ़लाँ जगह यह शख़्स है जाओ और उसे ले आओ। आप

बहुक्मे बारी तआला जाएँगे और उसे लाकर अल्लाह तआला के सामने खड़ा कर देंगे। अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि तू कैसी जगह है? यह जवाब देगा कि ऐ अल्लाह! ठहरने की भी बुरी जगह और सोने बैठने की भी बदतरीन जगह है। अल्लाह तआला कहेगा अच्छा! अब इसे इसकी जगह वापिस कर आओ तो यह गिड़गिड़ाएगा, अर्ज़ करेगा कि ऐ मेरे अरहमुर्राहिमीन रब! जबकि तूने मुझे उससे बाहर निकाला तो तेरी ज़ात ऐसी नहीं कि फिर इसमें दाख़िल कर दे, मुझे तो तुझसे रहमो करम की ही उम्मीद है, ऐ अल्लाह! बस अब मुझ पर करम फर्मा, जब तूने मुझे जहन्नम से निकाला तो मैं ख़ुश हो गया था कि अब तू मुझे उसमें न डालेगा, उस मालिक व रहमान व रहीम रब को भी रहम आ जाएगा और कहेगा, अच्छा! मेरे बन्दे को छोड़ दो।'' (अहमद : 3/230; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मुस्नदे अबी यअला : 4210; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/384; शुअबुल ईमान : 320; इस रिवायत में अबू ज़िलाल हिलाल बिन अबी मैमूना क़सलमी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 3/431; रक़म : 7048) फिर उनका एक और वस्फ़ बयान हो रहा है कि न तो वह मुस्रिफ़ (फ़िज़ूलख़र्च) हैं, न बख़ील हैं, न बेजा ख़र्च करते हैं न ज़रूरी अख़राजात में कोताही करते हैं बल्कि म्यानारवी से काम लेते हैं न ऐसा करते हैं कि अपने वालों को अहलो अयाल को भी तंग रखें, न ऐसा करते हैं कि जो हो लुटा दें, उसी का हुक्म रब तआला ने दिया है। फ़र्माता है (وَ لَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً) (17/इस्रा : 29) यानी न तो अपने हाथ अपनी गर्दन से बाँध और न उन्हें बिलकुल ही छोड़ दे। मुस्नद अहमद में फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) है कि ''अपनी गुज़रान में म्यानारवी करना इंसान की समझदारी की दलील है। (अहमद : 5/194; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में अबूबक्र बिन अबी मरयम ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 4/498; रक़म : 1006) और ज़मरा बिन हबीब का अबू दर्दा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।) और हदीस में है जो इफ़्रात व तफ़्रीत से बचता है वह कभी फ़क़ीर मुहताज नहीं होता। (अहमद : 1/447; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में इब्राहीम अल्हज्री (अल्मीज़ान : 1/65; रक़म : 216) ज़ईफ़ रावी है।) बज़्ज़ार की हदीस में है कि ''अमीरी में फ़क़ीरी में इबादत में म्यानारवी बड़ी ही बेहतर और अहसन चीज़ है।'' (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2946; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/252) हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं कि ''राहे इलाही में कितना ही चाहो दो उसका नाम इस्राफ़ (फ़िज़ूलख़र्ची) नहीं है।'' हज़रत अयास बिन मुआविया (रह.) फ़र्माते हैं ''जहाँ कहीं तू हुक्मे बारी तआला से आगे बढ़ जाए वही इस्राफ़ है और बुज़ुर्गों का क़ौल है कि अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी में ख़र्च इस्राफ़ कहलाता है।''

***

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا
يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ
مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۭ

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝

तर्जुमा : "और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद को नहीं पुकारते और किसी ऐसे शख़्स को जिसे क़त्ल करना अल्लाह तआ़ला ने मना कर दिया हो वह सिवाय ह़क़ के क़त्ल नहीं करते, न वह ज़िना के मुर्तकिब होते हैं और जो कोई यह काम करे वह अपने ऊपर सख़्त वबाल लादेगा। (68) उसे क़ियामत के दिन दोहरा अ़ज़ाब किया जाएगा और वह ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ हमेशा उसी में रहेगा। (69) सिवाय उन लोगों के जो तौबा करें और ईमान लाएँ और नेक काम करें, ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह तआ़ला नेकियों से बदल देता है। (70) अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबानी वाला है और जो शख़्स तौबा करे और नेक अ़मल करे वह तो ह़क़ीक़तन अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ सच्चा रुजूअ़ करता है।" (71)

चंद बड़े बड़े गुनाह (आ. 68 से 71) : हुज़ूर (ﷺ) से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने सवाल किया कि सबसे बड़ा गुनाह कौनसा है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तेरा रब के साथ शरीक करना। ह़ालाँकि उसी अकेले ने तुझे पैदा किया है।" पूछा उससे कम? फ़र्माया, "तेरा अपनी औलाद को इस डर से मार डालना कि तू उसे खिलाएगा कहाँ से?" पूछा उसके बाद? फ़र्माया, "तेरा अपने पड़ौसी की किसी औ़रत से ज़िना करना।" पस इसकी तस्दीक़ में अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल फ़र्माईं। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरह फ़ुरक़ान, बाब (वल्लज़ीना ला यदऊ़ना मअ़ल्लाहि इलाहन आख़र...) : 4761; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 86; अह़मद : 1/380) और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) बाहर जाने लगे तंहा थे मैं भी साथ हो लिया। आप (ﷺ) एक ऊँची जगह बैठ गए, मैं आप (ﷺ) के नीचे बैठ गया और उस तंहाई के मौक़े की ग़नीमत समझकर हुज़ूर (ﷺ) से वह सवालात किये जो ऊपर मज़्कूर हुए। ह़ज्जतुल वदाअ़ में हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "चार गुनाहों से बचो अल्लाह के साथ शिर्क किसी हुर्मत वाली नफ़्स का क़त्ल ज़िनाकारी और चोरी।" (अह़मद : 4/339; सनदुहू ह़सन; सुफ़्यान सौरी की मंसूर से रिवायत सिमाअ़ पर मह़मूल होती है।) मुस्नद अह़मद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने अस्ह़ाब (रज़ि.) से पूछा, "ज़िना की बाबत तुम क्या कहते हो?" उन्होंने जवाब दिया वह ह़राम है और क़ियामत तक ह़राम है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! सुनो! इंसान का अपनी पड़ौस की औ़रत से ज़िना करना दूसरी दस औ़रतों के ज़िना से भी बदतर (बुरा) है।" फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया "चोरी की निस्बत क्या कहते हो?" उन्होंने यही जवाब दिया कि वह ह़राम है, अल्लाह व रसूल इसे ह़राम क़रार दे चुके हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "सुनो दस जगह की चोरी भी इतनी बड़ी नहीं जैसी पड़ौस की एक जगह की चोरी।" (मुस्नद अह़मद : 6/8; व सनदुहू ह़सन) हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि शिर्क के बाद उससे बड़ा गुनाह कोई नहीं कि इंसान अपना नुत़्फ़ा उस रह़म में डाले जो उसके लिए ह़लाल नहीं। (इस रिवायत में बक़िया मुदल्लस (अल्मीज़ान : 1/331; रक़म : 1250) और अबूबक्र बिन अबी मरयम ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 4/498; रक़म : 1006) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।)यह भी मरवी है कि कुछ मुश्रिकीन हुज़ूर (ﷺ) के पास आये और कहा ह़ज़रत! आपकी दअ़वत अच्छी है सच्ची है लेकिन हमने

शिर्क भी किया है, क़त्ल भी किया है, ज़िनाकारियाँ भी की हैं। और यह सब काम बकसरत किये हैं तो फ़र्माईए हमारे लिए क्या हुक्म है? इस पर यह आयत उतरी। और आयत (قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا) (39/ज़ुमर : 53) भी नाज़िल हुई। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह ज़ुमर, बाब क़ौलुहू (या इबादियल्लज़ीना असरफ़ू....) : 4810; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 122) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है, "अल्लाह तआला तुम्हें इससे मना करता है कि तुम ख़ालिक़ को छोड़कर मख़्लूक़ की इबादत करो और इससे भी मना करता है कि अपने कुत्ते को तो पालो और अपने बच्चे को क़त्ल कर डालो। और इससे भी मना किया है कि अपनी पड़ौसन से बदकारी करो।" (यह रिवायत मुर्सल है) असाम जहन्नम की एक वादी का नाम है। (त़ब्री : 19/308) यही वह वादियाँ हैं जिनमें ज़ानियों को अ़ज़ाब किया जाएगा। (त़ब्री : 19/308) इसके मअ़नी अ़ज़ाब व सज़ा के भी आते हैं। ह़ज़रत लुक़्मान ह़कीम (रह़.) की नसीह़तों में है कि "ऐ बच्चे! ज़िनाकारी से बचना उसके शुरू में डर ख़ौफ़ है और उसका अंजाम नदामत ह़सरत है।" यह भी मरवी है कि ग़ै और असाम दोज़ख़ के दो कूएँ हैं। (लुक़्मान ह़कीम का क़ौल बेसनद है और ग़ै व असाम वाली रिवायत मरफ़ूअ़ व मौक़ूफ़ दोनों त़रह़ से ज़ईफ़ है। देखिए यही किताब तफ़्सीर सूरह मरयम आयत 59) अल्लाह हमें मह़फ़ूज़ रखे, असाम के मअ़नी बदले के भी मरवी हैं और यही ज़ाहिर आयत के मुशाबेह भी है और गोया इसके बाद की आयत इसी बदले और सज़ा की तफ़्सीर है कि इसे बार बार अ़ज़ाब किया जाएगा और सख़्ती की जाएगी और ज़िल्लत के दाइमी अ़ज़ाबों में फंस जाएगा, अल्लाहुम्मह़फ़िज़्ना। इन कामों के करने वाले की सज़ा तो बयान हो चुकी मगर इस सज़ा से वह बच जाएँगे जो दुनिया ही में उससे तौबा कर लें अल्लाह उनकी तौबा क़बूल कर लेगा। इससे मालूम होता है कि क़ातिल की तौबा भी क़बूल है जो आयत सूरह निसाअ में है (وَ مَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا) (4/निसाअ : 93) वह इसके ख़िलाफ़ नहीं भले वह मदनी आयत है लेकिन वह मुत्लक़ है तो वह मह़मूल की जाएगी उन क़ातिलों पर जो अपने इस काम से तौबा न करें और यह आयत उन क़ातिलों के बारे में है जो तौबा करें। फिर मुश्रिकों की बख़्शिश न होने का बयान फ़र्माया है और स़ह़ीह़ अह़ादीस से भी क़ातिल की तौबा की मक़्बूलियत साबित है जैसे उस शख़्स का क़िस्सा जिसने एक सौ क़त्ल किये थे फिर तौबा की और उसकी तौबा क़बूल कर ली गई वग़ैरह। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब नम्बर : 54; ह़दीस : 3470; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2766) यह वह लोग हैं जिनकी बुराइयाँ अल्लाह तआला भलाईयों से बदल देता है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "यह वह लोग हैं जिन्होंने इस्लाम क़बूल करने से पहले गुनाह के काम किये थे इस्लाम में आने के बाद नेकियाँ कीं तो अल्लाह ने उन गुनाहों के बदले नेकियों की तौफ़ीक़ इनायत की।" इस आयत की तिलावत के वक़्त आप एक अ़रबी शेअ़र पढ़ते थे जिसमें अह़वाल के तग़य्युर का बयान है जैसे गर्मी से ठण्डक। अ़ता बिन अबी रिबाह (रह़.) फ़र्माते हैं यह दुनिया का ज़िक्र है कि "इंसान की बुरी ख़स्लत को अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी से नेक आ़दत से बदल देता है।" सईद बिन जुबेर (रह़.) का बयान है कि "बुतों की पूजा के बदले अल्लाह तआला की इबादत की तौफ़ीक़ उन्हें मिली। मोमिनों से लड़ने के बजाए काफ़िरों से जिहाद करने लगे मुश्रिका औरतों से निकाह़ के बजाए मोमिना औरतों से निकाह़ किये।" ह़सन बस़री (रह़.) फ़र्माते हैं कि "गुनाह के बदले सवाब के अ़मल करने लगे शिर्क के बदले तौह़ीद व इख़्लास़ मिला। बदकारी के बदले पाकदामनी ह़ासिल हुई कुफ़्र के बदले इस्लाम मिला।" एक मअ़नी तो इस आयत के

यह हुए दूसरे मअ़नी यह हैं कि ख़ुलूस के साथ इनकी जो तौबा थी उससे ख़ुश होकर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने उनके गुनाहों को नेकियों से बदल दिया यह इसलिए कि तौबा के बाद जब कभी उन्हें अपने गुज़िश्ता गुनाह याद आते थे तो उन्हें नदामत होती थी। यह ग़मगीन हो जाते थे शर्माने लगते थे और इस्तिग़्फ़ार करते थे इस वजह से उनके गुनाह इताअ़त से बदल दिये गए भले वह उनके नामा-ए-आमाल में गुनाह के तौर पर लिखे हुए थे लेकिन क़ियामत के दिन वह सब नेकियाँ बन जाएँगे जैसे कि अहादीस व आसार में साबित है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "कि मैं उस शख़्स को पहचानता हूँ जो सबसे आख़िर में जहन्नम से निकलेगा और सबसे आख़िर में जन्नत में जाएगा, यह एक वह शख़्स होगा जिसे अल्लाह तआ़ला के सामने लाया जाएगा अल्लाह तआ़ला कहेगा इसके बड़े बड़े गुनाहों को छोड़कर छोटे छोटे गुनाहों की निस्बत इससे पूछताछ करो, चुनाँचे उससे सवाल होगा कि फ़लाँ दिन तूने फ़लाँ काम किया था? फ़लाँ दिन फ़लाँ गुनाह किया था? यह एक का भी इंकार न कर सकेगा, इक़रार करेगा आख़िर में कहा जाएगा कि तुझे हमने हर गुनाह के बदले नेकी दी अब तो उसकी बाछें खिल जाएँगी और कहेगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने और भी बहुत से आमाल किये थे जिन्हें यहाँ पा नहीं रहा, यह फ़र्माकर हुज़ूर (ﷺ) इस क़द्र हँसे कि आप (ﷺ) के मसूड़े दिखने लगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अदना अहलुल जन्नत मंज़िलतन फ़ीहा : 190; तिर्मिज़ी : 2596; अहमद : 5/170; इब्ने हिब्बान : 7375) आप फ़र्माते हैं कि "जब इंसान सोता है तो फ़रिश्ता शैतान से कहता है कि मुझे अपना सहीफ़ा जिसमें उसके गुनाह लिखे हुए हैं दे वह दे देता है तो एक एक नेकी के बदले दस दस गुनाह उसके सहीफ़े से मिटा देता है और उन्हें नेकियाँ लिख देता है पस तुममें से जो भी सोने का इरादा करे वह तैंतीस बार अल्लाहु अकबर और चौंतीस बार अल्हम्दु लिल्लाह कहे और तैंतीस बार सुब्हानल्लाह कहे यह मिलकर सौ मर्तबा हो गए।" (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/124; मुअजमुल कबीर : 3451; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह सनद मुन्क़तअ़ है।) (इब्ने अबिद्दुनिया)

हज़रत सलमान (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "इंसान को क़ियामत के दिन नामा-ए-आमाल दिया जाएगा, वह पढ़ना शुरू करेगा तो ऊपर ही उसकी बुराइयाँ दर्ज होंगी जिन्हें पढ़कर यह कुछ नाउम्मीद सा होने लगेगा। उसी वक़्त उसकी नज़र नीचे की तरफ़ पड़ेगी तो अपनी नेकियाँ लिखी हुई पाएगा जिससे कुछ ढारस बँधेगी। अब दोबारा ऊपर की तरफ़ देखेगा तो वहाँ की बुराइयों को भी भलाईयों से बदला हुआ पाएगा।" हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "बहुत से लोग अल्लाह तआ़ला के सामने आएँगे जिनके पास बहुत कुछ गुनाह होंगे, पूछा गया कि वह कौनसे लोग होंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "वह जिनकी बुराइयाँ अल्लाह तआ़ला भलाइयों से बदल देगा।" हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जन्नती जन्नत में चार क़िस्म के जाएँगे मुत्तक़ीन यानी परहेज़गारी करने वाले फिर (शाकिरीन) यानी अल्लाह का शुक्र करने वाले फिर (ख़ाइफ़ीन) यानी अल्लाह से डरने वाले फिर (अस्हाबे यमीन) जिनके दाएँ हाथ में नामा-ए-आमाल मिले होंगे। पूछा गया कि उन्हें (अस्हाबे यमीन) क्यूँ कहा जाता है? जवाब मिला इसलिए कि उन्होंने नेकियाँ बदियाँ सबकुछ की थीं उनके आमाल नामे उनके दाहिने हाथ में मिले, अपनी बदियों का एक एक हर्फ़ पढ़कर यह कहने लगे कि ऐ अल्लाह! हमारी नेकियाँ कहाँ हैं? यहाँ तो सब बदियाँ लिखी हुई हैं, उसी वक़्त अल्लाह

तआला उन बदियों को मिटा देगा और उनके बदले नेकियाँ लिख देगा उन्हें पढ़कर वह ख़ुश होकर अब यह दूसरों से कहेंगे कि आओ हमारे आमाल नामे देखो, जन्नतियों में अक्सर यही होंगे। अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबेदीन (रह़.) फ़र्माते हैं कि "बुराइयों को भलाइयों से बदलना आख़िरत में होगा।" मक्हूल (रह़.) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला उनके गुनाहों को बख़्शेगा और उन्हें नेकियों में बदल देगा।" ह़ज़रत मक्हूल (रह़.) ने एक मर्तबा ह़दीस बयान की कि एक बहुत बूढ़े ज़ईफ़ आदमी जिनकी भवें आँखों पर आ गई थीं, रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं एक ऐसा शख़्स हूँ जिसने कोई ग़द्दारी कोई गुनाह कोई बदकारी बाक़ी नहीं छोड़ी, मेरे गुनाह इस क़द्र बढ़ गए हैं कि अगर तमाम इंसानों पर तक़्सीम हो जाएँ तो सबके सब अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो जाएँ क्या मेरी बख़्शिश की भी कोई सूरत है? क्या मेरी तौबा भी क़बूल हो सकती है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम मुसलमान हो जाओ, उसने कलिमा पढ़ लिया कि (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीकलहू व अश्हदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू) तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह तआला तेरी तमाम बुराइयाँ, गुनाह, बदकारियाँ सब कुछ माफ़ कर देगा बल्कि जब तक तू इस पर क़ायम रहेगा अल्लाह तआला तेरी बुराइयाँ भलाइयों से बदल देगा" उसने फिर पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! मेरे छोटे बड़े गुनाह सब साफ़ हो जाएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! सबके सब।" फिर तो वह शख़्स ख़ुशी ख़ुशी वापिस जाने लगा और तक्बीर व तहलील पुकारता हुआ लौट गया। (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/281) ह़ज़रत अबू त़वील (रज़ि.) ह़ाज़िरे हुज़ूर होकर अ़र्ज़ करते हैं कि अगर किसी शख़्स ने सारे ही गुनाह किये हों जो जी में आया हो, पूरा किया हो क्या ऐसे शख़्स की तौबा भी क़बूल हो सकती है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम मुसलमान हो गए हो?" उसने कहा, जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अब नेकियाँ करो बुराइयों से बचो तो अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह भी नेकियाँ कर देगा। उसने कहा मेरी ग़द्दारियाँ और बदकारियाँ भी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! अब वह अल्लाहु अकबर कहता हुआ वापिस चला गया। (त़ब्रानी : 7235; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/202; व रिजालुहू सिक़ातुन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ुबैर के अबू त़वील से सुनने में नज़र है।) एक औरत ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) के पास आई और पूछा कि मुझसे बदकारी हो गई। उससे बच्चा हो गया मैंने उसे मार डाला, अब क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि, अब न तेरी आँखें ठण्डी हो सकती हैं न अल्लाह तआला के यहाँ तेरी बुज़ुर्गी हो सकती है, तेरे लिए तौबा हर्गिज़ नहीं वह रोती पीटती वापिस चली गई। सुबह़ की नमाज़ हुज़ूर (ﷺ) के साथ पढ़कर मैंने यह वाक़िया बयान किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "तूने उससे बहुत ही बुरी बात कही क्या तू इन आयतों को क़ुरआन में नहीं पढ़ता (वल्लज़ीना ला यदऊ़ना) से (इल्ला मन ताब) तक।" मुझे बड़ा ही सदमा लगा और मैं लौटकर उस औरत के पास पहुँचा और उसे यह आयतें पढ़कर सुनाईं वह ख़ुश हो गई और उसी वक़्त सज्दे में गिर पड़ी और कहने लगी कि अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने मेरे छुटकारे की सूरत पैदा कर दी। (त़ब्री : 19/307; इसकी सनद में ईसा बिन शुऐब बिन सौबान मज्हूल रावी है। और इमाम ज़हबी (रह़.) ने इस ख़बर को मौज़ूअ़ क़रार दिया है। देखिए (अल्मीज़ान : 3/313; तह़त रक़म : 6572) और रिवायत में है कि ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) का पहला फ़त्वा सुनकर वह ह़सरत व अफ़सोस के साथ यह कहती हुई वापिस चली कि हाय हाय यह अच्छी सूरत क्या जहन्नम के लिए बनाई गई थी?

इसमें यह भी है कि जब हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) को अपनी ग़लती का इल्म हुआ तो उस औरत को ढूँढने के लिए निकले, तमाम मदीना और एक एक गली छान मारी लेकिन कहीं पता न चला, इत्तिफ़ाक़ से रात को वह औरत फिर आई तब हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने उन्हें सही मसला बतलाया। उसमें यह भी है कि उसने अल्लाह तआला की तअरीफ़ करते हुए कहा कि उसने मेरे लिए छुटकारे की सूरत बनाई और मेरी तौबा की क़बूलियत रखी यह कहकर उसके साथ जो लौण्डी थी उसे आज़ाद कर दिया उस लौण्डी की एक लड़की भी थी और सच्चे दिल से तौबा कर ली, फिर फ़र्माता है और अपने आम लुत्फ़ो करम फ़ज़्लो रहम की ख़बर देता है कि जो भी अल्लाह तआला की तरफ़ झुके और अपनी स्याहकारियों पर नादिम होकर तौबा करे अल्लाह तआला उसकी सुनता है क़बूल फ़र्माता है और उसे बख़्श देता है। जैसे इर्शाद है (وَ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ) (4/निसाअ : 110) जो बुरा अमल करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करे वह अल्लाह तआला को ग़फ़ूर व रहीम पाएगा और जगह इर्शाद है (اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ) (9/तौबा : 104) क्या इन्हें यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला तौबा का क़बूल करने वाला है और आयत में है (قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ) (39/ज़ुमर : 53) मेरे उन बन्दों से जो गुनहगार हैं कह दीजिए कि वह मेरी रहमत से नाउम्मीद न हों यानी तौबा करने वाला महरूम नहीं।

***

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ
اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

तर्जुमा : "और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते और जब किसी लग़्वियात (बुरे कामों) पर से उनका गुज़र होता है तो बुज़ुर्गाना तौर पर गुज़र जाते हैं। (72) और जब उन्हें उनके रब के कलाम की आयतें सुनाई जाती हैं तो वह अंधे बहरे होकर उन पर नहीं गिरते। (73) और यह दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे रब! तू हमें हमारी बीवियों और औलादों से आँखों की ठण्डक अता फ़र्मा और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना।" (74)

नेक लोगों की मज़ीद चंद निशानियाँ (आ. 72 से 74) : रहमान के बन्दे के नेक औसाफ़ बयान हो रहे हैं कि वह झूठी गवाही नहीं देते यानी शिर्क नहीं करते, बुतपरस्ती से बचते हैं, झूठ नहीं बोलते, फ़िस्क़ फ़िजूर नहीं करते, कुफ़्र से अलग रहते हैं, लग़्व और बातिल कामों से परहेज़ करते हैं, गाना नहीं सुनते, मुश्रिकों की ईदें (त्यौहार) नहीं मनाते, ख़यानत नहीं करते, बुरी मज्लिसों में नशिस्त नहीं रखते, शराबें नहीं पीते, शराब ख़ानों में नहीं जाते, उसकी रग़बत नहीं करते। हदीस में भी है कि सच्चे मोमिन को चाहिए कि उस दस्तरख़्वान पर

न बैठे जिस पर शराब का दौर चल रहा हो। (तिर्मिज़ी, किताबुल अदब, बाब मा जा फ़ी दुख़ूलिल ह़म्माम : 2801; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; लैस बिन अबी सुलैम रावी ज़ईफ़ है।) और यह भी मतलब है कि झूठी गवाही नहीं देते। सह़ीहैन में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा गुनाह बता दूँ?" तीन बार यही फ़र्माया। सह़ाबा (रज़ि.) ने कहा, हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना, माँ बाप की नाफ़र्मानी करना, उस वक़्त आप (ﷺ) तकिया लगाये बैठे थे अब उससे अलग होकर फ़र्माने लगे, सुनो और झूठी बात कहना, सुनो और झूठी गवाही देना, इसे बार बार फ़र्माते रहे यहाँ तक कि हम अपने दिल में कहने लगे कि काश! रसूलुल्लाह (ﷺ) अब ख़ामोश हो जाते।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुश्शहादात, बाब मा क़ीला फ़ी शहादतिज़्ज़ूर : 2654; सह़ीह़ मुस्लिम : 87; तिर्मिज़ी : 1901) ज़्यादा ज़ाहिर लफ़्ज़ों से तो यह है कि वह झूट के पास नहीं जाते इसीलिए आगे बयान हुआ कि अगर इत्तिफ़ाक़न गुज़र हो जाए तो वह उससे कोई दिलचस्पी नहीं लेते, मुँह फेर लेते हैं। एक बार ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) किसी खेल के पास से गुज़रे तो चेहरा फेरे हुए बग़ैर रुके चले गए, अल्लाह तआला के नज़दीक करीम हो गए। (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/148; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) अल्लाह तआला के इन बुज़ुर्ग बन्दों का एक वस्फ़ यह भी है कि क़ुरआन की आयतें सुनकर इनके दिल काँप जाते हैं इनके ईमान और तवक्कल बढ़ जाते हैं। बख़िलाफ़े कुफ़्फ़ार के कि उन पर कलामे इलाही का असर नहीं होता वह अपनी बदआमालियों से बाज़ नहीं रहते, न अपना कुफ़्र छोड़ते, न सरकशी तुग़यानी और जिहालत व ज़लालत से बाज़ आते हैं। ईमानवालों के ईमान बढ़ जाते हैं और बीमार दिल वालों की गंदगी उभर आती है। पस काफ़िर अल्लाह तआला की आयतों से बहरे और अंधे हो जाते हैं। इन मोमिनों की ह़ालत इनके बरअक्स है, न यह ह़क़ से बहरे हैं, न ह़क़ से अंधे हैं, सुनते हैं समझते हैं नफ़ा ह़ासिल करते हैं, अपनी इस्लाह़ करते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो पढ़ते तो हैं लेकिन अंधापन बहरापन नहीं छोड़ते। ह़ज़रत शअबी (रह़.) से सवाल हुआ कि एक शख़्स आता है और वह दूसरों को सज्दे में पाता है लेकिन उसे नहीं मालूम कि किस आयत को पढ़कर सज्दा किया है? तो क्या वह भी उनके साथ सज्दा करे? तो आपने यही आयत पढ़ी यानी सज्दा न करे इसलिए कि उसने न सज्दे की आयत पढ़ी, न सुनी, न सोची तो मोमिन को कोई काम अंधा धुँध न करना चाहिए, जब तक उसके सामने किसी चीज़ की ह़क़ीक़त न हो, उसे शामिल न होना चाहिए फिर उन बुज़ुर्ग बन्दों की एक दुआ बयान होती है कि वह अल्लाह तआला से तलब करते हैं कि उनकी औलादें भी उनकी तरह़ रब की फ़र्मांबरदार, इबादतगुज़ार, मुवह्ह़िद और ग़ैर मुश्रिक हों ताकि दुनिया में भी उस नेक औलाद से उनका दिल ठण्डा रहे और आख़िरत में भी यह उन्हें अच्छी ह़ालत में देखकर ख़ुश हों, इस दुआ से उनकी ग़र्ज़ ख़ूबसूरती और जमाल की नहीं बल्कि नेकी और ख़ुशख़ल्क़ी की है, मुसलमान की सच्ची ख़ुशी इसी में है कि वह अपने अहलो अ़याल को दोस्त अह़बाब को अल्लाह तआला का फ़र्मांबरदार देखे। वह ज़ालिम न हों, बदकार न हों, सच्चे मुसलमान हों। ह़ज़रत मिक़्दाद को देखकर एक साह़ब कहने लगे, उन आँखों को मुबारकबाद हो जिन्होंने अल्लाह के पैग़म्बर (ﷺ) की ज़ियारत की है काश के हम भी हुज़ूर (ﷺ) को देखते और तुम्हारी तरह़ फ़ेज़े सोह़बत ह़ासिल करते, इस पर ह़ज़रत मिक़्दाद (रज़ि.) नाराज़ हुए, तो नुफ़ैर कहते हैं मुझे ताज्जुब हुआ कि इस बात में कोई बुराई नहीं फिर यह ख़फ़ा क्यूँ हो रहे हैं? इतने में ह़ज़रत मिक़्दाद (रज़ि.) ने फ़र्माया, "लोगों को क्या हो गया है कि उस चीज़

की आरज़ू करते हैं जो कुदरत ने उन्हें नहीं दी अल्लाह तआला ही को इल्म है कि यह अगर उस वक़्त होते तो इनका क्या हाल होता? वल्लाह! वह लोग भी तो रसूल (ﷺ) के ज़माने में थे जिन्होंने न आपकी तस्दीक़ की, न ताबेदारी की और औंधे मुँह जहन्नम में गए, तुम अल्लाह तआला का यह एहसान नहीं मानते कि अल्लाह तआला ने तुम्हें इस्लाम में और मुसलमान घरों में पैदा किया, पैदा होते ही तुम्हारे कानों में अल्लाह तआला की तौहीद और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की रिसालत पड़ी और उन बलाओं से तुम बचा लिये गए जो तुमसे पहले लोगों पर आई थीं। हुज़ूर (ﷺ) तो ऐसे ज़माने में मब्ऊस हुए थे जिस वक़्त दुनिया की अंधेर नगरी अपनी इंतिहा पर थी उस वक़्त दुनिया वालों के नज़दीक बुतपरस्ती से बेहतर कोई मज़हब न था, आप फ़ुरक़ान लेकर आए, हक़ व बातिल में तमीज़ की, बाप बेटे जुदा हो गए, मुसलमान अपने बाप दादों बेटों पोतों दोस्त अहबाब को कुफ़्र पर देखते उनसे उन्हें कोई मुहब्बत प्यार नहीं होता था बल्कि कुढ़ते थे कि यह जहन्नमी हैं इसीलिए उनकी दुआएँ होती थीं कि "हमें हमारी औलादों और बीवियों से आँखों की ठण्डक अता फ़र्मा क्योंकि कुफ़्फ़ार को देखकर उनकी आँखें ठण्डी नहीं होती थीं। (अहमद : 6/3; व सनदुहू सहीहुन) इस दुआ का आख़िरी यह है कि हमें लोगों का रहबर बना दे कि हम उन्हें नेकी की तअलीम दें लोग भलाई में हमारी इक़्तिदा करें। (तब्री : 19/319) हमारी औलाद हमारी राह चले ताकि सवाब बढ़ जाए और उनकी नेकियों का बाइस भी हम बन जाएँ। रसूले करीम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि, "इंसान के मरते ही उसके आमाल ख़त्म हो जाते हैं मगर तीन चीज़ें नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करे या इल्म जिससे उसके बाद नफ़ा उठाया जाए या सदक़ा जारिया।" (सहीह मुस्लिम : किताबुल वसिय्यत, बाब मा यल्हिक़ुल इंसान मिनस्सवाबि बअ़द वफ़ातिही : 1631; अबूदाऊद : 3880; तिर्मिज़ी : 1376; अहमद : 2/372; इब्ने हिब्बान : 3016; अल्अदबुल मुफ़रद : 38)

***

أُولَٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

तर्जुमा : "यही वह लोग हैं जिन्हें उनके सब्र के बदले जन्नत के बलंद बालाख़ाने दिये जाएँगे जहाँ उन्हें दुआ सलाम पहुँचाया जाएगा। (75) उसमें यह हमेशा रहेंगे वह बहुत ही अच्छी जगह और उम्दा मक़ाम है। (76) कह दे अगर तुम्हारी दुआ इल्तिजा न होती तो मेरा रब तो तुम्हारी मुत्लक़ परवाह न करता, तुम तो झुठला चुके अब अन्क़रीब उसकी सज़ा तुम्हें चिमट जाने वाली होगी।" (77)

यह पाकबाज़ गिरोह जन्नती है (आ. 75 से 77) : मोमिनों की पाक सिफ़तें उनके भले क़ौल उ़म्दा अफ़आल बयान करके उनका बदला बयान हो रहा है कि उन्हें जन्नत मिलेगी जो बुलंदतर जगह है इस वजह से कि यह उन औसाफ़ पर जमे रहे वहाँ उनकी इ़ज़्ज़त होगी, इकराम होगा, अदब तअ़जीम होगी। एह़तिराम और तौक़ीर होगी, उनके लिए सलामती है, उन पर सलामती है हर हर दरवाज़-ए-जन्नत से फ़रिश्ते ह़ाज़िरे ख़िदमत होते हैं और सलाम करके कहते हैं कि तुम्हारा अंजाम बेहतर हो गया क्योंकि तुम स़ब्र करने वाले थे यह वहाँ हमेशा रहेंगे, न निकलेंगे, न निकाले जाएँगे, न नेअ़मतें कम हों न राह़तें फ़ना हों यह सई़द बख़्त हैं जन्नतों में हमेशा रहेंगे उनके रहने सहने राह़त व आराम करने की जगह बड़ी सुहानी पाक स़ाफ़ त़य्यब व त़ाहिर है देखने में ख़ुशमंज़र रहने में आराम वाली! अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ को अपनी इ़बादत और तस्बीह़ व तहलील के लिए पैदा किया है अगर मख़्लूक़ यह न बजा लाए तो वह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक निहायत ह़क़ीर है ईमानके बग़ैर इंसान नाकारा मह़ज़ है अगर अल्लाह तआ़ला को काफ़िरों की चाहत होती तो वह उन्हें भी इ़बादत की त़रफ झुका देता लेकिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यह किसी गिनती में ही नहीं, काफ़िरो तुमने झुठलाया। अब तुम न समझो कि बस मामला ख़त्म हो गया नहीं! इसका वबाल तुम्हारे साथ ही साथ है दुनिया और आख़िरत में तुम बर्बाद हो गये, अ़ज़ाबे इलाही तुमसे चिमटे हुए हैं, इसी सिलसिले की एक कड़ी बद्र के दिन कुफ़्फ़ार की हज़ीमत और शिकस्त थी जैसे कि ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है। (त़ब्री : 19/324) क़ियामत के दिन की सज़ा भी बाक़ी है।

अल्ह़म्दु लिल्लाह! सूरह फ़ुरक़ान की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह शोअरा

سورة الشعراء

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह शोअरा - 26

आयातः 227 मक्की सूरह, पैराग्राफः 10

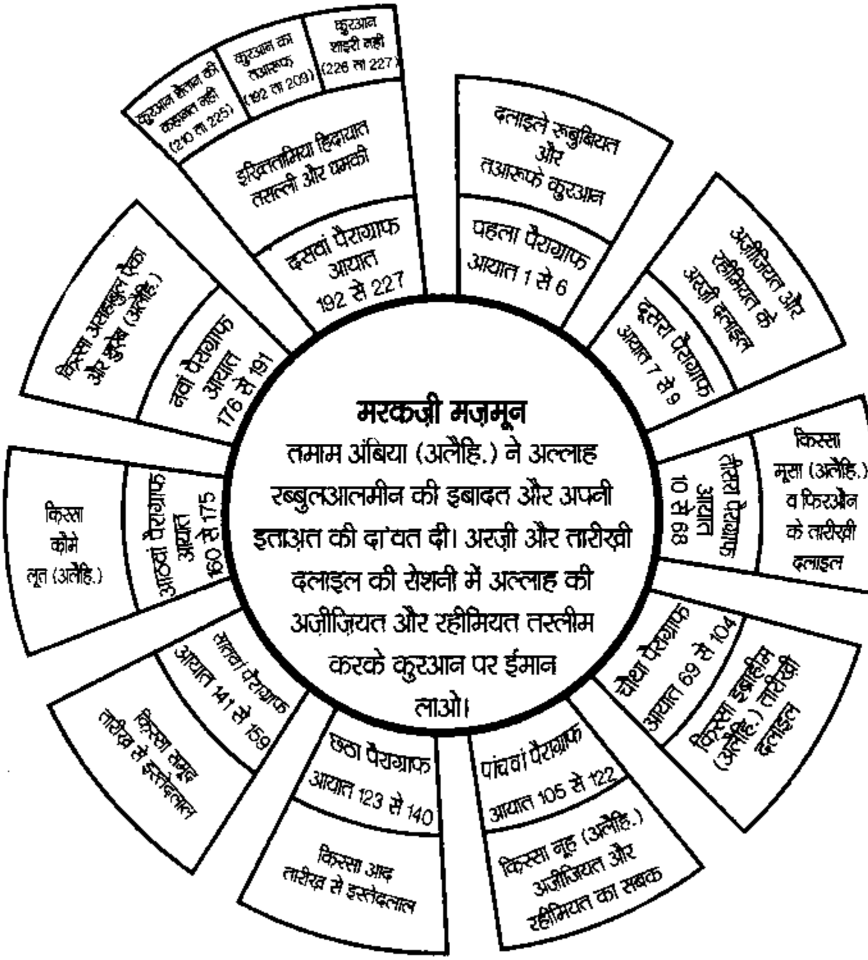

जमानए नुज़ूल :

1. सूरह (शोअरा रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के तीसरे दौर (6ता10 नबवी) में नाज़िल हुई जब अ़रबी कुरआन पर शक के साथ एतराज़ किया जा रहा था और रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर (जुनून) का इल्ज़ाम आइद किया गया और जब कुरैशी क़यादत को छ कौमों (कौमे नूह, आद, समूद अक़वामे लूत व शुऐब व मूसा) के अंजाम से इबरत हासिल करने का मश्वरा दिया गया।
2. आयत 214 (व अनज़िर अशीरतकल अक़रबीन) ऐलाने आम से ज़रा पहले 4 नबवी में नाज़िल हुई, जिसके बाद आप (सल्ल.) ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर बनांगे दहल दावते तौहीद दी। (सहीह बुख़ारीः किताबुत्तफ़सीर, बाब सूरह शोअरा, हदीस 4,492)

तफ़्सीर सूरह शोअरा

मालिक (रह .) की रिवायत कर्दा तफ़्सीर में इसका नाम सूरह जामिआ है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

طٰسٓمٓ ① تِلۡکَ اٰیٰتُ الۡکِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ ② لَعَلَّکَ بَاخِعٌ نَّفۡسَکَ اَلَّا یَکُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِیۡنَ ③
اِنۡ نَّشَاۡ نُنَزِّلۡ عَلَیۡہِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ اٰیَۃً فَظَلَّتۡ اَعۡنَاقُہُمۡ لَہَا خٰضِعِیۡنَ④ وَمَا یَاۡتِیۡہِمۡ
مِّنۡ ذِکۡرٍ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ مُحۡدَثٍ اِلَّا کَانُوۡا عَنۡہُ مُعۡرِضِیۡنَ ⑤ فَقَدۡ کَذَّبُوۡا فَسَیَاۡتِیۡہِمۡ
اَنۡۢبٰٓؤُا مَا کَانُوۡا بِہٖ یَسۡتَہۡزِءُوۡنَ ⑥ اَوَلَمۡ یَرَوۡا اِلَی الۡاَرۡضِ کَمۡ اَنۡۢبَتۡنَا فِیۡہَا مِنۡ کُلِّ
زَوۡجٍ کَرِیۡمٍ⑦ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً ؕ وَمَا کَانَ اَکۡثَرُہُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ⑧ وَاِنَّ رَبَّکَ لَہُوَ الۡعَزِیۡزُ
الرَّحِیۡمُ ⑨

तर्जुमा : "ताॅ सीम मीम (1) यह आयतें रोशन किताब की हैं। (2) इनके ईमान न लाने पर शायद तू अपनी जान खो देगा। (3) अगर हम चाहते तो इन पर आसमान से कोई ऐसा निशान उतारते कि जिसके सामने इनकी गर्दनें झुक जातीं। (4) इनके पास रहमान की तरफ़ से जो भी नई नसीहत आई, यह उससे रूगर्दानी करने वाले बन गए। (5) इन लोगों ने झुठलाया है अब इनके पास जल्दी से इसकी ख़बरें आ जाएँगी जिसके साथ मस्ख़रापन कर रहे हैं। (6) क्या इन्होंने ज़मीन पर नज़रें नहीं डालीं? कि हमने इसमें हर तरह के नफ़ीस जोड़े किस क़द्र उगाये हैं? (7) बेशक इसमें यक़ीनन निशानी है और इनमें के अक्सर लोग मोमिन नहीं हैं। (8) और तेरा रब यक़ीनन वही ग़ालिब और मेहरबान है।" (9)

रसूल (ﷺ) को झुठलाने वालों से इंतिक़ाम लिया जाएगा (आ. 1 से 9) : हुरूफ़े मुक़त्तआत की बहस सूरह बक़रह की तफ़्सीर के शुरू में गुज़र चुकी है फिर फ़र्मान है कि यह आयतें कुरआने मुबीन की हैं जो बहुत वाज़ेह बिलकुल साफ़ और हक़ व बातिल भलाई बुराई के बीच फ़ासला (दूरी)और फ़र्क़ करने वाला है उन लोगों के ईमान न लाने से आप (ﷺ) रंजीदा ख़ातिर और ग़मगीन न हों जैसे और जगह इर्शाद है (فَلَا

(تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ) (35/फ़ातिर : 8) तू इनके ईमान न लाने पर हसरत व अफ़सोस न कर। और आयत में है (فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ) (18/कहफ़ : 6) कहीं ऐसा तो नहीं कि तू इनके पीछे अपनी जान हलाक कर दे चूँकि हमारी यह चाहत ही नहीं कि लोगों को ईमान पर ज़बरदस्ती करें अगर यह हम चाहते तो कोई ऐसी चीज़ आसमान से उतारते कि यह ईमान लाने पर मजबूर हो जाते मगर हम तो इनका इख़्तियारी ईमान तलब करते हैं और आयत में है (وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا) (10/यूनुस : 99) अगर तेरा रब चाहे तो रूए ज़मीन के तमाम लोग मोमिन हो जाएँ क्या तू लोगों पर जबरदस्ती करेगा? जब तक कि वह मोमिन न हो जाएँ। और आयत में है अगर तेरा रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही उम्मत बना देता, यह इख़्तिलाफ़े दीन व मज़हब भी उसका मुक़र्रर किया हुआ है और उसकी हिक्मत को ज़ाहिर करने वाला है उसने रसूल भेज दिये किताबें उतार दीं अपनी दलील व हुज्जत क़ायम कर दी, इंसान को ईमान लाने न लाने में मुख़्तार कर दिया, अब जिस राह वह चाहे लग जाए जब कभी कोई आसमानी किताब नाज़िल हुई बहुत से लोगों ने इससे चेहरा फेर लिया। बावजूद तेरी पूरी आरज़ू के अक्सर लोग बेईमान ही रहेंगे। सूरह यासीन में फ़र्माया बन्दों पर अफ़सोस है, इनके पास जो भी रसूल आया इन्होंने उनका मज़ाक़ बनाया और आयत में है कि हमने पे दर पे पैग़म्बर भेजे लेकिन जिस उम्मत के पास इनका रसूल आया उसने अपने रसूल को झुठलाने में कमी न की यहाँ भी इसके बाद ही फ़र्माया, इस नबी आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) की क़ौम ने भी इसे झुठलाया है इन्हें भी इसका बदला अन्क़रीब मिल जाएगा इन ज़ालिमों को बहुत जल्दी मालूम हो जाएगा कि यह किस राह डाले गए हैं फिर अपनी शानो शौकत क़ुदरत व अज़्मत इ़ज़्ज़त व रिफ़अत बयान करता है कि जिसके कलाम को और जिसके क़ासिद को तुम झूठा कह रहे हो वह इतना बड़ा क़ादिर व क़य्यूम है कि उसी एक ने सारी ज़मीन बनाई है और इसमें जानदार और बेजान चीज़ें पैदा की हैं, खेत फल बाग़ व बहार सब उसी का रचाया हुआ है। शअबी (रह.) फ़र्माते हैं कि "लोग ज़मीन की पैदावार हैं उनमें जो जन्नती है वह करीम है और जो दोज़ख़ी है वह लईम हैं।" (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/289) इसमें क़ुदरते ख़ालिक़ की बहुत सी निशानियाँ हैं कि उसने फैली हुई ज़मीन को और ऊँचे आसमान को पैदा कर दिया बावजूद इसके भी अक्सर लोग ईमान नहीं लाते बल्कि उल्टा उसके नबियों को झूठा कहते हैं, उसकी किताबों को नहीं मानते, उसके हुक्मों का ख़िलाफ़ करते हैं, उसके मनाकर्दा कामों में दिलचस्पी लेते हैं, बेशक तेरा रब हर चीज़ पर ग़ालिब है उसके सामने मख़्लूक़ आजिज़ है, साथ ही वह अपने बन्दों पर मेहरबान है, नाफ़र्मानों के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं करता, देर और ढ़ील देता है ताकि वह अपने करतूतों से बाज़ आ जाएँ लेकिन फिर भी जब वह राहे रास्त पर नहीं आते तो उन्हें सख़्ती से पकड़ लेता है और उनसे पूरा इंतिक़ाम लेता है हाँ! जो तौबा करे और उसकी तरफ़ झुके और उसका फ़र्मांबरदार हो जाए वह उस पर उसके माँ बाप से भी ज़्यादा रह्‌मो करम करता है।

***

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾ قَالَ
رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ
هَارُونَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾ قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا
مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾ فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾ قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ
﴿١٨﴾ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ
الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ
الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدْتَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : "जबकि तेरे रब ने मूसा (عليه السلام) को आवाज़ दी कि तू गुनहगार लोगों के पास जा। (10) क़ौमे फ़िरऔन के पास क्या वह परहेज़गारी न करेंगे? (11) कहने लगे कि मेरे परवरदिगार! मुझे तो ख़ौफ़ है कि कहीं वह मुझे झुठलाने न लगें। (12) मेरा सीना तंग हो रहा है मेरी ज़ुबान चल नहीं रही तो तू हारून (عليه السلام) की तरफ़ वही भेज। (13) और उनका मुझ पर मेरे एक क़सूर का दावा भी है मुझे डर है कि कहीं वह मुझे मार न डालें। (14) जनाब बारी तआला ने फ़र्माया, हर्गिज़ ऐसा न होगा तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ हम ख़ुद सुनने वाले तुम्हारे साथ हैं। (15) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाकर कहो कि बिला शुब्हा हम रब्बुल आलमीन के भेजे हुए हैं। (16) कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को रवाना कर दे। (17) फ़िरऔन कहने लगा कि क्या हमने तुझे तेरे बचपन के ज़माने में अपने यहाँ नहीं पाला था? और तूने अप ी उम्र के बहुत से साल हममें नहीं गुज़ारे? (18) फिर तू अपना वह काम कर गया जो कर गया और तू नाशुक्रों में है। (19) हज़रत मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि मैंने इस काम को उस वक़्त किया था जबकि मैं रास्ता भूले हुए लोगों में से था। (20) फिर तुमसे ख़ौफ़ खाकर मैं तुममें से भाग गया फिर मुझे मेरे रब ने हुक्म व इल्म अता किया और मुझे अपने पैग़म्बरों में से कर दिया। (21) मुझ पर तेरा क्या यही वह एहसान है? जिसे जताकर उसके बदले तू बनी इस्राईल को अपनी ग़ुलामी में रखना चाहता है।" (22)

हज़रत मूसा (ﷺ) और फ़िरऔन का क़िस्सा (आ. 10 से 22) : अल्लाह तआला ने अपने बन्दे और अपने रसूल और कलीम हज़रत मूसा (ﷺ) को जो हुक्म दिया था उसे बयान कर रहा है कि तूर के दायें जानिब से आपको आवाज़ दी, आपसे सरगोशियाँ कीं, आपको अपना रसूल और बरगुज़ीदा बनाया और आपको फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा जो ज़ुल्म पर कमरबस्ता थे और अल्लाह तआला का डर और परहेज़गारी नाम का भी उनमें नहीं रही थी। हज़रत मूसा (ﷺ) ने अपनी चंद कमज़ोरियाँ जनाब बारी तआला के सामने बयान कीं जो इनायते रब्बानी से दूर हो गईं। जैसे सूरह ताहा में आपके सवालात के इज़्हार के बाद है (قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَـٰمُوسَىٰ ۝) (20/ताहा : 36) यानी ऐ मूसा (ﷺ)! तेरे सब सवालात पूरे कर दिये गए। हाँ आपके उज़्र यह बयान हुए हैं कि मुझे डर है कि वह मुझे झुठला देंगे मेरा सीना तंग है, मेरी ज़ुबान लुक्नत वाली है, तो हारून (ﷺ) को भी मेरे साथ नबी बना दिया जाए और मैंने उन ही में से एक क़िब्ती को बिला क़सूर मार डाला था। जिस वजह से मैंने मिस्र छोड़ा अब जाते हुए डर लगता है कि कहीं वह मुझसे बदला न ले लें। जनाब बारी तआला ने जवाब दिया कि किसी बात का खटका न रखो। हम तेरे भाई को तेरा साथी बना देते हैं। और तुम्हें रोशन दलील देते हैं वह लोग तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुँचा सकेंगे, मेरा वादा है कि तुमको ग़ालिब करूँगा, तुम मेरी आयतें लेकर जाओ तो सही, मेरी मदद तुम्हारे साथ रहेगी। मैं तुम्हारी उनकी सब बातें सुनता रहूँगा। जैसे फ़र्मान है कि मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता देखता रहूँगा मेरी हिफ़ाज़त मेरी मदद मेरी नुसरत व ताईद तुम्हारे साथ है तुम फ़िरऔन के पास जाओ और उस पर अपनी रिसालत का इज़्हार करो। जैसे दूसरी आयत में है कि उससे कहो कि हम दोनों में से हर एक अल्लाह तआला का फ़रिस्तादा हैं, फ़िरऔन से कहा कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को भेज दे वह अल्लाह तआला के मोमिन बन्दे हैं, तूने इन्हें अपना ग़ुलाम बना रखा है और इनकी बुरी हालत कर रखी है, ज़िल्लत के साथ इनसे अपने काम लेता है और इन्हें अज़ाबों में जकड़ रखा है अब इन्हें आज़ाद कर दे। हज़रत मूसा (ﷺ) के इस पैग़ाम को फ़िरऔन ने निहायत हिक़ारत से सुना और आपको डाँट कर कहने लगा कि क्या तू वही नहीं? कि हमने तुझे अपने यहाँ पाला, मुद्दतों तक तेरी ख़बरगीरी करते रहे, इस एहसान का बदला तूने यह दिया कि हममें से एक शख़्स को मार डाला और हमारी नाशुक्री की जिसके जवाब में हज़रत कलीमुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, यह सब बातें नबुव्वत से पहले की हैं जबकि मैं ख़ुद बेख़बर था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की क़िराअत में बजाए (मिनज़्ज़ाल्लीन) के (मिनल जाहिलीन) है। हज़रत मूसा (ﷺ) ने साथ ही फ़र्माया कि फिर वह पहला हाल जाता रहा दूसरा और आया और अल्लाह तआला ने मुझे अपना रसूल बनाकर तेरी तरफ़ भेजा अब अगर तू मेरा कहा मानेगा तो सलामती पाएगा और मेरी नाफ़र्मानी करेगा तो हलाक होगा। इस ख़ता के बाद जबकि मैं तुममें से भाग गया उसके बाद अल्लाह तआला का यह फ़ज़्ल मुझ पर हुआ। अब पुराने क़िस्से याद न करो। मेरी आवाज़ पर लब्बैक कह, सुन अगर एक मुझ पर तूने एहसान किया है तो मेरी क़ौम की क़ौम पर तूने ज़ुल्म व जब्र की है उनको बुरी तरह ग़ुलाम बनाकर रखा है, क्या मेरे साथ सलूक और उनके साथ की यह संगदिली और बदसलूकी बराबर बराबर हो जाएगी।

***

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "फ़िरऔन ने कहा, रब्बुल आलमीन कौन है? (23) हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, वह आसमान और ज़मीनों और उनके बीच की तमाम चीज़ों का रब है अगर तुम यक़ीन रखने वाले हो? (24) फ़िरऔन अपने आसपास वालों से कहने लगा कि क्या तुम सुन नहीं रहे? (25) हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया वह तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादों का परवरदिगार है। (26) फ़िरऔन कहने लगा, लोगों! तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है। (27) यह तो यक़ीनन दीवाना है। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया वही मश्रिक़ व मग़्रिब का और उनके बीच की तमाम चीज़ों का रब है। अगर तुम अक़्ल रखते हो।" (28)

शाने रब्बुल आलमीन बज़ुबाने मूसा (عليه السلام) (आ. 23 से 28) : चूँकि फ़िरऔन ने अपनी रइयत (जनता) को बहका रखा था और उन्हें यक़ीन दिलाया था कि मअबूद और रब सिर्फ़ मैं ही हूँ मेरे सिवा कोई नहीं, इसलिए उन सबका अक़ीदा यही था। जब हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया कि मैं रब्बुल आलमीन का रसूल हूँ तो उसने कहा रब्बुल आलमीन है क्या चीज़? मक़्सद यही था कि मेरे सिवा कोई रब है ही नहीं तू जो कह रहा है सिर्फ़ ग़लत है। चुनाँचे और आयत में है कि उसने पूछा (فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى) (20/ताहा : 49, 50) मूसा (عليه السلام)! तुम दोनों का रब कौन है? उसके जवाब में कलीमुल्लाह ने फ़र्माया जिसने हर एक की पैदाइश की है और जो सबका हादी है। यहाँ पर यह याद रहे कि कुछ मंतक़ियो ने यहाँ ठोकर खाई है और कहा है कि फ़िरऔन का सवाल अल्लाह तआला की माहियत से था। यह सिर्फ़ ग़लत है इसलिए कि माहियत को तो जब पूछता जबकि पहले वुजूद का क़ाइल होता। वह तो सिरे से अल्लाह तआला के वुजूद का इंकारी था अपने इसी अक़ीदे को ज़ाहिर करता था और एक एक को यही अक़ीदा घूँट घूँटकर पिला रहा था भले इसके ख़िलाफ़ दलाइल व बराहीन उसके सामने खुल गई थीं। पस उसके इस सवाल पर कि रब्बुल आलमीन कौन है, हज़रत मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि वह सबका ख़ालिक़ है, सबका मालिक है, सब पर क़ादिर है। सबका मअबूद है, यक्ता है, अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, आलमे अल्वा आसमान और उसकी मख़्लूक़ आलमे सुफ़्ला ज़मीन और उसकी कायनात सब उसी की पैदा की हुई है। उनके बीच की चीज़ें हवा परिन्द वग़ैरह सब उसके सामने पस्त और उसके इबादतगुज़ार हैं। अगर तुम्हारे दिल यक़ीन की दौलत से ख़ाली नहीं हुए अगर

तुम्हारी नज़रें रोशन हैं तो रब्बुल आलमीन के यह औसाफ़ उसकी ज़ात के मानने के लिए काफ़ी हैं यह सुनकर फ़िरऔन से चूँकि कोई जवाब न बन सका इसलिए बात को मज़ाक़ में डालने के लिए लोगों को अपने सिखाए बताए हुए अक़ीदे पर जमाने के लिए उनकी तरफ़ देखकर कहने लगा, लो सुनो! यह मेरे सिवा किसी और को ही अल्लाह मानता है? ताज्जुब की बात है हज़रत मूसा (عليه السلام) उसकी इस बेइल्तिफ़ाती से घबराए नहीं और वुजूदे अल्लाह तआला के और दलाइल बयान करने शुरू कर दिये कि वह तुम सबका और तुम्हारे अगलों का मालिक और परवरदिगार है। आज अगर तुम फ़िरऔन को अल्लाह मानते हो तो ज़रा यह तो सोचो कि फ़िरऔन से पहले जहान वालों का अल्लाह कौन था? इसके वुजूद से पहले आसमान ज़मीन का वुजूद था उनका मूजिद कौन था? बस वही मेरा रब है वही तमाम जहानों का रब है उसी का भेजा हुआ मैं हूँ फ़िरऔन दलाइल की इस बारिश की ताब न ला सका कोई जवाब न बन सका। कहने लगा इसे छोड़ो यह तो कोई पागल आदमी है। अगर ऐसा न होता तो मेरे सिवा और दूसरे को रब क्यूँ मानता, मूसा (عليه السلام) ने फिर भी अपनी दलीलों को जारी रखा उसके लग्व कलाम से यक्सू होकर फ़र्माने लगे कि सुनो! मश्रिक़ व मग़्रिब का मालिक जो है वही मेरा रब है। वह सूरज चाँद सितारे मश्रिक़ से चढ़ाता है मग़्रिब की तरफ़ उतारता है। अगर फ़िरऔन अपने ख़ुदाई दावा में सच्चा है तो ज़रा एक दिन इसका ख़िलाफ़ करके दिखा दे कि मग़्रिब से निकाले और मश्रिक़ को ले जाए यही बात इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने ज़माने के बादशाह से बवक़्ते मुनाज़रा कही थी पहले तो अल्लाह का वस्फ़ बयान किया कि वह ज़िन्दा करता है मारता है लेकिन उस बेवक़ूफ़ ने जबकि इस वस्फ़ के अल्लाह के साथ मुख़्तस़ होने का इंकार किया और कहने लगा यह तो मैं भी कर सकता हूँ तो आपने बावजूद इसी दलील में बहुत सी गुंजाइश होने के इससे भी वाज़ेह़ दलील उसके सामने रखी कि अच्छा मेरा रब मश्रिक़ से सूरज निकालता है तू इसे मग़्रिब से निकाल, अब तो होश गुम हो गए। इसी तरह हज़रत मूसा (عليه السلام) की ज़ुबानी ताबड़तोड़ ऐसी वाज़ेह़ और रोशन दलीलें सुनकर फ़िरऔन के औसान ख़ता हो गए वह समझ गया कि अगर एक मैंने न माना तो क्या होगा? यह वाज़ेह़ दलीलें इन सब पर तो असर कर जाएँगी इसलिए अब अपनी क़ुव्वत को काम में लाने का इरादा कर लिया और हज़रत मूसा (عليه السلام) को डराने धमकाने लगा जैसे आगे आ रहा है।

***

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِىْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَىْءٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ

وَابْعَثْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : ''फ़िरऔन कहने लगा सुन ले अगर तूने मेरे सिवा किसी और को मअ़बूद बनाया तो मैं तुझे क़ैदियों में डाल दूँगा। (29) मूसा(अ.) कहने लगे अगर मैं तेरे पास कोई ज़ाहिर चीज़ ले आऊँ? (30) फ़िरऔन ने कहा अगर तू सच्चों में है तो उसे पेश कर। (31) आपने उसी वक़्त अपनी लकड़ी डाल दी जो अचानक खुल्लम खुल्ला ज़बरदस्त अज्दहा बन गई। (32) और अपना हाथ खींच निकाला तो वह भी उसी वक़्त हर देखने वाले को सफ़ेद चमकीला नज़र आने लगा। (33) फ़िरऔन अपने आस पास के सरदारों से कहने लगा भई! यह तो कोई बड़ा दाना जादूगर है। (34) यह तो चाहता है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे शहर से निकाल दे बताओ अब तुम क्या हुक्म देते हो। (35) उन सबने कहा कि आप इसे और इसके भाई को तो छोड़िए और तमाम शहरोंमें मज्मअ़ करने वाले भेज दीजिए। (36) जो आपके पास ज़ी इल्म जादूगरों को ले आएँ।'' (37)

यदे बैज़ाअ (सफ़ेद रोशन हाथ) मूसा (عليه السلام) का अ़ज़ीम मोजिज़ा (आ. 29 से 37) : जब मुबाहिसे में फ़िरऔन हारा दलील व बयान में ग़ालिब न आ सका तो क़ुव्वत और ताक़त का मुज़ाहिरा करने लगा और सत्वतो शौकत से हक़ को दबाने का इरादा किया और कहने लगा कि मूसा (عليه السلام)! मेरे सिवा किसी और को मअ़बूद बनाएगा तो जेल में सड़ा सड़ाकर तेरी जान ले लूँगा। हज़रत मूसा (عليه السلام) भी चूँकि वअ़ज़ व नसीहत तो कर ही चुके थे आपने भी इरादा किया कि मैं भी इसे और इसकी क़ौम को दूसरी तरह क़ाइल करूँ तो कहने लगे क्यूँ जी! मैं अगर अपनी सच्चाई पर किसी ऐसे मोजिज़े का इज़्हार करूँ कि तुम्हें भी क़ाइल होना पड़े तब? फ़िरऔन सिवा इसके क्या कर सकता था कि कहा अच्छा अगर सच्चा है तो पेश कर आपने सुनते ही अपनी लकड़ी जो आपके हाथ में थी उसे ज़मीन पर डाल दिया बस उसका ज़मीन पर पड़ना था कि वह एक अज़्दहे की शक्ल बन गई और अज़्दहा भी बहुत बड़ा तेज़ कुचलियों वाला हैबतनाक डरावनी और ख़ौफ़नाक शक्ल वाला, मुँह फाड़े हुए फनफनाता हुआ। साथ ही अपने गिरेबान में अपना हाथ डालकर निकाला तो वह चाँद की तरह चमकता हुआ निकला। फ़िरऔन की क़िस्मत चूँकि ईमान से ख़ाली थी ऐसे बय्यिन मोजिज़े देखकर भी अपनी बदबख़्ती पर अड़ा रहा और तो कुछ बन न पड़ी अपने साथियों और दरबारियों से कहने लगा, भई! यह तो बड़ा जादूगर निकला। पस अपने पास वालों को इससे उसने रोकना चाहा कि कहीं वह इसे मोजिज़ा न समझ लें, उनसे कहने लगा कि यह तो जादू के करिश्मे हैं। बेशक इतना तो मैं भी मान गया कि है यह अपने फ़न्ने जादूगरी में पूरा उस्ताद, फिर उन्हें हज़रत मूसा (عليه السلام) की दुश्मनी पर आमादा करने के लिए एक और बात बनाई कि यह ऐसे ही शोअ़बदे दिखा दिखाकर लोगों को अपनी ओर मुतवज्जह कर लेगा और जब कुछ लोग इसके साथी हो जाएँगे तो बग़ावत का झण्डा बुलंद करेगा। फिर तुम्हें मग़लूब करके इस मुल्क

में अपना क़ब्ज़ा कर लेगा तो इसके इस्तीसाल की कोशिश अभी से करनी चाहिए। बतलाओ तुम्हारी राय क्या है? कुदरते इलाही देखो कि फ़िरऔनियों से अल्लाह तआला ने वह बात कहलवाई जिसमें हज़रत मूसा (ﷺ) को आम तब्लीग़ का मौक़ा मिले और लोगों पर हक़ खुल जाए यानी जादूगरों को मुक़ाबला के लिए बुलवाया।

***

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا
نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا
لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ
مُّوْسٰى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا
لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ
سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾

तर्जुमा : "फिर एक मुक़र्रर दिन के वादे पर तमाम जादूगर जमा किये गए। (38) और आम लोगों से भी कह दिया गया कि तुम भी मज्मऐ में हाज़िर हो जाओगे? (39) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब आ जाएँ तो हम उन ही की पैरवी करें। (40) जादूगर आकर फ़िरऔन से कहने लगे कि अगर हम जीत गए तो हमें कुछ इन्आम भी मिलेगा? (41) फ़िरऔन ने कहा बड़ी ख़ुशी से बल्कि ऐसी सूरत में तुम मेरे ख़ास दरबारी बन जाओगे। (42) हज़रत मूसा (ﷺ) ने जादूगरों से फ़र्माया जो कुछ तम्हें डालना है डाल दो। (43) उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लकड़िया डाल दीं और कहने लगे इज़्ज़ते फ़िरऔन की क़सम! हम यक़ीनन यक़ीनन ग़ालिब ही रहेंगे। (44) अब हज़रत मूसा (ﷺ) ने भी अपनी लकड़ी मैदान में डाल दी जिसने उसी वक़्त उनके बने बनाये खिलौनों को निगलना शुरू कर दिया। (45) यह देखते ही जादूगर सज्दे में गिर गए। (46) और उन्होंने साफ़ कह दिया कि हम तो अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान लाए। (47) यानी मूसा और हारून (ﷺ) के रब पर।" (48)

मूसा (ﷺ) और जादूगरों के बीच मुक़ाबला (आ. 38 से 48) : मुनाज़रा ज़ुबानी हो चुका, अब मुनाज़रा अमली हो रहा है इस मुनाज़रा का ज़िक्र सूरह आराफ़ सूरह ताहा और इस सूरह में है क़िब्तियों का इरादा अल्लाह तआला के नूर के बुझाने का था और अल्लाह का उसकी नूरानियत के फैलाने का था पस

अल्लाह का इरादा ग़ालिब रहा, ईमान व कुफ़्र का मुक़ाबला जब कभी हुआ ईमान कुफ़्र पर ग़ालिब ही रहा। अल्लाह तआला हक़ को बातिल पर ग़ालिब करता है। बातिल का सर फट जाता है और लोगों के बातिल इरादे हवा में उड़ जाते हैं, हक़ आ जाता है बातिल भाग खड़ा होता है। यहाँ भी यही हुआ, हर हर शहर में सिपाही भेजे गए, चारों तरफ़ से बड़े बड़े नामी गिरामी जादूगर जमा किये गए जो अपने फ़न में कामिल और उस्तादे ज़माना थे। कहा गया है कि उनकी तादाद बारह या पन्द्रह या सत्रह या उन्नीस या कुछ ऊपर तीस या अस्सी हज़ार की या उससे कमो बेश थी। सही तादाद अल्लाह तआला ही को मालूम है उन तमाम के उस्ताद और सरदार चार शख़्स थे, साबू, आज़ूर, हुतहुत और मसफ़ी। चूँकि सारे मुल्क में हुल्लड़ मच चुका था चारों तरफ़ से लोगों के ग़ोल के ग़ोल वक़्ते मुक़र्ररा से पहले मिस्र में जमा हो गए चूँकि यह कुल्लिया क़ायदा है कि रइयत अपने बादशाह के मज़हब पर होती है सबकी ज़ुबान से यही निकलता था कि जादूगरों के ग़ल्बा के बाद हम तो इनकी राह लग जाएँगे, यह किसी की ज़ुबान से न निकला कि जिस तरफ़ हक़ होगा हम उसी तरह हो जाएँगे अब मौक़े पर फ़िरऔन अपने जाह व हश्म के साथ निकला तमाम उमरा व रईस लोग साथ थे लश्कर फ़ौज पलटन साथ थी जादूगरों को अपने दरबार में अपने सामने बुलवाया जादूगरों ने बादशाह से अहद लेना चाहा इसलिए कहा कि जब हम ग़ालिब आ जाएँ तो बादशाह हमें अपने इन्आमात से तो नहीं भूल जाएँगे, फ़िरऔन ने जवाब दिया कि यह कैसे हो सकता है न सिर्फ़ इन्आम बल्कि मैं तो तुम्हें अपने ख़ास रईसों में शामिल कर लूँगा और तुम हमेशा मेरे पास और मेरे साथ ही रहा करोगे। तुम मेरे मुक़र्रब बन जाओगे मेरी तमामतर तवज्जह तुम्हारी ही तरफ़ रहेगी वह ख़ुशी ख़ुशी मैदान की तरफ़ चल दिये। वहाँ जाकर मूसा (عليه السلام) से कहने लगे बोलो! तुम पहले अपनी उस्तादी दिखाते हो या हम दिखाएँ। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया नहीं! तुम ही पहले अपनी भड़ास निकाल लो ताकि तुम्हारे दिल में कोई अरमान न रह जाए यह जवाब पाते ही उन्होंने अपनी छड़ियाँ और रस्सियाँ मैदान में डाल दीं और कहने लगे, फ़िरऔन की इज़्ज़त से ग़ल्बा हमारा ही रहेगा। जैसे अवाम जाहिल किसी काम को करते हैं तो कहते हैं यह फ़लाँ के सवाब से। सूरह आराफ़ में है कि जादूगरों ने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया उन्हें हैबत में डाल दिया और बड़ा भारी जादू ज़ाहिर किया। सूरह ताहा में है कि उनकी लाठियाँ और रस्सियाँ उनके जादू से हिलती जुलती मालूम होने लगीं अब हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अपने हाथ में जो लकड़ी थी मैदान में डाल दी जिसने सारे मैदान में उनकी जो कुछ नज़रबंदियों की चीज़ें थीं सबको हज़म कर लिया पस हक़ ज़ाहिर हो गया और बातिल दब गया और उनकी की करायी सब ग़ारत हो गई यह कोई हल्की सी बात और थोड़ी सी दलील न थी जादूगर तो उसे देखते ही मुसलमान हो गए कि एक शख़्स इतने उस्तादाने फ़न के मुक़ाबला में आता है उसका हाल जादूगर का सा नहीं, वह कोई बात नहीं करता यक़ीनन हमारा जादू जादू है और उसके पास अल्लाह का मोजिज़ा है। वह तो उसी वक़्त वहीं के वहीं रब के सामने सज्दे में गिर गए और उसी मज्मओ में सबके सामने ईमान लाने का ऐलान किया कि हम रब्बुल आलमीन पर ईमान ला चुके फिर अपना क़ौल और वाज़ेह करने के लिए यह भी साथ ही कह दिया कि रब्बुल आलमीन से हमारी मुराद वह रब है जिसे हज़रत मूसा और हारून (عليهما السلام) अपना रब कहते हैं। इतना बड़ा मोजिज़ा, इस क़द्र इंक़िलाब फ़िरऔन ने अपनी आँखों से देखा लेकिन मल्ऊन की क़िस्मत में ईमान न था। फिर भी आँखें न खुलीं और दुश्मने जान हो गया और लगा अपनी ताक़त से हक़ को कुचलने और कहने लगा कि

हाँ! मैं जान गया मूसा (عليه السلام) तुम सबका उस्ताद था इसे तुमने पहले से भेज दिया फिर तुम बज़ाहिर मुक़ाबले करने के लिए आए और बातिनी मश्वरे के मुताबिक़ मैदान में हार गये और इसकी बात मान गए पस तुम्हारा यह मकर खुल गया।

***

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا
لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ اَنْ كُنَّاۤ اَوَّلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْۤ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ فَاَرْسَلَ
فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَاۤئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَاۤءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَاۤئِظُوْنَ
﴿٥٥﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ
﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْۤ اِسْرَاۤءِيْلَ ﴿٥٩﴾

तर्जुमा : "फ़िरओन कहने लगा कि मेरी इजाज़त से पहले तुम इस पर ईमान ला चुके? यक़ीनन यही तुम्हारा वह बड़ा सरदार है जिसने तुम सबको जादू सिखाया है। सो तुम्हें अभी अभी मालूम हो जाएगा, क़सम है मैं भी तुम्हारे हाथ पैर उल्टे तौर पर काट दूँगा और तुम सबको सूली पर लटका दूँगा। (49) उन्होंने कहा कि कोई हर्ज नहीं हम तो अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं ही। (50) इस बिना पर कि हम सबसे पहले ईमान वाले बने हैं हमें उम्मीद है कि हमारा रब हमारी सब ख़ताएँ माफ़ कर दे। (51) हमने मूसा (عليه السلام) को वही की कि रातों रात मेरे बन्दों को निकाल ले चल तुम सब पीछा किये जाओगे। (52) फ़िरओन ने शहरों में जमा करने वालों को भेज दिया। (53) कि यक़ीनन यह गिरोह बहुत ही कम तादाद है। (54) इस पर यह हमें सख़्त ग़ज़बनाक कर रहे हैं। (55) और यक़ीनन हम बड़ी जमाअत हैं इनसे ख़तरा रखने वाले। (56) आख़िरकार हमने इन्हें बाग़ात से और चश्मों से और ख़ज़ानों से (57) और अच्छे अच्छे मक़ामात से निकाल बाहर किया। (58) इसी तरह हुआ और हमने उन तमाम चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को बना दिया।" (59)

हक़ ग़ालिब और बातिल मग़लूब हो गया (आ. 49 से 59) : सुब्हानल्लाह! कैसे कामिलुल ईमान लोग थे हालाँकि अभी ही ईमान में आए थे लेकिन उनके सब्रो सिबात का क्या कहना है। फ़िरऔन जैसा ज़ालिम व जाबिर हाकिम पास खड़े होकर डरा धमका रहा है और वह निडर और बेख़ौफ़ होकर उसकी मंशा के ख़िलाफ़ जवाब दे रहे हैं। हिजाबे कुफ़्र दिल से दूर हो गए हैं इस वजह से सीना ठोककर मुक़ाबला पर आ गए हैं और माद्दी ताक़तों से बिलकुल नहीं डरते। उनके दिलों में यह बात जम गई है कि मूसा (عليه السلام) के पास अल्लाह तआला का दिया हुआ मोजिज़ा है सीखा हुआ जादू नहीं उसी वक़्त क़बूले हक़ किया फ़िरऔन आग बबूला हो गया और कहने लगा कि तुमने तो मुझे कोई चीज़ ही न समझा मुझसे बाग़ी हो गए मुझसे पूछा भी नहीं और मूसा (عليه السلام) की मान ली? यह कहकर फिर इस ख़्याल से कि कहीं हाज़िरीने मज्लिस पर इनके हार जाने बल्कि फिर मुसलमान हो जाने का असर न पड़े, उसने उन्हें समझाने को एक बात बनाई और कहने लगा कि हाँ! तुम सब इसके शागिर्द हो और यह तुम्हारा उस्ताद है। तुम सब ख़ूरद हो और यह तुम्हारा बुज़ुर्ग है। तुम सबको इसी ने जादू सिखाया है। उस मुकाबरा को देखो यह सिर्फ़ फ़िरऔन की बेईमानी और दग़ाबाज़ी थी वरना इससे पहले न जादूगरों ने हज़रत कलीमुल्लाह को देखा था, न अल्लाह के रसूल (عليه السلام) उनकी सूरत से आशना थे अल्लाह के पैग़म्बर तो जादू जानते ही न थे, किसी को क्या सिखाते? अक़्लमंदी के ख़िलाफ़ यह बात कहकर फिर धमकाना शुरू किया और अपनी ज़ालिमाना रविश पर उतर आया, कहने लगा मैं तुम्हारे सबके हाथ पैर उल्टी तरह काट दूँगा। और तुम्हें लंगड़ा लूला बनाकर फिर सूली पर चढ़ा दूँगा और एक को भी इस सज़ा से न छोड़ूँगा सबने एक राय होकर जवाब दिया कि राजा जी! इसमें हर्ज ही क्या है? जो तुमसे हो सके कर गुज़रो हमें मुत्लक़ परवाह नहीं हमें तो अल्लाह तआला की तरफ़ लौटकर जाना है। हमें उसी से जज़ा लेनी है जितनी तक्लीफ़ तू हमें देगा उतना अज्रो सवाब हमारा रब हमें अता करेगा। हक़ पर मुसीबत सहना बिलकुल मामूली बात है जिसका हमें मुत्लक़ डर नहीं हमारी तो अब यही एक आरज़ू है कि हमारा रब हमारे अगले गुनाहों पर हमारी पकड़ न करे जो मुक़ाबला तूने हमसे कराया है उसका वबाल हम पर से हट जाए और उसके लिए हमारे पास सिवाय इसके कोई वसीला नहीं कि हम सब पहले अल्लाह वाले बन जाएँ, ईमान में सब्क़त करें। इस जवाब पर वह और भी बिगड़ा और उन सबको उसने क़त्ल करा दिया, (रज़ियल्लाहु अन्हुम)

फ़िरऔन के चंगुल से बनी इस्राईल की आज़ादी : मूसा (عليه السلام) ने अपनी नबुव्वत का बहुत सारा ज़माना उनमें गुज़ारा अल्लाह तआला की आयतें दलीलें उन पर वाज़ेह कर दीं लेकिन उनका सर नीचा न हुआ उनका तकब्बुर न टूटा उनकी बददिमाग़ी में कोई फ़र्क़ न आया तो अब सिवा इसके कोई चीज़ बाक़ी न रही कि उन पर अज़ाबे इलाही आ जाए और यह ग़ारत हों। मूसा (عليه السلام) को अल्लाह की वही आई कि रातों रात बनी इस्राईलियों को लेकर मेरे हुक्म के मुताबिक़ निकल जाएँ, बनी इस्राईल ने उस मौक़े पर क़िब्तियों से बहुत से ज़ेवर बतौरे आरियतन लिए और चाँद चढ़ने के वक़्त चुपचाप चल दिये। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि "उस रात चाँद ग्रहण था।" (तब्री : 19/354) हज़रत मूसा (عليه السلام) ने रास्ता में पूछा कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की क़ब्र कहाँ है? बनी इस्राईल की एक बुढ़िया ने क़ब्र बतला दी। आपने ताबूते यूसुफ़ अपने साथ उठा लिया। कहा गया है कि ख़ुद आपने ही उसे उठाया था। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की वसिय्यत थी कि बनी इस्राईल जब यहाँ से

जाने लगें तो आपका ताबूत अपने साथ लेते जाएँ। (तबरी : 19/354) इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) किसी आराबी के यहाँ मेहमान हुए उसने आपकी बड़ी ख़ातिरदारी की। वापसी में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कभी हमसे मदीने में भी मिल लेना। कुछ दिनों बाद आराबी आपके पास आया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, कुछ चाहिए? उसने कहा, हाँ! एक तो ऊँटनी दीजिए होदज के साथ और एक बकरी दीजिए जो दूध देती हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! तूने बनी इस्राईल की बुढ़िया जैसा सवाल न किया। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा, वह वाक़िया क्या है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब हज़रत कलीमुल्लाह बनी इस्राईल को लेकर चले तो रास्ता भूल गए हज़ार कोशिश की लेकिन राह नहीं मिलती आपने लोगों को जमा करके पूछा, यह क्या अंधेरा है? तो उलमा-ए-बनी इस्राईल ने कहा, बात यह है कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने आख़िरी वक़्त में हमसे अहद लिया था कि जब हम मिस्र से चलें तो आपके ताबूत को भी यहाँ से अपने साथ लेते जाएँ। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने पूछा कि तुममें से कौन जानता है कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) का ताबूत कहाँ है? सबने इंकार कर दिया कि हम नहीं जानते। हममें से सिवाए एक बुढ़िया के और कोई भी आपकी क़ब्र से वाक़िफ़ नहीं। आपने उस बुढ़िया के पास आदमी भेजकर उससे कहलवाया कि मुझे हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की क़ब्र दिखलाओ। बुढ़िया ने कहा, हाँ! दिखला दूँगी लेकिन पहले अपना हक़ ले लूँ। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने कहा तू क्या चाहती है? उसने जवाब दिया कि जन्नत में आपका साथ मुझे मयस्सर हो। आप पर उसका यह सवाल बहुत भारी पड़ा उसी वक़्त वही आई कि इसकी बात मान लो इसकी शर्त मंज़ूर कर लो। अब वह आपको एक झील के पास ले गई जिसके पानी का रंग भी मुतग़य्यर हो गया था। कहा कि इसका पानी निकाल डालो जब पानी निकाल डाला गया और ज़मीन नज़र आने लगी तो कहा अब यहाँ खोदो खोदना शुरू किया तो क़ब्र ज़ाहिर हो गई ताबूत साथ रख लिया। अब जो चलने लगे तो रास्ता साफ़ नज़र आने लगा और सीधी राह लग गए। (हाकिम : 2/404, 405; व सनदुहू सहीहुन; मुस्नद अबी यअला : 7254; इब्ने हिब्बान : 723) लेकिन यह हदीस बहुत ही ग़रीब है बल्कि ज़्यादा क़रीब हक़ के तो यह है कि यह मौक़ूफ़ है। यानी रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान ही नहीं, वल्लाहु आलम! यह लोग तो अपने रास्ते लग गए इधर फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की सुबह के वक़्त जो आँख खुलती है तो चौकीदार गुलाम वग़ैरह कोई नहीं, सख़्त पेच व ताब खाने लगे और मारे गुस्से के लाल हो गए। जब यह मालूम हुआ कि बनी इस्राईल तो रात को सबके सब फ़रार हो गए हैं तो और भी सन्नाटा छा गया उसी वक़्त अपने लश्कर जमा करने लगा सबको जमा करके उनसे कहने लगा कि यह बनी इस्राईल का एक छोटा सा गिरोह है। सिर्फ़ ज़लील, कमीन और क़लील लोग हैं हर वक़्त उनसे हमें कोफ़्त होती रहती है, तक्लीफ़ पहुँचती रहती है और फिर हर वक़्त हमें उनकी तरफ़ से दग़दग़ा लगा रहता है यह मअनी (हाज़िरून) की क़िरअत पर हैं, सलफ़ की एक जमाअत ने इसे हज़्रून भी पढ़ा है। यानी हम हथियारबंद हैं। मैं इरादा कर चुका हूँ कि अब इन्हें इनकी सरकशी का मज़ा चखा दूँ इन सबको एक साथ घेरघार कर गाजर मूली की तरह काट डालूँ। अल्लाह की शान यही बात उसी पर लौट पड़ी और वह अपनी क़ौम व लश्कर के साथ एक ही वक़्त में हलाक हुआ, लअनतुल्लाहि अलैहि व अला मन तबिअह। जनाब बारी तआला का इर्शाद है कि यह लोग अपनी ताक़त और कसरत के घमण्ड पर बनी इस्राईल के पीछा में उन्हें नेस्त व नाबूद करने के इरादे से निकल खड़े हुए। इस बहाने हमने उन्हें उनके बाग़ात से चश्मों और नहरों से ख़ज़ानों

और बारौनक़ मकानों से ख़ारिज किया और जहन्नम वासिल किया वह अपने बुलंद व बाला शौकत व शान वाले महल्लात, हरे भरे बाग़ात, जारी नहरें, ख़ज़ाने, सल्तनत मुल्क, तख़्तो ताज, जाह व माल सब छोड़कर बनी इस्राईल के पीछे मिस्र से निकले और हमने उनकी यह तमाम चीज़ें बनी इस्राईल को दिलवा दीं जो आज तक पस्त हाल थे ज़लील व नादार थे। चूँकि हमारा इरादा हो चुका था कि हम इन कमज़ोरों को उभारें और इन गिरे पड़े लोगों को बरसरे तरक़्क़ी लाएँ और इन्हें पेशवा और वारिस बना दें वह इरादा हमने पूरा किया।

***

فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَاءَى الْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ
كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ
فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾ وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ
وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

तर्जुमा : "पस फ़िरऔनी सूरज निकलते ही बनी इस्राईल के पीछे निकल खड़े हुए। (60) जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा (عليه السلام) के साथी कहने लगे बस अब तो हम पकड़ लिये गए। (61) मूसा (अ.) ने कहा हर्गिज़ ऐसा नहीं हो सकता, यक़ीन मानो कि मेरे साथ मेरा परवरदिगार है जो मुझे अभी अभी राह दिखा देगा। (62) हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ वही भेजी कि दरिया पर अपनी लकड़ी मार उसी वक़्त दरिया फट गया और हर एक हिस्सा पानी का मिस्ल बड़े सारे पहाड़ के हो गया। (63) और हमने उसी जगह दूसरों को नज़दीक ला खड़ा कर दिया। (64) और मूसा (عليه السلام) को और उसके तमाम साथियों को नजात दे दी। (65) फिर और सब दूसरों को डुबो दिया। (66) यक़ीनन इसमें बड़ी इब्रत है और इनमें से अक्सर लोग ईमान वाले नहीं। (67) और बेशक तेरा रब बड़ा ही ग़ालिब व मेहरबान है।" (68)

फ़िरऔन और उसकी क़ौम का इब्रतनाक अंजाम (आ. 60 से 68) : फ़िरऔन अपने तमाम लाव लश्कर को तमाम रिआया को मिस्र और बैरूने मिस्र के लोगों को अपने वालों को और अपनी क़ौम के लोगों को लेकर बड़े तम्तराक़ और ठाठ से बनी इस्राईल को तहस नहस करने के इरादे से चला कुछ कहते हैं कि उनकी तादाद लाखों से तजावुज़ कर गई थी उनमें से एक लाख तो सिर्फ़ स्याह रंग घोड़ों पर सवार थे लेकिन यह ख़बर अहले किताब की है जो ताम्मुल तलब है। कअब (रह.) से तो मरवी है कि आठ लाख ऐसे घोड़ों पर

सवार थे। हमारा तो ख़्याल है कि यह सब बनी इस्राईल की मुबालग़ा आमेज़ रिवायतें हैं इतना तो क़ुरआन से साबित है कि फ़िरऔन अपनी कुल जमाअ़त को लेकर चला मगर क़ुरआन ने उनकी तादाद नहीं बयान की, न इसका इल्म हमें कुछ नफ़ा देने वाला है। तुलूअे आफ़ताब के वक़्त उनके पास यह पहुँच गया। काफ़िरों ने मोमिनों को और मोमिनों ने काफ़िरों को देख लिया। हज़रत मूसा (عليه السلام) के साथियों के मुँह से बेसाख़्ता निकल गया कि मूसा (عليه السلام)! अब बतलाओ क्या करें पकड़ लिये गए आगे बहरे क़ुल्ज़ुम है पीछे फ़िरऔन का टिड्डीदल लश्कर है, न जाये माँदन न पाये रफ़्तन। ज़ाहिर है कि नबी व ग़ैर नबी का ईमान यक्साँ नहीं होता। हज़रत मूसा (عليه السلام) निहायत ठण्डे दिल से जवाब देते हैं कि घबराओ नहीं तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। मैं अपनी राय से तुम्हें लेकर नहीं निकला बल्कि अहकमुल हाकिमीन के हुक्म से तुम्हें लेकर चला हूँ वह वादाख़िलाफ़ नहीं उनके अगले हिस्से पर हज़रत हारून (عليه السلام) थे उन ही के साथ हज़रत यूशअ़ बिन नून (عليه السلام) थे या आले फ़िरऔन का मोमिन शख़्स था और हज़रत मूसा (عليه السلام) लश्कर के आख़िरी हिस्से में थे मारे घबराहट के और राह न पाने के सारे बनी इस्राईल हैरान व परेशान होकर ठहर गए और इज़्तिराब के साथ जनाब मूसा (عليه السلام) से पूछने लगे कि इसी राह पर चलने का अल्लाह तआ़ला का हुक्म था? आपने फ़र्माया हाँ! इतनी देर में तो फ़िरऔनी सर पर आ पहुँचे, उसी वक़्त परवरदिगार की वह्यी आयी कि ऐ नबी (عليه السلام)! इस दरिया पर अपनी लकड़ी मारो और फिर मेरी क़ुदरत का करिश्मा देखो। आपने लकड़ी मारी जिसके लगते ही बहुक्मे बारी पानी फट गया उस परेशानी के वक़्त हज़रत मूसा (عليه السلام) ने यह दुआ माँगी जो इब्ने अबी हातिम में इन अल्फ़ाज़ से मरवी है (या मन काना क़ब्ला कुल्लि शैइल मुकव्विनु लि कुल्लि शैइन वल काइनु बअ़द कुल्लि शैइन इज्अल्लना मख़रजन) यह दुआ हज़रत मूसा (عليه السلام) के मुँह से निकली ही थी जो अल्लाह तआ़ला की वह्यी आई कि दरिया पर अपनी लकड़ी मारो। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "उस रात अल्लाह तआ़ला ने दरिया की तरफ़ पहले ही से वह्यी भेज दी थी कि जब मेरे पैग़म्बर हज़रत मूसा (عليه السلام) आएँ और तुझे लकड़ी मारें तो आपकी सुनना और मानना।" पस समुन्द्र में रात भर तलातुम रहा, उसकी लहरें इधर उधर सर टकराती फिरीं कि न मालूम कि हज़रत कब और किधर से आ जाएँ और मुझे लकड़ी मार दें, ऐसा न हो कि मुझे ख़बर न लगे और मैं उनके हुक्म की बजाआवरी न कर सकूँ। जब बिलकुल किनारे पहुँच गए तो आपके साथ हज़रत यूशअ़ बिन नून (عليه السلام) ने फ़र्माया, ऐ नबी (عليه السلام)! अल्लाह का आपको क्या हुक्म है? आपने फ़र्माया, यही कि मैं समुन्द्र पर अपनी लकड़ी मारूँ उन्होंने कहा फिर क्या देर है? चुनाँचे आपने लकड़ी मारकर फ़र्माया। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से तू फट जा और मुझे चलने का रास्ता दे दे। बस उसी वक़्त वह फट गया, रास्ते बीच में साफ़ नज़र आने लगे और उसके आसपास पानी बतौर पहाड़ के हो गया, उसमें बारह रास्ते निकल आए, बनी इस्राईल के क़बीले भी बारह ही थे। फिर क़ुदरते बारी तआ़ला से हर दो फ़रीक़ के बीच जो पहाड़ हाइल था उसमें ताक़ बन गए ताकि हर एक दूसरे को सलामत रवी से आता हुआ देखे। (तब्री : 19/357) पानी मिस्ल दीवारों के हो गया और हवा को हुक्म हुआ उसने बीच से पानी को और ज़मीन को ख़ुश्क करके रास्ते साफ़ कर दिये पस उस ख़ुश्क रास्ते से आप अपनी क़ौम के साथ बेखटके जाने लगे, फिर फ़िरऔनियों को अल्लाह तआ़ला ने दरिया के क़रीब कर दिया फिर मूसा (عليه السلام) और बनी इस्राईल को तो

सबको नजात मिल गई उनमें से कोई न डूबा। और बाक़ी सब काफ़िरों में से कोई न बचा। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''फ़िरऔन को जब बनी इस्राईल के भाग जाने की ख़बर मिली तो उसने एक बकरी ज़िब्ह की और कहा इसकी खाल उतरे उससे पहले मेरे पास छः लाख लश्कर जमा हो जाना चाहिए'' मूसा (عليه السلام) जब दरिया के किनारे पहुँच गए तो दरिया से कहने लगे, तू फट जा, कहीं हट जा और हमें जगह दे। उसने कहा, यह क्या तकब्बुर की बातें कर रहे हो, क्या मैं इससे पहले भी कभी फटा हूँ और हटकर किसी इंसान को जगह दी है जो तुझे दूँगा। आपके साथ जो बुज़ुर्ग शख़्स थे उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी (عليه السلام)! क्या यही रास्ता और यही जगह अल्लाह तआला की बतलाई हुई है? आपने फ़र्माया, हाँ! यही उन्होंने कहा, फिर न तो आप झूठे हैं न आपसे ग़लत फ़र्माया गया है। आपने दोबारा यही कहा लेकिन फिर भी कुछ न हुआ। उस बुज़ुर्ग शख़्स ने दोबारा भी यही सवाल जवाब किया। उसी वक़्त वह्यी उतरी कि समुन्द्र पर अपनी लकड़ी मार। अब आपको ख़्याल आया और लकड़ी मारी, लकड़ी लगते ही समुन्द्र ने रास्ता दे दिया बारह राहें ज़ाहिर हो गईं हर फ़िर्क़ा अपने रास्ते को जान गया और अपनी राह लग गया और एक दूसरे को देखते हुए इत्मिनान के साथ तमाम चल दिये। हज़रत मूसा (عليه السلام) तो बनी इस्राईल को लेकर पार निकल गए और फ़िरऔनी उनकेपीछे समुन्द्र में उतर आये, तभी अल्लाह तआला के हुक्म से समुन्द्र का पानी जैसा पहले था वैसा ही हो गया और सबको डुबो दिया जब सबसे आख़िरी बनी इस्राईल निकला और सबसे आख़िरी क़िब्ती समुन्द्र में आ गया उसी वक़्त जनाब बारी तआला के हुक्म से समुन्द्र का पानी एक हो गया और सारे के सारे क़िब्ती एक एक करके डुबो दिये गए। इसमें बड़ी इब्रतनाक निशानी है कि किस तरह गुनहगार बर्बाद होते हैं और नेक किरदार शाद होते हैं लेकिन फिर भी अक्सर लोग ईमान जैसी दौलत से महरूम रह जाते हैं। बेशक तेरा रब अ़ज़ीज़ व रहीम है।

***

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ
اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ
يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ
تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾

तर्जुमा : ''इन्हें इब्राहीम (عليه السلام) का वाक़िया भी सुना दो। (69) जबकि उन्होंने अपने वालिद और अपनी क़ौम से फ़र्माया कि तुम किसकी इबादत करते हो? (70) उन्होंने जवाब दिया कि बुतों की हम तो बराबर उनके मुजाविर बने बैठे रहते हैं। (71) आपने फ़र्माया कि जब तुम उन्हें पुकारते हो तो क्या वह सुनते भी हैं? (72) या तुम्हें नफ़ा नुक़्सान भी पहुँचा सकते हैं? (73)

उन्होंने कहा कि यह हम कुछ नहीं जानते हमने तो अपने बाप दादों को इसी तरह करते पाया। (74) आपने फ़र्माया कुछ ख़बर भी है? जिन्हें तुम पूज रहे हो (75) तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा (76) वह सब मेरे दुश्मन हैं सिवाय सच्चे अल्लाह तआला के जो तमाम जहान का पालनहार है।" (77)

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की दावते तौहीद (आ. 69 से 77) : तमाम मुवह्हिदों के बाप और अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल और ख़लील हज़रत इब्राहीम (ﷺ) का वाक़िया बयान हो रहा है। हुज़ूर (ﷺ) को हुक्म हो रहा है कि आप अपनी उम्मत को यह वाक़िया सुना दें ताकि वह इख़्लास तवक्कल और रब्बे वाहिद की इबादत और शिर्क और मुश्रिकीन से बेज़ारी में आप (ﷺ) की इक़्तिदा करें। आप अव्वल दिन से अल्लाह तआला की तौहीद पर क़ायम थे और आख़िर दिन तक उसी तौहीद पर जमे रहे। अपनी क़ौम से और अपने बाप से फ़र्माया कि यह बुतपरस्ती क्या कर रहे हो। उन्होंने जवाब दिया कि हम तो पुराने वक़्त से इन बुतों की मुजाविरी और इबादत करते चले आते हैं। हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने उनकी इस ग़लती को उन पर खोल दिया, उनकी ग़लत रविश बेनक़ाब करने के लिए एक बात और भी बयान की कि तुम इनसे दुआएँ करते हो और दूर नज़दीक से इनको पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी पुकार सुनते हैं? या जिस नफ़ा के हासिल करने के लिए इन्हें तुम बुलाते हो वह नफ़ा तुम्हें पहुँचा सकते हैं? या अगर तुम इनकी इबादत छोड़ दो तो क्या वह नुक़्सान पहुँचा सकते हैं।

इसका जवाब जो क़ौम की तरफ़ से मिला वह साफ़ ज़ाहिर है कि इनके मअबूद उन कामों में से किसी काम को नहीं कर सकते। उन्होंने साफ़ कहा कि हम तो अपने बड़ों की तक़्लीद की वजह से बुतपरस्ती पर जमे हुए हैं।

इसके जवाब में हज़रत ख़लीलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे और उनके मअबूदाने बातिल से अपनी बराअत और बेज़ारी का ऐलान कर दिया साफ़ फ़र्मा दिया कि तुम और तुम्हारे मअबूद जिनकी तुम और तुम्हारे बाप दादा पूजते रहे हो उन सबसे मैं बेज़ार हूँ वह सब मेरे दुश्मन हैं मैं सिर्फ़ सच्चे रब्बुल आलमीन का परस्तार हूँ मैं मुवह्हिद मुख़्लिस हूँ, जाओ तुमसे और तुम्हारे मअबूदों से जो हो सके कर लो। हज़रत नूह (ﷺ) ने अपनी क़ौम से यही फ़र्माया था कि तुम और तुम्हारे सारे मअबूद मिलकर अगर मेरा कुछ बिगाड़ सकते हो तो कमी न करो। हज़रत हूद (ﷺ) ने भी फ़र्माया था मैं तुमसे और तुम्हारे मअबूदों से अल्लाह तआला के सिवा सबसे बेज़ार हूँ। तुम सब अगर मुझे कुछ नुक़्सान पहुँचा सकते हो तो पहुँचा दो मेरा भरोसा अपने रब की ज़ात पर है, तमाम जानदार उसके मातहत हैं वह सीधी राह वाला है। इसी तरह ख़लीलुर्रहमान (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे मअबूदों से बिलकुल नहीं डरता। डर तो तुम्हें मेरे रब से रखना चाहिए जो सच्चा अल्लाह तआला है। आपने ऐलान कर दिया था कि मुझमें तुममें दुश्मनी है जब तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ। मैं ऐ वालिद! तुझसे और तेरी क़ौम से और तेरे मअबूदों से बरी हूँ सिर्फ़ अपने रब से आरज़ू है कि वह मुझे राहे रास्त दिखलाए। इसी को यानी (ला इलाहा इल्लल्लाह) को उन्होंने कलिमा बना लिया।

الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ ﴿۷۸﴾ وَالَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِ ﴿۷۹﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ
﴿۸۰﴾ وَالَّذِیْ یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓـَٔتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ ﴿۸۲﴾

तर्जुमा : "जिसने मुझे पैदा किया है और वही मेरी रहबरी फ़र्माता है। (78) वही जो मुझे खिलाता पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफ़ा अ़ता करता है। (80) और वही मुझे मार डालेगा। फिर ज़िन्दा कर देगा। (81) और जिससे मुझे उम्मीद बंधी हुई है कि वह रोज़े जज़ा में मेरे गुनाहों को बख़्श देगा।" (82)

अल्लाह कौन है? (78 से 82) : हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) अपने रब की सिफ़तें बयान करते हैं कि मैं तो इन औसाफ़ वाले रब का ही आ़बिद हूँ उसके सिवा और किसी की इबादत नहीं करूँगा पहला वस्फ़ यह है कि वह मेरा ख़ालिक़ है उसी ने अंदाज़ा मुक़र्रर किया है और वही मख़्लूक़ात की उसकी त़रफ़ रहबरी करता है। दूसरा वस्फ़ यह कि वह हादिये ह़क़ीक़ी है जिसे चाहता है अपनी राहे मुस्तक़ीम पर चलाता है जिसे चाहता है उसे ग़लत़ राह पर लगा देता है। तीसरा वस्फ़ मेरे रब का यह है कि वह राज़िक़ है आसमान व ज़मीन के तमाम अस्बाब उसी ने मुहय्या किये हैं। बादलों का उठाना, फैलाना उनसे बारिश का बरसाना, उससे ज़मीन को ज़िन्दा करना फिर पैदावार का उगाना उसी का काम है। वही मीठा और प्यास बुझाने वाला पानी हमें देता है और अपनी और मख़्लूक़ को भी ग़र्ज़ खिलाने पिलाने वाला वही है साथ ही बीमारी तंदरुस्ती भी उसी के हाथ है लेकिन ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) का कमाले अदब देखिए कि बीमारी की निस्बत तो अपनी त़रफ़ की और शिफ़ा की निस्बत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ भले बीमारी भी उसी की क़ज़ा व क़द्र से और उसी की बनाई हुई चीज़ है। यही लत़ाफ़त सूरह फ़ातिह़ा की दुआ़ में भी है कि इन्आ़म व हिदायत की इस्नाद तो रब्बे आ़लम की त़रफ़ की है और ग़ज़ब के फ़ाइल को ह़ज़्फ़ कर दिया है और ज़लालत बंदे की त़रफ़ मंसूब कर दी है। सूरह जिन्न में जिन्नात का क़ौल भी मुलाह़िज़ा हो जहाँ उन्होंने कहा है कि हमें नहीं मालूम कि ज़मीन वाली मख़्लूक़ के साथ किसी बुराई का इरादा किया गया है या उनके साथ उनके रब ने भलाई का इरादा किया है? यहाँ भी भलाई की निस्बत रब की त़रफ़ की गई और बुराई के इरादे में यह निस्बत ज़ाहिर नहीं की गई। इस त़रह़ की यह आयत है कि जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मेरी शिफ़ा पर सिवाय उस अल्लाह तआ़ला के और कोई क़ादिर नहीं, दवा में तासीर पैदा करना भी उसी के बस की चीज़ है, मौत व ह़यात पर क़ादिर भी वही है। इब्तिदा और इंतिहा उसी के हाथ है उसी ने पहली पैदाइश की है वही दोबारा लौटाएगा। दुनिया और आख़िरत में गुनाहों की बख़्शिश पर भी वही क़ादिर है। वह जो चाहता है करता है। ग़फ़ूर व रह़ीम वही है।

***

رَبِّ هَبۡ لِیۡ حُکۡمًا وَّاَلۡحِقۡنِیۡ بِالصّٰلِحِیۡنَ ﴿۸۳﴾ وَاجۡعَلۡ لِّیۡ لِسَانَ صِدۡقٍ فِی الۡاٰخِرِیۡنَ ﴿۸۴﴾
وَاجۡعَلۡنِیۡ مِنۡ وَّرَثَۃِ جَنَّۃِ النَّعِیۡمِ ﴿۸۵﴾ وَاغۡفِرۡ لِاَبِیۡۤ اِنَّہٗ کَانَ مِنَ الضَّآلِّیۡنَ ﴿۸۶﴾ وَلَا تُخۡزِنِیۡ
یَوۡمَ یُبۡعَثُوۡنَ ﴿۸۷﴾ یَوۡمَ لَا یَنۡفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوۡنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنۡ اَتَی اللّٰہَ بِقَلۡبٍ سَلِیۡمٍ ﴿۸۹﴾

तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! मुझे हिक्मत अ़ता फ़र्मा और मुझे नेक लोगों में मिला दे। (83) और मेरा ज़िक्रे ख़ैर पिछले लोगों में बाक़ी रख। (84) मुझे नेअ़मतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85) और मेरे वालिद को बख़्श दे यक़ीनन वह गुमराहों में था। (86) और जिस दिन कि लोग दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे मुझे रुस्वा न कर। (87) जिस दिन कि माल और औलाद कुछ काम न आएगी। (88) लेकिन फ़ायदा वाला वही होगा जो अल्लाह तआ़ला के सामने बेऐब दिल लेकर जाए।" (89)

इब्राहीम (عليه السلام) की प्यारी दुआएँ (आ. 83 से 89) : हुक्म से मुराद आ़म अ़क़्ले उलूहियत किताब और नबुव्वत है, आप अल्लाह से दुआ़ करते हैं कि मुझे यह चीज़ें अ़ता फ़र्माकर दुनिया और आख़िरत में नेक लोगों में शामिल रख। चुनाँचे सहीह हदीस में है रसूले करीम (ﷺ) ने भी आख़िरी वक़्त में दुआ़ माँगी थी कि ऐ अल्लाह! आ़ला रफ़ीक़ों में मिला दे, तीन बार यही दुआ़ की। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी (ﷺ) व वफ़ातिही : 4437, 4438) एक हदीस में हुज़ूर (ﷺ) की यह दुआ़ भी मरवी है (अल्लाहुम्मा अह्यिना मुस्लिमीना व अमित्ना मुस्लिमीना व अल्हिक़्ना बिस्सालेहीना ग़ैरा ख़ज़ाया वला मुबद्दलीन) (अहमद : 3/424; व सनदुहू सहीहुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 10445) यानी ऐ अल्लाह! हमें इस्लाम पर ज़िन्दा रख और मुसलमानी की हालत में ही मौत दे और नेकों में मिला दे यहाँ तक कि न रुस्वाई हो न तब्दीली।

फिर और दुआ़ करते हैं कि मेरे बाद भी मेरा ज़िक्रे ख़ैर लोगों में जारी रहे लोग नेक बातों में मेरी इक़्तिदा करते रहें। अल्लाह तआ़ला ने भी उनका ज़िक्र पिछली नस्लों में बाक़ी रखा हर एक आप पर सलाम भेजता है। अल्लाह तआ़ला किसी नेक बन्दे की नेकी अकारत नहीं करता एक जहान है जिनकी ज़ुबानें आपकी ता'रीफ़ व तौसीफ़ से तर हैं, दुनिया में भी अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ऊँचाई और भलाई दी। उ़मूमन हर मज़हब व मिल्लत के लोग ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) से मुहब्बत रखते हैं और दुआ़ करते हैं कि मेरा ज़िक्रे जमील जहाने दुनिया में बाक़ी रहे वहाँ आख़िरत में भी जन्नती बनाया जाऊँ और ऐ अल्लाह! मेरे गुमराह वालिद को भी माफ़ फ़र्मा। लेकिन अपने काफ़िर बाप के लिए इस्तिग़फ़ार करना एक वादे पर था जब आप पर उसका दुश्मने अल्लाह होना खुल गया कि वह कुफ़्र ही पर मरा तो आपके दिल से उसकी इ़ज़्ज़त व मुहब्बत जाती रही और इस्तिग़फ़ार करना भी छोड़ दिया। इब्राहीम (عليه السلام) बड़े साफ़ दिल और बुर्दबार थे। हमें भी जहाँ हज़रत इब्राहीम (عليه السلام)

की रविश पर चलने का हुक्म मिला है वहीं यह भी फ़र्माया गया है कि इस बात में उनकी पैरवी न करना। फिर दुआ करते हैं कि मुझे क़ियामत के दिन की रुस्वाई से बचा लेना जबकि तमाम अगली पिछली मख़्लूक़ ज़िन्दा होकर एक मैदान में खड़ी होगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि क़ियामत के दिन हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की अपने वालिद से मुलाक़ात होगी आप देखेंगे कि उसका चेहरा ज़िल्लत से और गर्दो गुबार से आलूदा हो रहा है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह शोअरा बाब (वला तुख़्ज़िनी यौमा युब्असून) : 4768) और रिवायत में है कि उस वक़्त आप जनाब बारी में अर्ज़ करेंगे कि परवरदिगार! तेरा मुझसे क़ौल है कि क़ियामत के दिन रुस्वा न करेगा। अल्लाह तआला कहेगा सुन ले जन्नत तो काफ़िर पर क़त्अन हराम है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह शोअरा बाब (वला तुख़्ज़िनी यौमा युब्असून) : 4769) और रिवायत में है कि इब्राहीम (عليه السلام) अपने बाप को उस हालत में देखकर कहेंगे कि देख मैं तुझे नहीं कह रहा था कि मेरी नाफ़र्मानी न कर, बाप जवाब देगा कि अच्छा! अब न करूँगा । आप अल्लाह तआला की जनाब में अर्ज़ करेंगे कि परवरदिगार! तूने मुझसे वादा किया है कि इस दिन मुझे रुस्वा न करेगा, अब इससे बढ़कर और रुस्वाई क्या होगी कि मेरा बाप इस तरह रहमत से दूर रहे। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मेरे ख़लील! मैंने तो जन्नत काफ़िरों पर हराम कर दी है। फिर कहेगा इब्राहीम! देख तेरे पैरों तले क्या है? आप (عليه السلام) देखेंगे कि एक बदसूरत बिज्जू कीचड़ पानी में लुथड़ा खड़ा है जिसके पैर पकड़कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वत्तख़ज़ल्लाहू इब्राहीमा ख़लीला) : 3350) हक़ीक़तन यही उनके वालिद होंगे जो उस सूरत में कर दिये गए और अपनी मुक़र्ररा जगह पहुँचा दिये गए उस दिन इंसान अगर अपना फ़िदया माल से अदा करना चाहे भले दुनिया भर के ख़ज़ाने दे दे लेकिन बेकार है, न उस दिन औलाद फ़ायदा देगी, तमाम अहले ज़मीन को अपने बदले में दुनिया देना चाहे फिर भी कुछ हासिल नहीं होगा। उस दिन नफ़ा देने वाली चीज़ ईमान इख़्लास और शिर्क और अहले शिर्क से बेज़ारी है जिसका दिल सालेह हो यानी शिर्क व कुफ़्र के मैल कुचैल से साफ़ हो अल्लाह को सच्चा जानता हो, क़ियामत को यक़ीनी मानता हो, दोबारा जी उठने पर ईमान रखता हो। (तब्री : 19/366) अल्लाह तआला की तौहीद का क़ाइल और आमिल हो, निफ़ाक़ वग़ैरह से दिल मरीज़ न हो, बल्कि ईमान व इख़्लास और नेक अक़ीदे से दिल सही और तंदरुस्त हो, बिदअतों से नफ़रत रखता हो और सुन्नत से इत्मिनान और उल्फ़त रखता हो।

***

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٩٠ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۝٩١ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ
تَعْبُدُوْنَ ۝٩٢ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝٩٣ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ
وَالْغَاوٗنَ ۝٩٤ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ۝٩٥ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۝٩٦ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا
لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

तर्जुमा : ''परहेज़गारों के लिए जन्नत बिलकुल नज़दीक लाई जाएगी। (90) और गुमराह लोगों के लिए जहन्नम ज़ाहिर कर दी जाएगी। (91) और उनसे पूछा जाएगा कि जिनकी तुम पूजा करते रहे वह कहाँ हैं ? (92) जो अल्लाह के सिवा थे, क्या वह तुम्हारी मदद करते हैं ? या कोई बदला ले सकते हैं। (93) अब तो वह सब और कुल गुमराह लोग जहन्नम में ऊपर तले डाल दिये जाएँगे। (94) और इब्लीस के तमाम के तमाम लश्कर भी (95) वहाँ आपस में लड़ते झगड़ते हुए कहेंगे। (96) कि क़सम अल्लाह की यक़ीनन हम तो खुली ग़लती पर थे। (97) जबकि तुम्हें रब्बुल आलमीन के बराबर समझ बैठे थे। (98) और हमें तो सिवा इन बदकारों के किसी और ने गुमराह नहीं किया था। (99) अब तो हमारा कोई सिफ़ारिशी भी नहीं। (100) और न कोई सच्चा ग़मख़्वार दोस्त। (101) अगर काश कि हमें एक मर्तबा फिर जाना मिलता तो हम पक्के सच्चे मोमिन बन जाते। (102) यह माजरा यक़ीनन एक ज़बरदस्त निशानी है, इनमें के अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103) यक़ीनन तेरा परवरदिगार ही ग़ालिब मेहरबान है।'' (104)

नेकी और बुराई का बदला (आ. 90 से 104) : जिन लोगों ने नेकियाँ कीं थीं बुराईयों से बचे थे, जन्नत उस दिन उनके पास ही उनके सामने ज़ेबो ज़ीनत के साथ मौजूद होगी और सरकशों के लिए इसी तरह जहन्नम ज़ाहिर होगी उसमें से एक गर्दन निकल खड़ी होगी जो गुनहगारों की तरफ़ ग़ज़बनाक तैवरों से नज़र डालेगी और इस तरह शोर मचाएगी कि दिल दहल जाएँगे कलेजे हिल जाएँगे और मुश्रिकों से डाँट डपट के साथ फ़र्माया जाएगा कि तुम्हारे मअबूदाने बातिल जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे कहाँ हैं क्या वह तुम्हारी कुछ मदद करते हैं या ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं? नहीं! नहीं! बल्कि आबिद मअबूद सब दोज़ख़ में उल्टे लटक रहे हैं और जल भुन रहे हैं। ताबेअ मत्बूअ सब ऊपर तले जहन्नम में झोंक दिये जाएँगे। साथ ही इब्लीस के कुल लश्करी भी पहले से लेकर आख़िर तक। वहाँ कमज़ोर लोग बड़े लोगों से झगड़ेंगे और कहेंगे कि हमने ज़िन्दगी भर तुम्हारी मानी आज तुम अज़ाबों से हमें क्यूँ नहीं छुड़ाते? सच तो यह है कि हम ही बिलकुल गुमराह थे राह से दूर हो गए थे कि तुम्हारे अह्काम मिस्ले इलाही अह्काम के समझ बैठे थे और रब्बुल आलमीन के साथ ही तुम्हारी भी इबादत करते रहे भले तुम्हें रब के बराबर समझे हुए थे अफ़सोस हमें इस ग़लत और ख़तरनाक राह पर मुज्रिमों ने लगाए रखा अब तो हमारा कोई सिफ़ारिशी भी नहीं रहा। आपस में पूछेंगे कि क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है जो हमारी सिफ़ारिश करे या ऐसा भी हो सकता है कि हम दोबारा दुनिया की तरफ़ लौटाए जाएँ?

और वहाँ जाकर अब तक के किये हुए आमाल के ख़िलाफ़ अमल करें जहाँ हमारा कोई सिफ़ारिशी हमें नज़र नहीं आता वहाँ कोई क़रीबी सच्चा दोस्त भी दिखाई नहीं देता कि वही हमारा हमदर्दी व ग़मख़्वारी करे क्योंकि वह जानते हैं कि अगर किसी सालेह शख़्स से हमारी दोस्ती होती तो वह आज ज़रूर हमें नफ़ा देता और अगर कोई हमारा दिली मुहब्बत करने वाला होता तो ज़रूर हमारी सिफ़ारिश के लिए आगे बढ़ता और अगर हमें फिर से दुनिया में जाना मिलता तो हम आप अपने इन बुरे आमालों का तदारुक कर लेते।

लेकिन हक़ तो यह है कि यह बदबख़्ते अज़्ली अगर दोबारा भी दुनिया में लाए जाएँ तो वही बुरे अमल फिर से शुरू कर दें। सूरह साद में भी इन जहन्नम वालों के झगड़े का बयान करके अल्लाह तआला ने फ़र्माया है उनका यह झगड़ा यक़ीनन होगा।

इब्राहीम (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से जो कुछ फ़र्माया और जो दलीलें उन्हें दीं और उन पर तौहीद की वज़ाहत की इसमें यक़ीनन अल्लाह की उलूहियत पर और उसकी यक्ताई पर साफ़ बुरहान (दलील) मौजूद है लेकिन फिर भी अक्सर लोग ईमान से रुके हुए हैं इसमें भी कोई शक नहीं कि तेरा पालनहार परवरदिगार पूरे ग़ल्बे और कुव्वत वाला साथ ही बख़्शिश व रहम वाला है।

***

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا
عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾

तर्जुमा : "क़ौमे नूह ने भी नबियों को झुठलाया (105) जबकि उनके भाई नूह (عليه السلام) ने कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह तआला का डर नहीं? (106) सुनो मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ। (107) पस तुम्हें अल्लाह तआला से डरना चाहिए और मेरी बात माननी चाहिए। (108) मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं चाहता मेरा बदला तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के यहाँ है। (109) पस तुम रब का ख़ौफ़ रखो और मेरी फ़र्मांबरदारी करो।" (110)

नूह (عليه السلام) की ज़बरदस्त दअवते तौहीद (आ. 105 से 110) : ज़मीन पर सबसे पहले जब बुतपरस्ती शुरू हुई और लोग शैतानी राहों पर लगने लगे तो अल्लाह तआला ने अपने ऊलुल अज़्म रसूलों के सिलसिले को हज़रत नूह (عليه السلام) से शुरू किया उन्होंने आकर लोगों को अल्लाह तआला के अज़ाबों से डराया और उसकी सज़ाओं से उन्हें आगाह किया लेकिन वह अपने नापाक करतूतों से बाज़ न आए ग़ैरुल्लाह की इबादत न छोड़ी बल्कि हज़रत नूह (عليه السلام) को झूठा कहा, उनके दुश्मन बन गए और ईज़ारसानी के दर पे हो गए। हज़रत

नूह (عليه السلام) को झुठलाना गोया तमाम पैग़म्बरों से इंकार करना था इसलिए आयत में फ़र्माया गया कि क़ौमे नूह ने नबियों को झुठलाया।

हज़रत नूह (عليه السلام) ने पहले तो उन्हें अल्लाह तआला से डरने की नसीहत की कि तुम जो ग़ैरुल्लाह की इबादत करते हो तो अज़ाबे अल्लाह का तुम्हें डर नहीं। जिस तरह तौहीद की ता'लीम के बाद अपनी रिसालत की तल्क़ीन की और फ़र्माया कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल बनकर आया हूँ और हूँ भी अमानतदार, उसका पैग़ाम हू ब हू वही है जो तुम्हें सुना रहा हूँ पस तुम्हें अपने दिलों को अल्लाह के डर से पुर रखना चाहिए और मेरी तमाम बातों को बिला चूँ चरा मान लेना चाहिए और सुनो! मैं तुमसे इस तब्लीग़े रिसालत पर कोई उज्रत नहीं माँगता मेरा मक़्सद इससे सिर्फ़ यही है कि मेरा रब मुझे इसका बदला और सवाब अता करेगा पस तुम अल्लाह तआला से डरो और मेरा कहा मानो मेरी सच्चाई मेरी ख़ैरख़्वाही तुम पर ख़ूब रोशन है, साथ ही मेरी दयानतदारी और भी तुम पर वाज़ेह है।

***

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ۝١١١ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١١٢ اِنْ
حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰي رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ۝١١٣ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١٤ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝١١٥ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ۝١١٦ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ
كَذَّبُوْنِ ۝١١٧ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١٨ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝١١٩ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ۝١٢٠ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا
كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٢١ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٢٢

तर्जुमा : ''क़ौम ने जवाब दिया कि क्या हम तुझ पर ईमान लाएँ? तेरी ताबेदारी तो सुफ़्ले (घटिया) लोगों ने की है। (111) आपने फ़र्माया मुझे क्या ख़बर कि वह पहले किया करते रहे? (112) उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है अगर तुम्हें शऊर हो। (113) तो मैं ईमानदारों को धक्के देने वाला नहीं। (114) मैं तो साफ़ तौर पर डरा देने वाला हूँ। (115) उन्होंने कहा कि ऐ नूह (عليه السلام)! अगर तू बाज़ न आया तो यक़ीनन तुझे संगसार कर दिया जाएगा। (116) आपने कहा, ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया। (117) पस तू मुझ में और इनमें कोई क़तई फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे ईमान वाले साथियों को नजात दे।

(118) चुनाँचे हमने उसे और उसके साथियों को खचाखच भरी हुई कश्ती में सवार कराकर नजात दे दी। (119) उसके बाद बाक़ी तमाम लोगों को हमने डुबो दिया। (120) यक़ीनन इसमें बहुत बड़ी इब्रत है उनमें के अक्सर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं। (121) और बेशक तेरा रब अल्बत्ता वही है ज़बरदस्त रहम वाला।" (122)

क़ौम का सफ़ीहाना जवाब (आ. 111 से 122) : क़ौमे नूह (عليه السلام) ने पैग़ामे पैग़म्बर का जवाब दिया कि चंद सुफ़्ले और झूठे लोगों ने तेरी बात मानी है, हमसे यह नहीं हो सकता कि उन रज़ीलों का साथ दें और तेरी मान लें।

इसके जवाब में अल्लाह के पैग़म्बर ने जवाब दिया यह मेरा फ़र्ज़ नहीं कि कोई हक़ क़बूल करने को आए तो मैं उससे उसकी क़ौम और पेशा पूछता फिरूँ, अंदरूनी हालात की ख़बर लेना, हिसाब लेना अल्लाह का काम है, अफ़सोस! तुम्हें इतनी भी समझ नहीं। तुम्हारी इस चाहत को पूरा करना मेरे इख़्तियार से बाहर है कि मैं इन मिस्कीनों से अपनी महफ़िल ख़ाली करा लूँ मैं तो अल्लाह की तरफ़ से एक आगाह कर देने वाला हूँ जो भी माने वह मेरा और जो न माने वह ख़ुद ज़िम्मेदार। शरीफ़ हो या रज़ील हो, अमीर हो या ग़रीब हो। जो मेरी माने मेरा है और मैं उसका हूँ।

नूह (عليه السلام) की अपनी क़ौम को बद्दुआ : लम्बी मुद्दत तक जनाब नूह (عليه السلام) उनमें रहे, दिन रात छुपे खुले उन्हें अल्लाह की राह की दावत देते रहे लेकिन ज्यों ज्यों आप अपनी नेकी में बढ़ते गए वह अपनी बुराई में बढ़ते गए बिलआख़िर ज़ोर बाँधते साफ़ कह दिया कि अगर अब हमें अपने दीन की दावत दी तो हम तुझे पत्थर मार मारकर तेरी जान ले लेंगे। आपके हाथ भी जनाब बारी में उठ गए क़ौम के झुठलाने की शिकायत आसमान की तरफ़ चढ़ी और आपने फ़तह की दुआ की। फ़र्माया ऐ अल्लाह! मैं मग़लूब और आजिज़ हूँ मेरी मदद कर मेरे साथ मेरे साथियों को भी बचा ले बस जनाब बारी अज़्ज़ व जल्ल ने आपकी दुआ क़बूल की। इंसान जानवरों और सामाने अस्बाब से खचाखच भरी हुई कश्ती में सवार होने का हुक्म दे दिया उसके बाद आसमान व ज़मीन से तूफ़ान उमड़ आया और रूए ज़मीन के कुफ़्फ़ार का क़िला उखाड़ दिया गया। यक़ीनन यह वाक़िया भी इब्रतनाक है लेकिन ताहम अक्सर लोग बेयक़ीन हैं इसमें कोई शक नहीं कि रब बड़े ग़ल्बे वाला है लेकिन वह मेहरबान भी बहुत है।

***

كَذَّبَتْ عَادُ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾ إِنِّى لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾ فَٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾ وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَىٰ

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ
تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ
اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾ اِنِّيْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾

तर्जुमा : ''आदियों ने भी रसूलों को झुठलाया (123) जबकि उनके भाई हूद (عليه السلام) ने कहा कि तुम्हें डर नहीं (124) मैं तुम्हारा अमानतदार मुअतबर पैग़म्बर हूँ। (125) पस अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (126) मैं इस पर तुमसे कोई उज्रत (मजदूरी) तलब नहीं करता मेरा सवाब तो तमाम जहान के परवरदिगार के पास ही है। (127) क्या तुम एक एक टीले पर बेफ़ायदा बतौर खेल तमाशा के निशानात लगा रहे हो। (128) और बड़ी सन्अत वाले मज़बूत महल ता'मीर कर रहे हो गोया कि तुम हमेशा यहीं रहोगे। (129) और जब किसी पर हाथ डालते हो तो सख़्ती और ज़ुल्म से पकड़ते हो। (130) अल्लाह से डरो और मेरी पैरवी करो। (131) उससे डरो जिसने उन चीज़ों से तुम्हारी मदद की जिन्हें तुम जानते हो। (132) उसने तुम्हारी मदद की माल से और औलाद से (133) बाग़ात से और चश्मों से। (134) मुझे तो तुम्हारी निस्बत बड़े दिन के अज़ाब का अंदेशा है।''(135)

हज़रत हूद (عليه السلام) का अपनी क़ौम को वअ़ज़ (आ. 123 से 135) : हज़रत हूद (عليه السلام) का क़िस्सा बयान हो रहा है कि उन्होंने आदियों को जो अह़क़ाफ़ के रहने वाले थे अल्लाह की तरफ़ बुलाया। अह़क़ाफ़ मुल्के यमन में हज़रमौत के पास रेतीले पहाड़ियों के क़रीब है उनका ज़माना नूह (عليه السلام) के बाद का है सूरह आराफ़ में भी इनका ज़िक्र गुज़र चुका है कि इन्हें क़ौमे नूह का जाँ नशीन बनाया गया और इन्हें बहुत कुछ कुशादगी और वुस्अत दी गई। डील डोल के बड़े कुव्वत ताक़त के पूरे माल और औलाद वाले खेत और बाग़ात फल और अनाज बकसरत दौलत और ज़र बहुत सा नहरें और चश्मे जगह जगह अल्ग़र्ज़ हर तरह की आसाइश और आसानी मुहैया लेकिन रब की तमाम नेअमतों की नाक़द्री करने वाले और अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने वाले थे अपने नबी को झुठलाया यह उन्हीं में से थे उन्हें समझाया बुझाया ख़ौफ़ व डर दिलाया अपना रसूल होना ज़ाहिर किया अपनी इताअत और अल्लाह तआला की इबादत व वहदानियत की दावत दी जैसे कि नूह (عليه السلام) ने दी थी। अपना बेलाग होना तालिबे दुनिया न होना बयान किया, अपने ख़ुलूस का भी ज़िक्र किया यह जो फ़ख़्र व रिया के तौर पर अपने माल बर्बाद करते थे और ऊँचे ऊँचे मशहूर टीलों पर बुलंद व बाला अलामतें अपनी कुव्वत के और माल के इज़्हार के लिए बनाते थे इस बेकार काम से उन्हें उनके नबी हज़रत हूद (عليه السلام) ने रोका क्योंकि उसमें बेकार दौलत का खोना वक़्त का बर्बाद करना औ मशक़्क़त उठाना है

जिससे दीन दुनिया का कोई फ़ायदा न मक़्सूद होता है न मुतसव्विर। बड़े बड़े पुख़्ता और बुलंद बुर्ज और मीनार बनाते थे जिसके बारे में उनके नबी ने नसीहत की कि क्या तुम यह समझे बैठे हो कि यहीं हमेशा रहोगे मुहब्बते दुनिया ने तुम्हें आख़िरत भुला दी है लेकिन याद रखो तुम्हारी यह चाहत बेकार है दुनिया ज़ाइल (ख़त्म)होने वाली है तुम ख़ुद फ़ना होने वाले हो, एक क़िरअत में (कअन्नहुम ख़ालिदून) है। इब्ने अबी हातिम में है कि जब मुसलमानों ने ग़ौता नामी जगह में महल्लात और बाग़ात की ता'मीर आला पैमाने पर ज़रूरत से ज़्यादा शुरू कर दी तो हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने मस्जिद में खड़े होकर फ़र्माया कि ऐ दमिश्क़ के रहने वालो, सुनो! लोग सब जमा हो गए तो आपने अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़र्माया कि तुम्हें शर्म नहीं आती तुम ख़्याल नहीं करते कि तुमने वह जमा करना शुरू कर दिया जिसे तुम नहीं खा सकते, तुमने वह मकानात बनाने शुरू कर दिये जो तुम्हारे रहने सहने के काम नहीं आते, तुमने वह दूरदराज़ की आरज़ूएँ करनी शुरू कर दीं जो पूरी होनी महाल (असंभव)हैं क्या तुम भूल गए तुमसे अगले लोगों ने भी जमा जत्था करके संभाल संभालकर रखी थी बड़े और ऊँचे ऊँचे पुख़्ता और मज़बूत महल्लात ता'मीर किये थे, बड़ी बड़ी आरज़ूएँ बाँधी थीं लेकिन नतीजा यह हुआ कि वह धोखा में रह गए उनकी पूँजी बर्बाद हो गई उनके मकानात और बस्तियाँ उजड़ गईं, आदियों को देखो कि अदन से लेकर ओमान तक उनके घोड़े और ऊँट थे लेकिन आज वह कहाँ हैं? है ऐसा कोई बेवक़ूफ़ कि क़ौमे आद की मीरास को दो दिरहमों के बदले भी ख़रीदे। उनके माल व मकानात का बयान करके उनकी कुव्वत व ताक़त का बयान फ़र्माया कि बड़े सरकश मुतकब्बिर और सख़्त थे, अल्लाह के नबी अलैहि सलवातुल्लाह ने उन्हें अल्लाह तआला से डरने और अपनी इताअत करने का हुक्म दिया कि रब की इताअत करो और उसके रसूल की इताअत करो फिर वह नेअमतें याद दिलाईं जो अल्लाह तआला ने उन पर इन्आम की थीं जिन्हें वह ख़ुद जानते थे मस्लन चौपाए जानवर और औलाद बाग़ात और दरिया। फिर अपना अंदेशा ज़ाहिर किया कि अगर तुमने मेरी तक्ज़ीब की और मेरी मुख़ालिफ़त पर जमे रहे तो तुम पर अज़ाबे इलाही बरस पड़ेगा। लालच और डर दोनों दिखाए लेकिन बेकार है।

***

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ

﴿١٣٧﴾ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

तर्जुमा : "उन्होंने कहा कि आप वअ़ज़ कहें या वअ़ज़ कहने वालों में न हों हम पर एक जैसा है। (136) यह तो पुराने लोगों का दीन है। (137) हम हर्गिज़ आफ़तज़दा नहीं होने के। (138) चूँकि आदियों ने हज़रत हूद (अलैहि.) को झुठलाया इसलिए हमने उन्हें तबाह कर दिया, यक़ीनन इसमें निशान है और इनमें के अक्सर बेईमान थे। (139) बेशक तेरा रब वही है ग़ालिब मेहरबान।"(140)

क़ौमे हूद ने नसीहत हासिल न की और तबाह हो गए (आ. 136 से 140) : हज़रत हूद (ﷺ) के मुअस्सिर बयानात ने और आपके रग़बत और डर भरे ख़ुत्बों ने क़ौम पर कोई असर नहीं किया और उन्होंने साफ़ कह दिया कि आप हमें वअज़ सुनाएँ या न सुनाएँ, नसीहत करें या न करें हम तो अपनी रविश को छोड़ नहीं सकते हम आपकी बात मानकर अपने मअबूदों से दस्तबरदार (अलग) हो जाएँ, यह यक़ीनन महाल है। हमारे ईमान से आप मायूस हो जाएँ हम आपकी नहीं मानेंगे। आख़िरकार काफ़िरों का यही हाल है उन्हें समझाना बेकार रहता है। अल्लाह तआला ने अपने नबी आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) से भी यही फ़र्माया कि इन अज़्ली कुफ़्फ़ार पर आप (ﷺ) की नसीहत मुत्लक़ असर नहीं करने की यह नसीहत कर देने और होशियार कर देने के बाद भी वैसे ही रहेंगे जैसे पहले थे यह तो क़ुदरती तौर पर ईमान से महरूम कर दिये गए हैं जिन पर तेरे रब की बात सादिक़ आने वाली है इन्हें ईमान नसीब नहीं होगा।

(ख़ुलुक़ुल अव्वलीन) की दूसरी क़िरअत (ख़ल्क़ुल अव्वलीन) भी है यानी जो बातें तू हमें कहता है यह तो अगलों की कही हुई हैं जैसे (तब्री : 19/378) क़ुरैशियों ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा था कि अगलों की कहानियाँ हैं जो सुबह व शाम तुम्हारे सामने पढ़ी जाती हैं। यह एक बोहतान है जिसे तूने गढ़ लिया है और कुछ लोग अपने तरफ़दार कर लिए हैं वग़ैरह। मशहूर क़िरअत की बिना पर मअनी यह हुए कि जिस पर हम हैं वही हमारे पुराने बाप दादों का मज़हब है हम तो उन्हीं की राह चलेंगे और उसी रविश पर रहेंगे जियेंगे फिर मर जाएँगे जैसे वह मर गए, यह महज़ कहने की बातें है कि फिर हम अल्लाह तआला के यहाँ ज़िन्दा किये जाएँगे, यह भी ग़लत है कि हमें अज़ाब किया जाएगा। आख़िरकार उनकी तक्ज़ीब और मुख़ालिफ़त की वजह से उन्हें हलाक कर दिया गया सख़्त तेज़ व तुंद आँधी उन पर भेजी और यह बर्बाद कर दिये गए। यही आदे ऊला थे जिन्हें (إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ) (89/फ़ज्र : 7) कहा गया है यह इरम साम बिन नूह की नस्ल में से थे, उमद में यह रहते थे। इरम हज़रत नूह (ﷺ) के पोते का नाम है न कि किसी शहर का भले कुछ लोगों से यह भी मरवी है लेकिन इसके क़ाइल बनी इस्राईल हैं इनसे सुन सुनाकर औरों ने भी यही कह दिया है हक़ीक़त में इसकी कोई मज़बूत दलील नहीं इसीलिए क़ुरआन ने इरम का ज़िक्र करते ही फ़र्माया है कि (لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ) (89/फ़ज्र : 8) उन जैसा और कोई शहरों में पैदा नहीं किया गया अगर इससे मुराद शहरे इरम होता तो यूँ फ़र्माया जाता कि उस जैसा और कोई शहर नहीं बनाया गया। क़ुरआन करीम की आयत में है (فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ) (41/फ़ुस्सिलत : 15) आदियों ने ज़मीन पर तकब्बुर किया और नारा लगाया कि हमसे बढ़कर क़ुव्वत वाला कौन है? क्या वह उसे भी भूल गए कि उनका पैदा करने वाला उनसे ज़्यादा क़वी है? दरअसल उन्हें हमारी आयतों से इंकार था यह हम पहले बयान कर चुके हैं कि उन पर सिर्फ़ बैल के नथुने के बराबर हवा छोड़ी गई जिसने उनका उनके शहरों का उनके मकानात का खोज खो दिया जहाँ से गुज़र गई सफ़ाया कर दिया। शायें शायें करती तमाम चीज़ों को सतियानाश करती चली गई थी तमाम क़ौम के सर अलग हो गए थे और धड़ अलग, अज़ाबे इलाही बशक्ल हवा आता देखकर क़िलों में महल्लात में महफ़ूज़ मकानात में घुस गए थे ज़मीन में गढ़े खोद खोदकर आधे आधे जिस्म उनमें डालकर महफ़ूज़ हुए थे लेकिन भला अज़ाबे इलाही को कोई चीज़ रोक सकती है? वह एक मिनट के लिए भी किसी को मोहलत और दम लेने देता है सब

चिट पट कर दिये गए और इस वाक़िया को बाद में आने वालों के लिए एक निशाने इब्रत बना दिया गया। इनमें से अक्सर लोग बेईमान ही रहे। अल्लाह का ग़ल्बा और रहम दोनों मुसल्लम थे।

***

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ
طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾

तर्जुमा : ''समूदियों ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया (141) उनके भाई सालेह (عليه السلام) ने उनसे फ़र्माया कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते? (142) मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का अमानतदार पैग़म्बर हूँ। (143) तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा करो। (144) मैं इस पर तुमसे कोई उज्रत (मजदूरी) नहीं माँगता मेरी उज्रत तो बस परवरदिगारे आलम पर ही है। (145) क्या उन चीज़ों में जो यहाँ हैं तुम अम्न के साथ छोड़ दिये जाओगे? (146) यानी इन बाग़ों और इन चश्मों और इन खेतों और इन खजूरों के बाग़ों में जिनके शगूफ़े बोझ के मारे टूट पड़ते हैं। (148) और तुम पहाड़ों को तराश तराशकर पुर तकल्लुफ़ मकानात बना रहे हो। (149) पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (150) बे बाक हद से गुज़रने वालों की इताअत से बाज़ आ जाओ (151) जो मुल्क में फ़साद फैला रहे हैं और इस्लाह नहीं करते।'' (152)

हज़रत सालेह (عليه السلام) का क़ौम से ख़िताब (आ. 141 से 152) : अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हज़रत सालेह (عليه السلام) का वाक़िया बयान हो रहा है कि आप अपनी क़ौमे समूद की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए थे यह लोग अरब थे हजर नामी शहर में रहते थे जो वादी क़ुरा और मुल्के शाम के बीच है यह आदियों के बाद और इब्राहीमियों से पहले थे, शाम की तरफ़ जाते हुए आपका उस जगह से गुज़रने का बयान सूरह आराफ़ की तफ़्सीर में पहले गुज़र चुका है उन्हें उनके नबी (عليه السلام) ने अल्लाह की तरफ़ बुलाया कि यह अल्लाह की तौहीद को मानें और हज़रत सालेह (عليه السلام) की रिसालत का इक़रार करें लेकिन उन्होंने भी इंकार किया और अपने कुफ़्र पर जमे रहे अल्लाह तआला के पैग़म्बर को झूठा कहा बावजूद अल्लाह से डरते रहने की नसीहत सुनने की परहेज़गारी इख़्तियार न की। बावजूद रसूले अमीन की मौजूदगी के राहे हिदायत इख़्तियार न की हालाँकि नबी

का साफ़ ऐलान था कि मैं अपना कोई बोझ तुम पर डाल नहीं रहा, मैं तो इस रिसालत की तब्लीग़ के अज्र का ख़्वाहाँ सिर्फ़ अल्लाह तआला से हूँ उसके बाद अल्लाह तआला की नेअ़मतें इन्हें याद दिलाएँ।

दुनिया की नापायदारी : हज़रत सालेह (عليه السلام) अपनी क़ौम में वअ़ज़ कर रहे हैं उन्हें अल्लाह की नेअ़मतें याद दिलाते हैं और उसके अ़ज़ाबों से मुतनब्बा (अटेन्शन) कर रहे हैं कि वह अल्लाह जो तुम्हें यह कुशादा रोज़ियाँ दे रहा है जिसने तुम्हारे लिए बाग़ात और चश्मे खेतियाँ और फल मुहैया कर दिये हैं अम्न चैन से जो तुम्हारी ज़िन्दगी के अय्याम पूरे कर रहा है तुम उसकी नाफ़र्मानियाँ करके इन ही नेअ़मतों में और इसी अम्नो अमान में नहीं छोड़े जा सकते इन बाग़ात और इन दरियाओं में इन खेतों और इन बाग़ाते खजूर में जिनके ख़ोशे खजूरों की ज़्यादती के मारे बोझल हो रहे हैं और झुकेपड़ते हैं जिनमें तह ब तह गीली तर खजूरें भरपूर लग रही हैं जो नर्म ख़ुशनुमा मीठी और ख़ुश ज़ायक़ा खजूरों से लदे हुए हैं तुम अल्लाह की नाफ़र्मानियाँ करके उनको बाआराम हज़म नहीं कर सकते। अल्लाह ने तुम्हें उस वक़्त जिन मज़बूत पुरतकल्लुफ़ बुलंद और उ़म्दह घरों में रख छोड़ा है अल्लाह की तौहीद और मेरी रिसालत के इंकार के बाद यह भी क़ायम नहीं रह सकते, अफ़सोस! तुम अल्लाह की नेअ़मत की क़द्र नहीं करते अपना वक़्त अपना रुपया बेजा बर्बाद करके यह नक़्शो निगार वाले मकानात पहाड़ों में बतसन्नोअ़ व तकल्लुफ़ सिर्फ़ बड़ाई और रियाकारी के लिए अपनी अ़ज़्मत और कुव्वत के मुज़ाहिरे के लिए तराश रहे हो जिसमें कोई नफ़ा नहीं बल्कि इसका वबाल तुम्हारे सरों पर मँडरा रहा है पस तुम्हें अल्लाह तआला से डरना चाहिए और मेरी इत्तिबाअ़ करनी चाहिए। अपने ख़ालिक़ राज़िक़ मुन्इम मुह़सिन की इ़बादत और उसकी फ़र्मांबरदारी और उसकी तौह़ीद की त़रफ़ पूरी त़रह मुतवज्जा होना चाहिए जिसका नफ़ा तुम्हें दुनिया व आख़िरत में मिले तुम्हें उसका शुक्र अदा करना चाहिए उसकी तस्बीह़ व तहलील करनी चाहिए। सुबह़ व शाम उसकी इ़बादत करनी चाहिए तुम्हें अपने इन मौजूदा सरदारों की हर्गिज़ न माननी चाहिए यह तो हुदूदे अल्लाह से तजावुज़ कर गए हैं तौह़ीद की इत्तिबाअ़ को भुला बैठे हैं, ज़मीन में फ़साद फैला रहे हैं, नाफ़र्मानी गुनाह फ़िस्क़ो फ़िजूर पर ख़ुद लगे हुए हैं और दूसरों को भी उसी की त़रफ़ बुला रहे हैं ह़क़ की मुवाफ़िक़त और इत्तिबाअ़ करके इस्लाह़ की कोशिश नहीं करते।

***

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ
فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾

तर्जुमा : "वह बोले सिवाय इसके नहीं कि तू तो उनमें से है जिन पर जादू कर दिया जाए। (153) तू तो हम जैसा ही इंसान है अगर तू सच्चों में से है तो कोई मोजिज़ा ले आ। (154) आपने फ़र्माया यह है ऊँटनी पानी पीने की एक बारी इसकी और एक मुक़र्ररा दिन की बारी पानी पीने की तुम्हारी। (155) ख़बरदार! इसे बुराई से हाथ न लगाना वरना एक बड़े भारी दिन का अज़ाब तुम्हारी गिरफ़्त कर लेगा। (156) फिर भी इन्होंने उसकी कूचें काट डालीं फिर तो पशीमान हो गए। (157) और अज़ाब ने उन्हें आ दबोचा। बेशक इसमें इब्रत है और उनमें के अक्सर लोग मोमिन न थे। (158) और बेशक तेरा रब ज़बरदस्त और मेहरबान है।"(159)

सालेह (عليه السلام) का मोजिज़ा और क़ौम की हठधर्मी (आ. 153 से 159) : समूदियों ने अपने नबी को जवाब दिया कि तुझ पर तो किसी ने जादू कर दिया है भले एक मअनी यह भी किये गए हैं कि तू मख़्लूक़ में से है और इसकी दलील में अरबी का एक शेअर भी पेश किया जाता है लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर मअनी पहला ही है उसी के साथ उन्होंने कहा तू तो हम जैसा एक इंसान है नामुम्किन है कि हममें से तो किसी पर वह़ी न आए और तुझ पर आ जाए। कुछ नहीं यह सिर्फ़ बनावट है एक खुली बाज़ी बना रखी है सिर्फ़ झूठ और साफ़ तूफ़ान है अच्छा हम कहते हैं कि अगर तू वाक़ेई सच्चा नबी है तो कोई मोजिज़ा दिखा उस वक़्त उनके छोटे बड़े सब जमा थे और एक ज़ुबान होकर सबने मोजिज़ा माँगा था। आपने पूछा कि तुम क्या मोजिज़ा देखना चाहते हो? उन्होंने कहा कि यह सामने की बड़ी सारी चट्टान है यह हमारे देखते हुए फटे और इसमें से एक गाभन ऊँटनी उस रंग की ऐसी ऐसी निकले। आपने फ़र्माया, अच्छा! अगर मैं रब से दुआ करूँ और वह यही मोजिज़ा मेरे हाथों तुम्हें दिखा दे फिर तो तुम्हें मेरी नबुव्वत के मानने में कोई उ़ज़्र न होगा? सबने पुख़्ता अ़हद किया, क़ौल व क़रार किया कि हम सब ईमान लाएँगे और आपकी नबुव्वत मान लेंगे, आप बहुत जल्द यह मोजिज़ा दिखाइए। आपने उसी वक़्त नमाज़ शुरू कर दी फिर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से दुआ की उसी वक़्त वह पत्थर फटा और इसी त़रह़ की वह ऊँटनी उनके देखते हुए उसमें से निकली कुछ लोग तो ह़स्बे इक़रार मोमिन हो गए लेकिन अक्सर लोग फिर भी काफ़िर के काफ़िर रहे।

आपने फ़र्माया अब सुनो! एक दिन यह पानी पियेगी और एक दिन पानी की बारी तुम्हारी मुक़र्रर रहेगी। अब तुममें से कोई इसे बुराई न पहुँचाए वरना बदतरीन अ़ज़ाब तुम पर उतर पड़ेगा। एक अ़र्से तक तो वह रुके रहे, ऊँटनी उनमें रही चारा चुगती और अपनी बारी वाले दिन पानी पीती। उस दिन यह लोग उसके दूध से सैर हो जाते लेकिन एक मुद्दत के बाद उनकी बदबख़्ती ने उन्हें आ घेरा उनमें के एक बड़े मल्ऊ़न ने ऊँटनी के मार डालने का इरादा किया और कुल अहले शहर उसके मुवाफ़िक़ हो गये, चुनाँचे उसकी कूचें काटकर उसे मार डाला। जिसके नतीजे में उन्हें सख़्त नदामत व पशेमानी (शर्मिन्दगी) उठानी पड़ी। अ़ज़ाबे इलाही ने उन्हें हाथो हाथ दबोच लिया। उनकी ज़मीनें हिला दी गईं और एक चीख़ से सब के स ब हलाक कर दिये गए, दिल अड़ गए, कलेजे पाश पाश हो गए और वहम व गुमान भी जिस चीज़ का न था वह आन पड़ी पहले आख़िर सब ग़ारत हो गए और दुनिया जहान के लिए यह ख़ौफ़नाक वाक़िया इब्रत अफ़्ज़ा हो गया। इतनी बड़ी निशानी अपनी आँखों देखकर भी उनमें के अक्सर लोगों को ईमान लाना नसीब न हुआ, इसमें कुछ शक नहीं कि अल्लाह ग़ालिब है और वह रह़ीम भी है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا
عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

तर्जुमा : ''क़ौमे लूत़ ने भी नबियों को झुठलाया (160) उनसे उनके भाई लूत़ (عليه السلام) ने कहा कि तुम ख़ौफ़े इलाही नहीं रखते। (161) मैं तुम्हारी त़रफ़ अमानतदार रसूल हूँ। (162) पस तुम अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरी इत़ाअ़त करो। (163) मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं माँगता। मेरा अज्र तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर है जो तमाम जहान का रब है।'' (164)

क़ौमे लूत़ भी अपने नबी की नाफ़र्मान थी (आ. 160 से 164) : अब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे और रसूल हज़रत लूत़ (عليه السلام) का क़िस्सा बयान कर रहा है उनका नाम लूत़ बिन हारान बिन आज़र था, यह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) के भतीजे थे, इन्हें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की ह़यात में बहुत बड़ी उम्मत की त़रफ़ भेजा था यह लोग सदूम और उसके आसपास बसते थे बिलआख़िर यह भी अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों में पकड़े गए सब हलाक हुए और उनकी बस्तियों की जगह एक झील सड़े हुए गंदे खारी पानी की रह गई यह अब तक भी बिलादे ग़ौर में मशहूर है जो कि बैतुल मक़्दिस और कर्क व शोबक के बीच है उन लोगों ने भी अल्लाह के रसूल (عليه السلام) को झुठलाया, आपने उन्हें अल्लाह तआ़ला की मअ़सियत छोड़ने और अपनी ताबेदारी करने की हिदायत की, अपना रसूल होकर आना ज़ाहिर किया, उन्हें अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों से डराया, अल्लाह तआ़ला की बातें मान लेने को फ़र्माया। ऐलान कर दिया कि मैं तुम्हारे पैसे टके का मोह़ताज नहीं, मैं सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के वास्ते तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूँ, तुम अपने इस ख़बीस काम से बाज़ आ जाओ, यानी औ़रतों को छोड़कर मर्दों से ह़ाजत रवाई करने से रुक जाओ लेकिन उन्होंने अल्लाह के रसूल (عليه السلام) की न मानी बल्कि तक्लीफ़ें पहुँचाने लगे।

***

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ
أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ إِنِّي
لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ

﴿١٧٠﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغٰبِرِينَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِينَ ﴿١٧٢﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ
الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ أَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾ إِنِّي
لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾ وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٨٠﴾

तर्जुमा : "क्या तुम जहान वालों में से मर्दों के पास आते हो? (165) और तुम्हारी जिन औरतों को अल्लाह तआला ने तुम्हारी जोड़ बनाई हैं छोड़ देते हो? बात यह है कि तुम हो ही हद से गुज़र जाने वाले। (166) उन्होंने जवाब दिया कि ऐ लूत (عليه السلام)! अगर तू बाज़ न आया तो यक़ीनन तू निकाल दिया जाएगा। (167) आपने फ़र्माया मैं तुम्हारे काम से सख़्त नाख़ुश हूँ। (168) मेरे परवरदिगार! मुझे और मेरे घराने को इस वबाल से बचा ले जो यह करते हैं। (169) पस हमने उसे और उसके मुतअल्लिक़ीन सबको बचा लिया। (170) सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में से हो गई। (171) फिर हमने बाक़ी और सबको हलाक कर दिया। (172) और हमने उन पर एक ख़ास क़िस्म का मेंह बरसाया। पस बहुत ही बुरा मेंह था जो डराये गए हुए लोगों पर बरसा। (173) यह माजरा भी सरासर इब्रत है उनमें के अक्सर मुसलमान न थे। (174) बेशक तेरा परवरदिगार वही है ग़ल्बे वाला मेहरबानी वाला। (175) ऐका वालों ने भी रसूलों को झुठलाया (176) जबकि उनसे शुऐब (عليه السلام) ने कहा कि क्या तुम्हें डर ख़ौफ़ नहीं? (177) मैं तुम्हारी तरफ़ अमानतदार रसूल हूँ। (178) तो तुम अल्लाह का डर खाओ और मेरी फ़र्मांबरदारी करो। (179) मैं इस पर तुमसे कोई उज्रत नहीं चाहता, मेरा अज्र तमाम जहान के पालने वाले के पास है।" (180)

क़ौमे लूत की बदख़स्लती (आ. 165 से 180) : लूत (عليه السلام) नबी ने अपनी क़ौम को उनकी ख़ास बदकारी से रोका कि तुम मर्दों के पास शहवत से न आओ। हाँ! अपनी हलाल बीवियों से ख़्वाहिश पूरी करो जिन्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए जोड़ा बनाया है रब की मुक़र्ररा हदों का अदबो एहतिराम करो, इसका जवाब उनके पास यही था कि ऐ लूत (عليه السلام)! अगर तू बाज़ न आया तो हम तुझे जिलावतन कर देंगे, उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि इन पाकबाज़ लोगों को तो अलग कर दो। ये देखकर आपने उनसे बेज़ारी और दस्तबरदारी का ऐलान कर दिया। और फ़र्माया कि मैं तुम्हारे इस बुरे काम से नाराज़ हूँ, मैं इसे पसंद नहीं करता, मैं अल्लाह तआला के सामने अपनी बराअत का इज़्हार करता हूँ।

फिर अल्लाह तआला से उनके लिए बद् दुआ की और अपनी और अपने घरवालों की नजात तलब की। अल्लाह तआला ने सबको नजात दी मगर आपकी बीवी ने अपनी क़ौम का साथ दिया और उन ही के साथ तबाह हुई जैसाकि सूरह आराफ़ सूरह हूद और सूरह हिज्र में तफ़्सील के साथ बयान गुज़र चुका है। आप अपने मानने वालों को लेकर अल्लाह तआला के फ़र्मान के मुताबिक़ उस बस्ती से चल खड़े हुए, हुक्म था कि आपके निकलते ही इन पर अज़ाब आएगा, उस वक़्त पलटकर इनकी तरफ न देखना। फिर उन सब पर अज़ाब बरसा और सब बर्बाद कर दिये गए। उन पर आसमान से संगबारी हुई और उनका अंजाम बुरा हुआ यह भी इब्रतनाक वाक़िया है, उनमें से भी अक्सर बेईमान थे रब के ग़ल्बे में उसके रह्म में कोई शक नहीं।

शुऐब (عليه السلام) का अपनी क़ौम से वअज़ (नसीहत) : यह लोग मदयन के रहने वाले थे, हज़रत शुऐब (عليه السلام) भी उन ही में से थे, आपको उनका भाई सिर्फ़ इसलिए नहीं कहा गया कि इस आयत में उन लोगों की निस्बत ऐका की तरफ़ की है, जिसे यह लोग पूजते थे ऐका एक दरख़्त था यही वजह है कि जैसे और नबियों को उनकी उम्मतों का भाई फ़र्माया, इन्हें इनका भाई नहीं कहा गया वरना यह लोग भी इन ही की क़ौम में से थे कुछ लोग जिनके ज़हन की रसाई इस नुक्ते तक नहीं हुई वह कहते हैं कि यह लोग आपकी क़ौम में से न थे इसलिए हज़रत शुऐब (عليه السلام) को उनका भाई नहीं कहा गया यह और ही क़ौम थी। हज़रत शुऐब (عليه السلام) अपनी क़ौम की तरफ़ भी भेजे गए थे और उन लोगों की तरफ़ भी। कुछ कहते हैं कि एक तीसरी उम्मत की तरफ़ भी आपकी बिअसत हुई थी। चुनाँचे हज़रत इक्रिमा(रह़.) से मरवी है कि ''किसी नबी को अल्लाह तआला ने दो मर्तबा नहीं भेजा सिवाय हज़रत शुऐब (عليه السلام) के कि एक मर्तबा उन्हें मदयन वालों की तरफ़ भेजा और उनकी तक्ज़ीब की वजह से उन्हें एक चिंघाड़ के साथ हलाक कर दिया और दोबारा उन्हें ऐका वालों की तरफ़ भेजा और उनकी तक्ज़ीब की वजह से उन पर साये वाले दिन का अज़ाब आया और वह बर्बाद हुए लेकिन यह याद रहे कि इसके रावियों में इस्हाक़ बिन बिश्र काहिली है जो ज़ईफ़ है। क़तादा(रह़.) का क़ौल है कि अस्हाबे रस्स और अस्हाबे ऐका क़ौमे शुऐब है और एक बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि अस्हाबे ऐका और मदयन एक ही हैं। (तब्री : 19/390) वल्लाहु आलम! इब्ने असाकिर में है कि रसूले करीम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''क़ौमे मदयन और अस्हाबे ऐका दो क़ौमें हैं और इन दोनों उम्मतों की तरफ़ अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत शुऐब (عليه السلام) को भेजा था।'' लेकिन यह हदीस ग़रीब है और इसके मरफ़ूअ होने में कलाम है बहुत मुम्किन है कि यह मौक़ूफ़ ही हो। सही अम्र यही है कि यह दोनों एक ही उम्मत हैं दोनों जगह इनके वस्फ़ अलग अलग बयान हुए हैं गिरोह एक ही है इसकी एक बड़ी दलील यह भी है कि दोनों क़िस्सों में हज़रत शुऐब (عليه السلام) का वअज़ एक ही है दोनों को नाप तोल सही करने का हुक्म दिया है।

***

اَوۡفُوا الۡكَيۡلَ وَلَا تَكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُخۡسِرِيۡنَ ﴿۱۸۱﴾ وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِيۡمِ ﴿۱۸۲﴾ وَلَا
تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ ﴿۱۸۳﴾ وَاتَّقُوا الَّذِىۡ
خَلَقَكُمۡ وَالۡجِبِلَّةَ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۸۴﴾

तर्जुमा : "नाप पूरा करो कम देने वालों में शामिल न हो जाओ। (181) और सीधी सही तराज़ू से तौला करो। (182) लोगों को उनकी चीज़ें कमी से न दो, बेबाकी के साथ ज़मीन पर फ़साद मचाते न फिरो। (183) उस रब का ख़ौफ़ रखो जिसने ख़ुद तुम्हें और अगली मख़लूक़ को पैदा किया है।" (184)

नाप तोल में कमी की मुमानिअत (आ. 181 से 184) : हज़रत शुऐब (عليه السلام) अपनी क़ौम को नाप तोल सही करने की हिदायत कर रहे हैं, डँडी मारने और नापतौल में कमी करने से रोकते हैं, फ़र्माते हैं कि जब किसी को कोई चीज़ नाप कर दो तो पैमाना भरकर दो, उसके हक़ से कम न करो इसी तरह दूसरे से जब लो तो ज़्यादा लेने की कोशिश और तदबीर न करो। यह क्या कि लेने के वक़्त पूरा लो और देने के वक़्त कम दो? लेन देन दोनों साफ़ और पूरे रखो, तराज़ू अच्छी रखो, जिसमें तोल सही आए, बटे भी पूरे रखो, तोल में अदल करो, डँडी न मारो, कम न तौलो, किसी को उसकी चीज़ कम न दो, किसी की राह न मारो, चोरी चकारी, लूटमार, ग़ारतगिरी रहज़नी से बचो, लोगों को डरा धमकाकर ख़ौफ़ज़दा करके उनसे माल न लूटो, उस अल्लाह के अज़ाबों का ख़ौफ़ रखो जिसने तुम्हें और सब अगलों को पैदा किया है जो तुम्हारा और तुम्हारे बड़ों का रब है यही लफ़्ज़ आयत (وَلَقَدۡ اَضَلَّ مِنۡكُمۡ جِبِلًّا كَثِيۡرًا) (36/यासीन : 62) में भी इसी मअनी में है।

***

قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مِنَ الۡمُسَحَّرِيۡنَ ﴿۱۸۵﴾ وَمَاۤ اَنۡتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا وَاِنۡ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ
﴿۱۸۶﴾ فَاَسۡقِطۡ عَلَيۡنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۱۸۷﴾ قَالَ رَبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِمَا
تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۸۸﴾ فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمۡ عَذَابُ يَوۡمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِىۡ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۹۰﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۹۱﴾

तर्जुमा : "कहने लगे तू तो उनमें से है जिन पर जादू कर दिया जाता है। (185) और तू तो हम ही जैसा एक इंसान है और हम तो तुझे झूठ बोलने वालों में से ही समझते हैं। (186) अगर तू सच्चे लोगों में से है तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दे। (187) कहा कि मेरा रब तो ख़ूब जानने वाला है जो कुछ तुम कर रहे हो। (188) चूँकि उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें सायबान वाले दिन के अ़ज़ाब ने पकड़ लिया। वह बड़े भारी दिन का अ़ज़ाब था। (189) यक़ीनन इसमें बड़ी निशानी है। और उनमें के अक्सर मुसलमान न थे। (190) और यक़ीनन तेरा परवरदिगार अल्बत्ता वही है ग़ल्बे वाला मेहरबानी वाला।" (191)

क़ौमे शुऐब को भी जड़ से मिटा दिया गया (आ. 185 से 191) : समूदियों ने जो जवाब अपने नबी को दिया था वही जवाब इन लोगों ने भी अपने रसूल को दिया कि तुझ पर किसी ने जादू कर दिया है, तेरी अ़क्ल ठिकाने नहीं रही, तू हम जैसा ही इंसान है। और हमें तो यक़ीन है कि तू झूठा आदमी है। अल्लाह ने तुझे नहीं भेजा, अच्छा! तू अगर अपने दावे में सच्चा है तो हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दे, आसमानी अ़ज़ाब हम पर ले आ। जैसे क़ुरैशियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा था कि हम तो तुझ पर ईमान लाने के नहीं जब तक कि तू अ़रब की इस रेतीली ज़मीन में दरिया न बहा दे, यहाँ तक कि या तो तू हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दे जैसे कि तेरा ख़्याल है या तू अल्लाह तआ़ला या फ़रिश्तों को खुल्लम खुल्ला ले आए और आयत में है कि उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! अगर यह तेरे पास से है और ह़क़ है तो तू आसमान से पत्थर बरसा दे इसी त़रह उन जाहिल काफ़िरों ने कहा कि तू हम पर आसमान का टुकड़ा गिरा दे। पैग़म्बर (عليه السلام) ने जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे आ़माल बख़ूबी मालूम हैं, जिस लायक़ तुम हो वह ख़ुद कर देगा अगर तुम उसके नज़दीक आसमानी अ़ज़ाब के क़ाबिल हो तो वह बग़ैर देरी किये तुम पर आसमानी अ़ज़ाब बरसायेगा, अल्लाह तआ़ला ज़ालिम नहीं कि बेगुनाहों को सज़ा दे। बिल आख़िर जिस क़िस्म का अ़ज़ाब यह माँग रहे थे, उसी क़िस्म का अ़ज़ाब उन पर आ पड़ा। उन्हें सख़्त गर्मी महसूस हुई, सात दिन तक गोया ज़मीन उबलती रही किसी जगह किसी साये में ठण्डक या राह़त मयस्सर न हुई। तड़प उठे, बेक़रार हो गए, सात दिन के बाद उन्होंने देखा कि एक स्याह बादल उनकी त़रफ़ चला आ रहा है वह आकर उनके सरों पर छा गया, यह सब गर्मी और ह़रारत से ज़च हो गए थे उसके नीचे जा बैठे जब सारे के सारे उसके साये में पहुँच गए वहीं बादल में से आग बरसने लगी, साथ ही ज़मीन ज़ोर ज़ोर से झटके लेने लगी और उस ज़ोर की एक आवाज़ आई जिससे उनके दिल फट गए, जान निकल गई और सारे के सारे एक पल में तबाह व वीरान हो गए, उस दिन के सायबान वाले सख़्त अ़ज़ाब ने उनमें से एक को भी बाक़ी न छोड़ा। सूरह आ़राफ़ में तो फ़र्माया गया है कि एक ज़लज़ले के साथ ही यह सब हलाक हो गए, सूरह हूद में बयान हुआ है कि उनकी तबाही का बाइस एक ख़त़रनाक दिल शिकन चीख़ थी और यहाँ बयान हुआ कि उन्हें सायबान के दिन के अ़ज़ाब ने थाम लिया तो तीनों मक़ामात पर तीनों अ़ज़ाबों का एक एक करके ज़िक्र इस मक़ाम की इबारत की मुनासिबत की वजह से हुआ है। सूरह आ़राफ़ में उनकी इस ख़बासत का ज़िक्र है कि उन्होंने ह़ज़रत शुऐब (عليه السلام) को धमकाया था कि अगर तुम हमारे दीन में न आए तो हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को शहर से निकाल देंगे। चूँकि वहाँ नबी के

दिल को हिला देने का ज़िक्र था इसलिए अ़ज़ाब भी उनके जिस्मों को मअ़ दिल हिला देने यानी ज़लज़ले और झटके का ज़िक्र हुआ। सूरह हूद में ज़िक्र है कि उन्होंने अपने नबी को बतौर मज़ाक़ के कहा था कि आप तो बड़े बुर्दबार और भले आदमी हैं, मतलब यह था कि बड़े बकी बकवासी और बुरे आदमी हैं तो वहाँ अ़ज़ाब में चीख़ चिंघाड़ का बयान हुआ। यहाँ चूँकि उनकी आरज़ू आसमान के टुकड़े के गिरने की थी तो अ़ज़ाब का ज़िक्र भी सायबान नुमा बादल के टुकड़े से हुआ, फ़सुब्हानहू मा आज़म शानुहू।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) का बयान है कि ''सात दिन तक वह गर्मी पड़ी कि अल अमान वल हफ़ीज़, कहीं ठण्डक का नाम नहीं था, तिलमिला उठे उसके बाद एक बादल उठा और चढ़ा उसके साये में एक शख़्स पहुँचा और वहाँ राहत और ठण्डक पाकर उसने दूसरों को बुलाया जब सब जमा हो गए तो बादल फटा और उसमें से आग बरसी'' यह भी मरवी है कि बादल जो बतौर सायबान के था, उनके जमा होते ही हट गया और सूरज से उन पर आग बरसी, जिसने उन सबका भरता बना दिया। मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.) फ़र्माते हैं कि ''अहले मदयन पर तीनों अ़ज़ाब आए, शहर में ज़लज़ला आया जिससे ख़ाइफ़ होकर हुदूदे शहर से बाहर आ गए, बाहर जमा होते ही घबराहट परेशानी और बेक़रारी शुरू हो गई तो वहाँ से भागड़ पड़ी लेकिन शहर में जाने से डरे वहीं देखा कि एक बादल का टुकड़ा एक जगह है एक उसके नीचे गया और उसकी ठण्डक महसूस करके सबको आवाज़ लगा दी कि यहाँ आ जाओ यहाँ जैसी ठण्डक और तस्कीन तो कभी देखी ही नहीं, यह सुनते ही सब उसके नीचे जमा हो गए कि अचानक एक चीख़ की आवाज़ आई जिससे कलेजे फट गए और सबके सब मर गए। हज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) का बयान है कि ''सख़्त गरज और गर्मी शुरू हुई जिससे सांस घुटने लगी और बेचैनी हद को पहुँच गई घबराकर शहर छोड़कर मैदान में जमा हो गए, यहाँ बादल आया जिसके नीचे ठण्डक और राहत हासिल करने के लिए सब जमा हुए, वहीं आग बरसी और सब जल भुन गए'' यह था सायबान वाले बड़े भारी दिन का अ़ज़ाब जिसने उनका भुरता बना दिया। (तब्री : 19/394) यक़ीनन यह वाक़िया सरासर इब्रत और क़ुदरते इलाही की एक ज़बरदस्त निशानी है उनमें से अक्सर बेईमान थे अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से इंतिक़ाम लेने में ग़ालिब है, कोई उसे मग़लूब नहीं कर सकता वह अपने नेक बन्दों पर मेहरबान है उन्हें बचा लिया करता है।

***

وَاِنَّهٗ لَتَنۡزِيۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَؕ ﴿۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوۡحُ الۡاَمِيۡنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰى قَلۡبِكَ لِتَكُوۡنَ مِنَ
الۡمُنۡذِرِيۡنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِىٍّ مُّبِيۡنٍ ؕ﴿۱۹۵﴾ وَاِنَّهٗ لَفِىۡ زُبُرِ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۹۶﴾ اَوَلَمۡ يَكُنۡ لَّهُمۡ اٰيَةً
اَنۡ يَّعۡلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ؕ﴿۱۹۷﴾ وَلَوۡ نَزَّلۡنٰهُ عَلٰى بَعۡضِ الۡاَعۡجَمِيۡنَ ﴿۱۹۸﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيۡهِمۡ
مَّا كَانُوۡا بِهٖ مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۹۹﴾

तर्जुमा : "बेशको-शुब्हा यह कुरआन रब्बुल आलमीन का नाज़िल किया हुआ है। (192) इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर आया है। (193) तेरे दिल पर उतरा है ताकि तू आगाह कर देने वालों में से हो जाए। (194) साफ़ अरबी ज़बान में है। (195) अगले नबियों की किताबों में भी इस कुरआन का ज़िक्र है। (196) क्या इन्हें यह निशानी काफ़ी नहीं? कि हक़्क़ानियते कुरआन को तो बनी इस्राईल के उलमा भी जानते हैं। (197) अगर हम इसे किसी अज्मी शख़्स पर नाज़िल फ़र्माते। (198) और वह इनके सामने इसकी तिलावत करता तो यह उसे बावर करने वाले न होते।" (199)

हुज़ूर (ﷺ) का दिल कुरआन का मस्कन (आ. 192 से 199) : सूरह की शुरुआत में कुरआने करीम का ज़िक्र आया था, वही ज़िक्र फिर तफ़्सीलन बयान हो रहा है कि यह किताब कुरआने करीम अल्लाह तआला ने अपने बन्दे और नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) पर नाज़िल की है। रूहुल अमीन से मुराद हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) हैं।(तब्री : 19/394) जिनके वास्ते से वही रसूल (ﷺ) पर उतरी है। जैसे फ़र्मान है (قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ) (2/बक़रह : 97) यानी इस कुरआन को बहुक्मे अल्लाह तआला हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने तेरे दिल पर नाज़िल फ़र्माया है यह कुरआन अगली तमाम इल्हामी किताबों का सच्चा बताने वाला है। यह फ़रिश्ता हमारे यहाँ ऐसा मुकर्रम है कि इसका दुश्मन हमारा दुश्मन है। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि "जिससे रूहुल अमीन बोले उसे ज़मीन नहीं खाती।" उस बुज़ुर्ग बामर्तबा फ़रिश्ता ने जो फ़रिश्तों का सरदार है तेरे दिल पर इस पाक और बेहतर कलामुल्लाह को नाज़िल किया है जो हर तरह के मैल कुचैल से, कमी ज़्यादती से, नुक़्सान कजी से पाक है। ताकि तू अल्लाह के मुख़ालिफ़ीन को, गुनहगारों को अल्लाह के अज़ाब से बचाव करने की रहबरी कर सके और ताबेअ फ़र्मान लोगों को अल्लाह तआला की मग़्फ़िरत व रिज़्वान की ख़ुशख़बरी पहुँचा सके, यह खुली फ़सीह अरबी ज़बान में है ताकि हर शख़्स समझ सके पढ़ सके किसी को उज़्र बाक़ी न रहे और हर एक पर कुरआने करीम अल्लाह तआला की हुज्जत बन जाए। एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) के सामने निहायत फ़साहत से बादल के औसाफ़ बयान किये जिसे सुनकर सहाबा (रज़ि.) कह उठे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप तो कमाल दर्जा की फ़सीह व बलीग़ ज़बान बोलते हैं। आपने फ़र्माया "भला मेरी ज़बान ऐसी पाकीज़ा क्यूँ न होगी कुरआन भी तो मेरी ज़बान में उतरा है।" फ़र्मान है (बि लिसानिन अरबिय्यिम् मुबीन) (यह रिवायत मुर्सल है और मूसा बिन मुहम्मद तैमी सख़्त ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 4/218; रक़म : 8914)

इमाम सुफ़्यान सौरी (रह.) फ़र्माते हैं "वही अरबी में उतरी है और यह बात है कि हर नबी ने अपनी क़ौम के लिए उनकी ज़ुबान में तर्जुमा कर दिया।" क़ियामत के दिन सुरियानी ज़बान होगी हाँ! जन्नतियों की ज़बान अरबी होगी। (इब्ने अबी हातिम)

कुरआन की हक़्क़ानियत के ठोस सबूत : फ़र्माता है कि अगली अल्लाह की किताबों में भी इस पाक और आख़िरी अल्लाह की कलाम की पेशगोई और उसकी तस्दीक़ व सिफ़त मौजूद है। अगले नबियों ने भी इसकी

बशारत दी है यहाँ तक कि उन तमाम नबियों के आख़िरी नबी जिनके बाद हुज़ूर (ﷺ) तक और कोई नबी न था। यानी हज़रत ईसा (عليه السلام) बनी इस्राईल को जमा करके ख़ुत्बा देते हैं। उसमें फ़र्माते हैं कि ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी जानिब अल्लाह तआला का भेजा हुआ रसूल हूँ जो अगली किताबों को सच्चा बताने के साथ ही आने वाले रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की बशारत तुम्हें सुनाता हूँ। ज़बूर हज़रत दाऊद (عليه السلام) की किताब का नाम है यहाँ ज़ुबुर का लफ़्ज़ किताबों के मअ़नी में है। जैसे फ़र्मान है (وَ كُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ) (54/क़मर : 52) जो कुछ यह कर रहे हैं सब किताबों में लिखा है। फिर फ़र्माता है अगर यह समझें ज़िद और तअ़स्सुब न करें तो क़ुरआन की हक़्क़ानियत पर यही दलील क्या कम है कि ख़ुद बनी इस्राईल के उलमा इसे मानते हैं। इनमें से जो हक़ परस्त और बेतअ़स्सुब हैं वह तौरात की इन आयतों का लोगों पर इज़्हार कर रहे हैं जिनमें हुज़ूर (ﷺ) की बिअ़सत क़ुरआन का ज़िक्र और आपकी हक़्क़ानियत की ख़बर है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) और इन जैसे हक़ परस्त हज़रात ने दुनिया के सामने तौरात व इंजील की वह आयतें रख दीं जो हुज़ूर (ﷺ) की शान को ज़ाहिर करने वाली थीं उसके बाद की आयत का मतलब यह है कि अगर इस फ़सीह व बलीग़ जामेअ़ मानेअ़ हक़ कलाम को हम किसी अ़ज्मी पर नाज़िल फ़र्माते फिर तो कोई शक ही नहीं हो सकता था कि यह हमारा कलाम है मगर मुश्रिकीने क़ुरैश अपने कुफ़्र और अपनी सरकशी में इतने बढ़ गए हैं कि उस वक़्त भी वह ईमान न लाते।

जैसे फ़र्मान है कि अगर आसमान का दरवाज़ा भी उनके लिए खोल दिया जाता और यह ख़ुद चढ़ जाते तब भी यही कहते कि हमें नशा पिला दिया गया है, हमारी आँखों पर पर्दा डाल दिया गया है और आयत में है कि अगर इनके पास फ़रिश्ते आ जाते और मुर्दे बोल उठते तब भी इन्हें ईमान नसीब न होता, इन पर अ़ज़ाब का कलिमा साबित हो चुका है, हिदायत की राह मस्दूद कर दी गई।

***

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٢٠٠ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٢٠١
فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٠٢ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝٢٠٣ اَفَبِعَذَابِنَا
يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٢٠٤ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝٢٠٥ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٢٠٦ مَآ
اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝٢٠٧ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝٢٠٨ ذِكْرٰى
وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٢٠٩

तर्जुमा : "इसी तरह हमने गुनहगारों के दिलों में इस इंकार को ला रखा है। (200) वह जब तक दर्दनाक अज़ाबों का मुलाहिज़ा न कर लें ईमान न लाएँगे। (201) पस वह अज़ाब तो इनके पास नागहाँ आ जाएगा, इन्हें उसका शऊर भी न होगा। (202) उस वक़्त कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत दी जाएगी? (203) क्या यह हमारे अज़ाबों की जल्दी मचा रहे हैं? (204) अच्छा यह भी बतलाओ कि अगर हमने इन्हें कई साल भी फ़ायदा उठाने दिया। (205) फिर इन्हें वह अज़ाब आ लगा जिनसे यह धमकाये जाते थे। (206) तो जो कुछ भी यह बरतते रहे उसमें से कुछ भी इन्हें फ़ायदा न पहुँचा सकेगा। (207) हमने तो जिस बस्ती को हलाक किया है उसी हाल में कि उसके डराने वाले थे (208) नसीहत करने के लिए, हम ज़ुल्म करने वाले नहीं हैं।" (209)

अज़ाब इत्मामे हुज्जत के बाद आता है (आ. 200 से 209) : तक्ज़ीब व कुफ़्र, इंकार व अदमे तस्लीम को उन मुज्रिमों के दिल में बिठा दिया है यह जब तक अज़ाब अपनी आँखों से न देख लें, ईमान नहीं लाएँगे। उस वक़्त अगर ईमान लाए भी तो सिर्फ़ बेकार होगा लअनत पड़ चुकी होगी, बुराई मिल चुकी होगी, न पछताना काम आए, न मअज़िरत नफ़ा दे, अज़ाबे इलाही आएँगे और अचानक दफ़अतन इनकी बेख़बरी में ही आ जाएँगे, उस वक़्त की इनकी तमन्नाएँ कि अगर ज़रा सी भी मोहलत पाएँ तो नेक बन जाएँ, बेकार होंगी एक इन ही पर क्या मौक़ूफ़ है, हर ज़ालिम फ़ाजिर फ़ासिक़ काफ़िर बदकार अज़ाब को देखते ही सीधा हो जाता है तौबा करता है मगर सब ला हासिल। फ़िरऔन ही को देखिए हज़रत मूसा(ﷺ) ने उसके लिए बद् दुआ की जो क़बूल हुई। अज़ाबों को देखकर डूबते हुए कहने लगा कि अब मैं मुसलमान होता हूँ लेकिन जवाब मिला कि यह ईमान लाना बेकार है। इसी तरह और आयतों में है कि हमारे अज़ाबों को देखकर ईमान का इक़रार किया फिर उनकी एक और बदबख़्ती बयान हो रही है कि वह अपने नबियों से कहते थे अगर सच्चे हो तो अज़ाबे इलाही लाओ अगरचे हम इन्हें मोहलत दें और कुछ दिनों तक कुछ मुद्दत तक इन्हें अज़ाबों से बचाए रखें फिर इनके पास हमारे मुक़र्रर अज़ाब आ जाएँ तो इनका हाल इनकी नेअमतें इनकी जाह व हश्म ग़र्ज़ कोई चीज़ इन्हें ज़रा सा भी फ़ायदा नहीं दे सकती। उस वक़्त तो यही मालूम होगा कि शायद एक सुबह या एक शाम ही दुनिया में रहे। जैसे और आयत में है (يَوَدُّ اَحَدُهُمْ) (2/बक़रह : 96) उनमें से एक एक की चाहत है कि वह हज़ार हज़ार साल जिये लेकिन इतनी उम्र भी अल्लाह के अज़ाबों से हटा नहीं सकती। यहाँ भी फ़र्माया कि उनके अस्बाब उन्हें कुछ काम न आएँगे, उसके औंधे गिरने के वक़्त उसकी तमाम ताक़तें और अस्बाब यूँ ही रखे के रखे रह जाएँगे। चुनाँचे सहीह हदीस में है कि काफ़िर को क़ियामत के दिन लाया जाएगा फिर आग में एक ग़ोता दिलवाकर पूछा जाएगा कि तूने कभी राहत भी उठाई है? तो कहेगा कि अल्लाह की क़सम! मैंने कभी राहत नहीं देखी और एक उस शख़्स को लाया जाएगा जिसने पूरी उम्र वाक़ेई कोई राहत चखी ही न हो, उसे जन्नत की हवा खिलाकर लाया जाएगा और सवाल होगा कि क्या तूने उम्र भर कभी कोई बुराई देखी है तो वह कहेगा कि ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात की क़सम! मैंने कभी कोई ज़हमत (परेशानी) नहीं उठाई। (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सबग़ अन्अम अहलदुनिया फ़िन्नारि व सबग़ अशुद्दहुम बूसन फ़िल जन्नति : 2807; अहमद : 3/203; मुस्नदे अबी यअला : 3521) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) उमूमन

यह शेअर पढ़ा करते थे कि जब तू अपनी मुराद को पहुँच गया तो गोया तूने किसी तक्लीफ़ का नाम भी नहीं सुना, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल उसके बाद अपने अ़दल की ख़बर देता है कि कभी उसने ख़त्मे हुज्जत से पहले किसी उम्मत को ख़त्म नहीं किया, रसूलों को भेजता है किताबें उतारता है, ख़बरें देता है, होशियार करता है, फिर न मानने वालों पर मसाइब के पहाड़ टूट पड़ते हैं। पस फ़र्माया कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि अम्बिया (ﷺ) के भेजने से पहले ही हमने किसी उम्मत पर अ़ज़ाब भेज दिये हों। डराने वाले भेजकर नसीहत करके उ़ज़्र हटाकर फिर न मानने पर अ़ज़ाब होता है। जैसे फ़र्माया तेरा रब किसी बस्ती को हलाक नहीं करता जब तक कि उनकी बस्तियों की सबसे ख़ास बस्ती में किसी रसूल को न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़ सुनाए।

***

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾

तर्जुमा : "इस क़ुरआन को शैतान नहीं लाए। (210) न वह इसके क़ाबिल हैं, न उन्हें इसकी ताक़त है। (211) बल्कि वह तो सुनने से भी महरूम कर दिये गए हैं।" (212)

क़ुरआन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाज़िलकर्दा है (आ. 210 से 212) : यह किताबे अ़ज़ीज़ जिसके आसपास भी बातिल फटक नहीं सकता जो हकीम व हमीद अल्लाह की तरफ़ से उतरी है जिसे रूहुल अमीन जो क़ुव्वत व ताक़त वाले हैं लेकर आए हैं इसे शयातीन नहीं लाए, फिर इनके न लाने पर तीन वजहें बयान की गईं एक तो यह कि उसके लायक़ ही नहीं, उनका काम मख़्लूक़ को बहकाना है, न कि राहे रास्त पर लाना, अम्र बिल मअ़रूफ़ और नही अ़निल मुंकर जो इस किताब की शान है उनके सरासर ख़िलाफ़ है, यह नूर है यह हिदायत है, यह बुरहान है, और शयातीन इन तीनों चीज़ों से चिढ़ते हैं, वह ज़ुल्मत के दिलदादा, वह ज़लालत के हीरो, वह जिहालत के शैदा हैं। पस इस किताब में और उनमें तो तबायुन और इख़्तिलाफ़ है कहाँ वह कहाँ यह दूसरी वजह यह है कि वह जहाँ इसके अहल नहीं उनमें इसके उठाने और लाने की ताक़त भी नहीं, यह तो वह ज़ी इ़ज़्ज़त और मर्तबे वाला कलाम है कि अगर किसी बड़े से बड़े पहाड़ पर उतरे तो उसे चकना चूर कर दे। फिर तीसरी वजह बयान की कि वह तो इसके नुज़ूल के वक़्त हटा दिये गए थे, उन्हें तो सुनना भी नहीं मिला, तमाम आसमान पर सख़्त पहरा चौकी थी, यह सुनने के लिए चढ़ते थे तो इन पर आग बरसाई जाती थी, इसका एक हर्फ़ सुन लेना भी इनकी ताक़त से बाहर था ताकि अल्लाह तआ़ला का कलाम महफ़ूज़ तरीक़ा पर उसके नबी (ﷺ) को पहुँचे और आपकी वसातत (माध्यम) से अल्लाह की मख़्लूक़ को पहुँचे।

जैसे सूरह जिन्न में ख़ुद जिन्नात का मक़ूला बयान हुआ है कि हमने आसमान को टटोला तो उसे सख़्त पहरा चौकी से भरपूर पाया और जगह जगह शोले मुतअ़य्यन पाए पहले तो हम बैठकर इक्का दुक्का बात उड़ा लाया करते थे लेकिन अब तो कान लगाते ही शोला लपकता है और जलाकर भस्म कर देता है।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١٥﴾ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾

तर्जुमा : "पस तू अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद को न पुकार कि तू भी सज़ा के क़ाबिल बन जाए। (213) अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा दे। (214) उनके साथ फ़रोतनी से पेश आ जो भी ईमान लाने वाला होकर तेरी ताबेदारी करे। (215) अगर यह लोग तेरी नाफ़र्मानी करें तो तू ऐलान कर दे कि मैं उन कामों से बेज़ार हूँ जो तुम कर रहे हो। (216) अपना पूरा भरोसा ग़ालिब मेहरबान अल्लाह पर रख। (217) जो तुझे देखता रहता है जबकि तू खड़ा होता है।(218) और सज्दा करने वालों के बीच तेरा घूमना फिरना भी। (219) वह बड़ा ही सुनने वाला और ख़ूब ही जानने वाला है।"(220)

सफ़ा पहाड़ी पर नबी (ﷺ) का ऐलाने तौहीद (आ. 213 से 220) : ख़ुद अपने नबी से ख़िताब करके अल्लाह तआला फ़र्माता है कि सिर्फ़ मेरी ही इबादत कर, मेरे साथ किसी को शरीक न कर, जो भी ऐसा न करे वह ज़रूर मुस्तहिक़े अज़ाब है। अपने क़रीबी रिश्तेदारों को होशियार कर दे कि सिवाय ईमान के कोई चीज़ नजात की वजह नहीं फिर हुक्म देता है कि मुवह्हिद मुत्तबिऐ सुन्नत लोगों से फ़रोतनी के साथ मिलता जुलता रह और जो भी मेरी न माने ख़्वाह कोई हो तू उससे रिश्ता तोड़ ले और अपनी बेज़ारी का इज़्हार कर दे, यह ख़ास तौर की ख़ास लोगों की तंबीह आम लोगों की तंबीह के मनाफ़ी नहीं क्योंकि यह उसका जुज़ है और जगह इर्शाद है तू उस क़ौम को डरा दे जिनके बड़े भी डराये नहीं गए और जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और आयत में है (لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا) (42/शूरा : 7) ताकि तू मक्का वालों को और उसके आसपास वालों को सबको डरा दे। और आयत में है कि तू उससे होशियार कर दे जो अपने रब के पास जमा होने से ख़ौफ़ज़दा हो रहे हैं। दीगर आयत में इर्शाद फ़र्माया कि तू इससे परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी सुना दे और सरकशों को डरा दे। और आयत में फ़र्माया (لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ) (6/अन्आम : 19) ताकि मैं इसी कुरआन के साथ तुम्हें और जिसे भी यह पहुँचे डरा दूँ और फ़र्मान है कि उसके साथ इन तमाम फ़िर्क़ों में से जो भी कुफ़्र करे उसकी सज़ा जहन्नम है। सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है इस उम्मत में से जिसके कान में मेरी शोहरत पड़ जाए ख़्वाह यहूदी हो या नसरानी फिर वह मुझ पर ईमान न लाए तो ज़रूर वह जहन्नम में जाएगा। इस आयत की तफ़्सीर में बहुत सी हदीसें हैं उन्हें सुन लीजिए। (इसकी तख़रीज सूरह आले इमरान में आयत 20 के तहत गुज़र चुकी है।) मुस्नद अहमद में है कि जब अल्लाह तआला ने यह आयत

उतारी तो हुज़ूर (ﷺ) सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ गए और या सबाहाह करके आवाज़ दी, लोग जमा हो गए, जो नहीं आ सकते थे उन्होंने अपने आदमी भेज दिये, उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ औलादे अब्दुल मुत्तलिब! ऐ औलादे फ़हर! बतलाओ अगर मैं तुमसे कहूँ कि इस पहाड़ के पीछे तुम्हारे दुश्मन का लश्कर पड़ा हुआ है घात में है, मौक़ा पाते ही तुम सबको क़त्ल कर डालेगा तो क्या तुम मुझे सच्चा समझोगे?" सबने एक जुबान होकर कहा कि हाँ! हम आपको सच्चा ही समझेंगे, अब आप (ﷺ) ने फ़र्माया "सुन लो! मैं तुम्हें आने वाले सख़्त अज़ाबों से डराने वाला हूँ।" इस पर अबू लहब ने कहा तू हलाक हो जाए, यही सुनाने के लिए तूने हमें बुलाया था, इसके जवाब में सूरह (तब्बत यदा) उतरी। (अहमद : 1/307; सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह शोअरा बाब (व अंज़िर अशीरतकल अक़रबीन. वख़्फ़िज़ जनाहक) : 4770; सहीह मुस्लिम : 208; तिर्मिज़ी : 3363; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 10819; इब्ने माजा : 655) मुस्नद अहमद में है कि इस आयत के उतरते ही अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) खड़े हो गए और फ़र्माने लगे, "ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! ऐ सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब! सुनो! मैं तुम्हें अल्लाह तआला के यहाँ कुछ काम नहीं आ सकता। हाँ! मेरे पास जो माल हो जितना तुम चाहो मैं देने के लिए तैयार हूँ।" (अहमद : 6/187; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही तआला (व अंज़िर अशीरतकल अक़रबीन) : 205; तिर्मिज़ी : 3184; इब्ने हिब्बान : 6548) अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इस आयत के उतरते ही हुज़ूर (ﷺ) ने क़ुरैशियों को बुलाया और उन्हें एक एक करके और आम तौर पर ख़िताब करके फ़र्माया कि, "ऐ क़ुरैशियों! अपनी जानें जहन्नम से बचा लो। ऐ कअब के ख़ानदान वालों! अपनी जानें आग से बचा लो। ऐ हाशिम की औलाद के लोगों! अपने आपको अल्लाह के अज़ाबों से छुड़ा लो, ऐ अब्दुल मुत्तलिब के लड़को! अल्लाह के अज़ाबों से बचने की कोशिश करो, ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! अपनी जान को दोज़ख़ से बचा ले, मैं अल्लाह के यहाँ की किसी चीज़ का मालिक नहीं, बेशक तुम्हारी क़राबतदारी है जिसके दुनियावी हुक़ूक़ मैं हर तरह अदा करने को तैयार हूँ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही तआला (व अंज़िर अशीरतकल अक़रबीन) : 204; तिर्मिज़ी : 3185; अहमद : 2/333) बुख़ारी में भी क़द्रे अल्फ़ाज़ की तब्दीली से यह हदीस मरवी है इसमें यह भी है कि आप (ﷺ) ने अपनी फूफी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) और अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से यह भी फ़र्माया कि मेरे माल में से जो चाहो तलब कर लो। अबू यअला में है कि आपने फ़र्माया, "ऐ कुसय की! ऐ हाशिम की! ऐ अब्दे मुनाफ़ की औलाद! याद रखो, मैं डराने वाला हू और मौत बदल देने वाली है उसका छापा पड़ने वाला है और क़ियामत वादे की जगह है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह शोअरा बाब (व अंज़िर अशीरतकल अक़रबीन...) : 4771; सहीह मुस्लिम : 206; अहमद : 2/398) मुस्नद अहमद में है कि ऐ अब्दे मुनाफ़! मैं तो सिर्फ़ होशियार कर देने वाला हूँ, मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने दुश्मन को देखा और दौड़कर अपने वालों को होशियार करने के लिए आया ताकि वह बचाव कर लें, दूर से ही उसने गुल मचाना शुरू कर दिया कि पहले ही ख़बरदार हो जाएँ।" (सहीह मुस्लिम : किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही तआला (व अंज़िर अशीरतकल अक़रबीन) : 207; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 1815; अहमद : 5/60) हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि जब यह आयत उतरी तो हुज़ूर (ﷺ) ने अपने अहले बैत को जमा किया, यह तीस शख़्स थे, जब यह खा पी

चुके तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "कौन है जो मेरा क़र्ज़ अपने ज़िम्मे ले और मेरे बाद मेरे वादे पूरे करे वह जन्नत में भी मेरा साथी और मेरे अहल में मेरा ख़लीफ़ा होगा।" तो एक शख़्स ने कहा कि आप (ﷺ) तो एक समुन्द्र हैं, आपके साथ कौन खड़ा हो सकता है? तीन बार आप (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन कोई तैयार न हुआ तो मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं इसके लिए तैयार हूँ। (अहमद : 1/111; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन इबाद बिन अब्दुल्लाह सख़्त ज़ईफ़ और अअमश मुदल्लस रावी है। मज्मउज़्ज़वाइद : 9/113) एक और सनद से इससे ज़्यादा तफ़्सील के साथ मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने बनू अब्दुल मुत्तलिब को जमा किया यह एक जमाअत की जमाअत थी और बड़े खाऊ थे एक एक शख़्स एक एक बकरी का बच्चा खा जाता था, एक बड़ा बर्तन दूध का पी जाता था, आप (ﷺ) ने उन सबके खाने के लिए सिर्फ़ तीन पाव के क़रीब खाना पकवाया लेकिन अल्लाह तआला ने उसी में इतनी बरकत दी कि सब पेट भरकर खा चुके और ख़ूब आसूदा होकर पी चुके लेकिन न तो खाने में कमी नज़र आती थी, न पीने की चीज़ घटी हुई मालूम होती थी। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ औलादे अब्दुल मुत्तलिब! मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुसूसन और तमाम लोगों की तरफ़ आम नबी बनाकर भेजा गया हूँ, इस वक़्त तुम एक मोजिज़ा भी मेरा देख चुके हो। अब तुममें से कौन तैयार है कि मुझसे बेअत करे वह मेरा भाई और मेरा साथी होगा।" लेकिन एक शख़्स भी मज्मऐ से खड़ा न हुआ, सिवा मेरे और मैं उस वक़्त उम्र के लिहाज़ से उन सबसे छोटा था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम बैठ जाओ।" तीन मर्तबा आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया और तीनों बार सिवाय मेरे और कोई खड़ा न हुआ, तीसरी मर्तबा आप (ﷺ) ने मेरी बेअत ली। (अहमद : 1/159; व सनदुहू हसन) इमाम बैहक़ी (रह.) दलाइलुन्नबुव्वा में लाए हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अगर मैं अपनी क़ौम के सामने अभी ही इसे पेश करूँगा तो वह न मानेंगे और ऐसा जवाब देंगे जो मुझ पर गिराँ गुज़रे पस आप ख़ामोश हो गए, इतने में हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आए और कहने लगे, हज़रत! अगर आप(ﷺ) ने ता'मीले इर्शाद में देरी की तो डर है कि आपको सज़ा होगी, उसी वक़्त आप (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को बुलाया और फ़र्माया, मुझे हुक्म हुआ है कि मैं अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा दूँ, मैंने यह ख़्याल करके कि अगर पहले ही से इनसे कहा गया तो यह मुझे ऐसा जवाब देंगे जिससे मुझे ईज़ा पहुँचे, मैं ख़ामोश रहा लेकिन हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आए और कहा कि अगर आपने ऐसा न किया तो आपको अज़ाब होगा तो अब ऐ अली (रज़ि.)! तुम एक बकरी ज़िब्ह करके गोश्त पका लो और कोई तीन सेर अनाज भी तैयार कर लो और एक बर्तन दूध का भी भर लो और औलादे अब्दुल मुत्तलिब को भी जमा कर लो मैंने ऐसा ही किया और सबको दावत दी, चालीस आदमी जमा हुए या एक आध कम या एक आध ज़्यादा हो, उनमें आप (ﷺ) के चचा भी थे, अबू तालिब, हमज़ा, अब्बास और अबू लहब काफ़िर ख़बीस, मैंने सालन पेश किया तो आपने उसमें से एक बोटी लेकर कुछ खाई फिर उसे हण्डिया में डाल दी और फ़र्माया, "लो अल्लाह का नाम लो और खाना शुरू करो।" सबने खाना शुरू किया, यहाँ तक कि पेट भर गए लेकिन अल्लाह की क़सम! गोश्त उतना ही था जितना रखते वक़्त रखा था सिर्फ़ उनकी उँगलियों के निशानात तो थे मगर गोश्त कुछ भी न घटा था हालाँकि उनमें से एक एक उतना गोश्त खा लेता था फिर मुझसे फ़र्माया, ऐ अली (रज़ि.)! इन्हें दूध पिलाओ, मैं वह बरतन लाया सबने बारी बारी शिकमसैर होकर पिया और ख़ूब आसूदा हो गए लेकिन दूध बिलकुल कम न हुआ, हालाँकि उनमें से एक एक

इतना दूध पी लिया करता था। अज हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने कुछ फ़र्माना चाहा लेकिन अबू लहब जल्दी से उठ खड़ा हुआ और कहने लगा लो साहब! अब मालूम हुआ कि यह तमाम जादूगरी सिर्फ़ इसलिए थी। चुनाँचे मज्मअ उसी वक़्त खड़ा हो गया और हर एक अपनी राह लग गया और हुज़ूर (ﷺ) को नसीहत व तब्लीग़ का मौक़ा न मिला, दूसरे दिन आपने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया, आज फिर इसी तरह उन सबकी दावत करो क्योंकि कल उसने मुझे कहने का वक़्त ही नहीं दिया, मैंने फिर इसी तरह का इंतिज़ाम किया, सबको दावत दी आए खाया पिया फिर कल की तरह आज भी अबू लहब ने खड़े होकर वही बात कही और इसी तरह तितर बितर हो गए। तीसरे दिन फिर हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से यही फ़र्माया। आज जब सब खा पी चुके तो हुज़ूर (ﷺ) ने जल्दी से अपनी बात शुरू कर दी और फ़र्माया, "ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब! अल्लाह की क़सम कोई नौजवान शख़्स अपनी क़ौम के पास इससे बेहतर भलाई नहीं लाया जो मैं तुम्हारे पास लाया हूँ दुनिया व आख़िरत की भलाई मैं लाया हूँ। (दलाइलुन्नबुव्वा : 2/178 से 180) और रिवायत में इसके बाद यह भी है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब बतलाओ तुममें से कौन मेरी मुवाफ़िक़त करता है और कौन मेरा साथ देता है? मुझे अल्लाह तआला का हुक्म हुआ है कि पहले मैं तुम्हें उसकी राह की दावत दूँ जो आज मेरी मान लेगा वह मेरा भाई होगा और यह दर्जे मिलेंगे।" लोग सब ख़ामोश हो गए लेकिन हज़रत अली (रज़ि.) जो उस वक़्त उस मज्मअे में सबसे कम उम्र थे और दुखती आँखों वाले और मोटे पेट वाले और भरी पिण्डलियों वाले थे, बोल उठे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस अम्र में आपकी वज़ारत मैं क़बूल करता हूँ। आप (ﷺ) ने मेरी गर्दन पर हाथ रखकर फ़र्माया कि "यह मेरा भाई है और ऐसी ऐसी फ़ज़ीलतों वाला है तुम इसकी सुनो और मानो।" यह सुनकर वह सब लोग हँसते हुए उठ खड़े हुए और अबू तालिब से कहने लगे, ले अब तू अपने बच्चे की सुन और मान। (इब्ने जरीर व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन इस रिवायत में अब्दुल ग़फ़्फ़ार बिन क़ासिम मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 2/640; रक़म : 5147; जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने फ़र्माया।) लेकिन इसका रावी अब्दुल ग़फ़्फ़ार बिन क़ासिम अबू मरयम मतरूक है, कज़्ज़ाब है और है भी शिया, इब्ने मदीनी वग़ैरह फ़र्माते हैं यह हदीसें गढ़ लिया करता था दीगर अइम्मा हदीस ने भी इसे ज़ईफ़ लिखा है और रिवायत में है कि इस दावत में सिर्फ़ बकरी के एक पैर का गोश्त पका था उसमें यह भी है जब हुज़ूर (ﷺ) ख़ुत्बा देने लगे तो उन्होंने झट से कह दिया कि आज जैसा जादू तो हमने कभी नहीं देखा, इस पर आप ख़ामोश हो गए, इसमें आप (ﷺ) का ख़ुत्बा यह है कि कौन है जो मेरा क़र्ज़ अपने ज़िम्मे ले और मेरे अहल में मेरा ख़लीफ़ा बने इस पर सब ख़ामोश रहे और अब्बास भी चुप थे सिर्फ़ अपने माल के बुख़्ल की वजह से मैं अब्बास (रज़ि.) को ख़ामोश देखकर ख़ामोश ही रहा, आपने दोबारा यही फ़र्माया, दोबारा भी सब तरफ़ ख़ामोशी थी, अब तो मुझसे न रहा गया और मैं बोल उठा, मैं उस वक़्त उन सबसे गिरी पड़ी हालत वाला चुँधी आँखों वाला बड़े पेट वाला और बोझल पिण्डलियों वाला था। इन रिवायतों में जो हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि कौन मेरा क़र्ज़ अपने ज़िम्मे लेता है और मेरे अहल की मेरे बाद हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे लेता है, इससे मतलब आपका यह था कि मैं जब इस तब्लीग़े दीन को फैलाऊँगा और लोगों को अल्लाह की तौहीद की तरफ़ बुलाऊँगा तो सबके सब मेरे दुश्मन हो जाएँगे और मुझे क़त्ल करेंगे यही खटका आप (ﷺ) को लगा रहा यहाँ तक कि यह आयत उतरी (وَ اللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ) (5/माइदा : 67) अल्लाह तआला तुझे लोगों की

ईज़ारसानी से बचा लेगा उस वक़्त आप बेख़तर हो गए इससे पहले आप अपनी पहरा चौकी भी बिठाते थे लेकिन इस आयत के उतरने के बाद वह भी हटा दी, उस वक़्त फ़िल्वाक़ेअ तमाम बनू हाशिम में हज़रत अ़ली (रज़ि.) से ज़्यादा ईमान वाला और तस्दीक़ व यक़ीन वाला कोई न था इसीलिए आपने ही हुज़ूर (ﷺ) के साथ का इक़रार किया उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने कोहे सफ़ा पर आ़म दावत दी और लोगों को तौहीदे ख़ालिस की तरफ़ बुलाया और अपनी नबुव्वत का ऐलान किया, इब्ने असाकिर में है कि एक मर्तबा हज़रत अबुद् दर्दा (रज़ि.) मस्जिद में बैठे हुए वअ़ज़ फ़र्मा रहे थे, फ़त्वा दे रहे थे, मज्लिस खचाखच भरी हुई थी, हर एक की नज़रें आपके चेहरे पर टिकी थीं और शौक़ से सुन रहे थे लेकिन आपके लड़के और घर वाले आदमी आपस में निहायत बेपरवाही से अपनी बातों में मशग़ूल थे, किसी ने हज़रत अबुद् दर्दा (रज़ि.) को तवज्जह दिलाई कि और सब लोग तो दिल से आपकी इल्मी बातों में दिलचस्पी ले रहे हैं आपके अहले बैत इससे बिलकुल बेपरवाह हैं , वह अपनी बातों में निहायत बेपरवाही से मशग़ूल हैं तो आपने जवाब में फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, दुनिया से बिलकुल किनाराकशी करने वाले अम्बिया (عليهم السلام) होते हैं और उन पर सबसे ज़्यादा सख़्त और भारी उनके क़राबतदार होते हैं, इसी बारे में आयत (व अंज़िर) से (तअ़लमून) तक है। फिर फ़र्माता है अपने तमाम उमूर में अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा रखो वही तुम्हारा हाफ़िज़ व नासिर है वही तुम्हारा ताईद करने वाला और तुम्हारे कलिमे को बुलंद करने वाला है उसकी नज़रें हर वक़्त तुम पर हैं। जैसे फ़र्मान है (وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا) (52/तूर:48) अपने रब के हुक्मों पर सब्र कर तू हमारी आँखों के सामने है, यह भी मतलब है कि जब तू नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो हमारी आँखों के सामने होता है हम तुम्हारे रुकूअ़ सुजूद देखते हैं। (तब्री : 19/412) खड़े हो या बैठे या किसी हालत में हो, हमारी नज़रों में हो यानी तंहाई में तू नमाज़ पढ़े तो हम देखते हैं और जमाअ़त से पढ़े तो हमारी निगाह के सामने होता है। (तब्री : 19/413) यह भी मतलब है कि अल्लाह तआ़ला हालते नमाज़ में आपको जिस तरह आपके सामने की चीज़ें दिखाता था आपके पीछे के मुक़्तदी आप (ﷺ) की नज़रों में रहते थे। चुनाँचे सहीह हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माया करते थे, ''सफ़ें सीधी कर लिया करो, मैं तुम्हें अपने पीछे से देखता रहता हूँ।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब तस्वियतुस्सुफ़ूफ़ इन्दल इक़ामति व बअ़दिहा : 718; सहीह मुस्लिम : 434; नसाई : 2/91; अहमद : 3/286; मुस्नदे अबी यअ़ला : 3291; इब्ने हिब्बान : 2173) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) यह मतलब भी बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) की पीठ से दूसरे नबी की पीठ की तरफ़ मुंतक़िल होना हम बराबर देखते रहे हैं, यहाँ तक कि आप (ﷺ) बहैसियते नबुव्वत दुनिया में आए वह अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की बातें ख़ूब सुनता है उनकी हरकात व सक्नात को ख़ूब जानता है जैसे फ़र्माया (وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ) (10/यूनुस : 61) तो जिस हालत में हो तो जो क़ुरआन पढ़े तुम जो अमल करो उस पर हम शाहिद हैं।

***

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ
السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ
يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ
مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

तर्जुमा : "क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं? (221) वह हर एक झूठे गुनहगार पर उतरते हैं। (222) उचटती हुई सुनी सुनाई पहुँचा देते हैं और उनमें के अक्सर झूठे हैं। (223) शायरों की पैरवी वही करते हैं जो बहके हुए हैं (224) क्या तूने नहीं देखा कि शायर एक एक जंगल में सर टकराते फिरते हैं। (225) और वह कहते हैं जो करते नहीं (226) सिवाय उनके जो ईमान लाए और नेक अमल किये और बकसरत अल्लाह तआला का ज़िक्र किया और अपनी मज़्लूमी के बाद इंतिक़ाम लिया। जिन्होंने ज़ुल्म किया है। वह भी अभी जान लेंगे कि किस करवट उलटते हैं।" (227)

क़ुरआन किसी काहिन शायर या शैतान का कलाम हर्गिज़ नहीं है (आ. 221 से 227) : मुश्रिकीन कहते थे कि हुज़ूर (ﷺ) का लाया हुआ यह क़ुरआन बरहक़ नहीं इसने इसे ख़ुद गढ़ लिया है या इसके पास जिन्नों का सरदार आता है जो इसे यह सिखा जाता है पस अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को इस ऐतिराज़ से पाक किया और साबित किया कि आप (ﷺ) जिस क़ुरआन को लाये हैं वह अल्लाह तआला का कलाम है उसी का उतारा हुआ है। बुज़ुर्ग अमीन ताक़तवर फ़रिश्ता इसे लाया है यह किसी शैतान या जिन्न की तरफ़ नहीं शयातीन तो ता'लीमे क़ुरआन से चिढ़ते हैं इसकी ता'लीम तो उनके यक्सर ख़िलाफ़ है उन्हें क्या पड़ी कि ऐसा पाकीज़ा और राहे रास्त पर लगाने वाला क़ुरआन वह लाएँ और लोगों को नेक राह बतलाएँ वह तो अपने जैसे इंसानी शैतानों के पास आते हैं जो पेट भरकर झूठ बोलने वाले हों बदकिरदार और गुनहगार हों, ऐसे काहिनों और बदकारों और झूठे लोगों के पास जिन्नात और शयातीन पहुँचते हैं क्योंकि वह भी झूठे और बदआमाल हैं, उचटती हुई कोई एक आध बात सुनी सुनाई पहुँचाते हैं और वह एक जो आसमान से छुपे छुपाये सुन ली थी, उसमें सौ झूठ मिलाकर काहिनों के कान में डाल दी, उन्होंने अपनी तरफ़ से फिर बहुत से हाशिये चढ़ाकर लोगों में डींगें लीं बस अब एक सच्ची बात तो सच्ची निकली लेकिन लोगों ने उनकी और सौ झूठी बातें भी सच्ची मान लीं और तबाह हुए। बुख़ारी में है कि लोगों ने काहिनों के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल

किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "वह कोई चीज़ नहीं हैं।" लोगों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! कभी कभी तो उनकी कोई बात खरी भी निकल जाती है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! यह वही बात होती है जो जिन्नात आसमान से उड़ा लाते हैं और उनके कान में कहकर जाते हैं फिर उसके साथ सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर कह देते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़िराअतुल फ़ाजिर वल मुनाफ़िकु अस्वातहुम व तिलावतहुम..) : 7561; सहीह मुस्लिम : 2228; अहमद : 6/87; इब्ने हिब्बान : 6132) सहीह बुख़ारी की एक हदीस में यह भी है कि जब अल्लाह तआला किसी काम का फ़ैसला आसमान पर करता है तो फ़रिश्ते बाअदब अपने पर झुका देते हैं। ऐसी आवाज़ आती है जैसे किसी चट्टान पर ज़ंजीर बजाई जाती हो, जब वह घबराहट उनके दिलों से दूर हो जाती है तो आपस में पूछते हैं कि रब का क्या हुक्म सादिर हुआ? दूसरे जवाब देते हैं कि हक़ फ़र्माया और वह आलीशान और बहुत बड़ी किब्रियाई वाला है कभी कभी अम्रे इलाही चोरी छुपे सुनने वाले किसी जिन्न के कान में भी पड़ जाता है जो इस तरह एक पर एक होकर वहाँ तक पहुँचे हुए होते हैं। रावी हदीस हज़रत सुफ़्यान (रह.) ने अपने हाथों की उँगलियाँ फैला कर उस पर दूसरा हाथ इसी तरह रखकर उन्हें मिलाकर बताया कि इस तरह अब ऊपर वाला नीचे वाले को और वह अपने नीचे वाले को वह बात बतला देता है यहाँ तक कि जादूगर और काहिन को वह पहुँचा देते हैं कभी ऐसा भी होता है कि बात पहुँचाएँ उससे पहले शोला पहुँच जाता है और कभी उससे पहले ही वह पहुँचा देते हैं, इसमें काहिन जादूगर अपने सौ झूठ मिलाकर मशहूर करता है चूँकि वह एक बात सच्ची निकलती है लोग सबको ही सच्चा समझने लगते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह सबा, बाब (हत्ता इज़ा फ़ुज़्जिआ अन कुलूबिहिम क़ालू मा ज़ा क़ाल रब्बुकुम...) : 4800; अबूदाऊद : 3989; तिर्मिज़ी : 3223; इब्ने माजा : 194; इब्ने हिब्बान : 36) इन तमाम अहादीस का बयान आयत (حَتّٰىٓ اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ) (34/सबा : 23) की तफ़्सीर में आएगा, इंशाअल्लाह तआला। बुख़ारी की एक हदीस में यह भी है कि फ़रिश्ते आसमानी अम्र की बातचीत बादलों पर करते हैं जिसे शैतान सुनकर काहिनों को पहुँचाते हैं और वह एक सच में सौ झूठ मिला लेते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तु इब्लीस व जुनूदिही : 3288) फिर फ़र्माता है कि काफ़िर शायरों की ताबेदारी गुमराह लोग करते हैं, अरब के शायरों का दस्तूर था कि किसी की मज़म्मत और हिजू में कुछ कह डालते थे लोगों की एक जमाअत उनके साथ हो जाती थी और उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगती थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) सहाबा (रज़ि.) की एक जमाअत के साथ उर्ज में जा रहे थे जो एक शायर शेअर ख़्वानी करता हुआ मिला, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इस शैतान को पकड़ लो या फ़र्माया रोक लो, तुममें से कोई शख़्स ख़ून और पीप से अपना पेट भर ले यह इससे बेहतर है कि वह शेअरों से अपना पेट भर ले। (अहमद : 3/8; सहीह मुस्लिम, किताबुश्शेअर, बाब फ़ी इंशादिल अश्आर व बयानुश्शेअरिल कलिमतु व ज़िम्मश्शेअर : 2259) इन्हें जंगल की ठोकरें खाते किसने नहीं देखा हर लग़्व में यह घुस जाते। (तब्री : 19/417) हैं कलाम के हर फ़न में बोलते हैं कभी किसी की तारीफ़ में ज़मीनो आसमान के क़िलाबे मिलाते हैं कभी किसी की मज़म्मत में आसमान ज़मीन सर पर उठाते हैं। (तब्री : 19/416) झूठी ता'रीफ़ें ख़ुशामदाना बातें झूठी बुराइयाँ गढ़ी हुई बदियाँ इनकेहिस्से में आयी हैं ज़ुबान के भाँडे होते हैं लेकिन काम के काहिल एक अंसारी और एक दूसरी क़ौम के शख़्स ने मुक़ाबलतन हिजू की जिसमें दोनों की क़ौम के बड़े-बड़े लोग भी उनके साथी हो गए पस इस

आयत में यही है कि उनका साथ देने वाले गुमराह लोग वह बातें बका करते हैं। (तब्री : 19/416) जो कभी किसी ने न किया हो इसलिए उलमा ने इस बात में इख़्तिलाफ़ किया है कि अगर किसी शायर ने अपने शेअर में किसी ऐसे गुनाह का इक़रार किया हो जिस पर हद्दे शरअ वाजिब होती हो तो आया वह हद उस पर जारी की जाएगी या नहीं? दोनों तरफ़ उलमा गए हैं वाक़ेई वह फ़ख्र व गुरूर के साथ ऐसी बातें बक देते हैं कि मैंने यह किया और यह किया हालाँकि न कुछ किया हो, न कर सकते हों। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत नोअमान बिन नज़ला (रज़ि.) को बसरे के शहर यसान का गवर्नर मुक़र्रर किया था, वह शायर थे एक बार अपने शेअरों में कहा कि क्या हसीनों को यह ख़बर नहीं हुई कि उनका महबूब यसान में है जहाँ हर वक़्त शीशे के ग्लासों से दौरे शराब चल रहा है और गाँव की भोली लड़कियों के गाने और उनके रक़्स व सुरूर मुहय्या हैं, हाँ! अगर मेरे किसी दोस्त से हो सके तो उससे बड़े और भरे हुए जाम मुझे पिलाये लेकिन उनसे छोटे जाम मुझे सख़्त नापसंद हैं। अल्लाह करे अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) को यह ख़बर न पहुँचे वरना वह बुरा मानेंगे और सज़ा देंगे। यह अश्आर सचमुच हज़रत अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) तक पहुँचे आप सख़्त नाराज़ हुए और उसी वक़्त आदमी भेजा कि मैंने तुझे तेरे ओहदे से बरख़्वास्त किया और आपने एक ख़त भेजा जिसमें (बिस्मिल्लाह) के बाद (हामीम) की तीन आयतें (إِلَيْهِ الْمَصِيرُ) (40/ग़ाफ़िर : 1 से 3) तक लिखकर फिर लिखा कि तेरे अश्आर मैंने सुने मुझे सख़्त रंज हुआ। मैं तुझे तेरे ओहदे से मअज़ूल करता हूँ। चुनाँचे उस ख़त को पढ़ते ही हज़रत नोअमान (रज़ि.) दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुए और बाअदब अर्ज़ की कि अमीरुल मोमिनीन! वल्लाह! न मैंने कभी शराब पी, न नाच रंग और गाना बजाना देखा सुना, यह तो सिर्फ़ शायराना तरंग थी। आपने फ़र्माया, यही मेरा ख़्याल है लेकिन मेरी हिम्मत तो नहीं पड़ती कि ऐसे फ़ोहश गो शायर को कोई ओहदा दूँ। पस मालूम हुआ कि हज़रत उमर (रज़ि.) के नज़दीक भी शायर अपने शेअरों में किसी जुर्म के ऐलान पर भले वह क़ाबिले हद हो, मारा न जाएगा इसलिए कि वह कहते हैं जो करते नहीं। हाँ! वह क़ाबिले मलामत और लायक़े सरज़निश ज़रूर हैं।

चुनाँचे हदीस में है कि ''पेट को लहू पीप से भर लेना अश्आर से भर लेने से बेहतर है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुश्शेअर, बाब फ़ी इंशादिल अश्आर व बयानुश्शेअरिल कलिमतु व ज़म्मुश्शेअर : 2258; तिर्मिज़ी : 2856; इब्ने माजा : 3760; अहमद : 1/174; मुस्नदे अबी यअला : 797) मतलब यह है कि रसूले करीम (ﷺ) न तो शायर हैं न साहिर हैं न काहिन हैं, न मुफ़तरी हैं आपका ज़ाहिरी हाल ही आपकी उन उयूब से बरा'त का बहुत बड़ा आदिल गवाह है जैसे फ़र्मान है कि न तो हमने इन्हें शेअरगोई सिखाई है न यह इसके लायक़ है यह तो सिर्फ़ नसीहत है और क़ुरआने मुबीन में है और आयत में है कि रसूले करीम (ﷺ) का क़ौल है किसी शायर का नहीं तुममें ईमान की कमी है। यह किसी काहिन का क़ौल नहीं, तुममें नसीहत मानने का माद्दा कम है, यह तो रब्बुल आलमीन की उतारी हुई किताब है। इस सूरह में भी यही फ़र्माया गया कि यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से उतरी है रूहुल अमीन ने तेरे दिल पर नाज़िल की है। अरबी ज़बान में है इसलिए कि तू लोगों को होशियार कर दे, इसे शयातीन लेकर नहीं आते, न यह उनके लायक़ है, न उनके बस की बात है, वह तो इसके सुनने से भी अलग कर दिये गए हैं। जो झूठे मुफ़तरी और बदकिरदार होते हैं उनके पास शयातीन आते

हैं जो उचटती हुई बातें सुन सुनाकर उनके कानों में डाल जाते हैं। सिर्फ़ झूठ बोलने वाले ख़ुद होते हैं शायरों की पुश्तपनाही ओबाशों का काम है वह तो हर वादी में सरगर्दां रहते हैं, ज़बानी बातें बनाते हैं, अ़मल से कोरे रहते हैं उसके बाद जो फ़र्मान है उसका शाने नुज़ूल यह है कि इससे अगली आयत जिसमें शायरों की मज़म्मत है जब उतरी तो दरबारे रसूल (ﷺ) के शोअ़रा हज़रत हस्सान बिन साबित, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा और कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) रोते हुए दरबारे नबवी में हाज़िर हुए और कहने लगे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! शायरों की तो यह गत बनी और हम भी शायर हैं। उसी वक़्त आप (ﷺ) ने यह दूसरी आयत तिलावत की कि ईमान वाले और नेक अ़मल करने वाले तुम हो, ज़िक्रुल्लाह बकसरत करने वाले तुम हो, मज़्लूम होकर बदला न लेने वाले तुम हो, पस तुम उन शायरों से अलग हो। (तब्री : 19/420) (इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

एक रिवायत में हज़रत कअ़ब (रज़ि.) का नाम नहीं। एक रिवायत में सिर्फ़ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की इस शिकायत पर कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! शायर तो मैं भी हूँ। इस दूसरी आयत का नाज़िल होना मरवी है लेकिन है यह क़ाबिले नज़र। इसलिए कि यह सूरह मक्की है शुअ़रा-ए-अंसार मक्का में न थे, वह सब मदीना में थे फिर उनके बारे में इस आयत का नाज़िल होना यक़ीनन महल्ले ग़ौर होगा और जो हदीसें बयान हुईं वह मुर्सल हैं, इस वजह से ऐतिमाद नहीं हो सकता है यह आयत बेशक इस्तिस्ना के बारे में है और सिर्फ़ यही अंसारी शुअ़रा ही नहीं बल्कि अगर किसी शायर ने अपनी जाहिलियत के ज़माने में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भी अश्आर कहे हों और फिर वह मुसलमान हो जाए तौबा कर ले और उसके मुक़ाबले में ज़िक्रुल्लाह बकसरत करे वह बेशक इस बुराई से अलग है। हस्नात सय्यिआत को दूर कर देती हैं जबकि उसने मुसलमानों को और दीन को बुरा कहा था वह बुरा था लेकिन जब उसने मदह की वह बुराई अच्छाई से बदल गई। जैसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़बअ़री (रज़ि.) ने इस्लाम से पहले हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की हिजू बयान की थी लेकिन इस्लाम लाने के बाद बड़ी मदह बयान की और अपने अश्आर में इस हिजू का उ़ज़्र भी बयान किया कि उस वक़्त मैं शैतानी पंजे में फंसा हुआ था। इसी तरह अबू सुफ़्यान बिन हारिस (रज़ि.) बावजूद आपके चचाज़ाद भाई होने के आप (ﷺ) के जानी दुश्मन थे और बहुत ही हिजू किया करते थे, अबु सुफ़्यान बिन हर्ब (रज़ि.) जब मुसलमान हुए तो ऐसे मुसलमान हुए कि दुनिया भर में हुज़ूर (ﷺ) से ज़्यादा महबूब उन्हें कोई न था। अक्सर आपकी मदह किया करते थे और बहुत ही अ़क़ीदत व महब्बत रखते थे। सहीह मुस्लिम में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अबू सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब जब मुसलमान हुए तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से कहा, मुझे तीन चीज़ें अ़ता फ़र्माईए, एक तो यह कि मेरे लड़के मुआविया को अपना कातिब बना लीजिए। दूसरे मुझे काफ़िरों से जिहाद के लिए भेज दीजिए और मेरे साथ कोई लश्कर कर दीजिए ताकि जिस तरह कुफ़्र में मुसलमानों से लड़ा करता था अब इस्लाम में काफ़िरों की ख़बर लूँ। आप (ﷺ) ने दोनों बातें क़बूल कर लीं एक तीसरी दरख़्वास्त भी क़बूल की गई। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब मिन फ़ज़ाइले अबी सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अ़न्ह : 2501) पस ऐसे लोग इस आयत के हुक्म से इस दूसरी आयत से अलग कर लिए गए ज़िक्रुल्लाह ख़्वाह वह अपने शेअ़रों में बकसरत करें ख़्वाह और तरह अपने कलाम में, यक़ीनन वह अगले गुनाहों का बदला और कफ़्फ़ारा है। अपनी मज़्लूमी का बदला लेते हैं यानी

काफ़िरों की हिजू का जवाब देते हैं। (तब्री : 19/420) ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत हस्सान (रज़ि.) से फ़र्माया था इन कुफ़्फ़ार की हिजू करो जिब्राईल (ﷺ) तुम्हारे साथ हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3213; सहीह मुस्लिम : 2486; बैहक़ी : 1/237; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 2025; मआनियल आसार : 4/298; अहमद : 4/302) हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) शायर ने जब शुअरा की बुराई कुरआन में सुनी तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से अर्ज़ किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम उनमें नहीं हो। मोमिन तो जिस तरह अपनी जान से जिहाद करता है अपनी ज़बान से भी जिहाद करता है। वल्लाह! तुम लोगों के अश्आर तो उन्हें मुजाहिदीन के तीरों की तरह छेद डालते हैं।" (अहमद : 6/387; व सनदुहू ज़ईफ़ुन लि अन्न सूरतहू सूरतुल मुर्सल : बैहक़ी : 10/239; इब्ने हिब्बान : 5786) फिर फ़र्माया, ज़ालिमों को अपना अंजाम भी मालूम हो जाएगा। उन्हें उज़्र मअज़िरत भी कुछ काम न आएगी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "ज़ुल्म से बचो इससे मैदाने क़ियामत में अंधेरों में रह जाओगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2578; इब्ने हिब्बान : 5176; हाकिम : 1/55; मवारिदुज़्ज़मआन : 1/377; दारमी : 2/313; बैहक़ी : 1/243; इब्ने अबी शैबा : 7/192; अहमद : 2/105) आयत आम है ख़्वाह शायर हों ख़्वाह ग़ैर शायर सबको शामिल है।

हज़रत हसन (रह.) ने एक नसरानी के जनाज़े को जाते हुए देखकर यही आयत तिलावत की थी। आप जब इस आयत की तिलावत करते तो इस क़द्र रोते कि हिचकी बँध जाती। रोम में जब हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबेद (रज़ि.) तशरीफ़ ले गए उस वक़्त एक साहब नमाज़ पढ़ रहे थे। जब उन्होंने इस आयत की तिलावत की तो आपने फ़र्माया इससे मुराद बैतुल्लाह की बर्बादी करने वाले हैं। कहा गया है कि इससे मुराद अहले मक्का हैं। यह भी मरवी है कि मुराद मुश्रिकीन। हक़ीक़त यह है कि आयत आम है सबको शामिल है। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि मेरे वालिद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त अपनी वसिय्यत सिर्फ़ दो सतरों में लिखी जो यह थी। बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम यह है वसिय्यत अबूबक्र बिन अबी क़हाफ़ा की उस वक़्त की जबकि वह दुनिया छोड़ रहे थे। जिस वक़्त काफ़िर भी मोमिन हो जाता है और फ़ाजिर भी तौबा कर लेता है और काज़िब को भी सच्चा समझा जाता है मैं तुम पर अपना ख़लीफ़ा उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को बनाकर जा रहा हूँ अगर वह अदल करे तो बहुत अच्छा और मेरा गुमान भी उनके साथ यही है और अगर वह ज़ुल्म करे और कोई तब्दीली कर दे तो मैं ग़ैब नहीं जानता, ज़ालिमों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि किस लौटने की जगह वह लौटते हैं। (इसकी सनद में मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन मज्बर सख़्त ज़ईफ़ व मज्रूह रावी है। देखिए (मीज़ानुल ऐतिदाल : 3/621; रक़म : 7839)

***

सूरह नमल

سورة النمل

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह नमल - 27

आयातः 93 मक्की सूरह, पैराग्राफः 8

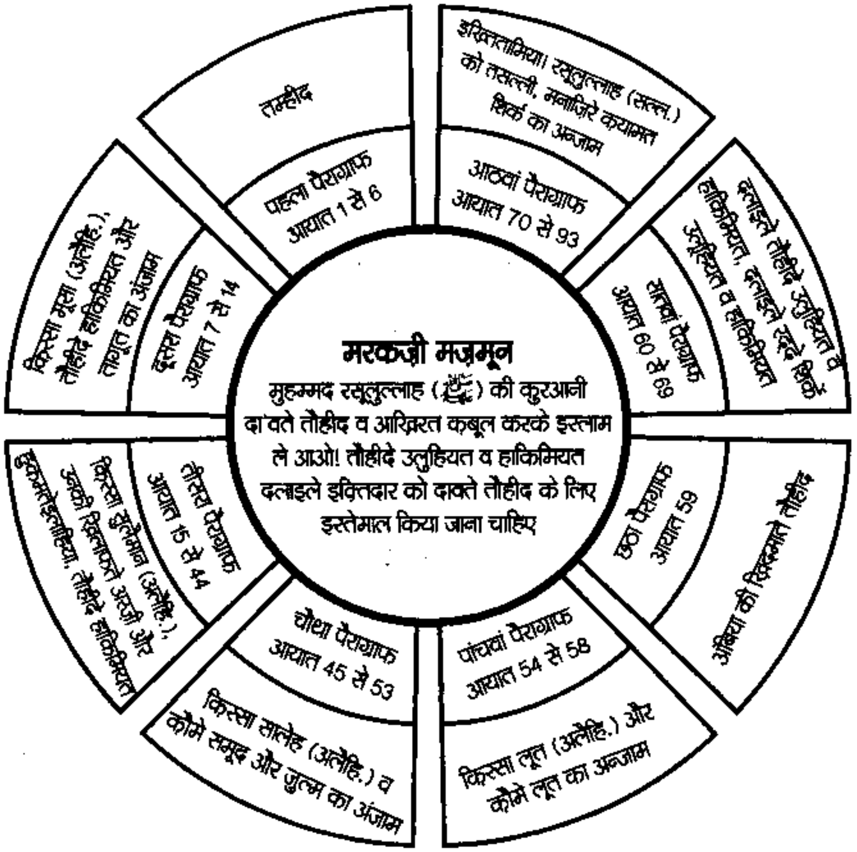

जमानए नुज़ूल :

1. सूरह (नमल), सूरह (शोअरा) के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कयामे मक्का के तीसरे दौर (6 ता 10 नबवी) में नाज़िल हुई जब शको-रैब के साथ रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर साहिर (जादूगर) होने का इल्ज़ाम आइद किया जा रहा था और जब मक्का की बुत परस्त कुरैशी कयादत को यमन की सल्तनत सबा की मलिका के कबूले इस्लाम से इबरत हासिल करने का मश्वरा दिया गया, जो इस्लाम लाने से पहले सूरज की पूजा किया करती थी।

तफ़्सीर सूरह नम्ल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝١ هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ
يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٤ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦

तर्जुमा : ''त़ॉ सीन! यह आयतें हैं क़ुरआन की यानी वाज़ेह और रोशन किताब की। (1) हिदायत और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। (2) जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (3) जो लोग क़ियामत पर ईमान नहीं लाते हमने उन्हें उनके करतूत ज़ीनतदार कर दिखाए हैं पस वह भटकते फिरते हैं। (4) यही लोग हैं जिनके लिए बड़ी मार है और आख़िरत में भी वह सख़्त नुक़्सान उठाने वाले हैं। (5) बेशक तुझे रब हकीम व अ़लीम की त़रफ़ से क़ुरआन सिखाया जा रहा है।'' (6)

मुत्तक़ी (परहेज़गार) और बुरे लोग (आ. 1 से 6) : हुरूफ़े मुक़त्तआ़ जो सूरतों के शुरू में आते हैं उन पर पूरी त़रह बहस सूरह बक़रह के शुरू में हम कर चुके हैं यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं। क़ुरआने करीम जो खुली हुई वाज़ेह रोशन और ज़ाहिर किताब है यह उसकी आयतें हैं जो मोमिनों के लिए हिदायत व बशारत हैं क्योंकि वही इस पर ईमान लाते हैं इसकी इत्तिबाअ़ करते हैं इसे सच्चा जानते हैं इसमें जो हुक्म अह़काम हैं उन पर अ़मल करते हैं यही वह लोग हैं जो नमाज़ें सह़ीह़ त़ौर से पढ़ते हैं फ़र्ज़ों में कमी नहीं करते, इसी त़रह़ फ़र्ज़ ज़कात को भी नहीं रोकते और आख़िरत पर भी पूरा यक़ीन रखते हैं, मौत के बाद की ज़िन्दगी और जज़ा सज़ा को भी मानते हैं, जन्नत दोज़ख़ को ह़क़ जानते हैं। चुनाँचे और आयत में भी है कि ईमान वालों के लिए तो यह क़ुरआन हिदायत और शफ़ाअ़त है और बेईमानों के कान तो बहरे हैं उनमें रूई ठूंसी हुई हैं।

इससे ख़ुशख़बरी परहेज़गारों को है और बदकिरदारों को इसमें डरावा है। यहाँ भी फ़र्माया है कि जो इसे झुठलाएँ और क़ियामत के आने को न मानें हम भी उन्हें छोड़ देते हैं उनकी बुराइयाँ उन्हें अच्छी लगती हैं। इसी में वह बढ़ते और फूलते फलते रहते हैं और अपनी सरकशी और गुमराही में बढ़ते रहते हैं उनकी नज़रें और दिल उलट जाते हैं।

उन्हें दुनिया और आख़िरत में बदतरीन सज़ाएँ होंगी और क़ियामत के दिन तमाम अहले महशर में सबसे ज़्यादा घाटे में यही रहेंगे, बेशक आप ऐ हमारे नबी(ﷺ)! हमसे ही कुरआन ले रहे हैं हम हकीम हैं अम्र व नही की हिक्मत को बख़ूबी जानते हैं, अलीम हैं छोटे बड़े तमाम कामों से बख़ूबी ख़बरदार हैं। पस कुरआन की तमाम ख़बरें बिलकुल सिद्क़ व सदाक़त वाली हैं और उसके हुक्म अहकाम सबके सब सरासर अदल और इंसाफ़ वाले हैं जैसे फ़र्मान है (وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا) (6/अन्आम : 115)

***

إِذْ قَالَ مُوسٰى لِأَهْلِهٖٓ إِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ
لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا
تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۣ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ
الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْۗءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١ وَاَدْخِلْ
يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۣ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ۭ اِنَّهُمْ
كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝١٢ فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ وَجَحَدُوْا
بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤

तर्जुमा : "याद होगा जबकि मूसा(عليه السلام) ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहाँ से या तो कोई ख़बर लेकर या आग का कोई सुलगता हुआ अंगारा लेकर अभी तुम्हारे पास आ जाऊँगा ताकि सेंक ताप कर लो। (7) जब वहाँ पहुँचे तो आवाज़ दी गई कि बाबरकत है

वह जो इस नूर में है और बरकत दिया गया है वह जो इसके आसपास है तमाम पाकी उस मअबूदे बरहक़ के लिए है जो तमाम जहानों का पालने वाला है। (8) मूसा (अ.)! सुन बात यह है कि मैं ही अल्लाह हूँ ग़ालिब बाहिक्मत। (9) तू अपनी लकड़ी डाल दे, मूसा (अ.) ने जब उसे हिलती जुलती देखी इस तरह कि गोया बहुत बड़ा साँप है तो मुँह मोड़े हुए पीठ फेरकर भागे और पलटकर भी न देखा। ऐ मूसा (अ.)! ख़ौफ़ न खा, मेरे सामने पैग़म्बर डरा नहीं करते। (10) लेकिन जो लोग ज़ुल्म करें फिर उसके ब दले नेकी करें उस बुराई के पीछे तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ। (11) और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल वह सफ़ेद चमकीला होकर निकलेगा बग़ैर किसी ऐब के, तू यह निशानियाँ लेकर फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ जा, यक़ीनन वह बदकारों का गिरोह है। (12) जब उनके पास आँखें खोल देने वाले हमारे मोजिज़े पहुँचे तो वह कहने लगे यह तो सरीह जादू है। (13) उन्होंने इसका इंकार कर दिया हालाँकि उनके दिल यक़ीन कर चुके थे सिर्फ़ सितमगरी और तकब्बुर की बिना पर, पस देख ले कि उन फ़ित्ना परदाज़ों का अंजाम कैसा कुछ हुआ।" (14)

मूसा (अ.) को नबुव्वत अता होती है (आ. 7 से 14) : अल्लाह तआला अपने महबूब (स.) को मूसा (अ.) का वाक़िया याद दिला रहा है कि अल्लाह तआला ने उन्हें किस तरह बुज़ुर्ग बनाया और उनसे कलाम किया और उन्हें ज़बरदस्त मोजिज़ा अता किये और फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के पास अपना रसूल बनाकर भेजा लेकिन उन कुफ़्फ़ार ने आपका इंकार किया अपने कुफ़्र व तकब्बुर से न हटे, आपकी इत्तिबाअ और पैरवी न की। फ़र्माता है कि जब मूसा (अ.) अपने अहल (परिवार) को लेकर चले और रास्ता भूल गए, रात आ गई और वह बहुत सख़्त अंधेरे वाली तो आपने देखा कि एक तरफ़ से आग का शोला सा दिखाई देता है अपने अहल से फ़र्माया कि तुम यहीं ठहरो मैं इस रोशनी के पास जाता हूँ क्या अजब है कि वहाँ जो हो उससे रास्ता मालूम हो जाए, या मैं वहाँ से कुछ आग ले आऊँ कि तुम इससे ज़रा सेक ताप कर लो। ऐसा हुआ भी कि आप वहाँ से एक बड़ी ख़बर लाए और बहुत बड़ा नूर हासिल किया। फ़र्माता है कि जब वहाँ पहुँचे उस मंज़र को देखकर हैरान रह गए, देखते हैं कि एक सरसब्ज़ दरख़्त है उस पर आग लिपटी हुई है, शोले तेज़ हो रहे हैं और दरख़्त की सरसब्ज़ी और बढ़ रही है। ऊँची नज़र की तो देखा कि वह नूर आसमान तक पहुँचा हुआ है, फ़िल्वाक़ेअ वह आग न थी बल्कि नूर था। और नूर भी रब्बुल आलमीन वह्दहू ला शरीक लहू का। (तबरी : 19/428) हज़रत मूसा(अ.) ताज्जुब में थे और कोई बात समझ में नहीं आती थी कि यकायक एक आवाज़ आती है कि इस नूर में जो है वह पाकी वाला और बुज़ुर्गी वाला है और उसके पास जो फ़रिश्ते हैं वह भी मुक़द्दस हैं। (तबरी : 19/429) रसूलुल्लाह (स.) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला सोता नहीं और न उसे सोना लायक़ है वह तराज़ू को पस्त करता है और ऊँची करता है। रात के काम उसी की तरफ़ दिन से पहले और दिन के काम रात से पहले चढ़ जाते हैं। उसका हिजाब नूर है या आग है और अगर वह हट जाएँ तो उसके चेहरे की तजल्लियाँ हर उस चीज़ को ला दें जिस पर उसकी नज़र पहुँच रही है यानी कुल कायनात को।"

अबू उबेदह (रह.) रावी हदीस ने यह हदीस बयान करके यही आयत तिलावत की। यह अल्फ़ाज़ इब्ने

अबी हातिम के हैं और इसकी अस़ल सही मुस्लिम में है। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही अ़लैहिस्सलामु अन्नल्लाह ला यनाम : 179; मुस्नदे त़यालिसी : 491; अह़मद : 4/395; इब्ने माजा : 195; इब्ने ह़िब्बान : 266) पाक है वह अल्लाह जो तमाम जहान का पालने वाला है जो चाहता है करता है मख़्लूक़ में से कोई भी उसके मुशाबेह नहीं, उसकी मस्नूआत में से कोई चीज़ किसी के एह़ाते में नहीं, वह बुलंद व बाला है, सारी मख़्लूक़ से अलग है, ज़मीनो आसमान उसे घेर नहीं सकते, वह वाह़िद व स़मद है, वह मख़्लूक़ की मिस्लियत से पाक है फिर ख़बर दी कि ख़ुद अल्लाह तआ़ला उनसे ख़ित़ाब कर रहा है वही इस वक़्त सरगोशियाँ कर रहा है जो सब पर ग़ालिब है सब उसके मातह़त और ज़ेरे हुक्म हैं। वह अपने क़ौल व अफ़्आ़ल में ह़िक्मत वाला है। उसके बाद जनाब बारी अ़ज़्ज़ व जल्ल ने हुक्म दिया कि ऐ मूसा (عليه السلام)! अपनी लकड़ी को अपने हाथ से ज़मीन पर डाल दो ताकि तुम अपनी आँखों से देख सको कि अल्लाह तआ़ला फ़ाइल मुख़्तार है वह हर चीज़ पर क़ादिर है। मूसा (عليه السلام) ने इर्शाद सुनते ही लकड़ी को ज़मीन पर डाल दिया। उसी वक़्त वह एक फन फनाता हुआ साँप बन गई और बहुत बड़े जिस्म का साँप बड़ी डरावनी सूरत का उस मोटापे पर तेज़ तेज़ चलने वाला। उसे जीता जागता चलता फिरता ज़बरदस्त अज़्दहा देखकर ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) ख़ौफ़ज़दा से हो गए (जान्नुन) का लफ़्ज़ क़ुरआन करीम में है, यह एक क़िस्म के साँप हैं जो बहुत तेज़ी से ह़रकत करने वाले और कुण्डली लगाने वाले होते हैं।

एक ह़दीस में है कि "रसूले करीम (ﷺ) ने घरों में रहने वाले ऐसे साँपों के क़त्ल से मना किया की है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब (ख़ैरु मालिल मुस्लिम ग़नमुन यत्तबिउ बिहा शग़फ़ुल जिबाल...): 3313; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2233) अल्ग़र्ज़ जनाब मूसा (عليه السلام) उसे देखकर डरे और दहशत के मारे ठहर न सके और मुँह मोड़कर पीठ फेरकर वहाँ से भाग खड़े हुए, ऐसे दहशतज़दा थे कि मुड़कर भी न देखा, उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आवाज़ दी कि मूसा(عليه السلام)! डरो नहीं। मैं तुम्हें अपना बरगुज़ीदा रसूल और बाइ़ज़्ज़त पैग़म्बर बनाना चाहता हूँ। उसके बाद इस्तिस्ना मुंक़त़अ है इस आयत में इंसान के लिए बहुत बड़ी बशारत है कि जिसने भी कोई बुरा काम किया हो फिर वह उस पर नादिम हो जाए, तौबा कर ले, अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ झुक जाए तो अल्लाह तआ़ला ऐसी तौबा क़बूल कर लेता है। जैसे और आयत में है (وَ اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ) (20/त़ाहा : 82) जो भी तौबा कर ले और ईमान लाए और नेक अ़मल करे और राहे रास्त पर चले, मैं उसके गुनाहों का बख़्शने वाला हूँ। और फ़र्मान है (وَ مَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ یَظْلِمْ نَفْسَهٗ) (4/निसाअ : 110) जो शख़्स़ किसी बुराई का मुर्तकिब हो जाए या कोई गुनाह कर बैठे फिर अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार करे तो वह यक़ीनन अल्लाह तआ़ला को ग़फ़ूर व रह़ीम पाएगा।

इस मज़्मून की आयतें कलामे इलाही में और भी बहुत सारी हैं। लकड़ी के साँप बन जाने के मोजिज़े के साथ ही कलीमुल्लाह को और मोजिज़ा दिया जाता है कि आप जब भी अपने गिरेबान में हाथ डालकर निकालेंगे तो वह चाँदी की त़रह़ चमकता हुआ निकलेगा। यह मोजिज़े उन नौ मोजिज़ों में से हैं जिनमें से तेरी वक़्तन फ़ौक़तन ताइद करता रहूँगा ताकि फ़ासिक़ फ़िरऔन और उसकी फ़ासिक़ क़ौम के दिल में तेरी नबुव्वत का सबूत जगह पकड़ जाए यह नौ मोजिज़े वह थे जिनका ज़िक्र आयत (وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسٰی تِسْعَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ)

(17/इस्रा : 101) में है। जिसकी पूरी तफ़्सीर भी इसी आयत के तहत में गुज़र चुकी है। जब यह वाज़ेह ज़ाहिर साफ़ और खुले मोजिज़े फ़िरऔनियों को दिखाए गए तो वह अपनी ज़िद्द में आकर कहने लगे, यह तो जादू है हम अपने जादूगरों को बुला लेते हैं मुक़ाबला कर लो। उस मुक़ाबले में अल्लाह तआला ने हक़ को ग़ालिब किया और यह सब लोग ज़ेर हो गए मगर फिर भी न माने भले दिलों में उसकी हक़्क़ानियत जम चुकी थी लेकिन ज़ाहिरी मुक़ाबले से न हटे। सिर्फ़ जुल्म और तकब्बुर की बिना पर हक़ को झुठलाते रहे, अब तू देख ले कि इन मुफ़्सिदों का अंजाम किस क़द्र हैरतनाक और कैसा कुछ इब्रतनाक हुआ। एक ही मर्तबा एक ही साथ सारे के सारे दरिया में डुबो दिये गए। पस ऐ नबी (ﷺ) के झुठलाने वालो! तुम इस नबी (ﷺ) को झुठलाकर मुत्मइन न बैठो क्योंकि यह तो मूसा (عليه السلام) से भी अशरफ़ व अफ़ज़ल हैं इनकी दलीलें और मोजिज़े भी उनकी दलीलों और मोजिज़ों से बड़े हैं, ख़ुद आप एक वजूद आपके आदात व अख़्लाक़ और अगली किताबों की और अगले नबियों की आपकी निस्बत बशारतें उनसे अल्लाह का अ़हदो पैमान यह सब चीज़ें आप में हैं पस तुम्हें न मानकर निडर और बेख़ौफ़ न रहना चाहिए।

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ
عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ
وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾ حَتّٰۤى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ
يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ
وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : ''हमने यक़ीनन दाऊद और सुलेमान (अ.) को इल्म दे रखा था। और दोनों ने कहा तमाम ता'रीफ़ उस अल्लाह तआला के लिए है जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत अ़ता की है। (15) दाउद (عليه السلام) के वारिस सुलेमान (عليه السلام) हुए और कहने लगे कि लोगों! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हम सब कुछ दिये गए हैं, बेशक यह बिलकुल

खुला हुआ फ़ज़्ले इलाही है। (16) सुलेमान (ﷺ) के सामने उनके तमाम लश्कर जिन्नात और इंसान और परिन्दे जमा किये गए, हर हर क़िस्म अलग अलग खड़ी कर दी गई। (17) जब वह चींटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों की जमाअत! अपने अपने घरों में घुस जाओ ऐसा न हो कि बेख़बरी में सुलेमान (ﷺ) और उसका लश्कर तुम्हें रौंद डाले। (18) उसकी इस बात से हज़रत सुलेमान (ﷺ) मुस्कुराकर हँस दिये और दुआ करने लगे कि ऐ परवरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी इन नेअमतों का शुक्र बजा लाऊँ जो तूने मुझ पर इन्आम की हैं और मेरे माँ बाप पर और मैं ऐसे नेक आमाल करता रहूँ जिनसे तू ख़ुश रहे, मुझे अपनी उम्मत से अपने नेक बंदों में शामिल कर ले।" (19)

हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान (ﷺ) पर अल्लाह तआला के एहसानात (आ. 15 से 19) : इन आयतों में अल्लाह तआला उन नेअमतों की ख़बर दे रहा है जो उसने अपने बन्दे हज़रत सुलेमान(ﷺ) और हज़रत दाऊद (ﷺ) पर इन्आम फ़र्माई थीं कि किस तरह दोनों जहान की दौलत से उन्हें मालामाल किया, उन नेअमतों के साथ ही अपने शुक्रिये की भी तौफ़ीक़ दी थी, दोनों बाप बेटे हर वक़्त अल्लाह तआला की नेअमतोंपर उसकी शुक्रगुज़ारी किया करते थे और उसकी ता'रीफ़ें बयान करते रहते थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने लिखा है कि "जिस बन्दे को अल्लाह तआला जो नेअमतें दे और उन पर वह अल्लाह तआला की हम्द करे तो उसकी हम्द उन नेअमतों से बहुत अफ़ज़ल है, देखो ख़ुद किताबुल्लाह में यह बिन्दु मौजूद है। फिर आपने यही आयत लिखकर लिखा कि उन दोनों पैग़म्बरों को जो नेअमत दी गई थी उससे अफ़ज़ल नेअमत और क्या होगी।" हज़रत दाऊद (ﷺ) के वारिस हज़रत सुलेमान (ﷺ) हुए, इससे मुराद माल की वरासत नहीं बल्कि मुल्क व नबुव्वत की वरासत है अगर माली मीरास मुराद होती तो इसमें सिर्फ़ सुलेमान (ﷺ) ही का नाम न आता क्योंकि हज़रत दाउद (ﷺ) की सौ बीवियाँ थीं। अम्बिया के माल की मीरास नहीं बटती, चुनाँचे सय्यदुल अम्बिया (ﷺ) का इर्शाद है कि "हम जमाअते अम्बिया हैं, हमारे वर्से नहीं बटा करते, हम जो कुछ छोड़ जाएँ सदक़ा है।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस : 3094; सहीह मुस्लिम : 1757; अबूदाउद : 2963; तिर्मिज़ी : 1610; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2; इनमें (नहनु मआशिरूल अम्बिया ला नूरिसु) हम जमाअते अम्बिया हैं, हमारे वर्से नहीं बटते। के अल्फ़ाज़ के अलावा मौजूद है, अल्बत्ता यह (इन्ना मअशरल अम्बिया ला नूरिस) के अल्फ़ाज़ से सुननुल कुब्रा लिन्नसाई 6309 में मौजूद है। और वह सहीह है।) हज़रत सुलेमान (ﷺ) अल्लाह तआला की नेअमतें याद करते हैं, फ़र्माते हैं यह पूरा मुल्क और यह ज़बरदस्त ताक़त कि इंसान, जिन्न, परिन्द, सब ताबेअ फ़र्मान हैं, परिन्दों की ज़ुबान भी समझ लेते हैं, यह ख़ास अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम है, जो किसी और इंसान पर नहीं हुआ। कुछ जाहिलों ने कहा है कि उस वक़्त परिन्द भी इंसानी ज़बान बोलते थे, यह सिर्फ़ उनकी बेइल्मी है, भला समझो तो सही अगर वाक़ेई यही बात होती तो फिर उसमें हज़रत सुलेमान (ﷺ) की ख़ुसूसियत ही क्या थी? जिसे आप इस फ़ख़्र से बयान करते हैं कि हमें परिन्दों की ज़बान सिखा दी गई फिर तो हर शख़्स परिन्द की बोली समझता और हज़रत सुलेमान (ﷺ) की ख़ुसूसियत जाती रहती। यह सिर्फ़ ग़लत है आप और परिन्द की ज़बान समझ लेते

थे। साथ ही यह नेअमत भी हासिल हुई थी कि एक बादशाहत में जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है सब हज़रत सुलेमान (ﷺ) को कुदरत ने मुहय्या कर दी थीं यह था अल्लाह तआला का खुला एहसान आप पर।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हज़रत दाउद (ﷺ) बहुत ही ग़ैरत वाले थे जब आप घर से बाहर जाते तो दरवाज़े बंद करते जाते, फिर किसी को अंदर जाने की इजाज़त न थी। एक बार आप इसी तरह बाहर तशरीफ़ ले गए। थोड़ी देर बाद एक बीवी साहिबा की नज़र उठी तो देखती हैं कि घर के बीचों बीच एक साहब खड़े हैं। हैरान हो गईं, और दूसरों को दिखाया, आपस में सब कहने लगीं, यह कहाँ से आ गए? दरवाज़े बंद हैं, यह दाख़िल कैसे हुए? अल्लाह तआला की क़सम! हज़रत दाऊद (ﷺ) भी आ गए आपने भी उन्हें खड़ा देखा और पूछा कि तुम कौन हो? उसने जवाब दिया कि जिसे कोई रोक और दरवाज़ा रोक न सके, वह जो किसी बड़े से बड़े की मुत्लक़ परवाह न करे, हज़रत दाउद (ﷺ) समझ गए और फ़र्माने लगे, मरहबा हो! मरहबा हो! आप मलकुल मौत हैं। उसी वक़्त मलकुल मौत ने आपकी रूह क़ब्ज़ की। सूरज निकल आया और आप पर धूप आ गई तो हज़रत सुलेमान (ﷺ) ने परिन्दों को हुक्म दिया कि वह हज़रत दाउद (ﷺ) पर साया करें, उन्होंने अपने पर खोलकर ऐसी गहरी छाँव कर दी कि ज़मीन पर अंधेरा सा छा गया फिर हुक्म दिया कि एक एक करके अपने सब परों को समेट लो।" हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! परिन्दों ने फिर पर कैसे समेटे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अपना हाथ समेटकर बतलाया कि इस तरह उस पर उस दिन लाल रंग के गिद्ध ग़ालिब आ गए थे।" (अहमद : 2/419; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/207; इसमें मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन हंतब का हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। (अत्तारीख़ुल औसत लिल बुख़ारी : 1/17) हज़रत सुलेमान (ﷺ) का लश्कर जमा हुआ जिसमें इंसान, जिन्न, परिन्द सब थे। आपके सरों पर रहते थे। गर्मियों में साया करते थे सब अपने अपने मर्तबे पर क़ायम थे। जिसकी जो जगह मुक़र्रर थी वहीं रहता, जब उन लश्करों को लेकर हज़रत सुलेमान (ﷺ) चले, एक जंगल पर गुज़र हुआ जहाँ चींटी ने दूसरी चींटियों से कहा कि जाओ अपने अपने बिल में चली जाओ कहीं ऐसा न हो कि लश्करे सुलेमानी चलता हुआ तुम्हें कुचल डाले और उन्हें इल्म भी न हो। हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं कि "उस चींटी का नाम हुर्मुस था यह बनू शीसान के क़बीले से थी, थी भी लंगड़ी, बक़द्रे भेड़िये के उसे ख़ौफ़ हुआ कि यह सब कुचल दी जाएँगी और पिस जाएँगी।" यह सुनकर हज़रत सुलेमान(ﷺ) को तबस्सुम बल्कि हँसी आ गई और उसी वक़्त अल्लाह तआला से दुआ की ऐ अल्लाह! मुझे अपनी नेअमतों का शुक्रिया अदा करना इल्हाम कर जो तूने मुझ पर इन्आम की हैं, मस्लन परिन्दों और हैवानों की बोलियाँ सिखा देना वग़ैरह। नीज़ जो नेअमतें तूने मेरे वालिदेन पर इन्आम की हैं कि वह मुसलमान मोमिन हुए वग़ैरह और मुझे नेक अमल करने की तौफ़ीक़ दी जिनसे तू ख़ुश हुआ और जब मेरी मौत आ जाए तो मुझे अपने नेक बन्दों और बुलंद रफ़ीक़ों में मिला दे जो तेरे दोस्त हैं। मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह वादी शाम में थी। कुछ और जगह बतलाते हैं यह चींटी मिस्ल मक्खियों के पर वाली थी। और भी कई क़ौल हैं, नौफ़ बक्काली कहते हैं कि यह भेड़िये के बराबर थी। मुम्किन है कि असल में लफ़्ज़ ज़ुबाब हो यानी मक्खी के बराबर और कातिब की ग़लती से वह ज़ुयाब लिख दिया गया हो यानी भेड़िया। हज़रत सुलेमान (ﷺ) चूँकि जानवरों की बोलियाँ समझते थे इस बात को भी समझ गए और बेइख़्तियार हँसी आ गई।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बार हज़रत सुलेमान (ﷺ) इस्तिस्क़ा के लिए निकले तो देखा कि एक चींटी उल्टी लेटी हुई अपने पैर आसमान की तरफ़ उठाए हुए दुआ कर रही है कि ऐ अल्लाह! हम भी तेरी मख़्लूक़ हैं, पानी बरसने की मोहताजी हमें भी है। अगर पानी न बरसा तो हम हलाक हो जाएँगी, चींटी की यह दुआ सुनकर आपने लोगों में ऐलान किया कि लौट चलो। किसी और ही की दुआ से तुम पानी पिलाए गए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि नबियों में से किसी नबी को एक चींटी ने काट लिया उन्होंने चींटियों के सूराख़ में आग लगाने का हुक्म दे दिया। उसी वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से वही आई कि ऐ पैग़म्बर! सिर्फ़ एक चींटी के काटने पर तूने एक गिरोह के गिरोह को जो हमारी तस्बीह करने वाला था हलाक कर दिया तुझे बदला ही लेना था तो उसी एक चींटी से लेता। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब इज़ा वक़अज़्ज़ुबाब फ़ी शराबि अहदिकुम... : 3319; सहीह मुस्लिम : 2241; अबूदाउद : 266; इब्ने माजा : 3225; अहमद : 2/313; इब्ने हिब्बान : 5614)

***

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِينَ ۝٢٠ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝٢١

तर्जुमा : "और आपने परिन्दों की देखभाल की और कहने लगे कि यह क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देखता? क्या वाक़ेई वह ग़ैर हाज़िर है? (20) यक़ीनन मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा या उसे ज़िब्ह कर डालूँगा या मेरे सामने कोई मअक़ूल वजह बयान करे।" (21)

सुलेमान (ﷺ) के वाक़ियात (आ. 20, 21) : हुदहुद फ़ौजे सुलेमान (ﷺ) में मुहन्दिस (इंजीनियर) का काम करता था, वह बतलाता था कि पानी कहाँ है? ज़मीन के अंदर का पानी इस तरह नज़र आता था जैसे कि ज़मीन के ऊपर की चीज़ लोगों को नज़र आती है। जब सुलेमान (ﷺ) जंगल में होते तो उससे पूछा करते थे कि पानी कहाँ है? यह बता देता कि फ़लाँ जगह है इतना नीचा है वग़ैरह। हज़रत सुलेमान (ﷺ) उसी वक़्त जिन्नात को हुक्म देते और कुआँ खोद लिया जाता। एक दिन इसी तरह एक जंगल में थे, परिन्दों की तफ़्तीश की ताकि पानी की तलाश का हुक्म दें। इत्तिफ़ाक़ से वह मौजूद न थे। उस पर आपने फ़र्माया आज हुदहुद नज़र नहीं आ रहा, क्या परिन्दों में कहीं वह छुप गया जो मुझे नज़र न आया, वाक़ेई वो हाज़िर नहीं है?

एक बार हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह तफ़्सीर सुनकर नाफ़ेअ बिन अज़्रक़ ख़ारजी ने ऐतराज़ किया था। यह बकवासी हर वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की बातों पर बेजा ऐतिराज़ किया करता था। कहने लगा बस आज तो तुम हार गए। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, यह क्यूँ उसने कहा आप जो यह फ़र्माते हैं कि हुदहुद ज़मीन तले का पानी देख लेता था, यह कैसे सही हो सकता है। एक बच्चा जाल बिछाकर उसे मिट्टी से ढककर दाना डालकर हुदहुद का शिकार कर लेता है अगर वह ज़मीन के अंदर का पानी देखता है

तो ज़मीन के ऊपर का जाल उसे क्यूँ नज़र नहीं आता। आपने फ़र्माया अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि तू यह समझ जाएगा कि इब्ने अ़ब्बास लाजवाब हो गया तो मुझे जवाब की ज़रूरत न थी सुन! जिस वक़्त क़ज़ा आ जाती है आँखें अंधी हो जाती हैं और अ़क़्ल जाती रहती है, नाफ़ेअ़ लाजवाब हो गया और कहने लगा, वल्लाह! अब आप पर ऐतिराज़ न करूँगा। (ह़ाकिम : 2/405, 406; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अअ़मश मुदल्लस है।)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बज़री (रह़.) एक वलिउल्लाह शख़्स थे, सोम जुमेरात का रोज़ा पाबन्दी से रखा करते थे। अस्सी साल की उ़म्र थी, एक आँखे से काने थे। सुलेमान बिन ज़ेद ने उनसे आँख के जाने की वजह पूछी तो आपने उसके बताने से इंकार कर दिया। यह भी पीछे पड़ गए, महीनों गुज़र गए न वह बताते न यह सवाल छोड़ते। आख़िर तंग आकर फ़र्माया सुन लो! दो ख़ुरासानी मेरे पास बरज़ा में जो दमिश्क़ के पास एक शहर है, आये और मुझसे कहा कि मैं उन्हें बरज़ा की वादी में ले जाऊँ। मैं उन्हें वहाँ ले गया, अंगेठियाँ निकालीं बख़ूर निकाले और जलाने शुरू किये यहाँ तक कि तमाम वादी ख़ुश्बू से महकने लगी और हर त़रफ़ से साँपों की आमद शुरू हो गई लेकिन यह बेपरवाही से बैठे रहे किसी साँप की त़रफ़ ध्यान न करते थे, थोड़ी देर में एक साँप आया जो हाथ भर का था और उसकी आँखें सोने की त़रह़ चमक रही थीं। यह बहुत ही ख़ुश हुए और कहने लगे, अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि हमारी साल भर की मेह़नत ठिकाने लगी। उन्हों ने उस साँप को लेकर उसकी आँखों में सिलाई फेरकर अपनी आँखों में वह सलाई फेर ली, मैंने उनसे कहा कि मेरी आँखों में भी यह सलाई फेर दो। उन्होंने इंकार कर दिया, मैंने उनसे मिन्नत समाजत की, बमुश्किल वह राज़ी हुए और मेरी दाहिनी आँख में वह सलाई फेर दी, अब जो मैं देखता हूँ तो ज़मीन एक शीशे की त़रह़ मालूम होने लगी जैसी ऊपर की चीज़ें नज़र आती थीं ऐसी ही ज़मीन के अंदर की चीज़ें भी देख रहा था। उन्होंने मुझसे कहा कि अच्छा! अब आप हमारे साथ ही कुछ दूर चलिए। मैं ने मंज़ूर कर लिया, वह बातें करते हुए मुझे साथ लिये हुए चले जब मैं बस्ती से बहुत़ दूर निकल गया तो दोनों ने मुझे दोनों त़रफ़ से पकड़ लिया और एक ने अपनी उँगली डालकर मेरी आँख निकाल ली और फेंक दी और मुझे यूँ ही बँधा हुआ वहीं पटककर दोनों कहीं चल दिये। इत्तिफ़ाक़न वहाँ से एक क़ाफ़िला गुज़रा और उन्होंने मुझे उस ह़ालत में देखकर रह़म खाया, क़ेदो बंद से मुझे आज़ाद किया और मैं चला आया। यह क़िस्सा है मेरी आँख जाने का (इब्ने अ़साकिर)

ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) के उस हुदहुद का नाम अंबर था। आप फ़र्माते हैं कि अगर वाक़ेई में वह ग़ैर ह़ाज़िर है तो मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा उसके पर नुचवा दूँगा और उसे फेंक दूँगा कि कीड़े मकोड़े खा जाएँ या मैं उसे ह़लाल कर दूँगा या यह कि वह अपने ग़ैर ह़ाज़िर होने की सही वजह बयान कर दे। इतने में हुदहुद आ गया, जानवरों ने उसे ख़बर दी कि आज तेरी ख़ैर नहीं। बादशाह अ़हद कर चुके हैं कि वह तुझे मार डालेंगे। उसने कहा, यह बयान करो कि आपके अल्फ़ाज़ क्या थे? उन्होंने बयान किये तो ख़ुश होकर कहने लगा, फिर तो मैं बच जाऊँगा। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं कि "उसके इस बचाव की वजह उसका अपनी माँ के साथ सलूक था।"

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ
وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّ لَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا
وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ
عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
﴿٢٦﴾ {السجدة ٥}

तर्जुमा : "कुछ ज़्यादा देर न गुज़री थी कि आकर उसने कहा, मैं एक ऐसी चीज़ लाया हूँ कि तुझे उसकी ख़बर ही न थी, मैं सबा की एक सच्ची ख़बर तेरे पास लाया हूँ। (22) मैंने देखा कि उनकी बादशाहत एक औरत कर रही है जिसे हर क़िस्म की चीज़ से कुछ न कुछ दिया गया है और उसका तख़्त भी बड़ी अज़्मत वाला है। (23) मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह तआला को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हुए पाया, शैतान ने उनके काम उन्हें भले करके दिखलाकर सही राह से रोक दिया है पस वह हिदायत पर नहीं आते। (24) कि उसी अल्लाह के लिए सज्दा करें जो आसमानों और ज़मीनों की पोशीदा चीज़ों को बाहर निकालता है और जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो वह सब कुछ जानता है। (25) उसके सिवा कोई मअबूदे बरहक़ नहीं वही अज़्मत वाले अर्श का मालिक है।" (26)

हुदहुद का मलिक-ए-सबा के बारे में ख़बर देना (आ. 22 से 26) : हुदहुद की ग़ैर हाज़िरी को थोड़ी सी देर गुज़री थी जो वह आ गया उसने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! जिस बात की आपको ख़बर भी नहीं मैं उसकी एक नई ख़बर लेकर आपके पास हाज़िर हुआ हूँ। मैं सबा से आ रहा हूँ और पुख़्ता यक़ीनी ख़बर लाया हूँ उनके सबा ह़िम्यर थे और यह यमन के बादशाह थे एक औरत उनकी बादशाहत कर रही है। उसका नाम बिलक़ीस बिन्ते शुरहबील था, यह सबा की मलिका थी। (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/351) क़तादा (रह.) कहते हैं कि "उसकी माँ जिन्निया औरत थी उसके क़दम का पिछला हिस्सा चौपाये के खुर की तरह था।"

और रिवायत में है कि उसकी माँ का नाम बल्तआ था। इब्ने जुरैज (रह.) कहते हैं कि उसके बाप का नाम ज़ी शुर्ख़ था और माँ का नाम रफ़ाआ था। लाखों का उसका लाव लश्कर था। उसकी बादशाही एक औरत को करते हुए मैंने पाया। उसके मुशीर वज़ीर तीन सौ बारह शख़्स थे, उनमें से हर एक के मातहत बारह हज़ार

की जमइयत है। उसकी ज़मीन का नाम मारिब है। यह सन्आ से तीन मील की दूरी पर है। यही क़ौल क़रीने क़यास है (इसका अक्सर हिस्सा मम्लकते यमन में है, वल्लाहु आलम)

दुनियावी ज़रूरी सामान हर क़िस्म का उसे मुहय्या है। उसका निहायत ही शानदार तख़्त है जिस पर वह बैठा करती है, सोने से मँढा हुआ है और जड़ाव और मरवारीद की कारीगरी उस पर हुई है यह अस्सी हाथ ऊँचा था और चालीस हाथ चौड़ा था। छः सौ औरतें हर वक़्त उसकी ख़िदमत में कमरबस्ता रहती थीं उसका दीवाने ख़ास जिसमें यह तख़्त था बहुत बड़ा महल था बुलंद व बाला कुशादा और फ़राख़ पुख़्ता मज़बूत और साफ़ जिसके मश्रिक़ी हिस्से में तीन सौ साठ ताक़ थे और इतने ही मग़्रिबी हिस्से में। उसे इस सन्अत से बनाया था कि हर दिन सूरज एक ताक़ से निकलता और उसी के मुक़ाबले के ताक़ से डूबता। अहले दरबार सुबह शाम उसे सज्दा कर लेते। राजा प्रजा सब सूरज पूजने वाले थे, अल्लाह तआला का पुजारी उनमें एक भी न था। शैतान ने बुराइयाँ उन्हें अच्छी कर दिखाई थीं और उनकी राह मार रखी थी। वह राहे रास्त पर आते ही न थे, जो राहे रास्त यह है कि सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की ज़ात को सज्दा के लायक़ माना जाए न कि सूरज और चाँद और सितारों को जैसे फ़र्माने कुरआन है कि रात दिन सूरज चाँद सब कुदरते अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं। तुम्हें सूरज चाँद को सज्दा न करना चाहिए। सज्दा सिर्फ़ उसी अल्लाह तआला को करना चाहिए जो उन सबका ख़ालिक़ है, आख़िर तक। (अल्ला यस्जुदू) की एक क़िरअत (अला या यस्जुदू) भी है। (या) के बाद मुनादी महज़ूफ़ है यानी ऐ मेरी क़ौम! ख़बरदार! सज्दा अल्लाह तआला ही के लिए करना। जो आसमान की ज़मीन की हर छुपी चीज़ को जानने वाला है। (ख़स्बअ) की तफ़्सीर पानी और बारिश और पैदावार से भी की गई है, क्या अजब है कि हुदहुद की जिसमें यह सिफ़त थी यही मुराद हो। और तुम्हारे हर मख़्फ़ी और ज़ाहिर काम को भी वह जानता है। खुली छुपी बात उस पर यक्साँ है, वही तंहा मअबूदे बरहक़ है वही अर्शे अज़ीम का रब है जिससे बड़ी कोई चीज़ नहीं। चूँकि हुदहुद ख़ैर की तरफ़ बुलाने वाला, अल्लाह की इबादत का हुक्म देने वाला उसके सिवा ग़ैर के सज्दे से रोकने वाला था इसीलिए उसके क़त्ल की मुमानिअत कर दी गई। मुस्नदे अहमद, अबूदाऊद, इब्ने माजा में है कि नबी (ﷺ) ने चार जानवरों का क़त्ल हराम कर दिया। चींटी, शहद की मक्खी, हुदहुद और सुर्द यानी लटूरा।

***

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ
تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ
مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : "सुलेमान (अलै.) ने कहा, अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा है या तू झूठा है। (27) मेरे इस ख़त को ले जाकर उन्हें दे दे फिर उनके पास से हट आ और देख कि वह क्या जवाब देते हैं। (28) वह कहने लगी, ऐ सरदारों! मेरी तरफ़ एक बावक़्अत ख़त डाला गया है। (29) जो सुलेमान (अलै.) की तरफ़ से है और जो बख़्शिश करने वाले मेहरबान अल्लाह के नाम से शुरू है। (30) यह कि तुम मेरे सामने सरकशी न करो और मुसलमान बनकर मेरे पास आ जाओ।" (31)

सुलेमान (अलै.) का मलिका सबा के नाम पैग़ाम (आ. 27 से 31) : हुदहुद की ख़बर सुनते ही हज़रत सुलेमान (अलै.) ने उसकी तहक़ीक़ शुरू कर दी कि अगर यह सच्चा है तो क़ाबिले माफ़ी है और अगर झूठा है तो क़ाबिले सज़ा है, इसीलिए फ़र्माया कि मेरा यह ख़त बिलक़ीस को जो वहाँ की फ़र्मां रवा है दे आ। उस ख़त को चोंच में लेकर या पर से बँधवाकर हुदहुद उड़ा। वहाँ पहुँचकर बिलक़ीस के महल में गया, वह उस वक़्त ख़ल्वतख़ाना में थी, उसने एक ताक़ में से वह ख़त उसके सामने रख दिया और अदब के साथ एक तरफ़ हो गया। उसे सख़्त ताज्जुब हुआ, हैरत हुई और साथ ही कुछ ख़ौफ़ व दहशत भी हुई। ख़त को उठाकर मुहर तोड़कर ख़त खोलकर पढ़ा, उसके मज़्मून से वाक़िफ़ होकर अपने वज़ीरों, अमीरों, सरदारों और रईसों को जमा किया और कहने लगी कि एक बावक़्अत ख़त मेरे सामने डाला गया है, उस ख़त का बावक़्अत होना उस पर इससे भी ज़ाहिर हो गया था कि एक जानवर उसे लाता है वह होशियारी और एहतियात से पहुँचाता है, सामने बाअदब रखकर अलग हट जाता है तो जान गई थी कि यह ख़त मुकर्रम है और किसी बाइज़्ज़त शख़्स का भेजा हुआ है, फिर ख़त का मज़्मून सबको पढ़कर सुनाया कि यह ख़त हज़रत सुलेमान (अलै.) का है और उसके शुरू में (बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम) लिखा हुआ है। साथ ही मुसलमान होने और ताबेअ फ़र्मान बनने की दावत दी है। अब सबने पहचान लिया कि यह अल्लाह तआला के पैग़म्बर का दावतनामा है और हममें से किसी में उनके मुक़ाबले की ताब व ताक़त नहीं, फिर ख़त की बलाग़त इख़्तिसार और वज़ाहत ने सबको हैरान कर दिया कि यह मुख़्तसर सी इबारत बहुत सी बातों से अलग है। दरिया को कूज़ा में बंद कर दिया है, उलेमा-ए-किराम का मन्कूला है कि हज़रत सुलेमान (अलै.) से पहले किसी ने ख़त में बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम नहीं लिखी।

एक ग़रीब और ज़ईफ़ हदीस इब्ने अबी हातिम में है हज़रत बुरैदा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं हुज़ूर (सल्ल.) के साथ जा रहा था कि आपने फ़र्माया कि मैं एक ऐसी आयत जानता हूँ जो मुझसे पहले सुलेमान और दाऊद (अलै.) के बाद किसी नबी पर नहीं उतरी, मैंने कहा हुज़ूर (सल्ल.)! वह कौनसी आयत है? आपने फ़र्माया, मस्जिद से निकलने से पहले ही मैं तुझे बता दूँगा अब आप निकलने लगे, एक पैर मस्जिद से बाहर रख भी दिया, मेरे जी में आई कि शायद आप भूल गए। इतने में आप (सल्ल.) ने यही आयत पढ़ी। (सनद ज़ईफ़ इसकी सनद में अब्दुल करीम में अबिल मख़ारिक़ मशहूर ज़ईफ़ रावी है।) और रिवायत में है कि जब तक यह आयत नहीं उतरी थी हुज़ूरे अकरम (सल्ल.) (बिस्मिकल्लाहुम्म) लिखा करते थे। जब यह आयत उतरी आप (सल्ल.) ने बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम लिखना शुरू किया। मज़्मूने ख़त सिर्फ़ इसी क़द्र था कि मेरे सामने सरकशी न करो, मुझे मजबूर न करो, मेरी बात मान लो, तकब्बुर से काम न लो, मुख़्लिस, मुतीअ बनकर मेरे पास चले आओ। (तब्री : 19/453)

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿۳۲﴾ قَالُوْا
نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿۳۳﴾ قَالَتْ
اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ
﴿۳۴﴾ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۳۵﴾

तर्जुमा : "उसने कहा, ऐ मेरे सरदारो! तुम मेरे इस मामले में मुझे मश्वरा दो। मैं किसी अम्र का क़तई फ़ैसला जब तक तुम्हारी मौजूदगी और राय न हो, नहीं किया करती। (32) उन सबने जवाब दिया कि हम ताक़त और क़ुव्वत वाले सख़्त लड़ने भिड़ने वाले हैं, आगे आपको इख़्तियार है आप ख़ुद ही सोच लीजिए कि हमें आप क्या हुक्म देती हैं। (33) उसने कहा कि बादशाह जब किसी बस्ती में घुसते हैं तो उसे उजाड़ देते हैं और वहाँ के इज़्ज़तदार लोगों को ज़लील कर देते हैं। वाक़ेई वह इसी तरह करते थे। (34) मैं उन्हें एक हदिया भेजने वाली हूँ फिर देख लूँगी कि क़ासिद क्या जवाब लेकर लौटते हैं?" (35)

बिलक़ीस का दरबारियों से मश्वरा करना (आ. 32 से 35) : बिलक़ीस ने हज़रत सुलेमान (عليه السلام) का ख़त उन्हें सुनाकर उनसे मश्वरा चाहा और कहा कि तुम लोग जानते हो जब तक तुमसे मैं मश्वरा न कर लूँ और तुम मौजूद न हो तो मैं किसी अम्र का फ़ैसला अकेले नहीं कर लेती, इस बारे में भी तुमसे मश्वरा चाहती हूँ बतलाओ क्या राय है? सबने एक आवाज़ होकर जवाब दिया, कहा हमारी जंगी ताक़त बहुत कुछ है और हमारी ताक़त मुसल्लम है। इस तरफ़ से तो इत्मिनान है आगे जो आपका हुक्म हो हम ताबेदारी के लिए मौजूद हैं। उसमें एक हद तक सरदाराने लश्कर ने लड़ाई की तरफ़ और मुक़ाबले की तरफ़ रग़बत दी थी लेकिन बिलक़ीस चूँकि समझदार आक़िबत अंदेश थी और हुदहुद के हाथों ख़त के मिलने का एक खुला मोजिज़ा देख चुकी थी यह भी मालूम कर लिया था कि हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की ताक़त के मुक़ाबले में मेरा लाव लश्कर कोई हक़ीक़त नहीं रखता। अगर लड़ाई की नौबत आई तो मुल्क की बर्बादी के अलावा मैं भी सलामत न रह सकूँगी इसलिए उसने अपने वज़ीरों और मुशीरों से कहा, बादशाहों का क़ायदा है कि जब वह किसी मुल्क को फ़तह करते हैं तो उसे बर्बाद कर देते हैं। वहाँ की इज़्ज़तदार लोगों को ज़लील कर देते हैं, सरदाराने लश्कर शाहे शहर ख़ुसूसियत से उनकी नज़रों में चढ़ जाते हैं। जनाब बारी तआला ने मुझे इसकी तस्दीक़ फ़र्माई कि वाक़ेई यह सही है वह ऐसा ही किया करते थे उसके बाद उसने जो तर्कीब सोची थी कि एक चाल चले और हज़रत सुलेमान (عليه السلام) से मुवाफ़िक़त करके सुलह कर ले, वह उसने उनके सामने पेश की, कहा कि इस वक़्त तो मैं एक गिराँ बहा तोहफ़े उन्हें भेजती हूँ कि उसके बाद मेरे क़ासिदों से वह क्या कहते हैं? बहुत मुम्किन है कि वह उसे क़बूल कर लें और हम आइन्दा भी उन्हें यह रक़म बतौर जिज़्या (टेक्स) भेजते रहें और उन्हें हम पर

चढ़ाई करने की ज़रूरत न पड़े। इस्लाम की क़बूलियत में इसी तरह उस हदिये के भेजने में उसने निहायत दानाई से काम लिया। वह जानती थी कि रुपया पैसा वह चीज़ है कि फ़ौलाद को भी नर्म कर देता है, नीज़ उसे यह भी आज़माना था कि देखें! वह हमारे इस माल को भी क़बूल करते हैं या नहीं? अगर क़बूल कर लिया तो वह एक बादशाह हैं फिर उनसे मुक़ाबला करने की कोई ज़रूरत नहीं और अगर वापिस कर दिया तो नबुव्वत में शक नहीं फिर मुक़ाबला सरासर बेकार बल्कि मुज़िर (नुक़्सानदेह) है। (तब्री : 19/455)

***

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَآ اٰتٰنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : "जब क़ासिद सुलेमान (عليه السلام) के पास पहुँचा तो आपने फ़र्माया, क्या तुम माल से मुझे थपक देना चाहते हो? मुझे तो मेरे रब ने इससे बहुत बेहतर दे रखा है जो उसने तुम्हें दिया है, पस तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश रहो। (36) जा उनकी तरफ़ वापिस लौट जा हम उनके मुक़ाबले में लश्कर लाएँगे जिनके सामने पड़ने की उनमें ताक़त नहीं और हम उन्हें ज़लील व पस्त करके वहाँ से निकाल बाहर करेंगे।" (37)

सुलेमान (عليه السلام) का तोहफ़ा क़बूल करने से इंकार (आ. 36, 37) : बिलक़ीस ने बहुत ही गिराँ क़द्र तोहफ़ा हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के पास भेजा, सोना, मोती, जवाहिर वग़ैरह सोने की कसीर मिक़्दार ईंटें, सोने के बर्तन वग़ैरह। कुछ कहते हैं कुछ बच्चे औरतों के लिबास में और कुछ औरतें लड़कियों के लिबास में भेजीं और कहा, अगर उन्हें वह पहचान ले तो उसे नबी मान लेना चाहिए जब यह हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के पास पहुँचे तो आपने सबको वुज़ू करने का हुक्म दिया, लड़कियों ने तो बरतन से पानी बहाकर अपने हाथ धोये और लड़कों ने बर्तन में ही हाथ डालकर पानी लिया, इससे आपने दोनों को पहचानकर अलग अलग कर दिया कि यह लड़कियाँ हैं और यह लड़के हैं। कुछ कहते हैं कि इस तरह पहचाना कि लड़कियों ने तो पहले अपने हाथ के अंदरूनी हिस्से को धोया और लड़कों ने उनके बरख़िलाफ़ बाहरी हिस्से को पहले धोया। यह भी मरवी है कि उनमें से एक जमाअत ने तो कोहनी से हाथ धोना शुरू किया और उँगलियों तक धोयीं और एक जमाअत उसके बरख़िलाफ़ हाथ की उँगलियों से शुरू करके कोहनी तक ले गई, उनमें से किसी में मुनाफ़ात नहीं, वल्लाहु आलम! यह भी ज़िक्र है कि बिलक़ीस ने एक बर्तन भेजा था कि उसे ऐसे पानी से भर दो जो न ज़मीन का हो न आसमान का तो आपने घोड़े दौड़ाये और उनके पसीनों से वह बर्तन भर दिया। उसने कुछ ख़ुर मोहरे और एक लड़ी भेजी थी आपने उन्हें लड़ी में पिरो दिया। यह सब क़ौल उमूमन बनी इस्राईल की रिवायतों से लिये जाते

हैं। अब अल्लाह तआ़ला ही को इल्म है कि उनमें वाक़ेई में कौनसा हुआ या कुछ भी नहीं हुआ? अल्बत्ता बज़ाहिर तो क़ुरआनी अल्फ़ाज़ से मालूम होता है कि आपने उस रानी के तोह़फ़े की त़रफ़ बिलकुल ध्यान न दिया और उसे देखते ही फ़र्माया कि क्या तुम मुझे माली रिश्वत देकर शिर्क पर बाक़ी रहना चाहते हो? यह नामुम्किन है मुझे रब ने बहुत कुछ दे रखा है मुल्क माल लाव लश्कर सब मेरे पास मौजूद है। तुमसे हर त़रह़ बेहतर ह़ालात में हूँ, फ़ल्ह़म्दु लिल्लाह! तुम ही अपने इस हदिये से ख़ुश रहो यह काम तुम ही को सौंपा कि माल से राज़ी हो जाओ और तोह़फ़ा तुम्हें झुका दे, यहाँ तो दो ही चीज़ेंहैं या शिर्क छोड़ दो या तलवार रोको। यह भी कहा गया है कि उसके क़ासिद पहुँचे उससे पहले ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने जिन्नात को हुक्म दिया और उन्होंने एक हज़ार मह़ल तैयार करा दिये। जिस वक़्त क़ासिद पाये तख़्त में पहुँचे, उन मह़ल्लात को देखकर होश जाते रहे और कहने लगे, यह बादशाह तो हमारे इस तोह़फ़े को अपनी ह़क़ारत समझेगा यहाँ तो सोना मिट्टी की वक़्अत भी नहीं रखता। इससे भी यह साबित हुआ कि बादशाहों को यह जाइज़ है कि बैरूनी लोगों के कुछ तकल्लुफ़ात करे और क़ासिदों के सामने अपनी ज़ीनत का इज़्हार करे। फिर आपने क़ासिदों से फ़र्माया कि यह हदिये उन्हीं को वापिस करो और उनसे कह दो कि मुक़ाबले की तैयारी कर लें। याद रखो मैं वह लश्कर लेकर चढ़ाई करूँगा कि वह सामने आ ही नहीं सकते, उन्हें हमसे जंग करने की त़ाक़त ही नहीं। हम उन्हें उनकी सल्त़नत से कुछ ही लम्हों में ज़िल्लत व ह़क़ारत के साथ निकाल देंगे, उनके तख़्तो ताज को रौंदेंगे। जब क़ासिद उसके तोह़फ़े वापिस लेकर पहुँचे और शाही पैग़ाम भी सुना दिया। बिलक़ीस को आपकी नबुव्वत का यक़ीन हो गया और ख़ुद भी और तमाम लश्कर और रिआया मुसलमान हुए और अपने लश्करों समेत वह ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए जब आपने उसका यह क़स्द मालूम किया तो बहुत ख़ुश हुए और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया।

***

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۞٣٨ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ
الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ۞٣٩ قَالَ
الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ
مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا
يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ۞٤٠

तर्जुमा : ''आपने फ़र्माया ऐ सरदारों! तुममें से कोई है जो उनके मुसलमान होकर मेरे पास पहुँचने से पहले ही उसका तख़्त मुझे ला दे? (38) एक सरकश जिन्न कहने लगा आप अपनी इस मज्लिस से उठें उससे पहले पहल मैं उसे आपके पास ला देता हूँ, यक़ीन मानिये कि मैं इस पर क़ादिर हूँ और हूँ भी अमानतदार। (39) जिसके पास किताब का इल्म था वह बोल उठा कि आप पलक झपकाएँ उससे भी पहले मैं उसे आपके पास पहुँचा सकता हूँ, जब आपने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे यही मेरे रब का फ़ज़्ल है ताकि वह मुझे आज़मा ले कि मैं शुक्रगुज़ारी करता हूँ या नाशुक्री, शुक्रगुज़ार अपने ही नफ़्स के लिए शुक्रगुज़ारी करता है, और नाशुक्री करे तो मेरा परवरदिगार बेपरवाह और बुज़ुर्ग है, ग़नी और करीम है।'' (40)

क़ुदरते इलाही और तख़्ते बिलक़ीस (आ. 38 से 40) : जब क़ासिद वापिस पहुँचता है और बिलक़ीस को दोबारा पैग़ामे नबुव्वत पहुँचता है तो वह समझ जाती है और कहती, अल्लाह की क़सम! यह सच्चे पैग़म्बर हैं और पैग़म्बर का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। उसी वक़्त दोबारा क़ासिद भेजा कि मैं अपनी क़ौम के सरदारों समेत हाज़िरे ख़िदमत होती हूँ ताकि ख़ुद आपसे मिलकर मालूमाते दीन हासिल करूँ और आपसे अपनी तशफ़्फ़ी कर लूँ। यह कहलवाकर यहाँ अपना नाइब एक को बनाया। सल्तनत के इंतिज़ामात उसके सुपुर्द कर दिये। अपना लाजवाब बेशक़ीमती जड़ाव तख़्त जो सोने का था सात महलों में मुक़्फ़ल किया और अपने ख़लीफ़ा को उसकी हिफ़ाज़त की ख़ास़ ताकीद की और बारह हज़ार सरदार जिनमें से हर एक की मातहती में हज़ारों आदमी थे अपने साथ लिए और मुल्के सुलेमान (عليه السلام) की तरफ़ चल दी। जिन्नात क़दम क़दम और पल पल की ख़बरें आपको पहुँचाते रहते थे। जब आपको मालूम हो गया कि वह क़रीब पहुँच चुकी है तो आपने अपने एक दरबार में जिसमें जिन्न व इंस सब मौजूद थे फ़र्माया कि कोई है जो उसके तख़्त को उसके पहुँचने से पहले यहाँ पहुँचा दे? (तब्री : 19/520) क्यों कि जब वह यहाँ आ जाएगी और इस्लाम में दाख़िल हो जाएगी फिर उसका माल हम पर हराम हो जाएगा। (यह क़ौल क़तादा रह. का है बहुत मुम्किन है कि इसकी अस़ल भी कोई इस्राईली रिवायत हो) यह सुनकर एक ताक़तवर सरकश जिन्न जिसका नाम कौज़िन था जो मिस्ल एक बड़े पहाड़ के था बोल पड़ा कि अगर आप मुझे हुक्म दें तो आप दरबार बरख़्वास्त करें उससे पहले मैं ला देता हूँ। आप लोगों के फ़ैसले करने और झगड़े निपटाने और इंसाफ़ देने को सुबह से दोपहर तक दरबारे आम में तशरीफ़ रखा करते थे। उसने कहा मैं उस तख़्त के उठा लाने की ताक़त रखता हूँ और हूँ भी अमानतदार, उसमें से कोई चीज़ चुराऊँगा नहीं। हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने फ़र्माया, मैं चाहता हूँ कि उससे भी पहले मेरे पास वह पहुँच जाए। इससे मालूम होता है कि अल्लाह के नबी हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की उस तख़्त को मंगवाने से ग़र्ज़ यह थी कि उसे अपने एक ज़बरदस्त मोजिज़े का और पूरी ताक़त का सबूत बिलक़ीस को दिखाएँ कि उसके तख़्त जिसे उसने सात मुक़्फ़ल मकानों में रखा था वह उसके आने से पहले दरबारे सुलेमानी में मौजूद है (वह ग़र्ज़ न थी जो ऊपर बरिवायत क़तादा रह. बयान हुई) हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के इस जल्दी के तक़ाज़े को सुनकर जिसके पास किताबी इल्म था वह बोला।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि ''यह आसिफ़ थे जो हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के कातिब थे,

उनके बाप का नाम बरख़िया था यह वलीउल्लाह थे इस्मे आज़म जानते थे, पक्के मुसलमान थे, बनी इस्राईल में से थे।'' मुजाहिद (रह़.) कहते हैं कि ''उनका नाम इस्तूम था।'' बलीख़ भी मरवी है उनका लक़ब जुन्नूर था।

अ़ब्दुल्लाह बिन लहीआ (रह़.) का क़ौल है कि यह ख़िज़्र (ﷺ) थे, यह क़ौल बहुत ग़रीब है। इन्होंने कहा कि आप अपनी निगाह दौड़ाइए जहाँ तक पहुँचे, नज़र कीजिए अभी आप देख ही रहे होंगे कि मैं तख़्त ला दूँगा। पस ह़ज़रत सुलेमान (ﷺ) ने यमन की त़रफ़ जहाँ उसका तख़्त था नज़र की उधर यह खड़े होकर वुज़ू करके दुआ में मशग़ूल हुए और कहा, या ज़ल जलालि वल इकराम (त़ब्री : 19/466) या फ़र्माया (या इलाहना व इलाहा कुल्लि शैइन इलाहंव्वाह़िदन ला इलाहा इल्ला अन्त इअतिनी बि अ़र्शिहा) उसी वक़्त तख़्ते बिलक़ीस सामने आ गया। इतनी ज़रा सी देर में यमन से बैतुल मक़्दिस में वह तख़्त पहुँच गया और लश्करे सुलेमान के देखते हुए ज़मीन में से निकल आया। जब सुलेमान (ﷺ) ने उसे अपने सामने मौजूद देख लिया तो फ़र्माया, यह सिर्फ़ मेरे रब का फ़ज़्ल है कि वह मुझे आज़मा ले कि मैं शुक्रगुज़ारी करता हूँ या नाशुक्री? जो शुक्र करे वह अपना ही नफ़ा करता है और जो नाशुक्री करे वह अपना ही नुक़्सान करता है। अल्लाह तआला बन्दों की बन्दगी से बेनियाज़ है और ख़ुद बन्दों से भी उसकी अ़ज़्मत किसी की मोह़ताज नहीं। जैसे फ़र्मान है (مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ) (45/जासिया : 15) जो नेक अ़मल करता है वह अपने लिए और जो बुराई करता हो वह अपने लिए। और जगह है जो नेकी करता है वह अपने ही लिए अच्छाई जमा करते हैं। ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था, तुम और रूए ज़मीन के सब इंसान भी अगर अल्लाह तआला से कुफ़्र करने लगो तो अल्लाह तआला का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, वह ग़नी है और ह़मीद है। स़ह़ीह़ मुस्लिम में है कि ''अल्लाह तआला फ़र्माता है ऐ मेरे बन्दों! अगर तुम्हारे सब अगले पिछले इंसान जिन्नात बेहतर से बेहतर और नेक बख़्त हो जाएँ तो मेरा मुल्क बढ़ नहीं जाएगा। और अगर सबके सब बदबख़्त हो जाएँ तो मेरा मुल्क घट नहीं जाएगा। यह तो सिर्फ़ तुम्हारे आमाल हैं जो जमा होंगे और तुमको ही मिलेंगे जो भलाई देखे तो अल्लाह तआला का शुक्र करे और जो बुराई देखे तो सिर्फ़ अपने नफ़्स को ही मलामत करे।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब तह़रीमुज़ुल्म : 2577; तिर्मिज़ी : 2495; इब्ने माजा : 4257; अह़मद : 5/160; अल्अदबुल मुफ़रद : 490)

***

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا
جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا
مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ
﴿٤٣﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۭ قَالَ اِنَّهٗ

صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۴﴾

तर्जुमा : ''हुक्म दिया कि उसके तख़्त में कुछ फेरबदल कर दो ताकि मालूम हो जाए कि यह राह पा लेती है या उनमें से होती है जो राह नहीं पाते। (41) फिर जब वह आ गई तो उससे पूछा गया कि ऐसा ही तेरा भी तख़्त है? उसने जवाब दिया कि यह गोया वही है हमें इससे पहले ही इल्म दिया गया और हम मुसलमान थे। (42) उसे उन्होंने रोक रखा था जिनकी वह अल्लाह के सिवा पूजा करती रही थीं यक़ीनन वह काफ़िर लोगों में से थी। (43) उससे कहा गया कि महल में चली चलो जिसे देखकर यह समझकर कि यह हौज़ है उसने अपनी पिण्डलियाँ खोल दीं, फ़र्माया यह तो शीशे से मँढी हुई इमारत है। कहने लगी, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, अब मैं सुलेमान (عليه السلام) के साथ अल्लाह तआला से मुतीअ और फ़र्मांबरदार बनती हूँ।'' (44)

बिल्क़ीस का सुलेमान (عليه السلام) की ख़िदमत में हाज़िर होकर ईमान लाना (आ. 41 से 44) : उस तख़्त के आ जाने के बाद हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने हुक्म दिया कि इसमें क़द्रे तग़य्युर व तबद्दुल कर डालो। पस कुछ हीरे जवाहिर बदल दिये गए। रंग रोग़न में तब्दीली कर दी गई। (तब्री : 19/469, 471) नीचे ऊपर से भी कुछ बदल दिया गया, कुछ कमी ज़्यादती भी कर दी गयी ताकि बिल्क़ीस की आज़माइश करें कि वह अपने तख़्त को पहचान लेती है या नहीं पहचान सकती? जब वह पहुँची तो उससे कहा गया कि क्या तेरा तख़्त यही है? उसने जवाब दिया कि हू ब हू इसी जैसा है। इस जवाब से उसकी दूरबीनी, अक़्लमंदी, दानाई ज़ाहिर है कि दोनों पहलू सामने रखा देखा कि तख़्त बिलकुल मेरे तख़्त जैसा है और बज़ाहिर उसका यहाँ पहुँचना नामुम्किन है तो ऐसी पेच की बात कही। हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने फ़र्माया, इससे पहले ही हमें इल्म दिया गया था और हम मुसलमान थे, बिल्क़ीस को अल्लाह तआला के सिवा औरों की इबादत ने और उसके कुफ़्र ने तौहीदे अल्लाह तआला से रोक दिया था और यह भी हो सकता है कि हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने बिल्क़ीस को ग़ैरुल्लाह की इबादत से रोक दिया इससे पहले काफ़िरों में से थी। लेकिन पहले क़ौल की ताईद इससे भी हो सकती है कि मलिका ने इस्लाम क़बूल करने का ऐलान महल में दाख़िल होने के बाद किया है। जैसे अन्क़रीब बयान होगा। हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने जिन्नात के हाथों एक महल बनवाया था जो सिर्फ़ शीशे और काँच का था और उसके नीचे पानी से लबालब हौज़ था, शीशा बहुत ही साफ़ शफ़्फ़ाफ़ था। आने वाला शीशे का इम्तियाज़ नहीं कर सकता था बल्कि उसे मालूम होता था कि पानी ही पानी है। हालाँकि उसके ऊपर शीशे का फ़र्श था। कुछ लोगों का बयान है कि इस सन्अत (कारीगरी) से ग़र्ज़ सुलेमान (عليه السلام) की यह थी कि आप उससे निकाह करना चाहते थे लेकिन यह सुना था कि उसकी पिण्डलियाँ बहुत ख़राब हैं और उसके टख़्ने चौपायों के खुरों की तरह है। उसकी तहक़ीक़ के लिए आपने ऐसा किया था जब वह यहाँ आने लगी तो पानी

के हौज़ को देखकर अपने पाइंचे उठाये। आपने देख लिया कि जो बात मुझे पहुँचाई गई है, ग़लत है। उसकी पिण्डलियाँ और पैर बिलकुल इंसानों जैसे ही हैं, कोई नई बात या बदसूरती नहीं। हाँ! चूँकि कुँवारी थी, पिण्डलियों पर बाल बड़े बड़े थे। आपने उस्तरे से मुँडवा डालने का मश्वरा दिया लेकिन उसने कहा, उसकी बर्दाश्त मुझसे न हो सकेगी। आपने जिन्नों से कहा कोई चीज़ बनाओ जिनसे यह बाल जाते रहें। पस उन्होंने हुड़ताल पेश की यह दवा सबसे पहले हज़रत सुलेमान (ﷺ) के हुक्म से ही तलाश की गई। महल में बुलाने की वजह यह थी कि वह अपने मुल्क से अपने दरबार से अपनी रौनक़ से, अपने साज़ोसामान से, अपने लुत्फ़ो ऐश से और ख़ुद अपने से बड़ी हस्ती देख ले और अपना जाह व हश्म नज़रों से गिर जाए जिसके साथ ही तकब्बुर का ख़ात्मा भी यक़ीनी था। जब अंदर आने लगी और हौज़ के हद पर पहुँची तो उसे लहलहाता हुआ दरिया समझकर पाइंचे उठा लिये। उसी वक़्त कहा गया कि आपको ग़लती लगी यह तो शीशा मँढा हुआ है। आप इसी के ऊपर से बग़ैर क़दम तर किये आ सकती हैं। हज़रत सुलेमान (ﷺ) के पास पहुँचते ही उसके कान में आपने सदाये तौहीद डाली और सूरज परस्ती की मज़म्मत बयान की। उस महल को देखते ही इस हक़ीक़त पर नज़र डालते ही दरबार के ठाठ देखते ही इतना तो समझ गई कि मेरा मुल्क तो इसके पासंग भी नहीं। नीचे पानी है ऊपर शीशा है बीच में तख़्ते सुलेमानी है, ऊपर से परिन्दों का साया है, जिन्न व इंसान सब हाज़िर हैं, और ताबेअ फ़र्मान जब उसे तौहीद की दावत दी गई तो बेदीनों की तरह उसने भी ज़िन्दीक़ाना जवाब दिया, जिससे अल्लाह तआला की जनाब में गुस्ताख़ी लाज़िम आती थी, उसे सुनते ही सुलेमान (ﷺ) अल्लाह तआला के सामने सज्दे में गिर पड़े और आपको देखकर आपका सारा लश्कर भी अब तो वह बहुत ही नादिम हुई, इधर से हज़रत ने डाँटा कि क्या कह दिया? उसने कहा, मुझसे ग़लती हुई और उसी वक़्त रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आई, चुनाँचे सच्चे दिल से मुसलमान हो गई।

इब्ने अबी शैबा में यहाँ पर एक ग़रीब असर इब्ने अब्बास (रज़ि.) से वारिद किया है कि आप फ़र्माते हैं कि हज़रत सुलेमान (ﷺ) जब तख़्त पर मुतमक्किन होते तो उनके पास कुर्सियों पर इंसान बैठते फिर उसके पास वाली कुर्सियों पर जिन्न बैठते फिर उनके बाद शैतान बैठते फिर हवा उस तख़्त को ले उड़ती और मुअल्लक़ थमा देती फिर परिन्द आकर अपने परों से साया कर लेते फिर आप हवा को हुक्म देते और वह परवाज़ करके सुबह सुबह महीने भर के फ़ासले पर पहुँचा देती, इस तरह शाम को महीने भर की दूरी तै होती।

एक बार इसी तरह आप जा रहे थे परिन्दों की देखभाल जो की तो हुदहुद को ग़ायब पाया, बड़े नाराज़ हुए और फ़र्माया गया वह झमघट में मुझे नज़र नहीं पड़ा या सचमुच ग़ैर हाज़िर है, अगर सचमुच ग़ैर हाज़िर है तो मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा बल्कि ज़िब्ह करूँगा। हाँ! यह और बात है कि वह ग़ैर हाज़िर होने की कोई मा'क़ूल वजह बयान कर दे ऐसे मौक़े पर परिन्दों के पर चुनवाकर आप ज़मीन पर डलवा देते थे, कीड़े मकोड़े खा जाते थे। उसके बाद थोड़ी ही देर में ख़ुद हाज़िर होता है अपना सबा जाना और वहाँ की ख़बर लाना बयान करता है। अपनी मालूमात की तफ़्सील से आगाह करता है। हज़रत सुलेमान (ﷺ) उसकी सच्चाई के इम्तिहान के लिए उसे मलिका सबा के नाम एक चिट्ठी देकर दोबारा भेजते हैं जिसमें मलिका को हिदायत होती है कि मेरी नाफ़र्मानी न करो और मुसलमान होकर मेरे पास आ जाओ। उस ख़त को देखते ही मलिका के दिल में उस ख़त

की और उसके लिखने वाले की इज़्ज़त समा जाती है वह अपने दरबारियों से मश्वरा करती है, वह अपनी कुव्वत पर घमण्ड करके कह देते हैं कि हम तैयार हैं, सिर्फ़ इशारे की देर है लेकिन यह बुरे वक़्त को और अपनी शिकस्त के अंजाम को ख़्याल करके इस इरादे से बाज़ रहती है और दोस्ती का सिलसिला इस तरह शुरू करती है कि तोह्फ़े और हदिये हज़रत सुलेमान (ﷺ) के पास भेजती है जिसे सुलेमान (ﷺ) वापिस कर देते हैं, और चढ़ाई की धमकी देते हैं। अब यह अपने यहाँ से निकलती है जब क़रीब पहुँच जाती है और उसके लश्कर की गर्द सुलेमान (ﷺ) देख लेते हैं तब फ़र्माते हैं कि उसका तख़्त उठा लाओ, एक जिन्न कहता है बेहतर मैं अभी लाता हूँ आप यहाँ से उठें उससे पहले ही पहले उसे देख लीजिएगा। आपने फ़र्माया, इससे जल्द मुम्किन है? उस पर यह तो ख़ामोश हो गया लेकिन किताब के इल्म वाले ने कहा,, अभी एक आँख झपकते ही, इतने में देखा कि जिस कुर्सी पर पैर रखकर हज़रत सुलेमान (ﷺ) तख़्ते शाही पर चढ़े थे उसी के नीचे से बिल्क़ीस का तख़्त नुमायाँ हुआ। आपने अल्लाह का शुक्र अदा किया, लोगों को नसीहत की और उसमें कुछ हेर फेर करने का हुक्म दिया, उसके आते ही उससे उस तख़्त की बाबत पूछा तो उसने कहा गोया वही है। उसने हज़रत सुलेमान (ﷺ) से दो चीज़ें माँगी एक तो ऐसा पानी जो न ज़मीन से निकला हो न आसमान से बरसा हो, आपकी आदत थी कि जब कुछ पूछने की ज़रूरत पड़ती तो पहले इंसानों से पूछते फिर जिन्नों से फिर शयातीन से। उस सवाल के जवाब में शैतानों ने कहा कि यह कोई मुश्किल चीज़ नहीं, घोड़े दौड़ाइये और उनके पसीने से उसे प्याला भर दीजिए, इस सवाल के पूरा होने के बाद उसने दूसरा सवाल किया कि अल्लाह तआला का रंग कैसा है? उसे सुनकर आप खड़े हो गये और उसी वक़्त सज्दे में गिर गए और अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि बारी तआला! इसने ऐसा सवाल किया कि मैं तो इसे तुझसे दरयाफ़्त भी नहीं कर सकता, अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिला कि बेफ़िक्र हो जाओ मैंने किफ़ायत कर दी, आप सज्दे से उठे और फ़र्माया, तूने क्या पूछा था? उसने कहा, पानी के बारे में। मेरा सवाल था जो आपने पूरा किया और तो मैंने नहीं पूछा, यह ख़ुद और उसके सारे लश्करी और दूसरे सवाल को ही भूल गये। आपने लश्करियों से भी पूछा कि उसने दूसरा सवाल क्या किया था? तो सबने यही जवाब दिया कि सिवाय पानी के उसने और कोई दूसरा सवाल नहीं किया। शैतानों के दिल में ख़्याल आया कि अगर सुलेमान (ﷺ) ने उसे पसंद कर लिया और उसे अपने निकाह में ले लिया और औलाद भी हो गई तो यह हमसे हमेशा के लिए गए इसलिए उन्होंने हौज़ बनाया पानी से पुर किया। और ऊपर से बलूर का फ़र्श बना दिया, इस सिफ़त से कि देखने वाले को वह मालूम ही न हो वह तो पानी ही समझे जब बिल्क़ीस दरबार में आई और वहाँ से गुज़रना चाहा तो पानी जानकर अपने पाइंचे उठा लिये। हज़रत सुलेमान (ﷺ) ने पिण्डलियों के बाल देखकर नापसंदीदगी का इज़्हार किया लेकिन साथ ही फ़र्माया कि उसे ज़ाइल करने की कोशिश करो तो कहा गया कि उस्तरे से मूँड सकते हैं। आपने फ़र्माया, उसका निशान मुझे नापसंद है और कोई तर्कीब बताओ पस शयातीन ने तला बना दिया जिसके लगाते ही बाल उड़ गए। पस पहले पहल बाल सफ़ा तला हज़रत सुलेमान (ﷺ) के हुक्म से ही तैयार हुआ है। इमाम इब्ने अबी शैबा (रह.) ने इस क़िस्से को नक़्ल करके लिखा है यह कितना अच्छा क़िस्सा है लेकिन मैं कहता हूँ बिलकुल मुंकर और सख़्त ग़रीब है। यह अता बिन साइब का वहम है जो उसने इब्ने अब्बास (रज़ि.) के नाम से बयान कर दिया है। और ज़्यादा क़रीने क़यास अम्र यह है कि यह बनी इस्राईल के दफ़ातिर से लिया गया है जो

मुसलमानों में कअ़ब और वहब ने राइज कर दिया था, अल्लाह तआ़ला उनसे दरगुज़र करे पस इन क़िस्सों का कोई ऐतिमाद नहीं। बनी इस्राईल तो जिद्दत पसंद और जिद्दत तराज़ थे, बदल लेना, गढ़ लेना, कमी ज़्यादती कर लेना उनकी आ़दत में दाख़िल था। अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि हमें उसने उनका मोह्ताज नहीं रखा, हमें वह किताब दी और अपने नबी (ﷺ) की जुबानी वह बातें पहुँचाई जो नफ़ा में वज़ाहत में बयान में उनकी बातों से बहुत आ़ला और अरफ़अ़ हैं, साथ ही बहुत ही मुफ़ीद और निहायत एह्तियात वाली, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! सरह कहते हैं महल को और हर बुलंद ऊँची इमारत को। चुनाँचे फ़िरऔन मलऊन ने भी अपने वज़ीर हामान से यही कहा था (يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا) (40/मोमिन : 36) यमन के एक ख़ास मुम्ताज़ और बुलंद महल का नाम भी सरहा था। इससे मुराद वह इमारत है जो मुह्कम मज़बूत इस्तिवार और क़वी हो। बलूर और साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शीशे से बनाई गई थी। दुमतुल जंदल मे एक क़िला है उसका नाम भी मारिद है। मक़्सद सिर्फ़ इतना है कि जब उस मलिका ने हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की यह रिफ़अ़त यह अ़ज़्मत यह शौकत, यह सल्तनत देखी और उसमें ग़ौरो फ़िक्र के साथ ही हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की सीरत उनकी नेकी और उनकी दावत सुनी तो यक़ीन आ गया कि आप अल्लाह तआ़ला के सच्चे रसूल हैं। उसी वक़्त मुसलमान हो गई, अपने अगले शिर्क व कुफ़्र से तौबा कर ली और दीने सुलेमान (عليه السلام) की मुतीअ़ बन गई, अल्लाह तआ़ला की इबादत करने लगी, जो ख़ालिक़ मालिक मुतसर्रिफ़ और मुख़्तार कुल है।

***

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ
﴿٤٥﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ قَالَ طٰۗىِٕرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह (عليه السلام) को भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, फिर भी वह दो फ़रीक़ बनकर आपस में लड़ने झगड़ने लगे। (45) आपने फ़र्माया कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! तुम नेकी से पहले बुराई की जल्दी क्यूँ मचा रहे हो? तुम अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार क्यूँ नहीं करते? ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46) वह कहने लगे, हम तो तेरी और तेरे साथियों की बदशगूनी ले रहे हैं। आपने फ़र्माया, तुम्हारी बदशगूनी अल्लाह तआ़ला के यहाँ है बल्कि तुम तो फ़ित्ने में पड़े हुए लोग हो।" (47)

सालेह (عليه السلام) का क़िस्सा (आ. 45 से 47) : हज़रत सालेह (عليه السلام) जब अपनी क़ौम समूद के पास

आए और अल्लाह तआला की रिसालत अदा करते हुए उन्हें तौहीद की दावत दी तो उनमें दो फ़रीक़ बन गए, एक जमाअत मोमिनों की दूसरा गिरोह काफ़िरों का। (तब्री : 19/475) यह आपस में गुत्थ गए। जैसे और जगह है कि मुतकब्बिरों ने आजिज़ों से कहा कि क्या तुम सालेह (عليه السلام) को रसूलुल्लाह मानते हो? उन्होंने जवाब दिया कि हम खुल्लम खुल्ला ईमान ला चुके हैं। उन्होंने कहा, बस तो हम ऐसे ही खुल्लम खुल्ला काफ़िर हैं। आपने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि तुम्हें क्या हो गया है कि बजाय रहमत तलब करने के और अज़ाब माँग रहे हो? तुम इस्तिग़फ़ार करो ताकि नुज़ूले रहमत हो, उन्होंने कहा कि हमारा तो यक़ीन है कि हमारी तमाम मुसीबतों की वजह तू है और तेरे यह मानने वाले। यही फ़िरओनियों ने कलीमुल्लाह मूसा (عليه السلام) से कहा था कि जो भलाइयाँ हमें मिलती हैं उनके लायक़ तो हम हैं ही लेकिन जो बुराइयाँ पहुँचती हैं, वह सब तेरी और तेरे साथियों की वजह से हैं और आयत में है (وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ) (4/निसाअ : 78) यानी अगर उन्हें कोई भलाई मिल जाती है तो कहते हैं यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है और अगर इन्हें कोई बुराई पहुँच जाती है तो कहते हैं यह तेरी जानिब से है, तू कह दे कि सब कुछ अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है, यानी अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़द्र से है। सूरह यासीन में भी कुफ़्फ़ार का अपने नबियों को यही कहना मौजूद है। (قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ)(36/यासीन : 18) हम तो आपसे बदशगूनी लेते हैं। अगर तुम लोग बाज़ न आये तो हम तो तुम्हें संगसार कर देंगे और सख़्त सज़ा देंगे। नबियों ने जवाब दिया कि तुम्हारी बदशगूनी तो हर वक़्त तुम्हारे वुजूद में मौजूद है। यहाँ है कि हज़रत सालेह (عليه السلام) ने जवाब दिया कि तुम्हारी बदशगूनी तो अल्लाह तआला के पास है यानी वही तुम्हें इसका बदला देगा। बल्कि तुम तो फ़ित्ने में डाले हुए लोग हो, तुम्हें आज़माया जा रहा है, ताअत से भी और मअसियत से भी। और बावजूद तुम्हारी मअसियत के तुम्हें ढील दी जा रही है। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मोहलत है उसके बाद पकड़े जाओगे।

***

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا
تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا
لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾

तर्जुमा : "उस शहर में नौ सरदार थे जो ज़मीन में फ़साद फैलाते रहते थे और इस्लाह नहीं करते थे। (48) उन्होंने आपस में बड़ी क़समें खा खाकर अहद किया कि रात ही को सालेह (عليه السلام) और उसके घरवालों पर हम छापा मारेंगे और उसके वारिसों से साफ़ कह देंगे कि हम इसके अहल की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे और हम बिलकुल सच्चे हैं। (49) उन्होंने मकर किया और हमने भी और वह उसे समझते ही न थे। (50) अब देख ले कि उनके मकर का अंजाम कैसा कुछ हुआ? कि हमने उनको और उनकी क़ौम को सबको ग़ारत कर दिया। (51) यह हैं उनके मकानात जो उनके ज़ुल्म की वजह से उजड़े पड़े हैं जो लोग इल्म रखते हैं उनके लिए इसमें बड़ी निशानी हैं (52) हमने उनको जो ईमान लाए थे और परहेज़गारी करते थे, बाल बाल बचा लिया।" (53)

क़ौमे समूद का गुनाह और अल्लाह ज़ुल जलाल की पकड़ (आ. 48 से 53) : समूदियों के शहरों में नौ फ़सादी शख़्स थे जिनकी तबियत में इस्लाह थी ही नहीं, यही उनके रईस और सरदार थे, इन ही के मश्वरे और हुक्म से ऊँटनी को मार डाला गया था। (तब्री : 19/477) इनके नाम यह हैं, दअमी, दईम, हरीम, दअब, सुवाब, मस्तअ, रय्याब, क़िदार इब्ने सालिफ़ यही आख़िरी शख़्स वह है जिसने अपने हाथ से ऊँटनी की कूचें काटी थीं। जिसका बयान आयत (فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ) (54/क़मर : 29) और आयत (اَشْقٰهَا) (91/शम्स : 12) में है। यही वह लोग थे जो दिरहम के सिक्के को थोड़ा सा कतर लेते थे और उसे चलाते थे। सिक्के को काटना भी एक तरह का फ़साद है। चुनाँचे अबूदाउद वग़ैरह में हदीस है जिसमें बिला ज़रूरत सिक्के को जो मुसलमानों में राइज हो काटना हुज़ूर (ﷺ) ने मना किया। (अबूदाऊद, किताबुल बुयूअ, बाब फ़ी कस्रिद् दराहिम : 3449; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन फ़ुज़ाइ रावी ज़ईफ़ और उसका वालिद मज्हूल है। इब्ने माजा : 2263) अल्ग़र्ज़ इनका यह फ़साद भी था और दीगर फ़साद भी बहुत सारे थे, उस नापाक गिरोह ने जमा होकर मश्वरा किया कि आज रात को सालेह (عليه السلام) और उनके घराने वालों को क़त्ल कर डालेंगे, इस पर सबने हलफ़ उठाये और मज़बूत अहदो पैमान किये। लेकिन यह लोग हज़रत सालेह (عليه السلام) तक पहुँचें उससे पहले अज़ाबे अल्लाह तआला उन तक पहुँच गया और उनका सतियानाश कर दिया। (तब्री : 19/487) ऊपर से एक चट्टान लढ़कती हुई आई और उन सब सरदारों के सर फूट गए, सारे ही एक साथ मर गए। उनके हौसले बहुत बढ़ गए थे, ख़ुसूसन जब उन्होंने हज़रत सालेह (عليه السلام) वाली ऊँटनी को क़त्ल किया और देखा कि कोई अज़ाब न आया तो अब अल्लाह के नबी के क़त्ल पर आमादा हो गये। मश्वरे किये कि चुपचाप अचानक उसे और उसके बाल बच्चों को हलाक कर दो, उसके वाली वारिसों और क़ौम से कह दो कि हमें क्या ख़बर? अगर सालेह (عليه السلام) नबी है तो वह हमारे हाथ लगने का नहीं, वरना उसे भी उसकी ऊँटनी के साथ सुला दो, इस इरादे से चले, रास्ते में ही थे जो फ़रिश्ते ने पत्थर से उन सबके दिमाग़ चूर चूर कर दिये। उनके मश्वरों में और जो जमाअत शरीक थी, उन्होंने जब देखा कि उन्हें गए हुए अर्सा हुआ और वापिस नहीं लौटे तो यह ख़बर लेने चले, देखा कि सबके सर फटे हुए हैं, भेजे निकले हुए पड़े हैं और सब मुर्दा हैं। उन्होंने हज़रत सालेह (عليه السلام) पर उनके क़त्ल की तोहमत लगा दी और उन्हें मार डालने के लिए चढ़ लेकिन उनकी

क़ौम हथियार लगाकर आ गई और कहने लगी, देखो! उसने तुमसे कहा है कि तीन दिन में अज़ाबे इलाही तुम पर आएगा, तुम यह तीन दिन गुज़र जाने दो अगर यह सच्चा है तो इसके क़त्ल से अल्लाह तआला को और नाराज़ करोगे और ज़्यादा सख़्त अज़ाब आएँगे और अगर यह झूठा है तो फिर तुम्हारे हाथ से बच कर कहाँ जाएगा? चुनाँचे वह लोग चले गए। आख़िर में उनसे हज़रत सालेह (ﷺ) ने साफ़ फ़र्मा दिया था कि तुमने अल्लाह तआला की ऊँटनी को क़त्ल किया है, तो तुम तीन दिन तक मज़े कर लो, फिर अल्लाह तआला का सच्चा वादा होकर रहेगा। यह लोग हज़रत सालेह (ﷺ) की ज़ुबानी यह सुनकर कहने लगे, यह तो इतनी मुद्दत कह रहा है आओ हम आज ही इससे फ़ारिग़ हो जाएँ। जिस पत्थर से ऊँटनी निकली थी उसी पहाड़ी पर हज़रत सालेह (ﷺ) की एक मस्जिद थी, जहाँ आप नमाज़ पढ़ा करते थे, उन्होंने मश्वरा किया कि जब वह नमाज़ को आए, उसी वक़्त रास्ते ही में उनका काम तमाम कर दो। जब पहाड़ी पर चढ़ने लगे तो देखा कि ऊपर से एक चट्टान लुढ़कती हुई आ रही है, उससे बचने के लिए एक ग़ार में घुस गए, चट्टान आकर ग़ार के मुँह पर इस तरह ठहर गई कि मुँह बिलकुल बंद हो गया, सबके सब हलाक हो गए और किसी को पता भी न चला कहाँ गए? उन्हें यहाँ यह अज़ाब आया, वहाँ बाक़ी वाले वहीं हलाक कर दिये गए, न उनकी ख़बर इन्हें हुई और न इनकी उन्हें। हज़रत सालेह (ﷺ) और ईमान वाले लोगों से किसी का कुछ भी न बिगाड़ न सके और अपनी जानें अल्लाह तआला के अज़ाबों में खो दीं। उन्होंने मकर किया, हमने उनकी चालबाज़ी का मज़ा उन्हें चखा दिया और उन्हें उससे ज़रा पहले भी मुत्लक़ इल्म न हो सका। अंजामकार उनकी फ़रेबबाज़ियों का यह हुआ कि सबके सब तबाह व बर्बाद हुए। यह हैं उनकी बस्तियाँ जो उजड़ी पड़ी हैं उनके ज़ुल्म की वजह से यह हलाक हो गए, उनके बारौनक़ शहर तबाह कर दिये गए। इल्म वाले लोग उन निशानों से इब्रत हासिल कर सकते हैं हमने ईमान वाले मुत्तक़ियों को बाल बाल बचा लिया।

***

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا
امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰي عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

तर्जुमा : "लूत (ﷺ) का ज़िक्र कर जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि क्या बावजूद देखने भालने के फिर भी तुम बदकारी कर रहे हो? (54) यह क्या बात है कि तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के पास शहवत से आते हो? हक़ यह है कि तुम बड़ी ही नादानी कर रहे हो। (55) क़ौम का जवाब सिवाय इस कहने के और कुछ न था कि आले लूत (ﷺ) को अपने शहर से देश निकाला कर दो, यह तो बड़ी पाकबाज़ी कर रहे हैं। (56) पस हमने उसे और उसके अहल को सिवाय उसकी बीवी के सबको बचा लिया उसका अंदाज़ा तो बाक़ी रह जाने वालों में हम लगा ही चुके थे। (57) और उन पर एक ख़ास क़िस्म की बारिश बरसा दी पस उन धमकाये हुए लोगों पर बुरी बारिश हुई। (58) तू कह दे कि तमाम ता'रीफ़ अल्लाह तआला ही के लिए है और उसके बरगुज़ीदा बन्दों पर सलाम है। क्या अल्लाह तआला बेहतर है या वह जिन्हें यह लोग शरीक ठहरा रहे हैं।" (59)

लूत (ﷺ) का अपनी क़ौम को नसीहत (आ. 54 से 59) : अल्लाह तआला अपने बन्दे और रसूल हज़रत लूत (ﷺ) का वाक़िया बयान कर रहा है कि आपने अपनी उम्मत यानी क़ौम को उसके उस नालायक़ काम पर जिसका फ़ाइल (कर्ता) उनसे पहले कोई न हुआ था यानी अग़लामबाज़ी (समलैंगिकता) पर डराया। तमाम क़ौम की यह हालत थी मर्द मर्दों से और औरतें औरतों से शहवतरानी कर लिया करती थीं। साथ ही इतने बेहया हो गए थे कि उस गंदे काम को पोशीदा करना भी कुछ इतना ज़रूरी नहीं जानते थे। अपने मज्मओं में वाही काम करते थे। औरतों को छोड़कर मर्दों के पास आते थे। इसलिए आपने फ़र्माया कि अपनी इस जिहालत से बाज आओ, तुम तो ऐसे गए गुज़रे और इतने नादान हुए कि शरई पाकीज़गी के साथ ही तुमसे तब्ई तहारत भी जाती रही। जैसे दूसरी आयत में है (أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾) (26/शोअरा : 165) क्या तुम मर्दों के पास आते हो और औरतों को जिन्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारे जोड़े बनाए हैं, छोड़ते हो? बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था जब लूत और लूत वाले तुम्हारे इस काम से बेज़ार हैं और वह न तुम्हारी मानते हैं न तुम उनकी तो फिर हमेशा की इस कलकल को ख़त्म क्यूँ नहीं कर देते। लूत (ﷺ) के घराने को देश निकाला देकर उनके रोज़ मर्रा के कचोकों से नजात हासिल करलो, जब काफ़िरों ने पुख़्ता इरादा कर लिया और उस पर जम गए और इज्माअ हो गया तो अल्लाह तआला ने उन्हीं को हलाक कर दिया और अपने पाक बंदे हज़रत लूत (ﷺ) और उनके अहल को उनसे और जो अज़ाब उन पर आए उससे बचा लिया। हाँ! आपकी बीवी जो क़ौम के साथ ही थी, वह पहले से ही उन हलाक होने वालों में लिखी जा चुकी थी और वह यहाँ बाक़ी रह गई और अज़ाब के साथ तबाह हो गई। क्योंकि यह उन्हें उनके दीन और उनके तरीक़ों में मदद देती थी उनकी बद आमालियों को पसंद करती थी। उसी ने हज़रत लूत (ﷺ) के मेहमानों की ख़बर क़ौम को दी थी। लेकिन यह ख़याल रहे कि ख़ुदानख़्वास्ता उनकी इस फ़ोह्शकारी में यह शरीक न थी, अल्लाह तआला के नबी के बुज़ुर्गी के ख़िलाफ़ है कि उनकी बीवी बदकार हो, उस क़ौम पर आसमान से पत्थर बरसाये गए जिन पर उनके नाम कुंदे थे, हर एक पर उसी के नाम का पत्थर आया और एक भी उनमें से न बच सका। ज़ालिमों से अल्लाह तआला की सज़ा दूर नहीं, उन पर हुज्जते इलाही क़ायम हो चुकी

थी, उन्हें डराया और धमकाया जा चुका था, तब्लीग़े रिसालत पूरे तौर पर हो चुकी थी लेकिन उन्होंने मुख़ालिफ़त में झुठलाने में और अपनी बेईमानी पर अड़ने में कमी नहीं की। अल्लाह के नबी हज़रत लूत (عليه السلام) को तक्लीफ़ें पहुँचाईं बल्कि उन्हें निकाल देने का इरादा किया उसी वक़्त उस बदतरीन बारिश ने उस संगबारी ने उन्हें फ़ना कर दिया।

सलामती सिर्फ़ अल्लाह के बन्दों के लिए : हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को हुक्म हो रहा है कि आप कहें कि सारी ता'रीफ़ों के लायक़ फ़क़त अल्लाह तआला है, उसी ने अपने बन्दों को अपनी बेशुमार नेअमतें अता कर रखी हैं, उसकी सिफ़तें आली हैं, उसके नाम बलंद और पाक हैं। और हुक्म होता है कि आप अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा बन्दों पर सलाम भेजें, जैसे अम्बिया और रुसुल। हम्दो सलात का साथ ही ज़िक्र आयत (سُبْحٰنَ رَبِّكَ) (37/साफ़्फ़ात : 180) में भी है।

बरगुज़ीदा बन्दों से मुराद अस्हाबे रसूल हैं और ख़ुद अम्बिया (عليهم السلام) बतौरे औला इसमें दाख़िल हैं। अल्लाह तआला ने अपने नबियों और उनके ताबेदारों के बचा लेने और मुख़ालिफ़ीन के ग़ारत कर देने की नेअमत बयान करके अपनी ता'रीफ़ें करने और अपने नेक बन्दों पर सलाम भेजने का हुक्म दिया। उसके बाद बतौर सवाल करके मुश्रिकों के इस काम पर इंकार किया कि वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के साथ उसकी इबादत में दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं। जिनसे अल्लाह तआला पाक और बरी है।

अल्हम्दु लिल्लाह! 19वाँ पारा मुकम्मल हुआ।

***

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : "भला बतलाओ कि आसमानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया? किसने आसमान से बारिश बरसाई? फिर उससे हरे भरे बारौनक़ बाग़ात उगा दिये। उन बाग़ों के दरख़्तों को तुम हर्गिज़ न उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ और कोई मअबूद भी है? बल्कि यह लोग अल्लाह की बराबरी का औरों को ठहराते हैं।" (60)

ख़ालिक़े हक़ीक़ी अल्लाह तआला ही है (आ. 60) बयान हो रहा है कि कुल कायनात का रचाने वाला, सबका पैदा करने वाला, सबको रोज़ियाँ देने वाला, सबकी हिफ़ाज़तें करने वाला, तमाम जहान की तदबीर करने वाला, सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। इन बुलंद आसमानों को इन चमकते हुए सितारों को उसी ने पैदा किया। इस भारी बोझल ज़मीन को, इन बुलंद पहाड़ों को, इन फैले हुए मैदानों को उसी ने पैदा किया है। खेतियाँ बाग़ात, फल-फूल, दरिया समुन्द्र, हैवानात, जिन्नात इंसान, ख़ुश्की और तरी के आम जानदार उसी एक के

बनाए हुए हैं। आसमानों से पानी उतारने वाला वही है, उसे अपनी मख़्लूक़ की रोज़ी का ज़रिया उसी ने बनाया है, बाग़ात खेत सब वही उगाता है जो अलावा ख़ुशमंज़र होने के बेहद मुफ़ीद होते हैं, अलावा ख़ुश ज़ायक़ा होने के ज़िन्दगी को क़ायम रखने वाले होते हैं। तुममें से या तुम्हारे मअबूदाने बातिला में से कोई भी न किसी चीज़ के पैदा करने की क़ुदरत रखता है न किसी दरख़्त के उगाने की। बस वही ख़ालिक़ व राज़िक़ है। अल्लाह तआला की ख़ालिक़ियत और उसकी रोज़ीरसानी को मुश्रिकीन भी मानते थे। जैसे दूसरी आयत में बयान हुआ है कि (وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 87) यानी अगर तू इनसे पूछेगा कि इन्हें किसने पैदा किया है? तो यही जवाब देंगे कि अल्लाह तआला ने और अगर तू इनसे सवाल करे कि आसमान से पानी बरसाकर मुर्दा ज़मीन को किसने ज़िन्दा कर दिया? तो भी इनका जवाब होगा कि अल्लाह तआला ने। अलग़र्ज़ यह जानते हैं और मानते हैं कि ख़ालिक़े कुल सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है लेकिन इनकी अक़्लें मारी गई हैं कि इबादत के वक़्त अल्लाह तआला के साथ औरों को भी शरीक कर लेते हैं बावजूद यह कि जानते हैं कि वह न पैदा करने वाले हैं, न रोज़ी देने वाले। और इस बात का फ़ैसला तो आसानी से हर अक़्लमंद कर सकता है कि इबादत के लायक़ वही है जो ख़ालिक़, मालिक और राज़िक़ है। इसीलिए यहाँ इस आयत में भी सवाल किया कि क्या मअबूदे बरहक़ के साथ कोई और भी इबादत के लायक़ है? क्या अल्लाह तआला के साथ मख़्लूक़ को पैदा करने में मख़्लूक़ की रोज़ी रसानी में कोई और भी शरीक है? चूँकि वह मुश्रिक ख़ालिक़ राज़िक़ सिर्फ़ अल्लाह ही को मानते थे और इबादत औरों की भी करते थे। इसलिए और आयत में फ़र्माया (اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ) (16/नह़ल : 17) ख़ालिक़ और ग़ैर ख़ालिक़ यक्साँ नहीं हैं फिर तुम ख़ालिक़ मख़्लूक़ को कैसे एक कर रहे हो? यह याद रहे कि इन आयतों में (अम्मन) जहाँ जहाँ है वहाँ यही मअनी हैं कि एक तो वह जो इन तमाम कामों को कर सके और इन पर क़ादिर हो, दूसरा वह जिसने इनमें से न तो किसी काम को किया और न कर सकता हो, क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं? भले दूसरी शिक़्क़ को लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया लेकिन तर्ज़े कलाम उसे साफ़ कर देता है और आयत में साफ़ साफ़ यह भी है कि (آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ) (27/नम्ल : 59) क्या अल्लाह बेहतर है या जिन्हें वह शरीक करते हैं? आयत के ख़ात्मे पर फ़र्माया बल्कि यह वह लोग हैं जो अल्लाह तआला के शरीक ठहरा रहे हैं। आयत (اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ) (39/ज़ुमर : 9) भी इसी जैसी आयत है यानी एक वह शख़्स जो अपने दिल में आख़िरत का डर रखकर अपने रब की रहमत का उम्मीदवार होकर रातों को नमाज़ में गुज़ारता हो, यानी वह इस जैसा नहीं हो सकता जिसके आमाल ऐसे न हों और जगह है आलिम और बेइल्म बराबर नहीं, अक़्लमंदी ही नसीहत से फ़ायदा उठाते हैं। एक वह जिसका सीना इस्लाम के लिए खुला हुआ हो और वह अपने रब की तरफ़ से नूरे हिदायत लिए हुए हो, वह उस जैसा नहीं जिसके दिल में इस्लाम की तरफ़ से इंकार हो और सख़्त दिल हो। अल्लाह तआला ने ख़ुद अपनी ज़ात की निस्बत फ़र्माया (اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ) (13/रअद : 33) यानी वह जो मख़्लूक़ की हर हर हरकात सक्नात से वाक़िफ़ हो, तमाम ग़ैब की बातों को जानता हो, मिस्ल उसके है जो कुछ भी न जानता हो? बल्कि जिसकी आँखें और कान ही न हों, जैसे तुम्हारे यह बुत हैं। फ़र्मान है (وَ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ) (13/रअद : 33) यह अल्लाह तआला के शरीक ठहरा रहे हैं इनसे कह ज़रा उनके नाम तो मुझे बतलाओ पस इन सब आयतों का भी मतलब यही है कि अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़तें बयान की हैं। फिर वह सिफ़तें किसी में न होने की ख़बर दी है।

पुकारे जाने के क़ाबिल उसी की ज़ात है, बेकस बेबस लोगों का सहारा वही है, गिरे पड़े भूले भटके मुसीबतज़दा उसी को पुकारते हैं, उसी की तरफ़ लौ लगाते हैं। जैसे फ़र्माया कि तुम्हें जब समुन्द्र के तूफ़ान ज़िन्दगी से मायूस कर देते हैं तो तुम उसी को पुकारते हो उसी की तरफ़ गिरयावज़ारी करते हो और सबको भूल जाते हो। उसी की ज़ात ऐसी है कि हर एक बेक़रार वहाँ पनाह ले सकता है। मुसीबतज़दा लोगों की मुसीबत उसके सिवा कोई भी दूर नहीं कर सकता। एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि हुज़ूर (ﷺ)! आप किस चीज़ की तरफ़ हमें बुला रहे हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला की तरफ़ जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं, जो उस वक़्त तेरे काम आता है जब तू किसी मुसीबत में फँसा हुआ हो, वही है कि जब तू जंगलों में रास्ता भूलकर उसे पुकारे तो वह तेरी रहनुमाई कर दे, तेरा कोई खो गया हो और तू उससे इल्तिजा करे तो वह उसे तुझसे मिलादे, क़हतसाली हो गई हो और तू उससे दुआएँ करे तो वह मूसलाधार बारिश तुझ पर बरसा दे।" उस शख़्स ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे कुछ नसीहत कीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "किसी को बुरा न कह, नेकी के किसी काम को हल्का और बेवक़अत न समझ भले अपने मुसलमान भाई से बकुशादा पेशानी मिलना ही हो, भले अपने डोल से किसी प्यासे को पानी का एक घूँट देना ही हो, और अपने तहबंद को आधी पिण्डली तक रख, न मान तो ज़्यादा से ज़्यादा टख़ने तक, उससे नीचे लटकाने से बचता रह, इसलिए कि यह फ़ख़्र व ग़ुरूर है जिसे अल्लाह तआला नापसंद करता है।" (अहमद : 5/64; ह : 20636; व सनदुहू सहीहुन) एक रिवायत में इनका नाम जाबिर बिन सुलैम हुजैमी (रज़ि.) है। इसमें है कि जब मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आया आप एक चादर से गोट लगाए बैठे थे जिसके फंदे आपके क़दमों पर गिर रहे थे। मैंने आकर पूछा कि तुममें अल्लाह तआला के रसूल मुहम्मद (ﷺ) कौन हैं? आप (ﷺ) ने अपने हाथ से ख़ुद अपनी तरफ़ इशारा किया। मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं एक गाँव का रहने वाला आदमी हूँ, अदब तमीज़ कुछ नहीं जानता, मुझे कुछ अहकामे इस्लाम की तालीम दीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "किसी छोटी सी नेकी को भी हक़ीर न समझ भले अपने मुसलमान भाई से ख़ुशख़ल्क़ी के साथ मुलाक़ात ही हो और भले अपने डोल से किसी पानी माँगने वाले के बरतन में ज़रा सा पानी डाल देना ही हो। अगर कोई तेरी किसी ऐसी बात को जानता हो और वह तुझे आर दिलाए तो तू उसे ऐसी उसकी बात से आर न दिला ताकि अज्र मिले और वह गुनहगार बन जाए, टख़ने से नीचे कपड़ा लटकाने से परहेज़ कर क्योंकि यह तकब्बुर है जो अल्लाह तआला को पसंद नहीं और किसी को भी हर्गिज़ गाली न देना।" फ़र्माते हैं यह सुनने के बाद से लेकर आज तक मैंने कभी किसी इंसान बल्कि किसी जानवर को भी गाली न दी। (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब मा जाअ फ़ी इस्बालिल इज़ार : 4084; व सनदुहू सहीहुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 9694; अहमद : 5/64; इब्ने हिब्बान : 521)

ताउस (रह.) किसी बीमार की बीमारपुर्सी को गए। बीमार ने कहा, मेरे लिए अल्लाह तआला से दुआ कीजिए। आपने फ़र्माया, "तुम ख़ुद अपने लिए दुआ करो, बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त की दुआ को अल्लाह तआला क़बूल फ़र्माता है।" वहब (रह.) फ़र्माते हैं, "मैंने अगली आसमानी किताब में पढ़ा है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम! जो शख़्स मुझ पर भरोसा करे और मुझे थाम ले तो मैं

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا
دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : ''क्या वह जिसने ज़मीन को क़रारगाह बनाया और उसके बीच नहरें जारी कर दीं और उसके लिए पहाड़ बनाए और दो समुन्द्रों के बीच रोक बनादी, क्या अल्लाह के साथ और कोई मअ़बूद भी है? बल्कि उनमें के अक्सर कुछ जानते ही नहीं। (61) बेकस की पुकार को जबकि वह पुकारे कौन क़बूल करके सख़्ती को दूर कर देता है? और तुम्हें ज़मीन का नाइब बनाता है, क्या अल्लाह तआ़ला के साथ और मअ़बूद है? तुम बहुत कम नसीहत व इब्रत हासिल करते हो।'' (62)

ज़मीन, नहरें, पहाड़ और समुन्द्र अल्लाह तआ़ला ने ही पैदा किये (आ. 61, 62) : ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने ठहरी हुई और साकिन बनाई ताकि दुनिया वाले आराम के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर कर सके और इस फैले हुए फ़र्श पर राहत पा सके। जैसे और आयत में है (اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا) (40/मोमिन : 64) अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन तुम्हारे लिए ठहरी हुई और साकिन बनाई और आसमान को छत बनाया, उसने ज़मीन पर पानी के दरिया बहा दिये जो इधर उधर बहते रहते हैं और मुल्क मुल्क पहुँचकर ज़मीन को सैराब करते हैं ताकि ज़मीन से खेत बाग़ वग़ैरह उगें। उसने ज़मीन की मज़बूती के लिए उस पर पहाड़ों की मेखें गाड़ दीं ताकि वह तुम्हें हिला जुला न सके ठहरी रहे। उसकी क़ुदरत देखो कि एक खारी समुन्द्र है, एक मीठा है दोनों बह रहे हैं। बीच में कोई रोक, आड़, पर्दा, हिजाब नहीं लेकिन क़ुदरत ने एक को एक से अलग कर रखा है न कड़वा मीठे में मिल सके, न मीठा कड़वे में। खारी अपने फ़वाइद पहुँचाता रहे, मीठा अपने फ़ायदे देता रहे। उसका निथरा हुआ ख़ुश ज़ायक़ा सहता बचता पानी लोग पियें, अपने जानवरों को पिलाएँ, खेतियाँ बाड़ियाँ बाग़ात वग़ैरह में यह पानी पहुँचाएँ, नहाएँ, धोएँ वग़ैरह खारी पानी अपने फ़ायदे से लोगों को सूदमंद करे, यह हर तरफ़ से घेरे हुए है ताकि हवा ख़राब न हो और आयत में भी इन दोनों का बयान मौजूद है (وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ) (25/फ़ुरक़ान : 53) यानी इन दोनों समुन्द्रों का जारी करने वाला अल्लाह तआ़ला है और उसी ने इन दोनों के बीच हद्दे फ़ासिल रख दी है यहाँ यह अपनी क़ुदरतें जताकर फिर सवाल करता है कि क्या अल्लाह तआ़ला के साथ कोई और भी ऐसा है जिसने यह काम किये हों या कर सकता हो? ताकि वह भी लायक़े इबादत समझा जाए, अक्सर लोग सिर्फ़ बेइल्मी से ग़ैरुल्लाह की इबादत करते हैं। इबादतों के लायक़ सिर्फ़ वही अकेला अल्लाह है।

दुखियों, लाचारों की दुआओं को कौन सुनता है? सख़्तियों और मुसीबतों और मुसीबतों के वक़्त

उसे उसके मुख़ालिफ़ीन से बचा लूँगा और ज़रूर बचा लूँगा भले आसमान व ज़मीन और कुल मख़्लूक़ उसकी मुख़ालिफ़त पर और नुक़्सान देने पर आमादा हो जाए और जो मुझ पर भरोसा न करे मेरी पनाह में न आए तो मैं उसे अम्नो-अमान से चलता फिरता ही अगर चाहूँगा तो ज़मीन मे धंसा दूँगा और उसकी कोई मदद न करूँगा।'' एक बहुत ही अजीब वाक़िया हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.) ने अपनी किताब में नक़्ल किया है। एक साहब फ़र्माते हैं कि मैं एक ख़च्चर पर लोगों को दमिश्क़ से ज़ैदानी ले जाया करता था और उसी किराया पर मेरी गुज़र बसर थी। एक बार एक शख़्स ने ख़च्चर किराया पर लिया, मैंने उसे सवार किया और ले चला। एक जगह जहाँ दो रास्ते थे पहुँचे तो उसने कहा इस राह चलो। मैंने कहा, मैं इस रास्ते को नहीं जानता, सीधी राह यही है। उसने कहा, नहीं! मैं पूरी तरह जानता हूँ यह बहुत नज़दीक का रास्ता है। मैं उसके कहने से उसी रास्ते पर चला, थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि एक लक़ो दक़ बयाबान में हम आ गए हैं जहाँ कोई रास्ता नज़र नहीं आता, निहायत ख़तरनाक जंगल और हर तरफ़ लाशें पड़ी हुई हैं, मैं सहम गया। वह मुझसे कहने लगा, ज़रा लगाम थाम लो मुझे यहाँ उतरना है। मैंने लगाम थाम ली और वह उतरा और अपने तहमद ऊँचा करके कपड़े ठीक करके छुरी निकालकर मुझ पर हमला किया। मैं वहाँ से सरपट भागा लेकिन उसने मेरा पीछा किया और मुझे पकड़ लिया। मैं उसे क़समें देने लगा लेकिन उसने ख़्याल भी न किया। मैंने कहा, अच्छा यह ख़च्चर और सारा सामान जो मेरे पास है तू ले ले और मुझे छोड़ दे। उसने कहा यह तो मेरा हो ही चुका लेकिन मैं तो तुझे ज़िन्दा छोड़ना चाहता ही नहीं। मैंने उसे अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया, आख़िरत के अज़ाबों का ज़िक्र किया लेकिन उस चीज़ ने भी उस पर कोई असर न किया और वह मेरे क़त्ल पर तुला रहा। अब मैं मायूस हो गया और मरने के लिए तैयार हो गया और उससे मिन्नतें करने लगा कि आप मुझे दो रकअत नमाज़ अदा कर लेने दीजिए। उसने कहा, अच्छा जल्दी पढ़ ले। मैंने नमाज़ शुरू की लेकिन रब की क़सम! मेरी ज़ुबान मे कुरआन का एक हर्फ़ भी नहीं निकल रहा था यूँ ही हाथ बाँधे हुए दहशतज़दा खड़ा हुआ था और वह जल्दी मचा रहा था। उसी वक़्त इत्तिफ़ाक़ से यह आयत मेरी ज़बान पर आ गई (أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ) (27/नम्ल : 62) यानी अल्लाह तआला ही है जो बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त की दुआ को सुनता और क़बूल करता है और बेबसी बेकसी को सख़्ती और मुसीबत से दूर कर देता है। पस इस आयत का ज़ुबान से जारी होना था जो मैंने देखा कि बीचों बीच जंगल में से एक घुड़सवार तेज़ी से अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ नेज़ा ताने हमारी तरफ़ चला आ रहा है और बग़ैर कुछ कहे उस डाकू के पेट में उसने अपना नेज़ा घोंप दिया जो उसके जिगर के आर पार हो गया, वह उसी वक़्त बेजान होकर गिर पड़ा। सवार ने बाग मोड़ी और जाना चाहा लेकिन मैं उसके क़दमों से लिपट गया और बा इल्हाह (आजिज़ी से इसरार करते हुए) कहने लगा, अल्लाह के लिए यह तो बतलाओ कि तुम कौन हो? उसने कहा, मैं उसका भेजा हुआ हूँ जो मजबूरों बेकसों और बेबसों की दुआ क़बूल करता है और मुसीबत व आफ़त को टाल देता है। मैंने अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया और वहाँ से अपना ख़च्चर और माल लेकर सही सालिम वापिस लौट आया। इसी क़िस्म का एक और वाक़िया भी है कि मुसलमानों के एक लश्कर ने एक जंग में काफ़िरों से शिकस्त खाई और वापिस लौटे। उनमें एक मुसलमान जो बड़े सख़ी और नेक थे यह भी थे उनका घोड़ा जो बहुत तेज़ रफ़्तार था, रास्ते में अड़ गया। उस अल्लाह के वली ने बहुत कोशिश की लेकिन जानवर ने क़दम ही न उठाया। आख़िर आजिज़ होकर उसने

कहा, क्या बात है जो तू अड़ गया। ऐसे ही मौक़े के लिए तो मैंने तेरी ख़िदमत की थी और तुझे प्यार से पाला था। घोड़े को अल्लाह तआला ने ज़बान दी। उसने जवाब दिया कि वजह यह है कि आप मेरा घास दाना साईस को सौंप देते थे, वह उसमें से चुरा लेता था मुझे बहुत कम खाने को देता था और मुझ पर ज़ुल्म करता था। अल्लाह तआला के उस नेक बंदे ने कहा, अब तू चल मैं अल्लाह तआला को बीच में रखकर वादा करता हूँ कि अब से तुझे मैं ही हमेशा अपनी गोद में ही खिलाया करूँगा। जानवर यह सुनते ही तेज़ी से लपका और उन्हें अम्न की जगह पहुँचा दिया। वादे के मुताबिक़ अब से यह बुज़ुर्ग अपने उस जानवर को अपनी गोद में ही खिलाया करते थे, लोगों ने उनसे इसकी वजह पूछी उन्होंने किसी से वाक़िया कह दिया जिसकी आम शोहरत हो गई और लोग इस वाक़िया को सुनने के लिए उनके पास दूर दूर से आने लगे। शाहे रूम को जब यह ख़बर पहुँची तो उसने चाहा कि किसी तरह उन्हें अपने शहर में बुला ले बहुत कोशिशें कीं लेकिन बेकार रहीं। आख़िर में उसने एक शख़्स को भेजा कि किसी तरह हीले हवाले से उन्हें बादशाह तक पहुँचाए। यह शख़्स पहले मुसलमान थे फिर मुर्तद हो गये थे, यह बादशाह के पास चला यहाँ आकर उनसे मिला अपना इस्लाम ज़ाहिर किया तौबा की और निहायत नेक बनकर रहने लगा, यहाँ तक कि उस वलीउल्लाह को उस पर पूरा भरोसा हो गया और उसे सालेह और दीनदार समझकर उन्होंने दोस्ती पैदा कर ली और साथ साथ लेकर फिरने लगे। उसने अपना पूरा रसूख़ जमाकर अपनी ज़ाहिरी दीनदारी के फ़रेब में उन्हें फंसा कर इधर बादशाह को ख़बर कर दी कि फ़लाँ वक़्त दरिया के किनारे एक मज़बूत जरी शख़्स को भेजो, मैं इन्हें लेकर वहाँ आ जाऊँगा और उस शख़्स की मदद से उन्हें गिरफ़्तार कर लूँगा। यहाँ से उन्हें फ़रेब देकर ले चला और उसी जगह पहुँचाया। दफ़अतन (अचानक) यह शख़्स नमूदार हुआ और उस बुज़ुर्ग पर हमला किया। इधर से इस मुर्तद ने हमला किया। उस नेक दिल शख़्स ने उस वक़्त आसमान की तरफ़ नज़रें उठाईं और दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस शख़्स ने तेरे नाम से मुझे धोखा दिया है मैं तुझसे इल्तिजा करता हूँ कि तू जिस तरह चाहे मुझे इन दोनों से बचा ले। वहीं जंगल से दो दरिन्दे भागते हुए आते दिखाई दिये और उन दोनों शख़्सों को उन दरिन्दों ने दबोच लिया और टुकड़े टुकड़े करके चल दिये और अल्लाह तआला का यह बंदा अम्न के साथ वहाँ से सही सालिम वापिस तशरीफ़ ले आया, रहिमहुल्लाह। अपनी इस शाने रहमत को बयान करके फिर जनाब बारी तआला की तरफ़ से इर्शाद होता है कि वही तुम्हें ज़मीन का जानशीन बनाता है, एक एक के पीछे आ रहा है और मुसलसल सिलसिला चला जा रहा है। जैसे इर्शाद है (إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ) (4/निसाअ : 133) अगर वह चाहे तो तुम सबको यहाँ से फ़ना कर दे और किसी और को तुम्हारा जानशीन कर दे, जैसे कि ख़ुद तुम्हें दूसरों का ख़लीफ़ा बना दिया है। और आयत में है (وَ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ)(6/अन्आम : 165) उस रब तआला ने तुम्हें ज़मीनों का जानशीन बनाया है और तुममें से एक को एक पर दर्जों में बढ़ा दिया है। हज़रत आदम (عليه السلام) को भी जो ख़लीफ़ा कहा गया है वह इसी ऐतिबार से कि उनकी औलाद एक दूसरे की जानशीन होगी। जैसे कि आयत (وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ) (2/बक़रह : 30) की तफ़्सीर में तफ़्सीलवार बयान गुज़र चुका है। इस आयत के इस जुम्ले से भी यही मुराद है कि एक के बाद एक, एक ज़माना के बाद दूसरा ज़माना, एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम, पस यह अल्लाह तआला की क़ुदरत है और इसमें मख़्लूक़ की मस्लिहत है वरना अगर वह चाहता तो सबको एक ही वक़्त एक साथ पैदा कर देता और एक साथ फ़ना कर देता। लेकिन उसने यह रखा कि एक मरे एक पैदा हो।

व ज़मीन में अल्लाह तआला ने ऐसी निशानियाँ रख दी हैं कि ख़ुश्की और तरी में जो राह भूल जाए वह उन्हें देखकर राहे रास्त इख़्तियार कर ले।

जैसे फ़र्माया है कि सितारों से लोग रास्ता पाते हैं समुन्द्रों में और ख़ुश्की में उन्हें देखकर अपना रास्ता ठीक कर लेते हैं, बादल पानी भरें बरसें उससे पहले ठण्डी और भीनी भीनी हवाएँ वह चलाता है जिससे लोग समझ लेते हैं कि अब रब की रहमत बरसेगी। रब के सिवा इन कामों का करने वाला कोई नहीं, न कोई इन पर क़ादिर है। तमाम शरीकों से वह अलग है और पाक है सबसे बुलंद है।

दोबारा पैदा होने पर एक ख़ूबसूरत मिसाल : फ़र्मान है कि रब वह है जो अपनी क़ुदरते कामिला से मख़्लूक़ात को बेनमूने के पैदा कर रहा है, फिर उन्हें फ़ना करके दोबारा पैदा करेगा। जब तुम उसे पहली बार के पैदा करने पर क़ादिर मान रहे हो तो दोबारा की पैदाइश जो उससे बहुत आसान है इस पर क़ादिर क्यूँ नहीं मानते? आसमान से बारिश बरसाना, ज़मीन से अनाज उगाना और तुम्हारी रोज़ी का सामान आसमान ज़मीन से करना उसी का काम है जैसे सूरह तारिक़ में फ़र्माया, पानी वाले आसमान की और फूटने वाली ज़मीन की क़सम। और आयत में है (يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ) (34/सबा : 2) यानी अल्लाह जानता है हर उस चीज़ को जो ज़मीन में समा जाए और जो उससे बाहर आए और जो आसमान से उतरे और जो उस पर चढ़े। पस आसमान से बारिश बरसाने वाला, उसे ज़मीन में इधर से उधर तक पहुँचाने वाला और इसकी वजह से तरह तरह के फल फूल अनाज घास पात उगाने वाला वही है, जो तुम्हारी और तुम्हारे जानवरों की रोज़ियाँ हैं यक़ीनन यह तमाम चीज़ें एक साहिबे अक़्ल के लिए अल्लाह की बड़ी बड़ी निशानियाँ हैं। अपनी इन क़ुदरतों को और अपने इन बहुत भारी एहसानों को बयान करके फ़र्माया कि क्या अल्लाह के साथ इन कामों का करने वाला कोई और भी है जिसकी इबादत की जाए? अगर तुम अल्लाह के सिवा और दूसरों को मअबूद मानने के दावे को दलील से साबित कर सकते हो तो वह दलील पेश करो। लेकिन चूँकि वह सिर्फ़ बेदलील हैं इसलिए दूसरी आयत में फ़र्मा दिया कि अल्लाह तआला के साथ जो दूसरे को पूजे जिसकी कोई दलील भी उसके पास न हो, वह यक़ीनन काफ़िर है और नजात से महरूम है।

इल्मे ग़ैब अल्लाह तआला का ख़ास्सा है : अल्लाह तआला अपने नबी करीम (ﷺ) को हुक्म देता है कि वह सारे जहान को मालूम करा दें कि सारी मख़्लूक़ आसमान की हो या ज़मीन की ग़ैब के इल्म से ख़ाली है सिवाय अल्लाह तआला वहदहू ला शरीक लहू के कोई और ग़ैब का जानने वाला नहीं। यहाँ इस्तिस्ना मुन्क़तअ है यानी सिवाय अल्लाह के कोई इंसान जिन्न फ़रिश्ता ग़ैब का जानने वाला नहीं जैसे फ़र्मान है (وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ) (6/अन्आम : 59) यानी ग़ैब की कुँजियाँ उसी के पास हैं जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। और फ़र्मान है (إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ) (31/लुक़्मान : 34) अल्लाह ही के पास क़ियामत का इल्म है वही बारिश बरसाता है वही मादा के पेट के बच्चे से वाक़िफ़ है, कोई नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा, न किसी को यह ख़बर है कि वह कहाँ मरेगा? अलीम व ख़बीर सिर्फ़ अल्लाह ही है। और भी इस मज़्मून की बहुत सी आयतें हैं। मख़्लूक़ तो यह भी नहीं जानती कि क़ियामत कब आएगी? आसमानों और ज़मीनों के रहने वालों में से एक भी वाक़िफ़ नहीं कि क़ियामत का वक़्त कौनसा है?

हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा किया उनसे उनकी नस्ल फैलाई और दुनिया में एक ऐसा तरीक़ा रखा कि दुनिया वालों की रोज़ियाँ और उनकी ज़िन्दगियाँ तंग न हों, वरना सारे इंसान एक साथ शायद ज़मीन में बहुत तंगी से गुज़ारा करते और एक से एक को नुक़्सानात पहुँचते। पस मौजूदा तर्ज़े इलाही की हिक्मत पर दलील है, सबकी पैदाइश का मौत का आने का जाने का वक़्त उसके नज़दीक मुक़र्रर है। एक एक उसके इल्म में है उसकी निगाह से कोई ओझल नहीं। वह एक दिन ऐसा भी लाने वाला है कि उन सबको एक ही मैदान में जमा करे और उनके फ़ैसले करे नेकी बदी का बदला दे। उन अपनी क़ुदरतों को बयान करके फ़र्माता है कि है कोई जो इन कामों को कर सकता हो? और जब नहीं कर सकता तो इबादत के लायक़ भी वह नहीं हो सकता, ऐसी साफ़ दलीलें बहुत कम सोची जाती हैं और उनसे भी नसीहत बहुत कम लोग हासिल करते हैं।

***

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ
لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ
﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

तर्जुमा : "क्या वह जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी की तारीकियों में राह दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही ख़ुशख़बरियाँ देने वाली हवाएँ चलाता है। क्या अल्लाह के कोई और मअ़बूद भी है? जिन्हें यह शरीक करते हैं उन सबसे अल्लाह तआ़ला बुलंद व बालातर है। (63) क्या वह जो मख़्लूक़ की पहली बार पैदाइश करता है फिर उसे लौटाएगा और जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ियाँ दे रहा है, क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद भी है? कह दे कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ। (64) कह दे कि आसमानों वालों में से ज़मीन वालों में से कोई भी अल्लाह के ग़ैब को नहीं जानता। और उन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि कब उठा खड़े किये जाएँगे? (65) बल्कि आख़िरत के बारे में उनके इल्म ख़त्म हो चुके हैं, बल्कि यह उससे शक में हैं। बल्कि यह उससे अंधे हैं।"(66)

तारीकी में हिदायत और बारिश के लिए ठण्डी हवाएँ कौन चलाता है (आ. 63 से 66) : आसमान

जैसे फ़र्मान है (ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ) (7/आराफ़ : 187) सब पर यह इल्म मुश्किल है और बोझल है वह तो अचानक आ जाएगी। हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "जो कहे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) कल की बात जानते थे उसने अल्लाह तबारक व तआला पर बोहताने अ़ज़ीम बाँधा, इसलिए कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ज़मीन व आसमान वालों में से कोई भी ग़ैब की बात जानने वाला नहीं।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब मअनी क़ौलुल्लाहि तआला अ़ज़्ज़ व जल्ल (व लक़द रआहू नज़्लतन उख़्रा) : 177) क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला ने सितारों में तीन फ़ायदे रखे हैं, आसमान की ज़ीनत, भूले भटकों की रहबरी और शैतानों की मार।" किसी और बात का इनके साथ अक़ीदा रखना अपनी राय से बात बनाना और तक्लीफ़ उठाना और अपने हिस्से को खोना है। जाहिलों ने सितारों के साथ इल्मे नजूम को मुतअ़ल्लिक़ रखकर फ़िज़ूल बातें बनाई हैं कि इस सितारे के वक़्त जो निकाह करे यूँ होगा, फ़लाँ सितारे के मौक़े पर सफ़र करने से यह होता है, फ़लाँ सितारे के वक़्त जो पैदा हुआ हो ऐसा वग़ैरह वग़ैरह यह सब ढकोसले हैं। इनकी इस बकवास के ख़िलाफ़ अक्सर होता रहता है हर सितारे के वक़्त कोई काला गोरा ठिंगना लम्बा ख़ूबसूरत बदशक्ल पैदा होता ही है, न कोई जानवर ग़ैब जाने, न किसी परिन्दे से ग़ैब हासिल हो सके, न सितारे ग़ैब की रहनुमाई करें। सुनो! अल्लाह का फ़ैसला हो चुका है कि आसमान और ज़मीन की कुल मख़्लूक़ ग़ैब से बेख़बर है। उन्हें तो अपने जी उठने का वक़्त भी नहीं मालूम है। (इब्ने अबी हातिम) सुब्हानल्लाह! क़तादा (रह.) का यह क़ौल कितना सही किस क़द्र मुफ़ीद और मालूमात से भरा है। फिर फ़र्माता है बात यह है कि इनके इल्म आख़िरत के वक़्त के जानने से तंग आ गए हैं, आजिज़ हो गए हैं। एक क़िरअत में (बल अदरका) है यानी सबके सब इल्मे आख़िरत का सही वक़्त न जानने में बराबर हैं। जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) के सवाल के जवाब में फ़र्माया था कि मेरा और तेरा दोनों का इल्म इसके जवाब से आजिज़ है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानुल ईमान वल इस्लाम वल एहसान व वुजूबुल ईमान...: 8) पस यहाँ भी फ़र्माया कि आख़िरत से उनके इल्म ग़ायब हैं चूँकि कुफ़्फ़ार अपने रब से जाहिल हैं इसलिए यह आख़िरत के भी इंकारी हैं वहाँ तक इनके इल्म पहुँचते ही नहीं। एक क़ौल यह भी है कि आख़िरत में इनको इल्म हासिल होगा लेकिन बेकार है। जैसे और जगह है जिस दिन यह हमारे पास पहुँचेंगे, बड़े ही सुनते देखते हो जाएँगे लेकिन आज ज़ालिम खुली गुमराही में होंगे। फिर फ़र्माता है कि बल्कि यह तो शक ही में हैं, इससे मुराद काफ़िर हैं। जैसे फ़र्मान है (وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا) (18/कहफ़ : 48) यानी यह लोग अपने रब के सामने सफ़बस्ता पेश किये जाएँगे। अल्लाह तआला फ़र्माएगा हमने जिस तरह तुम्हें पहली बार पैदा किया था अब हम तुम्हें लाए हैं लेकिन तुम तो यही समझते रहे कि क़ियामत कोई चीज़ ही नहीं। मुराद यह है कि तुम में से काफ़िर यह समझते रहे। पस मुन्दर्जा बाला आयत में भी भले ज़मीर जिंस की तरफ़ लौटती है लेकिन मुराद कुफ़्फ़ार ही हैं इसीलिए आख़िर में फ़र्माया कि यह तो इससे अँधापे में हैं नाबीना हो रहे हैं, आँखें बंद कर रखी है।

***

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ
وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ
﴿٧٠﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ
بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا
يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ
فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾

तर्जुमा : "काफ़िरों ने कहा कि क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे और हमारे बाप दादा भी क्या हम फिर निकाले जाएँगे? (67) हम और हमारे बाप दादों को बहुत पहले से यह वादे दिये जाते रहे कुछ नहीं यह तो सिर्फ़ अगलों के अफ़साने हैं। (68) कह दे कि जमीन में चल फिरकर ज़रा देखो तो सही कि गुनहगारों का कैसा अंजाम हुआ? (69) तू इनके बारे में ग़म न कर और इनके दाव घात से तंगदिल न हो। (70) कहते हैं कि यह वादा कब है अगर सच्चे हो तो बतला दो। (71) जवाब दे कि शायद कुछ वह चीज़ें जिनकी तुम जल्दी मचा रहे हो तुमसे बहुत ही क़रीब हो गई हों। (72) यक़ीनन तेरा परवरदिगार तमाम लोगों पर बड़े ही फ़ज़्ल वाला है लेकिन अक्सर लोग नाशुक्री करते हैं। (73) बेशक तेरा रब उन सब चीज़ों को भी जानता है जिन्हें उनके दिल छुपा रहे हैं और जिन्हें ज़ाहिर कर रहे हैं। (74) आसमान व ज़मीन की कोई पोशीदा से पोशीदा चीज़ भी ऐसी नहीं जो रोशन और खुली किताब में न हो।" (75)

क़ियामत के मुंकिर दर्दनाक अंजाम से दोचार हुए (आ. 67 से 75) : यहाँ बयान हो रहा है कि मुंकिरीने क़ियामत की समझ में अब तक भी नहीं आया कि मरने और सड़ गल जाने के बाद मिट्टी और राख हो जाने के बाद हम दोबारा कैसे पैदा किये जाएँगे? वह उस पर सख़्त ताज्जुब में हैं। कहते हैं कि मुद्दतों से अगले ज़मानों से यह सुनते तो चले आते हैं लेकिन हमने तो किसी को मरने के बाद जीता होते देखा नहीं सुनी सुनाई बातें हैं उन्होंने अपने अगलों से उन्होंने अपने से पहले वालों से सुनीं, हम तक पहुँचीं लेकिन हैं सब अक़्ल से ख़ाली।

अल्लाह तआला अपने नबी करीम (ﷺ) को जवाब बतलाता है कि इनसे कहो ज़रा ज़मीन में चल

फिरकर देखें कि रसूलों को झुठलाने वालों का और क़ियामत के न मानने वालों का कैसा दर्दनाक हसरतनाक अंजाम हुआ, हलाक और तबाह हो गए और नबियों और ईमान वालों को अल्लाह ने बचा लिया। यह नबियों की सच्चाई की दलील है फिर अपने नबी को तसल्ली दी कि यह तुझे और मेरे कलाम को झुठलाते हैं लेकिन तू उन पर अफ़सोस और रंज न कर। उनके पीछे अपनी जान को घुन न लगा। यह तेरे साथ जो रूबाह बाज़ियाँ कर रहे हैं और जो चालें चल रहे हैं हमें ख़ूब इल्म है तू बेफ़िक्र रह। तुझे और तेरे दीन को फ़रोग़ देने वाले हम हैं, दुनिया जहान पर तुझे हम बुलंदी देंगे।

जल्दी क्यूँ मचाते हो क़ियामत क़रीब है : मुश्रिक चूँकि क़ियामत के आने के क़ाइल ही न थे, जुर्अत से उसे जल्दी तलब करते थे और कहते थे कि अगर सच्चे हो तो बताओ वह कब आएगी? जनाब बारी तआला की तरफ़ से बवास्ता रसूलुल्लाह (ﷺ) जवाब मिल रहा है कि मुम्किन है वह बिलकुल ही क़रीब आ गई हो। जैसे और आयत में है (عَسٰى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا) (17/इस्रा : 51) और जगह है यह अज़ाबों को जल्दी तलब कर रहे हैं और जहन्नम तो काफ़िरों को घेरे हुए है (लकुम) का लाम (रदिफ़) के (अजल) के मअनी को मुतज़म्मिन होने की वजह से है। जैसे कि मुजाहिद (रह.) से मरवी है। फिर फ़र्माया कि अल्लाह तआला का तो इंसानों पर बहुत ही फ़ज़्लो करम है उसकी बेशुमार नेअमतें इनके पास हैं ताहम उनमें के अक्सर नाशुक्रे हैं। जिस तरह तमाम ज़ाहिर उमूर उस पर आशकारा हैं उसी तरह तमाम बातिनी उमूर भी उस पर ज़ाहिर हैं। जैसे फ़र्माया (سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ) (13/रअद : 10) और आयत में है (يَعْلَمُ السِّرَّ وَ اَخْفٰى) (20/ताहा : 7) और आयत में है (اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ) (11/हूद : 5) मतलब यही है कि हर छुपे खुले का वह आलिम है। फिर बयान फ़र्माता है कि हर ग़ायब हाज़िर का उसे इल्म है, वह अल्लामुल ग़ुयूब है, आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें ख़्वाह तुमको उसका इल्म हो या न हो, अल्लाह के यहाँ खुली किताब में लिखी हुई हैं जैसे फ़र्मान है क्या तू नहीं जानता कि आसमान व ज़मीन की हर एक चीज़ का आलिम रब तआला है सबकुछ किताब में मौजूद है अल्लाह पर यह सब कुछ आसान है।

***

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىٓ إِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَإِنَّهٗ
لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَآءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ
يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन यह क़ुरआन बनी इस्राईल के सामने उन अक्सर चीज़ों का फ़ैसला कर रहा है जिनमें यह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76) और यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए यक़ीनन हिदायत व रहमत है। (77) तेरा रब उनके बीच अपने हुक्म से सब फ़ैसले कर देगा। वह बड़ा ही ग़ालिब और दाना है। (78) पस तू अल्लाह ही पर भरोसा रख यक़ीनन तू सच्चे और खुले दीन पर है। (79) बेशक तू न मुर्दों को सुना सकता है और न इन बहरों को अपनी पुकार सुना सकता है जबकि वह पीठ फेरे रूगर्दां जा रहे हों। (80) और न तू अँधों को उनकी गुमराही से रहनुमाई कर सकता है। तू सिर्फ़ उन्हें सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं फिर वह फ़र्मांबरदार बन जाने वाले हो जाते हैं।" (81)

हक़ व बातिल का फ़ैसल क़ुरआन है (आ. 76 से 81) : क़ुरआन पाक की हिदायत बयान हो रही है कि इसमें जहाँ रहमत है वहाँ फ़ुरक़ान भी है और वहाँ बनी इस्राईल यानी हामिलाने तौरात व इंजील के इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला भी है। जैसे हज़रत ईसा (عليه السلام) के बारे में यहूदियों ने मुँह फट बात और निरी तोहमत रख दी थी और ईसाइयों ने उन्हें उनकी हद से आगे बढ़ा दिया था। क़ुरआन ने फ़ैसला किया और इफ़रात व तफ़रीत को छोड़कर हक़ बात बतला दी कि वह अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं, वह अल्लाह तआला के हुक्म से पैदा हुए हैं, उनकी वालिदा निहायत पाकदामन हैं, सही और बिलकुल बेशक व शुब्हा वाली बात यही है। और यह क़ुरआन मोमिनों के दिल की हिदायत है और इनके लिए सरासर रहमत है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला इनके फ़ैसले करेगा जो बदला लेने में ग़ालिब है और बंदा के क़ौल व फ़ेअल का आलिम है। तुझे उसी पर कामिल भरोसा रखना चाहिए, अपने रब की रिसालत की तब्लीग़ में कोताही न करनी चाहिए। भले तू सरासर हक़ पर है, मुख़ालिफ़ीन शक़ी अज़्ली हैं इन पर तेरे रब की बात सादिक़ आ चुकी है कि इन्हें ईमान नसीब नहीं होगा भले तू इन्हें तमाम मोजिज़े दिखा दे। तू मुर्दों को नफ़ा देने वाला कलाम नहीं सुना सकता। इसी तरह यह कुफ़्फ़ार हैं कि इनके दिलों पर पर्दे हैं इनके कानों में बोझ हैं यह भी क़बूलियत का सुनना नहीं सुनेंगे। और न तू बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकता है जबकि वह पीठ मोड़े मुँह फेरे जा रहे हों। और तू अँधों को उनकी गुमराही में रहनुमाई भी नहीं कर सकता, तू सिर्फ़ उन ही को सुना सकता है यानी क़बूल सिर्फ़ वही करेंगे जो कान लगाकर सुनें और दिल लगाकर समझें साथ ही ईमान व इस्लाम भी इनमें हो। अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह (ﷺ) के मानने वाले हों, दीने रब्बानी के क़ाइल व आमिल हों।

***

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

तर्जुमा : "जब इनके ऊपर अज़ाब का वादा साबित हो जाएगा तो हम ज़मीन से उनके लिए एक जानवर निकालेंगे जो उनसे बातें करता होगा कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते थे।" (82)

क़ियामत की निशानियाँ (आ. 82) : जिस जानवर का यहाँ ज़िक्र है यह लोगों के बिलकुल बिगड़ जाने और दीने इलाही को छोड़ बैठने के वक़्त आख़िरी ज़माने में ज़ाहिर होगा, जबकि लोगों ने दीने हक़ को बदल दिया होगा। कुछ कहते हैं कि यह मक्का मुकर्रमा से निकलेगा, कुछ कहते हैं और किसी जगह से जिसकी तफ़्सील अभी आएगी, इंशाअल्लाह! वह बोलेगा बातें करेगा, और कहेगा कि लोग अल्लाह तआला की आयतों का यक़ीन नहीं करते थे। इब्ने जरीर (रह.) इसी को मुख़्तार कहते हैं लेकिन इस क़ौल में नज़र है, वल्लाहु आलम! "इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि वह उन्हें ज़ख़्मी करेगा।" एक रिवायत में है कि वह यह और यह दोनों करेगा। यह क़ौल बहुत अच्छा है और दोनों बातों में कोई मुनाफ़ात नहीं, वल्लाहु आलम! वह अहादीस व आसार जो दाब्बतुल अर्ज़ के बारे में मरवी हैं उनमें से कुछ हम बयान करते हैं, वल्लाहु मुस्तआन। सहाबा किराम (रज़ि.) एक मर्तबा बैठे हुए क़ियामत का ज़िक्र कर रहे थे। "जो रसूलुल्लाह (ﷺ) अरफ़ात से आए हमें ज़िक्र में मशग़ूल देखकर फ़र्माने लगे कि क़ियामत न क़ायम होगी जब तक कि तुम दस निशानियाँ न देख लो। सूरज का मग़्रिब से निकलना, धुआँ, दाब्बतुल अर्ज़, याजूज माजूज का निकलना, ईसा बिन मरियम (عليه السلام) का निकलना, और दज्जाल का निकलना, और मग़्रिब व मश्रिक़ और जज़ीरा अरब में तीन ख़स्फ़ होना, और एक आग का अदन से निकलना जो लोगों का हश्र (इकट्ठा) करेगी, उन ही के साथ रात गुज़ारेगी और उन ही के साथ दोपहर का सोना सोएगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब फ़िल आयातिल्लती तकूनु क़ब्लस्साअत : 2901; अबूदाऊद :4311; तिर्मिज़ी : 2183; इब्ने माजा : 4041; अहमद : 4/6; इब्ने हिब्बान : 6843) अबूदाऊद तयालिसी में है कि "दाब्बतुल अर्ज़ तीन मर्तबा निकलेगा, दूर दराज़ जंगल से ज़ाहिर होगा और उसका ज़िक्र शहर यानी मक्का तक न पहुँचेगा फिर एक लम्बे ज़माने के बाद दोबारा ज़ाहिर होगा और लोगों की ज़बानों पर उसका क़िस्सा चढ़ जाएगा यहाँ तक कि मक्का में भी उसकी शोहरत पहुँचेगी। फिर जब लोग अल्लाह तआला की सबसे ज़्यादा हुर्मत व अज़्मत वाली मस्जिदे हराम में होंगे उसी वक़्त अचानक दफ़अतन दाब्बतुल अर्ज़ उन्हें वहीं दिखाई देगा कि रुक्न व मक़ाम के दरम्यान अपने सर से मिट्टी झाड़ रहा होगा उसे देखकर लोग इधर उधर होने लगेंगे यह मोमिनों की जमाअत के पास जाएगा और इनके मुँह को मिस्ल रोशन सितारे के मुनव्वर कर देगा, न इससे भागकर कोई बच सकता है, न छुपकर यहाँ तक कि एक शख़्स नमाज़ शुरू करके उससे पनाह चाहेगा, यह उसके पीछे से आकर कहेगा कि अब नमाज़ को खड़ा हुआ है? फिर उसकी पेशानी पर निशान कर देगा और चला जाएगा। उसके निशानात के बाद काफ़िर मोमिन का साफ़ तौर पर इम्तियाज़ हो जाएगा, यहाँ तक कि मोमिन काफ़िर से कहेगा कि ऐ काफ़िर! मेरा हक़ अदा कर और काफ़िर मोमिन से कहेगा ऐ मोमिन! मेरा हक़ दे।" यह रिवायत हुज़ैफ़ा बिन उसैद (रज़ि.) से मौक़ूफ़न भी मरवी है। एक रिवायत में है यह हज़रत ईसा (عليه السلام) के ज़माने में होगा जबकि आप बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे होंगे। लेकिन इसकी इस्नाद सही नहीं है। सहीह मुस्लिम में है कि "सबसे पहले जो निशानी ज़ाहिर होगी वह सूरज का मग़्रिब से निकलना और दाब्बतुल अर्ज़ का ज़ुहा के वक़्त आ जाना है। उन दोनों में से जो पहले होगा उसके बाद ही दूसरा होगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ी ख़ुरूजिद्दज्जाल व मकसहू फ़िल अर्ज़ : 2941; अबूदाऊद : 4310; इब्ने माजा : 4069) सहीह मुस्लिम में है आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "छः चीज़ों के आने से पहले नेक आमाल कर लो। सूरज का मग़्रिब (पश्चिम) से

निकलना, और धूएँ का आना और दज्जाल का आना और दाब्बतुल अर्ज़ का आना और तुममें से हर एक का ख़ास अम्र और आम अम्र।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ी बक़िय्यति मिन अहादीसिद्दज्जाल : 2947; अहमद : 2/324; इब्ने हिब्बान : 6790) यह हदीस और सनदों से दूसरी किताबों में भी है। (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब अल्आयात : 4056; व सनदुहू हसन) अबू दाऊद तयालिसी में है ''आप (ﷺ) फ़र्माते हैं दाब्बतुल अर्ज़ के साथ हज़रत मूसा (عليه السلام) की लकड़ी होगी और हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की अंगूठी होगी, काफ़िरों की नाक पर लकड़ी से मुहर लगाएगा और मोमिनों के मुँह अंगूठी से मुनव्वर कर देगा यहाँ तक कि एक दस्तरख़्वान पर बैठे हुए मोमिन काफ़िर सब ज़ाहिर हो जाएँगे। (मुस्नद तयालिसी : 2564; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) एक और हदीस में जो मुस्नद अहमद में है मरवी है कि काफ़िरों की नाक पर अंगूठी से मुहर करेगा और मोमिनों के चेहरे लकड़ी से चमका देगा। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिन्नम्ल : 3187; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अली बिन ज़ेद ज़ईफ़ और औस रावी मज्हूल है। इब्ने माजा : 4066; अहमद : 2/295; हाकिम : 4/485) इब्ने माजा में बुरैदा (रज़ि.) से रिवायत है कि ''मुझे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का के पास के एक जंगल में गए। मैंने देखा कि एक ख़ुश्क ज़मीन है जिसके आसपास रेत है, फ़र्माने लगे यहीं से दाब्बतुल अर्ज़ निकलेगा।'' बुरैदा (रज़ि.) कहते हैं उसके चार पैर होंगे, सफ़ा की खुड में से निकलेगा। इस क़द्र तेज़ी से निकलेगा कि जैसे कोई बहुत ही तेज़ रफ़्तार घोड़ा हो, ताहम तीन दिन में उसके जिस्म का तीसरा हिस्सा भी न निकला होगा। अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से जब उसकी बाबत पूछा गया तो आपने फ़र्माया, जियाद में एक चट्टान है उसके नीचे से निकलेगा। मैं अगर वहाँ होता तो मैं तुम्हें वह चट्टान दिखा देता, यह सीधा मश्रिक़ की तरफ़ जाएगा और इस ज़ोर से चिल्लाएगा कि हर तरह उसकी आवाज़ पहुँच जाएगी फिर शाम की तरफ़ जाएगा, वहाँ भी चीख़ लगाकर फिर यमन की तरफ़ मुतवज्जा होगा यहाँ भी आवाज़ लगाकर शाम के वक़्त मक्का से चलकर सुबह को अस्फ़ान पहुँच जाएगा। लोगों ने पूछा, फिर क्या होगा? फ़र्माया फिर मुझे मालूम नहीं।''

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का क़ौल है कि ''मुज़दलिफ़ा की रात को निकलेगा।'' हज़रत उज़ैर (عليه السلام) के एक कलाम की हिकायत है कि सदूम के नीचे से यह निकलेगा उसके कलाम को सब सुनेंगे। हामिला के हमल वक़्त से पहले गिर जाएँगे, मीठा पानी खारा हो जाएगा, दोस्त दुश्मन हो जाएँगे, हिक्मत जल जाएगी, इल्म उठ जाएगा, नीचे की ज़मीन बातें करेगी, इंसान की वह तमन्नाएँ होंगी जो कभी पूरी न हों, उन चीज़ो की कोशिश होगी जो कभी हासिल न हों, इस बारे में काम करेंगे जिसे खाएँगे नहीं। अबू हुरैरा (रज़ि.) का क़ौल है कि ''उसके जिस्म पर सब रंग होंगे। उसके दो सींगों के बीच सवार के लिए एक फ़र्सख़ की राह होगी।'' इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''यह मोटे नेज़े और भाले की तरह का होगा।'' हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''उसके बाल होंगे, खुर होंगे, दाढ़ी होगी, दुम न होगी। तीन दिन में बमुश्किल एक तिहाई बाहर आएगा, हालाँकि तेज़ घोड़े की चाल चलता होगा।'' इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) का क़ौल है कि ''उसका सिर बैल के सिर के जैसा होगा, आँखें ख़िंज़ीर की आँखों जैसी होगी, कान हाथी जैसे होंगे, सींग की जगह ऊँट की तरह होगी, शुतुरमुर्ग़ जैसी गर्दन होगी, शेर जैसा सीना होगा, चीते जैसा रंग होगा, बिल्ली जैसी कमर होगी, मेंढ़े

जैसी दुम होगी, ऊँट जैसे पैर होंगे, हर दो जोड़ के बीच बारह गज़ का फ़ासला होगा। हज़रत मूसा (ﷺ) की लकड़ी और हज़रत सुलेमान (ﷺ) की अंगूठी साथ होगी। हर मोमिन की पेशानी पर अपने असा-ए-मूसा से निशान कर देगा जो फैल जाएगा और उसका चेहरा मुनव्वर हो जाएगा और हर काफ़िर के चेहरे पर ख़ातिमे सुलेमानी से निशान लगा देगा जो फैल जाएगा और उसका सारा चेहरा स्याह हो जाएगा। अब तो इस तरह मोमिन काफ़िर ज़ाहिर हो जाएँगे कि ख़रीदो फ़रोख़्त के वक़्त खाने पीने के वक़्त लोग एक दूसरे को ऐ मोमिन! और ऐ काफ़िर! कहकर बुलाएँगे।'' दाब्बतुल अर्ज़ एक एक का नाम लेकर उनको जन्नत की ख़ुशख़बरी या जहन्नम की बदख़बरी सुनाएगा यही मअनी व मतलब इस आयत का है।

***

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ
قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ
عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾

तर्जुमा : "जिस दिन हम हर उम्मत में से उन लोगों के गिरोह को जो हमारी आयतों को झुठलाते थे घेरकर लाएँगे फिर वह सबके सब अलग कर दिये जाएँगे। (83) जब सबके सब आ पहुँचेंगे तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि तुमने मेरी आयतों को बावजूद यह कि तुम्हें उनका पूरा इल्म न था क्यूँ झुठलाया और यह भी बतलाओ कि तुम क्या कुछ करते रहे? (84) बसबब इसके कि उन्होंने ज़ुल्म किया था उन पर बात जम जाएगी और वह कुछ बोल न सकेंगे। (85) क्या वह देख नहीं रहे कि हमने रात को इसलिए बनाया है कि वह उसमें आराम हासिल करें और दिन को हमने दिखलाने वाला बनाया है। यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान व यक़ीन रखते हैं।" (86)

यह हश्र का मैदान है (आ. 83 से 86) : अल्लाह की बातों को न मानने वालों का अल्लाह तआला के सामने हश्र होगा और वहाँ उन्हें डाँट डपट होगी ताकि उनकी ज़िल्लत हिक़ारत हो। हर क़ौम में से हर ज़माने के ऐसे लोगों के जत्थे अलग अलग पेश होंगे। जैसे फ़र्मान है (اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَ اَزْوَاجَهُمْ) (37/साफ़्फ़ात : 22) ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को जमा करो, और जैसे फ़र्मान है (وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ) (81/तक्वीर : 7) जबकि नफ़्सों की जोड़ियाँ मिलाई जाएँगी, यह सब एक दूसरों को धक्के देंगे। पहले वाले आख़िर वालों को रद्द कर देंगे। फिर सबके सब जानवरों की तरह हँकाकर अल्लाह तआला के सामने लाए

जाएँगे उनके हाज़िर होते ही वह मुंतक़िमे हक़ीक़ी निहायत ग़ुस्सा से उनसे पूछताछ करेंगे, यह नेकियों से ख़ाली हाथ होंगे। जैसे फ़र्माया (فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝) (75/ क़ियामा : 31, 32) यानी न उन्होंने सच्चाई की थी, न नमाज़ें पढ़ी थीं बल्कि झुठलाया था और मुँह मोड़ा था। पस उन पर हुज्जत साबित हो जाएगी और कोई उज़्र न कर सकेंगे। जैसे फ़र्मान है) هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝) (77/मुर्सलात : 35, 36) यह वह दिन है कि बोल न सकेंगे और न कोई मअक़ूल उज़्र पेश कर सकेंगे और न ग़ैर मअक़ूल उज़्र की इजाज़त पाएँगे। पस उनके ज़िम्मे बात साबित हो जाएगी, हक्के बक्के और हैरान रह जाएँगे, अपने ज़ुल्म का बदला ख़ूब पाएँगे। दुनिया में ज़ालिम थे अब जिसके सामने खड़े होंगे वह आलिमुल ग़ैब है कोई बात बनाए न बनेगी। फिर अपनी क़ुदरते कामिला का बयान फ़र्माता है और अपनी बुलंदी शान बतलाता है और अपनी अज़ीमुश्शान सल्तनत दिखाता है जो खुली दलील है उसकी इताअत की फ़र्ज़ियत पर और उसके हुक्मों के बजा लाने और उसके मनाकर्दा कामों से रुके रहने की ज़रूरत पर, और उसके नबियों को सच्चा मानने की असलियत पर कि उसने रात को पुरसुकून बनाया ताकि तुम उसमें आराम हासिल कर लो और दिन भर की थकान दूर कर लो और दिन को रोशन बनाया ताकि तुम अपनी रोज़ी की तलाश कर लो, सफ़रे तिजारत कारोबार आसानी से कर सको। यह तमाम चीज़ें एक मोमिन के लिए तो काफ़ी से ज़्यादा दलील हैं।

***

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ
وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝٨٧ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ
اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝٨٨ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ۝٨٩ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٩٠

तर्जुमा : जिस दिन सूर फूँका जाएगा जो सबके सब आसमानों वाले और ज़मीन वाले घबरा घबरा उठेंगे मगर जिसे अल्लाह तआला चाहे और सारे के सारे आजिज़ व पस्त होकर उसके सामने हाज़िर होंगे। (87) तू पहाड़ों को अपनी जगह जमे हुए ख़याल कर रहा है लेकिन वह भी बादल की तरह उड़ते फिरेंगे। यह है सन्अत अल्लाह की जिसने हर चीज़ को मज़बूत बनाया है जो कुछ तुम करते हो उससे वह बाख़बर है। (88) जो शख़्स नेक अमल लाएगा उसे उससे

बेहतर बदला मिलेगा और वह उस दिन की घबराहट से बेख़ौफ़ होंगे। (89) और जो बुराई लेकर आएँगे वह औंधे मुँह आग में धकेल दिये जाएँगे। सिर्फ़ वही बदला दिये जाओगे जो कुछ करते रहे।" (90)

क़ियामत की कुछ और निशानियाँ (आ. 87 से 90) : अल्लाह तआला क़ियामत की घबराहट और बेचैनी को बयान कर रहा है सूर में इस्राफ़ील बहुक्मे इलाही फूँक मारेंगे उस वक़्त ज़मीन पर बदतरीन लोग होंगे देर तक नफ़्ख़ा फूँकते रहेंगे जिससे सब परेशान हाल हो जाएँगे, सिवाए शहीदों के जो अल्लाह तआला के यहाँ ज़िन्दा हैं और रोज़ियाँ दिये जाते हैं। अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से एक दिन किसी शख़्स ने पूछा कि यह आप क्या फ़र्माया करते हैं कि इतने इतने वक़्त तक क़ियामत आ जाएगी। आपने सुब्हानल्लाह या ला इलाहा इल्लल्लाह या और कोई कलिमा बतौर ताज्जुब कहा और कहने लगे, सुनो! अब तो जी चाहता है कि किसी से कोई हदीस बयान न करूँ। मैंने यह कहा था कि अन्क़रीब तुम बड़ी बड़ी अहम बातें देखोगे, बैतुल्लाह ख़राब हो जाएगा और यह होगा और वह होगा वग़ैरह। रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "दज्जाल मेरी उम्मत में चालीस ठहरेंगे।" मैं नहीं जानता कि चालीस दिन महीने या चालीस साल। फिर अल्लाह तआला (हज़रत ईसा عليه السلام को नाज़िल करेगा) वह सूरत शक्ल में बिलकुल उर्वा बिन मसऊद (रज़ि.) जैसा होगा, आप उसे ढूँढ निकालेंगे और उसे हलाक कर देंगे। फिर सात साल ऐसे गुज़रेंगे कि दुनिया भर में दो शख़्स ऐसे न होंगे जिनमें आपस में बुग़्ज़ व अदावत हो। फिर अल्लाह तआला शाम की तरफ़ से एक भीनी भीनी ठण्डी हवा चलाएगा जिससे हर मोमिन फ़ौत हो जाएगा, एक ज़र्रे के बराबर भी जिसके दिल में ख़ैर या ईमान होगा उसकी रूह भी क़ब्ज़ हो जाएगी। यहाँ तक कि अगर कोई शख़्स किसी पहाड़ की कोख में घुस गया होगा तो यह हवा वहीं जाकर उसे फ़ना कर देगी। अब ज़मीन पर सिर्फ़ बुरे लोग रह जाएँगे जो परिन्दों जैसे हल्के और चौपायों जैसे बेअक़्ल होंगे, उनमें से भलाई बुराई की तमीज़ उठ जाएगी, उनके पास शैतान पहुँचेगा और कहेगा तुम शर्माते नहीं कि उन बुतों की पूजा छोड़े बैठे हो? यह बुतपरस्ती शुरू कर देंगे। अल्लाह तआला उन्हें रोज़ियाँ पहुँचाता रहेगा और ख़ुश व ख़ुर्रम रखेगा। यह उसी मस्ती में होंगे जो सूर फूँकने का हुक्म मिल जाएगा जिसके कान में आवाज़ पड़ी वहीं दाएँ बाएँ लौटने लगेगा। सबसे पहले उसे वह शख़्स सुनेगा जो अपने ऊँटों के लिए हौज़ ठीक ठाक कर रहा होगा। सुनते ही बेहोश हो जाएगा। और सब लोग बेहोश होना शुरू हो जाएँगे फिर अल्लाह तआला मिस्ल शबनम के बारिश करेगा जिससे लोगों के जिस्म उगने लगेंगे फिर दोबारा नफ़्ख़ा फूँका जाएगा जिससे सब उठ खड़े होंगे, वहीं आवाज़ लगेगी कि लोगों! अपने रब के पास चलो, वहाँ ठहरो तुमसे सवाल जवाब होगा। फिर कहा जाएगा कि आग का हिस्सा निकालो, पूछा जाएगा कि कितनों में से कितने? तो कहा जाएगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे। यह होगा वह दिन जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, यह होगा वह दिन जब पिण्डली (तजल्ली रब्बानी) की ज़ियारत कराई जाएगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ी ख़ुरूजिद्दज्जाल व मकसहू फ़िल अर्ज़ व नुज़ूले ईसा (عليه السلام) व क़तलुहू इय्याहू... : 2904; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11629; अहमद : 2/166; इब्ने हिब्बान : 7353) पहला नफ़्ख़ा तो घबराहट का नफ़्ख़ा होगा दूसरा बेहोशी और मौत का तीसरा दोबारा जीकर रब्बुल आलमीन के दरबार में पेश होने का, अतौहू की

क़िरअत अलिफ़ की मद के साथ भी मरवी है। हर एक ज़लीलो ख़ार होकर पस्त व लाचार होकर बेबस और मजबूर होकर मातहत और महकूम होकर अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होगा, एक से भी बन न पड़ेगी कि उसकी हुक्म की नाफ़र्मानी करे जैसे फ़र्मान है (يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ) (17/बनी इस्राईल : 52) जिस दिन अल्लाह तआला तुम्हें बुलाएगा और तुम उसकी हम्द बयान करते हुए उसकी फ़र्मांबरदारी करोगे। और आयत में है कि फिर जब वह तुम्हें ज़मीन में से बुलाएगा तो तुम सब निकल खड़े होओगे। सूर की हदस में है कि तमाम रूहें सूर के सूराख़ में रखी जाएँगी और जब जिस्म क़ब्रों से उग रहे होंगे, सूर फूँक दिया जाएगा, रूहें उड़ने लगेंगी। मोमिनों की रूहें नूरानी होंगी, काफ़िरों की रूहें अंधेरे और ज़ुल्मत वाली होंगी। रब्बुल आलमीन ख़ालिक़े कुल फ़र्मा देगा कि मेरे जलाल की, मेरी इज़्ज़त की क़सम है, हर रूह अपने बदन में चली जाए। जिस तरह ज़हर रग व पे में सरायत करता है उस तरह रूहें अपने जिस्मों में फैल जाएगी और लोग अपनी अपनी जगह से सर झाड़ते हुए खड़े होंगे। जैसे फ़र्माया कि उस दिन क़ब्रों से इस तरह जल्दी निकलेंगे जिस तरह अपनी इबादत की तरफ़ दौड़े भागे जाते थे। यह बुलंद पहाड़ जिन्हें तुम गड़ा हुआ और जमा हुआ देख रहे हो यह उस दिन उड़ते बादलों की तरह इधर उधर फैले हुए और टुकड़े टुकड़े हुए दिखाई देंगे इनका चूरा होगा, यह चलने फिरने लगेंगे और आख़िर चूरा चूरा होकर बेनामो निशान रह जाएँगे। ज़मीन साफ़ हथेली जैसी बेनीच ऊँच की हो जाएगी। यह है सिफ़ उस सन्नाअ की जिसकी हर सिन्अत हिक्मत वाली मज़बूत पुख़्ता और आला होती है जिसकी आलातर क़ुदरते इंसानी समझ में नहीं आ सकती, बंदों के तमाम आमाले ख़ैर व शर्र से वह वाक़िफ़ है। हर हर काम की सज़ा जज़ा वह ज़रूर देगा। इस इख़्तिसार के बाद तफ़्सील बयान की कि नेकी इख़्लास तौहीद लेकर जो आएगा वह एक के बदले दस पाएगा और उस दिन की घबराहट से निडर रहेगा और लोग घबराहट में अज़ाब में होंगे, यह अम्न में सवाब में होगा बुलंद व बालाख़ानों में राहत व इत्मिनान से होगा। और जिसकी बुराइयाँ ही बुराइयाँ हों या जिसकी बुराइयाँ भलाइयों से ज़्यादा हों उसे उनका बदला मिलेगा, अपनी अपनी करनी अपनी अपनी भरनी। अक्सर मुफ़स्सिरीन से मरवी है कि बुराई से मुराद शिर्क है।

***

إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ
أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾ وَأَنْ أَتْلُوَا الْقُرْآنَ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ
وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَتَعْرِفُونَهَا ۚ
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

तर्जुमा : "मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर के परवरदिगार की इबादत करता रहूँ जिसने इसे हुर्मत वाला बनाया है। जिसकी मिल्कियत हर चीज़ पर है और मुझे यह भी फ़र्माया गया है कि मैं फ़र्मांबरदारों में हो जाऊँ।(91) और मैं क़ुरआन की तिलावत करता रहूँ, जो राहे रास्त पर आ जाए अपने नफ़ा के लिए राहे रास्त पर आएगा और जो बहक जाए तो तू कह दे कि मैं तो सिर्फ़ होशियार करने वालों में से हूँ। (92) कह दे कि तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही को सज़ावार हैं। वह अन्क़रीब अपनी निशानियाँ दिखाएगा जिन्हें तुम ख़ुद पहचान लोगे जो कुछ तुम करते हो उससे तेरा रब ग़ाफ़िल नहीं।" (93)

कअबा की इज़्ज़त व हुर्मत (आ. 91 से 93) : अल्लाह तआला अपने नबी करीम मुहतरम से फ़र्माता है कि आप (ﷺ) लोगों में ऐलान कर दें कि मैं इस शहरे मक्का के रब की इबादत का और इसकी फ़र्मांबरदारी का मामूर हूँ। जैसे इर्शाद है कि ऐ लोगों! अगर तुम्हें मेरे दीन में शक है तो हुआ करे, मैं तो जिनकी तुम इबादत कर रहे हो उनकी इबादत हर्गिज़ न करूँगा। मैं उसी रब तआला का आबिद हूँ जो तुम्हारी मौत व ज़िन्दगी का मालिक है। यहाँ मक्का की रुबूबियत की इज़ाफ़त सिर्फ़ बुज़ुर्गी और शराफ़त के इज़्हार के लिए है, जैसे फ़र्माया है (فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝) (106/कुरैश : 3) इन्हें चाहिए कि इस शहर के रब तआला की इबादत करें जिसने इन्हें औरों की भूख के वक़्त आसूदा और औरों के ख़ौफ़ के वक़्त बेख़ौफ़ कर रखा है। यहाँ फ़र्माया कि इस शहर को हुर्मत व इज़्ज़त वाला उसने बनाया है।

जैसे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे मक्का वाले दिन फ़र्माया, "कि यह शहर उसी वक़्त से बाहुर्मत है जबसे अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया है। यह अल्लाह तआला की हुर्मत देने से हुर्मत वाला ही रहेगा यहाँ तक कि क़ियामत आ जाए, न इसके काँटे काटे जाएँ, न इसका शिकार डराया जाए, न इसमें गिरी पड़ी चीज़ किसी की उठाई जाए हाँ! जो पहचानकर मालिक को पहुँचाना चाहे उसके लिए जाइज़ है। इसकी घास भी न काटी जाए, आख़िर तक। (सहीह बुख़ारी, किताब जज़ाउस्सैद, बाब ला यहिल्लुल क़िताल बि मक्कत : 1734; सहीह मुस्लिम : 1353; अबूदाऊद : 218; तिर्मिज़ी : 1590; इब्ने हिब्बान : 3720; अहमद : 1/315) यह हदीस बहुत सी सनदों से बहुत सी किताबों में मरवी है जैसे कि अहकाम की किताबों में तफ़सील मौजूद है, व लिल्लाहिल हम्द। फिर उस ख़ास चीज़ की मिल्कियत साबित करके अपनी आम मिल्कियत का ज़िक्र फ़र्माता है कि हर चीज़ का रब और मालिक वही है उसके सिवा न कोई मालिक न मअबूद। और मुझे यह हुक्म भी मिला है कि मुवह्हिद मुख़्लिस मुतीअ और फ़र्मां बरदार होकर रहूँ। और मुझे यह भी फ़र्माया गया है कि मैं लोगों को अल्लाह तआला का कलाम पढ़कर सुनाऊँ। जैसे फ़र्मान है कि हम यह आयतें और यह हिक्मत वाला ज़िक्र तेरे सामने तिलावत करते हैं।

और आयत में है कि हम तुझे मूसा (عليه السلام) और फ़िरऔन का सही वाक़िया सुनाते हैं। मतलब यह है कि मैं रब्बानी मुबल्लिग़ हूँ मैं तुम्हें जगा रहा हूँ तुम्हें डरा रहा हूँ अगर मेरी मानकर सीधे रास्ते पर आओगे तो अपना ही भला करोगे और अगर मेरी न मानी तो मैं अपने फ़र्ज़े तब्लीग़ को अदा करके सुबुकदोश हो गया हूँ।

अगले रसूलों ने भी यही किया था अल्लाह तआला का कलाम पहुँचाकर अपना दामन पाक कर लिया। जैसे फ़र्मान है तुझ पर सिर्फ़ पहुँचा देना है हिसाब हमारे ज़िम्मे है और फ़र्माया तू सिर्फ़ डरा देने वाला है और हर चीज़ पर वकील अल्लाह तआला ही है। अल्लाह के लिए ता'रीफ़ है जो बन्दों की बेख़बरी में उन्हें अज़ाब नहीं करता बल्कि पहले अपना पैग़ाम पहुँचाता है अपनी हुज्जत ख़त्म करता है भला बुरा समझा देता है हम तुम्हें ऐसी आयतें दिखाएँगे कि तुम ख़ुद क़ाइल हो जाओगे।

जैसे फ़र्माया (سَنُرِيهِمْ اٰيٰتِنَا)(41/हामीम सज्दा : 53) हम इन्हें ख़ुद इनके नफ़्सों में और इनके आसपास ऐसी निशानियाँ दिखाएँगे कि जिनसे इन पर हक़ ज़ाहिर हो जाए। अल्लाह तआला तुम्हारी करतूत से ग़ाफ़िल नहीं बल्कि उसका इल्म हर छोटी बड़ी चीज़ का एहाता किये हुए है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इर्शाद है "देखो लोगों! अल्लाह तआला को किसी चीज़ से अपने किसी अमल से ग़ाफ़िल न जानना, वह एक एक मच्छर से एक एक पतंगे से और एक एक ज़र्रे से बाख़बर है।" (इब्ने अबी हातिम, व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, अबू उमय्या बिन यअ्ला सक़फ़ी सख़्त ज़ईफ़ रावी है। देखिए (लिसानुल मीज़ान : 1/445; 7/12) और सनद भी मुन्क़तअ है।)

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) से मरवी है कि "अगर वह ग़ाफ़िल होता तो इंसान के क़दमों के निशान से जिन्हें हवा मिटा देती है ग़फ़्लत कर जाता लेकिन वह उन निशानात का भी हाफ़िज़ व आलिम है।" इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) अक्सर इन दो शेअरों को पढ़ते रहा करते थे जो या तो आप (रह.) के हैं या किसी और के,

इज़ा मा ख़लौतद्दहरा यौमन फ़ला तक़ुल ख़लौतु वलाकिन क़ुल अलय्या रक़ीबु

वला तहसबन्नल्लाह यग़्फ़लु साअतन वला अन्ना मा यख़्फ़ा अलैहि यग़ीबु

यानी "जब तू किसी वक़्त भी ख़ल्वत और तंहाई में हो तो अपने आपको तंहा और अकेला न समझना बल्कि अपने रब को वहाँ भी हाज़िर नाज़िर जानना, वह एक पल के लिए भी किसी से ग़ाफ़िल नहीं, न कोई मख़्फ़ी और पोशीदा चीज़ उसके इल्म से बाहर है।"

अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से सूरह नम्ल की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह क़सस

سورۃ القصص

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-राह

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह कसस - 28

आयातः 88 मक्की सूरह, पैराग्राफः 9

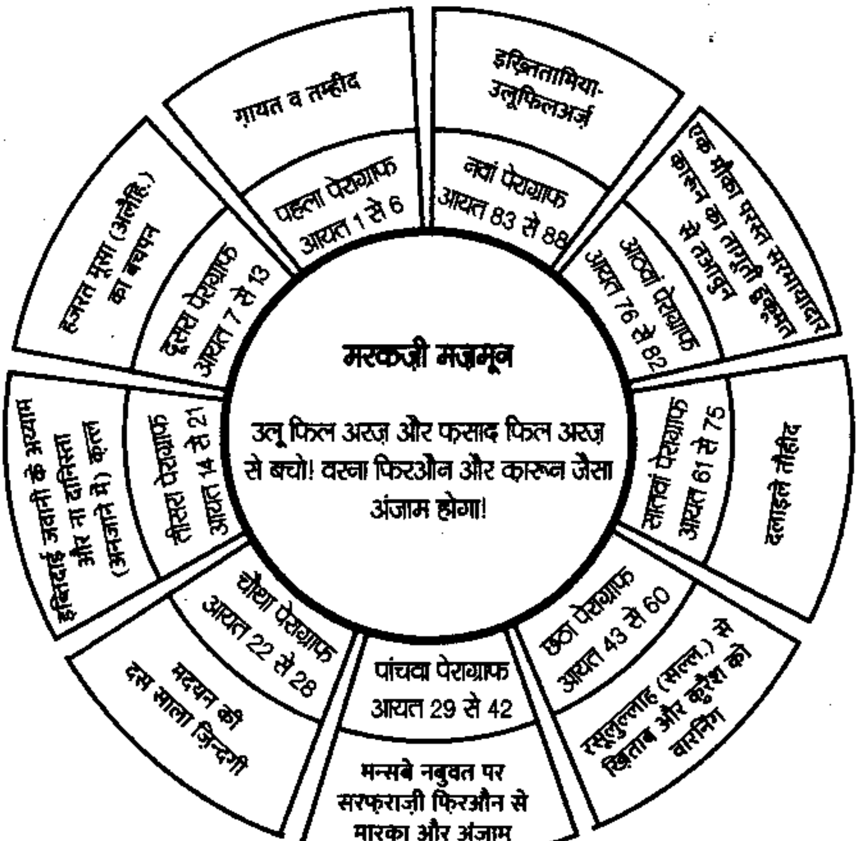

जमानए नुज़ूल :

1. सूरह कसस, सूरह शोअरा और सूर-ए-नमल के बाद, रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कयामे मक्का के तीसरे दौर (6 से 10 नबवी) में नाज़िल हुई, जब कुरैशी कयादत को फ़िरऔन, हामान और कारून के अंजाम से इबरत हासिल करने का मश्वरा और रसूलुल्लाह (सल्ल.) को कुरैश के मुजरेमीन का मददगार बनने से रोक दिया गया।
2. आयत 56 **"इन्नक ला तहदी मन अहबबता"** रजब 10 नबवी में, हज़रत अबू तालिब के इंतेकाल के मौके पर नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह क़सस़

मुस्नद अह़मद में ह़ज़रत मअ़दी करब (रह़.) से मरवी है कि हम ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (बिन मसऊ़द) (रज़ि.) के पास आये और उनसे दरख़्वास्त की कि वह हमें सूरह (त़ा सीम मीम) सौ आयतों वाली पढ़कर सुनाएँ तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, मुझे तो यह याद नहीं तुम (ह़ज़रत) ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) से जाकर सुनो, जिन्हें ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिखाई है। चुनाँचे हम आप (रज़ि.) के पास गए और आपने हमें मुबारक सूरत पढ़कर सुनाई। (अह़मद : 1/419; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्मुअजमुल कबीर : 3614; ह़िल्यतुल औलिया : 1/143; अबू इस्ह़ाक़ सबीई मुदल्लस हैं)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

طٰسٓمّٓ ① تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ② نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ
بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ③ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا
يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ④ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً
وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ⑤ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا
مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ⑥

तर्जुमा : ''त़ा सीम मीम (1) यह आयतें हैं रोशन किताब की। (2) हम तेरे सामने मूसा (عليه السلام) और फ़िरऔन का सही वाक़िया बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3) यक़ीनन फ़िरऔन ने ज़मीन में सरकशी कर रखी थी और वहाँ के लोगों को गिरोह गिरोह बना रखा था और उनके एक फ़िर्क़े को कमज़ोर कर रखा था और उनके लड़कों को तो क़त्ल कर

डालता था और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देता था, बेशक व शुब्हा वह था ही मुफ़्सिदों में से। (4) फिर हमारी चाहत हुई कि हम उन पर करम फ़र्माएँ जिन्हें ज़मीन में बेहद कमज़ोर कर दिया गया था, और हमने उन्हें पेशवा बनाने और उन्हें वारिस बनाने का इरादा कर लिया। (5) और यह भी कि हम उन्हें ज़मीन में क़ुदरत व इख़्तियार दें और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को वह दिखा दें जिससे वह डर रहे थे।" (6)

फ़िरऔन के बनी इस्राईल पर मज़ालिम (आ. 1 से 6) : हुरूफ़े मुक़त्तआ का बयान पहले गुज़र चुका है। यह आयतें हैं वाज़ेह जली रोशन साफ़ और खुले क़ुरआन की। तमाम कामों की असलियत सब गुज़िश्ता और आइन्दा की ख़बरें इसमें हैं और सब सच्ची और खुली। हम तेरे सामने मूसा(عليه السلام) और फ़िरऔन का सच्चा वाक़िया बयान करते हैं। जैसे और आयत में है हम तेरे सामने बेहतरीन वाक़िया बयान करते हैं इस तरह कि गोया तू उसके होने के वक़्त वहाँ मौजूद था। फ़िरऔन एक मुतकब्बिर सरकश और बद दिमाग़ इंसान था उसने लोगों पर बुरी तरह क़ब्ज़ा जमा रखा था और उन्हें आपस में लड़वा लड़वाकर उनमें फूट और इख़्तिलाफ़ डलवाकर उन्हें कमज़ोर करके ख़ुद उन पर जबर व तअद्दी के साथ सल्तनत कर रहा था। ख़ुसूसन बनी इस्राईल को तो उस ज़ालिम ने नेस्तो नाबूद करने का इरादा कर लिया था। हालाँकि मज़हबी ऐतिबार से उस वक़्त यह सब में अच्छे थे। उसने उन्हें बुरी तरह ज़लील कर रखा था। तमाम घटिया काम उनसे लिया करता था और दिन रात यह बेचारे बेगार में घिसटते रहते थे, उस पर भी उसका ग़ुस्सा ठण्डा न होता था, यह उनके लड़कों को क़त्ल कर डालता था ताकि यह ताक़त व कुव्वत वाले न हो जाएँ और इसलिए भी कि यह ज़लीलो ख़्वार हैं और इसलिए भी कि उसे डर था कि उनमें से एक बच्चे के हाथों मेरी सल्तनत तबाह होने वाली है। बात यह है कि जब हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) मिस्र की हुकूमत में से अपनी बीवी हज़रत सारा (عليها السلام) के साथ जा रहे थे और यहाँ के सरकश बादशाह ने हज़रत सारा (عليها السلام) को लौण्डी बनाने के लिए आपसे छीन लिया था जिन्हें अल्लाह तआला ने उस काफ़िर से महफ़ूज़ रखा और उसे उन पर दस्तदराज़ी करने की कुदरत ही हासिल न हुई, उस वक़्त हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने बतौर पेशनेगोई फ़र्माया था कि मेरी औलाद में से एक की औलाद के एक लड़के के हाथों मुल्के मिस्र इस क़ौम से जाता रहेगा और इनका बादशाह उसके सामने ज़िल्लत के साथ हलाक होगा, चूँकि बनी इस्राईल में यह रिवायत चली आ रही थी और उनके दर्स में भी यह थी जिसे क़िब्ती भी सुनते थे जो फ़िरऔन की क़ौम के थे, उन्होंने दरबार में मुख़बिरी की जबसे फ़िरऔन ने यह ज़ालिमाना और सफ़्फ़ाकाना क़ानून बना दिया कि बनी इस्राईल के बच्चे क़त्ल कर दिये जाएँ और उनकी बच्चियाँ छोड़ दी जाएँ। लेकिन रब को जो मंज़ूर होता है वह अपने वक़्त पर होकर ही रहता है। हज़रत मूसा (عليه السلام) ज़िन्दा रह गए और अल्लाह तआला ने आप (عليه السلام) के हाथों उस सरकश को ज़लीलो ख़्वार किया, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! चुनाँचे फ़र्मान है कि हमने उन कमज़ोरों और ज़ईफ़ों पर रहम करना चाहा। ज़ाहिर है कि अल्लाह की चाहत का पूरा होना यक़ीनी है जैसे फ़र्माया (وَ أَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ) (7/आराफ़ : 137) हमने उस गिरी पड़ी क़ौम को उनकी तमाम चीज़ों का मालिक बना दिया। फ़िरऔन ने अपनी तमामतर ताक़त का मुज़ाहिरा किया लेकिन उसे रब तआला की ताक़त का अंदाज़ा न था। आख़िर अल्लाह तआला का इरादा ग़ालिब रहा और जिस एक बच्चे

की ख़ातिर हज़ारों बेगुनाह बच्चों का ख़ूने नाहक़ बहाया था उस बच्चे को कुदरत ने उसी की गोद में पलवाया परवान चढ़ाया और उसी के हाथों उसका उसके लश्कर का और उसके मुल्क व माल का ख़ात्मा कराया ताकि वह जान ले और मान ले कि वह अल्लाह तआला का एक ज़लील मिस्कीन बेदस्त व पा ग़ुलाम था और रब की चाहत पर किसी की चाहत ग़ालिब नहीं रह सकती। हज़रत मूसा (عليه السلام) और उनकी क़ौम को अल्लाह तआला ने मिस्र की सल्तनत दी और फ़िरऔन जिससे ख़ाइफ़ था वह सामने आ गया और तबाह व बर्बाद हुआ, फ़ल्हम्दु लिल्लाह!

***

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ

وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ

لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۗ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝٨

وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّىْ وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ

نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

तर्जुमा : "हमने मूसा (عليه السلام) की माँ को वही (पैग़ाम) की कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे इसकी निस्बत कोई ख़तरा मालूम हो तो इसे दरिया में बहा देना और कोई डर ख़ौफ़ या रंजो-ग़म न करना हम यक़ीनन उसे तेरी तरफ़ लौटाने वाले हैं और उसे अपने पैग़म्बरों में बनाने वाले हैं। (7) आख़िर फ़िरऔन के लोगों ने उस बच्चे को उठा लिया कि आख़िरकार यही बच्चा उनका दुश्मन हुआ ओर उनके रंज का सबब बना कुछ शक नहीं कि फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर थे ही ख़ताकार (8) और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि यह तो मेरी और तेरी आँखों की ठण्डक है, इसे क़त्ल न करो बहुत मुम्किन है कि यह हमें कोई फ़ायदा पहुँचाए या हम इसे अपना ही बेटा बना लें यह लोग कुछ शऊर ही न रखते थे।" (9)

जिसको अल्लाह बचाना चाहे उसे कोई नहीं मार सकता (आ. 7 से 9) : मरवी है कि जब बनी इस्राईल के हज़ारों बच्चे क़त्ल हो चुके तो क़िब्तियों को अंदेशा हुआ कि अगर बनी इस्राईल ख़त्म हो गए तो जितने ज़लील काम और बेहूदा ख़िदमतें हुकूमत उनसे ले रही है, कहीं हमसे न लेने लगे तो दरबार में मीटिंग हुई और यह राय क़रार पाई कि एक साल मार डाले जाएँ और दूसरे साल न क़त्ल किये जाएँ। हज़रत हारून

(ﷺ) उस साल पैदा हुए जिस साल बच्चों को न क़त्ल किया जाता था। लेकिन हज़रत मूसा (ﷺ) उस साल पैदा हुए जिस साल बनी इस्राईल के लड़के आम तौर पर तहे तेग़ हो रहे थे, औरतें गश्त करती रहती थीं और हामिला औरतों का ख़्याल रखती थीं उनके नाम लिख लिए जाते थे वज़अे हमल के वक़्त यह औरतें पहुँच जाती थीं अगर लड़की होती तो वापिस चली जातीं और अगर लड़का होता तो फ़ौरन जल्लादों को ख़बर कर देती थीं। यह लोग तेज़ छुरे लिए हुए उसी वक़्त आ जाते थे और माँ बाप के सामने उनके बच्चों को टुकड़े टुकड़े करके चले जाते थे। हज़रत मूसा (ﷺ) की वालिदा को जब आपका हमल ठहरा तो आम हमल की तरह वह ज़ाहिर न हुआ और जो औरतें उस तहक़ीक़ पर मामूर थीं और जितनी दाइयाँ आती थीं किसी को हमल का पता भी न चला, यहाँ तक कि हज़रत मूसा (ﷺ) पैदा हुए। आप (ﷺ) की वालिदा को अब सख़्त दहशत होने लगी और हर वक़्त ख़ौफ़ज़दा रहने लगीं और अपने उस बच्चे से मुहब्बत भी इतनी थी कि किसी माँ को अपने बच्चे से इतनी न हुई होगी। एक माँ पर ही क्या मौक़ूफ़ है , अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (ﷺ) का चेहरा ऐसा बनाया ही था कि जिसकी नज़र उन पर पड़ जाती थी उसके दिल में उनकी मुहब्बत बैठ जाती थी जैसे जनाब बारी तआला का इर्शाद है (وَ اَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ) (20/ताहा : 39) मैंने अपने पास की मुहब्बत तुझ पर डाल दी थी। पस जबकि वालिदा मूसा हर वक़्त कबीदा ख़ातिर ख़ौफ़ज़दा और रंजीदा रहने लगीं तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में ख़्याल डाला कि इसे दूध पिलाती रहे और ख़ौफ़ का मौक़ा पर इन्हें दरियाए नील में बहा दे जिसके किनारे पर ही आपका मकान था चुनाँचे यही किया कि एक पेटी की वज़अ का संदूक़ बना लिया, उसमें हज़रत मूसा (ﷺ) को रख दिया। दूध पिला दिया करतीं और उसमें सुला देतीं जहाँ कोई ऐसा डरावना मौक़ा आया, उस संदूक़ को दरिया में बहा देतीं और एक डोरी से उसे बाँध रखा था, ख़ौफ़ टल जाने के बाद उसे खींच लेतीं। एक बार एक ऐसा शख़्स घर में आने लगा जिससे आपकी वालिदा को बहुत दहशत लगी, दौड़ उठीं और बच्चे को संदूक़ में लिटाकर दरिया में बहा दिया और जल्दी और घबराहट में डोरी बाँधना भूल गईं। संदूक़ पानी की लहरों के साथ ज़ोर से बहने लगा और बहता बहता फ़िरऔन के महल के पास से गुज़रा, लौण्डियों ने उसे उठा लिया और फ़िरऔन की बीवी के पास ले गईं। रास्ते में उन्होंने उसे डर के मारे खोला न था कि ऐसा न हो कि कोई तोहमत उन पर लग जाए। जब फ़िरऔन की बीवी के पास उसे खोला गया तो देखा कि उसमें एक निहायत ख़ूबसूरत नूरानी चेहरे वाला सही सालिम बच्चा लेटा हुआ है जिसे देखते ही उनका दिल मुहर व मुहब्बत से भर गया और उस बच्चे की प्यारी शक्ल दिल में घर कर गई। उसमें भी रब तआला की मस्लिहत थी कि फ़िरऔन की बीवी को सीधे रास्ते दिखाए और फ़िरऔन के सामने उसका डर लाए और उसे और उसके ग़ुरूर को ढाए तो फ़र्माता है कि आले फ़िरऔन ने उस संदूक़ को उठा लिया और अंजामकार वह उनकी दुश्मनी और उनके रंज का बाइस हुआ। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं (लियकून) का लाम लामे आक़िबत है लामे तअलील नहीं इसलिए कि उनका इरादा यह न था। बज़ाहिर यह ठीक भी मालूम होता है लेकिन मअनी को देखते हुए लाम को लामे तअलील समझने में कोई हर्ज नज़र नहीं आता, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें संदूक़ का उठाने वाला इसलिए ही बनाया था कि अल्लाह तआला उसे उनके लिए दुश्मन बना दे और उनके रंज व ग़म का बाइस बनाए बल्कि उसमें एक लुत्फ़ यह भी है कि जिससे वह बचना चाहते थे वह उनके सर पर चढ़ गया। इसीलिए उसके बाद ही फ़र्माया गया कि फ़िरऔन

व हामान और उनके साथी ख़ताकार थे। रिवायत है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने क़दरिया को जो लोग कि तक़्दीर के मुंकिर हैं, एक ख़त में लिखा कि मूसा (عليه السلام) के साबिक़ इल्म में फ़िरऔन के दुश्मन और उसके लिए बाइसे रंजो ग़म थे, जैसे कुरआन मजीद की इस आयत से साबित है लेकिन तुम कहते हो कि अगर फ़िरऔन चाहता तो मूसा (عليه السلام) उसके मददगार और दोस्त होते? फिर फ़र्माता है कि उस बच्चे को देखते ही फ़िरऔन चमका कि ऐसा न हो किसी इस्राइलिया औरत ने इसे फेंक दिया हो और कहीं यह वही न हो जिसके क़त्ल करने के लिए मैं हज़ारों बच्चों को फ़ना कर चुका हूँ। यह सोचकर उसने उन्हें भी क़त्ल करना चाहा लेकिन उसकी बीवी हज़रत आसिया (عليها السلام) ने उसकी सिफ़ारिश की, फ़िरऔन को उसके इरादे से रोका और कहा, इसे क़त्ल न कीजिए, बहुत मुम्किन है कि यह आपकी और मेरी आँखों की ठण्डक का बाइस हो। फ़िरऔन ने जवाब दिया कि तेरी आँखों की ठण्डक भले हो लेकिन मुझे तो आँखों की ठण्डक की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला की शान देखिए यही हुआ।

हज़रत आसिया (रज़ि.) को अल्लाह तआला ने अपना दीन नसीब किया और हज़रत मूसा (عليه السلام) की वजह से उन्होंने हिदायत पाई और उस मुतकब्बिर को रब तआला ने अपने नबी के हाथों हलाक किया। नसाई वग़ैरह के हवाले से सूरह ताहा की तफ़्सीर में हदीसे फ़ुतून में यह क़िस्सा पूरा बयान हो चुका है। हज़रत आसिया (रज़ि.) फ़र्माती हैं शायद यह हमें नफ़ा पहुँचाए। उनकी उम्मीद अल्लाह तआला ने पूरी की। दुनिया में हज़रत मूसा (عليه السلام) उनकी हिदायत का ज़रिया बने और आख़िरत में जन्नत में जाने का और कहती हैं यह भी हो सकता है हम इसे अपना बच्चा बना लें। उनकी कोई औलाद न थी तो चाहा कि हज़रत मूसा(عليه السلام) को मुतबन्ना (गोद लिया बेटा) बना लें। उनमें से किसी को शऊर न था कि कुदरत किस तरह चुपके चुपके अपना इरादा पूरा कर रही है।

***

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِیْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا
لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰﴾ وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّیْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا
یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَحَرَّمْنَا عَلَیْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ
بَیْتٍ یَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿۱۲﴾ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾

तर्जुमा : "मूसा (अलैहि.) की वालिदा का दिल बेक़रार हो गया, क़रीब थीं कि इस वाक़िया को बिलकुल ज़ाहिर कर देतीं अगर हम उनके दिल को ढारस न दे देते। यह इसलिए कि वह यक़ीन करने वालों में रहे। (10) मूसा (अलैहि.) की वालिदा ने उसकी बहन से कहा कि तू इसके पीछे पीछे जा, तो वह उसे दूर ही दूर से देखती रही और फ़िरऔनियों को इसका इल्म भी न हुआ। (11) उनके पहुँचने से पहले हमने मूसा (अलैहि.) पर दाइयों का दूध हराम कर दिया था। यह कहने लगीं कि क्या मैं तुम्हें ऐसा घराना बताऊँ जो उस बच्चे की तुम्हारे लिए परवरिश करे और हों भी वह इस बच्चे के ख़ैरख़्वाह। (12) पस हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ वापिस पहुँचाया ताकि उसकी आँखे ठण्डी रहें और ग़मगीन न हो और जान ले कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।" (13)

मूसा (अलैहि.) की परवरिश फ़िरऔन के घर में (आ. 10 से 13) : मूसा (अलैहि.) की वालिदा ने जब आपको संदूक़ में डालकर फ़िरऔनियों के डर की वजह से दरिया में बहा दिया और बहुत परेशान हुईं और सिवाय अल्लाह तआला के सच्चे रसूल और अपने लख़्ते जिगर हज़रत मूसा (अलैहि.) के आपको किसी और चीज़ का ख़्याल ही न रहा, सब्रो सुकून जाता रहा, दिल में सिवाय हज़रत मूसा (अलैहि.) की याद के और कोई ख़्याल ही नहीं आता था अगर अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी दिल जमई न कर दी जाती तो वह बेसब्री में राज़ खोल देतीं लोगों से कह देतीं कि इस तरह मेरा बच्चा बर्बाद हो गया। लेकिन अल्लाह तआला ने उनका दिल ठहरा दिया, ढारस और तस्कीन दे दी और उन्हें यक़ीने कामिल करा दिया कि तेरा बच्चा तुझे ज़रूर मिल जाएगा। मूसा (अलैहि.) की माँ ने अपनी बड़ी बच्ची से जो ज़रा समझदार थीं फ़र्मा दिया कि बेटी! तुम इस संदूक़ पर नज़रें जमाकर किनारे किनारे चली जाओ, देखो कि क्या अंजाम होता है? मुझे ख़बर देते रहना। तो यह उसे दूर से देखती हुई चलीं लेकिन उस अंजानेपन से कि कोई और न समझ सके कि यह उनका ख़्याल रखती हुई साथ साथ जा रही हैं। फ़िरऔन के महल तक पहुँचते हुए और वहाँ से उसकी लौण्डियों को उठाते हुए तो आपकी हमशीरा ने देखा फिर वहीं बाहर खड़ी रह गईं कि शायद कुछ मालूम हो सके कि अंदर क्या हो रहा है। वहाँ यह हुआ कि जब हज़रत आसिया (रज़ि.) ने फ़िरऔन को उसके ख़ूनी इरादे से रोक रखा और बच्चे को अपनी परवरिश में ले लिया तो शाही महल में जितनी दाया (दूध पिलाने वाली) थीं सबको बच्चा दिया गया हर एक ने बड़ी मेहनत व प्यार से उन्हें दूध पिलाना चाहा लेकिन बहुक्मे बारी तआला हज़रत मूसा (अलैहि.) ने किसी के दूध का एक घूँट भी न पिया, आख़िर अपनी लौण्डियों के हाथ बाहर भेजा कि बाहर किसी दाया को तलाश करो और जिसका दूध यह पियें उसे यहाँ ले आओ। चूँकि रब्बुल आलमीन को यह मंज़ूर न था कि उसका नबी अपनी वालिदा के सिवा किसी और का दूध पिये और उसमें सबसे बड़ी मस्लिहत यह थी कि उस बहाने हज़रत मूसा (अलैहि.) अपनी माँ तक वापिस पहुँच जाएँ। लौण्डियाँ जब आपको लेकर बाहर निकलीं तो आपकी बहन साहिबा ने पहचान लिया लेकिन उन पर ज़ाहिर न किया और न उन्हें ख़ुद कोई पता चल सका। आपकी वालिदा भले पहले तो बहुत परेशान थीं लेकिन उसके बाद रब तआला ने उन्हें सब्रो सुकून दे दिया था और वह ख़ामोश और मुत्मइन थीं। बहन ने उन्हें कहा कि तुम इस क़द्र परेशान क्यूँ हो? उन्होंने कहा कि यह

बच्चा किसी दाया का दूध नहीं पीता, हम इसके लिए किसी और दाया की तलाश में हैं। यह सुनकर मूसा (अलैहि.) की बहन ने फ़र्माया कि अगर कहो तो मैं एक दाई का पता दूँ? मुम्किन है कि यह बच्चा उनका दूध पी ले, वह इसे परवरिश करें और इसकी ख़ैरख़्वाही करें। यह सुनकर उन्हें कुछ शक हुआ कि यह लड़की इस लड़के की अस़लियत से और इसके माँ बाप से वाक़िफ़ है, उसे गिरफ़्तार कर लिया, उससे पूछा कि तुझे कैसे मालूम कि वह औरत इसकी किफ़ालत और ख़ैरख़्वाही करेगी? उसने फ़ौरन जवाब दिया, सुब्हानल्लाह! कौन न चाहेगा कि शाही दरबार में उसकी इ़ज़्ज़त हो, इन्आम व इकराम की ख़ातिर कौन इस बच्चे से हमदर्दी न करेगा? उनकी समझ में भी आ गया कि हमारा पहला गुमान ग़लत़ था यह तो ठीक कह रही है, इसे छोड़ दिया और कहा अच्छा! चल उसका मकान दिखा। यह उन्हें लेकर अपने घर आईं अपनी वालिदा की त़रफ़ इशारा करके कहा , इन्हें दे दीजिए सरकारी आदमियों ने उन्हें दिया तो बच्चा उनका दूध पीने लगा। फ़ौरन यह ख़बर फ़िरऔ़न की बीवी ह़ज़रत आसिया (रज़ि.) को दी गई, उसे सुनकर आप बहुत ख़ुश हुईं, उन्हें अपने मह़ल में बुलवाया और बहुत कुछ इन्आम व इकराम से नवाज़ा लेकिन यह पता न था कि वाक़ेई में यही उस बच्चे की माँ हैं। फ़क़त़ इस वजह से कि ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) ने उनका दूध पिया था वह उनसे बहुत ख़ुश हुईं कुछ दिनों तक तो यूँ ही काम चलता रहा आख़िरकार एक दिन ह़ज़रत आसिया (रज़ि.) ने फ़र्माया मेरी ख़्वाहिश है कि तुम मह़ल ही में आ जाओ यहीं रहो सहो, और इसे दूध पिलाती रहो। मूसा (अलैहि.) की वालिदा ने कहा कि यह तो मुझसे न होगा, मैं बाल बच्चों वाली हूँ मेरे मियाँ भी हैं, मैं इन्हें अपने घर ही दूध पिला दिया करूँगी, फिर आपके यहाँ भेज दिया करूँगी। यही तै हुआ और उसी पर फ़िरऔ़न की बीवी भी रज़ामंद हो गईं। मूसा (अलैहि.) की वालिदा का डर अम्न से, फ़क़ीरी अमीरी से, भूख आसूदगी से, ज़िल्लत इज़्ज़त से बदल गई, रोज़ाना इन्आम व इकराम पातीं, खाना कपड़ा, शाही त़रीक़ पर मिलता और अपने प्यारे बच्चे को अपनी गोद में पा लेतीं। एक ही रात या एक ही दिन या एक दिन रात के बाद ही अल्लाह तआ़ला ने उसकी मुसीबत को राह़त से बदल दिया। ह़दीस शरीफ़ में है कि ''जो शख़्स अपना काम धंधा करे और उसमें अल्लाह का डर और मेरी सुन्नतों का लिह़ाज़ करे उसकी मिसाल मूसा (अलैहि.) की वालिदा की त़रह़ है कि अपने ही बच्चे को दूध पिलाये और उज्रत भी ले।'' (इस मअ़नी की रिवायत इब्ने अबी शैबा : 5/347; बैहक़ी : 9/27; मरासील लि अबी दाऊद : 333 में मौजूद है। यह रिवायत दो वजह से ज़ईफ़ है। मअ़दान बिन ह़दीर ह़ज़रमी मज्हूलुल ह़ाल है और सनद मुर्सल है।) अल्लाह तआ़ला की ज़ात पाक है उसी के हाथ में तमाम काम हैं, उसी का चाहा हुआ होता है ओर जिस काम को वह न चाहे हर्गिज़ नहीं होता। यक़ीनन वह हर उस शख़्स की मदद करता है जो उस पर भरोसा करे। उसकी फ़र्मांबरदारी करने वाले का दस्तगीर वही है वह अपने नेक बंदों के आड़े वक़्त काम आता है और उनकी तक्लीफ़ों को दूर करता है और उनकी तंगी को फ़राख़ी में बदलता है और हर रंज के बाद राह़त देता है, सुब्ह़ानहू मा आ'ज़म शानुहू

फिर फ़र्माता है कि हमने उसे उसकी माँ की त़रफ़ वापिस लौटा दिया ताकि उसकी आँखें ठण्डी रहें और उसे अपने बच्चे का स़दमा न रहे और वह अल्लाह तआ़ला के वादों को भी सच्चा समझे ओर यक़ीन मान ले कि वह ज़रूर नबी और रसूल भी होने वाला है। अब आप (अलैहि.) की वालिदा इत़्मिनान से आपकी

परवरिश में मशग़ूल हो गईं और इसी तरह परवरिश की जिस तरह एक बुलंद दर्जा पैग़म्बर की होनी चाहिए। हाँ! रब की हिक्मतें बेइल्मों की निगाह से ओझल रहती हैं। वह रब तआला के हुक्मों की ग़ायत को और फ़र्मां बरदारी के नेक अंजाम को सोचते नहीं, ज़ाहिरी नफ़ा नुक़्सान के पाबंद रहते हैं और दुनिया पर रीझे हुए होते हैं, उन्हें यह नहीं जचता कि मुम्किन है जिसे वह बुरा समझ रहे हैं अच्छा हो और बहुत मुम्किन है कि जिसे वह अच्छा समझ रहे हैं वह बुरा हो। एक काम बुरा जानते हों मगर क्या ख़बर कि उसमें कुदरत ने क्या फ़ायदे छुपा रखे हों।

***

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾
وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ڭ هٰذَا
مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ
عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ڭ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ
مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى
الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ۭ قَالَ لَهٗ
مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ
يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ڰ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ
جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "जब मूसा (अलैहि.) अपनी जवानी को पहुँच गए और पूरे तवाना हो गए। हमने उन्हें हिक्मत व इल्म अता फ़र्माया। नेकी करने वालों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं। (14) मूसा (अलैहि.) एक ऐसे वक़्त शहर में आए जबकि शहर के लोग ग़फ़्लत में थे। यहाँ दो शख़्सों को लड़ते हुए पाया। यह एक तो उसके रफ़ीक़ों में से था और यह दूसरा उसके दुश्मनों में से। उसकी क़ौम वाले ने उसके ख़िलाफ़ जो उसके दुश्मनों में से था, उससे फ़रियाद की जिस पर मूसा (अलैहि.) ने उसके मुक्का मारा जिससे वह मर गया। मूसा (अलैहि.) कहने लगे, यह तो शैतानी काम है। यक़ीनन शैतान दुश्मन और खुले तौर पर बहकाने वाला है। (15) फिर दुआ करने लगे कि ऐ परवरदिगार! मैंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया तू मुझे माफ़ करदे, अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया वह बख़्शिश और मेहरबानी करने वाला है। (16) नबी (अलैहि.) कहने लगे, ऐ अल्लाह! जैसे तूने मुझ पर यह करम फ़र्माया मैं भी अब हर्गिज़ किसी गुनहगार का मददगार न बनूँगा। (17) सुबह ही सुबह डरते दबते ख़बरें लेने को शहर में आ गए कि अचानक वही शख़्स जिसने कल उनसे मदद माँगी थी उनसे फ़रियाद कर रहा है, मूसा (अलैहि.) ने उससे कहा कि इसमें शक नहीं कि तू तो सरीह बेराह है। (18) फिर जब अपने और उसके दुश्मन को पकड़ना चाहा तो वह फ़रियादी कहने लगा कि ऐ मूसा (अलैहि.)! क्या जिस तरह तूने कल एक शख़्स को क़त्ल किया है मुझे भी मार डालना चाहता है? तू तो मुल्क में ज़ालिम व सरकश होना ही चाहता है और तेरा यह इरादा ही नहीं कि मिलाप करने वालों में से हो जाए।"(19)

मूसा (अलैहि.) के हाथों क़िब्ती का क़त्ल (आ. 14 से 19) : हज़रत मूसा (अलैहि.) के लड़कपन का ज़िक्र करके अब उनकी जवानी का वाक़िया बयान हो रहा है कि अल्लाह तआला ने उन्हें हिक्मत व इल्म अता किया यानी नबुव्वत दी। (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/231) नेककार ऐसे ही बदला पाते हैं। फिर उस वाक़िया का ज़िक्र हो रहा है जो हज़रत मूसा (अ.) के मिस्र छोड़ने का बाइस बना और जिसके बाद अल्लाह तआला की रहमत ने उनका रुख़ किया, यह मिस्र छोड़कर मदयन की तरफ़ चल दिये। आप एक बार शहर में आते हैं या तो मग़्रिब के बाद या ज़ुहर के वक़्त। (तब्री : 19/538) कि लोग खाने पीने में या सोने में मशग़ूल हैं, रास्ते ज़्यादा चल नहीं रहे तो देखते हैं कि दो शख़्स लड़ झगड़ रहे हैं, एक इस्राईली है, दूसरा क़िब्ती है। इस्राईली ने हज़रत मूसा (अलैहि.) से क़िब्ती की शिकायत की और उसका ज़ोर ज़ुल्म बयान किया, जिस पर आप (अलैहि.) को गुस्सा आ गया और एक घूँसा खींच मारा जिससे वह उसी वक़्त मर गया। मूसा (अलैहि.) घबरा गए और कहने लगे, यह तो शैतानी काम है और शैतान दुश्मन और गुमराह है और उसका दूसरों को गुमराह करने वाला होना भी ज़ाहिर हैं फिर अल्लाह तआला से माफ़ी माँगने लगे और इस्तिग़्फ़ार करने लगे, अल्लाह तआला ने भी बख़्श दिया, वह बख़्शने वाला मेहरबान है ही। अब कहने लगे, ऐ अल्लाह! तूने जाह व इज़्ज़त बुज़ुर्गी और नेअमत मुझे अता फ़र्माई है मैं उसे सामने रखकर वादा करता हूँ कि आइन्दा किसी नाफ़र्मान की किसी अम्र में मुवाफ़िक़त और मदद न करूँगा।

क़त्ल का राज़ फ़ाश हो गया : मूसा (عليه السلام) के घूँसे से क़िब्ती मर गया था इसलिए आपकी तबियत पर घबराहट थी, शहर में डरते दबते आए कि देखें क्या बातें हो रही हैं कहीं राज़ तो नहीं खुल गया?

देखते हैं कि कल वाला इस्राईली आज एक क़िब्ती से फिर लड़ रहा है। आपको देखते ही कल की तरह आज भी उसने फ़रियाद की और दुहाई देने लगा। आप (عليه السلام) ने फ़र्माया तुम बड़े शरीर आदमी हो, यह सुनते ही वह घबरा गया।

जब हज़रत मूसा (عليه السلام) ने उस ज़ालिम क़िब्ती को रोकने के लिए उसकी तरह हाथ बढ़ाना चाहा तो यह शख़्स अपने कमीनेपन और बुज़ दिली से समझ बैठा कि आपने मुझे बुरा कहा है और मुझे पकड़ना चाहते हैं अपनी जान बचाने के लिए शोर मचाना शुरू कर दिया कि मूसा (عليه السلام) क्या जैसे तूने कल एक शख़्स का क़त्ल किया आज मेरी जान लेना चाहता है?

कल का वाक़िया सिर्फ़ उसी की मौजूदगी में हुआ था इसलिए अब तक किसी को पता न चला था, लेकिन आज उसकी ज़बान से उस क़िब्ती को पता चला कि यह काम मूसा (عليه السلام) का है उस बुज़दिल डरपोक ने यह भी साथ ही कहा कि तू तो ज़मीन पर सरकश बनकर रहना चाहता है और तेरी तबियत में ही इस्लाह नहीं, क़िब्ती यह सुनकर भागा दौड़ा दरबारे फ़िरऔनी में पहुँचा और वहाँ मुख़्बिरी की। फ़िरऔन की बद दिली की अब कोई हद न रही और फ़ौरन सिपाही दौड़ाए कि मूसा (عليه السلام) को लाकर पेश करें।

***

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ
لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ
رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ
يَّهْدِيَنِىْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ
يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِىْ
حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۫ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ
رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "शहर के ऊपरी किनारे से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया और कहने लगा, मूसा (ﷺ) यहाँ के सरदार तेरे क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तू बहुत जल्द चला जा, मुझे अपना ख़ैरख़्वाह मान। (20) फिर मूसा (ﷺ) वहाँ से ख़ौफ़ज़दा होकर देखते भालते निकल खड़े हुए। कहने लगे, ऐ परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों के गिरोह से बचा ले। (21) और जब मदयन की तरफ़ मुतवज्जा हुए तो कहने लगे, मुझे उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधी राह ले चले। (22) मदयन के पानी पर जब आप (ﷺ) पहुँचे तो देखा कि लोगों की एक जमाअत वहाँ पानी पिला रही है और दो औरतों को अलग खड़ी अपने जानवरों को रोकती हुई देखा। पूछा कि तुम्हारा क्या हाल है? वह बोलीं जब तक यह चरवाहे वापिस न लौट जाएँ हम पानी नहीं पिलातीं और हमारे वालिद बहुत बड़ी उम्र के बूढ़े हैं। (23) आप (ﷺ) ने ख़ुद उनके जानवरों को पानी पिला दिया फिर साये की तरफ़ हट आए और कहने लगे ऐ परवरदिगार! तू जो कुछ भलाई मेरी तरफ़ उतारे मैं उसका मोहताज हूँ।" (24)

एक ख़ैरख़्वाह का तज़्किरा (आ. 20 से 24) : उस आने वाले को रजुल कहा गया। अरबी में रजुल कहते हैं पैरों को। उसने जब देखा कि सिपाही हज़रत मूसा (ﷺ) का पीछा कर रहे हैं तो यह अपने पैरों पर तेज़ी से दौड़ा और एक क़रीब के रास्ते से निकलकर झट से आप (अलैहि.) को ख़बर दी कि यहाँ के अमीर उमरा आपके क़त्ल के इरादे कर चुके हैं, आप जल्द ही इस शहर से निकल जाइए। मैं आपका ख़ैरख़्वाह हूँ, मेरी बात मान लीजिए।

मदयन का मुश्किल भरा सफ़र : फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के इरादे जब उस शख़्स की ज़ुबानी आप (ﷺ) को मालूम हो गए तो आप वहाँ से तने तंहा चुपचाप निकल खड़े हुए चूँकि इससे पहले की ज़िन्दगी के अय्याम आपके शहज़ादों की तरह गुज़रे थे। सफ़र बहुत कड़ा मालूम हुआ लेकिन ख़ौफ़ व हरास के साथ इधर उधर देखते सीधे चले जा रहे थे और अल्लाह तआला से दुआ माँगते जाते थे कि इलाही! मुझे इन ज़ालिमों से यानी फ़िरऔन और फ़िरऔनियों से नजात दे। मरवी है कि अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) की रहबरी के वास्ते एक फ़रिश्ता भेजा था जो घोड़े पर आपके पास आया और आपको रास्ता दिखा गया, वल्लाहु आलम! थोड़ी देर में आप (ﷺ) जंगलों और बयाबानों मे से निकलकर मदयन के रास्ते पर पहुँच गए तो ख़ुश हुए और फ़र्माने लगे कि मुझे ज़ाते बारी तआला से उम्मीद है कि वह राहे रास्त पर ही ले जाएगा। अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) की यह उम्मीद भी पूरी की और दुनिया व आख़िरत की सीधी राह न सिर्फ़ बतलाई बल्कि औरों को भी सीधी राह बताने वाला बनाया। मदयन के पास के कुएँ पर आए तो देखा कि चरवाहे पानी खींच खींचकर अपने अपने जानवरों को पिला रहे हैं वहीं आप (अलैहि.) ने यह भी ग़ौर किया कि दो औरतें अपनी बकरियों को उन जानवरों के साथ पानी पीने से रोक रही हैं। तो आप (ﷺ) को उन बकरियों पर और उन औरतों की उस हालत पर कि यह बेचारियाँ पानी निकालकर पिला नहीं सकतीं और उन चरवाहों में से कोई इसका रवादार नहीं कि अपने खींचे हुए पानी में से उनकी बकरियों को भी पिला दे तो आप (ﷺ) को रहम आया, उनसे पूछा कि तुम अपने जानवरों को इस पानी से क्यूँ रोक रही हो? उन्होंने जवाब दिया कि हम तो पानी

निकाल नहीं सकतीं जब यह अपने जानवरों को पानी पिलाकर चले जाएँगे तो बचा खुचा पानी हम अपनी बकरियों को पिला देंगी। हमारे वालिद हैं लेकिन वह बहुत बूढ़े हैं। तो आप (अ.) ने ख़ुद ही उन जानवरों को पानी खींचकर पिला दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "उस कूएँ के मुँह को उन चरवाहों ने एक बड़े पत्थर से बंद कर दिया था। जिस चट्टान को दस आदमी मिलकर नहीं हटा सकते थे।" आप (अ.) ने अकेले उस पत्थर को हटा दिया और एक ही डोल निकाला था जिसमें अल्लाह तआला ने बरकत दी और उन दोनों लड़कियों की बकरियाँ आसूदा हो गईं। अब आप थके हारे भूखे प्यासे एक दरख़्त के साये तले बैठ गए। मिस्र से मदयन तक पैदल भागे दौड़े आये थे, पैरों में छाले पड़ गए थे, खाने को कुछ पास नहीं था, दरख़्तों के पत्ते और घास फूस खाते रहे थे, पेट पीठ से लग रहा था और घास का सब्ज़ रंग बाहर से नज़र आ रहा था। आधी खजूर से भी उस वक़्त आप (عليه السلام) तरसे हुए थे। हालाँकि उस वक़्त की सारी मख़्लूक़ से ज़्यादा बरगुज़ीदा अल्लाह तआला के नज़दीक आप (عليه السلام) थे, सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "दो रात का सफ़र करके मैं मदयन गया और वहाँ के लोगों से उस दरख़्त का पता पूछा जिसके नीचे अल्लाह तआला के कलीम मूसा (عليه السلام) ने सहारा लिया था। लोगों ने एक दरख़्त की तरफ़ इशारा किया। मैंने देखा कि वह एक सरसब्ज़ दरख़्त है। मेरा जानवर भूखा था उसने उसमें मुँह डाला, पत्ते मुँह में लेकर बड़ी देर तक चबाता रहा लेकिन आख़िर उसने निकाल डाले। मैंने कलीमुल्लाह के लिए दुआ की और वहाँ से वापिस लौट आया।" और रिवायत में है कि आप उस दरख़्त को देखने को गए थे जिससे अल्लाह तआला ने आप (عليه السلام) से बातें की थी जैसे कि आएगा। इंशाअल्लाह तआला! सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि यह बबूल का दरख़्त था। अल्ग़र्ज़ उस दरख़्त के नीचे बैठकर आप (अलैहि.) ने अल्लाह तआला से दुआ की, ऐ रब! मैं तेरे एहसानों का मोहताज हूँ। अ़ता (रह.) का क़ौल है कि उस औरत ने भी आप (عليه السلام) की दुआ सुनी। (तब्री : 19/557)

***

فَجَآءَتْهُ إِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ إِنَّ أَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا
سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَتْ إِحْدٰىهُمَا يٰٓأَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۫ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِىُّ
الْاَمِيْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ إِنِّىْٓ أُرِيْدُ أَنْ أُنْكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى أَنْ تَأْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ
حِجَجٍ ۚ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ أُرِيْدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِىْٓ إِنْ
شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ؕ أَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا

عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "इतने में उन दोनों औरतों में से एक उनकी तरफ़ शर्मो हया से चलती हुई आई और कहने लगीं कि मेरे बाप आपको बुला रहे हैं ताकि आपने हमारे जानवरों को जो पानी पिलाया है उसकी उजरत दें। जब हज़रत मूसा (अलैहि०) उनके पास पहुँचे और उनसे अपना सारा हाल बयान किया तो वह कहने लगे, अब न डर तूने ज़ालिम क़ौम से नजात पा ली। (25) उन दोनों में से एक ने कहा कि अब्बाजान! आप इन्हें मज़दूरी पर रख लीजिए क्योंकि जिन्हें आप उजरत पर रखें उनमें से सबसे बेहतर वह है जो मज़बूत और अमानतदार हो। (26) उस बुज़ुर्ग ने कहा, मैं अपनी इन दोनों लड़कियों में से एक को आपके निकाह में देना चाहता हूँ इस महर पर कि आप आठ साल तक मेरा काम काज करें। हाँ! अगर आप दस साल पूरे करें तो यह आपकी तरफ़ से बतौर एहसान के है । मैं यह हर्गिज़ नहीं चाहता कि आपको किसी मशक़्क़त में डालूँ। अल्लाह को मंज़ूर है तो आगे चलकर आप मुझे भला आदमी पाएँगे। (27) मूसा (अलैहि०) ने कहा, ख़ैर तो यह बात मेरे और आपके बीच पुख़्ता हो गई। मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसे पूरा करूँ मुझ पर कोई ज़्यादती न हो। हम यह जो कुछ कह रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह और कारसाज़ है।" (28)

शैख़े कबीर (हज़रत शुऐब अलैहि०) और निकाहे मूसा (अलैहि०) (आ. 25 से 28) : उन दोनों बच्चियों की बकरियों को जबकि हज़रत मूसा (अलैहि०) ने पानी पिला दिया तो यह अपनी बकरियाँ लेकर वापिस अपने घर गईं। बाप ने देखा कि आज वक़्त से पहले यह आ गई हैं तो पूछा कि आज क्या बात है? उन्होंने सच्चा वाक़िया कह सुनाया। आप (अलैहि०) ने उसी वक़्त उन दोनों में से एक को भेजा कि जाओ उसे मेरे पास बुला लाओ। वह हज़रत मूसा (अलैहि०) के पास आईं और जिस तरह घर गृहस्थ पाकदामन अफ़ीफ़ा औरतों का दस्तूर होता है, शर्म व हया से अपनी चादर में लिपटी हुई पर्दे के साथ चल रही थीं, मुँह भी चादर के किनारे से छुपाये हुए थीं। (तब्री : 19/558; हाकिम : 2/407; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ सबीई मुदल्लस हैं।) फिर उस दानाई और सदाक़त को देखिए कि सिर्फ़ यही न कहा कि मेरे अब्बा आपको बुला रहे हैं क्योंकि इसमें शुब्हा की बातों की गुंजाइश थी, साफ़ कह दिया कि मेरे वालिद आपको आपकी मज़दूरी देने के लिए और एहसान का बदला उतारने के लिए बुला रहे हैं जो आपने हमारी बकरियों को पानी पिलाकर हमारे साथ किया है। कलीमुल्लाह को जो भूखे प्यासे तने तंहा मुसाफ़िर और बेख़र्च थे यह मौक़ा ग़नीमत मालूम हुआ। यहाँ आए उन्हें एक बुज़ुर्ग समझकर उनके सवाल पर अपना सारा वाक़िया बिला कमो कास्त कह सुनाया। उन्होंने दिलजोई की और फ़र्माया, अब कोई ख़तरा नहीं? उन ज़ालिमों के हाथ से आप (अलैहि०) छूट आए, यहाँ उनकी हुकूमत नहीं। कुछ मुफ़स्सिरीन कहते हैं यह बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब (अलैहि०) थे जो मदयन वालों की तरफ़ अल्लाह तआला के पैग़म्बर बनकर आये हुए थे, यही मशहूर क़ौल है।

"इमाम हसन बसरी (रह.) और बहुत से उलमा यही फ़र्माते हैं।" तबरानी की एक हदीस में है कि जब हज़रत सलमा बिन सअद गुज़्ज़ी (रह.) अपनी क़ौम की तरफ़ से ऐलची बनकर रसूले करीम (सल्ल०) की

ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "शुऐब (عليه السلام) के क़वी आदमी को और मूसा (عليه السلام) के ससुराल वाले को मरहबा हो कि तुम्हें हिदायत की गई।" (बज़्ज़ार : 2828; तबरानी : 6364; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस सनद के रावी नामालूम यानी मज्हूल हैं देखिए लिसानुल मीज़ान : 2/330) कुछ कहते हैं कि यह हज़रत शुऐब (عليه السلام) के भतीजे थे कोई कहता है क़ौमे शुऐब के एक मोमिन मर्द थे, कुछ का क़ौल है शुऐब (عليه السلام) का ज़माना तो हज़रत मूसा (عليه السلام) के ज़माने से बहुत पहले का है, इनका क़ौल क़ुरआन में अपनी क़ौम से यह मरवी है कि (وَ مَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ) (11/हूद : 89) लूत (عليه السلام) की क़ौम तुममें से कुछ दूर नहीं। और यह भी क़ुरआन से साबित है कि लूतियों की हलाकत हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्ला (عليه السلام) के ज़माने में हुई थी और यह भी ज़ाहिर है कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा (عليه السلام) के बीच का ज़माना बहुत लम्बा ज़माना है, तक़रीबन चार सौ साल का जैसे अक्सर मुअर्रिख़ीन का क़ौल है। हाँ! कुछ लोगों ने इस मुश्किल का यह जवाब दिया है कि हज़रत शुऐब (عليه السلام) की बड़ी लम्बी उम्र हुई थी। उनका मक़्सद ग़ालिबन इस ऐतिराज़ से बचना है, वल्लाहु आलम! एक और बात भी ख़याल में रहे कि अगर यह बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब (अलैहि.) ही होते तो चाहिए था कि क़ुरआन में इस मौक़े पर उनका नाम साफ़ ले लिया जाता। हाँ! अल्बत्ता कुछ हदीसों में आया है कि यह हज़रत शुऐब (عليه السلام) थे, लेकिन उन हदीसों की सनदें सही नहीं जैसे कि हम अनक़रीब वारिद करेंगे, इंशाअल्लाह तआला! बनी इस्राईल की किताबों में इनका नाम यस्रून बतलाया गया है, वल्लाहु आलम!

"हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के साहबज़ादे फ़र्माते हैं कि यस्रून हज़रत शुऐब (عليه السلام) के भतीजे थे।" "इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि यह यस्रिबी थे।" इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि यह बात उस वक़्त साबित होती जबकि इस बारे में कोई ख़बर मरवी होती और ऐसा है नहीं। इनकी दोनों साहबज़ादियों में से एक ने बाप को तवज्जह दिलाई। यह तवज्जह दिलाने वाली वही साहबज़ादी थीं जो आप (عليه السلام) को बुलाने के लिए गई थीं। कहा कि इन्हें आप हमारी बकरियों की चराई पर रख लीजिए क्योंकि वही काम करने वाला अच्छा होता है जो क़वी हो और अमानतदार हो। बाप ने पूछा, बेटी! तुमने कैसे जान लिया कि उनमें यह सिफ़त हैं? बच्ची ने जवाब दिया कि दस क़वी आदमी मिलकर जिस पत्थर को उस कूएँ से हटा सकते थे उन्होंने तंहे तंहा उसे हटा दिया, इससे उनकी कुव्वत का अंदाज़ा आसानी से हो सकता है। उनकी अमानतदारी का इल्म मुझे इस तरह हुआ कि जब मैं उन्हें लेकर आप (عليه السلام) के पास आने लगी तो इसलिए कि रास्ता से नावाक़िफ़ थे मैं आगे हो ली। उन्होंने कहा कि नहीं! तुम मेरे पीछे रहो और जहाँ रास्ता बदलना हो तो उस तरफ़ कंकर फेंक देना, मैं समझ लूँगा कि मुझे उस रास्ते चलना चाहिए। (तब्री : 19/562; हाकिम : 2/407; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लिस हैं।) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं "तीन शख़्सों की सी ज़ेरकी, मामला फ़हमी, दानाई और दूरबीनी किसी और में नहीं पाई गई। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की दानाई जबकि उन्होंने अपने बाद ख़िलाफ़त के लिए जनाब उमर (रज़ि.) को चुना, हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के ख़रीदने वाले मिस्री जिन्होंने एक नज़र में हज़रत यूसुफ़ को पहचान लिया और जाकर अपनी बीवी साहिबा से फ़र्माया कि इन्हें अच्छी तरह रखो और उस बुज़ुर्ग की साहबज़ादी जिन्होंने हज़रत मूसा (عليه السلام) की निस्बत अपने वालिद

से सिफ़ारिश की कि मूसा (ﷺ) अपने काम पर रख लीजिए।" (हाकिम : 2/345; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; देखिए नम्बर 2) यह सुनते ही उस बच्ची के वालिद ने हज़रत मूसा(ﷺ) से फ़र्माया कि अगर आप पसंद करें तो मैं इस महर पर इन दो बच्चियों में से एक का निकाह आपके साथ कर देना चाहता हूँ कि आप आठ साल तक हमारी बकरियाँ चराएँ। इन दोनों का नाम सफ़ूरा और लुय्या था या सफ़ूरा और शरफ़ा जिसको लुय्या भी कहते थे।

अस्हाबे अबी हनीफ़ा ने इसी से इस्तिदलाल किया है कि जब कोई शख़्स इस तरह की बेअ करे कि उन दो गुलामों में से एक को एक सौ के बदले बेचता हूँ और ख़रीददार मंज़ूर कर ले तो यह बेअ साबित और सही है, वल्लाहु आलम! उस बुजुर्ग ने कहा, आठ साल तो ज़रूरी है हाँ! उसके बाद के दो साल का आपको इख़्तियार है। अगर आप अपनी ख़ुशी से दो साल और भी मेरा काम करें तो अच्छा है, वरना आप पर लाज़मी नहीं। आप देखेंगे कि मैं बुरा आदमी नहीं, आपको तक्लीफ़ न दूँगा। इमाम औज़ाई (रह.) ने इससे इस्तिदलाल करके फ़र्माया है कि "अगर कोई कहे मैं फ़लाँ चीज़ को नक़द दस पर और उधार बीस पर बेचता हूँ तो यह बेअ सही है और ख़रीददार को इख़्तियार है कि दस पर नक़द या बीस पर उधार ले ले वह इस हदीस का भी यही मतलब ले रहे हैं जिसमें है जो शख़्स दो बेअ एक बेअ में करे उसके लिए कमी वाली बेअ बेअ है वरना सूद।" (अबूदाऊद, किताबुल बुयूअ, बाब फ़ीमन बाअ बैअतैनि फ़ी बैअतिन : 3461; व सनदुहू हसन; इब्ने हिब्बान : 4974; बैहक़ी : 3/343; हाकिम : 2/45) लेकिन यह मज़हब ग़ौरतलब है जिसकी तफ़्सील का यह मक़ाम नहीं, वल्लाहु आलम!

अस्हाबे इमाम अहमद ने इस आयत से इस्तिदलाल करके कहा है कि खाने पीने और कपड़े पर किसी को मज़दूरी और काम काज पर लगा लेना दुरुस्त है। इसकी दलील में इब्ने माजा की एक हदीस भी है जो इस बात में है कि मज़दूर मुक़र्रर करना उस मज़दूरी पर कि वह पेट भरकर खाना खा लिया करेगा, इसमें हदीस लाए हैं कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरह ता सीम की तिलावत की जब हज़रत मूसा (ﷺ) के ज़िक्र तक पहुँचे तो कहने लगे, "मूसा (ﷺ) ने अपने पेट के भरने और अपनी शर्मगाह को बचाने के लिए आठ साल या दस साल के लिए अपने आपको मुलाज़िम कर लिया।" (इब्ने माजा किताबुर्रहून, बाब इजारतुल अजीर अला तआमि बत्निही : 2444; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, देखिए (अत्तहज़ीबुल कमाल : 7/111; रक़म : 6551) इस हदीस का एक रावी मुस्लिमा बिन अली ख़शनी है जो ज़ईफ़ है। यह हदीस दूसरी सनद से भी मरवी है लेकिन वह सनद भी नज़र से ख़ाली नहीं। कलीमुल्लाह (ﷺ) ने बुज़ुर्ग की उस शर्त को क़बूल कर लिया और फ़र्माया, हम तुममें यह तै शुदा फ़ैसला है मुझे इख़्तियार होगा कि ख़्वाह वह दस साल पूरे करूँ या आठ साल के बाद छोड़ दूँ, आठ साल के बाद आपका कोई हक़्क़े मज़दूरी मुझ पर लाज़मी नहीं रहेगा। हम अल्लाह तआला को अपने इस मामले पर गवाह करते हैं उसी की कारसाज़ी काफ़ी है। तो भले दस साल पूरा करना मुबाह है लेकिन वह फ़ाज़िल चीज़ है ज़रूरी नहीं, ज़रूरी आठ साल हैं। जैसे मिना के आख़िरी दो दिन के बारे में अल्लाह तआला का हुक्म है और जैसे हदीस में है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हम्ज़ा बिन अम्र असलमी (रज़ि.) से फ़र्माया था, "जो बहुत ज़्यादा रोज़े रखा करते थे कि अगर तुम सफ़र में रोज़ा रखो तो तुम्हें इख़्तियार है और

न रखो तो तुम्हें इख़्तियार है।" (सहीह़ बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाब अस्सौमु फ़िस्सफ़रि वल इफ़्तार : 1943; सहीह़ मुस्लिम : 1121; अबूदाऊद : 2402; तिर्मिज़ी : 711; इब्ने माजा : 1662; अह़मद : 6/46; इब्ने ह़िब्बान : 3560) बावजूद यह कि दूसरी दलील से रखना अफ़ज़ल है।

चुनाँचे इसकी दलील भी आ चुकी है कि ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ने दस साल ही पूरे किये। सहीह़ बुख़ारी में है कि सईद बिन जुबैर (रह़.) से एक यहूदी ने सवाल किया कि ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ने आठ साल पूरे किये या दस साल? तो आपने फ़र्माया, "मुझे ख़बर नहीं।" फिर अरब के बहुत बड़े आलिम ह़ज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास गए और उनसे यही सवाल किया तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, "इन दोनों में जो ज़्यादा और पाक मुद्दत थी वही आपने पूरी की यानी दस साल।" अल्लाह तआला के पैग़म्बर जो कहते हैं पूरा करते हैं। (सहीह़ बुख़ारी, किताबुश्शहादात : 2684) ह़दीसे फ़ुतून में है कि साइल ईसाई था। लेकिन बुख़ारी में जो है वही औला है, वल्लाहु आलम! इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत जिब्राईल (ﷺ) से सवाल किया कि ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ने कौनसी मुद्दत पूरी की थी तो जवाब मिला कि उन दोनों में से जो कामिल और मुकम्मल मुद्दत थी। (ह़ाकिम : 2/407, 408; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2308; मुस्नदे हुमैदी : 536; ब तह़क़ीक़ी व सनदुहू ह़सन) एक मुर्सल ह़दीस में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से किसी ने यह पूछा, आप (ﷺ) ने जिब्राईल (अलैहि.) से पूछा, जिब्राईल (ﷺ) ने और फ़रिश्ते से यहाँ तक कि फ़रिश्ते ने अल्लाह तआला से, अल्लाह तआला ने जवाब दिया कि दोनों में से पाक और पूरी मुद्दत यानी दस साल। एक ह़दीस में है कि "ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) के सवाल पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने दस साल की मुद्दत को पूरा नाम बतलाकर यह भी फ़र्माया कि अगर तुझसे पूछा जाए कि किस लड़की से ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ने निकाह़ किया था तो जवाब देना कि दोनों में जो छोटी थीं। (बज़्ज़ार : 2244; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा) और रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुद्दते दराज़ को पूरा करना बतलाया।"

फिर फ़र्माया कि जब ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ह़ज़रत शुऐब (ﷺ) से रुख़सत लेकर जाने लगे तो अपनी बीवी से फ़र्माया कि अपने वालिद से कुछ बकरियाँ ले लो, जिनसे हमारा गुजारा हो जाए। आपने अपने वालिद से सवाल किया जिस पर उन्होंने वादा किया कि उस साल जितनीी चितकबरी बकरियाँ होंगी सब तुम्हारी हैं। ह़ज़रत मूसा (ﷺ) ने बकरियों के पेट पर अपनी लकड़ी फेरी तो हर एक के दो दो तीन तीन बच्चे हुए और सबके सब चित्कबरे जिनकी नस्ल अब तक तलाश करने से मिल सकती है। दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत शुऐब (रज़ि.) की सब बकरियाँ काले रंग की ख़ूबसूरत थीं। जितने बच्चे उनके उस साल हुए सबके सब बेऐब थे और बड़े बड़े थनों वाले और ज़्यादा दूध देने वाले।

इन तमाम रिवायतों का मदार अ़ब्दुल्लाह बिन लहीआ पर है जो याददाश्त के अच्छे नहीं और डर है कि यह रिवायतें मरफ़ूअ़न मरवी है और उसमें यह भी है कि सब बकरियों के बच्चे उस साल अब्लक़ हुए सिवाय एक बकरी के जिन सबको आप (ﷺ) ले गए।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ
امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ
تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ
كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ
﴿٣١﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ
مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : ''जब मूसा (عليه السلام) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपने घर वालों को लेकर चले तो तूर पहाड़ की तरफ़ आग देखी। अपनी बीवी से कहने लगे, ठहरो मैंने आग देखी है बहुत मुम्किन है कि मैं वहाँ से कोई ख़बर लाऊँ या आग का कोई अंगारा लाऊँ ताकि तुम आग ताप लो। (29) जब वहाँ पहुँचे तो उस बाबरकत ज़मीन के मैदान के दाएँ किनारे के दरख़्त में से आवाज़ दिये गए कि ऐ मूसा (عليه السلام)! यक़ीनन मैं ही अल्लाह तआला हूँ सारे जहानों का परवरदिगार। (30) और यह भी आवाज़ आई कि अपनी लकड़ी डाल दे फिर जब उसे देखा कि वह साँप की तरह फनफना रही है तो पीठ फेरकर वापिस हो गए और मुड़कर रुख़ भी न किया। हमने कहा, ऐ मूसा (عليه السلام)! आगे आ! डर मत, यक़ीनन तू हर तरह अमन वाला है। (31) अपने हाथ को अपने गिरेबान में डाल वह बग़ैर किसी क़िस्म की बीमारी के चमकता हुआ निकलेगा बिलकुल सफ़ेद और ख़ौफ़ से बचने के लिए अपने बाज़ू अपनी तरफ़ मिला ले। पस यह दोनों मोजिज़े तेरे लिए रब की तरफ़ से हैं फ़िरऔन और उसकी जमाअत की तरफ़, यक़ीनन वह सबके सब बेहुक्म और नाफ़र्मान लोग हैं।'' (32)

मूसा(عليه السلام) का बीवी के साथ सफ़र और इन्आमे नबुव्वत (आ. 29 से 32) : पहले यह बयान गुज़र

चुका है कि हज़रत मूसा (अ) ने दस साल पूरे किये थे। कुरआन के इस लफ़्ज़ (अल्अजल) से भी इसी तरफ़ इशारा है, वल्लाहु आलम! बल्कि मुजाहिद (रह.) का तो क़ौल है कि "दस साल यह और दस साल और भी गुज़ारे।" इस क़ौल में सिर्फ़ यही तंहा हैं, वल्लाहु आलम! अब हज़रत मूसा(عليه السلام) को ख़्याल और शौक़ पैदा हुआ कि चुपचाप वतन में जाऊँ और अपने घर वालों से मिल आऊँ। चुनाँचे आप (عليه السلام) अपनी बीवी को और अपनी बकरियों को लेकर वहाँ से चले रात को बारिश होने लगी और सर्द हवा चलने लगीं और सख़्त अंधेरा हो गया। आप (عليه السلام) हर चंद चराग़ जलाते थे मगर रोशनी नहीं होती थी। सख़्त ताज्जुब और हैरान थे, इतने में देखते हैं कि कुछ दूर आग रोशन है तो अपनी बीवी से फ़र्माया कि तुम यहाँ ठहरो वहाँ कुछ रोशनी दिखाई देती है मैं वहाँ जाता हूँ अगर कोई हुआ उससे रास्ता पूछ लूँगा इसलिए कि हम रास्ता भूल गए हैं। या मैं वहाँ से कुछ आग ले आऊँगा जिससे तुम ताप लो और सर्दी से बच सको। जब आप (عليه السلام) वहाँ पहुँचे तो उस वादी के दाएँ जानिब के पश्चिमी पहाड़ से आवाज़ सुनाई दी। जैसे कुरआन की और आयत में है (وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ) (28/क़सस : 44) इससे मालूम होता है कि हज़रत मूसा (عليه السلام) आग के क़स्द से क़िब्ले की तरफ़ चले थे और पश्चिमी पहाड़ आप (عليه السلام) के दाएँ जानिब था और एक सरसब्ज़ हरे भरे दरख़्त में आग नज़र आ रही थी जो पहाड़ के दामन में मैदान के मुत्तसिल थी यह वहाँ जाकर उस हालत को देखकर हक्के बक्के रह गए कि हरे और सब्ज़ दरख़्त में से आग के शोले निकलते दिखाई देते हैं लेकिन आग किसी चीज़ में जलती हुई दिखाई नहीं देती, उसी वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ आई। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं, "मैंने उस दरख़्त को जिसमें से हज़रत मूसा (عليه السلام) को आवाज़ आई थी देखा है वह सरसब्ज़ व शादाब हरा भरा दरख़्त है जो चमक रहा है।" कुछ कहते हैं कि यह अलीक़ का दरख़्त था, कुछ कहते हैं औसिज का दरख़्त था और आप (عليه السلام) की लकड़ी भी उसी दरख़्त की थी। कलीमुल्लाह ने सुना कि आवाज़ आ रही है कि ऐ मूसा (عليه السلام)! मैं हूँ रब्बुल आलमीन! जो इस वक़्त तुझसे बात कर रहा हूँ। मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। मेरे सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, न मेरे सिवा कोई रब है। मैं इससे पाक हूँ कि कोई मुझ जैसे हो। मख़्लूक़ में से कोई भी मेरा शरीक नहीं। मैं यक ता बेमिस्ल और वहदहू ला शरीक लहू हूँ। मेरी ज़ात मेरे सिफ़ात, मेरे अफ़आल मेरे अक़्वाल में मेरा कोई शरीक साझी साथी नहीं मैं हर तरह पाक और नुक़्सान से दूर हूँ। इसी निदा में फ़र्मान हुआ कि अपनी लकड़ी को ज़मीन पर गिरा दो और मेरी कुदरत अपनी आँखों से देख लो। और आयत में है कि पहले पूछा गया कि ऐ मूसा (عليه السلام)! तुम्हारे दाएँ हाथ में क्या है? आप (عليه السلام) ने जवाब दिया कि यह मेरी लकड़ी है जिस पर मैं टेक लगाता हूँ और जिससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लेता हूँ और दूसरे भी मेरे बहुत से काम इससे निकलते हैं। अब ख़बरदार करके लकड़ी को लकड़ी का एहसास दिलाकर फिर ज़मीन पर उन ही के हाथों फेंकवाई। वह ज़मीन पर गिरते ही एक फनफनाता हुआ अज्दहा बनकर इधर उधर फ़र्राटे भरने लगी। यह इस बात की दलील थी कि बोलने वाला वाक़ेई अल्लाह ही है। जो क़ादिरे मुत्लक़ है वह जिस चीज़ को जो फ़र्मा दे टल नहीं सकता। सूरह ताहा की तफ़्सीर में इसका बयान भी पूरा गुज़र चुका है।

इस ख़ौफ़नाक साँप को जो बावजूद बहुत बड़ा और बहुत मोटा होने के तीर की तरह इधर उधर जा आ

रहा था मुँह खोलता था तो मालूम होता था कि अभी निगल जाएगा। जहाँ से गुज़रता था, पत्थर टूट टूट जाते थे उसे देखकर हज़रत मूसा (عليه السلام) सहम गए और दहशत के मारे ठहर न सके, उल्टे पैरों भागे और मुड़कर भी न देखा। वहीं अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ आई कि ऐ मूसा (عليه السلام)! इधर आ। डर नहीं तू मेरे अमन में है। अब हज़रत मूसा (عليه السلام) का दिल मुत्मइन हुआ, इत्मिनान से बेख़ौफ़ होकर वहीं अपनी जगह आकर अदब के साथ खड़े हो गए। यह मोजिज़ा अता करके फिर दूसरा मोजिज़ा यह दिया कि हज़रत मूसा (عليه السلام) अपना हाथ गिरेबान में डालकर निकालते तो वह चाँद की तरह चमकने लगता और बहुत भला मालूम होता, यह नहीं कि कोढ के दाग़ की तरह सफ़ेद हो जाए, यह भी बहुक्मे बारी तआला आपने वहीं किया और अपने हाथ को मिस्ल चाँद के रोशन होता देख लिया। फिर हुक्म हुआ कि तुम्हें इस साँप से या किसी घबराहट डर ख़ौफ़ रौब से दहशत मालूम हो तो अपने बाज़ू अपने बदन से मिला लो, डर ख़ौफ़ जाता रहेगा और यह भी वारिद है कि जो शख़्स और दहशत के वक़्त अपना हाथ अपने दिल पर अल्लाह तआला के इस फ़र्मान के तहत रख ले, इंशाअल्लाह! उसका डर जाता रहेगा।

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि शुरूआत में हज़रत मूसा (عليه السلام) के दिल पर फ़िरऔन का बहुत डर था फिर आप जब उसे देखते तो यह दुआ पढ़ते (अल्लाहुम्म इन्नी अदरउ बिका फ़ी नह्‌रिही व अऊज़ुबिका मिन शर्रिही) ऐ अल्लाह! मैं तुझे उसके मुक़ाबले में करता हूँ और उसकी बुराई से तेरी पनाह में आता हूँ। अल्लाह तआला ने उनके दिल से रौब और ख़ौफ़ को हटा लिया और फ़िरऔन के दिल में डाल दिया। फिर तो उसका यह हाल हो गया था कि हज़रत मूसा (عليه السلام) को देखते ही उसका पेशाब निकल आता था। यह दोनों मोजिज़े यानी असा-ए-मूसा और सफ़ेद हाथ देकर अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि अब फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के पास रिसालत लेकर जाओ और बतौर दलील यह मोजिज़े पेश करो और उन फ़ासिक़ों को अल्लाह तआला की राह दिखाओ।

***

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾ وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي
لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ
بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا
الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : "मूसा (عليه السلام) ने कहा परवरदिगार! मैंने इनका एक आदमी क़त्ल कर दिया था अब मुझे दहशत है कि वह मुझे भी क़त्ल कर डालें। (33) और मेरा भाई हारून (عليه السلام) मुझसे बहुत

ज़्यादा फ़सीह ज़ुबान वाले हैं तू उसे भी मेरा मददगार बनाकर मेरे साथ भेज कि वह मुझे सच्चा माने मुझे तो डर है कि वह सब मुझे झुठला देंगे। (34) अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि हम तेरे भाई के साथ तेरा बाज़ू मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों को ग़ल्बा देंगे, फ़िरऔनी तुम तक पहुँच ही न सकेंगे बसबब हमारी निशानियों के। तुम दोनों और तुम्हारी ताबेदारी करने वाले ही ग़ालिब रहेंगे।" (35)

मूसा (عليه السلام) की बिअसत और अपने भाई के लिए मक़ामे नबुव्वत की दुआ (आ. 33 से 35) :

यह गुज़र चुका है कि हज़रत मूसा(عليه السلام) फ़िरऔन से डरकर उसके शहर से भाग निकले थे। जब अल्लाह तआला ने वहीं उसी के पास नबी बनकर जाने को फ़र्माया तो आप (عليه السلام) को वह सब याद आ गया और अर्ज़ करने लगे कि ऐ अल्लाह! उनके एक आदमी की जान मेरे हाथ से निकल गई थी तो ऐसा न हो कि वह बदले का नाम रखकर मेरे क़त्ल के दर पे आ जाएँ। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने बचपन के ज़माने में जबकि आपके सामने बतौरे तजुर्बे के एक आग का अंगारा और एक खजूर या एक मोती रखा था तो आप (عليه السلام) ने अंगारा पकड़ लिया था और मुँह में डाल लिया था। इस वास्ते आप (عليه السلام) की ज़ुबान में कुछ कसर रह गई थी और इसीलिए आप (عليه السلام) ने अपनी ज़ुबान की बाबत अल्लाह तआला से दुआ माँगी थी कि मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे ताकि लोग मेरी बात समझ सकें और मेरे भाई हारून (عليه السلام) को मेरा वज़ीर बना दे उससे मेरा बाज़ू मज़बूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर ताकि नबुव्वत व रिसालत का फ़रीज़ा अदा हो और तेरे बन्दों को तेरी किब्रियाई की दावत दे सकें, यहाँ भी आप (عليه السلام) की यही दुआ मंक़ूल है कि आप (عليه السلام) ने फ़र्माया, "मेरे भाई हारून (عليه السلام) को मेरे साथ ही अपना रसूल बना कि वह मेरा मुअय्यन वज़ीर हो जाए, वह मेरी बातों को बावर कराये ताकि मेरा बाज़ू मज़बूत रहे, दिल बढ़ा हुआ रहे और यह भी बात है कि दो आवाज़ें बनिस्बत एक आवाज़ के ज़्यादा मज़बूत और बाअसर होती हैं। मैं अकेला रहा तो डर है कि कहीं वह मुझे झुठला न दें और हारून (عليه السلام) साथ हुए तो मेरी बातें भी लोगों को समझा दिया करेगा। जनाब बारी अरह़मुर्राह़िमीन ने जवाब दिया कि तेरा सवाल मंज़ूर है, हम तेरे भाई से तुझको सहारा देंगे और उसे भी तेरे साथ नबी बना देंगे।

जैसे और आयत में है (قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يٰمُوسٰى) (20/ताहा : 36) ऐ मूसा (عليه السلام)! तेरा सवाल पूरा कर दिया गया। और आयत में है कि हमने अपनी रह़मत स उसे और उसके भाई हारून (عليه السلام) को नबी बना दिया। इसीलिए कुछ सलफ़ का फ़र्मान है कि किसी भाई ने अपने भाई पर वह एह़सान नहीं किया जो हज़रत मूसा (عليه السلام) ने हज़रत हारून (عليه السلام) पर किया, अल्लाह तआला से दुआ करके उन्हें भी नबी बनवा दिया, यह मूसा (عليه السلام) की बड़ी बुज़ुर्गी की दलील है कि अल्लाह तआला ने उनकी ऐसी दुआ भी रद्द न की। वाक़ेई आप अल्लाह तआला के नज़दीक बड़े ही मर्तबे वाले थे। फिर फ़र्माता है कि हम तुम दोनों को ज़बरदस्त दलीलें और कामिल हुज्जतें देंगे, फ़िरऔनी तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं दे सकते, क्योंकि तुम मेरा पैग़ाम मेरे बन्दों के नाम पहुँचाने वाले हो। ऐसों को मैं आप दुश्मनों से सँभालता हूँ। उनका मददगार और मुईद मैं ख़ुद बन जाता हूँ। अंजामकार तुम और तुम्हारे मानने वाले ही ग़ालिब आएँगे जैसे फ़र्मान है अल्लाह तआला लिख

चुका है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब आएँगे। अल्लाह तआला कुव्वत वाला इज़्ज़त वाला है।

और आयत में है (اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا) (10/मोमिन : 51) हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं, आख़िर तक। ''इब्ने जरीर (रह.) के नज़दीक आयत के मअ़नी यह हैं कि हमारे दिये हुए ग़ल्बे की वजह से फ़िरऔनी तुम्हें तक्लीफ़ न पहुँचा सकेंगे और हमारी दी हुई आयतों की वजह से ग़ल्बा सिर्फ़ तुम्हें ही हासिल होगा।'' लेकिन पहले जो मतलब बयान हुआ उससे भी यह साबित है तो इसकी कोई ज़रूरत ही नहीं, वल्लाहु आलम!

***

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٦ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٣٧ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا
عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ
اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٣٨ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝٣٩ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ
فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ
اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝٤١ وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝٤٢

तर्जुमा : ''जब उनके पास मूसा (अ़लैहिस्सलाम) हमारे दिये हुए खुले मोजिज़े लेकर पहुँचे तो वह कहने लगे, यह तो सिर्फ़ गढ़ा गढ़ाया जादू है। हमने अपने अगले बाप दादों के ज़माने में कभी यह नहीं सुना। (36) हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) कहने लगे, मेरा रब तआला ख़ूब जानता है जो उसके पास की हिदायत लेकर आता है और जिसके लिए आख़िरत का अच्छा अंजाम होता है। यक़ीनन

बेइंसाफ़ों का भला न होगा। (37) फ़िरऔन कहने लगा, ऐ दरबारियों! मैं तो अपने सिवा किसी को तुम्हारा मअ़बूद नहीं जानता। सुन ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी को आग से पकवा फिर मेरे लिए एक महल ता'मीर कर तो मैं मूसा (عليه السلام) के मअ़बूद को झाँक लूँ, उसे मैं तो झूठों में से ही गुमान कर रहा हूँ। (38) उसने और उसके लश्करों ने नावाजिबी तरीक़े पर मुल्क में तकब्बुर किया और यह समझ लिया कि वह हमारी जानिब लौटाये ही न जाएँगे। (39) आख़िरकार हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ लिया और दरिया में डुबो दिया। अब देख ले कि उन गुनहगारों का अंजाम कैसा कुछ हुआ? (40) और हमने उन्हें ऐसे इमाम बना दिये कि लोगों को जहन्नम की तरफ़ बुलाएँ और क़ियामत के दिन मुत्लक़ मदद न किये जाएँ। (41) हमने इस दुनिया में भी इनके पीछे अपनी ला'नत लगा दी और क़ियामत के दिन भी वह बदहाल लोगों में से होंगे।" (42)

अल्लाह तआ़ला की वहदानियत पर क़ौम का ताज्जुब (आ. 36 से 42) : हज़रत मूसा (عليه السلام) ख़ल्अ़ते नबुव्वत से और कलामे बारी तआ़ला से मुम्ताज़ होकर बहुक्मे बारी तआ़ला मिस्र में पहुँचे और फ़िरऔन और फ़िरऔनियों को अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और अपनी रिसालत की तल्क़ीन की, साथ ही जो मोजिज़े अल्लाह तआ़ला ने दिये थे, उन्हें भी दिखला दिया, सबको फ़िरऔन के साथ यक़ीने कामिल हो गया कि बेशक हज़रत मूसा (عليه السلام) अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हैं लेकिन मुद्दतों का ग़ुरूर और पुराना कुफ़्र सर उठाये बग़ैर न रह सका और ज़ुबानें दिल के ख़िलाफ़ करके कहने लगे, यह तो सिर्फ़ मस्नूई जादू है। अब अपने दबदबे और क़ुव्वत और ताक़त से हक़ के मुक़ाबले पर जम गए और अल्लाह तआ़ला के नबियों का सामना करने पर तुल गए और कहने लगे कभी हमने तो नहीं सुना कि अल्लाह तआ़ला एक है और हम तो क्या हमारे अगले बाप दादों के कानों ने भी नहीं सुना था, हम सबके सब अपने बड़े छोटों के साथ बहुत से मअ़बूदों को पूजते रहे, यह नई बातें लेकर कहाँ से आ गया। कलीमुल्लाह हज़रत मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि मुझे और तुमको अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है वही हम तुममें फ़ैसले करेगा हममें से हिदायत पर कौन है? और कौन नेक अंजाम है? इसका इल्म भी अल्लाह तआ़ला ही को है वह फ़ैसला कर देगा और तुम अन्क़रीब देख लोगे कि अल्लाह तआ़ला की ताईद किसका साथ देती है? ज़ालिम यानी मुश्रिक कभी ख़ुश अंजाम और शाद काम नहीं हुए वह नजात से महरूम हैं।

फ़िरऔन की हद से ज़्यादा सरकशी : फ़िरऔन की सरकशी और उसके इल्हामी दावा का ज़िक्र हो रहा है कि उसने अपनी क़ौम को बेअक़्ल बनाकर उनसे अपना दावा मनवा लिया। उसने उन कमीनों को जमा करके हाँक लगाई कि तुम्हारा रब मैं ही हूँ। सबसे आला और बुलंदतर हस्ती मेरी ही है इसी बिना पर अल्लाह तआ़ला ने उसे दुनिया और आख़िरत के अ़ज़ाबों में पकड़ लिया और दूसरों के लिए उसे निशाने इब्रत बनाया। उन कमीनों ने उसे मअ़बूद मानकर उसका दिमाग़ यहाँ तक बढ़ा दिया कि उसने कलीमुल्लाह हज़रत मूसा (عليه السلام) से डाँटकर कहा कि सुन रख! अगर तूने मेरे सिवा किसी और को अपना मअ़बूद माना तो मैं तुझे क़ैद मे डाल दूँगा। उन ही सुफ़्ले (घटिया) लोगों में बैठकर अपना दावा उन्हें मनवाकर अपने ही जैसे अपने ख़बीस वज़ीर

हामान से कहता है कि तू एक पज़ावा बना और उसमें ईंटें पकवा और मेरे लिए एक बुलंद व बाला महल बना कि मैं चढ़कर झाँक लूँ कि वाक़ेई में मूसा (عليه السلام) का कोई अल्लाह तआला है भी या नहीं। भले मुझे उसके झूठा होने का इल्म तो है मगर मैं इसका झूठ तुम सब पर ज़ाहिर करना चाहता हूँ। इसी का बयान आयत (يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا) (40/मोमिन : 36) में भी है। चुनाँचे एक बुलंद महल बनाया गया कि उससे ऊँचा दुनिया में पहले देखा नहीं गया। यह हज़रत मूसा (عليه السلام) को न सिर्फ़ दावा रिसालत में ही झूठा जानता था बल्कि यह तो वुजूदे बारी तआला का क़ाइल ही न था। चुनाँचे ख़ुद क़ुरआन में है कि मूसा (عليه السلام) से उसने कहा (वमा रब्बुल आलमीन) रब्बुल आलमीन है क्या? और उसने यह भी कहा था कि अगर तूने मेरे सिवा किसी और को अल्लाह जाना तो मैं तुझे क़ैद कर दूँगा। इस आयत में भी है कि उसने अपने दरबारियों से कहा, मेरे इल्म में तो सिवाय मेरे तुम्हारा अल्लाह कोई और नहीं। जब उसकी और उसकी क़ौम की तुग़्यानी और सरकशी हद से बढ़ गई, मुल्के अल्लाह में उनके फ़साद की कोई इंतिहा न रही, उनके अक़ीदे खोटे पैसे जैसे हो गए, क़ियामत के हिसाब के बिलकुल मुंकिर बन बैठे तो बिल आख़िर अल्लाह तआला का अज़ाब उन पर बरस पड़े और रब ने उन्हें ताक लिया और बीज तक खो दिया सबको अपने अज़ाब में पकड़ लिया और एक ही दिन एक ही वक़्त एक साथ दरिया में डुबो दिया। लोगों! सोच लो कि ज़ालिमों का कैसा इब्रतनाक अंजाम होता है। हमने उन्हें जहन्नमियों का इमाम बना दिया है कि यह लोगों को उन कामों की तरफ़ बुलाते हैं जिनसे वह अल्लाह के अज़ाबों में जलें। जो भी उनकी रविश पर चला उसे वह जहन्नम में ले गए जिसने भी रसूलों को झुठलाया और अल्लाह तआला को न माना वह उनकी राह पर है। क़ियामत के दिन भी उनकी कुछ न चलेगी कहीं से उन्हें कोई मदद न पहुँचेगी, दोनों जहान में यह नुक़्सान और घाटा में रहेंगे। जैसे फ़र्मान है (اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ) (47/मुहम्मद : 13) हमने उन्हें तहो बाला कर दिया, और कोई उनका मददगार न हुआ। दुनिया में भी यह मलऊन हुए अल्लाह के, उसके फ़रिश्तों की, उसके नबियों की और तमाम नेक बन्दों की उन पर लानत है जो भी भला आदमी उनका नाम सुनेगा उन पर फिटकार भेजेगा, दुनिया में भी मलऊन हुए और आख़िरत में भी क़बाहत वाले होंगे, जैसे फ़र्मान है (وَ اُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ) (11/हूद : 99) यहाँ भी फिटकार वहाँ भी लअनत।

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ
وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۳﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَاۤ اِلٰى
مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَلٰكِنَّاۤ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا
أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا
قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : ''उन अगले ज़माने वालों को हलाक करने के बाद हमने मूसा (अलैहि.) को ऐसी किताब इनायत की जो लोगों के लिए दलील और हिदायत व रहमत होकर आई थी ताकि वह नसीहत हासिल कर लें। (43) तूर पहाड़ के पश्चिम की तरफ़ जबकि हमने मूसा (عليه السلام) को हुक्म अहकाम की वही पहुँचाई थी न तो तू मौजूद था और न तू देखने वालों में से था(44) लेकिन हमने बहुत से ज़माने पैदा किये जिन पर लम्बी मुद्दतें गुज़र गईं और न तू मदयन के रहने वालों में से था कि उनके सामने हमारी आयतों की तिलावत करता बल्कि हम ही रसूलों के भेजने वाले रहे।(45) और न तू तूर की तरफ़ था जबकि हमने आवाज़ दी बल्कि यह तेरे परवरदिगार की तरफ़ से एक रहमत है इसलिए कि तू उन लोगों को होशियार कर दे जिनके पास तुझसे पहले कोई डराने वाला नहीं पहुँचा, क्या अजब कि वह नसीहत हासिल कर लें।(46) अगर यह बात न होती कि उन्हें उनके अपने हाथों आगे भेजे हुए आमाल की वजह से कोई मुसीबत पहुँचती तो यह कह उठते कि ऐ हमारे रब! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यूँ न भेजा? कि हम तेरी आयतों की ताबेदारी करते और ईमान वालों में से हो जाते।'' (47)

आसमानी किताब तौरात की ख़ुसूसियात (आ. 43 से 47) : इस आयत में एक लतीफ़ बात यह है कि फ़िरऔनियों की हलाकत के बाद वाली उम्मतें इस तरह अज़ाबे आसमानी से हलाक नहीं हुईं। बल्कि जिस उम्मत ने सरकशी की उसकी सरकशी का बदला उसी ज़माने के नेक लोगों के हाथों अल्लाह तआला ने उसे दिलवाया। मोमिनीन मुश्रिकीन से जिहाद करते रहे। जैसे फ़र्माने बारी तआला है (وَ جَآءَ فِرْعَوْنُ وَ مَنْ قَبْلَهٗ وَ الْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ)(69/हाक़्क़ा : 9) यानी फ़िरऔन और जो उम्मतें उससे पहले हुईं और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले यानी क़ौमे लूत यह सब लोग बड़े बड़े क़सूरों (गुनाहों) के मुर्तकिब हुए और अपने अपने ज़माने के रसूलों की नाफ़र्मानियों पर कमर कस ली तो अल्लाह तआला ने उन सबको बड़ी सख़्त पकड़ से पकड़ लिया। उस गिरोह की हलाकत के बाद भी अल्लाह के इन्आम हज़रत मूसा (عليه السلام) पर नाज़िल होते रहे जिनमें से एक बहुत बड़े इन्आम का ज़िक्र यहाँ है कि उन्हें तौरात मिली। इस तौरात के नाज़िल होने के बाद किसी क़ौम को आसमान के या ज़मीन के आम अज़ाब से हलाक नहीं किया गया, सिवाय उस बस्ती के चंद मुज्रिमों के जिन्होंने अल्लाह तआला की हुर्मत के ख़िलाफ़ हफ़्ते के दिन शिकार खेला था और अल्लाह

तआला ने उन्हें बन्दर और सूअर बना दिया था। यह वाक़िया बेशक हज़रत मूसा (عليه السلام) के बाद का है जैसे कि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया है और उसके बाद ही अपने क़ौल की गवाही में यही आयत (व लक़द अतैना) की तिलावत की है। एक मरफ़ूअ हदीस में भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (عليه السلام) के बाद किसी क़ौम को अज़ाबे आसमानी या ज़मीनी से हलाक नहीं किया। ऐसे अज़ाब जितने आए आपसे पहले ही पहले आये। फिर आपने यही आयत तिलावत की।" (हाकिम : 2/408; बज़्ज़ार : 2248; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/88) फिर तौरात के औसाफ़ बयान हो रहे हैं कि वह लोगों को अंधेरे से निकालने वाली थी और रब तआला की रहमत थी नेक आमाल की हादी थी ताकि लोग उससे हिदायत हासिल करें और नसीहत भी और राहे रास्त पर आ जाएँ।

मूसा (عليه السلام) के वाक़ियात की ख़बर नबी अकरम (ﷺ) की नबुव्वत की दलील है : अल्लाह तबारक व तआला अपने नबी आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) की नबुव्वत की दलील देता है कि एक वह शख़्स जो सिर्फ़ उम्मी हो जिसने एक हर्फ़ भी न पढ़ा हो जो अगली किताबों से सिर्फ़ नाआशना हो जिसकी क़ौम की क़ौम इल्मी मशाग़िल से और गुज़िश्ता तारीख़ (इतिहास) से बिलकुल बेख़बर हो, वह तफ़्सील और वज़ाहत के साथ कामिल फ़साहत व बलाग़त के साथ बिलकुल सच्चे ठीक और सही गुज़िश्ता वाक़ियात को इस तरह बयान करे जैसे कि उसकी अपनी आँखों देखी हों और जैसे कि वह ख़ुद उनके होने के वक़्त वहीं मौजूद हो, क्या यह इस अम्र की दलील नहीं कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ से तल्क़ीन किया जाता है और अल्लाह तआला ख़ुद अपनी वही के ज़रिये से उन्हें वह तमाम बातें बतलाता है। हज़रत मरयम सिद्दीक़ा (عليها السلام) का वाक़िया बयान करते हुए भी कुरआन ने इस चीज़ को पेश किया है और फ़र्माया है (وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ) (3/आले इमरान : 44) जबकि वह हज़रत मरयम (عليها السلام) के पालने के लिए क़लमें डालकर फ़ैसले कर रहे थे उस वक़्त तू वहाँ मौजूद न था और न तू उस वक़्त था जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे पस बावजूद अदमे मौजूदगी और बेख़बरी के आपका इस तरह उस वाक़िया को बयान करना कि गोया उस वक़्त आप वहाँ मौजूद थे और आपके सामने ही तमाम वाक़ियात गुज़र रहे थे आपकी नबुव्वत की खरी दलील है और साफ़ निशानी है इस अम्र पर कि आप वही इलाही से यह कह रहे हैं।

इसी तरह नबी नूह (عليه السلام) का वाक़िया बयान करके फ़र्माया (تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ) (11/हूद : 49) यह ग़ैब की ख़बरें हैं जिन्हें हम बज़रिया वही के तुम तक पहुँचा रहे हैं तू और तेरी सारी क़ौम इस वही से पहले इन वाक़ियात को नहीं जानते थे, अब सब्र के साथ देखता रह और यक़ीन मान कि अल्लाह तआला से डरने वाले ही नेक अंजाम को पहुँचते हैं। सूरह यूसुफ़ के आख़िर में भी इर्शाद हुआ है कि यह ग़ैब की ख़बरें हैं जिन्हें हम बज़रिये वही के तेरे पास भेज रहे हैं, तू इनके पास उस वक़्त मौजूद न था जबकि बिरादराने यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपना मुसम्मम (ठोस) इरादा कर लिया था और अपनी तदबीरों में लग गए थे। सूरह ताहा में आम तौर पर फ़र्माया (كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ) (20/ताहा : 99) इसी तरह हम तेरे सामने पहले की ख़बरें बयान करते हैं। पस यहाँ भी मूसा (عليه السلام) की पैदाइश उनकी नबुव्वत की शुरुआत वग़ैरह पहले से आख़िर तक बयान करके फ़र्माया कि तुम ऐ मुहम्मद (عليه السلام)! मग़रिबी पहाड़ की जानिब जहाँ के मश्रिक़ी

दरख़्त में से जो वादी के किनारे थे रब तआला ने अपने कलीमुल्लाह (ﷺ) से बातें कीं, मौजूद न थे बल्कि सुब्हानहू व तआला ने अपनी वह्ही के ज़रिये आपको यह सब मालूमात कराईं, ताकि यह आपकी नबुव्वत की दलील हो जाए, उन ज़मानों पर जो मुद्दतों से चले आ रहे हैं और अल्लाह की बातों को वह भूल भाल चुके हैं अगले नबियों की वह्ही उनके हाथों से गुम हो चुकी है और न तू मदयन में रहता था कि वहाँ के नबी (हज़रत) शुऐब (ﷺ) के हालात बयान करता जो उनमें और उनकी क़ौम में वाक़ेअ हुए थे। बल्कि हमने बज़रिये वह्ही के तुझे यह सब ख़बरें पहुँचाईं और तमाम जहान की तरफ़ तुझे अपना रसूल बनाकर भेजा। और न तू तूर की तरफ़ था जबकि हमने आवाज़ दी। नसाई में है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि यह आवाज़ दी गई कि ऐ उम्मते मुहम्मद! तुम मुझसे माँगो उससे पहले मैंने तुम्हें दे दिया, और तुम मुझसे दुआ करो उससे पहले मैं क़बूल कर चुका। (हाकिम : 2/408; ह : 3535; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) मुक़ातिल कहते हैं कि ''हमने तेरी उम्मत को जो अभी बाप दादों की पीठ में थी आवाज़ दी कि जब तू नबी बनाकर भेजा जाए तो वह तेरी इत्तिबाअ़ करें।'' क़तादा (रह.) कहते हैं ''मतलब यह हे कि हमने हज़रत मूसा (ﷺ) को आवाज़ दी।'' यही ज़्यादा मुशाबेह और मुताबिक़ है क्योंकि ऊपर भी यही ज़िक्र है। ऊपर आम तौर पर बयान था यहाँ ख़ास तौर से ज़िक्र किया, जैसे और आयत में है (وَ اِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰى) (26/शोअरा : 10) जबकि तेरे परवरदिगार ने मूसा (ﷺ) को आवाज़ दी। और आयत में है कि वादी मुक़द्दस में अल्लाह तआला ने कलीम को पुकारा। और आयत में है कि तूरे ऐमन की तरफ़ से हमने उसे पुकारा और कलाम करते हुए उसे अपना क़ुर्ब अता किया। फिर फ़र्माता है कि उनमें से एक वाक़िया भी न तेरी हाज़िरी का है, न तेरा चश्मदीद है बल्कि यह अल्लाह तआला की वह्ही है जो वह अपनी रहमत से तुझ पर नाज़िल फ़र्मा रहा है और यह भी उसकी रहमत है कि तुझे अपने बन्दों की तरफ़ अपना ही नबी बनाकर भेजा कि तू उन लोगों को आगाह और होशियार कर दे जिनके पास तुझसे पहले कोई नबी नहीं आया ताकि वह नसीहत हासिल करें और हिदायत पाएँ। और इसलिए भी कि उनकी कोई दलील बाक़ी न रह जाए और कोई उज़्र उनके हाथ में न रहे यह अपने कुफ़्र की वजह से अज़ाबों को आता देखकर यह न कह सकें कि इनके पास कोई रसूल आया ही न था जो इन्हें सीधे रास्ते की तालीम देता और जैसे कि और जगह अपनी मुबारक किताब क़ुरआने करीम के नुज़ूल को बयान करके फ़र्माया कि यह इसलिए है कि तुम यह न कह सको कि किताब तो हमसे पहले की दोनों जमाअतों पर उतरी थी लेकिन हम तो इस दर्स व तदरीस से बिलकुल ग़ाफ़िल थे अगर हम पर किताब नाज़िल होती तो यक़ीनन हम इनसे ज़्यादा राहे रास्त पर आ जाते, अब बताओ कि ख़ुद तुम्हारे पास भी तुम्हारे रब की दलील और हिदायत व रहमत आ चुकी। और आयत में है रसूल हैं ख़ुशख़बरियाँ देने वाले डराने वाले ताकि उन रसूलों के बाद किसी की कोई हुज्जत अल्लाह पर बाक़ी न रह जाए। और आयत में फ़र्माया (يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ) (5/माइदा : 19) अहले किताब! उस ज़माने में जो रसूलों की अदमे मौजूदगी का चला आ रहा था हमारा रसूल तुम्हारे पास आ चुका, अब तुम यह नहीं कह सकते कि हमारे पास कोई बशीर व नज़ीर नहीं पहुँचा, लो! ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला तुम्हारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से आ पहुँचा। और आयतें भी इस मज़्मून की बहुत सी हैं ग़र्ज़ रसूल आ चुके और तुम्हारा यह उज़्र कट गया कि अगर रसूल आते तो हम उसकी मानते और मोमिन हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِیَ مِثْلَ مَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی ؕ اَوَلَمْ یَکْفُرُوْا
بِمَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ٝ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِکُلٍّ کٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ
فَاْتُوْا بِکِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰہِ ھُوَ اَھْدٰی مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۹﴾ فَاِنْ لَّمْ
یَسْتَجِیْبُوْا لَکَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا یَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَیْرِ
هُدًی مِّنَ اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۰﴾ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ
لَعَلَّهُمْ یَتَذَکَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾

तर्जुमा : ''फिर जब इनके पास हमारी तरफ़ से हक़ आ पहुँचा तो कहने लगे वह क्यूँ नहीं दिया गया जैसे दिये गए थे मूसा (عليه السلام)! अच्छा तो क्या मूसा (عليه السلام) को जो कुछ दिया गया था उसके साथ लोगों ने कुफ़्र न किया था। साफ़ कहा था कि यह दोनों जादूगर हैं जो एक दूसरे के मददगार हैं और हम तो उन सबका इंकार करते हैं। (48) कह दे कि अगर सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो उन दोनों से ज़्यादा हिदायत वाली हो, मैं उसी की पैरवी कर लूँगा अगर तुम सच्चे हो? (49) फिर अगर यह तेरी न मानें तो तू यक़ीन कर ले कि यह सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं, उससे बढ़कर बहका हुआ कौन है? जो अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा हुआ हो बग़ैर रब की रहनुमाई के। बेशक अल्लाह तआला ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50) हम बराबर पे दर पे लोगों के लिए अपना कलाम लाते रहे ताकि वह नसीहत हासिल कर लें।'' (51)

कुफ़्फ़ार के एक सवाल का जवाब (आ. 48 से 51) : पहले बयान हुआ कि अगर नबियों के भेजने से पहले ही हम उन पर अज़ाब भेज देते तो उनकी यह बात रह जाती कि अगर रसूल हमारे पास आते तो हम ज़रूर उनकी मानते इसलिए हमने रसूल भेजे। बिलख़ुसूस हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को आख़िरुज़्ज़मान रसूल बनाकर भेजा, जब हुज़ूर (ﷺ) उनके पास पहुँचे तो उन्होंने आँखें फेर लीं, मुँह घुमा लिया और तकब्बुर व इनाद के साथ ज़िद और हठधर्मी के साथ कहने लगा कि जैसे हज़रत मूसा (عليه السلام) को बहुत से मोजिज़े दिये गए थे जैसे लकड़ी और हाथ और तूफ़ान और टिड्डियाँ और जूएँ और मेंढक और ख़ून और अनाज की फलों की कमी वग़ैरह जिनसे दुश्मनाने अल्लाह तंग आ गए और दरिया को चीरना और बादल का साया करना और मन्न व सल्वा का उतारना वग़ैरह। जो ज़बरदस्त और बड़े बड़े मोजिज़े थे, इन्हें क्यूँ नहीं दिये गए? अल्लाह तआला

फ़र्माता है यह लोग जिस वाक़िया को मिसाल के तौर पर पेश करते हैं और उस जैसे मोजिज़े माँग रहे हैं यह ख़ुद उन ही मोजिज़ों को कलीमुल्लाह के हाथों होते हुए देखकर ही कौनसा ईमान लाए थे? जो अब इनके ईमान की कोई तमन्ना करे? इन्होंने तो उन तमाम मोजिज़ों को देखकर साफ़ कह दिया था कि यह दोनों भाई हमें अपने बड़ों की ताबेदारी से हटाना चाहते हैं और अपनी बड़ाई हमसे मनवाना चाहते हैं। हम तो हर्गिज़ इनका कहा नहीं मानेंगे। दोनों नबियों को झुठलाते रहे, आख़िर अंजाम हलाक कर दिये गए। तो फ़र्माया कि इनके बड़े जो बज़माना हज़रत मूसा (عليه السلام) के साथ थे, कुफ़्र किया था और उन मोजिज़ों को देखकर साफ़ कह दिया था कि यह दोनों भाई जादूगर हैं आपस में मुत्तफ़िक़ होकर हमें ज़ेर करने और अपने आपको बड़ा मनवाने के लिए आए हैं हम तो इन दोनों मे से किसी की भी नहीं मानेंगे। यहाँ भले ज़िक्र सिर्फ़ हज़रत मूसा (عليه السلام) का है लेकिन चूँकि हज़रत हारून (عليه السلام) उनके साथ ऐसे रिले मिले थे कि गोया दोनों एक थे तो एक के ज़िक्र को ही दूसरे के ज़िक्र के लिए काफ़ी समझा जैसे किसी शायर का क़ौल है कि जब मैं किसी जगह का इरादा करता हूँ तो मैं नहीं जानता कि वहाँ मुझे कोई नफ़ा मिलेगा या मेरा नुक़्सान होगा? तो यहाँ भी शायर ने ख़ैर का लफ़्ज़ तो कहा है मगर शर्र का लफ़्ज़ बयान नहीं किया है क्योंकि ख़ैर व शर्र दोनों की मुलाज़िमत मुक़ारिबत और मुसाहिबत है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं "यहूदियों ने कुरैश से कहा कि तुम यह एतिराज़ हुज़ूर (ﷺ) पर करो उन्होंने किया और जवाब पाकर ख़ामोश हो गए।" (तब्री : 19/588) एक क़ौल यह भी है कि "दोनों जादूगरों से मुराद हज़रत मूसा (عليه السلام) और हुज़ूर (ﷺ) हैं।" एक क़ौल यह भी है कि "मुराद हज़रत ईसा (عليه السلام) और हुज़ूर (ﷺ) हें। लेकिन इस तीसरे क़ौल में बहुत ही बुअ़द है और दूसरे क़ौल से भी ज़्यादा पहला क़ौल सही मज़बूत और उम्दा है, वल्लाहु आलम! यह मतलब (साहिरून) की क़िरअत पर है और जिनकी क़िरअत (सिहरानि) है वह कहते हैं मुराद तौरात और कुरआन है। (तब्री : 19/589) जो एक दूसरे की तस्दीक़ करने वाली हैं। कोई कहता है मुराद तौरात व इंजील है, किसी का क़ौल है कि इंजील और कुरआन मुराद है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम बिस्सवाब। लेकिन इस क़िरअत पर भी ज़ाहिरी तौरात व कुरआन के मअ़नी ठीक हैं क्योंकि उसके बाद ही फ़र्मान रब तआला है कि तुम ही इन दोनों से ज़्यादा हिदायत वाली कोई किताब रब तआला के यहाँ से लाओ जिसकी मैं ताबेदारी करूँ। तौरात व कुरआन को अक्सर एक ही जगह कुरआने करीम में बयान किया गया है जैसे फ़र्माया (قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ هُدًى لِّلنَّاسِ) (6/अन्आम : 91) पस यहाँ तौरात के मअ़नी नूर व हिदायत होने का ज़िक्र करके फिर फ़र्माया (وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ) (6/अन्आम : 92) और इस किताब को भी हमने ही बाबरकत बनाकर उतारा है। और सूरह के अख़ीर में फ़र्माया (ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ) (6/अन्आम : 154) फिर हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी। और फ़र्मान है इस हमारी उतारी हुई मुबारक किताब की तुम पैरवी करो, रब तआला से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जिन्नात का क़ौल कुरआन में है कि उन्होंने कहा हमने वह किताब सुनी जो मूसा (عليه السلام) के बाद उतारी गई है जो अपने से पहले की किताबों की सच्चाई बयान करती है। वरक़ा बिन नौफ़िल का क़ौल हदीस की किताबों में मरवी है कि उन्होंने कहा था, यह वही अल्लाह तआला के राज़दाँ भेदी हैं जो हज़रत मूसा (عليه السلام) के बाद आपकी तरफ़ भेजे गये हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वही, बाब कैफ़ काना बदउल वही इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 3; सहीह मुस्लिम : 160) जिस शख़्स ने ग़ाइर नज़र (गहराई) से इल्मे दीन

का मुतालआ किया है उस पर यह बात बिलकुल ज़ाहिर है कि आसमानी किताबों में सबसे ज़्यादा अज़्मत व शराफ़त वाली इज़्ज़त व करामत वाली किताब तो यही कुरआन मजीद है जो अल्लाह तआला हमीद व मजीद ने अपने रऊफ़ व रहीम नबी आख़िरुज़्ज़मा (ﷺ) पर नाज़िल की है।

इसके बाद तौरात का दर्जा है जिसमें हिदायत व नूर था। जिसके मुताबिक़ अम्बिया और उनके मातहत हुक्म अहकाम जारी करते रहे। इंजील तो सिर्फ़ तौरात को तमाम करने वाली और कुछ हराम को हलाल करने वाली थी इसीलिए यहाँ फ़र्माया कि इन दोनों किताबों से बेहतर किताब अगर तुम अल्लाह तआला के यहाँ से लाओ तो मैं उसकी ताबेदारी के लिए आमादा हूँ। फिर फ़र्माया कि जो आप कहते हैं वह भी अगर यह न करें और न आपकी ताबेदारी में आएँ तो जान ले कि दरअसल इन्हें दलील व बुरहान की कोई हाजत ही नहीं, यह सिर्फ़ झगड़ालू और ख़्वाहिश परस्त हैं। और ज़ाहिर है कि ख़्वाहिश के पाबंद लोगों से जो रब्बानी हिदायत से ख़ाली हों बढ़कर कोई ज़ालिम नहीं। उसमें इन्हिमाक करके जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करें वह आख़िर तक राहे रास्त से महरूम रह जाते हैं। हमने इनके लिए तफ़सीली क़ौल बयान कर दिया, वाज़ेह कर दिया, साफ़ कर दिया, अगली पिछली बातें बयान कर दीं, कुरेशियों के सामने सब कुछ ज़ाहिर कर दिया। (तब्री : 19/593, 594) कुछ मुराद इससे रफ़ाआ लेते हैं और उनके साथ के और नौ आदमी। यह रफ़ाआ सफ़िया बिन्ते हुय्यी (रज़ि.) के मामूँ हैं जिन्होंने तमीमा बिन्ते वहब को तलाक़ दी थी जिनका दूसरा निकाह अब्दुर्रहमान बिन ज़ुबेर (रज़ि.) से हुआ था।

***

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿۵۳﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؗ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ؗ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿۵۵﴾

तर्जुमा : "जिसको हमने इससे पहले किताब इनायत की वह तो उस पर भी ईमान रखते हैं। (52) जब इसकी आयतें उनके पास पढ़ी जाती हैं तो वह कह देते हैं कि इसके हमारे रब की तरफ़ से और हक़ होने पर हमारा ईमान है हम तो इससे पहले ही मुसलमान हैं। (53) यह अपने

किये हुए सब्र के बदले दोहरा दोहरा अज्र दिये जाएँगे, यह नेकी से बदी को टाल देते हैं, और हमने जो इन्हें दे रखा है यह भी देते रहते हैं। (54) और जब बेहूदा बात कान में पड़ती है तो उससे किनारा कर लेते हैं और कह देते हैं कि हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों की हमनशीनी के तालिब नहीं।'' (55)

अहले किताब को नेक आमाल पर दोहरा अज्र (आ. 52 से 55) : अहले किताब के उलमा जो दरहक़ीक़त रब्बानी दोस्त थे उनके पाकीज़ा औसाफ़ बयान हो रहे हैं कि वह कुरआन को मानते हैं, जैसे फ़र्मान है जिन्हें हमने किताब दी है और वह समझ बूझकर पढ़ते हैं उनका तो इस कुरआन पर ईमान है। और आयत में है कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं जो अल्लाह को मानकर तुम्हारी तरफ़ नाज़िलशुदा किताब को और अपनी तरफ़ उतरी हुई किताब को भी मानते हैं, और अल्लाह तआला से डरते रहते हैं। और जगह है पहले के अहले किताब ऐसे भी हैं कि हमारे इस कुरआन की आयतें सुनकर सज्दों में गिर पड़ते हैं और ज़ुबान से कहते रहते हैं कि (سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا) (17/बनी इस्राईल : 108) और आयत में है (وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى) (5/माइदा : 82) अल्आयत यानी मुसलमानों के साथ दोस्ती के ऐतिबार से सब लोगों से क़रीबतर उन्हें पाओगे जो अपने आपको नसारा कहते हैं, इसलिए कि उनमें उलमा और मशाइख़ हैं और यह लोग किब्रो गुरूर से ख़ाली हैं और कुरआन को सुनकर रो देते हैं और कह उठते हैं कि हमारा ईमान है ऐ अल्लाह! हमें भी अपने दीन का मानने वाला लिख ले। सईद बिन ज़ुबैर (रह.) का बयान है कि ''जिनके हक़ में यह फ़र्माया गया है यह सत्तर बुज़ुर्ग उलमा थे जो हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में नज्जाशी (शाहे हब्शा) के भेजे हुए आये थे हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें सूरह यासीन सुनाई जिसे सुनकर यह रोने लगे और मुसलमान हो गए। उन ही के बारे में यह आयतें उतरीं कि यह उन्हें सुनते ही अपने मुवह्हिद होने का इक़रार करते हैं और क़बूल करके मोमिन मुस्लिम बन जाते हैं।'' उनकी इन सिफ़तों पर अल्लाह तआला भी उन्हें दोहरा अज्र देता है एक पहली किताब को मानने का दूसरा इस कुरआन की तस्लीम व ता'मील का। यह इत्तिबाए हक़ पर साबित क़दमी करते हैं जो दरअसल एक मुश्किल और अहम काम है। हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है कि ''तीन क़िस्म के लोगों को दोहरा अज्र मिलता है। अहले किताब जो अपने नबी को मानकर फिर मुझ पर ईमान लाये, गुलाम मम्लूक जो अपने मजाज़ी आक़ा की हुक्मबरदारी के साथ ही अल्लाह तआला के हक़ की अदायगी भी करता रहे और वह शख़्स जिसके पास कोई लौण्डी हो जिसे वह अदब व इल्म सिखाए फिर आज़ाद करके उससे निकाह कर ले।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब ता'लीमुर्रजुल अमतहू व अहलहू : 97; सहीह मुस्लिम : 154; अबूदाऊद : 2053; तिर्मिज़ी : 1116; इब्ने माजा : 1956; अहमद : 4/395; इब्ने हिब्बान : 227) सय्यदना अबू उमामा (रज़ि.) कहते हैं कि ''फ़तहे मक्का वाले दिन मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की सवारी के साथ ही और बिलकुल पास ही था आप (ﷺ) ने बहुत बेहतरीन बातें इर्शाद फ़र्माईं जिनमें यह भी फ़र्माया कि यहूदो नसारा में से जो मुसलमान हो जाए उसे दोहरा अज्र है और उसके आम मुसलमानों के बराबर हुक़ूक़ हैं। (अहमद : 5/259; ह : 22234; तफ़्सीर तबरी : 27/142; व सनदुहू हसन) फिर उनके नेक औसाफ़ बयान हो रहे हैं कि यह बुराई का बदला बुराई से नहीं लेते बल्कि माफ़ कर देते हैं दरगुज़र कर देते हैं

और नेक सलूक ही करते हैं और अपनी हलाल रोज़ियाँ अल्लाह तआला के नाम ख़र्च करते हैं और अपने बाल बच्चों का पेट भी पालते हैं, ज़कात, सदक़ात, ख़ैरात में भी बुख़्ल (कंजूसी) नहीं करते। लग़्व बातों से बचे हुए रहते हैं ऐसे लोगों से दोस्तियाँ नहीं करते, बुरी मज्लिसों से दूर रहते हैं बल्कि कभी अचानक गुज़र हो भी जाए तो बुज़ुर्गाना तौर पर हट जाते हैं बदमिजाज़ लोगों से मेल जोल उल्फ़त मुहब्बत नहीं करते, साफ़ कह देते हैं कि तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ हमारा अमल हमारे साथ यानी जाहिलों की सख़्तकलामी भी बर्दाश्त कर लेते हैं। उन्हें ऐसा जवाब नहीं देते कि वह और भड़कें बल्कि चश्मपोशी कर लेते हैं और तरह दे जाते हैं चूँकि ख़ुद पाक नफ़्स हैं इसलिए पाकीज़ा कलाम ही मुँह से निकालते हैं। कह देते हैं कि तुम पर सलाम हो, हम न जाहिलाना रविश पर चलें, न जिहालत की चाल को पसंद करें। इब्ने इस्हाक़ (रह.) फ़र्माते हैं कि "हुज़ूर (ﷺ) के पास हब्शा से तक़रीबन बीस ईसाई आये। आप (ﷺ) उस वक़्त मस्जिद में तशरीफ़ फ़र्मा थे यहीं यह भी बैठ गए, और बातचीत शुरू कर दी। उस वक़्त क़ुरैशी अपनी अपनी बैठकों में कअबा के आसपास बैठे हुए थे। उन ईसाई उलमा ने जब सवालात कर लिये और जवाबात से उनकी तशफ़्फ़ी हो गई तो आप (ﷺ) ने दीने इस्लाम उनके सामने पेश किया और क़ुरआने करीम की तिलावत करके उन्हें सुनाई। चूँकि यह लोग लिखे पढ़े संजीदा और रोशन दिमाग़ थे, क़ुरआन ने उनके दिलों पर असर किया और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने फ़ौरन दीने इस्लाम क़बूल कर लिया, अल्लाह तआला के रसूल पर ईमान लाये क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) की जो जो सिफ़तें उन्होंने अपनी आसमानी किताबों में पढ़ी थीं सब आप (ﷺ) में मौजूद पाईं। जब यह लोग आप (ﷺ) के पास से जाने लगे तो अबू जहल मलऊन अपने आदमियों को लिये हुए उन्हें रास्ते में मिला और तमाम क़ुरैशियों ने मिलकर उन्हें तअने देने शुरू किये और बुरा कहने लगे कि तुमसे बदतरीन वफ़्द किसी क़ौम का हमने नहीं देखा, तुम्हारी क़ौम ने तुम्हें उस शख़्स के हालात मालूम करने के लिए भेजा यहाँ आकर तुमने आबाई मज़हब को छोड़ दिया और उसका ऐसा रंग तुम पर चढ़ा कि ज़रा सी देर में अपने दीन को छोड़ करके दीन को बदल दिया और उसी का कलिमा पढ़ने लगे तुमसे ज़्यादा अहमक़ हमने तो किसी को नहीं पाया वग़ैरह। उन्होंने ठण्डे दिल से यह सब सुन लिया और जवाब दिया कि हम तुम्हारे साथ जाहिलाना बातें करना पसंद नहीं करते, हमारा दीन हमारे साथ तुम्हारा दीन तुम्हारे साथ, हमने जिस बात में अपनी भलाई देखी, उसे क़बूल कर लिया। यह भी कहा जाता है कि यह वफ़्द नजरान के ईसाइयों का था, वल्लाहु आलम! यह भी कहा गया है कि यह आयतें उन ही के बारे में उतरी हैं। इमाम ज़ोहरी (रह.) से इन आयतों का शाने नुज़ूल पूछा गया तो आपने फ़र्माया, मैं तो अपने उलमा से यही सुनता चला आया हूँ कि यह आयतें नज्जाशी और उनके अस्हाब के बारे में उतरी हैं।" और सूरह माइदा की आयतें (ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَ رُهْبَانًا) से (مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾)(5/माइदा : 82) तक की आयतें भी उन ही के बारे में नाज़िल हुई हैं।

إِنَّكَ لَا تَهْدِى مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِى مَن يَشَآءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

﴿٥٦﴾ وَقَالُوٓا۟ إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَآ ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا

ءَامِنًا يُجْبَىٰٓ إِلَيْهِ ثَمَرَٰتُ كُلِّ شَىْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

तर्जुमा : "तू जिसे चाहे हिदायत नहीं कर सकता बल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे हिदायत करता है। हिदायत वालों से वही ख़ूब आगाह है। कहने लगे अगर हम आपके साथ होकर हिदायत के ताबेदार हो जाएँ तो हम अपने मुल्क से उचक लिये जाएँ। क्या हमने उन्हें अम्नो अमान और हुर्मत वाले हरम में जगह नहीं दी? जहाँ तमाम चीज़ों के फल खिचे चले आते हैं जो हमारे पास बतौरे रिज़्क़ के हैं लेकिन उनमें से अक्सर कुछ नहीं जानते।" (57)

हिदायत नबी (ﷺ) के इख़्तियार में नहीं बल्कि अल्लाह तआला के इख़्तियार में है (आ. 56, 57) : ऐ नबी (ﷺ)! किसी को हिदायत पर ला खड़ा करना तुम्हारे क़ब्ज़े की चीज़ नहीं आप पर तो सिर्फ़ पैग़ामे रब के पहुँचा देने का फ़रीज़ा है। हिदायत का मालिक रब है वह अपनी हिक्मत के साथ जिसे चाहे क़बूले हिदायत की तौफ़ीक़ देता है। जैसे फ़र्मान है (لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ) (2/बक़रह : 272) तेरे ज़िम्मे इनकी हिदायत नहीं, वह चाहे तो हिदायत बख़्शे। और आयत में है) وَمَآ أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾) (12/यूसुफ़ : 103) भले तू हर मुम्किन कोशिश कर ले लेकिन उनमें के अक्सर ईमान वाले नहीं होने के, यह अल्लाह के इल्म में है कि हिदायत का मुस्तहिक़ कौन है और ज़लालत का कौन है? बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "यह ईमान वाले नहीं होने के यह आयत अल्लाह के रसूल (ﷺ) के चचा अबू तालिब के बारे में उतरी है जो आपका बहुत ख़्याल रखते थे और हर मौक़े पर आपकी मदद किया करते थे और आप (ﷺ) का साथ दिया करते थे, और दिल से मुहब्बत करते थे लेकिन यह मुहब्बत बवजह रिश्तेदारी के तब्ई थी शरअन न थी, जब उनकी मौत का वक़्त क़रीब आया तो हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें इस्लाम में आने की दावत दी और ईमान लाने की रग़बत दिलाई लेकिन तक़्दीर का लिखा और अल्लाह का चाहा ग़ालिब आया, यह हाथों में से फिसल गए और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे। हुज़ूर (ﷺ) उसके इंतिक़ाल के वक़्त उसके पास आये, अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या भी उसके पास बैठे हुए थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ला इलाहा इल्लल्लाह कह लीजिए, मैं इस कहने की वजह से अल्लाह तआला के यहाँ आपका सिफ़ारिशी बन जाऊँगा। अबू जहल और अब्दुल्लाह ने कहा, अबू तालिब! क्या तू अपने बाप अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब से फिर जाओगे। अब हुज़ूर (ﷺ) समझाते रहे और यह दोनों उन्हें रोकते रहे यहाँ तक कि आख़िरी कलिमा उनकी ज़ुबान से यही निकला कि यह कलिमा मैं नहीं पढ़ता और मैं अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब पर हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया बेहतर है मैं आपके लिए अपने रब से माफी की दरख़्वास्त करता रहूँगा, यह और बात है कि मैं रोक

दिया जाऊँ, अल्लाह मुझे मना कर दे लेकिन उसी वक़्त आयत उतरी (مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَ لَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى) (9/तौबा : 113) यानी नबी को और मोमिनों को हर्गिज़ यह बात सज़ावार नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए इस्तिग़फ़ार करें भले वह उनके नज़दीकी क़राबतदार ही क्यूँ न हों।" और इसी अबू तालिब के बारे में आयत (इन्नका ला तहदी) भी नाज़िल हुई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब इज़ा क़ालल मुश्रिकु इन्दल मौत ला इलाहा इल्लल्लाह : 1360; सहीह मुस्लिम : 24; अहमद : 5/433; इब्ने हिब्बान : 982) तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि "अबू तालिब के मर्ज़ुल मौत में हुज़ूर (ﷺ) ने उससे कहा कि चचा! ला इलाहा इल्लल्लाह कह लीजिए, मैं इसकी गवाही क़ियामत के दिन दे दूँगा, तो उन्होंने कहा कि अगर मुझे अपने ख़ानदान कुरैश के इस तअ़ने का डर न होता कि उसने मौत की घबराहट की वजह से यह कलिमा कह लिया तो मैं इसे कहकर तेरी आँखों को ठण्डा कर देता, मगर फिर भी इसे सिर्फ़ तेरी ख़ुशी के लिए कहता। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अद्दलीलु अ़ला सिहतिल इस्लामि मन हज़रहुल मौत : 25; तिर्मिज़ी : 3188) दूसरी रिवायत में है कि आख़िर उसने कलिमा पढ़ने से इंकार कर दिया और साफ़ कह दिया कि मेरे भतीजे मैं तो अपने बड़ों की रविश पर हूँ, और उसी बात पर उसकी मौत हुई कि वह अ़ब्दुल मुत्तलिब के मज़हब पर है।" क़ैसर का क़ासिद जब रसूले अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और क़ैसर का ख़त ख़िदमते नबवी (ﷺ) में पेश किया तो आप (ﷺ) ने उसे अपनी गोद में रखकर उससे फ़र्माया, "तू किस क़बीले से है? उसने कहा, तीरज क़बीले का मैं आदमी हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तेरा क़सद है कि तू अपने बाप हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के दीन पर आ जाए? उसने जवाब दिया कि मैं जिस क़ौम का क़ासिद हूँ जब तक उनके पैग़ाम का जवाब उन्हें न पहुँचा दूँ उनके मज़हब को नहीं छोड़ सकता। तो आप (ﷺ) ने मुस्कुराकर अपने सहाबा की तरफ़ देखकर यही आयत पढ़ी।" (इब्ने अबी हातिम इस रिवायत की सनद रसूले क़ैसर तक हसन है लेकिन रसूले क़ैसर का मुसलमान होना साबित नहीं है लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है। सईद बिन अबी राशिद को तिर्मिज़ी और इब्ने हिब्बान ने सिक़ा व सदूक़ क़रार दिया है। लिहाज़ा क़ौले राजेह में वह हसनुल हदीस हैं।) मुश्रिकीन अपने ईमान न लाने की एक वजह यह भी बयान करते थे कि हम आपकी लाई हुई हिदायत को मान लें तो हमें डर लगता है कि इस दीन के मुख़ालिफ़ जो हमारे चारों तरफ़ हैं और तादाद में हमसे बहुत ही ज़्यादा हैं, वह हमारे जान के दुश्मन बन जाएँगे और हमें तक्लीफ़ पहुँचाएँगे और हमें बर्बाद करेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि यह हीला भी उनका ग़लत है, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हरमे मुहतरम में रखा है जहाँ शुरू दुनिया से अब तक अम्नो अमान रहा है तो यह कैसे हो सकता है कि हालते कुफ़्र में तो यह यहाँ अमन से रहें और जब अल्लाह तआ़ला के सच्चे दीन को क़बूल करें तो अमन उठ जाए? यही तो वह शहर है कि ताइफ़ वग़ैरह मुख़्तलिफ़ मक़ामात से फल, सामान, अस्बाब, माले तिजारत वग़ैरह की आमद व रफ़्त यहाँ बकसरत रहती है। तमाम चीज़ें यहाँ खिंची चली आती हैं और हम उन्हें बैठे बिठाये रोज़ियाँ पहुँचा रहे हैं लेकिन उनमें अक्सरियत पढ़े लिखे नहीं हैं। इसलिए ऐसे रकीक हीले और बेजा उ़ज़्र पेश करते हैं। मरवी है कि यह कहने वाला हारिस बिन आ़मिर बिन नौफ़िल था।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ
بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ
يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا
ظَالِمُونَ ﴿٥٩﴾

तर्जुमा : "हमने बहुत सी वह बस्तियाँ तबाह कर दीं जो अपनी ऐशो इशरत में इतराने लगीं थीं। यह हैं उनकी रिहाइश की जगहें जो उनके बाद बहुत ही कम आबाद की गईं। और हम ही हैं आख़िर सब कुछ ले लेने वाले। (58) तेरा रब किसी एक को भी उस वक़्त तक हलाक नहीं करता जब तक उनकी किसी बड़ी बस्ती में अपना कोई पैग़म्बर न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना दे। हम तो बस्तियों को उसी वक़्त हलाक करते हैं जबकि वहाँ वाले ज़ुल्मो सितम पर कमर कस लें।" (59)

सरकशों की बस्तियाँ निशाने इब्रत बन गईं (आ. 58, 59) : अहले मक्का को होशियार किया जाता है कि जो अल्लाह तआला की बहुत सी नेअमतें हासिल करके इतरा रहे थे और सरकशी और बड़ाई करते थे और अल्लाह तआला से कुफ़्र करते थे, नबी का इंकार करते थे, अल्लाह तआला की रोज़ियाँ खाते और उसकी नमक हरामी करते थे, उन्हें अल्लाह तआला ने इस तरह तबाह व बर्बाद किया कि आज कोई उनका नाम लेने वाला और पानी देने वाला नहीं रहा। जैसे और आयत में है (وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً) (16/नहल : 112) यहाँ फ़र्माता है कि इनकी उजड़ी हुई बस्तियाँ अब तक उजड़ी हुई पड़ी हैं। कुछ यूँ ही सी आबादी अगरचे हो गई हो लेकिन देखो उनके खण्डरात से आज तक वहशत बरस रही है। हम ही उनके मालिक रह गए हैं। हज़रत कअब (रह.) का क़ौल है कि "उल्लू से हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने पूछा कि तू खेती अनाज क्यूँ नहीं खाता? उसने कहा, इसलिए कि उसी के बाइस हज़रत आदम (عليه السلام) जन्नत से निकाले गए। पूछा पानी क्यूँ नहीं पीता? कहा इसलिए कि क़ौमे नूह (عليه السلام) उसी में डुबो दी गयी। पूछा वीराने में क्यूँ रहता है? कहा इसलिए कि वह अल्लाह तआला की मीरास है। फिर हज़रत कअब (रह.) ने (व कुन्ना नह्नुल वारिसीन) पढ़ा" फिर अल्लाह तआला अपने अदलो इंसाफ़ को बयान कर रहा है कि वह किसी को ज़ुल्म से हलाक नहीं करता पहले उन पर अपनी हुज्जत ख़त्म करता है और उनका उज़्र दूर करता है रसूलों को भेजकर अपना कलाम उन तक पहुँचाता हैं इस आयत से यह भी मालूम होता है कि हुज़ूर (ﷺ) की नबुव्वत आम थी। आप (ﷺ) उम्मुल कुरा में मब्ऊस हुए थे और तमाम अरब व अजम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए थे, जैसे फ़र्मान है (لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا)(6/अन्आम : 92) ताकि तू मक्का वालों को और दूसरे शहर

वालों को डरा दे। और फ़र्माया (قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا) (7/आराफ़ : 158) कह दे कि ऐ लोगों! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह तआला का रसूल हूँ और आयत में है (لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ) (6/अन्आम : 19) ताकि इस क़ुरआन से मैं तुम्हें भी डरा दूँ और हर उस शख़्स को जिस तक यह क़ुरआन पहुँचे। और आयत में है (وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ) (11/हूद : 17) इस क़ुरआन के साथ दुनिया वालों में से जो भी कुफ़्र करे उसके वादे की जगह जहन्नम है। और जगह अल्लाह तआला का फ़र्मान है (وَ اِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا) (17/बनी इस्राईल : 58) यानी तमाम बस्तियों को हम क़ियामत से पहले हलाक करने वाले हैं या सख़्त अज़ाब करने वाले हैं, आख़िर तक। पस ख़बर दी कि क़ियामत से पहले वह सब बस्तियों को बर्बाद कर देगा। और आयत में है कि हम जब तक रसूल न भेज दें अज़ाब नहीं करते। पस हुज़ूर (ﷺ) की बिअसत आम कर दी और तमाम जहान वालों के लिए कर दी और मक्का में जो तमाम दुनिया का मर्कज़ है आप (ﷺ) को मब्ऊस करके सारी दुनिया पर अपनी हुज्जत तमाम कर दी। बुख़ारी व मुस्लिम में हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है कि "मैं तमाम काले गोरे की तरफ़ भेजा गया हूँ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अल्मसाजिदु व मवाज़िउस्सलात : 521) इसीलिए नबुव्वत व रिसालत को आप (ﷺ) पर ख़त्म कर दिया, आप (ﷺ) के बाद से क़ियामत तक न कोई नबी आएगा, न रसूल। कहा गया है कि मुराद (उम्मुल क़ुरा) से असल और बड़ा क़रिया है।

***

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۶۰ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ

الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝۶۱

तर्जुमा : "तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और इसी की रौनक़ है। हाँ! अल्लाह तआला के पास जो है वह बहुत ही बेहतर और हमेशा का है, क्या तुम नहीं समझते? (60) क्या वह शख़्स जिससे हमने नेक वादा किया है जिसे वह क़तअन पाने वाला है मिस्ल उस शख़्स के हो सकता है? जिसे हमने ज़िन्दगानी दुनिया की कुछ यूँ ही सी मन्फ़अत दे दी फिर आख़िरकार वह पकड़ा बाँधा हाज़िर किया जाएगा।" (61)

दुनिया फ़ानी जबकि आख़िरत बाक़ी रहने वाली है (आ. 60, 61) : अल्लाह तआला दुनिया की हिक़ारत इसकी रौनक़ की क़िल्लत व ज़िल्लत, इसकी नापायदारी बेसबाती और कमी बयान कर रहा है और उसके मुक़ाबले में आख़िरत की नेअमतों की पायदारी दवाम अज़्मत और क़ियाम का ज़िक्र फ़र्मा रहा है। इर्शाद है (مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ) (16/नह्ल : 96) तुम्हारे पास जो कुछ है फ़ना होने वाला है

और अल्लाह तआला के पास की तमाम चीज़ें बक़ा वाली हैं अल्लाह तआला के पास जो है वह नेक लोगों के लिए बहुत ही बेहतर और उम्दा है। आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया तो कुछ भी नहीं। लेकिन अफ़सोस कि लोग दुनिया के पीछे पड़े हुए हैं और आख़िरत से ग़ाफ़िल हो रहे हैं जो बहुत बेहतर और बहुत बाक़ी रहने वाली है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे तुममें से कोई समुन्द्र में उँगली डुबोकर निकाल ले फिर देख ले कि उसकी उँगली पर जो पानी लगा है वह समुन्द्र के मुक़ाबले में कितना कुछ है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़नाउद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमुल क़ियामा : 2858; तिर्मिज़ी : 2323; इब्ने माजा : 4108; इब्ने हिब्बान : 4330; अहमद : 4/228) अफ़सोस कि इस पर भी अक्सर लोग अपनी कमइल्मी और बेइल्मी के बाइस दुनिया के मतवाले हो रहे हैं। ख़्याल करो कि एक तो वह जो अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) पर ईमान व यक़ीन रखता हो और एक वह जो ईमान न लाया हो नतीजे के ऐतिबार से बराबर हो सकता हैं? ईमान वाले के साथ तो अल्लाह तआला का जन्नत का और अपनी बेशुमार नहीं मिटने वाली, ग़ैर फ़ानी नेअमतों का वादा है और काफ़िर के साथ वहाँ के अज़ाबों का डरावा है भले दुनिया में कुछ दिन ऐश ही मना ले। मरवी है कि यह आयत हुज़ूर (ﷺ) और अबू जहल मल्ऊन के बारे में नाज़िल हुई है। (तब्री : 19/604) एक क़ौल यह भी है कि हमज़ा, अली (रज़ि.) और अबू जहल के बारे में यह आयत उतरी है। (तब्री : 19/605) ज़ाहिर यह है कि आयत आम है जैसे फ़र्माने इलाही है कि जन्नती मोमिन अपने जन्नत के दर्जों से झाँक कर जहन्नमी काफ़िर को जहन्नम के जेलख़ाने में देखकर कहेगा कि (وَ لَوۡ لَا نِعۡمَةُ رَبِّیۡ لَكُنۡتُ مِنَ الۡمُحۡضَرِیۡنَ ﴿۵۷﴾) (37/साफ़्फ़ात : 57) अगर मुझ पर मेरे रब का इन्आम न होता तो मैं भी उन अज़ाबों में फँस जाता। और आयत में है (وَ لَقَدۡ عَلِمَتِ الۡجِنَّةُ اِنَّهُمۡ لَمُحۡضَرُوۡنَ ﴿۱۵۸﴾) (37/साफ़्फ़ात : 158) जिन्नात को यक़ीन है कि वह हाज़िर किये जाने वालों में से हैं।

***

وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُ اَيۡنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيۡنَ كُنۡتُمۡ تَزۡعُمُوۡنَ ﴿۶۲﴾ قَالَ الَّذِيۡنَ حَقَّ
عَلَيۡهِمُ الۡقَوۡلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيۡنَ اَغۡوَيۡنَا ۚ اَغۡوَيۡنٰهُمۡ كَمَا غَوَيۡنَا ۚ تَبَرَّاۡنَاۤ اِلَيۡكَ ۖ مَا
كَانُوۡۤا اِيَّانَا يَعۡبُدُوۡنَ ﴿۶۳﴾ وَقِيۡلَ ادۡعُوۡا شُرَكَآءَكُمۡ فَدَعَوۡهُمۡ فَلَمۡ يَسۡتَجِيۡبُوۡا لَهُمۡ
وَرَاَوُا الۡعَذَابَ ۚ لَوۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا يَهۡتَدُوۡنَ ﴿۶۴﴾ وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُ مَاذَاۤ اَجَبۡتُمُ
الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۶۵﴾ فَعَمِيَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَنۡۢبَآءُ يَوۡمَئِذٍ فَهُمۡ لَا يَتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۶۶﴾ فَاَمَّا مَنۡ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ مِنَ الۡمُفۡلِحِيۡنَ ﴿۶۷﴾

तर्जुमा : "जिस दिन अल्लाह तआला उन्हें पुकारकर फ़र्माएगा कि तुम जिन्हें अपने गुमान में मेरा शरीक ठहरा रहे थे कहाँ हैं? (62) जिन पर बात आ चुकी वह जवाब देंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! यही वह हैं जिन्हें हमने बहका रखा था। हमने इन्हें इसी तरह बहकाया जिस तरह हम बहके थे। हम तेरी सरकार में अपनी दस्तबरदारी करते हैं, यह हमारी इबादत नहीं करते थे। (63) कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ, वह बुलाएँगे लेकिन उन्हें वह जवाब नहीं देंगे और यह सब अ़ज़ाब देख लेंगे। काश यह लोग हिदायत पा लेते। (64) उस दिन उन्हें बुलाकर पूछेगा कि तुमने नबियों को क्या जवाब दिया? (65) फिर तो उस दिन तमाम ख़बरें अंधी हो जाएँगी और एक दूसरे से सवाल तक न करेंगे। (66) हाँ! जो शख़्स तौबा कर ले, ईमान ले आए और नेक काम करे यक़ीनन वह नजात पाने वालों में से हो जाएँगे।" (67)

मुश्रिकीन और उनके मअ़बूदाने बातिला अल्लाह तआला के सामने (आ. 62 से 67) : मुश्रिकों को क़ियामत के दिन पुकारकर सामने खड़ा करके अल्लाह तआला कहेगा कि दुनिया में जिन्हें तुम मेरे सिवा पूजते रहे जिन बुतों और पत्थरों को मानते रहे, वह कहाँ हैं? उन्हें पुकारो और देखो कि वह तुम्हारी कुछ मदद करते हैं? या वह ख़ुद अपनी कोई मदद कर सकते हैं? यह सिर्फ़ बतौर डाँट डपट के होगा। जैसे फ़र्मान है (وَ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ) (6/अन्आम : 94) यानी हम तुम्हें वैसे ही तंहा तंहा और एक एक करके लाएँगे जैसे हमने पहली दफ़ा पैदा किया था और जो कुछ हमने तुम्हें दिया दिलाया था वह सब तुम अपने पीछे ही छोड़ आए। हम तो आज तुम्हारे साथ किसी सिफ़ारिशी को भी नहीं देखते जिन्हें तुम शरीके इलाही ठहराये हुए थे। तुममें उनमें कोई लगाव नहीं रहा और तुम्हारे गुमानकर्दा शरीक सब आज तुमसे खोये हुए हैं। जिन पर अ़ज़ाब की बात साबित हो चुकी यानी शयातीन और सरकश लोग और कुफ़्र के बानी और शिर्क की तरफ़ बुलाने वाले यह सब बड़े बड़े लोग उस दिन कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हमने इन्हें गुमराह किया और इन्होंने हमारी कुफ़्रिया बातें सुनीं और मानीं जैसे हम बहके हुए थे इन्हें भी हमने बहकाया। हम इनकी इबादत से तेरे सामने बेज़ारी का इज़्हार करते हैं। जैसे और आयत में है (وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً) (19/मरयम : 81) उन्होंने अल्लाह तआला के सिवा और मअ़बूद बना लिये ताकि वह उनके लिए बाइसे इ़ज़्ज़त बनें। लेकिन ऐसा नहीं होने का यह तो उनकी इबादत से भी इंकार कर जाएँगे और उल्टे उनके दुश्मन हो जाएँगे। और आयत में है (وَ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ) (46/अह़क़ाफ़ : 5) उससे बढ़कर गुमराह कौन है? जो अल्लाह तआला के सिवा दूसरों को पुकारता है जो क़ियामत की घड़ी तक उन्हें जवाब न दे सकें और वह उनकी पुकार से भी ग़ाफ़िल हों। और क़ियामत के दिन लोगों के ह़श्र के मौक़े पर उनके दुश्मन बन जाएँ और इस बात से साफ़ इंकार कर दें कि इन्होंने उनकी इबादत की थी। ह़ज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था कि तुमने जिन बुतों की पूजा पाठ शुरू कर रखी है उनसे सिर्फ़ दुनिया की ही दोस्ती है क़ियामत के दिन तो तुम सब एक दूसरे के मुंकिर हो जाओगे और एक दूसरे पर लअ़नत भेजोगे, आख़िर तक। और आयत में है (اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا) (2/बक़रह : 166) यानी जो ताबेदारी करने वाले थे वह उनसे जो उनकी ताबेदारी करते रहे, बरी और बेज़ार हो जाएँगे। अ़ज़ाबों को सामने देखते हुए सब ताल्लुक़ात टूट जाएँगे, आख़िर तक। उनसे कहा जाएगा कि दुनिया में जिन्हें पूजते रहे आज उन्हें क्यूँ नहीं पुकारते? अब यह पुकारेंगे

लेकिन कोई जवाब न पाएँगे और इन्हें यक़ीन हो जाएगा कि यह आग के अ़ज़ाब में जाएँगे उस वक़्त आरज़ू करेंगे कि काश! यह सीधे रास्ते पर होते। जैसे इर्शाद है (وَ يَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ) (18/कहफ़ : 52) जिस दिन फ़र्माएगा कि मेरे इन शरीकों को आवाज़ दो जिन्हें तुम बहुत कुछ समझ रहे थे। यह पुकारेंगे लेकिन वह जवाब तक न देंगे और हम इनके और उनके बीच आड़ कर देंगे। मुज्रिम लोग दोज़ख़ को देखेंगे फिर बावर कर लेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं लेकिन उससे बचने की कोई राह न पाएँगे। उसी क़ियामत वाले दिन सबको सुनाकर उनसे एक सवाल यह भी होगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया? और कहाँ तक उनका साथ दिया? पहले तौहीद के बारे में बाज़पुर्स होगी, अब रिसालत के बारे में सवाल जवाब हो रहा है। इसी तरह क़ब्र में भी सवाल होता है कि तेरा रब कौन है? तेरा नबी कौन है? और तेरा दीन क्या है? मोमिन जवाब देता है कि मेरा मअ़बूद सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है और मेरे रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) हैं जो अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल थे। हाँ! काफ़िर से कोई जवाब न बन पड़ेगा वह घबराहट और परेशानी से कहता है इसकी मुझे कोई ख़बर नहीं। अंधा बहरा हो जाता है जैसे फ़र्माया (مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ) (17/बनी इस्राईल : 72) जो शख़्स यहाँ अँधा है वह वहाँ भी अँधा और राह से भटका रहेगा। तमाम दलीलें उनकी निगाहों से हट जाएँगी रिश्ते नाते, ह़सब नसब की कोई क़द्र न होगी। नसबनामों का कोई सवाल न होगा। हाँ! दुनिया में तौबा करने वाले ईमान और नेकी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले तो बेशक फ़लाह़ और नजात ह़ासिल कर लेंगे। यहाँ (अ़सा) यक़ीन के मअ़नी में है यानी मोमिन ज़रूर कामयाब होंगे।

***

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ
الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ
عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا
تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ
لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

तर्जुमा : "तेरा रब जो चाहता है पैदा करता है और चुनकर मुख़्तार कर लेता है। उनमें से किसी को कोई इख़्तियार नहीं। अल्लाह ही के लिए पाकी है। वह बुलंदतर है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका शरीक ठहराते हैं। (68) उनके सीने जो कुछ छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तेरा रब सब कुछ जानता है। (69) वही अल्लाह तआला है, उसके सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं दुनिया और आख़िरत में। उसी की ता'रीफ़ है उसी के लिए फ़र्मांरवाई है और उसी की तरफ़ सब फेरे जाएँगे।(70) कह दे कि देखो तो सही अगर अल्लाह तआला तुम पर रात ही रात क़ियामत तक बराबर कर दे तो सिवाय अल्लाह तआला के कौन मअबूद है जो तुम्हारे पास दिन की रोशनी लाए? क्या तुम सुनते नहीं हो? पूछ कि यह भी बताओ कि अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा हमेशा क़ियामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय उसके कोई मअबूद है जो तुम्हारे पास रात लाए जिसमें तुम आराम हासिल कर सको, क्या तुम देख नहीं रहे? (72) उसी ने तो तुम्हारे लिए अपने फ़ज़्लो करम से दिन रात मुक़र्रर कर दिये हैं कि तुम रात में आराम करो और दिन में उसकी भेजी हुई रोज़ी तलाश करो। यह इसलिए कि तुम शुक्र अदा करो।" (73)

मुख़्तारे कुल अल्लाह की ज़ात है (आ. 68 से 73) : सारी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ तमाम इख़्तियारात वाला अल्लाह तआला ही है न उसमें कोई उससे झगड़ा करने वाला, न उसका शरीक न साझी जो चाहे पैदा करे जिसे चाहे अपना ख़ास बन्दा बना ले। जो चाहता है होता है जो नहीं चाहता नहीं हो सकता। तमाम उमूर सब ख़ैर व शर्र उसी के हाथ है। सबकी बाज़गश्त उसी की जानिब है किसी को कोई इख़्तियार नहीं। यही लफ़्ज़ इसी मअनी में आयत (اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ) (33/अहज़ाब : 36) में है दोनों जगह मा नाफ़िया (नेगेटिव) है भले इब्ने जरीर (रह.) ने यह कहा है कि मा मअनी में (अल्लज़ी) के है यानी अल्लाह पसंद करता है उसे जिसमें भलाई हो, और इसी मअनी को लेकर मुअतज़िलियों ने मिराआते सालेहीन पर इस्तिदलाल किया है लेकिन सही बात यही है कि यहाँ मा नफ़ी के मअनी में है जैसे कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है यह आयत इसी बयान में है कि मख़्लूक़ की पैदाइश में तक़्दीर के मुक़र्रर करने में इख़्तियार रखने में रब तआला ही अकेला है, और नज़ीर से पाक है। इसीलिए आयत के ख़ात्मा पर फ़र्माया कि जिन बुतों वग़ैरह को वह शरीके रब ठहरा रहे हैं जो न किसी चीज़ को बना सकें, न किसी तरह का इख़्तियार रखें, अल्लाह तआला उन सबसे पाक और बहुत दूर है। फिर फ़र्माया, सीनों और दिलों में छुपी हुई बातें भी रब तआला जानता है और वह सब भी उस पर उसी तरह ज़ाहिर हैं जिस तरह खुल्लम खुल्ला और ज़ाहिर बातें पोशीदा बात कहो या ऐलान से कहो, वह सबका इल्म रखता है। रात में और दिन में जो हो रहा है उस पर छुपा हुआ नहीं। उलूहियत में भी वह अकेला है उसके सिवा कोई ऐसा नहीं जिसकी तरफ़ मख़्लूक़ अपनी हाजतें ले जाए जिससे मख़्लूक़ आजिज़ी करे, जो मख़्लूक़ का मावा मल्जा हो, जो इबादत के लायक़ हो। ख़ालिक़ मुख़्तार रब मालिक वही है। वह जो कुछ कह रहा है सब लायक़े ता'रीफ़ है, उसका अदल व हिक्मत उसी के साथ है। उसके हुक्मों को कोई रद्द नहीं कर सकता, उसके इरादों को कोई टाल नहीं सकता। ग़ल्बा हिक्मत व रहमत उसी की ज़ात पाक में है तो सब क़ियामत के दिन उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगे वह

सबको उनके आमाल का बदला देगा उस पर तुम्हारे कामों में से कोई काम छुपा हुआ नहीं नेकों को जज़ा बुरों को सज़ा वह उस दिन देगा और अपनी मख़्लूक़ में फ़ैसले करेगा।

अल्लाह तआला की क़ुदरत के नाक़ाबिले तर्दीद दलाइल : अल्लाह का एहसान देखो कि बग़ैर तुम्हारी कोशिश और तदबीर के दिन रात बराबर आगे पीछे आ रहे हैं अगर रात ही रात रहे तो तुम आजिज़ हो जाओ, तुम्हारे काम रुक जाएँ तुम पर ज़िन्दगी वबाल हो जाए, तुम थक जाओ, उकता जाओ, किसी को न पाओ जो तुम्हारे लिए दिन निकाल सके कि तुम उसकी रोशनी में चलो फिरो देखो भालो अपने काम काज कर लो। अफ़सोस! तुम सुन सुनाकर बेसुनना कर देते हो। इसी तरह अगर वह तुम पर दिन ही दिन रखे, रात आये ही नहीं तो भी तुम्हारी ज़िन्दगी तल्ख़ हो जाए। बदन का निज़ाम बिगड़ जाए, थक जाओ, तंग आ जाओ, कोई नहीं जिसे क़ुदरत हो कि वह रात ला सके, जिसमें तुम राहत व आराम कर सको लेकिन तुम आँखें रखते हुए अल्लाह तआला की निशानियों और मेहरबानियों को देखते ही नहीं हो। यह भी उसी का एहसान है कि उसने दिन रात दोनों पैदा कर दिये हैं कि रात को तुम्हें सुकून व आराम हासिल हो और दिन को तुम काम काज तिजारत ज़राअत सफ़र शुग़्ल कर सको। तुम्हें चाहिए कि तुम उस मालिके हक़ीक़ी उस क़ादिरे मुत्लक़ का शुक्र अदा करो, दिन को रात को उसकी इबादतें करो रात के क़सूरों की माफ़ी दिन में और दिन के क़सूरों की माफ़ी रात में कर लिया करो यह मुख़्तलिफ़ चीज़ें क़ुदरत के नमूने हैं और इसलिए हैं कि तुम नसीहत और इब्रत हासिल कर सको और रब का शुक्र अदा करो।

***

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾ وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ
أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

तर्जुमा : "जिस दिन उन्हें पुकारकर अल्लाह तआला कहेगा कि जिन्हें तुम मेरे शरीक ख़याल करते थे वह कहाँ हैं? (74) और हम हर उम्मत में से एक गवाह अलग कर लेंगे और फ़र्मा देंगे कि अपनी दलीलें पेश करो उस वक़्त जान लेंगे कि हक़ अल्लाह तआला की तरफ़ है और जो कुछ इफ़्तिरा वह जोड़ते थे सब उनके पास से खो जाएगा।" (75)

क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के शरीक नज़र न आएँगे (आ. 74, 75) : मुश्रिकों को दूसरी दफ़ा डाँट दी जाएगी और कहा जाएगा कि दुनिया में जिन्हें मेरा शरीक ठहरा रहे थे वह आज कहाँ हैं? हर उम्मत में से एक गवाह यानी उस उम्मत का पैग़म्बर मुम्ताज़ कर लिया जाएगा। (तब्री : 19/614) और मुश्रिकों से

कहा जाएगा कि अपने शिर्क की कोई दलील पेश करो। उस वक़्त यह यक़ीन कर लेंगे कि वाक़ेई इबादतों के लायक़ अल्लाह के सिवा और कोई नहीं। कोई जवाब न दे सकेंगे, हैरान रह जाएँगे और तमाम झूठ व इफ़्तिरा भूल जाएँगे।

***

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ
مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ
وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

तर्जुमा : ''क़ारून था तो क़ौमे मूसा में से लेकिन उन पर ज़ुल्म करने लगा था हमने उसे इस क़द्र ख़ज़ाने दिये थे कि कई कई ताक़तवर लोग बड़ी मुश्किल से उसकी चाबियाँ उठा सकते थे। एक बार उसकी क़ौम ने उससे कहा कि इतरा मत और अल्लाह तआला इतरानों वालों से मुहब्बत नहीं रखता। (76) और जो कुछ अल्लाह तआला ने तुझे दे रखा है उसमें उस आख़िरत के घर की तलाश भी रख और अपने दुनियावी हिस्से को भी न भूल और जैसे कि अल्लाह तआला ने तेरे साथ एहसान किया है तू भी सुलूक करता रह और मुल्क में फ़साद फैलाने की कोशिश न कर। यक़ीन मान कि अल्लाह तआला फ़सादियों को पसंद नहीं करता है।'' (77)

क़ारून कौन और क्या था? (आ. 76, 77) : मरवी है कि क़ारून हज़रत मूसा (عليه السلام) के चचा का लड़का था। (तब्री : 19/616) उसका नसब यह है क़ारून बिन युस्हिर बिन क़ाहीस और मूसा (عليه السلام) का नसब यह है मूसा बिन इमरान बिन क़ाहीस। (तब्री : 19/615) इब्ने इस्हाक़ (रह.) की तहक़ीक़ यह है कि यह हज़रत मूसा (عليه السلام) का चचा था। लेकिन अक्सर उलमा चचा का लड़का बतलाते हैं। यह बहुत ख़ुश आवाज़ था तौरात बड़ी ख़ुश इल्हानी से पढ़ता था। इसीलिए इसे लोग मुनव्वर कहते थे लेकिन जिस तरह सामरी ने मुनाफ़िक़ पना किया था यह दुश्मने इलाही भी मुनाफ़िक़ हो गया था। चूँकि बहुत मालदार था इसलिए फूल गया था और अल्लाह तआला को भुला बैठा था, क़ौम में आम तौर पर जिस लिबास का दस्तूर था उसने उससे बालिश्त भर नीचा लिबास बनवाया था जिससे उसका ग़ुरूर और उसकी दौलत ज़ाहिर हो। उसके पास

इस क़द्र माल था कि उसके ख़ज़ाने की चाबियाँ उठाने पर क़वी मर्दों की एक जमाअत मुक़र्रर थी। उसके बहुत से ख़ज़ाने थे, हर ख़ज़ाने की चाबी अलग थी जो बालिश्त भर की थी। जब यह चाबियाँ उसकी सवारी के साथ ख़च्चरों पर लादी जातीं तो। उसके लिए साठ पंज कलियाँ ख़च्चर मुक़र्रर थे। (तब्री : 19/617) वल्लाहु आलम! क़ौम के बुज़ुर्ग और नेक लोगों और आलिमों ने जब उसकी सरकशी और तकब्बुर हद से बढ़ते हुए देखा तो उसे नसीहत की कि इतना न इतरा, इस क़द्र गुरूर न कर, अल्लाह तआला का नाशुक्रा न बन, वरना अल्लाह तआला की मुहब्बत से दूर हो जाएगा, क़ौम के वाएज़ीन ने कहा कि यह जो अल्लाह की नेअमतें तेरे पास हैं उन्हें अल्लाह की रज़ामंदी के कामों में लगा ताकि आख़िरत में भी तेरा हिस्सा हो जाए यह हम नहीं कहते कि दुनिया में कुछ ऐशो इशरत ही न कर। बल्कि अच्छा खा, अच्छा पी, अच्छा पहन, अच्छा ओढ़, जाइज़ नेअमतों से फ़ायदा उठा। निकाह से राहत उठा, हलाल चीज़ें इस्तेमाल कर। लेकिन जहाँ अपना ख़्याल रख वहाँ मिस्कीनों का भी ख़्याल रख, जहाँ अपने नफ़्स को न भूल, वहाँ अल्लाह तआला के हक़ भी फ़रामोश न कर, तेरे नफ़्स का भी हक़ है तेरे मेहमान का भी तुझ पर हक़ है, तेरे बाल बच्चों का भी तुझ पर हक़ है, मिस्कीन ग़रीब का भी तेरे माल में साझा है, हर हक़दार का हक़ अदा कर और जैसे अल्लाह तआला ने तेरे साथ सुलूक किया है, तू भी औरों के साथ सुलूक व एहसान कर, अपने इस मुफ़्सिदानापन को बदल डाल, अल्लाह की मख़्लूक़ की ईज़ारसानी से बाज़ आ जा, अल्लाह तआला फ़सादियों से मुहब्बत नहीं रखता।

***

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾

तर्जुमा : "क़ारून कहने लगा, यह सब कुछ मुझे मेरे अपनी अक़्ल व समझ की बिना पर ही दिया गया है। क्या इसे अब तक यह नहीं मालूम कि अल्लाह तआला ने इससे पहले बहुत से बस्ती वालों को ग़ारत कर दिया जो इससे बहुत ज़्यादा क़ुव्वत वाले और बहुत बड़ी जमा पूंजी वाले थे। गुनहगारों से उनके गुनाहों की बाज़पुर्स ऐसे वक़्त नहीं की जाती।"(78)

क़ारून का मुतकब्बिराना जवाब (आ. 78) : क़ौम के उलमा की नसीहतों को सुनकर क़ारून ने जो जवाब दिया उसका ज़िक्र हो रहा है कि उसने कहा आप अपनी नसीहतों को रहने दीजिए, मैं ख़ूब जानता हूँ कि अल्लाह तआला ने मुझे जो दे रखा है उसी का मुस्तहिक़ मैं था, मैं एक अक़्लमंद ज़ैरक दाना शख़्स हूँ, मैं इसी क़ाबिल हूँ और इसे अल्लाह तआला भी जानता है इसीलिए उसने मुझे यह दौलत दी है। कुछ इंसानों का यह पहचान होती है जैसे क़ुरआन में है कि जब इंसान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तब तो बड़ी आजिज़ी से हमें पुकारता है और जब कोई नेअमत व राहत उसे हम दे देते हैं तो कह देता है (इन्नमा उतीतुहू अला इल्मिन) यानी अल्लाह तआला जानता था कि मैं इसका मुस्तहिक़ हूँ इसलिए उसने मुझे यह दिया है और आयत में है कि

अगर हम उसे कोई रहमत चखाएँ इसके बाद कि उसे मुसीबत पहुँची हो तो कह उठता है कि (हाज़ा ली) इसका हक़दार तो मैं था ही। कुछ लोगों ने कहा है कि क़ारून इल्मे कीमिया (सोना बनाने का हुनर) जानता था। लेकिन यह क़ौल बिलकुल ज़ईफ़ है। बल्कि कीमिया का इल्म वाक़ेई में है ही नहीं क्योंकि किसी चीज़ के ऐन को बदल देना यह अल्लाह ही की क़ुदरत की बात है जिस पर कोई और क़ादिर नहीं। फ़र्माने इलाही है कि अगर तमाम मख़्लूक़ भी जमा हो जाए तो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकती। सही हदीस में है कि ''अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो कोशिश करता है कि मेरी तरह पैदाइश करे। अगर वह सच्चा है तो एक ज़र्रा या एक जौ ही बना दे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब नक़्ज़स्सूरि : 5953; सहीह मुस्लिम : 2111; मुस्नदे अबी यअला : 6086; अहमद : 2/259) यह हदीस उनके बारे में है जो तस्वीरें बनाते हैं और सिर्फ़ ज़ाहिरी सूरत की नक़्ल करते हैं उनके लिए तो यह फ़र्माया, फिर दावा करे कि वह कीमिया जानता है और एक चीज़ की कायापलट कर सकता है एक ज़ात से दूसरी ज़ात बना देता है मस्लन लोहे को सोना वग़ैरह तो साफ़ ज़ाहिर है कि यह सिर्फ़ झूठ है और बिलकुल महाल है और जिहालत व ज़लालत है, हाँ! यह और बात है कि रंग वग़ैरह बदलकर धोखेबाज़ी करें लेकिन हक़ीक़तन यह नामुम्किन है। यह कीमियागर जो सिर्फ़ झूठ जाहिल फ़ासिक़ और मुफ़्तरी हैं , यह सिर्फ़ दावा करके मख़्लूक़ को धोखे में डालने वाले हैं। हाँ! यह ख़्याल रहे कि कुछ औलिया अल्लाह के हाथों जो करामतें सरज़द हो जाती हैं और कभी कभी चीज़ें तब्दील हो जाती हैं उनका हमें इंकार नहीं, वह अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर एक ख़ास फ़ज़्ल होता है और वह भी उनके बस का नहीं होता, न उनके क़ब्ज़े का होता है, न वह कोई कारीगरी सन्अत या इल्म है वह सिर्फ़ अल्लाह तआला के फ़र्मान का नतीजा है जो अल्लाह तआला अपने फ़र्मां बरदारों नेकोकार बन्दों के हाथों अपनी मख़्लूक़ को दिखा देता है। चुनाँचे मरवी है कि हज़रत हैवा बिन शुरैह मिस्री (रह.) से एक बार किसी साइल ने सवाल किया और आपके पास कुछ न था और उसकी हाजतमंदी और ज़रूरत को देखकर आप दिल में बहुत आज़र्दा हो रहे थे, आख़िर आपने एक कंकर ज़मीन से उठा लिया और कुछ देर अपने हाथों में उलट पलट करके फ़क़ीर की झोली में डाल दिया तो वह सोने की गुठली बन गया।'' मोजिज़े और करामात हदीसों और आसार में और भी बहुत से मरवी हैं जिन्हें यहाँ बयान करना बाइसे तूल होगा। कुछ का क़ौल है कि क़ारून इस्मे आज़म जानता था जिसे पढ़कर उसने अपनी मालदारी की दुआ की तो इस क़द्र दौलतमंद हो गया। क़ारून के इस जवाब के रद्द में अल्लाह तआला फ़र्माता है कि यह ग़लत है कि मैं जिस पर मेहरबान होता हूँ उसे दौलतमंद कर देता हूँ, नहीं इससे पहले इससे ज़्यादा दौलतमंद और आसूदा हाल लोगों को मैंने तबाह कर दिया है तो यह समझ लेना कि मालदारी मेरी मुहब्बत की निशानी है महज़ ग़लत है जो मेरा शुक्र अदा न करे, कुफ़्र पर जमा रहे उसका अंजाम बुरा होता है। गुनहगारों के गुनाहों की कसरत की वजह से फिर उनसे उनके गुनाहों का सवाल भी बेकार होता है। इसका ख़्याल था कि मुझमें ख़ैरियत है इसलिए अल्लाह का फ़ज़्ल मुझ पर हुआ है वह जानता है कि मैं इस मालदारी का अहल हूँ अगर अल्लाह तआला मुझसे ख़ुश न होता और मुझे अच्छा आदमी न जानता तो मुझे अपनी यह नेअमत भी न देता।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ
مَاۤ اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿۷۹﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ
اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ
الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ
﴿۸۱﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَاۤ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۲﴾

तर्जुमा : ''क़ारून पूरी आराइश (सज धज) के साथ अपनी क़ौम के मज्मअे में निकला तो ज़िन्दगानी दुनिया के मतवाले कहने लगे, काश कि हमें भी किसी तरह वह मिल जाता जो क़ारून को दिया गया है यह तो बड़ा ही क़िस्मत का धनी है। (79) इल्म वाले लोग उन्हें समझाने लगे कि अफ़सोस! बेहतर चीज़ तो वह है जो बतौरे सवाब उन्हें मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लाएँ और मुताबिक़े सुन्नत अमल करें। यह बात उन ही के दिल में डाली जाती है जो सब्रो सिहार वाले हों। (80) आख़िरकार हमने उसे उसके महल समेत ज़मीन में धंसा दिया और अल्लाह के सिवा कोई जमाअ़त उसकी मदद के लिए तैयार न हुई, न वह ख़ुद अपने बचाने वालों में से हो सका। (81) और जो लोग कल उसके मर्तबे पर पहुँचने की आरज़ूमंदियाँ कर रहे थे वह आज कहेंगे कि क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ही अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहे रोज़ी कुशादा कर देता है ओर तंग भी। अगर अल्लाह तआ़ला हम पर फ़ज़्ल न करता तो हमें भी धंसा देता। क्या देखते नहीं हो कि नाशुक्रों को कभी कामयाबी नहीं मिलती।'' (82)

ऐश का सामान और क़ारून (आ. 79 से 82) : क़ारून एक दिन निहायत क़ीमती पोशाक पहनकर ज़रक़ बरक़ (सज धजकर) उम्दा सवारी पर सवार होकर अपने गुलामों को आगे पीछे बेशबहा पोशाकें पहनाये हुए लेकर बड़े ठाठ से इतराता हुआ और अकड़ता हुआ निकला। उसका यह ठाठ और यह ज़ीनत व खुबसूरती देखकर दुनियादारों के मुँह में पानी भर आया और कहने लगे कि काश! हमारे पास भी इस जितना माल होता यह तो बड़ा ख़ुशनसीब और बड़ी क़िस्मत वाला है। उ़लमा-ए-क़िराम (अल्लाह वालों) ने उनकी यह बात

सुनकर उन्हें इस ख़्याल से रोकना चाहा और उन्हें समझाने लगे कि देखो! अल्लाह तआला ने जो कुछ अपने मोमिन और नेक बन्दों के लिए अपने यहाँ तैयार कर रखा है वह इससे कहीं ज़्यादा रौनक़ वाला, अच्छा और हमेशा का है। तुम्हें उन दर्जात को हासिल करने के लिए इस चंद दिनों की ज़िन्दगी को सब्रो सिहार से गुज़ारना चाहिए जन्नत साबिरों का हिस्सा है। यह मतलब भी है कि ऐसे पाक कलिमे सब्र करने वालों ही की ज़बान से निकलते हैं जो दुनिया की मुहब्बत से दूर और दारे आख़िरत की मुहब्बत में चूर होते हैं। इस सूरत में मुम्किन है कि यह कलाम वाइज़ीन का न हो बल्कि उनके कलाम की और उनकी ता'रीफ़ में यह पिछला जुम्ला अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़बर हो।

तकब्बुर की सज़ा यही है : ऊपर क़ारून की सरकशी बेईमानी का ज़िक्र हो चुका यहाँ उसके अंजाम का बयान हो रहा है। एक हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "एक शख़्स अपना तहबंद लटकाये हुए फ़ख़्र से जा रहा था कि उसे ज़मीन में धंसा दिया गया जो क़ियामत तक धंसता हुआ चला जाएगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल् लिबास, बाब जर्र सौबहू मिनल ख़ैलाइ : 5790) अहमद की रिवायत में है कि दो चादरों में अकड़ता हुआ निकला था कि अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि उसे निगल जाए। (अहमद : 3/40; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, अतिया औफ़ी ज़ईफ़ रावी है और अबू सईद से उसकी रिवायत मर्दूद होती है। मज्मउज़्ज़वाइद : 5/126) किताबुल अजाइब में है, नौफ़िल बिन माहिक़ कहते हैं कि "नजरान की मस्जिद में मैंने एक नौजवान को देखा बड़ा लम्बा चौड़ा, भरपूर जवानी के नशा में चूर, गठे हुए बदन वाला, बाँका तिरछा,अच्छे रंग रोग़न वाला, ख़ूबसूरत शक्ल, मैं निगाहें जमाकर उसके जमाल व कमाल को देखने लगा तो उसने कहा क्या देख रहे हो? मैंने कहा आपके हुस्नो जमाल का मुशाहिदा कर रहा हूँ, और ताज्जुब मालूम हो रहा है। उसने जवाब दिया तू ही क्या ख़ुद अल्लाह तआला को भी ताज्जुब है। नौफ़िल कहते हैं कि इस कलिमा के कहते ही वह घुटने लगा और उसका रंग रूप उड़ने लगा और क़द पस्त होने लगा, यहाँ तक कि बक़द्रे एक बालिश्त के रह गया जिसे उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार आस्तीन में डालकर ले गया।" यह भी मज़्कूर है कि क़ारून की हलाकत हज़रत मूसा (ﷺ) की बद्दुआ से हुई थी, और उसके सबब में बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ है। एक सबब तो यह बयान किया जाता है कि क़ारून मल्ऊन ने एक फ़ाहिशा औरत को बहुत कुछ माल मताअ देकर इस बात पर आमादा किया कि ऐन उस वक़्त जब हज़रत मूसा (ﷺ) बनी इस्राईल में खड़े ख़ुत्बा दे रहे होंवह आये और आपसे कहे कि तू वही है ना जिसने मेरे साथ ऐसा ऐसा किया। उस औरत ने यही किया, हज़रत मूसा (ﷺ) काँप उठे और उसी वक़्त नमाज़ की निय्यत बाँध ली दो रकअत अदा करके उस औरत की तरफ़ मुतवज्जा हुए और फ़र्माने लगे, तुझे उस अल्लाह की क़सम! जिसने पानी में से रास्ता दिया और तेरी क़ौम को फ़िरऔन के मज़ालिम से नजात दी और भी बहुत से एहसानात किये तो जो कुछ सच्चा वाक़िया है उसे बयान कर। यह सुनकर उस औरत का रंग बदल गया और उसने सहीह वाक़िया सबके सामने बयान कर दिया और अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार किया और सच्चे दिल से तौबा कर ली। हज़रत मूसा (ﷺ) फिर सज्दे में गिर गए और क़ारून की सज़ा चाही अल्लाह तआला की तरफ़ से वह्यी नाज़िल हुई कि मैंने ज़मीन को तेरे ताबेअ कर दिया है। आपने सज्दे से सर उठाया और ज़मीन से कहा कि तू उसे और उसके महल को निगल ले।

ज़मीन ने यही किया, दूसरा सबब यह बयान किया जाता है कि जब क़ारून की सवारी उस तमतराक़ से निकली सफ़ेद क़ीमती ख़च्चर पर बेश बहा पोशाक पहने सवार था उसके गुलाम भी सबके सब रेशमी लिबासों में थे। इधर हज़रत मूसा (ﷺ) तक़रीर कर रहे थे बनी इस्राईल का मज्मआ था यह जब वहाँ से निकला तो सबकी निगाहें उस पर और उसकी धूमधाम पर लग गईं। हज़रत मूसा (ﷺ) ने उसे देखकर पूछा आज इस तरह कैसे निकले हो? उसने कहा, बात यह है कि एक बात अल्लाह तआला ने तुम्हें दे रखी है और एक फ़ज़ीलत मुझे दे रखी है अगर तुम्हारे पास नबुव्वत है तो मेरे पास यह जाहोहश्म (दौलत का अम्बार) है और अगर आपको मेरी फ़ज़ीलत में शक हो तो मैं तैयार हूँ कि आप और मैं चलें और अल्लाह तआला से दुआ करें देख लीजिए कि अल्लाह तआला किसकी दुआ क़बूल करता है। आप इस बात पर आमादा हो गए और उसे लेकर चले। हज़रत मूसा (ﷺ) ने फ़र्माया, ले अब पहले मैं दुआ करूँ या तू करता है? उसने कहा, नहीं! मैं करूँगा। अब उसने दुआ माँगनी शुरू की, ख़त्म कर ली लेकिन क़बूल न हुई। हज़रत मूसा (ﷺ) ने कहा, अब मैं दुआ करता हूँ। उसने कहा, हाँ! कीजिए। आपने अल्लाह तआला से दुआ कि ऐ अल्लाह! ज़मीन को हुक्म कर कि जो मैं कहूँ मान ले। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़बूल कर ली और वही आई कि मैंने ज़मीन को तेरी इताअत का हुक्म दे दिया है। हज़रत मूसा (ﷺ) ने यह सुनकर ज़मीन से फ़र्माया, ऐ ज़मीन! उसे और उसके लोगों को पकड़ ले, वहीं यह लोग अपने क़दमों तक ज़मीन में धंस गए। आपने फ़र्माया और पकड़ ले, यह अपने घुटनों तक धंस गए। आपने फ़र्माया और पकड़, यह मूँढों तक ज़मीन में धंस गए। फिर फ़र्माया उनके ख़ज़ाने और उनके माल भी यहीं ले आ। उसी वक़्त उनके कुल ख़ज़ाने और तमाम माल आ गए और उन्होंने अपनी आँखों से उन सबको देख लिया, फिर आपने अपने हाथ से इशारा किया कि इनको इनके ख़ज़ानो समेत अपने अंदर ले ले, उसी वक़्त यह सब ग़ारत हो गए और ज़मीन जैसी थी वैसी ही हो गयी। मरवी है कि सातवीं ज़मीन तक यह लोग यूँ ही धंसते चले गए। यह क़ौल भी है कि हर रोज़ यह लोग बक़द्र क़द अंसान नीचे की तरफ़ धंसते जा रहे हैं, क़ियामत तक इसी अज़ाब में रहेंगे। यहाँ पर और भी बनी इस्राईली रिवायतें बहुत सी हैं लेकिन हमने उनका बयान छोड़ दिया ह। न तो माल उन्हें काम आया, न जाह व चश्म न दौलत व तम्किनत, न कोई उनकी मदद के लिए उठा, न यह ख़ुद अपना कोई बचाव कर सके, तबाह हो गए, बेनिशान हो गए, मिट गए और मिटा दिये गए (अआज़नल्लाह)। उस वक़्त तो उन लोगों की आँखें खुल गईं जो क़ारून के माल को और उसकी इज़्ज़त को ललचाई हुई नज़रों से देखा करते थे और उसे नसीब वाला समझकर लम्बे साँस लिया करते थे और रश्क करते थे कि काश! हम ऐसे ही दौलतमंद होते। वह कहने लगे, अब देख लिया कि वाक़ेई सच है दौलतमंद होना कुछ अल्लाह तआला की रज़ामंदी का सबब नहीं यह तो अल्लाह की हिक्मत है जिसे चाहे ज़्यादा दे जिसे चाहे कम दे जिस पर चाहे वुस्अत करे जिस पर चाहे तंगी करे। उसकी हिक्मतें वही जानता है। एक हदीस में भी है कि ''अल्लाह तआला ने तुममें अख़लाक़ की भी इसी तरह तक़्सीम की है जिस तरह रोज़ी की, माल तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके दोस्तों को भी मिलता है और उसके दुश्मनों को भी। अल्बत्ता ईमान अल्लाह तआला की तरफ़ से उसी को मिलता है जिसे अल्लाह चाहता हो।'' (अहमद : 1/387; व सनदुहू ज़ईफ़ुन, सिबाह बिन मुहम्मद को जुम्हूर ने ज़ईफ़ रावी कहा है। शुअबुल ईमान : 5524; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/153; इस रिवायत के ज़ईफ़ शवाहिद भी हैं जिनके साथ यह ज़ईफ़ ही है।) क़ारून के इस

धंसाये जाने को देखकर वह जो उस जैसा बनने की उम्मीदें कर रहे थे कहने लगे कि अगर अल्लाह तआ़ला का लुत्फ़ो-एहसान हम पर न होता तो हमारी इस तमन्ना के बदले जो हमारे दिल में थी कि काश हम भी ऐसे ही होते आज अल्लाह तआ़ला हमें भी उसके साथ धंसा देता, वह काफ़िर था और काफ़िर अल्लाह तआ़ला के यहाँ फ़लाह के लायक़ नहीं होते, न उन्हें दुनिया में कामयाबी मिले, न आख़िरत में ही छुटकारा पाएँ। नह़वी (रह़.) कहते हैं वैकअन्न के मअ़नी वैलका इअ़लम् अन्ना हैं लेकिन मुख़फ़्फ़फ़ करके वैका रह गया और अन्न काफ़ के फ़तह़ा के साथ (इअ़लम) के मह़ज़ूफ़ होने पर दलालत कर दी। लेकिन इस क़ौल को इब्ने जरीर (रह़.) ने ज़ईफ़ बतलाया है मगर मैं कहता हूँ कि यह ज़ईफ़ कहना ठीक नहीं। कुरआने करीम में इसकी किताबत का एक साथ होना इसके ज़ईफ़ होने की वजह नहीं बन सकता। इसलिए कि किताबत का तरीक़ा तो इख़्तिराई अम्र है जो रवाज पा गया वही मुअ़तबर समझा जाता है इससे मअ़नी पर कोई असर नहीं पड़ता, वल्लाहु आलम! दूसरे मअ़नी इसके (अलम तर अन्न) के किये गए हैं और यह भी कहा गया है कि यह इसी तरह़ दो लफ़्ज़ हैं वे और कअन्न ह़र्फ़ वै तअ़ज्जुब के लिए है या तंबीह के लिए और कअन्न मअ़नी में अज़ुन्नु के हैं। इन तमाम क़ौल में क़वी क़ौल यह है कि यह मअ़नी में (अलम तर) के है यानी क्या न देखा तूने जैसे क़तादा (रह़.) का क़ौल है कि यही मअ़नी अ़रबी शेअ़र में भी मुराद लिये गए हैं।

***

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ
الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا
تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ
وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : "आख़िरत का यह भला घर हम उन ही के लिए मुक़र्रर कर देते हैं जो ज़मीन में ऊँचाई बड़ाई और फ़ख़्र नहीं करते, न फ़साद की चाहत रखते हैं। परहेज़गारों के लिए निहायत ही उम्दा अंजाम है। (83) जो शख़्स नेकी लाएगा उसे उससे बेहतर मिलेगा और जो बुराई लेकर आएगा तो ऐसे बुरे आमाल करने वालों को उनके उन ही आमाल का बदला दिया जाएगा जो वह करते थे। (84) जिस अल्लाह ने तुझ पर क़ुरआन नाज़िल किया है वह तुझे दोबारा पहली जगह लाने वाला है, कह दे कि तेरा रब उसे भी बख़ूबी जानता है जो हिदायत लाया है और उसे जो खुली गुमराही में है। (85) तुझे तो कभी उसका ख़्याल भी न गुज़रा था कि तेरी तरफ़ किताब नाज़िल की जाएगी लेकिन यह तेरे रब की मेहरबानी से उतरा। अब तुझे हर्गिज़ काफ़िरों का मददगार न होना चाहिए। (86) ख़्याल रख कि यह कुफ़्फ़ार तुझे अल्लाह तआला की आयतों की तब्लीग़ से रोक न दें उसके बाद कि यह तेरी जानिब उतारी गईं। तू लोगों को अपने रब की तरफ़ बुलाता रह और शिर्क करने वालों में से न हो जाना (87) अल्लाह तआला के साथ किसी और मअबूद को न पुकारना सिवाय अल्लाह तआला के कोई और मअबूद नहीं। हर चीज़ फ़ना होने वाली है मगर उसी की ज़ात। उसी के लिए फ़र्मांरवाई है और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।" (88)

परहेज़गारों पर इन्आमात का तज़्किरा (आ. 83 से 88) : फ़र्माता है कि जन्नत और जहन्नम की नेअमत सिर्फ़ उन ही लोगों को मिलेगी जिनके दिल अल्लाह के डर से भरे हुए हों। और दुनिया की ज़िन्दगी तवाज़ोअ फ़रोतनी आजिज़ी और अख़्लाक़ के साथ गुज़ार दे। किसी पर अपने आपकी ऊँचाई और बड़ाई न समझें, इधर उधर फ़साद न फैलाएँ सरकशी और बुराई न करें किसी का माल नाहक़ न मारें। रब की ज़मीन पर रब की नाफ़र्मानियाँ न करें। हज़रत अली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि "जिसे यह बात अच्छी लगे कि उसकी जूती का तस्मा अपने साथी की जूती के तस्मे से अच्छा हो तो वह भी इस आयत में दाख़िल है।" (तब्री : 19/638) इससे मुराद यह है कि जब वह फ़ख़्र व गुरूर करे और अगर सिर्फ़ बतौरे ज़ेबाइश के चाहता है तो उसमें कोई हर्ज नहीं जैसे सहीह हदीस से साबित है कि एक शख़्स ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी तो यह ख़्वाहिश रहती है कि मेरी चादर भी अच्छी हो, मेरी जूती भी अच्छी हो तो क्या यह भी तकब्बुर है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! यह तो ख़ूबसूरती है, अल्लाह तआला ख़ूबसूरत है और वह ख़ूबसूरती को पसंद करता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमुल किब्र व बयानुहू : 91; तिर्मिज़ी : 1999; अहमद : 1/451) फिर फ़र्माया जो हमारे पास नेकी लाएगा वह बहुत सी नेकियों का सवाब पाएगा यह मक़ामे फ़ज़्ल है और बुराई का बदला सिर्फ़ उसी के मुताबिक़ सज़ा है यह मक़ामे अदल है। और आयत में है (مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ) (27/नम्ल : 90) जो बुराई लेकर आएगा वह औंधे मुँह आग में जाएगा तुम्हें वही बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे।

महशर के दिन अम्बिया (عليهم السلام) का सवाल और लोगों की हालत : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को हुक्म करता है कि रिसालत की तब्लीग़ करते रहें लोगों को कलामे इलाही सुनाते रहें। रब तआला आप (ﷺ) को क़ियामत की तरफ़ वापिस ले जाने वाला है और वहाँ नबुव्वत की बाबत पूछताछ होगी। जैसे

फ़र्मान है (فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَ لَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ) (7/आराफ़ : 6) यानी उम्मतों से और रसूलों से सबसे हम पूछेंगे। और आयत में है रसूलों को जमा करके अल्लाह तआला पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब दिया गया? और आयत में है कि नबियों को और गवाहों को लाया जाएगा, मआद से मुराद जन्नत भी हो सकती है, मौत भी हो सकती है, दोबारा की ज़िन्दगी भी हो सकती है कि दोबारा जिएँ और दाख़िले जन्नत हों।'' सहीह बुख़ारी में है कि इससे मुराद मक्का है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह क़सस बाब (इन्नल्लज़ी फ़रज़ अलैकल कुरआन) : 4773) मुजाहिद (रह.) से मरवी है कि ''इससे मुराद मक्का मुअज़्ज़मा है जो आपकी जाये पैदाइश थी।'' (तब्री : 19/641) ज़हहाक (रह.) फ़र्माते हैं ''जब हुज़ूर (ﷺ) मक्का से निकले अभी जुहफ़ा ही में थे जो आपके दिल में मक्का का शौक़ पैदा हुआ पस यह आयत उतरी और आपसे वादा हुआ कि वापिस मक्का में पहुँचाए जाएँगे।'' उससे यह भी निकलता है यह आयत मदनी हो हालाँकि पूरी सूरह मक्की है। यह भी कहा गया है कि मुराद इससे बैतुल मक़्दिस हो, शायद इस कहने वाले की ग़र्ज़ इससे भी क़ियामत है इसलिए कि बैतुल मक़्दिस ही महशर की ज़मीन है। इन तमाम क़ौलों में जमा की सूरत यह है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कभी तो इसकी तफ़्सीर की आप (ﷺ) के मक्के की तरफ़ लौटने से जो फ़तहे मक्का से पूरी हुई, और यह हुज़ूर (ﷺ) की उम्र के पूरा होने की एक ज़बरदस्त अलामत थी जैसे कि आपने सूरह (इज़ा जाअ) की तफ़्सीर में फ़र्माया है जिसकी हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी मुवाफ़िक़त की थी, और फ़र्माया था कि ''तू जो जानता है वही मैं भी जानता हूँ'' यही वजह है कि इन ही से इस आयत से जहाँ मक्का मरवी है वहाँ हुज़ूर (ﷺ) का इंतिक़ाल भी मरवी है और कभी क़ियामत से तफ़्सीर की क्योंकि मौत के बाद क़ियामत है। और कभी जन्नत से तफ़्सीर की जो आपका ठिकाना है और आपकी तब्लीग़े रिसालत का बदला है कि आपने जिन्न व इंस को अल्लाह के दीन की दावत दी। और आप (ﷺ) तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा कामिल ज़्यादा फ़सीह और ज़्यादा अफ़ज़ल थे। फिर फ़र्माया कि अपने मुख़ालेफ़ीन से और झुठलाने वालों से कह दो कि हममें से हिदायत वालों को और गुमराही वालों को अल्लाह अच्छी तरह जानता है। तुम देख लोगे कि किसे अंजाम की बेहतरी मिलती है और दुनिया और आख़िरत में बेहतरी और भलाई किसके हिस्से में आती है। फिर अपनी एक और ज़बरदस्त नेअमत बयान करता है कि वही के उतरने से पहले आपको कभी यह ख़्याल भी न गुज़रता था कि आप पर किताबुल्लाह नाज़िल होगी यह तो तुझ पर और तमाम मख़्लूक़ पर रब की रहमत हुई कि उसने तुझ पर अपनी पाक और अफ़ज़ल किताब नाज़िल की। अब तुम्हें हर्गिज़ काफ़िरों का मददगार न होना चाहिए बल्कि उनसे अलग रहना चाहिए उनसे बेज़ारी ज़ाहिर कर देनी चाहिए और उनसे मुख़ालिफ़त का ऐलान कर देना चाहिए। फिर फ़र्माता है कि अल्लाह की उतरी हुई आयतों से यह लोग कहीं तुझे रोक न दें यानी यह जो तेरे दीन की मुख़ालिफ़त करते हैं और लोगों को तेरी ताबेदारी से रोकते हैं तो उससे असर पज़ीर न हो जाना, अपने काम पर लगे रहना, अल्लाह तेरे कलिमे को पूरा करने वाला है तेरे दीन की ताईद करने वाला है, तेरी रिसालत को ग़ालिब करने वाला है, तमाम दीनों पर तेरे दीन को ऊँचा करने वाला है। तू अपने रब की इबादत की तरफ़ लोगों को बुलाता रह, जो अकेला और ला शरीक है। तुझे नहीं चाहिए कि मुश्रिकों का साथ दे। अल्लाह तआला के साथ किसी और को न पुकार, इबादत के लायक़ वही है। उलूहियत के क़ाबिल उसी की अज़ीमुश्शान ज़ात है वही हमेशा और बाक़ी है। हय्य और क़य्यूम है,

तमाम मख़्लूक़ मर जाएगी और वह मौत से दूर है। जैसे फ़र्माया (كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ۝) (55/रहमान : 26, 27) जो भी इस पर है सब फ़ानी है तेरे रब का चेहरा ही बाक़ी रह जाएगा जो जलालत व इकराम वाला है। वजह से मुराद ज़ात है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "सबसे ज़्यादा सच्चा कलिमा लुबैद शायर का है जो उसने कहा है अला कुल्लु शैइम् मा ख़ललल्लाह बातिलुन याद रखो रब तआला के सिवा सब कुछ बातिल है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यजूज़ु मिनश्शअरि वर्रजज़ वल हदाइ वमा यक्रहू मिन्ह : 6147; सहीह मुस्लिम : 2256) मुजाहिद (रह.) व सौरी (रह.) से मरवी है कि "हर चीज़ बातिल है मगर वह काम जो अल्लाह की रजाजोई के लिए किये जाएँ उनका सवाब रह जाता है।" शायरों के शेअरों में भी वजह का लफ़्ज़ इस मतलब के लिए इस्तेमाल किया गया है, मुलाहिज़ा हो

अस्तग़्फ़िरुल्लाह जनबन लस्तु मुह्सियिा रब्बल इबादि इलैहिल वज्हु वल अमलु

मैं अल्लाह तआला से जो तमाम बन्दों का रब है जिसकी तरफ़ तवज्जह और क़सद है जिसके लिए अमल हैं अपने तमाम गुनाहों की बख़्शिश चाहता हूँ जिन्हें मैं शुमार भी नहीं कर सकता। यह क़ौल पहले क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं यह भी अपनी जगह सही है कि इंसान के तमाम आमाल बेकार हैं सिर्फ़ उन ही नेकियों के बदले का मुस्तहिक़ है जो सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए हों। और पहले क़ौल का मतलब भी बिलकुल सही है कि सब मुतनफ़्फ़िस फ़ानी और ज़ाइल हैं , सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात पाक है जो फ़ना और ज़वाल से बालातर है, वही अव्वल व आख़िर है हर चीज़ से पहले था और हर चीज़ के बाद रहेगा। मरवी है कि "जब हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) अपने दिल को मज़बूत करना चाहते थे तो जंगल में किसी खण्डर के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और दर्दनाक आवाज़ से कहते कि इसके बानी कहाँ हैं? फिर ख़ुद ही जवाब में यही आयत पढ़ते।" हुक्म और मुल्क और मिल्कियत उसी की है, वही मालिक व मुतसर्रिफ़ है, उसी के हुक्म अहकाम को कोई रद्द नहीं कर सकता। रोज़े जज़ा में सब उसी की तरफ़ लौटाये जाएँगे। वह सबको उनकी नेकियों बुराइयों का बदला देगा, नेक को नेक बदला और बुरे को बुरी सज़ा।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह क़सस की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह अनकबूत

سورة العنكبوت

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह अनकबूत- 29

आयातः 69 मक्की सूरह, पैराग्राफः 8

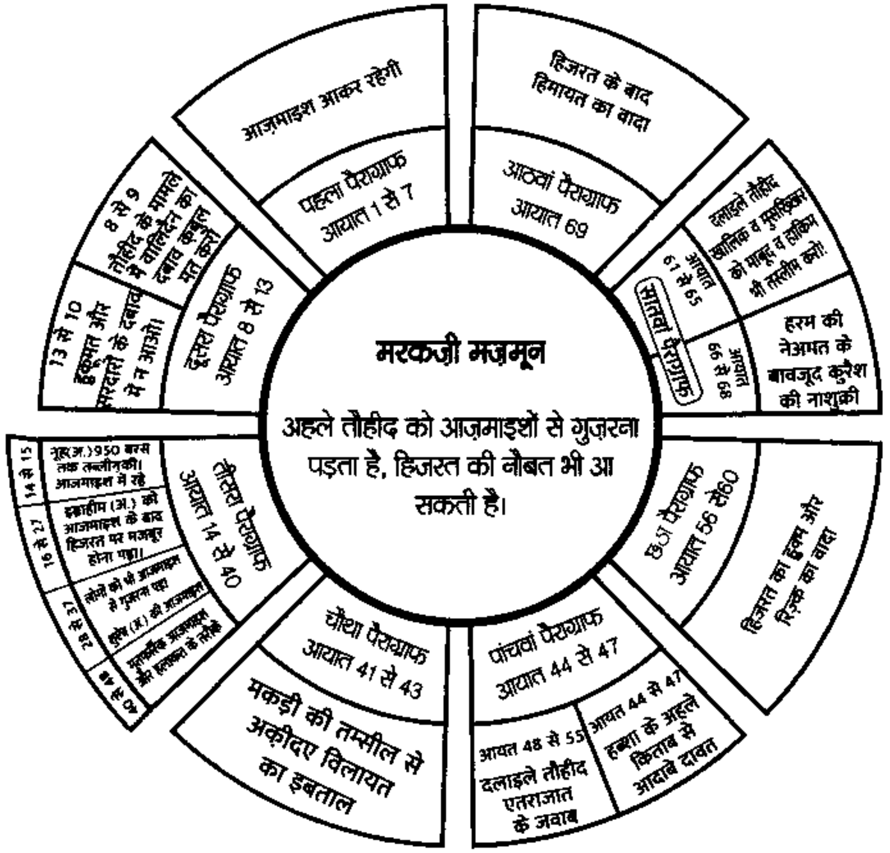

ज़मानए नुज़ूल :

1. सूरह अनकबूत, सूरह लुकमान के बाद हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी) से पहले, 5 नबवी के अवाइल में नाज़िल हुई, जब मुसलमान मुन्करीने आख़िरत मुश्रेकीन के ज़ुल्मो-सितम का शिकार थे। मुसलमानों को हिजरत और दीगर आज़माइशों के लिए तैयार किया गया।
2. इन्ना अरज़ी वासिआ के ज़रिये हिजरते हब्शा का हुक्म दिया गया। (आयत 56)
3. उन कमज़ोर मुसलामनों और मुनाफ़िक़ीने मक्का की गई, जो हिजरते हब्शा के लिए मुतरद्दिद थे (आयत 10 से 11)

तफ़्सीर सूरह अन्कबूत

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

الٓمّٓ ۚ ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ یُّتۡرَکُوۡۤا اَنۡ یَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَ ہُمۡ لَا یُفۡتَنُوۡنَ ﴿۲﴾ وَ لَقَدۡ فَتَنَّا
الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ فَلَیَعۡلَمَنَّ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ صَدَقُوۡا وَ لَیَعۡلَمَنَّ الۡکٰذِبِیۡنَ ﴿۳﴾ اَمۡ حَسِبَ
الَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ السَّیِّاٰتِ اَنۡ یَّسۡبِقُوۡنَا ؕ سَآءَ مَا یَحۡکُمُوۡنَ ﴿۴﴾

तर्जुमा : ''अलिफ़ लाम मीम (1) क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि उनके सिर्फ़ इस दावे पर कि हम ईमान लाए हैं हम उन्हें बग़ैर आज़माये ही छोड़ देंगे? (2) इनसे अगलों को भी हमने ख़ूब जाँचा। यक़ीनन अल्लाह तआला उन्हें भी जाने लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी मालूम कर लेगा जो झूठे हैं। (3) क्या जो लोग बुराइयाँ कर रहे हैं उन्होंने यह समझ रखा है कि वह हमारे क़ाबू से बाहर हो जाएँगे। यह लोग कैसी बुरी तज्वीज़ें कर रहे हैं।'' (4)

मोमिनों का अभी तो इम्तिहान होगा (आ. 1 से 4) : हुरूफ़े मुक़त्तआ की बहस सूरह बक़रह के शुरू में गुज़र चुकी है। फिर फ़र्माता है कि यह नामुम्किन है कि मोमिन को भी इम्तिहान से छोड़ दिया जाए। सहीह हदीस में है कि सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान नबियों का होता है फिर सालेह नेक लोगों का फिर उनसे कम दर्जे वाले फिर उनसे कम दर्जे वाले का। इंसान का इम्तिहान उसके दीन के अंदाज़े पर होता है अगर वह अपने दीन में सख़्त है तो मुसीबतें भी सख़्त नाज़िल होती हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िस्सब्रि अलल बलाइ : 2398; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4023; अहमद : 1/172; हाकिम : 1/41) इसी मज़्मून का बयान इस आयत में भी है (اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّۃَ وَ لَمَّا یَعۡلَمِ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ جٰہَدُوۡا مِنۡکُمۡ وَ یَعۡلَمَ الصّٰبِرِیۡنَ ﴿۱۴۲﴾) (3/आले इमरान : 142) क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि तुम यूँ ही जन्नत में दाख़िल कर दिये जाओगे? हालाँकि अभी अल्लाह तआला ने यह ज़ाहिर नहीं किया कि तुममें से मुजाहिद कौन है? और साबिर कौन है? इसी तरह सूरह बरा'त (तौबा), सूरह बक़रह में गुज़र चुका है कि क्या तुमने यह सोच रखा है कि तुम जन्नत में यूँ ही चले जाओगे? और अगले लोगों जैसे सख़्त इम्तिहान के मौक़े तुम पर न आएँगे कि उन्हें भूख दुख दर्द वग़ैरह पहुँचे यहाँ तक कि रसूल और उनके साथ के ईमान वाले बोल उठे कि अल्लाह तआला की मदद कहाँ है? यक़ीन मानो कि अल्लाह की मदद क़रीब है। यहाँ भी फ़र्माया इनसे अगले मुसलमानों की भी जाँच पड़ताल की गई उन्हें भी सर्द गर्म चखाया गया ताकि जो अपने दावे में सच्चे हैं और जो सिर्फ़ ज़ुबानी दावा करते हैं, वो पहचान लिये जाएँ, इससे यह न समझा जाए कि अल्लाह तआला उसे नहीं

जानता था, वह हर हो चुकी हुई बात को और हर होने वाली बात को बराबर जानता है। इस पर अहले सुन्नत के तमाम इमामों का इज्माअ है। पस यहाँ इल्म रूयत यानी देखने के मअनी में है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) (لِنَعْلَمَ) (34/सबा : 21) के मअनी लिनरा करते हैं क्योंकि देखने का ताल्लुक़ मौजूद चीज़ों से होता है और इल्म उससे आम है। फिर फ़र्माता है जो ईमान नहीं लाए वह भी यह गुमान न करें कि इम्तिहान से बच जाएँगे, बड़े बड़े अज़ाब और सख़्त सज़ाएँ उनकी ताक में हैं, यह हमारे हाथ से निकल नहीं सकते हमसे आगे बढ़ नहीं सकते, उनके यह गुमान निहायत बुरे हैं जिनका बुरा नतीजा बहुत जल्द देख लेंगे।

***

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۞ ٥ وَمَنْ جَاهَدَ
فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۞ ٦ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞ ٧ وَوَصَّيْنَا
الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا
تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ ٨ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۞ ٩

तर्जुमा : "जिसे अल्लाह तआला की मुलाक़ात की उम्मीद हो पस अल्लाह का ठहराया हुआ वक़्त यक़ीनन आने वाला है। वह सबकी सुनने वाला सब कुछ जानने वाला है। (5) हर एक कोशिश करने वाला अपने ही भले की कोशिश करता है। वैसे तो अल्लाह तआला तमाम जहान वालों से बेनियाज़ है। (6) और जिन लोगों ने यक़ीन किया और मुताबिक़े सुन्नत काम किये, हम उनके तमाम गुनाहों को उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके नेक आमाल के बेहतरीन बदले देंगे। (7) हमने हर इंसान को अपने माँ बाप के साथ सुलूक करने की नसीहत की है। हाँ! अगर वह यह कोशिश करें कि तू मेरे साथ उसे शरीक कर ले जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहना न मानना, तुम सबका लौटना मेरी ही तरफ़ है फिर मैं हर उस चीज़ से जो तुम करते थे तुम्हें ख़बर दूँगा। (8) जिन लोगों ने ईमान क़बूल किया और नेक काम किये उन्हें मैं अपने नेक बन्दों में शुमार कर लूँगा।" (9)

नेक काम करना भी जिहाद है (आ. 5 से 9) : जिन्हें आख़िरत के बदलों की उम्मीद है और उसे सामने

रखकर वह नेकियाँ करते हैं उनकी उम्मीदें पूरी होंगी और उन्हें न ख़त्म होने वाले सवाब मिलेंगे। अल्लाह तआला दुआओं का सुनने वाला और कुल कायनात का जानने वाला है। अल्लाह का ठहराया हुआ वक़्त टलता नहीं। फिर फ़र्माता है हर नेक अमल करने वाला अपना ही नफ़ा करता है। अल्लाह तआला बन्दों के आमाल से बेपरवाह है, अगर सारे इंसान मुत्तक़ी (डरने वाले) बन जाएँ तो अल्लाह तआला की सल्तनत में कोई इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) नहीं हो सकता। हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं ''जिहाद तलवार चलाने का ही नाम नहीं इंसान नेकियों की कोशिश में लगा रहे यह भी एक तरह का जिहाद है'' इसमें शक नहीं कि तुम्हारी नेकियाँ अल्लाह के कोई काम नहीं आतीं लेकिन फिर भी उसकी यह मेहरबानी है कि वह तुम्हें नेकियों पर बदले देता है। इनकी वजह से तुम्हारी बुराइयाँ माफ़ कर देता है। छोटी से छोटी नेकी की क़द्र करता है और उस पर बड़े से बड़ा अज्र देता है। एक एक नेकी का सात सात सौ गुना बदला इनायत करता है और बुराई को या तो बिलकुल ही मिटा देता है या उसी के बराबर सज़ा देता है। वह ज़ुल्म से पाक है, नेकियों को बढ़ाता है और अपने पास से अज्रे अज़ीम देता है। ईमान वालों की सुन्नत के मुताबिक़ नेकियाँ क़बूल करता है उनके गुनाहों से दरगुज़र करता है और उनके अच्छे आमाल का बदला इनायत करता है।

माँ बाप की मशरूत इताअत वाजिब है : पहले अपनी तौहीद पर मज़बूती के साथ कारबंद रहने का हुक्म फ़र्माया, अब माँ बाप के सुलूक व एहसान का हुक्म देता है क्यों कि उन ही से इंसान का वुजूद होता है बाप ख़र्च करता है और परवरिश करता है। माँ मुहब्बत रखती है और पालती है। दूसरी आयत में फ़र्मान है (وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْ) (17/बनी इस्राईल : 23) अल्लाह तआला फ़ैसला कर चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो औ माँ बाप की पूरी इताअत करो। उन दोनों का या उनमें से एक का बुढ़ापे का ज़माना आ जाए तो उन्हें उफ़ भी न कहना, डाँट डपट तो कहाँ की? बल्कि उनके साथ अदब से कलाम करना और रहम के साथ उनके सामने झुके रहना और अल्लाह तआला से उनके लिए दुआ करना कि ऐ अल्लाह! उन पर ऐसा ही रहम कर, जैसे यह बचपन में मुझ पर किया करते थे। लेकिन हाँ यह ख़्याल रहे कि अगर यह शिर्क की तरफ़ बुलाएँ तो उनका कहना न मानना। समझ लो कि एक दिन तुम्हें मेरे सामने खड़ा होना है। उस वक़्त मैं अपनी इबादत का और मेरे फ़र्मान के मातहत माँ बाप की इताअत करने का बदला दूँगा और नेक लोगों के साथ हश्र करूँगा। अगर तुमने अपने माँ बाप की वह बातें नहीं मानीं जो मेरे अहकाम के ख़िलाफ़ हैं तो वह ख़्वाह कैसे ही हों, मैं तुम्हें उनसे अलग कर लूँगा। क्योंकि क़ियामत के दिन इंसान उसके साथ होगा जिसे वह दुनिया में चाहता था। इसीलिए उसके बाद ही फ़र्माया कि ईमान वालों और नेक अमल करने वालों को मैं अपने नेक बन्दों में मिला दूँगा। हज़रत सअद (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मेरे बारे में चार आयतें उतरीं जिनमें से एक आयत यह भी है यह इसलिए उतरी कि मेरी माँ ने मुझसे कहा कि ऐ सअद! क्या अल्लाह तआला का हुक्म मेरे साथ नेकी करने का नहीं? अगर तूने हुज़ूर (ﷺ) की नबुव्वत से इंकार न किया तो अल्लाह की क़सम! मैं खाना पीना छोड़ दूँगी।'' चुनाँचे उसने यही किया यहाँ तक कि लोग ज़बरदस्ती उसका मुँह खोलकर ग़िज़ा हलक़ में डालते थे, पस यह आयत उतरी। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा (रज़ि.), बाब फ़ी फ़ज़्ले सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) : 1784; तिर्मिज़ी : 3189)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ
اللّٰهِ ؕ وَلَىِٕنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ
صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ⑩ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ⑪

तर्जुमा : ''कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ज़बानी कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं लेकिन जब अल्लाह की राह में कोई मुश्किल उन पर आ पड़ती है तो लोगों की तक्लीफ़ों को अल्लाह तआला के अज़ाब की तरह बना लेते हैं, हाँ! अगर अल्लाह की मदद आ जाए तो पुकार उठते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ ही हैं। क्या दुनिया जहान के दिलों में जो कुछ है उससे अल्लाह तआला दाना नहीं है? (10) जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन्हें भी जान लेगा और मुनाफ़िक़ों को भी जानकर ही रहेगा।'' (11)

अहले ईमान की आज़माइश और मुनाफ़िक़ (आ. 10, 11) : उन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र हो रहा है जो ज़बानी ईमान वाले होने का दावा कर लेते हैं लेकिन जहाँ मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से कोई दुख पहुँचा यह उसे रब का अज़ाब समझकर मुर्तद हो जाते हैं यही मआनी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने किये हैं जैसे और आयत में है (وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ) (22/हज्ज : 11) यानी कुछ लोग एक किनारे खड़े होकर अल्लाह तआला की इबादत करते हैं अगर राहत मिली तो मुत्मइन हो गए और अगर मुसीबत पहुँची तो चेहरा फेर लिया, आख़िर तक। यहाँ यही बयान हो रहा है कि अगर हुज़ूर (ﷺ) को कोई ग़नीमत मिली, कोई फ़तह मिली तो अपना दीनदार होना ज़ाहिर करने लगते हैं। जैसे आयत में है (الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ) (4/निसाअ : 141) वह तुम्हें देखते रहते हैं अगर फ़तह व नुसरत हुई तो हाँक लगाने लगते हैं कि क्या हम तुम्हारे नहीं हैं? और अगर काफ़िरों की बन आई तो उनसे अपनी साज़ बाज़ जताने लगते हैं कि देखो! हमने तुम्हारा साथ दिया और तुम्हें बचा लिया। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, बहुत मुम्किन है कि अल्लाह अपने नेक बन्दों को बिलकुल ही ग़ालिब कर दे फिर तो यह अपनी इस छुपी हुई हरकत पर साफ़ नादिम हो जाएँ। यहाँ फ़र्माया कि यह क्या बात है कि उन्हें इतना भी नहीं मालूम कि अल्लाह अल्लामुल ग़ुयूब है जहाँ ज़बानी बात जानता है वहाँ क़ल्बी बात भी उसे मालूम है। अल्लाह तआला भलाइयाँ बुराइयाँ पहचानकर नेक व बद को मोमिन व मुनाफ़िक़ को अलग अलग कर देगा नफ़्स के पुजारी नफ़ा के ख़्वाहाँ यक्सू हो जाएँगे और नफ़ा नुक़्सान में ईमान न छोड़ने वाले ज़ाहिर हो जाएँगे। जैसे फ़र्माया (وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ) (47/मुहम्मद : 31) हम तुम्हें आज़माते रहा करेंगे यहाँ तक कि तुममें से मुजाहिदीन को और साबिरीन को हम दुनिया के सामने ज़ाहिर कर दें और तुम्हारी ख़बरें देखभाल लें। उहुद के इम्तिहान का ज़िक्र करके फ़र्माया कि अल्लाह तआला मोमिनों को जिस हालत पर वह थे, रखने वाला न था, जब तक कि ख़बीस व तय्यब की तमीज़ न कर ले।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : "काफ़िरों ने ईमान वालों से कहा कि तुम हमारी राह की ताबेदारी करो तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे। हालाँकि वह उनके गुनाहों में से कुछ भी नहीं उठाने के। यह तो सिर्फ़ झूठे हैं। (12) अल्बत्ता यह अपने बोझ ढो लेंगे और अपने बोझों के साथ ही और बोझ भी। और जो कुछ इफ़्तिरा परदाज़ियाँ कर रहे हैं उन सबकी बाबत इनसे पूछताछ की जाएगी।" (13)

आमाल ही काम आएँगे (आ. 12, 13) : कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुसलमानों को बहकाने के लिए उनसे यह भी कहते थे कि तुम हमारे मज़हब पर अमल करो अगर उसमें कोई गुनाह हो तो वह हम पर। हालाँकि यह उसूलन ग़लत है कि किसी का बोझ कोइ उठाए, यह बिलकुल झूठे हैं। कोई अपने क़राबतदार के गुनाह भी अपने ऊपर नहीं ले सकता। दोस्त दोस्त को उस दिन न पूछेगा। हाँ! यह लोग अपने गुनाहों के बोझ उठाएँगे और जिन्हें इन्होंने गुमराह किया है उनके बोझ भी इन पर लाद दिये जाएँगे मगर वह गुमराहशुदा लोग हल्के न होंगे उनका बोझ उन पर है, जैसे फ़र्माया है (لِيَحْمِلُوٓا اَوْزَارَهُمْ) (16/नह्ल : 25) यानी यह अपने बोझ उठाएँगे और जिन्हें बहकाया था उनके बहकाने का गुनाह भी इन पर होगा। सहीह हदीस में है कि "जो हिदायत की तरफ़ लोगों को दावत दे, क़ियामत तक जो लोग उस पर चलेंगे उन सबको जितना सवाब होगा उतना ही उस एक को होगा लेकिन उनके सवाबों में से घटकर नहीं। इसी तरह जिसने बुराई फैलाई उस पर जो भी अमल पैरा हों उन सबको जितना गुनाह होगा उतना ही उस एक को होगा लेकिन उनके गुनाहो में कोई कमी नहीं होगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल इल्म, बाब मन सन्ना सुन्नतन हसनतन अव सय्यिअतन... : 2674; अबूदाऊद : 5129; तिर्मिज़ी : 2671) और हदीस में है कि "ज़मीन पर जितनी ख़ूँ रेज़ियाँ होती है हज़रत आदम (عليه السلام) का वह लड़का जिसने अपने भाई को नाहक़ क़त्ल कर दिया था उस पर उस ख़ून का वबाल पड़ता है इसलिए कि क़त्ले बेजा उसी से शुरू हुआ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐतिसाम, बाब इस्मुम मन दआ इला ज़लाल अव सन्ना सुन्नतन सय्यिअतन.. : 7321; सहीह मुस्लिम : 1677; तिर्मिज़ी : 2673; इब्ने माजा : 2616; अहमद : 1/383; इब्ने हिब्बान : 5683; बैहक़ी : 8/15) इनके तमाम बोहतान झूठ इफ़्तिरा की इनसे बरोज़ क़ियामत पूछताछ होगी। हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) ने फ़र्माया "हुज़ूर (ﷺ) ने अल्लाह की तमाम रिसालत पहुँचा दी। आपने यह भी फ़र्माया है कि ज़ुल्म से बचो क्योंकि क़ियामत के दिन अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माएगा मुझे अपनी इज़्ज़त की और अपने जलाल की क़सम! आज एक ज़ुल्म को भी मैं न छोड़ूँगा। फिर एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि फ़लाँ फ़लाँ कहाँ है? वह आएगा और पहाड़ के पहाड़ नेकियों के उसके साथ होंगे यहाँ तक अहले महशर की नज़रें उसकी तरफ़ उठने लगेंगी, वह अल्लाह तआला के सामने आकर खड़ा हो जाएगा,

फिर आवाज़ दी जाएगी कि इसकी तरफ़ किसी का कोई हक़ हो, इसने किसी पर ज़ुल्म किया हो, वह आ जाये और अपना हक़ ले ले। अब तो इधर उधर से लोग उठ खड़े होंगे और उसे घेरकर अल्लाह तआला के सामने खड़े हो जाएँगे। अल्लाह तआला फ़र्माएगा मेरे इन बन्दों को इनके हक़ दिलवाओ, फ़रिश्ते कहेंगे, ऐ अल्लाह! कैसे दिलवाएँ? अल्लाह तआला कहेगा इसकी नेकियाँ लो और इन्हें दो। चुनाँचे यूँ ही किया जाएगा। यहाँ तक कि एक नेकी बाक़ी नहीं रहेगी और अभी तक कुछ मज़्लूम और हक़दार बाक़ी रह जाएँगे। अल्लाह तआला कहेगा इन्हें बदला दो। फ़रिश्ते कहेंगे कि अब तो इसके पास एक नेकी भी नहीं रही। अल्लाह तआला हुक्म देगा कि इनके गुनाह इस पर लाद दो। फिर हुज़ूर(ﷺ) ने घबराकर इस आयत की तिलावत की (वल यह्मिलुन्ना अस्क़ालहुम व अस्क़ालन) (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/272; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; देखिए सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तह्रीमुज़्ज़ुल्म : 2581; तिर्मिज़ी : 2420; अहमद : 2/371; मुस्नदे अबी यअ़ला : 6449) फ़र्माया "ऐ मुआज़ (रज़ि.)! क़ियामत के दिन मोमिन की तमाम कोशिशों से सवाल किया जाएगा यहाँ तक कि उसकी आँखों के सुर्मे से और उसके मिट्टी के गूँधने से भी। देख ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन कोई और तेरी नेकियाँ ले जाए।" (सनद ज़ईफ़ है।)

***

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

तर्जुमा : "हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा वह उनमें साढ़े नौ सौ (950) साल तक रहे फिर तो उन्हें तूफ़ान ने धरपकड़ा और वह थे भी ज़ालिम। (14) फिर हमने उसे और कश्ती वालों को नजात दी और इस वाक़िया को हमने तमाम जहान वालों के लिए इब्रत का निशान बना दिया।" (15)

नूह (عليه السلام) का लम्बी मुद्दत वअ़ज़ करना (आ. 14, 15) : इसमें हुज़ूर (ﷺ) की तसल्ली है आप (ﷺ) को ख़बर दी जाती है कि हज़रत नूह (عليه السلام) इतनी लम्बी मुद्दत तक अपनी क़ौम को अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे, दिन रात, पोशीदा और ज़ाहिर हर तरह आपने उन्हें अल्लाह तआला के दीन की दावत दी, लेकिन वह अपनी सरकशी और गुमराही में ही बढ़ते गए बहुत ही कम लोग आप पर ईमान लाए, आख़िरकार अल्लाह का ग़ज़ब उन पर बसूरते तूफ़ान आया और उन्हें तहस नहस कर दिया तो ऐ पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़माँ! आप अपनी क़ौम की इस तक्ज़ीब को नया ख़्याल न करें आप अपने दिल को रंजीदा न करें। हिदायत व ज़लालत अल्लाह तआला के हाथ में है जिन लोगों का जहन्नम में जाना तै हो चुका है उन्हें तो कोई भी हिदायत नहीं दे सकता, तमाम निशानियाँ भले देख लें लेकिन उन्हें ईमान नसीब न होगा। बिल आख़िर जैसे नूह (عليه السلام) को नजात मिली और क़ौम डूब गई उसी तरह आख़िर में ग़ल्बा आपका है और आपके मुख़ालिफ़ीन पस्त होंगे। इब्ने

अ़ब्बास (रज़ि.) का बयान है कि चालीस साल की उ़म्र में नूह़ नबी (عليه السلام) को नबुव्वत मिली और नबुव्वत के बाद साढ़े नौ सौ साल तक आपने अपनी क़ौम को तब्लीग़ की। तूफ़ान की आ़लमगीर हलाकी के बाद भी ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) साठ साल तक ज़िन्दा रहे यहाँ तक बनी आदम की नस्ल फैल गई और दुनिया में यह बकसरत नज़र आने लगे। क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं "ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) की उ़म्र कुल साढ़े नौ सौ साल थी तीन सौ साल तो आपके बेदावत उनमें गुज़रे, तीन सौ साल तक अल्लाह की त़रफ़ अपनी क़ौम को बुलाते रहे और साढ़े तीन सौ साल तूफ़ान के बाद ज़िन्दा रहे।" लेकिन यह क़ौल ग़रीब है और आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से तो यही मालूम होता है कि आप साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को अल्लाह तआ़ला की वह़दानियत की त़रफ़ बुलाते रहे। औ़न बिन अबी शद्दाद (रह़.) कहते हैं कि "जब आप (عليه السلام) की उ़म्र साढ़े तीन सौ साल की थी उस वक़्त अल्लाह तआ़ला की वह़्‌ी आप (عليه السلام) को आई, उसके बाद साढ़े नौ सौ साल तक आप लोगों को कलामे इलाही पहुँचाते रहे, उसके बाद फिर साढ़े तीन सौ साल की और उ़म्र पाई।" लेकिन यह भी क़ौल ग़रीब है। ज़्यादा ठीक ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल नज़र आता है, वल्लाहु आ़लम! "इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने मुजाहिद (रह़.) से कहा कि ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) अपनी क़ौम में कितनी मुद्दत तक रहे? उन्होंने कहा, साढ़े नौ सो साल। आपने फ़र्माया, फिर से लोगों के अख़लाक़ उनकी उ़म्रें और अ़क़्लें आज तक घटती ही चली आईं।" जब क़ौमे नूह़ पर ग़ज़बे इलाही नाज़िल हुआ तो रब्बे तआ़ला ने अपने फ़ज़्लो करम से अपने नबी को और ईमान वालों को जो आपके साथ आपके हुक्म से तूफ़ान से पहले कश्ती में सवार हो चुके थे, बचा लिया। सूरह हूद में इसकी पूरी तफ़्सील गुज़र चुकी है इसलिए हम यहाँ दोबारा वारिद नहीं करते। हमने उस कश्ती को दुनिया के लिए इब्रत का ज़रिया बना दिया। या तो ख़ुद उस कश्ती को जैसे कि ह़ज़रत क़तादा (रह़.) का क़ौल है कि पहले इस्लाम तक वह जूदी पहाड़ पर थी या यह कि उस कश्ती को देखकर फिर पानी के सफ़र के लिए जो कश्तियाँ लोगों ने बनाई उनको कि उन्हें देखकर अल्लाह का वह बचाना याद आ जाता है। (त़ब्री : 20/18) जैसे फ़र्मान है (وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝) (36/यासीन : 41, 42) हमारी कुदरत की एक निशानी इनके लिए यह भी है कि हमने इनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार कर लिया। और हमने इनके लिए और भी उस जैसी सवारियाँ बना दीं, आख़िर तक। सूरह ह़ाक़्क़ा में फ़र्माया जब पानी का तूफ़ान आया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कर लिया और इस वाक़िया को तुम्हारे लिए एक यादगार बना दिया ताकि जिन कानों को अल्लाह तआ़ला ने याद रखने की त़ाक़त दी है वह याद रख लें। यहाँ शख़्स से जिन्स की त़रफ़ चढ़ाव किया है। जैसे (وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا) (67/मुल्क : 5) वाली आयत में कि आसमाने दुनिया के सितारों का बाइसे ज़ीनत होना बयान करके उनकी नोइयत का शैत़ानों के लिए रजम होना बयान किया। और आयत में इंसान का मिट्टी से पैदा होना ज़िक्र करके फ़र्माया फिर हमने उसे नुत़्फ़े की शक्ल में क़रारगाह में कर दिया। हाँ! यह भी हो सकता है कि आयत में (हा) की ज़मीर का मरज़अ उ़क़ूबत और सज़ा को किया जाए, वल्लाहु आ़लम! (यहाँ यह ख़्याल रहे कि तफ़्सीर इब्ने कसीर के कुछ नुस्ख़ों में शुरू तफ़्सीर में कुछ इबारत ज़्यादा है जो कुछ नुस्ख़ों में नहीं। वह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) का साढ़े नौ सौ साल तक आज़माया जाना बयान किया और उनकी क़ौम को उनकी इत़ाअ़त के साथ आज़माना बतलाया कि उनकी तक्ज़ीब की वजह से अल्लाह तआ़ला ने उन्हें

डुबो दिया। फिर उसके बाद ज़िन्दा किया। फिर क़ौमे इब्राहीम की आज़माइश का ज़िक्र किया कि उन्होंने भी ताअ़त व मुताबिअ़त न की, फिर लूत (ﷺ) की आज़माइश का ज़िक्र किया और उनकी क़ौम का हश्र बयान किया। फिर हज़रत शुऐब (ﷺ) की क़ौम के वाक़ियात सामने रखे। फिर आदियों, समूदियों, क़ारूनियों, फ़िरओनियों, हामानियों वग़ैरह का ज़िक्र किया कि अल्लाह तआला पर ईमान न लाने और उसकी तौहीद को न मानने की वजह से उन्हें भी तरह तरह की सज़ाएँ दी गईं। फिर अपने पैग़म्बरे इस्लाम मुहम्मद (ﷺ) के मुश्रिकीन और मुनाफ़िक़ीन से तकालीफ़ सहने का ज़िक्र किया और आप (ﷺ) को हुक्म फ़र्माया कि अहले किताब से बेहतरीन तरीक़े पर मुनाज़िरा करें।

***

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑯
اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ⑰ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ۭ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ⑱

तर्जुमा : "इब्राहीम (ﷺ) ने भी अपनी क़ौम से फ़र्माया कि अल्लाह तआला की इबादत करो और उससे डरते रहो। अगर तुममें दानाई है तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है। (16) तुम तो अल्लाह तआला के सिवा बुतों की पूजा पाठ कर रहे हो और झूठी बातें दिल से गढ़ लेते हो। सुनो! जिन जिनको तुम अल्लाह तआला के सिवा पूजते हो वह तो तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं, पस तुम्हें चाहिए कि तुम अल्लाह तआला ही से रोज़ियाँ माँगा करो और उसी की इबादत करो और उसी की शुक्रगुज़ारी करते रहो और उसी की तरफ़ तुम लौटाये जाओगे। (17) अगर तुम झुठलाओ तो तुमसे पहले की उम्मतों ने भी झुठलाया है रसूल के ज़िम्मे तो सीधा सीधा पहुँचा देना है।" (18)

इमामुल मुवह्हिदीन हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की दावते तौहीद (आ. 16 से 18) : इमामुल मुवह्हिदीन अबुल मुर्सलीन ख़लीलुल्लाह अ़लैहि व सलवातुल्लाह का बयान हो रहा है कि उन्होंने अपनी क़ौम को तौहीदे इलाही की दावत दी, रियाकारी से बचने और दिल में परहेज़गारी क़ायम करने का हुक्म दिया, उसकी नेअ़मतों पर शुक्रगुज़ारी करने को फ़र्माया और उसका नफ़ा भी बतलाया कि दुनिया आख़िरत की

बुराइयाँ उससे दूर हो जाएँगे और दोनों जहान की नेअ़मतें उसे मिल जाएँगी। साथ ही उन्हें बतलाया कि जिन बुतों की तुम पूजा कररहे हो यह तो बेज़रर और बेनफ़ा हैं, तुमने आप ही इनके नाम और इनके अज्साम तराश लिये हैं वह तो तुम्हारी तरह मख़्लूक़ हैं बल्कि तुमसे भी कमज़ोर हैं। वह तो तुम्हारी रोज़ियों के भी मुख़्तार नहीं। अल्लाह तआला ही से रोज़ियाँ माँगा करो। इसी हस्र के साथ आयत (إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ إِيَّاكَ) (نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ) (1/फ़ातिहा : 4) भी है कि हम सब तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। यही हज़रत आसिया (عليها السلام) की दुआ में है (رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ) (66/तहरीम : 11) ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपने पास ही जन्नत में मकान बना। चूँकि उसके सिवा कोई रिज़्क़ नहीं दे सकता इसलिए तुम उसी से रोज़ियाँ माँगा करो और जब उसकी रोज़ियाँ खाओ तो उसके सिवा दूसरे की इबादत भी न करो। उसकी नेअ़मतों का शुक्र भी बजा लाओ। तुममें से हर एक उसी की तरफ़ लौटने वाला है। वह हर आमिल को उसके अमल का बदला देगा। देखो मुझे झूठा कहकर ख़ुश न हो लो नज़रें डालो कि तुमसे पहले जिन्होंने नबियों को झुठलाया, उनका कैसा बुरा हाल हुआ, याद रखो नबियों का काम सिर्फ़ पैग़ामे इलाही पहुँचा देना है। हिदायत अदमे हिदायत अल्लाह तआला के हाथ है। अपने आपको सआदतमंदों में बनाओ बदबख़्तों में शामिल न करो। हज़रत क़तादा (रह.) तो फ़र्माते हैं इसमें हुज़ूर (ﷺ) की मज़ीद तशफ़्फ़ी की गई है। इस मतलब का तक़ाज़ा तो यह है कि पहला कलाम तो ख़त्म हुआ और यहाँ से लेकर (فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ) (29/अन्कबूत : 24) तक यह सब इबारत बतौर जुम्ला मुअतर्ज़ा के है। इब्ने जरीर (रह.) ने तो खुले लफ़्ज़ो में यही कहा है। लेकिन अल्फ़ाज़े क़ुरआन से तो बज़ाहिर मालूम होता है कि यह सब कलाम हज़रत ख़लीलुर्रहमान (अ.) का है आप क़ियामत के क़ायम होने की दलीलें पेश कर रहे हैं क्योंकि इस तमाम कलाम के बाद आपकी क़ौम का जवाब ज़िक्र हुआ है।

***

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑲ قُلْ سِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ⑳ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ㉑ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي
الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ㉒ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِنْ رَحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ㉓

तर्जुमा : "क्या इन्होंने नहीं देखा कि मख़्लूक़ की इब्तिदा की कैफ़ियत अल्लाह ने की फिर अल्लाह इसका एआदा करेगा। यह तो अल्लाह तआला पर बहुत ही आसान है। (19) कह दे कि ज़मीन में चल फिरकर देखो तो सही कि किस तरह अल्लाह तआला ने शुरु पैदाइश की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी बार पैदा करेगा। अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (20) जिसे चाहे अज़ाब दे जिस पर चाहे रहम करे। सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (21) तुम न तो ज़मीन में अल्लाह तआला को आजिज़ कर सकते हो, न आसमान में, न अल्लाह तआला के सिवा तुम्हारा कोई वाली है न मददगार। (22) जो लोग अल्लाह तआला की आयतों और उसकी मुलाक़ात को भुलाते हैं वह मेरी रहमत से नाउम्मीद हो जाएँ और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब हैं।" (23)

अदम से वुजूद बख़्शने वाला ही इबादत के लायक़ है (आ. 19 से 23) : देखते हैं कि वह कुछ न थे फिर अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा किया लेकिन ताहम मरकर जीने के क़ाइल नहीं हालाँकि इस पर किसी दलील की ज़रूरत नहीं जो शुरुआत में पैदा कर सकता है उस पर दोबारा ज़िन्दा करना बहुत ही आसान है। फिर इन्हें हिदायत करते हैं कि तुम ज़मीन की और निशानियों पर ग़ौर करो। आसमानों को, सितारों को, ज़मीनों को, पहाड़ों को, दरख़्तों को, जंगलों को, नहरों को, दरियाओं को, समुन्द्रों को, फलों को, खेतियों को देखो तो सही कि यह सब कुछ न था फिर अल्लाह तआला ने सब कुछ कर दिया क्या ये तमाम निशानियाँ अल्लाह तआला की कुदरत को तुम पर ज़ाहिर नहीं करतीं? तुम नहीं देखते कि इतना बड़ा सानेअ व क़दीर अल्लाह क्या कुछ नहीं कर सकता? वह तो सिर्फ़ हो जा के कहने से तमाम को रचा देता है। वह ख़ुद मुख़्तार है उसे अस्बाब और सामान की ज़रूरत नहीं। इसी मज़्मून को और जगह फ़र्माया कि वही नई पैदाइश में पैदा करता है वही दोबारा पैदा करेगा और यह तो उस पर बहुत आसान है। फिर फ़र्माया ज़मीन में चल फिरकर देखो, अल्लाह तआला ने शुरुआती पैदाइश किस तरह की तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि क़ियामत के दिन की दूसरी पैदाइश की क्या कैफ़ियत होगी, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। जैसे फ़र्माया हम इन्हें दुनिया के हर हिस्से में और ख़ुद उनकी अपनी जानों में अपनी निशानियाँ इस क़द्र दिखाएँगे कि इन पर हक़ ज़ाहिर हो जाए। और जैसे इर्शाद है (اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ) (52/तूर : 35) क्या वह बग़ैर किसी चीज़ के पैदा किये गए या वही अपने ख़ालिक़ हैं कुछ नहीं बेयक़ीन लोग हैं। यह अल्लाह तआला की शान है कि जिसे चाहे अज़ाब करे और जिस पर चाहे रहम करे, वह हाकिम है क़ब्ज़े वाला है जो चाहता है जो इरादा करता है जारी कर देता है कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता, कोई उसके इरादे को बदल नहीं सकता, कोई उसके सामने चूँ चरा नहीं कर सकता और कोई उससे सवाल नहीं कर सकता और वह सब पर ग़ालिब है जिससे चाहे पूछ बैठे सब उसके क़ब्ज़े में है उसकी मातहती में हैं ख़ल्क़ का ख़ालिक़, अम्र का मालिक वही है। उसने जो कुछ किया, सरासर अदल है इसलिए कि वही मालिक है, वह जुल्म से पाक है। हदीस शरीफ़ में है अगर अल्लाह तआला सातों आसमानों वालों और सातों ज़मीन वालों को अज़ाब करे तब भी वह ज़ालिम नहीं। (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल क़द्रि : 4699; व सनदुहू सहीहुन; इब्ने माजा : 77; अहमद : 5/182; बैहक़ी :

10/204; इब्ने हिब्बान : 727) अज़ाब व रहम सब उसकी चीज़ें हैं। सबके सब क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ लौटाई जाएँगी उसी के सामने हाज़िर होकर पेश होंगे। ज़मीन वालों में से और आसमान वालों में से कोई उसे हरा नहीं सकता। बल्कि सब पर वही ग़ालिब है। हर एक उससे काँप रहा है सब उसके चौखट के फ़क़ीर हैं और वह सबसे ग़नी है। तुम्हारा कोई वली और मददगार उसके सिवा नहीं, अल्लाह तआला की आयतों से कुफ़्र करने वाले उसकी मुलाक़ात को न मानने वाले अल्लाह तआला की रहमत से महरूम हैं और उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अलम अफ़्ज़ा (दुख देने वाला) अज़ाब हैं।

***

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

तर्जुमा : ''आपकी क़ौम का जवाब सिवाय इसके आपके सामने कुछ न था कि कहने लगे कि, इसे मार डालो या इसे जला दो। आख़िरकार अल्लाह तआला ने उन्हें आग से बचा लिया। इसमें ईमान वाले लोगों के लिए तो बहुत सी निशानियाँ हैं। (24) (हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने) कहा कि तुमने जिन बुतों की पूजा अल्लाह के सिवा की है उन्हें तुमने अपनी आपस की दुनियावी दोस्ती की बिना पर ठहरा लिया है, तुम सब क़ियामत के दिन एक दूसरे से कुफ़्र करने लगोगे और एक दूसरे पर ला'नत करने लगोगे और तुम्हारा सबका ठिकाना दोज़ख़ होगा और तुम्हारा कोई मददगार न होगा।'' (25)

आतिशे नमरूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) (आ. 24, 25) : हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का यह अक़्ली और नक़्ली दलाइल का वअज़ भी उन लोगों के दिलों पर असर न कर सका और उन्होंने यहाँ भी अपनी उसी शक़ावत का मुज़ाहिरा किया। जवाब तो इन दलीलों का दे नहीं सकते थे लिहाज़ा अपनी कुव्वत से हक़ को दबाने लगे और अपनी ताक़त से सच को रोकने लगे, कहने लगे एक गढ़ा खोदो उसमें आग भड़काओ और उस आग में उसे डाल दो कि जल जाए। लेकिन अल्लाह तआला ने उनके उस मकर को उन ही पर लौटा दिया। मुद्दतों तक लकड़ियाँ जमा करते रहे और एक गढ़ा खोदकर उसके आसपास एहाते की दीवारें खड़ी करके लकड़ियों में आग लगा दी जब उसके शोले आसमान तक पहुँचने लगे और इतनी ज़ोर की आग रोशन हो गई कि ज़मीन पर कहीं इतनी आग नहीं देखी गई तो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को कपड़ा बाँधकर मिंजनीक़ में

डालकर झुलाकर उस आग में डाल दिया, लेकिन अल्लाह तआला ने उसे अपने ख़लील पर बाग़ो बहार बना दिया, आप कई दिन के बाद सही सालिम उसमें से निकल आये। यह और उस जैसी और कुर्बानियाँ थीं जिनकी वजह से आपको इमामत का मंसब मिला। अपना नफ़्स आपने रहमान के लिए अपना जिस्म आपने मीज़ान के लिए, अपनी औलाद आपने कुर्बानी के लिए, अपना माल आपने फ़ैज़ान के लिए कर दिया। यही वजह है कि दुनिया के कुल अदयान वाले आपसे मुहब्बत रखते हैं। अल्लाह तआला ने आग को आपके लिए बाग़ बना दिया, इस वाक़िया में ईमान वालों के लिए क़ुदरते इलाही की बहुत सी निशानियाँ हैं। आपने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि जिन बुतों को तुमने मअबूद बना रखा है यह तुम्हारा ऐका और इत्तिफ़ाक़ दुनिया तक ही है (मवद्दत) ज़बर के साथ मफ़ऊल लहू है। एक क़िरअत में पेश के साथ भी है यानी तुम्हारी यह बुतपरस्ती तुम्हारे लिए भले दुनिया की मुहब्बत हासिल करा दे लेकिन क़ियामत के दिन मामला बरअक्स हो जाएगा, मवद्दत की जगह नफ़रत और इत्तिफ़ाक़ के बदले इख़्तिलाफ़ हो जाएगा। एक दूसरे से झगड़ोगे, एक दूसरे पर इल्ज़ाम रखोगे, एक दूसरे पर लानत करोगे। हर गिरोह दूसरे गिरोह पर फिटकार बरसाएगा। सब दोस्त दुश्मन बन जाएँगे हाँ! परहेज़गार नेककार आज भी एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह और दोस्त रहेंगे। कुफ़्फ़ार सबके सब मैदाने क़ियामत के दिन ठोकरें खा खाकर बिल आख़िर जहन्नम में जाएँगे। कोई इतना भी न होगा कि उनकी किसी तरह की मदद कर सके। "हदीस में है कि तमाम अगले पिछलों को अल्लाह तआला एक मैदान में जमा करेगा।" कौन जान सकता है कि दोनों सिम्त में से किस तरफ़? हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) ने जो हज़रत अली (रज़ि.) की हमशीरा हैं जवाब दिया कि अल्लाह तआला और उसका रसूल ही ज़्यादा इल्म वाला है। फिर एक मुनादी अर्श के नीचे से आवाज़ देगा कि ऐ मुवह्हिदो! तो तौहीद वाले अपना सिर उठायेंगे, फिर यही आवाज़ लगायेगा फिर तीसरी बार यही पुकारेगा और कहेगा अल्लाह तआला ने तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर दिया है। अब लोग खड़े होंगे और आपस की नाचाक़ियों और लेन देन का मुतालबा करने लगेंगे तो अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू की तरफ़ से आवाज़ दी जाएगी कि ऐ अहले तौहीद! तुम तो आपस में एक दूसरे को माफ़ कर दो तुम्हें अल्लाह तआला बदला देगा।" (मज्मउज़्ज़वाइद : 10/358; व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

***

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّیْ مُهَاجِرٌ اِلٰی رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ﴿۲۶﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْکِتٰبَ وَاٰتَیْنٰهُ اَجْرَهٗ فِی الدُّنْیَا ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۲۷﴾

तर्जुमा : "हज़रत लूत (عليه السلام) हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) पर ईमान लाये और कहने लगे कि मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करने वाला हूँ। वह बड़ा ही ग़ालिब और हकीम है। (26) हमने

इब्राहीम (ﷺ) को इस्हाक़ और यअक़ूब (ﷺ) अ़ता किये और हमने नबुव्वत और किताब उनकी औलाद में कर दी और हमने दुनिया में भी उसे सवाब दिया और आख़िरत में तो वह सालेह लोगों में से है।" (27)

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) और हज़रत लूत़ (ﷺ) (आ. 26, 27) : कहा जाता है कि हज़रत लूत़ (ﷺ) हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के भतीजे थे। लूत़ बिन हारून बिन आज़र। आपकी सारी क़ौम से एक तो हज़रत लूत़ (ﷺ) ईमान लाये थे और एक हज़रत सारा (ﷺ) जो आपकी बीवी थीं। एक रिवायत में है कि जब आपकी बीवी साहिबा को उस ज़ालिम बादशाह ने अपने सिपाहियों के ज़रिये अपने पास बुलवाया तो हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने कहा था कि देखो! मैंने अपना रिश्ता तुमसे भाई बहन का बतलाया है तुम भी यही कहना क्योंकि इस वक़्त दुनिया पर मेरे और तुम्हारे सिवा कोई मोमिन नहीं है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब (वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीमा ख़लीला) : 3358; सह़ीह़ मुस्लिम : 2371) तो मुम्किन है कि इससे मुराद यह हो कि कोई मियाँ बीवी हमारे सिवा ईमान वाले नहीं। हज़रत लूत़ (ﷺ) आप पर ईमान तो लाये थे मगर उसी वक़्त हिज्रत करके शाम चले गए थे, फिर अहले सदूम की त़रफ़ नबी बनाकर भेज दिये गए थे, जैसाकि बयान गुज़रा और आएगा। हिज्रत का इरादा या तो हज़रत लूत़ (ﷺ) ने ज़ाहिर किया क्योंकि ज़मीर का सेग़ा अक़रब तो यही हैं या हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने जैसे कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और ज़ह्ह़ाक (रह़.) का बयान है। तो गोया हज़रत लूत़ (ﷺ) के ईमान लाने के बाद आपने अपनी क़ौम से दस्तबरदारी कर ली और अपना इरादा ज़ाहिर किया कि और किसी जगह जाऊँ, शायद वहाँ वाले अल्लाह वाले बन जाएँ। इ़ज़्ज़त अल्लाह तआ़ला की उसके रसूल और मोमिनों की है। ह़िक्मत वाले क़ौल व फ़ेअ़ल तक़्दीरे शरीअ़त अल्लाह की है। क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं कि "आप कूफ़े से हिज्रत करके शाम के मुल्क की त़रफ़ गए।"

ह़दीस में है कि "हिज्रत के बाद की हिज्रत हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की हिज्रतगाह की त़रफ़ होगी। उस वक़्त ज़मीन पर बदतरीन लोग बाक़ी रह जाएँगे जिन्हें ज़मीन थूक देगी और अल्लाह तआ़ला उनसे नफ़रत करेगा और उन्हें आग सूअरों और बन्दरों के साथ हाँकती फिरेगी। रातों को दिनों को उन ही के साथ रहेगी और उनकी झड़न खाती रहेगी।" (त़ब्री : 10/26) और रिवायत में है कि जो उनमें से पीछे रहेगा उसे यह आग खा जाएगी और मश्रिक़ की त़रफ़ से कुछ लोग मेरी उम्मत में ऐसे निकलेंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा, उनके एक जत्थे के ख़ात्मे के बाद दूसरा गिरोह खड़ा होगा, यहाँ तक कि आपने बीस से भी ज़्यादा बार उसे दोहराया। यहाँ तक कि उन ही के आख़िरी गिरोह में दज्जाल निकलेगा। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी सुकनिश्शाम : 2482; मुख़्तसरन वहुव ह़सन; अह़मद : 2/198, 199) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) का बयान है कि "एक ज़माना तो हम पर वह था कि हम एक मुसलमान भाई के लिए दिरहम व दीनार को कोई चीज़ नहीं समझते थे अपनी दौलत अपने भाई की ही समझते थे फिर वह ज़माना आया कि दौलत हमें अपने मुस्लिम भाई से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ मालूम होने लगी। मैंने हुज़ूर (ﷺ) से सुना है कि अगर तुम बैलों की दुमों के पीछे लग जाओगे और तिजारत में मशग़ूल हो जाओगे और अल्लाह तआ़ला की राह का जिहाद छोड़ दोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी गर्दनों में ज़िल्लत के पट्टे डाल देगा जो उस वक़्त तक तुमसे

अलग न होंगे जब तक कि तुम फिर से वहीं न आ जाओ जहाँ पहले थे और तू तौबा न कर लो।'' फिर वही हदीस बयान की जो ऊपर गुज़री और फ़र्माया कि ''मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे और बुरे आमाल करेंगे, क़ुरआन उनके हुल्क़ूम से नीचे नहीं उतरेगा। उनके इल्म को देखकर तुम अपने इल्मों को हक़ीर समझने लगोगे। वह इस्लाम के मानने वालों को क़त्ल करेंगे पस जब यह लोग ज़ाहिर हो जाएँ तुम उन्हें क़त्ल कर देना फिर निकलें फिर मार डालना, फिर ज़ाहिर हों फिर क़त्ल कर देना। वह भी ख़ुशनसीब है जो उन्हें क़त्ल करे और वह भी ख़ुशनसीब हैं जो उनके हाथों क़त्ल किया जाए जब उनके गिरोह निकलेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें बर्बाद कर देगा, फिर निकलेंगे फिर बर्बाद हो जाएँगे, इसी तरह हुज़ूर (ﷺ) ने कोई बीस मर्तबा बल्कि उससे भी ज़्यादा बार यही फ़र्माया।'' (अहमद : 2/84; ह : 5562; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू जनाब यह्या बिन अबी हुय्य ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है।) हमने इब्राहीम (عليه السلام) को इस्हाक़ नामी बेटा दिया और इस्हाक़ (عليه السلام) को याक़ूब (عليه السلام) दिया और हर एक को नबी बनाया। इसमें यह भी इशारा है कि पोता भी आपकी मौजूदगी में हो जाएगा। इस्हाक़ बेटे थे और याक़ूब (عليه السلام) पोते थे। और आयत में है कि हमने हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की बीवी साहिबा को इस्हाक़ (عليه السلام) की और इस्हाक़ (अ) के पीछे याक़ूब (عليه السلام) की बशारत दी और फ़र्माया कि क़ौम को छोड़ने के बदले अल्लाह तआला तुम्हारे घर की बस्ती यह देगा जिससे तुम्हारी आँखें ठण्डी रहें। पस साबित हुआ कि हज़रत याक़ूब (अ.) हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) के बेटे थे। यही सुन्नत से भी साबित है। क़ुरआन की और आयत में है क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब हज़रत याक़ूब (عليه السلام) की मौत का वक़्त आया तो वह अपने लड़कों से कहने लगे, तुम मेरे बाद किसकी इबादत करोगे? उन्होंने कहा आपके और आपके वालिद इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ (عليه السلام) के अल्लाह की जो यक्ता और वाहिद व ला शरीक है।'' बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि ''करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (عليه السلام) हैं।''(सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब (अम कुन्तुम शुहदाअ इज़ हज़रा याक़ूबल मौत) : 3382)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से जो मरवी है कि इस्हाक़ व याक़ूब (عليه السلام) हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के फ़रज़न्द थे इससे मुराद फ़रज़न्द के फ़रज़न्द को फ़रज़न्द कह देना है, यह नहीं कि सुल्बी फ़रज़न्द दोनों थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) तो कहाँ अदना आदमी भी ऐसी ठोकर नहीं खा सकता। हमने उन ही की औलाद में किताब व नबुव्वत रख दी। ख़लील का ख़िताब उन्हें मिला, इमाम उन्हें कहा गया, फिर उनके बाद उन ही की नस्ल में नबुव्वत व हिक्मत रही। बनी इस्राईल के तमाम अम्बिया हज़रत याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (عليه السلام) की नस्ल से हैं। हज़रत ईसा (عليه السلام) तक तो यह सिलसिला यूँ ही चला। बनी इस्राईल के उस आख़िरी पैग़म्बर ने अपनी उम्मत को साफ़ कह दिया कि मैं तुम्हें नबी अरबी क़ुरैशी हाशमी ख़ातिमुर्रुसुल सय्यदे औलादे आदम की बशारत देता हूँ। जिन्हें अल्लाह तआला ने चुन लिया है। आप हज़रत इस्माईल (عليه السلام) की औलाद में से है आपके सिवा और नबी नहीं हुआ, अलैहि अफ़ज़लुस्सलातु वत्तस्लीम। हमने उन्हें दुनिया के सवाब भी दिये और आख़िरत की नेकियाँ भी अता कीं। दुनिया में रिज़्के वसीअ, जगह पाक, बीवी नेक, सीरत जमील और ज़िक्रे जमील दिया, सारी दुनिया के दिलों में आपकी मुहब्बत डाल दी। बावजूद यह कि अपनी इताअत की

तौफ़ीक़ रोज़ बरोज़ और ज़्यादा दी, कामिल इताअत गुज़ारी की तौफ़ीक़ के साथ दुनिया की भलाइयाँ भी अता कीं और आख़िरत में भी सालेहीन में रखा। जैसे फ़र्मान है इब्राहीम (عليه السلام) मुकम्मल फ़र्मांबरदार थे, मुवह्हिद थे, मुश्रिकों में से न थे, आख़िरत में भले लोगों का साथी हुए।

***

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : ''हज़रत लूत (عليه السلام) का भी बयान करो जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि तुम तो उस बदकारी पर उतर आये हो जिसे तुमसे पहले दुनिया भर में किसी ने न की। (28) क्या तुम मर्दों के पास आते हो और रास्ते बंद करते हो? और अपनी आम मज्लिसों में बेहयाइयों के काम करते हो? उसके जवाब में आपकी क़ौम ने सिवाय इसके और कुछ न कहा कि बस जा अगर सच्चा है तो हमारे पास रब तआला का अज़ाब ले आ। (29) हज़रत लूत (عليه السلام) ने दुआ की कि परवरदिगार! इस मुफ़्सिद क़ौम पर मेरी मदद फ़र्मा।'' (30)

क़ौमे लूत की मशहूर बदख़स्लती (आ. 28 से 30) : लूतियों की मशहूर बदख़स्लती से हज़रत लूत (عليه السلام) उन्हें रोकते हैं कि तुम जैसी ख़बासत तुमसे पहले तो कोई जानता ही न था, कुफ़्र, तक्ज़ीबे रसूल, अल्लाह के हुक्म की नाफ़र्मानी तो ख़ैर और भी करते रहे मगर मर्दों से ज़रूरतें पूरी करना तो किसी ने भी नहीं किया। दूसरी बद ख़स्लत उनमें यह थी कि रास्ते रोकते थे, डाके डालते थे, क़त्लो फ़साद किया करते थे, माल लूट लेते थे, मज्लिसों में अलल ऐलान बुरी बातें और लग़्व हरकतें करते थे, कोई किसी को नहीं रोकता था, यहाँ तक कि कुछ का क़ौल है कि वह लवातत भी अलल ऐलान करते थे।

गोया सोसायटी का एक मशग़ला यह भी था। हवाएँ निकालकर हँसते थे। (तब्री : 20/30) मेंढ़े लड़वाते, मुर्ग़ लड़वाते और बदतरीन बुराइयाँ करते थे और अलल ऐलान मज़े ले लेकर गुनाह करते थे।

''हदीस में है राह चलतों पर आवाज़कशी करते थे और कंकर पत्थर फैंकते रहते थे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अन्कबूत : 3190; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू सालेह बाज़ाम मौला उम्मे हानी ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है। अहमद : 6/241; हाकिम : 2/409) सीटियाँ बजाते थे,

कबूतरबाज़ी करते थे, नंगे हो जाते थे, कुफ़्र, दुश्मनी, सरकशी, ज़िद्द और हठधर्मी यहाँ तक बढ़ी हुई थी कि नबी के समझाने पर कहने लगे, जा जा बस नसीहत छोड़, जिन अज़ाबों से डरा रहा है उन्हें ले आ तो हम भी तेरी सच्चाई देखें।'' आजिज़ आकर लूत (عليه السلام) ने भी अल्लाह तआला के आगे हाथ फैला दिये कि ''ऐ अल्लाह! इन मुफ़्सिदों पर मुझे ग़ल्बा दे मेरी मदद कर।''

***

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ۗ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۗ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के पास बशारत लेकर पहुँचे कहने लगे कि इस बस्ती वालों को हम हलाक करने वाले हैं। यक़ीनन यहाँ के रहने वाले गुनहगार हैं। (31) (हज़रत इब्राहीम عليه السلام कहने लगे, उसमें तो लूत (عليه السلام) हैं। फ़रिश्तों ने कहा, यहाँ जो हैं हम उन्हें बख़ूबी जानते हैं, लूत (عليه السلام) को और उसके ख़ानदान को सिवाय उसकी बीवी के हम बचा लेंगे अल्बत्ता वह औरत पीछे रह जाने वालों में से है। (32) फिर जब हमारे क़ासिद लूत (عليه السلام) के पास पहुँचे तो वह उनकी वजह से ग़मगीन हुए और दिल ही दिल में रंज करने लगे। क़ासिदों ने कहा, आप न डरिये, न ग़मगीन होइए, हम आपको आपके पैरोकारों के साथ बचा लेंगे मगर आपकी बीवी कि वह अज़ाब के लिए बाक़ी रह जाने वालों में से होगी। (33) हम इस बस्ती वालों पर आसमानी अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं इस वजह से कि यह बेहुक्म हो रहे हैं। (34) अल्बत्ता हमने उस बस्ती को सरीह इब्रत की निशानी बना दिया उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।'' (35)

क़ौमे लूत की तबाही व बर्बादी (आ. 31 से 35) : हज़रत लूत (عليه السلام) की जब बात न मानी गई बल्कि सुनी भी न गयी तो आपने अल्लाह तआला से मदद तलब की जिस पर फ़रिश्ते भेजे गए। बशक्ले इंसानी यह

फ़रिश्ते पहले बतौर मेहमान के हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के घर आये। आपने ज़ियाफ़त का सामान तैयार किया और उनके सामने ला रखा। जब देखा कि उन्हें उसकी रग़बत नहीं तो दिल ही दिल में ख़ौफ़ज़दा हो गए तो फ़रिश्तों ने उनकी दिलजोई शुरू की और ख़बर दी कि एक नेक बच्चा उनके यहाँ पैदा होगा। हज़रत सारा (عليها السلام) जो वहाँ मौजूद थीं यह सुनकर ताज्जुब करने लगीं, जैसे कि सूरह हूद और सूरह हिज्र में मुफ़स्सल तफ़्सीर गुज़र चुकी है। अब फ़रिश्तों ने अपना असली इरादा ज़ाहिर किया जिसे सुनकर ख़लीलुर्रहमान (عليه السلام) को ख़्याल आया कि अगर वह लोग कुछ और ढ़ील दिये जाएँ तो क्या अजब कि राहे रास्त पर आ जाएँ इसलिए फ़र्माने लगे कि वहाँ तो लूत (عليه السلام) हैं। फ़रिश्तों ने जवाब दिया हम इनसे ग़ाफ़िल नहीं हैं। हमें हुक्म है कि उन्हें और उनके ख़ानदान को बचा लें। हाँ! उनकी बीवी तो बेशक हलाक होगी। क्योंकि वह अपनी क़ौम के कुफ़्र में उनका साथ देती रही हैं। यहाँ से रुख़सत होकर ख़ूबसूरत क़रीबुल बुलूग़ बच्चों की सूरतों में यह हज़रत लूत (عليه السلام) के पास पहुँचे। उन्हें देखते ही लूत नबी (عليه السلام) शश व पंज में पड़ गए कि अगर इन्हें अपने पास ठहराता हूँ तो उनकी ख़बर पाते ही कुफ़्फ़ार भिड़ भिड़ाकर आ जाएँगे और मुझे भी तंग करेंगे और उन्हें भी परेशान करेंगे। अगर नहीं ठहराते तो यह उन्हीं के हाथ पड़ जाएँगे। क़ौम की ख़स्लत से वाक़िफ़ थे इसलिए नाख़ुश और रंजीदा हो गए। लेकिन फ़रिश्तों ने उनकी यह घबराहट दूर कर दी कि आप घबराइये नहीं, रंजीदा न हो जैसे हम तो रब के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं इन्हें ग़ारत करने के लिए आये हैं। आप और आपका ख़ानदान सिवाय आपकी बीवी के तो बच जाएगा, बाक़ी उन सब पर आसमानी अज़ाब आएगा और उन्हें उनकी बदकारी का नतीजा दिखाया जाएगा। फिर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने उनकी बस्तियों को ज़मीन से उठाया और आसमान तक ले गए और वहाँ से उलट दीं, फिर उन पर उनके नाम के निशानदार पत्थर बरसाये गए और जिस अज़ाबे इलाही को वह दूर समझ रहे थे वह क़रीब ही निकल आया। उनकी बस्तियों की जगह एक कड़वे गंदे और बदबूदार पानी की झील रह गई। जो लोगों के लिए इब्रत हासिल करने का ज़रिया बने और अक़्लमंद लोग उस ज़ाहिरी निशानी को देखकर उनकी बुरी तरह की हलाकत को याद करके अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियों पर दिलेरी न करें। अरब के सफ़र में रात दिन यह मंज़र उनके पेशेनज़र थे।

***

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : "मदयन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब (عليه السلام) को भेजा, उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! अल्लाह तआला की इबादत करो क़ियामत के दिन की तवक़्क़ा रखो और ज़मीन में फ़साद न करते फिरो। (36) मगर उन्होंने झुठलाया आख़िरकार ज़लज़ले ने पकड़ लिया और वह अपने घरों में बैठे के बैठे मुर्दा होकर रह गये।" (37)

मदयन वालों का हाल (आ. 36, 37) : अल्लाह तआला के बन्दे और उसके सच्चे रसूल हज़रत शुऐब (ﷺ) ने मदयन में अपनी क़ौम को वअज़ किया। उन्हें अल्लाह वहदुहू ला शरीक लहू की इबादत का हुक्म दिया। उन्हें अल्लाह तआला के अज़ाबों से और उसकी सज़ाओं से डराया। उन्हें क़ियामत के होने का यक़ीन दिलाकर फ़र्माया कि उस दिन के लिए कुछ तैयारियाँ कर लो, उस दिन का ख़्याल रखो, लोगों पर ज़ुल्मो ज़्यादती न करो। अल्लाह की ज़मीन में फ़साद न करो, बुराइयों से अलग रहो, उनमें एक ऐब यह भी था कि नाप तोल में कमी करते थे, लोगों के हक़ मारते थे, डाके डालते थे, रास्ते बंद कर देते थे। साथ ही अल्लाह तआला और उसके रसूल से कुफ़्र करते थे, उन्होंने अपने पैग़म्बर की नसीहतों पर कान तक न धरा, बल्कि उन्हें झूठा कहा। इस बिना पर उन पर अज़ाबे इलाही बरस पड़ा, सख़्त भौचाल आया और साथ ही इतनी तेज़ो तुन्द आवाज़ आई कि दिल फट गए और रूहें परवाज़ हो गईं और घड़ी की घड़ी सबका ढेर हो गया। उनका पूरा क़िस्सा सूरह आराफ़ और सूरह शोअरा में गुज़र चुका है।

***

وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۗ وَلَقَدْ
جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا
بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "हमने आदियों और समूदियों को भी ग़ारत किया जिनके कुछ मकानात तुम्हारे सामने ज़ाहिर हैं। शैतान ने उन्हें उनके बुरे आमाल अच्छे कर दिखाये थे और उन्हें राह से रोक दिया था बावजूद इसके कि आँखों वाले और होशियार थे (38) और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को भी। उनके पास हज़रत मूसा (ﷺ) खुले खुले मोजिज़े लेकर आये थे फिर भी उन्होंने ज़मीन में तकब्बुर किया लेकिन हमसे आगे बढ़ने वाले न हो सके। (39) फिर तो हर एक को हमने उसके गुनाह के वबाल में गिरफ़्तार कर लिया। उनमें से कुछ पर हमने पत्थरों की बारिश

बरसायी और उनमें से कुछ को ज़ोरदार सख़्त आवाज़ ने दबोच लिया और उनमें से कुछ को हमने ज़मीन में धंसा दिया और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया, अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करे बल्कि यही लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म किया करते हैं।'' (40)

आदी और समूदी भी फ़ना के घाट में (आ. 38 से 40) : आदी हज़रत हूद (عليه السلام) की क़ौम के थे, अह्क़ाफ़ में रहते थे जो यमन के शहरों में हज़रमौत के क़रीब है। समूदी हज़रत सालेह (عليه السلام) की क़ौम के लोग थे, यह हिज्र में बसते थे जो वादिये क़ुरा के क़रीब है, अहले अरब के रास्ते में उनकी बस्ती आती थी, जिसे यह बख़ूबी जानते थे। क़ारून एक दौलतमंद शख़्स था जिसके भरपूर ख़ज़ानों की चाबियाँ एक जमाअत की जमाअत उठाती थी। फ़िरऔन मिस्र का बादशाह था और हामान उसका वज़ीरे आज़म था। उसी के ज़माने में हज़रत मूसा (عليه السلام) कलीमुल्लाह नबी होकर उस तरफ़ गए थे। यह दोनों क़िब्ती काफ़िर थे। जब उनकी सरकशी हद से गुज़र गयी अल्लाह तआला की तौहीद के मुंकिर हो गए रसूलों को ईज़ाएँ दीं और उनकी न मानी तो अल्लाह तआला ने उन सबको तरह तरह के अज़ाबों से हलाक किया। आदियों पर हवाएँ भेजीं, उन्हें अपनी क़ुव्वत व ताक़त का बड़ा घमण्ड था, किसी को अपने मुक़ाबले का न जानते थे, उन पर हवा भेजी जो बड़ी तेज़ व तुन्द थी, जो उन पर ज़मीन के पत्थर उड़ा उड़ाकर बरसाने लगी आख़िरकार ज़ोर पकड़ते पकड़ते यहाँ तक बढ़ गई कि उन्हें उचक ले जाती और आसमान के क़रीब ले जाकर फिर गिरा देती। सिर के बल गिरते और सिर अलग हो जाता और ऐसे हो जाते जैसे खजूर के दरख़्त जिनके तने अलग हों और शाख़ें जुदा हों। समूदियों पर हुज्जते इलाही पूरी हुई, दलाइल दिये गए उनकी तलब के मुवाफ़िक़ पत्थर में से उनके देखते हुए ऊँटनी निकली लेकिन तब भी उन्हें ईमान नसीब न हुआ, बल्कि तुग़यानी में बढ़ते रहे। अल्लाह तआला के नबी हज़रत सालेह (عليه السلام) को धमकाने और डराने लगे और ईमान वालों से भी कहने लगे कि हमारे शहर छोड़ दो, वरना हम तुम्हें पत्थरों से हलाक कर देंगे। उन्हें एक चीख़ ने पारा पारा कर दिया। दिल दहल गए, कलेजे फट गए और सबकी रूहें निकल गईं। क़ारून ने सरकशी और तकब्बुर किया, तुग़यानी और बड़ाई की रब्बे आला की नाफ़र्मानी की, ज़मीन में फ़साद मचा दिया अकड़ अकड़कर चलने लगा अपने डन्टर बल देखने लगा, इतराने लगा और फूलने लगा। बस अल्लाह तआला ने उसे उसके आलीशान महलों के साथ ज़मीन में धंसा दिया गया जो आज तक धंसता चला जा रहा है। फ़िरऔन, हामान, और उनके लश्करों को सुबह ही सुबह एक ही पल में दरिया में डुबो दिया। उनमें से एक भी न बचा जो उनका नाम तो कभी लेता। अल्लाह तआला ने यह जो कुछ किया कुछ उन पर ज़ुल्म न था बल्कि उनके ज़ुल्म का बदला था, उनके करतूत का फल था, उनकी करनी की भरनी थी, यह बयान यहाँ बतौर लफ़ व नश्र के है अव्वलन झूठलाने वाली उम्मतों का ज़िक्र हुआ। फिर उनमें से हर एक को अज़ाबों से हलाक करने का। किसी ने कहा है कि सबसे पहले जिन पर पत्थरों की बारिश होने का ज़िक्र है उनसे मुराद लूती हैं और ग़र्क़ की जाने वाली क़ौम क़ौमे नूह है लेकिन यह क़ौल ठीक नहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह मरवी तो है लेकिन सनद में इन्क़िताअ है। इन दोनों क़ौमों की हलाकत का ज़िक्र इसी सूरत में तफ़्सील के साथ बयान हो चुका है। फिर बहुत से फ़ासले के बाद यह बयान हुआ है। क़तादा (रह.) से यह भी मरवी है कि ''पत्थरों की बारिश जिन पर बरसायी गयी उनसे मुराद लूती हैं और जिन्हें चीख़ से हलाक किया गया उनसे मुराद क़ौमे शुऐब है'' लेकिन यह क़ौल भी इन आयतों से दूर दराज़ है, वल्लाहु आलम!

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۭ وَاِنَّ
اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا
يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

तर्जुमा : ''जिन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवा और कारसाज़ मुक़र्रर किये थे उनकी मिसाल मकड़ी की सी है कि वह भी एक घर बना लेती है। हालाँकि तमाम घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर मकड़ी का घर है। काश कि वह जान लेते। (41) अल्लाह तआला उन तमाम चीज़ों को जानता है जिन्हें वह उसके सिवा पुकार रहे हैं। वह ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है। (42) हम इन मिसालों को लोगों के लिए बयान कर रहे हैं, इन्हें सिर्फ़ इल्म वाले ही जानते हैं।'' (43)

शिर्क की हक़ीक़त पर एक उम्दा मिसाल (आ. 41 से 43) : जो लोग अल्लाह रब्बुल आलमीन के साथ शरीक ठहराते हैं औरों की पूजा पाठ करते हैं उनकी कमज़ोरी और बेइल्मी का बयान हो रहा है यह उनसे मदद रोज़ी और सख़्ती में काम आने के उम्मीदवार रहते हैं। इनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई मकड़ी के जाले में बारिश और धूप और सर्दी से पनाह चाहे। अगर उनमें इल्म होता तो यह ख़ालिक़ को छोड़कर मख़्लूक़ से उम्मीदें न जोड़ते। पस उनका हाल ईमान वालों के हाल से बिलकुल जुदा है। वह एक मज़बूत कड़े को थामे हुए हैं और यह मकड़ी के जाले में अपना सिर छुपाये हुए हैं। इसका दिल अल्लाह तआला की तरफ़, इसका जिस्म आमाले सालेहा की तरफ़ मशग़ूल है और उसका दिल मख़्लूक़ की तरफ़ और जिस्म उसकी पूजा की तरफ़ झुका हुआ है। फिर अल्लाह तआला मुश्रिकों को डरा रहा है कि वह उनसे उनके शिर्क से और उनके झूठे मअबूदों से ख़ूब आगाह है। उन्हें उनकी शरारत का वह मज़ा चखाएगा कि यह याद करें। उन्हें ढ़ील देने में भी उसकी मस्लिहत व हिक्मत है। न यह कि वह अलीम अल्लाह तआला उनसे बेख़बर हो। हमने तो मिसालों से भी मसाइल समझा दिये लेकिन उनके सोचने समझने का माद्दा उनमें ग़ौरो फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ सिर्फ़ बाअमल उलमा को होती है जो अपने इल्म में पूरे हैं इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला की बयाकर्दा मिसालों को समझ लेना सच्चे इल्म की दलील है। हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मैंने एक हज़ार मिसालें रसूलुल्लाह (ﷺ) से सीखी समझी हैं।'' (अहमद : 4/203; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ मुदल्लस है और यह भी मालूम नहीं कि यह रिवायत इख़्तिलात से पहले की है या बाद की। मज्मउज़्ज़वाइद : 8/264) इससे आपकी फ़ज़ीलत और आपकी इल्मियत ज़ाहिर है। हज़रत अम्र बिन मुर्रा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''कलामुल्लाह की जो आयत मेरी तिलावत में आये और उसका तफ़सीली मअनी मतलब मेरी समझ में न आये तो मेरा दिल दुखता है मुझे सख़्त तक्लीफ़ होती है और मैं डरने लगता हूँ कि कहीं अल्लाह तआला के नज़दीक मेरी गिनती जाहिलों में तो नहीं हो गई क्योंकि फ़र्माने इलाही यही है कि हम इन मिसालों को लोगों के सामने पेश कर रहे हैं लेकिन सिवाय आलिमों के इन्हें दूसरे समझ नहीं सकते।''

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला ने आसमानों को और ज़मीन को मस्लिहत और हक़ के साथ पैदा किया है। ईमान वालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी दलील है।'' (44)

ख़ालिक़े हक़ीक़ी का ज़िक्र (आ. 44) : अल्लाह तआला की बहुत बड़ी क़ुदरत का बयान हो रहा है कि वही आसमानों का और ज़मीनों का ख़ालिक़ है। उसने इन्हें खेल तमाशे के तौर पर या लग्व व बेकार नहीं बनाया बल्कि इसलिए कि यहाँ लोगों को बसाये फिर उनकी नेकियाँ बदियाँ देखे और क़ियामत के दिन उनके आमाल के मुताबिक़ उन्हें जज़ा सज़ा दे। बुरों को उनके बुरे अमलों पर सज़ा और नेकों को उनकी नेकियों पर बेहतरीन बदला।

अल्हम्दु लिल्लाह! बीसवें पारे की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

तर्जुमा : ''जो किताब तेरी तरफ़ वही की गई है उसे पढ़ता रह और नमाज़ का पाबंद रह। यक़ीनन नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है। बेशक ज़िक्रे बारी तआला बहुत बड़ी चीज़ है। तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह तआला ख़बरदार है।'' (45)

नमाज़ बेहयाई से रोकती है (आ. 45) : अल्लाह तबारक व तआला अपने रसूल को और ईमान वालों को हुक्म दे रहा है कि वह क़ुरआने करीम की तिलावत करते रहें और उसे औरों को भी सुनाएँ और नमाज़ों को निगहबानी और पाबन्दी के साथ पढ़ते रहा करें। नमाज़ इंसान को नाशाइस्ता कामों से और नालायक़ हरकतों से दूर रखती है। नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान है कि ''जिस नमाज़ी की नमाज़ ने उसे गुनाहों और स्याहकारियों से दूर न रखा वह अल्लाह तआला से बहुत दूर हो जाता है।'' इब्ने अबी हातिम में है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस आयत की तफ़्सीर पूछी गई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''जिसे उसकी नमाज़ बेजा और फ़ोहश कामों से न रोके तो समझ लो कि उसकी नमाज़ अल्लाह तआला के यहाँ मक़्बूल नहीं हुई।'' (सनद ज़ईफ़ है।) और रिवायत में है कि वह अल्लाह तआला से दूर ही होता चला जाएगा। (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/279; सनद ज़ईफ़ है, मज्मउज़्ज़वाइद : 1/134; इसकी सनद में लैस बिन अबी सुलैम मुख़्तलत रावी है (अत्तक़्रीब : 2/138) एक मौक़ूफ़ रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''जो नमाज़ी भले कामों वाला

और बुरे कामों से बचने वाला न हो, समझ लो कि उसकी नमाज़ उसे अल्लाह तआला से और दूर करती जा रही है।'' रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो नमाज़ की बात न माने उसकी नमाज़ नहीं। नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है, उसकी इताअत यह है कि उन वाही कामों से नमाज़ी रुक जाए।'' हज़रत शुऐब (عليه السلام) से जब उनकी क़ौम ने कहा कि ऐ शुऐब (عليه السلام)! क्या तुम्हें तुम्हारी नमाज़ हुक्म करती है? तो हज़रत सुफ़्यान (रह.) ने इसकी तफ़्सीर में कहा कि ''हाँ! अल्लाह तआला की क़सम! नमाज़ हुक्म भी करती है और मना भी करती है।'' हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से किसी ने कहा फ़लाँ शख़्स बड़ी लम्बी नमाज़ पढ़ता है। आपने फ़र्माया, ''नमाज़ उसे नफ़ा देती है जो उसका कहा माने।'' मेरी तहक़ीक़ में ऊपर जो मरफ़ूअ रिवायत बयान हुई उसका भी मौक़ूफ़ होना ही ज़्यादा सहीह है, वल्लाहु आलम! बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से किसी ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! फ़लाँ शख़्स नमाज़ पढ़ता है लेकिन चोरी नहीं छोड़ता, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अन्क़रीब उसकी नमाज़ उसकी यह बुराई छुड़ा देगी।'' (अहमद : 2/447; ह : 9778; व सनदुहू सहीहुन; अअमश सरह बिस्सिमाअ, मज्मउज़्ज़वाइद : 2/258) चूँकि नमाज़ ज़िक्रुल्लाह का नाम है इसीलिए उसके बाद ही फ़र्माया, ''यादे इलाही बड़ी चीज़ है। अल्लाह तआला तुम्हारी तमाम बातों से और तुम्हारे कुल कामों से बाख़बर है।'' हज़रत अबुल आलिया (रह.) फ़र्माते हैं ''नमाज़ में तीन चीज़ें हैं अगर यह न हों तो नमाज़, नमाज़ नहीं, (1) इख़्लास व ख़ुलूस (2) ख़ौफ़े इलाही और (3) ज़िक्रुल्लाह। इख़्लास से तो इंसान नेक हो जाता है और ख़ौफ़े इलाही से इंसान गुनाहों को छोड़ देता है और ज़िक्रुल्लाह यानी कुरआन उसे भलाई, बुराई बता देता है, वह हुक्म भी करता है और मना भी करता है।'' इब्ने औन अंसारी (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब तू नमाज़ में हो तो नेकी में है और नमाज़ तुझे फ़ोहश और मुंकर से बचाये हुए है और उसमें जो कुछ तू ज़िक्रुल्लाह कर रहा है वह तेरे लिए बड़े ही फ़ायदे की चीज़ है।'' हम्माद (रह.) का क़ौल है कि ''कम से कम हालते नमाज़ में तो तू बुराइयों से बचा रहेगा।'' एक रावी से इब्ने अब्बास (रज़ि.) का यह क़ौल मरवी है कि ''जो बन्दा यादे-इलाही करता है, अल्लाह तआला भी उसे याद करता है।''उसने कहा, हमारे यहाँ जो साहब हैं वह तो कहते हैं कि मतलब इसका यह है कि जब अल्लाह तआला का ज़िक्र करोगे तो वह तुम्हारी याद करेगा और यह बहुत बड़ी चीज़ है अल्लाह तआला का फ़र्मान है (فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ) (2/बक़रह : 152) ''तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूँगा।'' इसे सुनकर आपने फ़र्माया, उसने सच कहा यानी दोनों मतलब दुरुस्त हैं, यह भी और वह भी। और ख़ुद हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी यह तफ़्सीर मरवी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रबीआ (रह.) से एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने पूछा कि इस जुम्ले का मतलब जानते हो? उन्होंने कहा, हाँ! इससे मुराद नमाज़ में सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर वग़ैरह कहना है। आपने फ़र्माया ''तूने अजीब बात कही, यह यूँ नहीं है बल्कि मक़्सद यह है कि हुक्म के और मना के वक़्त अल्लाह तआला का तुम्हें याद करना तुम्हारे ज़िक्रुल्लाह से बहुत बड़ा और बहुत अहम है।'' (हाकिम : 2/409; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबुद्दर्दा, हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) वग़ैरह से भी यही मरवी है और इसी को इमाम इब्ने जरीर (रह.) पसंद करते हैं।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "अहले किताब के साथ बहुत मुहज़्ज़ब तरीक़े से मुनाज़िरा करो मगर उनके साथ जो उनमें से बेइंसाफ़ हैं और साफ़ ऐलान कर दिया करो कि हमारा तो इस किताब पर भी ईमान है जो हम पर उतारी गई है और उस पर भी जो तुम पर नाज़िल की गई है, हमारा तुम्हारा मअबूद एक ही है हम सब उसी के हुक्म बरदार हैं।" (46)

अहले किताब से मुनाज़िरे के उसूल (आ. 46) : हज़रत क़तादा (रह.) वग़ैरह तो फ़र्माते हैं कि "यह आयत जिहाद के हुक्म की आयत के साथ मंसूख़ है अब तो यही है कि या तो इस्लाम क़बूल करें या जिज़्या अदा करें या लड़ाई करें।" लेकिन और बुज़ुर्ग मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यह हुक्म बाक़ी है। जो यहूदी या ईसाई दीनी उमूर को समझना चाहे, उसे मुहज़्ज़ब तरीक़े पर सुलझे हुए पैराये से समझा देना चाहिए। क्या अजब कि वह राहे रास्त पर आ जाएँ। जैसे और आयत में आम हुक्म मौजूद है (اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ) (16/नहल : 125) "अपने रब तआला की राह की दावत, हिक्मत और बेहतरीन नसीहत के साथ लोगों को दो।" हज़रत मूसा और हज़रत हारून (عليهما السلام) को जब फ़िरऔन की तरफ़ भेजा जाता है तो फ़र्मान होता है कि (فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾) (20/ताहा : 44) यानी "उससे नर्मी से बातचीत करना, क्या अजब कि वह नसीहत क़बूल कर ले और उसका दिल पिघल जाए।" यही क़ौम हज़रत इमाम इब्ने जरीर (रह.) का पसंदीदा है और हज़रत इब्ने ज़ेद (रह.) से भी यही मरवी है। हाँ! उनमें से जो ज़ुल्म पर अड़ जाएँ और ज़िद्द और तअस्सुब बरतें हक़ को क़बूल करने से इंकार कर दें तो फिर मुनाज़िरे मुबाहिसे बेकार हैं। फिर तो जिदाल व क़िताल का हुक्म है। जैसे जनाब बारी अज़्ज़ इस्मुहू का इर्शाद है (لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ) (57/हदीद : 25) हमने रसूलों को वाज़ेह दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब व मीज़ान नाज़िल फ़र्माई ताकि लोगों में अदलो इंसाफ़ का क़ियाम हो सके। और हमने लोहा भी नाज़िल फ़र्माया है जिसमें सख़्त लड़ाई है।" पस हुक्मे इलाही यह है कि भलाई से और नर्मी से जो न माने उस पर फिर सख़्ती की जाए। जो लड़े उससे लड़ा जाये। हाँ! यह और बात है कि मातहती में रहकर जिज़्या अदा करे। फिर फ़र्माता है कि जिसके खरे खोटे होने का तुम्हें यक़ीनी इल्म न हो तो उसकी तक्ज़ीब की तरफ़ क़दम न बढ़ाओ और न बग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के मान लो। मुम्किन है किसी अम्रे हक़ को तुम झुठलाओ और मुम्किन है किसी बातिल की तस्दीक़ कर बैठो। पस शर्तिया तस्दीक़ करो। यानी कह दो कि हमारा अल्लाह तआला की हर बात पर ईमान है अगर तुम्हारी पेशकर्दा चीज़ अल्लाह की नाज़िलकर्दा है तो हम उसे क़बूल करते हैं और अगर तुमने रद्दोबदल कर दी है तो हम उसे नहीं मानते। सहीह बुख़ारी में है कि अहले किताब तौरात को इब्रानी ज़बान में पढ़ते और हमारे सामने अरबी में उसका तर्जुमा करते। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "न तुम इन्हें सच्चा कहो न झूठा बल्कि तुम (आमन्ना बिल्लज़ी) से आख़िर आयत तक पढ़ दिया करो।" (सहीह बुख़ारी,

किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बक़रह बाब (क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि वमा उंज़िला इलैना) : 4485; सुननुल कुब्रा : 11387) मुस्नद अह़मद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक यहूदी आया और कहने लगा, क्या यह जनाज़े (मुर्दे) बोलते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह ही को इल्म है।" उसने कहा, मैं जानता हूँ यह यक़ीनन बोलते हैं। इस पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह अहले किताब जब तुमसे कोई बात बयान करें तो तुम न उन्हें सच्चा कहो न झुठलाओ बल्कि कह दो कि हमारा अल्लाह तआला पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान है। यह इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी झूठ को सच कह दो या किसी सच को झूठ बतला दो।" (अह़मद : 4/137; अबूदाऊद, किताबुल इल्म, बाब रिवायतु ह़दीसे अहलिल किताब : 3644; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; नमला बिन अबी नमला मज्हूलुल ह़ाल रावी है। इब्ने ह़िब्बान : 2657; बैहक़ी : 2/10) यहाँ यह भी ख़याल रहे कि उन अहले किताब की अक्सर व बेशतर बातें तो ग़लत़ और झूठ ही होती हैं। उ़मूमन बोहतान और इफ़्तिरा होता है। उनमें तह़रीफ़ व तबद्दुल, तग़य्युर व तावील रवाज पा चुकी है और स़दाक़त ऐसी रह गई है कि गोया कुछ भी नहीं। फिर एक बात और भी है कि बिलफ़र्ज़ सच भी हो तो हमें क्या फ़ायदा? हमारे पास तो अल्लाह तआला की ताज़ा (जदीद) और कामिल किताब क़ुरआन मौजूद है। चुनाँचे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं "अहले किताब से तुम कुछ भी न पूछो। वह ख़ुद जबकि गुमराह हैं तो तुम्हारी रहबरी क्या करेंगे? हाँ! यह हो सकता है कि उनकी किसी सच्ची बात को तुम झुठला दो। या उनकी किसी झूठी बात को तुम सच कह दो। याद रखो कि हर अहले किताब के दिल में अपने दीन का एक तास्सुब है। जैसे कि माल की ख़्वाहिश है।" (इब्ने जरीर) स़ह़ीह़ बुख़ारी में है ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "तुम अहले किताब से सवालात क्यूँ करते हो? तुम पर तो अल्लह तआला की त़रफ़ से अभी अभी किताब नाज़िल हुई है जो बिलकुल ख़ालिस़ है जिसमें बात़िल न मिला जुला, न मिल जुल सके। तुमसे तो ख़ुद रब तआला ने फ़र्मा दिया कि अहले किताब ने अल्लाह तआला के दीन को बदल डाला। अल्लाह तआला की किताब में तग़य्युर कर दिया और अपने हाथों की लिखी हुई किताबों को अल्लाह तआला की किताब कहने लगे और दुनियावी नफ़ा ह़ासिल करने लगे। क्यूँ भला तुम्हारे पास जो इल्मे इलाही है क्या वह तुम्हें काफ़ी नहीं? कि तुम उनसे पूछो। देखो! तो किस क़द्र सितम है कि उनमें से तो एक भी तुमसे कभी कुछ न पूछे और तुम उनसे पूछते फिरो?" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ए़तिस़ाम, बिल किताबि वस्सुन्ना, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (ला तस्अलू अहलल किताब अ़न शैइन) : 7363) स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि एक बार ह़ज़रत अमीर मुआ़विया (रज़ि.) ने मदीना मुनव्वरा में क़ुरैश की एक जमाअ़त के सामने फ़र्माया कि, देखो! इन तमाम अहले किताब में और इनकी बातें बयान करने वालों में सबसे अच्छे और सच्चे ह़ज़रत कअ़ब अह़बार (रज़ि.) हैं लेकिन बावजूद इसके भी इनकी बातों में भी हम कभी कभी झूठ पाते हैं। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ए़तिस़ाम, बिल किताबि वस्सुन्ना, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (ला तस्अलू अहलल किताब अ़न शैइन) : 7361) इसका यह मत़लब नहीं कि वह जान बूझकर झूठ बोलते हैं, बल्कि जिन किताबों पर उन्हें भरोसा है वह ख़ुद गीली सूखी जमा कर लेते हैं। उनमें ख़ुद सच झूठ सही ग़लत़ भरा पड़ा है। उनमें मज़बूत़ ज़ी इल्म ह़ाफ़िज़ों की जमाअ़त थी ही नहीं, यह तो इसी उम्मते मरह़ूमा पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि इसमें बेहतरीन दिलो दिमाग़ वाले और आ़ला फ़हम व ज़हन वाले और उ़म्दा ह़िफ़्ज़ व इत्क़ान वाले लोग

अल्लाह तआ़ला ने पैदा कर दिये। लेकिन फिर भी आप देखिए कि किस क़द्र मौज़ूआत का ज़ख़ीरा जमा हो गया है? और किस त़रह़ लोगों ने बातें गढ़ ली हैं। भले मुह़द्दिसीन ने उस झूठ को ह़क़ से बिलकुल अलग कर दिया, वल्लाहु आ़लम!

***

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ
مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ
كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝

तर्जुमा : ''हमने इसी त़रह़ तेरी त़रफ़ अपनी किताब नाज़िल की है पस जिन्हें हमने किताब दी है वह उस पर ईमान लाते हैं। और उनमें से कुछ उस पर ईमान रखते हैं, हमारी आयतों का इंकार सिर्फ़ काफ़िर ही करते हैं। (47) इससे पहले तो तू कोई किताब न पढ़ता था और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखता था कि यह बात़िलपरस्त लोग शक शुब्हा में पड़ते। (48) बल्कि यह क़ुरआन तो रोशन आयतें हैं जो अहले इल्म के सीनों में मह़फ़ूज़ हैं। हमारी आयतों का इंकार करने वाला सिवाय सितमगारों के और कोई नहीं।'' (49)

क्या आप (ﷺ) लिखना पढ़ना जानते थे (आ. 47 से 49) : फ़र्मान है कि जैसे हमने अगले नबियों पर अपनी किताबें नाज़िल की थीं उसी त़रह़ यह किताब यानी क़ुरआन मजीद हमने ऐ हमारे आख़िरी रसूल (ﷺ)! तुम पर नाज़िल की है। पस अहले किताब में से जिन लोगों ने हमारी किताब की क़द्र की और उसकी तिलावत का ह़क़ अदा किया वह जहाँ अपनी किताबों पर ईमान लाये, इस पाक किताब को भी मानते हैं। जैसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) और जैसे ह़ज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) वग़ैरह और उन लोगों यानी क़ुरैश वग़ैरह में से भी कुछ लोग इस पर ईमान लाते हैं। हाँ! जो लोग झूठ से ह़क़ को छुपाने वाले और सूरज की रोशनी से आँखें बंद करने वाले हैं वह तो इसके भी मुंकिर हैं। फिर फ़र्माता है, ऐ नबी (ﷺ)! तुम इनमें मुद्दतुल उ़म्र तक रह चुके हो, इस क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले अपनी उ़म्र का एक बड़ा ह़िस्सा इनमें गुज़ार चुके हो, इन्हें ख़ूब मालूम है कि आप पढ़े लिखे नहीं। सारी क़ौम और सारा मुल्क बख़ूबी जानता है कि आप सिर्फ़ उम्मी हैं , न लिखना जानते हैं, न पढ़ना। फिर आज जो आप एक अनोखी फ़सीह़ व बलीग़ और ह़िक्मत से भरी किताब पढ़ते हैं ज़ाहिर है कि वह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है। आप इस ह़ालत में कि एक ह़र्फ़ पढ़े हुए नहीं, ख़ुद तस्नीफ़ व तालीफ़ कर नहीं सकते। ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की यही सिफ़त अगली किताबों में थी।

जैसे कुरआन नाक़िल है कि (اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ) (7/आराफ़ : 157)यानी ''जो लोग पैरवी करते हैं उस रसूल व नबी उम्मी की जिसकी सिफ़ात वह अपनी किताब तौरात इंजील में लिखी हुई पाते हैं, जो उन्हें नेकियों का हुक्म करता है और बुराइयों से रोकता है।'' लुत्फ़ यह है कि अल्लाह तआला के मासूम नबी (ﷺ) हमेशा लिखने से दूर ही रखे गए। एक सत्र क्या मअनी, एक हर्फ़ भी लिखना आप (ﷺ) को न आता था। आप (ﷺ) ने कातिब मुक़र्रर कर लिये थे जो वही इलाही लिख लेते थे और ज़रूरत के वक़्त शाहाने दुनिया से ख़त्त व किताबत भी वही करते थे। पिछले फ़ुक़हा में से क़ाज़ी अबुल वलीद बाजी (रह.) वग़ैरह ने कहा है कि हुदेबिया के दिन ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) ने अपने हाथ से यह जुम्ला सुलहनामे में लिखा था कि (हाज़ा मा क़ाज़ा अलैहि मुहम्मदुब्नु अब्दिल्लाहि)) यानी यह वह शराइत हैं जिन पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने फ़ैसला किया।'' लेकिन यह क़ौल दुरुस्त नहीं। यह वहम क़ाज़ी साहब को बुख़ारी की उस रिवायत से हुआ है जिसमें यह अल्फ़ाज़ हैं कि सुम्मा अख़ज़ा फ़कतब यानी ''फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ख़ुद लेकर लिखा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा : 4251) लेकिन इसका मतलब यह है कि आप (ﷺ) ने लिखने का हुक्म दिया। जैसे दूसरी रिवायत में साफ़ मौजूद है कि सुम्मा अमरा फ़-कुतिबा यानी आप (ﷺ) ने फिर हुक्म दिया और लिखा गया। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूतु फ़िल जिहादि वल मसालिहतु मअ अहलिल हर्ब...: 2731) मश्रिक़ व मग़्रिब के तमाम उलमा का यही मज़हब है बल्कि बाजी वग़ैरह पर उन्होंने इस क़ौल का बहुत सख़्त रद्द किया है और इससे बेज़ारी ज़ाहिर की है और इस क़ौल की तर्दीद अपने अश्आर और ख़ुत्बों में भी की है। लेकिन यह भी ख़्याल रहे कि क़ाज़ी साहब वग़ैरह का यह ख़्याल हर्गिज़ नहीं कि आप (ﷺ) अच्छी तरह लिखना जानते थे बल्कि वह कहते हैं कि आपका यह जुम्ला सुलहनामा पर लिख लेना आप (ﷺ) का एक मोजिज़ा था। जैसे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है कि दज्जाल की दोनों आँखों के बीच काफ़िर लिखा हुआ होगा। और एक रिवायत में है काफ़ फ़ र लिखा हुआ होगा जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन, बाब ज़िक्रुद्दज्जाल : 7131; सहीह मुस्लिम : 2933; अबूदाऊद : 4316; अहमद : 3/173; तिर्मिज़ी : 2246; मुस्नदे अबी यअला : 3016) यानी अगरचे अनपढ़ हो तब भी उसे पढ़ लेगा। यह मोमिन की एक करामत होगी उसी तरह यह फ़िक़रा लिख लेना अल्लाह के नबी (ﷺ) का एक मोजिज़ा था। यह मतलब इसका हर्गिज़ नहीं कि आप (ﷺ) लिखना जानते थे या आप (ﷺ) ने सीखा था। कुछ लोग एक रिवायत पेश करते हैं जिसमें है कि हुज़ूर (ﷺ) का इंतिक़ाल न हुआ जब तक कि आप (ﷺ) ने लिखना न सीख लिया। यह रिवायत बिलकुल ज़ईफ़ है बल्कि सिर्फ़ बेअसल है। कुरआन करीम की इस आयत को देखिए कि किस क़द्र ताकीद के साथ हुज़ूर (ﷺ) के पढ़ा हुआ होने का इंकार करती है और कितनी सख़्ती के साथ पुरज़ोर अल्फ़ाज़ में इसका भी इंकार करती है कि आप (ﷺ) लिखना जानते हों। यह जो फ़र्माया कि दाहिने हाथ से यह बाऐतिबार ग़ालिब के कह दिया है वरना लिखा तो दाएँ हाथ से ही जाता है, इसी तरह (وَ لَا طٰٓىِٕرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ) (6/अन्आम : 38) में है क्योंकि हर परिन्दा अपने परों से ही उड़ता है। पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का अनपढ़ होना बयान करके इर्शाद होता है कि अगर आप पढ़े लिखे होते तो यह बातिल परस्त आप (ﷺ) की निस्बत शक करने की गुंजाइश पाते कि अगले अम्बिया (अ.) की किताबों से पढ़कर लिखकर

नक़्ल कर लेता है, लेकिन यहाँ तो ऐसा नहीं, ताज्जुब है कि बावजूद ऐसा न होने के फिर भी यह लोग हमारे रसूले अकरम (ﷺ) पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं और कहते हैं कि यह अगलों की कहानियाँ हैं जो इसने लिख ली हैं वही इसके सामने सुबह शाम पढ़ी जाती हैं। बावजूद यह कि ख़ूब जानते हैं कि हमारे रसूले अकरम (ﷺ) पढ़े लिखे नहीं। इनके इस क़ौल के जवाब में जनाब बारी तआला अज्ज इस्मुहू ने फ़र्माया, इन्हें जवाब दो कि इसे उस अल्लाह तआला ने नाज़िल किाय है जो ज़मीनो आसमान की पोशीदगियों को जानता है। यहाँ फ़र्माया बल्कि यह रोशन आयतें हैं जो अहले इल्म के सीनों में हैं। ख़ुद आयात वाज़ेह, साफ़ और सुलझे हुए अल्फ़ाज़ में हैं, फिर उलमा पर उनका समझना, याद करना, पहुँचाना सब आसान, जैसे फ़र्मान है (وَ لَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ) (54/क़मर : 15) यानी "हमने इस कुरआन को नसीहत के लिए बिलकुल आसान कर दिया है पस क्या कोई है जो इससे नसीहत हासिल करे।" रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर नबी को ऐसी चीज़ दी गई जिसकी वजह से लोग उन पर ईमान लाये मुझे ऐसी चीज़ रब तआला की वही दी गई है जो अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ नाज़िल की है तो मुझे ज़ाते रब्बानी से उम्मीद है कि तमाम नबियों के ताबेदारों से ज़्यादा मेरे ताबेदार होंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब कैफ़ नज़लल वही व अव्वल मा नुज़िल? : 4981; सहीह मुस्लिम) सहीह मुस्लिम की हदीस में फ़र्माने बारी तआला है कि "ऐ नबी (ﷺ)! मैं तुम्हें आज़माऊँगा और तुम्हारी वजह से लोगों की भी आज़माइश करूँगा। मैं तुम पर ऐसी किताब नाज़िल करूँगा जिसे पानी धो न सके। तू उसे सोते जागते पढ़ता रहेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब सिफ़ातुल्लती युअरफु बिहा फ़िदुनिया : 2865; बि तस्रिफु यसीर) मतलब यह है कि भले इसक हुरूफ़ पानी से धो दिये जाएँ लेकिन वह ज़ाया होने से महफ़ूज़ है। जैसे कि और हदीस में है कि अगर कुरआन किसी चमड़े में हो तो उसे आग नहीं जलाएगी। (अहमद : 4/155; और इसकी सनद हसन है, इब्ने लहीआ सरह बिस्सिमाइ व हद्दस बिही क़ब्ल इख़्तिलातुहू; दारमी : 3310; मुस्नदे अबी यअला : 1745; अलअस्माउ वस्सिफ़ातु, पेज : 264; तब्रानी : 850) इसलिए कि वह सीनों में महफ़ूज़ हैं, ज़ुबानों पर आसान है। दिलों में मौजूद है और अपने लफ़्ज़ और मअनी के ऐतिबार से एक जीता जागता मोजिज़ा है। यही वजह है कि अगली किताबों में इस उम्मत की एक सिफ़त यह भी मरवी है कि अनाजीलुहुम फ़ी सुदूरिहिम "उनकी किताब उनके सीनों में महफ़ूज़ होगी।" इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसे पसंद करते हैं कि "मअनी यह हैं बल्कि इल्म इसका कि तू इस किताब से पहले कोई किताब नहीं पढ़ता था और न अपने हाथ से कुछ लिखता था। यह आयातिम बय्यिनात अहले किताब के ज़ी इल्म लोगों के सीनो में मौजूद हैं।" क़तादा और इब्ने जुरैज (रह.) से भी यही मन्क़ूल है, और पहला क़ौल हसन बसरी (रह.) का है और यही बरिवायत औफ़ा इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मंक़ूल है और यही ज़हहाक (रह.) ने कहा है और यही ज़्यादा ज़ाहिर है, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माता है कि हमारी आयतों का झुठलाना क़बूल न करना, यह हद से गुज़रने वालों और ज़िद्दी लोगों का ही काम है जो न हक़ को समझते हैं और न उसकी तरफ़ माइल होते हैं। जैसे फ़र्मान है जिन पर तेरे रब तआला की बात साबित हो चुकी है वह हर्गिज़ ईमान न लाएँगे अगरचे उनके पास सब निशानियाँ आ जाएँ यहाँ तक कि वह अलमनाक अज़ाब को अपनी आँखों से देख लें।

وَقَالُوا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝٥٠ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً
وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥١ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٥٢

तर्जुमा : "कहते हैं कि इस पर कुछ निशानात इसके रब तआला की तरफ़ से क्यूँ नहीं उतारे गए। तू कह दे कि निशानात तो सब अल्लाह तआला के पास हैं। मेरी हैसियत तो सिर्फ़ खुल्लम खुल्ला आगाह कर देने वाले की है। (50) क्या इन्हें यह काफ़ी नहीं? कि हमने तुझ पर किताब नाज़िल कर दी जो इन पर पढ़ी जा रही है। इसमें रहमत भी है और नसीहत भी है, उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं। (51) कह दे कि मुझमें और तुममें अल्लाह तआला का गवाह होना काफ़ी है। वह आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का आलिम है। जो लोग बातिल के मानने वाले हैं और अल्लाह तआला से कुफ़्र करने वाले हैं वह ज़बरदस्त नुक़्सान और घाटे में है।" (52)

क्या क़ुरआन का मोजिज़ा काफ़ी नहीं है? (आ. 50 से 52) : काफ़िरों की ज़िद्द, तकब्बुर, और हठधर्मी बयान हो रही है कि उन्होंने अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) से ऐसी ही निशानी तलब की जैसी कि हज़रत सालेह (عليه السلام) से उनकी क़ौम ने माँगी थी। फिर अपने नबी अकरम (ﷺ) को हुक्म देता है कि इन्हें जवाब दीजिए कि आयतें मोजिज़े और निशानात दिखाना तो मेरे बस की बात नहीं, यह अल्लाह तआला के हाथ है। अगर उसने तुम्हारी नेक निय्यती मालूम कर लीं तो वह मोजिज़ा दिखायेगा और अगर तुम अपनी ज़िद्द और इंकार से बढ़ बढ़कर बातें ही बना रहे हो तो वह अल्लाह तआला तुमसे दबा हुआ नहीं कि उसकी चाहत तुम्हारी चाहत के ताबेअ हो जाए, जो तुम माँगो वह ख़्वाह मख़्वाह कर ही दिखाये। जैसे और आयत में है कि आयतें भेजने से हमें कोई मानेअ नहीं। सिवाय इसके कि अगले लोग भी बराबर इंकार ही करते रहे। समूदियों को देखो, हमारी निशानी ऊँटनी जो उनके पास आई, उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया। कह दो कि मैं तो सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ हूँ, पैग़म्बर हूँ, क़ासिद हूँ, मेरा काम तुम्हारे कानों तक आवाज़े रब्बानी को पहुँचा देना है मैंने तो तुम्हें तुम्हारा बुरा भला समझा दिया, नेक बद बुझा दिया, अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने। हिदायत, ज़लालत अल्लाह तआला की तरफ़ से है। वह अगर किसी को गुमराह कर दे तो उसकी रहबरी कोई नहीं कर सकता। चुनाँचे और जगह है तुझ पर उनकी हिदायत का ज़िम्मा नहीं। यह अल्लाह तआला का काम है और उसकी चाहत पर मौक़ूफ़ है। भला इस फ़िज़ूलगोई को देखो कि किताबे अज़ीज़ इनके पास आ चुकी जिसके किसी तरफ़ से बातिल उसके पास भी नहीं फटक सकता और उन्हें अब तक निशानी की तलब है। हालाँकि यह तो तमाम मोजिज़ात से बढ़कर मोजिज़ा है। तमाम दुनिया के फ़सीह व बलीग़ इसके मुआरज़ा से और इस जैसा कलाम पेश करने से आजिज़ आ गए, पूरे क़ुरआन का तो मुआरज़ा क्या करते? दस सूरतों का बल्कि एक सूरत

का मुआरज़ा भी बावजूद चैलेंज के न कर सके। तो क्या इतना बड़ा और भारी मोजिज़ा इन्हें काफ़ी नहीं? जो और मोजिज़ा माँग रहे हैं। यह तो वह पाक किताब है जिसमें गुज़िश्ता बातों की ख़बर है और होने वाली बातों की पेशीनगोई है और झगड़ों का फ़ैसला है और यह उसकी ज़ुबान से पढ़ी जाती है जो महज़ उम्मी है। जिसने किसी से अलिफ़ बा भी नहीं पढ़ा जो एक हर्फ़ लिखना नहीं जानता बल्कि जो अहले इल्म की सोहबत में भी कभी नहीं बैठा, और वह किताब पढ़ता है जिससे अगली किताबों की भी सेहत व अदमे सेहत मालूम होती है जिसके अल्फ़ाज़ में हलावत जिसकी नज़्म में मलाहत, जिसके अंदाज़ में फ़साहत, जिसके बयान में बलाग़त, जिसका तर्ज़ दिलरुबा, जिसका स्याक़ दिलचस्प, जिसमें दुनिया भर की ख़ूबियाँ मौजूद, ख़ुद बनी इस्राईल के उलमा भी इसकी तस्दीक़ पर मजबूर, अगली किताबें जिस पर शाहिद, भले लोग जिसके मद्दाह और क़ाइल व आमिल। इस इतने बड़े मोजिज़े की मौजूदगी में किसी और मोजिज़े की तलब सिर्फ़ गुरेज़ है। फिर फ़र्माता है कि इसमें ईमान वालों के लिए नसीहत व रहमत है। यह क़ुरअन हक़ को ज़ाहिर करने वाला, बातिल को बर्बाद करने वाला, अगलों के वाक़ियात तुम्हारे सामने रखकर तुम्हें नसीहत व इब्रत का मौक़ा देता है। गुनहगारों के अंजाम दिखाकर तुम्हें गुनाहों से बचाता है। कह दो कि मुझमें और तुममें अल्लाह तआला गवाह है और उसकी गवाही काफ़ी है। वह तुम्हारे झुठलाने व सरकशी को और मेरी सच्चाई और ख़ैरख़्वाही को बख़ूबी जानता है। अगर मैं उस पर झूठ बाँधता तो वह ज़रूर मुझसे इंतिक़ाम ले लेता, वह ऐसे लोगों को बेइंतिक़ाम नहीं छोड़ता। जैसे ख़ुद उसका फ़र्मान है कि अगर यह रसूल मुझ पर एक बात भी गढ़ लेता तो मैं इसका दाहिना हाथ पकड़कर इसकी रगे जान काट देता और कोई न होता जो इसे मेरे हाथ से छुड़ा सके। चूँकि उस पर मेरी सच्चाई रोशन है और मैं उसी का भेजा हुआ हूँ और उसका नाम लेकर उसकी कही हुई बातें तुमसे कहता हूँ इसलिए वह मेरी ताईद करता है और मुझे दिनों दिन ग़ल्बा देता जाता है और मुझसे मोजिज़ात पर मोजिज़ात ज़ाहिर कराता जाता है। वह ज़मीनो आसमान के ग़ैब (छुपे) का जानने वाला है, उस पर एक ज़र्रा (कण) भी छुपा हुआ नहीं। बातिल को मानने वाले और अल्लाह तआला को न मानने वाले ही नुक़्सान उठाने वाले और ज़लील हैं। क़ियामत के दिन उन्हें उनकी बद आमालियों का नतीजा भुगतना पड़ेगा और जो सरकशियाँ यहाँ की हैं सबका मज़ा चखना पड़ेगा। भला अल्लाह तआला को न मानना और बुतों को मानना इससे बढ़कर और ज़ुल्म क्या होगा? वह अलीम व हकीम अल्लाह तआला उसका बदला दिये बग़ैर हर्गिज़ न रहेगा।

***

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ
بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ
بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ
ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

तर्जुमा : ''यह लोग तुझसे अ़ज़ाब की जल्दी कर रहे हैं। अगर मेरी तरफ़ से मुक़र्रर किया हुआ वक़्त न होता तो अभी तक इनके पास अ़ज़ाब आ चुका होता। यह यक़ीनी बात है कि अचानक इनकी बेख़बरी में इनके पास अ़ज़ाब आ पहुँचेंगे। (53) यह अ़ज़ाबों की जल्दी मचा रहे हैं, तसल्ली रखें जहन्नम काफ़िरों को घेर लेने वाली है। (54) उस दिन उनके ऊपर तले से उन्हें अ़ज़ाब ढाँप रहे होंगे। और कह रहे होंगे कि अब अपने बुरे अ़मलों का मज़ा चखो।'' (55)

मुश्रिकीन की हठधर्मी और अ़ज़ाब का मुतालबा (आ. 53 से 55) : मुश्रिकों का अपनी जिहालत से अ़ज़ाबे इलाही का तलब करना बयान हो रहा है। यह अल्लाह के नबी से भी यही कहते थे और ख़ुद अल्लाह तआला से भी यही दुआएँ करते थे कि जनाब बारी तआ़ला! अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो तू हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हमें और कोई दर्दनाक अ़ज़ाब दे। यहाँ उन्हें जवाब मिलता है कि रब्बुल आ़लमीन यह बात मुक़र्रर कर चुका है कि इन कुफ़्फ़ार को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब होंगे। अगर यह वक़्त मुक़र्रर न होता तो इनके माँगते ही अ़ज़ाब के मुहीब बादल इन पर बरस पड़ते। अब भी यह यक़ीन मानें कि यह अ़ज़ाब आएँगे और ज़रूर आएँगे बल्कि इनकी बेख़बरी में अचानक और एक ही लम्हे में आ पड़ेंगे। यह अ़ज़ाबों की जल्दी मचा रहे हैं और जहन्नम भी इन्हें चारों तरफ़ से घेरे हुए है। यानी यक़ीनन इन्हें अ़ज़ाब होंगे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि वह जहन्नम यही बह्रे अख़्ज़र है। सितारे इसी में झड़ेंगे और सूरज चाँद इसी में बेनूर करके डाल दिये जाएँगे और यह भड़क उठेगा और जहन्नम बन जाएगा। मुस्नद अह्मद में मरफ़ूअ़ ह़दीस है कि ''समुन्द्र ही जहन्नम है।'' रावी ह़दीस ह़ज़रत यअ़ला (रह़.) से लोगों ने कहा कि क्या आप लोग नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है (نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا) (18/कहफ़ : 29) यानी वह आग जिसे क़नातें घेरे हुए हैं, तो फ़र्माया क़सम है उसकी जिसके हाथ में यअ़ला की जान है कि मैं उसमें हर्गिज़ दाख़िल न होऊँगा जब तक कि अल्लाह तआ़ला के सामने पेश न किया जाऊँ और मुझे उसका एक क़तरा भी न पहुँचेगा यहाँ तक कि मैं अल्लाह तआ़ला के सामने पेश न किया जाऊँ।'' (अह़मद : 4/223; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/386) यह तफ़्सीर भी बहुत ग़रीब है और ह़दीस भी बहुत ही ग़रीब है, वल्लाहु आ़लम!

फिर फ़र्माता है कि उस दिन उन्हें नीचे ऊपर से आग ढाँक लेगी। जैसे और आयत में है (لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّ مِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ) (7/आ़राफ़ : 41) ''इनके लिए जहन्नम ही ओढ़ना बिछौना है।'' और आयत में है (لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ) (39/जुमर : 16) यानी ''इनके ऊपर नीचे से आग ही का फ़र्श और सायबान होगा।'' और जगह पर इर्शाद है (لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَ لَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ) (21/अम्बिया : 39) यानी ''काश कि काफ़िर उस वक़्त को जान लें जबकि न यह अपने आगे से आग को हटा सकेंगे, न पीछे से।'' इन आयतों से मालूम हो गया कि हर तरफ़ से इन कुफ़्फ़ार को आग खा रही होगी। आगे से पीछे से, ऊपर से, नीचे से, दाएँ से, बाएँ से तो उस पर रब्बे आलम की डाँट डपट और मुसीबत होगी। इधर हर वक़्त कहा जाएगा लो! अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो। पस एक तो वह ज़ाहिरी जिस्मानी अ़ज़ाब दूसरा यह बातिनी रूह़ानी अ़ज़ाब। इसी का ज़िक्र आयत (يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ) (54/क़मर : 48) और आयत (يَوْمَ يُدَعُّوْنَ) (52/तूर : 13) में है यानी ''जबकि जहन्नम में औंधे मुँह घसीटे जाएँगे और कहा

जाएगा कि लो! अब आग के अज़ाब का मज़ा चखो।'' ''जिस दिन इन्हें धक्के दे देकर जहन्नम में डाला जाएगा और कहा जाएगा, यह वह जहन्नम है जिसे तुम झुठला रहे थे, अब बताओ यह जादू है? या तुम अंधे हो? जाओ! अब जहन्नम में चले जाओ अब तुम्हारा सब्र करना न करना एक जैसा है। तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला भुगतना ज़रूरी है।''

***

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ
الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ
غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا
وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ڰ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ڮ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : ''ऐ मेरे ईमान वाले बन्दों! मेरी ज़मीन बहुत कुशादा है तो तुम मेरी ही इबादत करते रहो। (56) हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है और तुम सब हमारी ही तरफ़ लौटाये जाओगे। (57) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उन्हें हम क़त्अन जन्नत के उन बुलंद बालाख़ानों में जगह देंगे जिनके नीचे चश्मे बह रहे हैं जहाँ हमेशा रहेंगे। काम करने वालों का क्या ही अच्छा अज्र है। (58) जिन्होंने सब्र किया और अपने रब तआला पर भरोसा रखते हैं। (59) बहुत से जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाये नहीं फिरते उन सबको और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रोज़ी देता है। वह बड़ा ही सुनने वाला, जानने वाला है।'' (60)

मौत क़रीब है, आख़िरत की तैयारी करो (आ. 56 से 60) : अल्लाह तबारक व तआला इस आयत में ईमान वालों को हिज्रत का हुक्म देता है कि जहाँ वह दीन को क़ायम न रख सकते हों, वहाँ से उस जगह चले जाएँ जहाँ उनके दीन में उन्हें आज़ादी रहे। अल्लाह तआला की ज़मीन बहुत फैली हुई है, जहाँ वह फ़र्माने इलाही के मातहत अल्लाह तआला की इबादत व तौहीद बजा ला सकें वहाँ चले जाएँ। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''तमाम शहर अल्लाह तआला के शहर हैं और सारे बन्दे अल्लाह तआला के गुलाम हैं जहाँ तू भलाई पा सकता हो वहीं क़याम कर।'' (अहमद : 1/166 ; ह : 1420; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/72) चुनाँचे सहाबा किराम (रज़ि.) पर जबकि मक्का की रिहाइश मुश्किल हो गई तो वह हिज्रत करके हब्शा चले गए ताकि अम्नो अमान के साथ अल्लाह तआला के दीन पर क़ियाम कर सकें।

वहाँ के समझदार दीनदार बादशाह अस्हमा नज्जाशी (रह.) ने उनकी पूरी ताईद व नुसरत की और वहाँ वह बहुत इज़्ज़त और ख़ुशी से रहे सहे। फिर उसके बाद रब की इजाज़त के साथ दूसरे सहाबा (रज़ि.) ने और ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) ने मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिज्रत की। उसके बाद फ़र्माता है कि तुममें से हर एक मरने वाला और मेरे सामने हाज़िर होने वाला है। तुम ख़्वाह कहीं हो मौत के पंजे से नजात नहीं पा सकते। पस तुम्हें ज़िन्दगी भर अल्लाह तआला की इताअत में और उसको राज़ी करने में रहना चाहिए ताकि मरने के बाद अल्लाह तआला के यहाँ जाकर बुराई में न फंसो। ईमान वालों, नेक आमाल लोगों को अल्लाह तआला जन्नते अद्न की बुलंद व बाला मंज़िलों में पहुँचाएगा। जिनके नीचे क़िस्म क़िस्म की नहरें बह रही हैं, कहीं साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी की, कहीं शराबे तुहूर की, कहीं शहद की, कहीं दूध की। यह चश्मे ख़ुद बख़ुद जहाँ जन्नती चाहें, बहने लगेंगे। यह वहाँ हमेशा रहेंगे, न वहाँ से निकाले जाएँ न हटाये जाएँ, न वह नेअमतें ख़त्म हों, न उनमें घाटा आये। मोमिनों के नेक आमाल पर जन्नती बालाख़ाने उन्हें मुबारक हों। जिन्होंने अपने सच्चे दीन पर सब्र किया और अल्लाह तआला की तरफ़ हिज्रत की, उसके दुश्मनों को तर्क किया, अपने अक़्रबा और अपने घर वालों को राहे इलाही में छोड़ दिया, उसकी नेअमतों और उसके इन्आमात की उम्मीद पर दुनिया के ऐशो आराम पर लात मार दी। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिनका ज़ाहिर बातिन से नज़र आता है। अल्लाह तआला ने उन्हें उनके लिए बनाया है जो खाना खिलाएँ, ख़ुश कलाम, नर्म गो हों, रोज़े नमाज़ के पाबंद हों और रातों को जबकि लोग सोये हुए हों, यह नमाज़ें पढ़ते हों। (अहमद : 5/343; और ये हदीस हसन है, अन्निहाया फ़िल फ़ितन वल मलाहिम बि तहक़ीक़ी : 1326; इब्ने हिब्बान : 509; मज्मउज़्ज़वाइद : 2/254) अपने कुल अहवाल में दीनी हों या दुनियावी, अपने रब तआला पर कामिल भरोसा रखते हों। फिर फ़र्माया कि रिज़्क़ किसी जगह के साथ ख़ास नहीं बल्कि अल्लाह तआला का तक़्सीम किया हुआ रिज़्क़ आम है और हर जगह है जो जहाँ हो उसे वहीं वह पहुँच जाता है। मुहाजिरीन के रिज़्क़ में हिज्रत के बाद अल्लाह तआला ने वह बरकतें दीं कि यह दुनिया के किनारों के मालिक हो गए। तो फ़र्माया कि बहुत से जानवर हैं जो न अपने रिज़्क़ के जमा करने की ताक़त रखते हैं, न उसे हासिल करने की, न वह कल के लिए कोई चीज़ उठा कर रखते हैं, अल्लाह तआला के ज़िम्मे उनकी रोज़ियाँ हैं, परवरदिगार उन्हें उनके रिज़्क़ पहुँचा देता है। तुम्हारा राज़िक़ भी वही है। वह किसी मख़्लूक़ को किसी हालत में किसी वक़्त नहीं भूलता। चींटियों को उनके सूराख़ों में, परिन्दों को आसमान व ज़मीन की ख़ुला में, मछलियों को पानी में वही रिज़्क़ पहुँचाता है। जैसे फ़र्माया (وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ) (11/हूद : 6) यानी "कोई जानवर रूए ज़मीन पर ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो, वही उनके ठहरने और रहने सहने की जगह को बख़ूबी जानता है। यह सब उसकी रोशन किताब में मौजूद है।" इब्ने अबी हातिम में है, इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चला, मदीने के बाग़ात में से एक बाग़ में, आप (ﷺ) गये और गिरी पड़ी रद्दी खजूरें खोल खोलकर साफ़ कर करके खाने लगे, मुझसे भी खाने को फ़र्माया। मैंने कहा, हुज़ूरे अकरम (ﷺ)! मुझसे तो यह रद्दी खजूरें नहीं खाई जाएँगी।" आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "लेकिन मुझे तो यह बहुत अच्छी मालूम होती हैं इसलिए कि चौथे दिन की सुबह है कि मैंने खाना नहीं खाया और न खाने की वजह यह कि मिला ही नहीं। सुनो अगर मैं चाहता तो अल्लाह तआला से दुआ करता और अल्लाह तआला मुझे क़ैसर (रूम) व किसरा (ईरान) का मालिक बना

देता। ऐ इब्ने उ़मर (रज़ि.)! तेरा क्या ह़ाल होगा जबकि तू ऐसे लोगों में होगा जो साल भर के ग़ल्ले वग़ैरह जमा कर लिया करेंगे और उनका यक़ीन और तवक्कल बिलकुल बूदा हो जाएगा।'' हम अभी तो वहीं इसी ह़ालत में थे जो यह आयत (वक अय्यिन) आख़िर तक नाज़िल हुई। पस रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने मुझे दुनिया के ख़ज़ाने जमा करने का और ख़्वाहिशों के पीछे लग जाने का हुक्म नहीं किया जो शख़्स दुनिया के ख़ज़ाने जमा करे और उससे बाक़ी वाली ज़िन्दगी चाहे वह समझ ले कि ह़यात बाक़ी वाली तो अल्लाह तआ़ला के हाथ है। देखो मैं तो न दीनार दिरहम जमा करूँ, न कल के लिए आज रोज़ी का ज़ख़ीरा जमा कर रखूँ।'' (अस्बाबे नुज़ूल : 673; इस रिवायत में जर्राह़ बिन मिन्हाल मतरूक (अल्मीज़ान : 1/390; रक़म : 1453) रावी है। लिहाज़ा यह रिवायत सख़्त मर्दूद है।) यह ह़दीस ग़रीब है और इसके रावी अबुल उ़तूफ़ जज़री ज़ईफ़ है। यह मशहूर है कि कोऐ के बच्चे जब निकलते हैं तो उनके पर व बाल सफ़ेद होते हैं यह देखकर कौआ उनसे नफ़रत करके भाग जाता है कुछ दिनों के बाद उन परों की रंगत स्याह पड़ जाती है तब उनके माँ बाप आते हैं और उन्हें दाना वग़ैरह खिलाते हैं। इब्तिदाई दिनों में जबकि माँ बाप उन छोटे बच्चों से नाराज़ होकर भाग जाते हैं और उनके पास भी नहीं आते उस वक़्त अल्लाह तआ़ला छोटे छोटे मच्छर उनके पास भेज देता है वही उनकी ग़िज़ा बन जाते हैं। अ़रब के शोअ़रा ने इसे नज़्म भी किया है। ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है कि ''सफ़र करो ताकि सेह़त और रोज़ी पाओ।'' और रिवायत में है कि ''सफ़र करो ताकि सेह़त व ग़नीमत मिले।'' (मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 9269; मुस्नदे शिहाब : 1/364; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; बाक़ी ज़ईफ़ सनदों के लिए देखिए अस्सह़ीह़तु लिल्अल्बानी : 3352) बैहक़ी : 7/102) और ह़दीस में है ''सफ़र करो, नफ़ा उठाओगे, रोज़े रखो तंदुरुस्त रहोगे, जिहाद करो, ग़नीमत मिलेगी।'' (अह़मद : 2/380; और सनद ज़ईफ़ है; इब्ने लहीआ़ मुदल्लस है। लेकिन इसमें (रोज़े रखो तंदुरुस्त रहोगे) के अल्फ़ाज़ हैं जबकि इन अल्फ़ाज़ के साथ अल्मुअ़जमुल औसत़ : 8308 में मौजूद है जिसकी सनद में मूसा बिन ज़करिय्या मतरूक रावी है। (अल्मौसूअ़तुल ह़दीसिया : 14/507) और रिवायत में है जतन करने वालों और आसानी वालों के साथ सफ़र करो। फिर फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की बातें सुनने वाला और उनकी ह़रकात व सक्नात को जानने वाला है।'' (बेअस़ल व मर्दूद है।)

***

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ
فَأَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ
مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

तर्जुमा : "अगर तू इनसे पूछे कि ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ और सूरज चाँद को काम में लगाने वाला कौन है? तो इनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला" फिर किधर उल्टे जा रहे हो? (61) अल्ल्लह तआला अपने बन्दों में से जिसे चाहे फ़राख़ रोज़ी देता है और जिसे चाहे तंग। यक़ीनन अल्लाह तआला हर चीज़ का जानने वाला है। (62) और अगर तू इनसे सवाल करे कि आसमान से पानी उतारकर ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देने वाला कौन है? तो यक़ीनन इनका जवाब यही होगा कि "अल्लाह तआला" इक़रार कर कि हर ता'रीफ़ अल्लाह तआला ही के लिए सज़ावार है। हाँ! इनमें के अक्सर बेअक़्ल हैं।" (63)

रिज़्क़ की फ़राख़ी और तंगी अल्लाह के इख़्तियार में है (आ. 61 से 63) : अल्लाह तआला साबित करता है कि मअबूदे बरहक़ सिर्फ़ वही है। ख़ुद मुश्रिकीन भी इस बात के क़ाइल हैं कि आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला, सूरज चाँद का मुसख़्ख़र करने वाला, दिन रात को पे दर पे लाने वाला, ख़ालिक़, राज़िक़, मौत व हयात पर क़ादिर सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। वह ख़ूब जानता है कि ग़ना (अमीरी) के लायक़ कौन है? और फ़क़्र (ग़रीबी) के लायक़ कौन है? अपने बन्दों की मस्लिहतें उसको पूरी तरह मालूम है। पस जबकि मुश्रिकीन ख़ुद मानते हैं कि तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है, सब पर क़ाबिज़ सिर्फ़ वही है फ़िर उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यूँ करते हैं? और उसके सिवा दूसरों पर भरोसा क्यूँ करते हैं? जबकि मुल्क का मालिक वह अकेला है तो इबादतों के लायक़ भी वह अकेला ही है। तौहीदे रुबूबियत को मानकर फ़िर तौहीदे उलूहियत से इंकार एक अजीब चीज़ है। कुरआने करीम में तौहीदे रुबूबियत के साथ ही तौहीदे उलूहियत का ज़िक्र बहुत ज़्यादा है। इसलिए कि तौहीद रुबूबियत के क़ाइल मुश्रिकीने मक्का थे तो उन्हें क़ाइल मअक़ूल करके फिर तौहीदे उलूहियत की तरफ़ दावत दी जाती है। मुश्रिकीन हज्ज व उमरे में लब्बैक पुकारते हुए भी अल्लाह तआला के ला शरीक होने का इक़रार करते थे। कहते थे (लब्बैक ला शरीक लक इल्ला शरीकन हुव लक तम्लिकुहू वमा मलक) यानी "ऐ अल्लाह! हम हाज़िर हुए तेरा कोई शरीक नहीं मगर ऐसे शरीक कि जिनका मालिक और जिनके मुल्क का मालिक भी तू ही है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब अत्तल्बिया व सिफ़तुहा व वक़्तुहा : 1185)

***

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ۝٦٤ فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ
اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ۝٦٥ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٦٦

तर्जुमा : "दुनिया की यह ज़िन्दगानी तो सिर्फ़ खेल तमाशा है। अल्बत्ता सच्ची ज़िन्दगी तो आख़िरत का घर है अगर यह जानते हों । (64) यह लोग जब कश्तियों में सवार होते हैं तब तो अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं उसके लिए इबादत को ख़ालिस करके। फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो उसी वक़्त शिर्क करने लगते हैं । (65) हमारी दी हुई नेअमतों से मुकरते हैं। और बरतते रहें अभी अभी पता चल जाएगा।" (66)

मुश्रिकीन बवक़्ते मुसीबत अल्लाह तआला को पुकारते हैं (आ. 64 से 66) : दुनिया की हक़ारत व ज़िल्लत उसके ज़वाल व फ़ना का ज़िक्र हो रहा है कि उसे कोई दवाम नहीं, इसका कोई सबात नहीं, यह तो सिर्फ़ खेल तमाशा है। दारे आख़िरत की ज़िन्दगी दवाम व बक़ा की ज़िन्दगी है। वह ज़वाल व फ़ना से, वह क़िल्लत व ज़िल्लत से दूर है। अगर इन्हें इल्म होता तो उस बक़ा वाली चीज़ पर फ़ानी चीज़ को बढ़ावा नहीं देते।

फिर फ़र्माता है कि मुश्रिकीन बेकसी और बेबसी के वक़्त तो अल्लाह तआला वह्दहू ला शरीक लहू को ही पुकारने लगते हैं। फिर मुसीबत के हट जाने और मुश्किल के टल जाने के बाद उसके साथ दूसरों का नाम क्यूँ लेते हैं? जैसे और जगह है (وَ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ) (17/इसा : 67) यानी "जब समुन्द्र में मुश्किल में फँसते हैं उस वक़्त अल्लाह तआला के सिवा सबको भूल जाते हैं और जब वहाँ से नजात पाकर ख़ुश्की में आ जाते हैं तो फ़ौरन मुँह फेर लेते हैं।"

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक्का फ़तह कर लिया तो इक्रिमा बिन अबी जहल यहाँ से भाग निकला और हब्शा जाने के इरादे से कश्ती में बैठ गया। इत्तिफ़ाक़न सख़्त तूफ़ान आया और कश्ती इधर उधर हिलने डुलने लगी। जितने मुश्रिकीन कश्ती में थे सब कहने लगे, यह मौक़ा सिर्फ़ अल्लाह तआला को पुकारने का है, उठो और ख़ुलूस दिल के साथ अल्लाह तआला से दुआएँ करो, इस वक़्त नजात उसी के हाथ है। यह सुनते ही इक्रिमा (रज़ि.) ने कहा, सुनो! अल्लाह तआला की क़सम! अगर समुन्द्र की इस बला से सिवाय रब के कोई और नजात नहीं दे सकता तो ख़ुश्की की मुसीबतों को टालने वाला भी वही है। ऐ अल्लाह तआला! मैं तुझसे वादा करता हूँ कि अगर यहाँ से बच गया तो सीधा जाकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) के हाथ में हाथ रख दूँगा और आप (ﷺ) का कलिमा पढ़ लूँगा। मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआला के रसूल मेरी ख़ताओं से दरगुज़र फ़र्मा लेंगे और मुझ पर रहमो करम फ़र्माएँगे। चुनाँचे यही हुआ भी।' (सीरते इब्ने इस्हाक़ और इसकी सनद ज़ईफ़ है। हाकिम : 3/241; और सनद इसकी मौज़ूअ है।) (लि यक्फ़ुरू) और (लि यतमत्तऊ) में लाम जो है उसे लामे आक़िबत कहते हैं, इसलिए कि इनका क़सद दरअसल यह नहीं होता और फ़िल्वाक़ेअ इनकी तरफ़ नज़रें डालने से बात भी यही है। हाँ! अल्लाह तआला की निस्बत से तो यह लामे ता'लील है। इसकी पूरी तक़रीर हम आयत (لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَ حَزَنًا) (28/क़सस : 8) में कर चुके हैं।

***

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا
لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

तर्जुमा : "क्या यह नहीं देखते कि हमने हरम को अमन वाला बना दिया है हालाँकि इनके आसपास से लोग उचक लिये जाते हैं। क्या यह बातिल पर तो यक़ीन रखते हैं और अल्लाह तआला की नेअमतों पर एहसान नहीं मानते? उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह तआला पर झूठ इफ़्तिरा करे और जब हक़ उसके पास आ जाए वह उसे नाहक़ बतलाये, क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। (68) और जो लोग हमारी राह में मुशक़्क़तें बर्दाश्त करते हैं हम उन्हें अपनी राहें ज़रूर दिखा देंगे। यक़ीनन अल्लाह तआला नेक कारों का साथी है।" (69)

मेरी नेअमत याद करो और मेरे नबी पर ईमान लाओ (आ. 67 से 69) : अल्लाह तआला कुरैश को अपना एहसान जताता है कि उसने अपने हरम में उन्हें जगह दी है। जिसमें जो शख़्स आ जाये अमन में पहुँच जाता है। उसके आसपास जिदाल व क़िताल लूटमार होती रहती है और यहाँ रहने वाले अम्नो-अमान से अपने दिन गुज़ारते हैं जैसे सूरह (لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ) (106/कुरैश : 1) में बयान फ़र्माया। तो क्या इस इतनी बड़ी नेअमत का शुक्रिया यही है कि यह अल्लाह तआला के साथ दूसरों की भी इबादत करें? बजाय ईमान लाने के कुफ़्र करें और ख़ुद ताबह होकर दूसरों को भी उसी हलाकत वाली राह ले चलें!..... इन्हें तो यह चाहिए था कि रब वाहिद की इबादत में सबसे बढ़े हुए रहें। नबी आख़िरुज़्ज़िमाँ (ﷺ) के पूरे और सच्चे तरफ़दार रहें। लेकिन इन्होंने इसके ख़िलाफ़ अल्लाह तआला के साथ शिर्क व कुफ़्र करना और नबी अकरम (ﷺ) को झुठलाना और ईज़ा पहुँचाना शुरू कर रखा है। अपनी सरकशी में यहाँ तक बढ़ गए कि अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ) को मक्का से निकाल दिया।

आख़िरकार अल्लाह तआला की नेअमतें उनसे छिननी शुरू हो गईं। बद्र के दिन इनके बड़े बड़े सरदार बुरी तरह क़त्ल हुए। फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी करीम (ﷺ) के हाथों पर मक्का को फ़तह किया और इन्हें ज़लील व पस्त किया। उससे बढ़कर ज़ालिम कोई नहीं जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे। वह्यी आती न हो और कह दे कि मेरी तरफ़ वह्यी की जाती है, और उससे भी बढ़कर ज़ालिम कोई नहीं जो अल्लाह तआला की सच्ची वह्यी को और हक़ को झुठलाये और बावजूद हक़ पहुँचने के तकज़ीब पर कमर बस्ता रहे, ऐसे मुफ़्तरी

और मुक्ज़िब (झूठलाने वाले) लोग काफ़िर हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है। राहे रब में मशक़्क़त करने वाले से मुराद रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके अस्हाब (रज़ि.) और आपके ताबेदार लोग हैं जो क़ियामत तक होंगे, फ़र्माता है कि हम उन कोशिश और जुस्तजू करने वालों की रहनुमाई करेंगे, दुनिया और दीन में उन्हें रास्ते दिखाते रहेंगे।

हज़रत अबू अहमद अब्बास हम्दानी (रह.) फ़र्माते हैं "मुराद यह है कि जो लोग अपने इल्म पर अमल करते हैं अल्लाह तआला उन्हें उन उमूर में भी हिदायत देता है जो उनके इल्म में नहीं होते।" अबू सुलेमान दारानी (रह.) से जब यह ज़िक्र किया जाता है तो आप फ़र्माते हैं कि "जिसके दिल में कोई बात पैदा हो भले वह भली बात हो ताहम उसे उस पर अमल न करना चाहिए जब तक क़ुरआन व हदीस से साबित न हो, जब साबित हो अमल करे और अल्लाह तआला की हम्द करे कि जो उसके जी में आया था वही क़ुरआन व हदीस में भी निकला, अल्लाह तआला मुहसिनीन के साथ है।"

हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) फ़र्माते हैं कि "एहसान उसका नाम है जो तेरे साथ बदसुलूकी करे, तू उसके साथ नेक सुलूक करे, एहसान करने वाले से एहसान करने का नाम एहसान नहीं, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से सूरह अन्कबूत की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह रूम

سورۃ الروم

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह रूम - 30

आयातः 60 मक्की सूरह, पैराग्राफः 8

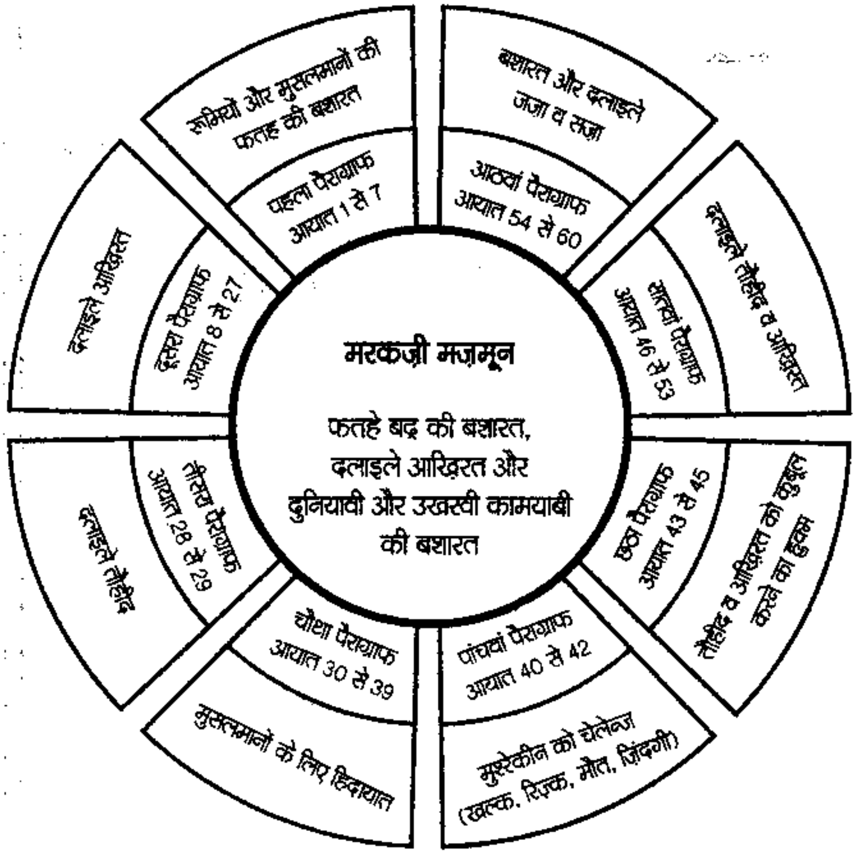

जमानए नुज़ूल :

सूरह रूम हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी, 615 इस्वी) से पहले 5 नबवी के अवाइल में नाज़िल हुई। इस सूरह में पेशगोई की गई कि ईरानियों की बढ़ती हुई फुतुहात रूक जाएगी और ईरानियों पर रूमी ग़ालिब आ जाएंगे। और उसी साल मुसलमान भी फतह से हमकिनार होगें। 8,9 साल बाद सूरह सूरह रूम की ये बशारत, रूमियों की फतह और रमज़ान 2 हिजरी (624 इस्वी) में जंगे बद्र में मुसलमानों की फतह की सूरत में ज़ाहिर हुई।

तफ़्सीर सूरह रूम

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

الٓمّٓ ① غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ② فِىۡۤ اَدۡنَى الۡاَرۡضِ وَهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَيَغۡلِبُوۡنَ ③ فِىۡ
بِضۡعِ سِنِيۡنَ ؕ لِلّٰهِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَمِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَيَوۡمَئِذٍ يَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ④ بِنَصۡرِ اللّٰهِ ؕ
يَنۡصُرُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ⑤ وَعۡدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخۡلِفُ اللّٰهُ وَعۡدَهٗ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ
النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ⑥ يَعۡلَمُوۡنَ ظَاهِرًا مِّنَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۖۚ وَهُمۡ عَنِ الۡاٰخِرَةِ هُمۡ
غٰفِلُوۡنَ ⑦

तर्जुमा : "अलिफ़ लाम मीम (1) रूमी मग़लूब हो गए हैं, (2) नज़दीक की ज़मीन पर और वह अपने मग़लूब होने के बाद अन्क़रीब ग़ालिब आ जाएँगे, (3) चंद साल में ही। उससे पहले और उसके बाद भी इख़्तियार अल्लाह तआला ही का है। उस दिन मुसलमान शादमान होंगे (4) अल्लाह की मदद से। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। असल ग़ालिब और मेहरबान वही है। (5) अल्लाह तआला का वादा है, अल्लाह तआला अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (6) वह तो सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी के ज़ाहिर को ही जानते हैं और आख़िरत से तो बिलकुल ही बेख़बर हैं।" (7)

रूमियों के ग़ालिब होने की अज़ीम पेशीनगोई (आ. 1 से 7) : यह आयतें उस वक़्त नाज़िल हुईं जबकि नीशापूर का शाहे फ़ारस बिलादे शाम और जज़ीरा के आसपास के शहरों पर ग़ालिब आ गया और मुल्के रूम का बादशाह हिरक़्ल तंग आकर क़ुस्तुन्तुनिया में महसूर हो गया। मुद्दतों मुहासिरा रहा आख़िर पासा पलटा और हिरक़्ल की फ़तह हो गई। मुफ़स्सल बयान आगे आ रहा है। मुस्नदे अहमद में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत के बारे में मरवी है कि रूमियों को शिकस्त पर शिकस्त हुई और मुश्रिकीन ने उस पर बहुत ख़ुशियाँ मनाईं। इसलिए कि जैसे यह बुतपरस्त थे ऐसे ही अहले फ़ारस भी उनसे मिलते जुलते थे और मुसलमानों की चाहत थी कि रूमी ग़ालिब आएँ इसलिए कि कम अज़्कम वह अहले किताब (आसमानी किताब पर ईमान रखने वाले) तो थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने जब यह ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से

किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "रूमी अन्क़रीब फिर ग़ालिब आ जाएँगे।" सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने मुश्रिकीन को जब यह ख़बर पहुँचाई तो उन्होंने कहा, आओ कुछ शर्त करो और मुद्दत मुक़र्रर कर लो, अगर रूमी उस मुद्दत में ग़ालिब न आएँ तो तुम हमें इतना इतना देना और तुम सच्चे निकले तो हम तुम्हें इतना इतना देंगे। पाँच साल की मुद्दत मुक़र्रर हुई, वह मुद्दत पूरी हो गई और रूमी ग़ालिब न आये तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने ख़िदमते नबवी में यह ख़बर पहुँचाई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "तुमने दस साल की मुद्दत क्यूँ न मुक़र्रर की।" सईद बिन जुबेर (रह.) कहते हैं कि "क़ुरआन में मुद्दत के लिए लफ़्ज़ (बिज़्अ) इस्तेमाल हुआ है और दस से कम पर इत्लाक़ किया जाता है।" चुनाँचे यही हुआ भी कि दस साल के अंदर अंदर रूमी फिर ग़ालिब आ गये। इसी का बयान इस आयत में है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति रूम : 3193; और वह हसन है; अहमद : 1/276; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/330; हाकिम : 2/410)

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने इस हदीस को ग़रीब कहा है। हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं, "बद्र की लड़ाई के बाद रूमी भी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गये।" हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "पाँच चीज़ें गुज़र चुकी हैं, दुख़ान और लिज़ाम और बत्शा और शक़्क़े क़मर का मोजिज़ा और रूमियों का ग़ालिब आना।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़ुरक़ान बाब (फ़सौफ़ यकूनु लिज़ामा) : 4767; सहीह मुस्लिम : 2798) और रिवायत में है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की शर्त सात साल की थी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनसे पूछा कि (बिज़्अ) के क्या मअनी तुममें होते हैं? जवाब दिया कि दस से कम। फ़र्माया फिर जाओ मुद्दत दो साल बढ़ा दो।" चुनाँचे उसी मुद्दत के अंदर अंदर रूमियों के ग़ालिब आ जाने की ख़बरें अरब में पहुँच गईं और मुसलमान ख़ुशियाँ मनाने लगे। उसी का बयान इन आयतों में है। और रिवायत में है कि मुश्रिकों ने हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) से यह आयत सुनकर कहा कि क्या तुम इसमें भी अपने नबी को सच्चा जानते हो? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, हाँ! इस पर शर्त ठहरी और मुद्दत गुज़र चुकी और रूमी ग़ालिब न आये। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को जब उस शर्त का मालूम हुआ तो आप (ﷺ) रंजीदा हुए और जनाब सिद्दीक़ (रज़ि.) से फ़र्माया, तुमने ऐसा क्यूँ किया? जवाब मिला कि अल्लाह तआला के रसूल की सच्चाई पर भरोसा करके। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "फिर जाओ और मुद्दत दस साल मुक़र्रर कर लो ख़्वाह चीज़ भी बढ़ानी पड़े। आप (रज़ि.) गए मुश्रिकीन ने दोबारा भी मुद्दत बढ़ाकर शर्त मंज़ूर कर ली।" अभी दस साल पूरे नहीं हुए थे कि रूमी फ़ारस पर ग़ालिब आ गये और मदयन में उनके लश्कर पहुँच गए और रूमिया की बिना उन्होंने डाल ली। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने क़ुरैश से शर्त का माल लिया और नबी अकरम (ﷺ) के पास आये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "इसे सदक़ा कर दो।" और रिवायत में है कि यह वाक़िया ऐसी शर्त बाँधने के हराम होने से पहले का है। इसमें है कि मुद्दत छः साल मुक़र्रर हुई थी। उसमें यह भी है कि जब यह पेशीनगोई पूरी हुई और रूमी ग़ालिब आये तो बहुत से मुश्रिकीन ईमान ले आये। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिर्रूम : 3194; और सनद हसन है।)

एक बहुत ही अजीबो ग़रीब क़िस्सा इमाम सुनैद बिन दाऊद ने अपनी तफ़्सीर में यह वारिद किया है कि इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं "फ़ारस में एक औरत थी जिसके बच्चे ज़बरदस्त पहलवान या बादशाह ही होते

थे। किसरा ने एक मर्तबा उसे बुलवाया और उससे कहा कि मैं रूमियों पर एक लश्कर भेजना चाहता हूँ और तेरी औलाद में से किसी को उस लश्कर का सरदार बनाना चाहता हूँ। अब तुम मश्वरा दो कि किसे सरदार बनाऊँ? उसने कहा सुनो! मेरा फ़लाँ लड़का हुर्मुज़ तो लोमड़ी से ज़्यादा चालाक और शिकरे से ज़्यादा होशियार है। दूसरा लड़का फ़रख़ान तीर जैसा है। तीसरा लड़का शहरबराज़ सबसे ज़्यादा हलीमुत्तबअ है। अब तुम जिसे चाहो सरदारी दो। बादशाह ने सोच समझकर शहरबराज़ को सरदार बनाया। यह लश्करों को लेकर चला। रूमियों से लड़ा भिड़ा और उन पर ग़ालिब आया। उनके लश्कर काट डाले उनके शहर उजाड़ दिये, उनके बाग़ात बर्बाद कर दिये। उस सरसब्ज़ व शादाब मुल्क को वीरान व ग़ारत कर दिया और अज़्रआत और बसरा में जो अरब की हुदूद से मिलते हैं एक ज़बरदस्त मअरका हुआ और वहाँ फ़ारसी रूमियों पर ग़ालिब आ गये। जिससे कुरैश ख़ुशियाँ मनाने लगे और मुसलमान नाख़ुश हुए। कुफ़्फ़ारे कुरैश मुसलमानों को तअ़ने देने लगे कि देखो, तुम और नसरानी अहले किताब हो और हम और फ़ारसी अनपढ़ हैं। हमारे वाले तुम्हारे वालों पर ग़ालिब आ गये। इसी तरह हम भी तुम पर ग़ालिब आ जाएँगे और अगर लड़ाई हुई तो हम बतला देंगे कि तुम इन अहले किताब की तरह हमारे हाथों हार जाओगे। इस पर कुरआन की यह आयतें उतरीं।''

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) इन आयतों को सुनकर मुश्रिकीन के पास आए और फ़र्माने लगे, ''अपनी इस फ़तह पर न इतराओ यह बहुत जल्द हार से बदल जाएगी और हमारे भाई अहले किताब तुम्हारे भाईयों पर ग़ालिब आएँगे। इस बात का यक़ीन कर लो इसलिए कि यह मेरी बात नहीं बल्कि हमारे नबी अकरम (ﷺ) की यह पेशीनगोई है।'' यह सुनकर उबय बिन ख़ल्फ़ खड़ा होकर कहने लगा कि ऐ अबू फ़ुज़ैल! तुम झूठ कहते हो। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह के दुश्मन! तू झूठा है। उसने कहा अच्छा! मैं दस दस ऊँटनियों की शर्त लगाता हूँ। अगर तीन साल तक रूमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गये तो मैं तुम्हें दस ऊँटनियाँ दूँगा वरना तुम मुझे देना। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने यह शर्त क़बूल कर ली। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) से आकर इसका ज़िक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''मैंने तुमसे तीन साल का नहीं कहा था (बिज़्उन) का लफ़्ज़ कुरआन में है और वह तीन से नौ तक बोला जाता है। जाओ ऊँटनियाँ भी बढ़ा दो और मुद्दत भी।'' हज़रत अबूबक्र (रज़ि) चले जब उबय के पास पहुँचे तो वह कहने लगा, शायद तुम्हें पछतावा हो रहा है? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, सुनो! मैं तो पहले से भी ज़्यादा तैयार होकर आया हूँ। आओ मुद्दत भी बढ़ा लो और शर्त का माल भी ज़्यादा कर लो। चुनाँचे एक सौ ऊँट मुक़र्रर हुए और नौ साल की मुद्दत ठहर गयी।'' उसी मुद्दत में रूमी फ़ारस पर ग़ालिब आ गये और मुसलमान कुरैश पर छा गये। रूमियों के ग़ल्बे का वाक़िया यूँ हुआ कि जब फ़ारसी ग़ालिब आ गये तो शहरबराज़ का भाई फ़रख़ान शराबनोशी करते हुए कहने लगा मैंने देखा है कि गोया मैं किसरा के तख़्त पर आ गया हूँ और फ़ारस का बादशाह बन गया हूँ। यह ख़बर किसरा को भी पहुँच गयी। किसरा ने शहरबराज़ को लिखा कि मेरा यह ख़त पाते ही अपने उस भाई को क़त्ल करके उसका सिर मेरे पास भेज दे। शहरबराज़ ने जवाब लिखा कि ऐ बादशाह! तुम इतनी जल्दी न करो। फ़रख़ान जैसा बहादुर शेर और जुर्अत के साथ दुश्मनों के झुण्ड में घुसने वाला किसी को तुम न पाओगे। बादशाह ने फिर जवाब लिखा कि उससे बहुत ज़्यादा बेहतर और शेर दिल पहलवान मेरे दरबार में एक से एक बेहतर मौजूद हैं तुम उसका ग़म

न करो और मेरे हुक्म की फ़ौरन ता'मील करो। शहरबराज़ ने फिर इसका जवाब लिखा और दोबारा बादशाह किसरा को समझाया, इस पर बादशाह आग बबूला हो गया। उसने ऐलान कर दिया कि शहरबराज़ से मैंने सरदारी छीन ली और उसकी जगह उसके भाई फ़रख़ान को अपने लश्कर का सिपहसालार मुक़र्रर कर दिया। इसी मज़्मून का एक ख़त लिखकर क़ासिद के साथ शहरबराज़ को भेज दिया कि तुम आज से मअज़ूल हो और तुम अपना ओहदा फ़रख़ान को दे दो। साथ ही क़ासिद को एक पोशीदा ख़त और दिया कि शहरबराज़ जब अपने ओहदे से उतर जाए और फ़रख़ान उस ओहदे पर आ जाए तो तुम उसे मेरा यह फ़र्मान दे देना। क़ासिद जब वहाँ पहुँचा तो शहरबराज़ ने ख़त पढ़ते ही कहा कि मुझे बादशाह का हुक्म मंज़ूर है। मैं बख़ुशी अपना ओहदा फ़रख़ान को दे रहा हूँ। चुनाँचे वह तख़्त से उतर गया और फ़रख़ान को क़ब्ज़ा दे दिया। फ़रख़ान जब तख़्ते सल्तनत पर बैठ गया और लश्कर ने उसकी इताअ़त क़बूल कर ली तो क़ासिद ने वह दूसरा ख़त फ़रख़ान के सामने पेश किया जिसमें शहरबराज़ के क़त्ल का और उसका सिर दरबारे शाही में भेजने का फ़र्मान था। फ़रख़ान ने उसे पढ़कर शहरबराज़ को बुलाया और उसकी गर्दन मारने का हुक्म दे दिया। शहरबराज़ ने कहा, जल्दी न कर मुझे वसिय्यत तो लिख लेने दे उसने उसे मंज़ूर कर लिया तो शहरबराज़ ने अपना दफ़्तर मंगवाया और उसी में से वह काग़ज़ात जो शाहे किसरा ने फ़रख़ान के क़त्ल के लिए उसे लिखे थे वह सब निकाले और फ़रख़ान के सामने पेश किये और कहा देख इतने सवाल व जवाब मेरे और बादशाह के बीच तेरे बारे में हुए। लेकिन मैंने अपनी अक़्लमंदी से काम लिया और जल्दी न की, तू एक ख़त देखते ही मेरे क़त्ल पर आमादा हो गया, ज़रा सोच ले। उन ख़ुतूत को देखकर फ़रख़ान की आँखें खुल गईं वह फ़ौरन तख़्त से नीचे उतर गया और अपने भाई शहरबराज़ को फिर से मालिके कुल बना दिया। शहरबराज़ ने उसी वक़्त शाहे रूम हिरक़्ल को ख़त लिखा कि मुझे तुमसे ख़ुफ़िया मुलाक़ात करनी है और एक ज़रूरी अम्र में मश्वरा करना है, उसे मैं न तो किसी क़ासिद की मअ़रिफ़त आपको कहलवा सकता हूँ न ख़त में लिख सकता हूँ, बल्कि मैं आप ही आमने सामने उसको पेश कर दूँगा। पचास आदमी अपने साथ लेकर ख़ुद आ जाईए और पचास ही मेरे साथ होंगे।

क़ैसर को जब यह पैग़ाम पहुँचा तो वह उससे मुलाक़ात के लिए चल पड़ा। लेकिन एहतियातन अपने साथ पाँच हज़ार सवार ले लिये और आगे आगे जासूसों को भेज दिया कि अगर कोई तर्कीब हो या कोई मकर हो तो खुल जाए। जासूसों ने आकर ख़बर दी कि कोई बात नहीं है शहरबराज़ तंहा अपने साथ सिर्फ़ पचास सवारों को लेकर आया है उसके साथ कोई और नहीं। चुनाँचे क़ैसर ने भी मुत्मइन होकर अपने सवारों को वापिस भेज दिया और अपने साथ सिर्फ़ पचास आदमी रख लिये। जो जगह मुलाक़ात की मुक़र्रर हुई थी वहाँ पहुँच गए। वहाँ एक रेशमी क़ुबा था उसमें जाकर दोनों तंहा बैठ गये। पचास आदमी अलग छोड़ दिये गये। दोनों वहाँ बेहथियार थे सिर्फ़ छुरियाँ पास थीं और दोनों की तरफ़ से एक तर्जुमान साथ था। ख़ेमा में पहुँचकर शहरबज़ार ने कहा, ऐ शाहे रूम! बात यह है कि तुम्हारे मुल्क को वीरान करने वाले और तुम्हारे लश्करों को शिकस्त देने वाले हम दोनों भाई हैं, हमने अपनी चालाकियों और शुजाअ़त से यह मुल्क अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। लेकिन अब हमारा बादशाह किसरा हमसे हसद करता है और हमारा मुख़ालिफ़ बन बैठा है। मुझे उसने मेरे भाई को क़त्ल कर देने का फ़र्मान भेजा, मैंने फ़र्मान को न माना तो उसने चालाकी करके मेरे भाई को

मेरे क़त्ल का हुक्म भेजा। इसलिए हम दोनों ने अब यह तै कर लिया है कि हम आपके लश्कर में आ जाएँ और किसरा के लश्करों से आपके साथ होकर लड़ें। क़ैसर ने यह बात बड़ी ख़ुशी से मंज़ूर कर ली। फिर उन दोनों में आपस में इशारों किनायों से बातें हुईं जिनका मतलब यह था कि यह दोनों तर्जुमान क़त्ल कर दिये जाएँ, ऐसा न हो कि यह राज़ इनकी वजह से खुल जाए। क्योंकि जहाँ दो के सिवा तीसरे के कान में कोई बात पहुँची तो वह फ़ैल जाती है। दोनों इस पर इत्तिफ़ाक़ करके खड़े हो गए और हर एक ने अपनी छुरी से अपने तर्जुमान को क़त्ल कर दिया। फिर अल्लाह तआला ने किसरा को हलाक किया और हुदेबिया के दिन उसकी ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को मिली। अस्हाबे रसूल (ﷺ) इससे बहुत ख़ुश हुए। यह स्याक़ अजीब है और यह ख़बर ग़रीब है। अब आयत के अल्फ़ाज़ के बारे में सुनिए। हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरू में होते हैं उनकी बहस तो हम कर ही चुके हैं। सूरह बक़रह की तफ्सीर का शुरू देख लीजिए। रूमी सबके सब ऐस बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम की नस्ल से हैं। बनी इस्राईल के यह चचाज़ाद भाई हैं। रूमियों को बनू असफ़र भी कहते हैं। यह यूनानियों के मज़हब पर थे, यूनानी याफ़िस बिन नूह की औलाद में से हैं। तुर्कों के चचाज़ाद भाई होते हैं, यह सितारा परस्त थे। सातों सितारों को मानते और पूजते थे। उन्हें मुत्हैरा भी कहा जाता है। यह क़ुतुबे शिमाल को क़िब्ला मानते थे। दमिश्क़ की बिना इन्हीं के हाथों पड़ी है, वहीं इन्होंने अपनी इबादतगाह बनाई जिसके मेहराब शिमाल की तरफ़ हैं। हज़रत ईसा (عليه السلام) की नबुव्वत के बाद भी तीन सौ साल तक रूमी अपने पुराने ख़्यालात पर ही रहे। उनमें से जो कोई शाम का और जज़ीरे का बादशाह हो जाता, उसे क़ैसर कहा जाता था। सबसे पहले रूमियों के बादशाह कुस्तुन्तीन इब्ने कुस्तुस ने नसरानी मज़हब क़बूल किया। उसकी माँ का नाम मरयम था। हैलानिया ग़न्दक़ानिया थी। हर्रान की रहने वाली। पहले इसी ने नसरानियत क़बूल की थी फिर इसके कहने सुनने से इसके बेटे ने भी यही मज़हब इख़्तियार कर लिया। यह बड़ा फ़ल्सफ़ी, अक़्लमंद और मक्कार आदमी था। यह भी मशहूर है कि उसने दरअसल दिल से इस मज़हब को नहीं माना था। उसके ज़माने में नसरानी यहाँ जमा हो गए। उनमें आपस में मज़हबी छेड़छाड़ और इख़्तिलाफ़ और मुनाज़रे छिड़ गए। अब्दुल्लाह बिन अरयूस से बड़े बड़े मुनाज़िरे हुए और इस क़द्र इंतिशार और तफ़्रीक़ हुई कि बयान से बाहर है। तीन सौ अठारह पादरियों ने मिलकर एक किताब लिखी जो बादशाह को दी गई और वह शाही अक़ीदा तस्लीम की गई। इसी को अमानते कुब्रा कहा जाता है जो दरहक़ीक़त ख़यानते सग़ीरा है। यहीं फ़िक्ही किताबें उसी ज़माने में लिखी गईं। इनमें हलाल हराम के मसाइल बयान किये गए और इनके उलमा ने दिल खोलकर जो चाहा उनमें लिखा। जिस क़द्र जी में आई कमी ज़्यादती असल दीने मसीह में की और असल मज़हब मुहर्रफ़ व मुबद्दल हो गया। मश्रिक़ की जानिब नमाज़ें पढ़ने लगे। बजाय हफ़्ता के इतवार के दिन को बड़ा दिन बनाया। सलीब की पूजा शुरू हो गई। ख़िंज़ीर को हलाल कर लिया गया और बहुत से त्यौहार ईजाद कर लिये जैसे ईदे सलीब, ईदे क़िदास, ईदे ग़ितास वग़ैरह। फिर उन उलमा के सिलसिले क़ायम किये गए, एक तो बड़ा पादरी होता था फिर उसके नीचे पादरी होता था फिर उसके नीचे दर्जा बदर्जा और महकमे होते थे। रुहबानियत और तर्के दुनिया की बिदअत भी ईजाद कर ली। कनीसे और गिरजे बहुत सारे बना लिये गए और शहरे कुस्तुन्तुनिया की बुनियाद रखी गई और उस बड़े शहर को उसी बादशाह के नाम पर नामज़द किया गया। उस बादशाह ने बारह हज़ार गिरजे बना दिये। तीन मेहराबों से बैते लहम बना। उसकी माँ ने भी क़मामा बनाया। उन लोगों को मलिकिया कहते हैं इसलिए कि यह

लोग अपने बादशाह के दीन पर थे। उनके बाद यअ़क़ूबिया, फिर निस्तूरिया, यह सब निस्तूर के मुक़ल्लिद थे। फिर इनके बहुत से गिरोह थे। जैसे ह़दीस में है कि उनके बहत्तर फ़िर्क़े हो गए। उनकी सल्तनत बराबर चली आती थी, एक के बाद एक क़ैसर होता आ रहा था यहाँ तक कि आख़िर में क़ैसर हिरक़्ल हुआ। यह तमाम बादशाहों से ज़्यादा अ़क़्लमंद था बहुत बड़ा आ़लिम था, दानाई, ज़ैरकी, दूरअंदेशी और दूरबीनी में अपना सानी नहीं रखता था। उसने सल्तनत बहुत वसीअ़ कर ली और मम्लकत दूर दराज़ तक फैला दी। उसके मुक़ाबले में फ़ारस का बादशाह किसरा खड़ा हुआ और छोटी छोटी सल्तनतों ने भी उसका साथ दिया। उसकी सल्तनत क़ैसर से भी ज़्यादा बड़ी थी, यह मजूसी लोग थे, आग को पूजते थे। मुंदर्जा बाला रिवायत में तो है कि इसका सिपह सालार मुक़ाबला पर गया।

लेकिन मशहूर बात यह है कि ख़ुद किसरा उसके मुक़ाबले पर गया। क़ैसर को शिकस्त हुई यहाँ तक कि वह क़ुस्तुन्तुनिया में घिर गया। ईसाई उसकी बड़ी इ़ज़्ज़त व ता'ज़ीम करते थे, भले किसरा लम्बी मुद्दत तक मुह़ासिरे किये पड़ा रहा लेकिन दारुस्सल्तनत को फ़तह़ न कर सका। एक वजह यह भी थी कि उस शहर का निस्फ़ हिस्सा समुन्द्र की त़रफ़ था और निस्फ़ ख़ुश्की से मिला हुआ था। तो शाहे क़ैसर को कुमुक और रसद तरी के रास्ते से बराबर पहुँचती रही, आख़िर में क़ैसर एक चाल चला उसने किसरा को कहलवा भेजा कि आप जो चाहें मुझसे ले लीजिए और जिन शराइत़ पर चाहें मुझसे सुलह़ कर लीजिए। किसरा उस पर ख़ुश हो गया और इतना माल त़लब किया कि वह और यह मिलकर भी जमा करना चाहें तो जमा होना नामुम्किन था। क़ैसर ने उसे भी क़बूल कर लिया क्योंकि उसने उससे किसरा की बेवक़ूफ़ी का पता लगा लिया कि यह वह चीज़ माँगता है जिसका जमा करना दुनिया के इख़्तियार से बाहर है बल्कि सारी दुनिया मिलकर उसका दसवाँ हिस्सा भी जमा नहीं कर सकती। क़ैसर ने किसरा से कहलवा भेजा कि मुझे इजाज़त मिलनी चाहिए कि मैं अपने मुल्क शाम में चल फिरकर यह दौलत जमा कर लूँ और आपको सौंप दूँ। उसने यह दरख़्वास्त मंज़ूर कर ली। अब शाहे रूम ने अपने लश्कर को जमा किया और उनसे कहा कि मैं एक ज़रूरी और अहम काम के लिए अपने मख़सूस अह़बाब के साथ जा रहा हूँ अगर एक साल के अंदर अंदर आ जाऊँ तो यह मुल्क मेरा है वरना तुम्हें इख़्तियार है जिसे चाहो अपना बादशाह तस्लीम कर लेना। उन्होंने जवाब दिया कि हमारे बादशाह तो आप ही हैं ख़्वाह दस साल तक भी आप वापिस न लौटें तो क्या हुआ। यह यहाँ से मुख़्तसर सी जाँबाज़ जमाअ़त लेकर चुपचाप चल खड़ा हुआ। पोशीदा रास्तों से निहायत होशियारी, एह़तियात़ और चालाकी से बहुत जल्द फ़ारस के शहरों तक पहुँच गया और यकायक धावा बोल दिया। चूँकि यहाँ की फ़ौजें तो रूम पहुँच चुकी थीं, अ़वाम कहाँ तक मुक़ाबला करती, उसने क़त्ले आ़म शुरू कर दिया जो सामने पड़े तलवार के काम आये, यूँ ही बढ़ता चला गया यहाँ तक कि मदायन पहुँच गया, जो किसरा की सल्तनत की कुर्सी थी वहाँ की मुह़ाफ़िज़ फौज पर भी ग़ालिब आया उनको भी क़त्ल कर दिया और चारों त़रफ़ से माल जमा किया, उनकी तमाम औ़रतों को क़ैद कर लिया और तमाम लड़ने वालों को क़त्ल कर डाला। किसरा के लड़के को ज़िन्दा गिरफ़्तार किया। उसकी मह़ल सराय की औ़रतों को ज़िन्दा गिरफ़्तार किया उसकी दरबार वाली औ़रतें वग़ैरह भी पकड़ ली गईं उसके लड़के का सर मुँडाकर गधे पर बिठाकर औ़रतों समेत किसरा की त़रफ़ भेजा कि लीजिए जो माल और औ़रतें और गुलाम

आपने माँगे थे वह हाज़िर हैं। जब यह क़ाफ़िला किसरा के पास पहुँचा तो किसरा को सख़्त सदमा हुआ।

यह अभी तक कुस्तुन्तुनिया का मुहासिरा किये पड़ा था और क़ैसर की वापसी का इंतिज़ार कर रहा था कि उसके पास उसका कुल ख़ानदान और सारी हरमसिरा उस ज़िल्लत की हालत में पहुँची। यह सख़्त ग़ज़बनाक हुआ और बड़ा सख़्त हमला शहर पर कर दिया लेकिन उसमें कोई कामयाबी न हुई। अब यह नहरे जीहून की तरफ़ चला कि क़ैसर को वहाँ रोक ले क्योंकि फ़ारस से कुस्तुन्तुनिया आने का रास्ता यही था।

क़ैसर ने उसे सुनकर पहले से भी ज़बरदस्त हीला किया यानी उसने अपने लश्कर को तो दरिया के उस दहाने के पास छोड़ा और आप थोड़े से आदमी लेकर सवार होकर पानी के बहाव की तरफ़ चल दिया। कोई एक दिन रात का रास्ता चलने के बाद अपने साथ जो कुट्टी, चारा, लीद, गोबर वग़ैरह ले गया था उसे पानी में बहा दिया। यह चीज़ें पानी में बहती हुई किसरा के लश्कर के पास से गुज़रीं तो वह समझ गए कि क़ैसर यहाँ से गुज़र गया। यह उस लश्कर के जानवरों के आसार हैं। अब क़ैसर वापिस अपने लश्कर में पहुँच गया, इधर किसरा उसकी तलाश में आगे को चल दिया। क़ैसर अपने लश्करों समेत जीहून का दहाना उबूर करके रास्ता बदलकर कुस्तुन्तुनिया पहुँच गया। जिस दिन यह अपने दारुस्सल्तनत में पहुँचा, नसरानियों में बड़ी ख़ुशियाँ मनाई गईं। किसरा को जब यह ख़बर हुई तो उसका अजब हाल हुआ कि न पाये रफ़्तन न जाये माँदन, न तो रूम ही फ़तह हुआ और न फ़ारस ही रहा। हैरत में रह गया और रूमी ग़ालिब आ गये। फ़ारस की औरतें और वहाँ के माल उनके क़ब्ज़े में आये। यह कुल उमूर नौ साल में हुए और रूमियों ने अपनी खोई हुई सल्तनत फ़ारसियों से दोबारा ले ली और मग़लूब होकर ग़ालिब आ गये। यह अज़्रआत और बसरा के मअरके में अहले फ़ारस ग़ालिब आ गये थे और यह मुल्के शाम का वह हिस्सा था जो हिजाज़ से मिलता था। यह भी क़ौल है कि यह हज़ीमत जज़ीरा में हुई थी जो रूमियों की सरहद का मक़ाम है और फ़ारस से मिलता है, वल्लाहु आलम! फिर नौ साल के अंदर अंदर रूमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गए।

क़ुरआने करीम में लफ़्ज़ (बिज़्अ) का है और इसका इत्लाक़ भी नौ तक होता है। और यही तफ़्सीर इस लफ़्ज़ की तिर्मिज़ी और इब्ने जरीर वाली हदीस में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम्हें एहतियातन दस साल तक रखने चाहिए थे क्योंकि (बिज़्अ) के लफ़्ज़ का इत्लाक़ तीन से लेकर नौ तक होता है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिर्रूम : 3191; और वह हसन है।) उसके बाद (क़ब्लु) और (बअ्दु) पर पेश इज़ाफ़त के हटा देने की वजह से है। यानी इससे पहले और इसके बाद हुक्म अल्लाह तआला ही का है। उस दिन जबकि रूम फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएगा, मुसलमान ख़ुशियाँ मनाएँगे। अक्सर उलमा (रह.) का क़ौल है कि बद्र की लड़ाई के दिन रूमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ गए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) सुद्दी, सौरी, और अबू सईद (रह.) यही फ़र्माते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिर्रूम : 3192; और वह हसन है।) एक गिरोह का ख़्याल है कि यह ग़ल्बा हुदेबिया के साल हुआ था। इक्रिमा, ज़ोहरी, और क़तादा (रह.) वग़ैरह का यही क़ौल है। कुछ ने इसकी तौजीह यह बयान की है कि क़ैसरे रूम ने नज़्र मानी थी कि अगर अल्लाह तआला उसे फ़ारस पर ग़ालिब करेगा तो वह उसके शुक्रिये में पा प्यादा बैतुल मक़्दिस तक जाएगा। चुनाँचे उसने नज़्र पूरी की और बैतुल

मक़्दिस पहुँचा। यह यहीं था जो इसके पास रसूले करीम (ﷺ) का नामा-ए-मुबारक पहुँचा, जो आप (ﷺ) ने हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) के साथ बसरा के गवर्नर को भेजा था उसने हिरक़्ल को पहुँचाया, हिरक़्ल ने नामाए नबी पाते ही शाम में जो हिजाज़ी अरब थे उन्हें अपने पास बुलवाया। उनमें अबू सुफ्यान बिन सख़र बिन हर्ब उम्वी भी था और दूसरे कुरैश के इज़्जतदार बड़े बड़े लोग थे। उसने उन सबको अपने सामने बिठाकर पूछा कि तुममें से इसका क़रीबी रिश्तेदार कौन है? जिसने नबुव्वत का दावा किया है। अबू सुफ्यान ने कहा, मैं हूँ। बादशाह ने उन्हें आगे बिठा लिया और उनके साथियों को उनके पीछे बिठा दिया और उनसे कहा कि देखो! मैं इस शख़्स से चंद सवालात करूँगा अगर यह किसी बात का ग़लत जवाब दे तो तुम इसे झुठला देना। अबू सुफ़्यान का क़ौल है कि अगर मुझे इस बात का डर न होता कि अगर मैं झूठ बोलूँगा तो यह लोग उसे ज़ाहिर कर देंगे और फिर उस झूठ को मेरी तरफ़ मंसूब करेंगे तो मैं यक़ीनन झूठ बोलता। अब हिरक़्ल ने बहुत से सवालात किये। मस्लन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के हसब नसब की निस्बत आप (ﷺ) के औसाफ़ व आदात के बारे में वग़ैरह वग़ैरह। उन ही में एक सवाल यह भी था कि क्या वह ग़द्दारी करता है?

अबू सुफ़्यान ने कहा कि आज तक तो कभी वादाख़िलाफ़ी, अहदशिकनी और ग़द्दारी नहीं की। इस वक़्त हममें उसमें एक मुआहिदा है, न जाने उसमें वह किया करे? अबू सुफ़्यान के इस क़ौल से मुराद सुलह हुदेबिया है जिसमें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) और कुरैश में यह बात भी ठहरी थी कि दस साल तक कोई लड़ाई आपस में न होगी। यह वाक़िया उस क़ौल की पूरी दलील बन सकता है कि रूमी फ़ारस पर हुदेबिया के साल ग़ालिब आये थे। इसलिए कि क़ैसर ने अपनी नज़्र हुदेबिया के बाद पूरी की थी, वल्लाहु आलम!

लेकिन इसका जवाब वह लोग जो कहते हैं कि ग़ल्ब-ए-रूम फ़ारस पर बद्र के साल हुआ था, यह दे सकते हैं कि चूँकि मुल्क की इक़्तिसादी और माली हालत बहुत गिर गई थी इसलिए चार साल तक हिरक़्ल ने अपनी पूरी तवज्जह मुल्क की ख़ुशहाली और आबादी पर रखी। उसके बाद उस तरफ़ से इत्मिनान हासिल करके नज़्र को पूरी करने के लिए रवाना हुआ, वल्लाहु आलम! यह इख़्तिलाफ़ कोई ऐसा अहम अम्र नहीं। हाँ! मुसलमान रूमियों के जीतने से ख़ुश हुए इसलिए कि भले वह कैसे ही हों ताहम थे तो अहले किताब। और उनके मुक़ाबिल मजूसियों की जमाअत थी जिन्हें किताब से दूर का रिश्ता भी न था। तो लाज़मी अम्र था कि मुसलमान उनके ग़ल्बे से नाख़ुश हों और रूमियों के ग़ल्बे से ख़ुश हों। ख़ुद कुरआन में मौजूद है कि ईमान वालों के सबसे ज़्यादा दुश्मन यहूद और मुश्रिक हैं और उनसे दोस्तियाँ रखने में सबसे ज़्यादा क़रीब वह लोग हैं जो अपने आपको नसारा कहते हैं इसलिए कि उनमें उलमा और दरवेश लोग हैं और यह घमण्डी नहीं।

कुरआन सुनकर यह रो देते हैं क्योंकि हक़ को जान लेते हैं फिर इक़रार करते हैं कि ऐ अल्लाह! हम ईमान लाये तू हमें भी मानने वालों में कर ले। पस यहाँ भी फ़र्माया कि मुसलमान उस दिन ख़ुश होंगे जिस दिन अल्लाह तआला रूमियों की मदद करेगा। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। वह बड़ा ग़ालिब और बहुत बड़ा मेहरबान है।

हज़रत ज़ुबैर किलाबी (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने फ़ारसियों का रूमियों पर ग़ालिब आना फिर रूमियों का

फ़ारसियों पर ग़ालिब आना, फिर रूम और फ़ारस दोनों पर मुसलमानों का ग़ालिब आना ख़ुद अपनी आँखों से 15 साल के अन्दर देख लिया। आख़िर आयत में फ़र्माया अल्लाह तआला अपने दुश्मनों से बदले और इंतिक़ाम लेने पर क़ादिर और अपने दोस्तों की ख़ताओं और लग़्ज़िशों से दरगुज़र फ़र्माने वाला है। जो ख़बर तुम्हें दी है कि रूमी बहुत जल्द फ़ारसियों पर ग़ालिब आ जाएँगे यह अल्लाह तआला की ख़बर है, रब तआला का वादा है, यह परवरदिगार का फ़ैसला है नामुम्किन है कि ग़लत निकले, टल जाए या ख़िलाफ़ हो जाए। जो हक़ के क़रीब हो उसे भी रब तआला हक़ से बहुत दूर वालों पर ग़ालिब रखता है। हाँ! अल्लाह तआला की हिक्मतों को कम इल्म जान नहीं सकते। अक्सर लोग दुनिया का तो इल्म ख़ूब रखते हैं, उसकी गुत्थियाँ मिनटों में सुलझा देते हैं, उसमें ख़ूब दिमाग़ दौड़ाते हैं, इसके बुरे भले, नफ़ा नुक़्सान को पहचान लेते हैं , एक नज़र में उसकी ऊँच नीच देख लेते हैं , दुनिया कमाने का, पैसे जोड़ने का ख़ूब सलीक़ा रखते हैं, लेकिन उमूरे दीन में, आख़िरत के कामों में सिर्फ़ जाहिल, ग़ब्बी और कम फ़हम होते हैं, यहाँ न दिमाग़ काम करे, न समझ पहुँच सके, न ग़ौरो फ़िक्र की आदत। हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं "बहुत से ऐसे भी हैं कि नमाज़ तक तो ठीक पढ़ नहीं सकते लेकिन दिरहम चुटकी में लेते ही वज़न बता दिया करते हैं।"

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "दुनिया की आबादी और रौनक़ की तो बीसियों सूरतें इनका ज़हन गढ़ लेता है लेकिन दीन में सिर्फ़ जाहिल, आख़िरत से बिलकुल ग़ाफ़िल हैं।" (तब्री : 20/76)

***

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِم ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ
وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ⑧ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ
اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ⑨ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا
السُّوأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ⑩

तर्जुमा : "क्या इन लोगों ने अपने दिल में ग़ौर नहीं किया? कि अल्लाह तआला ने आसमानों को और ज़मीन को और इनके बीच जो कुछ है सबको बेहतरीन क़रीने से मुक़र्रर वक़्त तक के लिए ही पैदा किया है। हाँ! अक्सर लोग यक़ीनन अपने रब तआला की मुलाक़ात के इंकारी हैं।

(8) क्या इन्होंने ज़मीन में चल फिरकर यह नहीं देखा? कि इनसे पहले के लोगों का अंजाम कैसा हुआ? वह इनसे बहुत ज़्यादा तवाना और ताक़तवर थे उन्होंने भी ज़मीन बोयी जोती थी और इनसे भी ज़्यादा आबादी की थी। उनके पास उनके रसूल मोजिज़ा लेकर आये थे। यह तो नामुम्किन था कि अल्लाह तआला उन पर ज़ुल्म करता बल्कि दरअसल वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (9) फिर आख़िरकार बुरा करने वालों का बुरा ही हुआ इसलिए कि वह अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाते थे और उनकी हँसी उड़ाते थे।" (10)

अल्लाह की निशानियों में ग़ौरो फ़िक्र करो (आ. 8 से 10) : चूँकि कायनात का ज़र्रा ज़र्रा हक़ जल्ल व अला का निशान है और उसकी तौहीद और रुबूबियत पर दलालत करने वाला है। इसलिए इर्शाद होता है कि मौजूदात में ग़ौरो फ़िक्र किया करो और क़ुदरते रब तआला की इन निशानियों से उस मालिक को पहचानो और उसकी क़द्र व तअज़ीम करो। कभी आलमे अल्वा को देखो कभी आलमे सुफ़्ला पर नज़र डालो, कभी और मख़्लूक़ात की पैदाइश को सोचो और समझो कि यह चीज़ें बेकार और अबस पैदा नहीं की गईं। बल्कि रब तआला ने इन्हें कारआमद और निशाने क़ुदरत बनाया है। हर एक का एक वक़्त मुक़र्रर है यानी क़ियामत का दिन, जिसे अक्सर लोग मानते ही नहीं, इसके बाद नबियों की सदाक़त को इस तरह ज़ाहिर करता है कि देख लो इनके मुख़ालेफ़ीन का किस क़द्र इब्रतनाक अंजाम हुआ? और इनके मानने वालों को किस तरह दोनों जहान की इ़ज़्ज़त मिली? तुम चल फिरकर अगले वाक़ियात मालूम करो कि गुज़िश्ता उम्मतें जो तुमसे ज़्यादा ज़ोरावर थीं तुमसे ज़्यादा माल व ज़र वाली थीं तुमसे ज़्यादा कुंबे क़बीले वाली और बेटे पोते वाली थीं, तुम तो उनके दसवें हिस्सों को भी नहीं पहुँचे, वह तुमसे ज़्यादा उम्र वाले थे, तुमसे ज़्यादा आबादियाँ उन्होंने कीं, तुमसे ज़्यादा खेतियाँ और बाग़ात उनके थे, बावजूद इसके जब उनके पास उस ज़माने के रसूल आये, उन्होंने दलीलें और मोजिज़े देखे और फिर भी उस ज़माने के उन बदनसीबों ने उनकी न मानी और अपने ख़्यालात में मुस्तग़रक़ रहे और स्याहकारियों में मशग़ूल रहे तो आख़िरकार अल्लाह तआला का अज़ाब उन पर बरस पड़े, उस वक़्त कोई न था जो उन्हें बचा सके या किसी अज़ाब को उन पर से हटा सके। अल्लाह तआला की ज़ात उससे पाक है कि वह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करे। यह अज़ाब तो उनके अपने करतूतों का वबाल था। अल्लाह तआला की आयतों को यह झुठलाते थे। रब तआला की बातों का मज़ाक़ यह उड़ाते थे। जैसे और आयत में है कि उनकी बेईमानी की वजह से हमने उनके दिलों को, उनकी निगाहों को फेर दिया और उन्हें उनकी सरकशी में ही हैरान छोड़ दिया है। और आयत में है कि उनकी कजी की वजह से अल्लाह तआला ने उनके दिल भी टेढ़े कर दिये। और आयत में है कि अगर अब भी मुँह मोड़ें तो समझ ले कि अल्लाह तआला उनके कुछ गुनाहों पर उनकी पकड़ करने का इरादा कर चुका है। इसी बिना पर (अस्सुवा) मंसूब होगा (असाऊ) का मफ़ऊल होकर। और यह भी एक क़ौल है कि सुवा यहाँ पर इस तरह वाक़ेअ है कि बुराई उनका अंजाम हुई। इसलिए कि वह आयाते रब्बानी के झुठलाने वाले और उनका मज़ाक़ उड़ाने वाले थे। तो इस मअनी की रू से यह लफ़्ज़ मंसूब होगा (काना) की ख़बर होकर। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने यही तौजीह बयान की है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) और क़तादा (रह.) से नक़्ल भी की है। (तब्री : 20/79) ज़हहाक (रह.) भी यही फ़र्माते हैं और ज़ाहिर भी यही है क्योंकि इसके बाद (वकानू बिहा यस्तहज़िऊन) है।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ⑪ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُوْنَ ⑫ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑬
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ⑭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ
فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ⑮ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ⑯ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ⑰ وَلَهُ الْحَمْدُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ⑱ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ⑲

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ही मख़्लूक़ की इब्तिदा करता है वही उसे दोबारा पैदा करेगा फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11) जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी तो गुनहगारों की उम्मीदें टूट जाएँगी। (12) इनके तमामतर शरीकों में से एक भी इनका सिफ़ारिशी न होगा और ख़ुद यह भी अपने शरीकों के मुंकिर हो जाएँगे। (13) और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन जमाअतें अलग अलग हो जाएँगी। (14) जो ईमान लाकर नेक आमाल करते रहे वह तो जन्नत में ख़ुश व ख़ुर्रम कर दिये जाएँगे। (15) और जिन्होंने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झूठा ठहराया था वह सब अज़ाब में पकड़वा दिये जाएँगे। (16) पस अल्लाह तआला की तस्बीह पढ़ा करो जबकि तुम शाम करो और जब सुबह करो। (17) तमाम ता'रीफ़ों के लायक़ आसमान व ज़मीन में सिर्फ़ वही है तीसरे पहर को और ज़ुहर के वक़्त भी उसकी पाकीज़गी बयान करो। (18) वही ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और वही ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा करता है। इसी तरह तुम भी निकाले जाओगे।" (19)

क़ियामत के दिन आमाल के मुताबिक़ फ़ैसले होंगे (आ. 11 से 19) : फ़रमाने बारी तआला है कि सबसे पहले मख़्लूक़ात को उसी अल्लाह तआला ने बनाया है और जिस तरह वह इसके पैदा करने पर उस वक़्त क़ादिर था, अब फ़ना करके फिर से दोबारा पैदा करने पर भी वह ऐसा ही बल्कि उससे भी ज़्यादा क़ादिर है। तुम सब क़ियामत के दिन उसी के सामने हाज़िर किये जाने वाले हो। वहाँ वह हर एक को उसके आमाल का

बदला देगा। क़ियामत के दिन गुनहगार नाउम्मीद रुस्वा और ख़ामोश हो जाएँगे। अल्लाह तआला के सिवा जिन जिनकी दुनिया में इबादत करते रहे उनमें से एक भी उनकी सिफ़ारिश के लिए खड़ा न होगा। और जबकि यह उनके पूरी तरह मोहताज होंगे वह उनसे बिलकुल आँखें फेर लेंगे और ख़ुद उनके झूठे मअबूद भी उनसे अलग हो जाएँगे और साफ़ कह देंगे कि हममें इनमें कोई रिश्ता नहीं। क़ियामत क़ायम होते ही इस तरह अलग अलग हो जाएँगे जिसके बाद मिलाप है ही नहीं। (तब्री : 20/80, 81) नेक लोग तो (इल्लिय्यीन) में पहुँचा दिये जाएँगे और बुरे लोग (सिज्जीन) में दाख़िल कर दिये जाएँगे। वह सबसे आला बुलंदी पर होंगे यह सबसे ज़्यादा पस्ती में होंगे। फिर इस आयत की तफ़्सील होती है कि नेक नफ़्स तो जन्नतों में हँसी ख़ुशी से होंगे और कुफ़्फ़ार जहन्नम में जलते भुनते होंगे।

अल्लाह तआला की क़ुदरत की निशानियाँ : उस रब तबारक व तआला की कमाले क़ुदरत और अज़्मते सल्तनत पर दलालत उसकी तस्बीह और उसकी हम्द से है जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला अपने बन्दों की रहबरी करता है, और अपना पाक होना और क़ाबिले हम्द होना भी बयान कर रहा है। शाम के वक़्त जबकि रात अपने अंधेरों को लेकर आती है और सुबह के वक़्त जबकि दिन अपनी रोशनियों को लेकर आता है। इतना बयान फ़र्माकर उसके बाद का जुम्ला बयान फ़र्माने से पहले ही यह भी ज़ाहिर कर दिया कि ज़मीनो आसमान में क़ाबिले हम्दो सना वही है उनकी पैदाइश ख़ुद उसकी बुज़ुर्गी पर दलील है। फिर सुबह शाम के वक़्तों की तस्बीह का बयान जो पहले गुज़रा था उसके साथ इशा और ज़ुहर का वक़्त मिला लिया, जो पूरे अंधेरे और कामिल उजालों का वक़्त होता है। बेशक तमामतर पाकीज़गी उसी को सज़ावार है, जो रात के अंधेरों को और दिन के उजालों को पैदा करने वाला है, सुबह को ज़ाहिर करने वाला रात को सुकून वाली बनाने वाला वही है। इस जैसी आयतें और भी बहुत सी हैं (وَالنَّهَارِ إِذَا جَلّٰهَا ۝ وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا ۝) (91/शम्स : 3, 4) और (وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝) (92/लैल : 1, 2) और (وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۝) (93/ज़ुहा : 1, 2) वग़ैरह। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया "मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह तआला ने (हज़रत) इब्राहीम (عليه السلام) का नाम ख़लील वफ़ादार क्यूँ रखा? इसलिए कि वह सुबह शाम उन कलिमात को पढ़ा करते थे। फिर आप (ﷺ) ने (फ़सुब्हानल्लाहि) से (तुज़्हिरून) तक की दोनों आयतें तिलावत कीं। (अहमद : 3/439; और इसकी सनद ज़ईफ़ है। इसकी सनद में इब्ने लहीआ और फ़ाइद (अत्तक़रीब : 2/138, 1/257) ज़ईफ़ रावी हैं।) तब्रानी की हदीस में इन दोनों आयतों की निस्बत है कि जिसने सुबह शाम यह पढ़ लीं उसने दिन रात में जो उससे फ़ौत हुआ उसे पा लिया। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इज़ा अस्बह : 5076; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है, मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बैलमानी ज़ईफ़ और मुत्तहम और इसका वालिद ज़ईफ़ है।) फिर बयान हुआ कि मौत व ज़ीस्त का ख़ालिक़ मुर्दों से ज़िन्दों को और ज़िन्दों से मुर्दों को निकालने वाला वही है। हर शै पर और उसकी ज़िद पर वह क़ादिर है। दाने से दरख़्त, दरख़्त से दाने, मुर्ग़ी से अण्डा, अण्डे से मुर्ग़, नुत्फ़े से इंसान, इंसान से नुत्फ़ा, मोमिन से काफ़िर, काफ़िर से मोमिन, ग़र्ज़ हर चीज़ और उसके मुक़ाबिल की चीज़ पर उसे क़ुदरत हासिल है, ख़ुश्क ज़मीन को वही तर कर देता है, बंजर ज़मीन से वही खेती उगाता है, जैसे सूरह यासीन में फ़र्माया कि

ख़ुश्क ज़मीन का तरोताज़ा होकर तरह तरह के अनाज व फल पैदा करना भी मेरी क़ुदरत का एक कामिल निशान है। और आयत में है कि तुम्हारे देखते हुए इस ज़मीन को जिसमें से धुआँ उठता हो, दो बूँद से तर करके मैं लहलहा देता हूँ और हर क़िस्म की पैदावार से उसे सरसब्ज़ कर देता हूँ। और भी बहुत सी आयतों में इस मज़्मून को कहीं मुफ़स्सल कहीं मुज्मल बयान फ़र्माया। यहाँ फ़र्माया इसी तरह तुम सब भी मरने के बाद क़ब्रों में से ज़िन्दा करके खड़े कर दिये जाओगे।

***

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝٢٠ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١

तर्जुमा : "अल्लाह तआला की निशानियों में से एक तुम्हारी मिट्टी से पैदाइश है कि फिर इंसान बनकर चलते फिरते हो। (20) और उसकी निशानियों में से तुम्हारी ही जिंस की बीवियाँ पैदा करना है ताकि तुम उनसे आराम पाओ। उसने तुम्हारे बीच मुहब्बत और मेहरबानी क़ायम कर दी। यक़ीनन ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिए इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं।" (21)

इंसानी जिस्म की पैदाइश तौहीदे बारी तआला की दलील है (आ. 20, 21) : फ़र्माता है कि अल्लाह तआला की क़ुदरत की बेशुमार निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि उसने तुम्हारे बाप (हज़रत) आदम (عليه السلام) को मिट्टी से पैदा किया। तुम सबको उसने बेवक़अत पानी के क़तरे से पैदा किया। फिर तुम्हारी बहुत अच्छी सूरतें बनाईं, नुत्फ़े से ख़ून बस्ता की शक्ल में, फिर गोश्त के लोथड़े की सूरत में ढालकर, फिर हड्डियाँ बनाईं और हड्डियों को गोश्त पहनाया फिर रूह फूँकी। आँख, कान, नाक पैदा किये। माँ के पेट से सलामती से निकाला। फिर कमज़ोरी को क़ुव्वत से बदला, दिन ब दिन ताक़तवर और मज़बूत क़द आवर और ज़ोरावर किया, उम्र दी, हरकत व सुकून की ताक़त दी, अस्बाब और आलात दिये और मख़्लूक़ का सरदार बनाया और इधर से उधर पहुँचने के ज़रायेअ दिये, समुन्द्रों की ज़मीन की मुख़्तलिफ़ सवारियाँ अता कीं। अक़्ल, इल्म, सोच, समझ, तदब्बुर, ग़ौर के लिए दिलो दिमाग़ अता किये, दुनियावी काम समझाये रिज़्क़, इज़्ज़त हासिल करने के तरीक़े खोल दिये। साथ ही आख़िरत को सँवारने का इल्म और अमल भी सिखाया। पाक है वह अल्लाह तआला जो हर चीज़ का सही अंदाज़ा करता है हर एक को एक मर्तबे पर रखता है। शक्लो सूरत में, बोलचाल में, अमीरी फ़क़ीरी में, अक़्ल व हुनर में, भलाई बुराई में, सआदत व शक़ावत में हर एक को अलग अलग कर दिया ताकि हर शख़्स रब तआला की बहुत सी निशानियाँ अपने में और दूसरे में देख ले। मुस्नद इमाम अहमद में हदीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला ने तमाम ज़मीन से एक मुट्ठी

मिट्टी की लेकर उससे हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा किया।'' पस ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों की तरह औलादे आदम की मुख़्तलिफ़ रंगतें हुईं। कोई सफ़ेद, कोई काला, कोई लाल, कोई ख़बीस, कोई तय्यिब, कोई ख़ुश ख़ल्क़, कोई बद ख़ुल्क़ वग़ैरह। (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल क़द्रि : 4693; और सनद सही है;तिर्मिज़ी : 2955; अहमद : 4/406; हाकिम : 2/261; इब्ने हिब्बान : 6160; अल्अस्माउ वस्सिफ़ात : 715) फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला की एक निशानिये क़ुदरत यह भी है कि उसने तुम्हारी ही जिंस से तुम्हारे जोड़े बनाये कि वह तुम्हारी बीवियाँ बनती हैं और तुम उनके शौहर होते हो, यह इसलिए कि तुम्हें उनसे सुकून व राहत, आराम व आसाइश हासिल हो। जैसे और आयत में है अल्लाह तआला ने तुम्हें एक ही नफ़्स से पैदा किया और उसी से उसकी बीवी पैदा की ताकि वह उसकी तरफ़ राहत हासिल करे। हज़रत हव्वा (عليها السلام) हज़रत आदम (عليه السلام) की बाएँ पसली से जो सबसे ज़्यादा छोटी है पैदा हुई हैं, पस अगर इंसान का जोड़ा इंसान से न मिलता और किसी और जिंस से उसका जोड़ा बँधता तो मौजूदा उल्फ़त व रहमत उसमें न हो सकती। यह प्यार व इख़्लास एक जैसी जिंस की वजह से है। इनमें आपस में मुहब्बत व मवद्दत, रहमत व उल्फ़त, प्यार व इख़्लास, रहम और मेहरबानी डाल दी। पस मर्द या तो मुहब्बत की वजह से औरत की ख़ैरगीरी करता है या रहम खाकर उसका ख़्याल रखता है। इसलिए कि उससे औलाद हो चुकी है। उसकी परवरिश उन दोनों के मैल मिलाप पर मौक़ूफ़ है। अल्ग़र्ज़ बहुत सी वुजूहात रब्बुल आलमीन ने रख दी हैं जिनके सबब इंसान आराम के साथ अपने जोड़े के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है। यह भी रब तआला की मेहरबानी और उसकी क़ुदरते कामिला की एक ज़बरदस्त निशानी है। अदना सा ग़ौर कर ले इंसान का ज़हन इस तक पहुँच जाता है।

***

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा : ''उसकी क़ुदरत की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी ज़ुबानों का अलग अलग होना भी है? अक़्लमंदों के लिए इसमें यक़ीनन बड़ी बड़ी इब्रतें हैं। (22) और भी उसकी क़ुदरत की निशानी तुम्हारी रातों और दिन की नींद में है और उसके फ़ज़्ल यानी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना भी है। जो लोग कान लगाकर सुनने के आदी हैं उनके लिए इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं।'' (23)

ज़ुबानों और रंगतों का अलग अलग होना क़ुदरते इलाही का मज़्हर है (आ. 22, 23) : रब्बुल आलमीन अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत की एक निशानी और बयान करता है कि इस क़द्र बुलंद कुशादा आसमान

की पैदाइश, उसमें सितारों का जड़ाव, उनकी चमक दमक, उनमें से कुछ का चलता फिरता होना, कुछ का एक जगह साबित रहना, ज़मीन को एक ठोस शक्ल में बनाना, उसे कसीफ़ पैदा करना, उसमें पहाड़, मैदान, जंगल, दरिया, समुन्द्र, टीले, पत्थर, दरख़्त वग़ैरह जमा देना। ख़ुद तुम्हारी ज़ुबानों में रंगतों में इख़्तिलाफ़ रखना, अरब की ज़ुबान और तातारियों की और कुर्दों की और रूमियों की और अंग्रेजों की और तक्रूरनियों की और बरबर की और हब्शियों की और हिन्दियों की और ईरानियों की और मुक़ालबा की और आरमिनियों की और जज़्रियों की और रब जाने कितनी कितनी ज़बानें ज़मीन पर बनू आदम में बोली जाती हैं। इंसानी ज़बानों के इख़्तिलाफ़ के साथ ही उनकी रंगतों का इख़्तिलाफ़ भी अल्लाह तआला की शान का मज़हर है। ख़्याल तो कीजिए कि लाखों आदमी जमा हो जाएँ, एक कुंबे क़बीले के, एक मुल्क एक ज़बान के हों लेकिन नामुम्किन है कि हर एक में कोई न कोई फ़र्क़ न हो। हालाँकि बदन के हिस्से के ऐतिबार से कुल्ली मुवाफ़िक़त हो। सबकी दो आँखें, दो पलकें, एक नाक, दो कान, एक पेशानी, एक चेहरा, दो होंठ, दो रुख़सार, वग़ैरह लेकिन ताहम एक से एक अलग है। कोई न कोई हैयत, आदत, ख़स्लत, कलाम, बातचीत, तर्ज़े अदा ऐसी ज़रूर होगी कि जिसमें एक दूसरे का इम्तियाज़ हो जाए। भले वह कुछ मर्तबा पोशीदा सी और हल्की सी चीज़ ही हो। भले ख़ूबसूरती और बदसूरती में कई एक यक्साँ नज़र आएँ लेकिन जब ग़ौर किया जाए तो हर एक को दूसरे से मुम्ताज़ करने वाला कोई न कोई वस्फ़ ज़रूर नज़र आ जाएगा। हर जानने वाला इतनी बड़ी ताक़तों और कुव्वतों के मालिक को पहचान सकता है और इस सन्अत से सानेअ को जान सकता है। नींद भी कुदरत की एक निशानी है जिससे थकान दूर हो जाती है, राहत व सुकून हासिल होता है, उसके लिए कुदरत ने रात बना दी है। काम काज के लिए, दुनिया हासिल करने के लिए, कमाई धंधे के लिए, तलाशे मआश के लिए उस अल्लाह तआला ने दिन को पैदा किया है जो रात के बिलकुल ख़िलाफ़ है। यक़ीनन सुनने समझने वालों के लिए यह चीजें निशाने कुदरत हैं। तब्रानी में हज़रत ज़ेद बिन साबित (रज़ि.) से मरवी है कि रातों को मेरी नींद उचाट हो जाया करती थी तो मैंने हुज़ूर (ﷺ) से इस अम्र की शिकायत की। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, यह दुआ पढ़ा करो (अल्लाहुम्मा ग़ारतिन्नुजूमु व हदातिल उयूनु व अन्त हय्युन क़य्यूमुन या हय्यु या क़य्यूमु अनिम् ऐनी वहदिउ लैली) मैंने जब इस दुआ को पढ़ा तो नींद न आने की बीमारी बफ़ज़्ले इलाही दूर हो गई। (तब्रानी : 4817; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।)

***

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ
وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَهٗ مَنْ

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ

اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

तर्जुमा : "उसकी निशानियों में से एक यह भी है कि वह तुम्हें डराने और उम्मीदवार बनाने के लिए बिजलियाँ दिखाता है और आसमान से बारिश बरसाता है और उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है। इसमें भी अक़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं। (24) उसकी एक निशानी यह भी है कि आसमान व ज़मीन उसी के हुक्म से क़ायम हैं। फिर जब वह तुम्हें आवाज़ देगा सिर्फ़ एक बार की आवाज़ के साथ ही तुम सब ज़मीन से निकल आओगे। (25) ज़मीनो आसमान की हर हर चीज़ उसी की मिल्कियत है और हर एक उसके फ़र्मान के मातहत है। (26) वही है जिसने शुरू शुरू में मख़्लूक़ को पैदा किया, वही फिर से दोबारा पैदा करेगा और यह तो उस पर बहुत ही आसान है। उसी की बेहतरीन और आला सिफ़त है आसमानों में और ज़मीन में भी। और वही इज़्ज़त वाला, ग़ल्बे वाला बाहिक्मत, हिक्मत वाला है।" (27)

आमसानी बिजली अल्लाह तआला की अज़्मत की दलील है (आ. 24 से 27) : अल्लाह तआला की अज़्मत पर दलालत करने वाली एक और निशानी बयान की जा रही है कि आसमानों पर उसके हुक्म से बिजली कूँदती है जिसे देखकर तुम्हें दहशत लगने लगती है कि कहीं ऐसा न हो कि कड़क किसी को हलाक कर दे कहीं बिजली गिरे वग़ैरह। और कभी तुम्हें उम्मीद बँधती है कि अच्छा हुआ अब बारिश बरसेगी, पानी की रेल पेल होगी, तरसाली हो जाएगी वग़ैरह। वही है जो आसमान से पानी उतारता है और उस ज़मीन को जो ख़ुश्क पड़ी हुई थी जिस पर नामोनिशान को कोई हरयावल (तरावत) न थी मिस्ल मुर्दे के बेकार थी उस बारिश से वह ज़िन्दा कर देता है, लहलहाने लगती है, हरी भरी हो जाती है और तरह तरह की पैदावार उगा देती है। अक़्लमंदों के लिए अज़्मते रब्बानी की यह एक जीती जागती तस्वीर है। वह इस निशान को देखकर यक़ीन कर लेते हैं कि इस ज़मीन को ज़िन्दा करने वाला अल्लाह तआला हमारी मौत के बाद हमें भी अज़्सरे नौ ज़िन्दा कर देने पर क़ादिर है। उसकी एक निशानी यह भी है कि ज़मीनो आसमान उसी के हुक्म से क़ायम हैं। वह आसमान को ज़मीन पर गिरने नहीं देता, वह आसमान व ज़मीन को थामे हुए है और उन्हें ज़वाल से बचाये हुए है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) जब कोई ताकीदी क़सम खाना चाहते तो फ़र्माते, "उस अल्लाह तआला की क़सम! जिसके हुक्म से ज़मीनो आसमान ठहरे हुए हैं।" फिर क़ियामत के दिन वह ज़मीन व आसमान को बदल देगा। मुर्दे अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा करके निकाले जाएँगे। ख़ुद अल्लाह तआला उन्हें आवाज़ देगा और यह सिर्फ़ एक आवाज़ पर ज़िन्दा होकर अपनी क़ब्रों से निकल खड़े होंगे। जैसे और आयत में है जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तुम उसकी हम्द बयान करते हुए उसे जवाब दोगे और यक़ीन कर लोगे कि तुम दुनिया में बहुत ही कम रहे। और आयत में है (فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝) (79/नाज़िआत : 13, 14) सिर्फ़ एक ही आवाज़ से सारी मख़्लूक़ मैदाने महशर में जमा हो जाएगी। और आयत में है (اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً

(وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ) (36/यासीन : 53) यानी "वह तो सिर्फ़ एक आवाज़ होगी जिसे सुनते ही सबके सब हमारे सामने हाज़िर हो जाएँगे।"

दूसरी बार की पैदाइश तो अल्लाह तआला पर बहुत आसान है : फ़र्माता है कि तमाम आसमानों और सारी ज़मीनों की मख़्लूक़ अल्लाह तआला ही की है। सब उसके लौण्डी गुलाम हैं सब उसी की मिल्कियत में हैं। हर एक उसके सामने आजिज़ व लाचार, मजबूर व बेबस है। एक ह़दीस में है कि क़ुरआने करीम में जहाँ कहीं क़ुनूत का ज़िक्र है वहाँ मुराद इत़ाअ़त व फ़र्मांबरदारी है। (अह़मद : 3/75; और इसकी सनद ज़ईफ़ है। यह रिवायत दराज अ़न अबी हाशिम की वजह से ज़ईफ़ है। मुस्नदे अबी यअ़ला : 1379; इब्ने ह़िब्बान : 309; ह़िल्यतुल औलिया : 8/325) इब्तिदाई पैदाइश भी उसी ने की और वही एआदा भी करेगा। और एआदा (लौटाना) बनिस्बत पहली बार से आदतन आसान और हल्का होता है। स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जनाब बारी तआला का इर्शाद है कि मुझे इब्ने आदम झुठलाता है और उसे यह चाहिए नहीं था। वह मुझे बुरा कहता है और यह भी उसे लायक़ न था। उसका झुठलाना तो यह है कि कहता है जिस त़रह़ उसने मुझे पहली बार पैदा किया उस त़रह़ दोबारा पैदा नहीं कर सकता। ह़ालाँकि दूसरी बार की पैदाइश पहली बार की पैदाइश से ज़्यादा आसान हुआ करती है। इसका मुझे बुरा कहना यह है कि कहता है कि अल्लाह तआला की औलाद है ह़ालाँकि मैं अह़द (अकेला) व स़मद (बेनियाज़) हूँ।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अह़द) : 4974; अह़मद : 2/393; इब्ने ह़िब्बान : 267) जिसकी न औलाद न माँ बाप और जिसका कोई हमसर नहीं। अल्ग़र्ज़ दोनों पैदाइशें उस मालिक की क़ुदरत की मज़हर हैं न उस पर कोई काम भारी न बोझल। यह भी हो सकता है कि (हुव) की ज़मीर का मरजअ (ख़ल्क़) हो (मसल) से मुराद यहाँ उसकी तौह़ीदे उलूहियत और तौह़ीदे रुबूबियत है न कि मिसाल। इसलिए कि अल्लाह तआला की ज़ात मिसाल से पाक है। फ़र्मान है (لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ) (42/शूरा : 11) "उसकी मिसाल कोई और नहीं।" कुछ अहले ज़ोक़ ने कहा है कि जब स़ाफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी का सुथरा पाक स़ाफ़ ह़ौज़ ठहरा हुआ हो और बादे स़बा के थपेड़े उसे हिलाते जुलाते न हों उस वक़्त उसमें आसमान स़ाफ़ नज़र आता है, सूरज और चाँद सितारे बिलकुल स़ाफ़ दिखाई देते हैं उसी त़रह़ बुज़ुर्गों के दिल हैं जिनमें वह अल्लाह तआला की अ़ज़्मत व जलाल को हमेशा देखते रहते हैं। वह ग़ालिब है जिस पर किसी का बस नहीं, न उसके सामने किसी की कुछ चल सके, हर चीज़ उसकी मातह़ती में और उसके सामने पस्त व लाचार, आजिज़ व बेबस है। उसकी क़ुदरत, सत्वत, सल्त़नत हर चीज़ पर मुह़ीत़ है। वह ह़कीम है अपने क़ौल में, अफ़्आल में, शरीअ़त में, तक्दीर में, ग़र्ज़ हर हर अम्र में। ह़ज़रत मुह़म्मद बिन मुंकदिर (रह़.) फ़र्माते हैं (मसल आला) से मुराद ला इलाहा इल्लल्लाहु है।"

***

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا
رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ
اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए एक मिसाल ख़ुद तुम्हारी ही बयान की, जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है उसमें तुम्हारे गुलामों में से भी कोई तुम्हारा शरीक है? कि तुम और वह उसमें बराबर दर्जे के हो? और तुम उनका ऐसा ख़तरा रखते हो जैसा ख़ुद अपनों का, हम अक़्ल रखने वालों के लिए इसी तरह खोल खोलकर बयान कर देते हैं। (28) असल बात यह है कि यह ज़ालिम तो बेइल्म के ख़्वाहिश परस्ती कर रहे हैं। उसे कौन राह दिखाये जिसे अल्लाह तआला राह से हटा दे? इनका एक भी मददगार नहीं।" (29)

अल्लाह तआला शिर्क बर्दाश्त नहीं करता (आ. 28, 29) : मुश्रिकीने मक्का अपने बुज़ुर्गों को शरीके रब जानते थे लेकिन साथ ही यह भी मानते थे कि यह सब अल्लाह तआला के गुलाम और उसके मातहत हैं। चुनाँचे वह हज्ज व उमरे के मौक़े पर लब्बैक पुकारते हुए कहते थे कि (लब्बैक ला शरीक लक इल्ला शरीकन हुव लका तम्लिकुहू वमा मलक) (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब अत्तल्बिया व सिफ़तुहा व वक़्तुहा : 1185; बिदूनिल आयत) "हम तेरे दरबार में हाज़िर हैं तेरा कोई शरीक नहीं मगर वह कि वह ख़ुद और जिस चीज़ का वह मालिक है सब तेरी मिल्कियत में है" यानी हमारी शरीकों का और उनकी मिल्कियत का तू ही असली मालिक है। पस यहाँ उन्हें एक ऐसी मिसाल से समझाया जा रहा है जो ख़ुद यह अपने नफ़्स में ही पाएँ और बहुत अच्छी तरह ग़ौरो ख़ौज़ कर सके। तो फ़र्माता है कि क्या तुममें से कोई भी इस अम्र पर राज़ी होगा? कि उसके कुल माल वग़ैरह में उसके गुलाम उसके बराबर के शरीक हों और हर वक़्त उसे यह डर रहता हो कि कहीं वह तक़्सीम करके मेरी जायदाद और मिल्कियत आधो आध बाँट न ले जाएँ। पस जिस तरह तुम यह बात अपने लिए पसंद नहीं करते अल्लाह तआला के लिए भी यह न चाहो जिस तरह गुलाम आक़ा की हमसरी नहीं कर सकता उसी तरह अल्लाह तआला का कोई बन्दा अल्लाह तआला का शरीक नहीं हो सकता। यह अजब नाइंसाफ़ी है कि अपने लिए जिस बात से चिढ़ें और नफ़रत करें अल्लाह तआला के लिए वही बात साबित करने बैठ जाएँ। ख़ुद बेटियों से जलते भुनते थे, इतना सुनते ही कि तेरे यहाँ लड़की पैदा हुई है मुँह काले पड़ जाते थे और अल्लाह तआला के मक़र्रब फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बनाते थे। इसी तरह ख़ुद इस बात के कभी रवादार नहीं होने के कि अपने गुलामों को अपना बराबर का शरीक व सहीम समझें लेकिन अल्लाह तआला के गुलामों को अल्लाह तआला का शरीक समझ रहे हैं। किस क़द्र इंसाफ़ का ख़ून है? हज़रत

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "मुश्रिक जो लब्बैक पुकारते थे और उसमें अल्लाह तआ़ला की ला शरीकी का इक़रार करके फिर उसकी गुलामी तले दूसरों को मानकर फिर उन्हें उसका शरीक ठहराते थे" इस पर यह आयत उतरी है और इसमें बयान है कि जब तुम अपने गुलामों को अपने बराबर का शरीक ठहराने से आ़र रखते हो तो अल्लाह तआ़ला के गुलामों को अल्लाह तआ़ला का शरीक क्यूँ ठहरा रहे हो? यह स़ाफ़ बात बयान करके इर्शाद फ़र्माता है कि हम इसी त़रह तफ़्सील और दलाइल ग़ाफ़िलों के सामने रख देते हैं। फिर फ़र्माता है और बतलाता है कि मुश्रिकीन के शिर्क की कोई सनद अ़क़्ली नक़्ली, कोई दलील नहीं सिर्फ़ करिश्म-ए-जिहालत और ख़्वाहिश की पैरवी है। जबकि राहे रास्त से हट गए तो फिर इन्हें सिवाय अल्लाह तआ़ला के और कोई सीधे रास्ते पर ला नहीं सकता। यह भले दूसरों को अपना कारसाज़ और मददगार मानते हों लेकिन वाक़िया यह है कि दुश्मनाने रब का दोस्त कोई नहीं। कौन है जो उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ लब हिला सके? कौन है जो उस पर मेहरबानी करे जिस पर अल्लाह तआ़ला सख़्ती करना चाहता हो? उसका चाहा हुआ होता है और जिसे वह न चाहे, वह हर्गिज़ हो नहीं सकता।

***

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ
اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا
شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "पस तू यक्सू होकर अपना चेहरा दीन की त़रफ़ मुतवज्जह कर दे। अल्लाह तआ़ला की वह फ़ित़्रत जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह तआ़ला के बनाये को बदलना नहीं। यही रास्त दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (30) अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ होकर उससे डरते रहो और नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकीन में न मिल जाओ। (31) जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और ख़ुद भी गिरोह गिरोह हो गए, हर गिरोह उस चीज़ पर जो उसके पास है नाज़ाँ (ख़ुश व ख़ुर्रम) है।" (32)

फ़ित़्रत से क्या मुराद है (आ. 30 से 32) : मिल्लते इब्राहीम ह़नीफ़ पर जम जाओ जिस दीन को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर कर दिया है और जिसे ऐ नबी (ﷺ)! आपके हाथ पर अल्लाह तआ़ला ने कमाल को पहुँचाया है। रब तआ़ला की फ़ित़्रते सलीमा पर वही क़ायम है जो इस दीने इस्लाम का पाबन्द है। उसी पर यानी तौह़ीद पर रब तआ़ला ने तमाम इंसानों को बनाया है। रोज़े अज़ल में उसी का सबसे इक़रार कर

लिया गया था कि क्या मैं तुम सबका रब तआ़ला नहीं हूँ? तो सबने इक़रार किया कि बेशक तू ही हमारा रब तआ़ला है। वह ह़दीसें बहुत जल्द इंशाअल्लाह बयान होंगी जिनसे साबित है कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी जुम्ला (तमाम) मख़्लूक़ को अपने सच्चे दीन पर पैदा किया है भले उसके बाद लोग यहूदियत, नस़रानियत वग़ैरह पर चले गए। फ़र्माया (ला तब्दीला लि ख़ल्क़िल्लाहि) लोगों! अल्लाह तआ़ला की इस फ़ित्‌रत को न बदलो। लोगों को इस राहे रास्त से न हटाओ। तो यह ख़बर मअ़नी में अम्र के होगी। जैसे (وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا) (3/आले इमरान : 97) में यह मअ़नी निहायत उ़म्दा और सही हैं। दूसरे मअ़नी यह भी हैं कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ को फ़ित्‌रते सलीमा पर यानी दीने इस्लाम पर पैदा किया। रब तआ़ला के इस दीन में कोई तग़य्युर तबद्दुल नहीं। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने यही मअ़नी किये हैं कि यहाँ ख़ल्क़ुल्लाह से मुराद दीन और फ़ित्‌रते इस्लाम है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रूम बाब (ला तब्दीला लिख़ल्क़िल्लाहि) क़ब्ल ह़दीस : 4775) बुख़ारी में बरिवायत ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) है कि "हर बच्चा फ़ित्‌रत पर पैदा होता है फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी नस़रानी मजूसी बना देते हैं। जैसे बकरी का सही सालिम बच्चा होता है जिसके कान लोग कतर देते हैं। फिर आप (ﷺ) ने यह आयत तिलावत की (فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا ؕ لَا تَبْدِیْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ) (30/रूम : 30) (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रूम बाब (ला तब्दीला लि ख़ल्क़िल्लाहि) क़ब्ल ह़दीस : 4775; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2658) मुस्नद अह़मद में है ह़ज़रत अस्वद बिन सुरैअ़ (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया, आपके साथ मिलकर कुफ़्फ़ार से जिहाद किया, वहाँ हम बफ़ज़्ले अल्लाह तआ़ला ग़ालिब आ गए, उस दिन लोगों ने बहुत से कुफ़्फ़ार को क़त्ल किया। यहाँ तक कि छोटे बच्चों पर भी हाथ स़ाफ़ किया।" हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को जब इसका पता चला तो आप बहुत नाराज़ हुए और फ़र्माने लगे, "यह क्या बात है कि लोग ह़द से आगे निकल जाते हैं, आज बच्चों को भी क़त्ल कर दिया है।" किसी ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आख़िर वह भी तो मुश्रिकीन की ही औलाद थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! नहीं! याद रखो तुममें से बेहतरीन लोग मुश्रिकीन के बच्चे हैं, ख़बरदार! बच्चों को कभी क़त्ल न करना, ना बालिग़ों के क़त्ल से रुक जाना, हर बच्चा फ़ित्‌रत पर पैदा होता है यहाँ तक कि अपनी ज़ुबान से कुछ कहे फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी नस़रानी बना लेते हैं।" (अह़मद : 3/435; ह़ : 15589; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ह़सन बस़री अ़न्अ़न; सुननुल कुब्रा : 8616; मुस्नदे अबी यअ़ला : 942; त़ब्रानी : 829; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/316) जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की रिवायत से मुस्नद अह़मद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर बच्चा फ़ित्‌रत पर पैदा होता है यहाँ तक कि उसे ज़बान आ जाए, अब या तो शाकिर बनता है या काफ़िर।" (अह़मद : 3/353; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/218)

मुस्नद अह़मद में बरिवायत ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) से मुश्रिकों की औलाद के बारे में सवाल किया गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "जब उन्हें अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया वह ख़ूब जानता था कि वह क्या आमाल करने वाले हैं।" (अह़मद : 1/328; स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा क़ीला फ़ी औलादिल मुश्रिकीन : 1383; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2660) आप (ह़ज़रत अ़ब्बास

रज़ि.) से मरवी है कि एक ज़माना में मैं कहता था मुसलमानों की औलाद मुसलमानों के साथ है और मुश्रिकों की औलाद मुश्रिकों के साथ है। यहाँ तक कि फ़लाँ शख़्स ने फ़लाँ से रिवायत करके मुझे सुनाया कि जब हुज़ूर (ﷺ) से मुश्रिकों के बच्चों के बारे में सवाल हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला ख़ूब जानता है उस चीज़ को जो वह करते हैं।"

इस हदीस को सुनकर मैंने अपना फ़त्वा छोड़ दिया। (अहमद : 5/73; इसकी सनद इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सहीह है) हज़रत अयाज़ बिन हिमार (रज़ि.) से मुस्नद इमाम अहमद (रह.) वग़ैरह में हदीस है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने एक ख़ुत्बे में फ़र्माया कि, "मुझे जनाब बारी अज़्ज़ व जल्ल ने हुक्म दिया कि जो उसने आज मुझे सिखाया है और उससे तुम जाहिल हो वह मैं तुम्हें सिखा दूँ। फ़र्माया है कि जो मैंने अपने बन्दों को दिया है मैंने उनके लिए हलाल किया है। मैंने अपने सब बन्दों को एक तरफ़ा ख़ालिस दीन वाला बनाया है, उनके पास शैतान पहुँचता है और उन्हें दीन से गुमराह करता है और हलाल को उन पर हराम करता है और उन्हें मेरे साथ शरीक करने को कहता है जिसकी कोई दलील नहीं। अल्लाह तआला ने ज़मीन वालों की तरफ़ नज़र डाली और अरब अजम सबको नापसंद किया सिवाय चंद अहले किताब के कुछ लोग के। वह फ़र्माता है कि मैंने तुझे सिर्फ़ आज़माइश के लिए भेजा है तेरी अपनी भी आज़माइश होगी और तेरी वजह से और सबकी भी। मैं तुझ पर वह किताब उतारूँगा जिसे पानी धो न सके, तू उसे सोते जागते पढ़ता रहेगा। फिर मुझसे जनाब बारी तआला ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं कुरैश को होशियार कर दूँ मैंने अपना अंदेशा ज़ाहिर किया कि कहीं वह मेरा सर कुचलकर रोटी जैसा न बना दें? तो फ़र्माया, सुन! जैसे यह तुझे निकालेंगे मैं इन्हें निकालूँगा, तू इनसे जिहाद कर, मैं तेरा साथ दूँगा, तू ख़र्च कर तुझ पर ख़र्च किया जाएगा। तू लश्कर भेज, मैं उससे पाँच हिस्से ज़्यादा लश्कर भेजूँगा। फ़र्मांबरदारों को लेकर अपने नाफ़र्मानों पर चढ़ाई कर दे। अहले जन्नत तीन क़िस्म के हैं। आदिल बादशाह, तौफ़ीक़े ख़ैर वाला सख़ी, नर्म दिल हर मुसलमान के साथ सुलूक व एहसान करने वाला, पाकदामन, सवाल से और हराम से बचने वाला अयालदार आदमी। अहले जहन्नम पाँच क़िस्म के लोग हैं। वह बेवक़अत कमीने लोग जो बे ज़र और बेघर हैं जो तुम्हारे दामनों में लिपटे रहते हैं। वह ख़ाइन जो हक़ीर हक़ीर चीज़ों में भी ख़यानत किये बग़ैर नहीं रहता। वह लोग जो हर वक़्त लोगों को उनकी जान माल और अहलो अयाल में धोखे देते रहते हैं, सुबह शाम चालबाज़ियाँ और मकर फ़रेब में लगे रहते हैं। फिर आप (ﷺ) ने बख़ील का या कज़्ज़ाब का ज़िक्र किया और फ़र्माया, पाँचवीं क़िस्म के लोग बद ज़ुबान बद गो हैं।" (अहमद : 4/162; सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अस्सिफ़ातुल्लती युअरफ़ बिहा फ़िद्दुनिया अहलुल जन्नत व अहलुन्नार : 2865)

यही फ़ित्रते सलीमा, यही शरीअत को मज़बूती से पकड़े रहना ही सच्चा और सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग बेइल्म हैं और अपनी उसी जिहालत की वजह से अल्लाह तआला के ऐसे पाक दीन से दूर बल्कि महरूम रह जाते हैं। जैसे और आयत में है भले तेरी हिर्स हो लेकिन इनमें से अक्सर लोग बेईमान ही रहेंगे। और आयत में है कि अगर तू अक्सरियत की इताअत करेगा तो वह तुझे राहे रब से बहका देंगे। तुम सब अल्लाह तआला की तरफ़ राग़िब रहो उसी की जानिब झुके रहो, उसी का डर ख़ौफ़ रखो, उसी का लिहाज़ रखो। नमाज़ों

की पाबंदी करो, जो सबसे बड़ी इबादत और इताअ़त है। तुम मुश्रिक न बनो बल्कि मुवह्हिद बन जाओ, उसके सिवा और से कोई मुराद वाबस्ता न रखो। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) से हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस आयत का मतलब पूछा तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, "यह तीन चीज़ें हैं और यही नजात की जड़ हैं, पहले इख़्लास, जो फ़ित्रत है जिस पर अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को पैदा किया है। दूसरी : नमाज़ जो दरअसल दीन है, तीसरी : इताअ़त जो अ़स्मत और बचाव है।" हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, "आपने सच कहा है।" (तब्री : 20/98) तुम्हें मुश्रिकों में न मिलना चाहिए, तुम्हें उनका साथ न देना चाहिए और न उन जैसा काम करना चाहिए जिन्होंने दीने रब्बानी को बदल दिया, कुछ बातों को मान लिया, कुछ से इंकार कर दिया (फ़र्रक़ू) की दूसरी क़िरअत (फ़ारक़ू) है यानी उन्होंने अपने दीन को छोड़ दिया जैसे यहूद व नसारा, मजूस, बुतपरस्त और बाक़ी बातिल मज़हब वाले। जैसे इर्शाद है जिन लोगों ने अपने दीन में तफ़रीक़ की और गिरोहबंदी कर ली, तू उनमें शामिल ही नहीं, उनका आख़िर सुपुर्द रब तआला है, तुमसे पहले वाले गिरोह गिरोह में हो गए और सबके सब बातिल पर जम गए और हर फ़िर्क़ा यही दावा करता रहा कि वह सच्चा है और दरअसल हक़्क़ानियत उन सबसे दूर हो चुकी थी। इस उम्मत में भी फ़िर्क़े होंगे लेकिन उनमें एक हक़ पर है हाँ! बाक़ी सब गुमराही पर हैं। यह हक़ वाली जमाअ़त अहले सुन्नत वल्जमाअ़त है जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) को मज़बूत थामने वाली है जिस पर अगले ज़माने के सहाबा (रज़ि.), ताबेईन और अइम्म-ए-मुस्लिमीन (रह.) थे, गुज़िश्ता ज़माने में भी और अब भी। जैसे मुस्तदरक हाकिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया कि इन सबमें नजात पाने वाला फ़िर्क़ा कौनसा है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया (मन काना अ़ला मा अना अ़लैहिल यौमा व अस्हाबी) यानी "वह लोग जो उस पर हों जिस पर आज मैं और मेरे अस्हाब (रज़ि.) हैं।" (हाकिम : 1/129; तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब फ़ी इफ़्तिराक़िल उम्मह : 2641; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद अफ़्रीक़ी रावी ज़ईफ़ है।) (बिरादराने! ग़ौर कीजिए कि वह चीज़ जिस पर रसूलुल्लाह स. और आपके अस्हाब (रज़ि.) आपके ज़माने में थे वह वह्नी इलाही यानी कुरआन व हदीस ही थी? या किसी इमाम की तक़्लीद?)

***

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ
مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ
أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً
فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا

أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٣٧
فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ
اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٣٨ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ رِبًا لِيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو
عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ٣٩ اللَّهُ
الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَفْعَلُ مِنْ
ذَٰلِكُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ٤٠

तर्जुमा : ''लोगों को जब कभी कोई मुसीबत पहुँचती है तो अपने रब तआला की तरफ़ पूरी तरह रुजूअ होकर दुआएँ करते हैं फिर जब वह अपनी तरफ़ से रहमत का ज़ायक़ा चखाता है तो उनमें की एक जमाअत अपने रब तआला के साथ शिर्क करने लगती है (33) ताकि वह उस चीज़ की नाशुक्री करें जो हमने उन्हें दी है। अच्छा! तुम फ़ायदा उठा लो अभी अभी तुम्हें मालूम हो जाएगा। (34) क्या हमने इन पर कोई दलील नहीं उतारी जो उसे बयान करे जिसे यह अल्लाह तआला के साथ शरीक कर रहे हैं। (35) और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वह ख़ूब ख़ुश हो जाते हैं। और अगर इन्हें इनके हाथों के करतूत की वजह से कोई बुराई पहुँचे तो एक दम वह सिर्फ़ नाउम्मीद हो जाते हैं। (36) क्या इन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह तआला जिसे चाहे कुशादा रोज़ी देता है और तंग भी। इसमें भी उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं निशानियाँ हैं। (37) क़राबतदार को, मिस्कीन को, मुसाफ़िर को, हर एक को उसका हक़ दे। यह उनके लिए बेहतर है जो अल्लाह तआला का चेहरा देखना चाहते हों, ऐसे ही लोग नजात पाने वाले हैं। (38) तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे वह अल्लाह तआला के यहाँ नहीं बढ़ता। और जो कुछ सदक़ा ज़कात तुम अल्लाह तआला के रज़ा की तलब के लिए दो तो ऐसे लोग ही हैं अपना दो चंद करने वाले। (39) अल्लाह तआला वह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर रोज़ी दी, फिर मार डालेगा फिर ज़िन्दा करेगा बताओ! तुम्हारे शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो इनमें से कुछ भी कर सकता हो। अल्लाह तआला के लिए पाकी और बरतरी है हर इक उस शरीक से जो यह लोग मुक़र्रर करते हैं।''(40)

इंसान की अजीब हालत का तज़्किरा (आ. 33 से 40) : अल्लाह तआला लोगों की हालत बयान

करता है कि दुख दर्द, मुसीबत व तक्लीफ़ के वक़्त तो वह अल्लाह (वह्दहू ला शरीक लहू) को बड़ी आजिज़ी ज़ारी, निहायत तवज्जह और पूरी दिलसौज़ी के साथ पुकारते हैं और जब उसकी नेअमतें उन पर बरसने लगती हैं तो यह अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने लगते हैं (लि यक्फ़ुरू) में लाम कुछ तो कहते हैं लामे आक़िबत है और कुछ कहते हैं लामे तअलील है। लेकिन इसका लामे तअलील होना इस वजह से भला मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने इनके लिए यह मुक़र्रर किया फिर उन्हें धमकाया कि तुम अभी मालूम कर लोगे। कुछ बुज़ुर्गों का फ़र्मान है कि कोतवाल या सिपाही अगर किसी को डराये धमकाये तो वह काँप उठता है। ताज्जुब है कि उसके धमकाने से हम दहशत में न आएँ जिसके क़ब्ज़े में हर चीज़ है और जिसका सिर्फ़ यह कह देना हर अम्र के लिए काफ़ी है कि हो जा। फिर मुश्रिकीन का सिर्फ़ बेदलील होना बयान किया जा रहा है कि हमने उनके शिर्क की कोई दलील नहीं उतारी। फिर इंसान की एक बेहूदा ख़स्लत बतौर इंकार बयान हो रही है कि सिवाय चंद हस्तियों के उमूमन हालत यह है कि राहतों के वक़्त भूल जाते हैं और सख़्तियों के वक़्त मायूस हो जाते हैं गोया अब कोई बेहतरी मिलेगी ही नहीं। हाँ! मोमिन सख़्तियों में सब्र और नर्मियों में नेकियाँ करते हैं। सहीह हदीस में है कि मोमिन पर ताज्जुब है उसके लिए अल्लाह तआला की हर क़ज़ा बेहतर ही होती है, राहत पर शुक्र करता है तो यह भी उसके लिए बेहतर होता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्मोमिनु अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैर : 2999; अहमद : 4/332; इब्ने हिब्बान : 3896) अल्लाह तआला ही मुतसर्रिफ़ और मालिकहै। वह अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जहान रचाये हुए है किसी को कम देता है किसी को ज़्यादा देता है। कोई तंगी तुर्शी में है कोई वुस्अत और फ़राख़ी में। इसमें मोमिनों के लिए निशानी हैं।

क़राबतदारों से सिलारहमी और हुस्ने सुलूक का हुक्म : क़राबतदारों के साथ नेकी, सुलूक और सिलारहमी करने का हुक्म हो रहा है। मिस्कीन उसे कहते हैं जिसके पास कुछ न हो या कुछ हो लेकिन बक़द्रे किफ़ायत न हो, उसके साथ भी सुलूक व एहसान करने का हुक्म हो रहा है। मुसाफ़िर जिसका ख़र्च कम पड़ गया हो और सफ़रे ख़र्च पास न रहा हो, उसके साथ भी भलाई करने का इर्शाद हो रहा है। यह उनके लिए बेहतर है जो चाहते हैं कि क़ियामत के दिन दीदारे इलाही करें। हक़ीक़त में इंसान के लिए इससे बड़ी नेअमत कोई नहीं। दुनिया और आख़िरत में नजात ऐसे ही लोगों को मिलेगी। इस दूसरी आयत की तफ़्सीर तो इब्ने अब्बास (रज़ि.), मुजाहिद, ज़ह्हाक, क़तादा, इक्रिमा, मुहम्मद बिन कअब और शअबी (रह) से यह मरवी है कि "जो शख़्स कोई अतिया इस इरादे से दे कि लोग उसे उससे ज़्यादा दें तो भले इस इरादे से हदिया देना है तो मुबाह लेकिन सवाब से ख़ाली है।" (तबरी : 2/104, 105) अल्लाह तआला के यहाँ उसका बदला कुछ नहीं मगर अल्लाह तआला ने अपने नबी अकरम (ﷺ) को इससे भी रोक दिया है। इस मअनी में यह हुक्म आप (ﷺ) के लिए ख़ास होगा। इसी की मुशाबेह आयत (وَ لَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ) (74/मुद्दस्सिर : 6) है यानी ज़्यादती मुआवज़ा की निय्यत से किसी के साथ एहसान न किया करो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "सूद यानी नफ़ा की दो सूरतें हैं एक तो व्यापार तिजारत में ब्याज यह तो हराम ही है। दूसरा सूद यानी ज़्यादती जिसमें कोई हर्ज नहीं वह किसी को इस इरादे से हदिया तोहफ़ा देना है कि यह मुझे इससे ज़्यादा दे। फिर आपने यह आयत पढ़कर फ़र्माया कि अल्लाह तआला के पास तो सवाब ज़कात के अदा करने का है।

ज़कात देने वालों को बहुत बरकतें होती हैं।'' सहीह हदीस में है कि ''जो शख़्स एक खजूर भी सदक़ा में दे लेकिन हो हलाल तौर से हासिल की हुई तो उसे अल्लाह तआला रहमान व रहीम अपने दाएँ हाथ में लेता है और इस तरह पालता और बढ़ाता है जिस तरह तुममें से कोई अपने घोड़े या ऊँट के बच्चे की परवरिश करता है, यहाँ तक कि वही एक खजूर उहुद पहाड़ से भी बड़ी हो जाती है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब अस्सदक़तु मिन कस्बिन तय्यिब : 1410; सहीह मुस्लिम : 1014) अल्लाह तआला ही ख़ालिक़ व राज़िक़ है। इंसान अपनी माँ के पेट से नंगा, बेइल्म, बेकान, बेआँख, बेताक़त निकलता है फिर अल्लाह तआला उसे सब चीज़ें अता करता है। माल भी, मिल्कियत भी, कमाई भी, तिजारत भी, ग़र्ज़ बेशुमार नेअमतें अता करता है। दो सहाबियों का बयान है कि हम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त आप किसी काम में मशगूल थे हमने भी हुज़ूर (ﷺ) का हाथ बटाया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''देखो सिर हिलने लगे तब तक भी रोज़ी से कोई महरूम नहीं रहता। इंसान नंगा भूखा दुनिया में आता है, एक छिल्का भी उसके बदन पर नहीं होता, फिर रब तआला ही उसे रोज़ियाँ देता है।'' (अहमद : 3/469; इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अत्तवक्कल वल यक़ीन : 4165; और इसकी सनद ज़ईफ़ है इसकी सनद अअमश की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है (अत्तक़रीब : 1/331) वह उस ज़िन्दगी के बाद तुम्हें मार डालेगा फिर क़ियामत के दिन ज़िन्दा करेगा। अल्लाह तआला के सिवा तुम जिन जिनकी इबादत कर रहे हो उनमें से एक भी इन बातों में से किसी एक पर क़ाबू नहीं रखता। इन कामों में से एक भी कोई नहीं कर सकता। अल्लाह सुब्हानहू व तआला ही तंहा ख़ालिक़ राज़िक़, और मौत ज़िन्दगी का मालिक है। वही क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ को जिन्दा करेगा। उसकी मुक़द्दस, मुनज़्ज़ा, मुअज़्ज़म और इज़्ज़त व जलाल वाली ज़ात इससे पाक है कि कोई उसका शरीक हो या उस जैसा हो या उसके बराबर हो या उसकी औलाद हो या माँ बाप हों। वह अहद है, समद है, फ़र्द है, माँ बाप से, औलाद से पाक है। उसके बराबर का कोई नहीं।

***

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ
عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلُ ۭ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : ''ख़ुश्की और तरी में लोगों की बदआमालियों की वजह से मुसीबतें आन पड़ीं इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखा दे। बहुत मुम्किन है कि वह बाज़ आ जाएँ। (41) ज़मीन में चल फिरकर देखो तो सही कि अगलों का अंजाम कैसा हुआ? जिनमें अक्सर लोग मुश्रिक थे।'' (42)

गुनाहों का अंजाम (आ. 41, 42) : मुम्किन है बर्र यानी ख़ुश्की से मुराद मैदान और जंगल हों और बह्र यानी तरी से मुराद शहर और देहात हों। (तब्री : 20/108) वरना ज़ाहिर है कि बर्र कहते हैं ख़ुश्की को और बह्र कहते हैं तरी को। ख़ुश्की के फ़साद से मुराद बारिश का न होना, पैदावार का न होना, क़हत सालियों का आना है। तरी के फ़साद से मुराद बारिश का रुक जाना जिससे पानी के जानवर अंधे हो जाते हैं। इंसान का क़त्ल और कश्तियों का जबरन छीन झपट लेना, यह ख़ुश्की तरी का फ़साद है। बह्र से मुराद जज़ीरे और बर्र से मुराद शहर और बस्तियाँ हैं लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है और उसी की ताईद मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) की इस रिवायत से होती है कि "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ऐला के बादशाह से सुलह की और उसका बह्र यानी शहर उसी के नाम कर दिया।" फलों के अनाज का नुक़्सान दरअसल इंसान के गुनाहों की वजह से है। अल्लाह तआला के नाफ़र्मान ज़मीन के बिगाड़ने वाले हैं। आसमान व ज़मीन की इस्लाह अल्लाह तआला की इबादत व इताअत से है। अबूदाऊद में हदीस है कि "ज़मीन पर एक हद का क़ायम होना ज़मीन वालों के हक़ में चालीस दिन की बारिश से बेहतर है।" (नसाई, किताब क़तअुस्सारिक़, बाब अत्तर्ग़ीबु फ़ी इक़ामतिल हद : 4908; इब्ने माजा : 2538; इब्ने हिब्बान : 4397; अहमद : 3/436; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, जरीर बिन यज़ीद जबली रावी ज़ईफ़ है।) यह इसलिए कि हद के क़ायम होने से मुज्रिम गुनाहों से दूर रहेंगे और जब गुनाह न होंगे तो आसमानी और ज़मीनी बरकतें लोगों को हासिल होंगी। चुनाँचे आख़िर ज़माना में जब हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) उतरेंगे और इस पाक शरीअत के मुताबिक़ फ़ैसले करेंगे, मस्लन ख़िंज़ीर का क़त्ल, सलीब की शिकस्त, जिज़्ये का तर्क यानी इस्लाम की क़बूलियत या जंग। फिर जब आप (عليه السلام) के ज़माने में दज्जाल और उसके मुरीद हलाक हो जाएँगे, याजूज माजूज तबाह हो जाएँगे तो ज़मीन से कहा जाएगा कि अपनी बरकतें लौटा दें, उस दिन एक अनार लोगों की एक बड़ी जमाअत को काफ़ी होगा, इतना बड़ा होगा कि उसके छिल्के तले यह सब लोग साया हासिल कर लेंगे। एक ऊँटनी का दूध एक पूरे क़बीले को किफ़ायत करेगा। यह सारी बरकतें सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की शरीअत के जारी करने की वजह से होंगी, ज्यों ज्यों अदलो इंसाफ़ मुताबिक़े शरअ बढ़ेगा त्यों त्यों ख़ैरो बरकत बढ़ती चली जाएगी। इसके बरख़िलाफ़ फ़ाजिर शख़्स के बारे में हदीस में है कि उसके मरने पर बंदे और शहर और दरख़्त और जानवर सब राहत पा लेते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सकरातुल मौत : 6512; सहीह मुस्लिम : 950; अहमद : 5/296; बि तसर्रुफ़िन यसीर) मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल में है कि "ज़ियाद के ज़माने में एक थैली पायी गई जिसमें खजूर की बड़ी गुठली जैसे गेहूँ के दाने थे और उसमें लिखा हुआ था कि यह उस ज़माने में उगते थे जिसमें अदलो इंसाफ़ को काम में लाया जाता था।" (अहमद : 2/296; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) ज़ेद बिन असलम (रह.) से मरवी है कि मुराद फ़साद से शिर्क है लेकिन यह क़ौल ताम्मुल तलब है। फिर फ़र्माता है कि माल और पैदावार की फल अनाज की कमी बतौर आज़माइश के और बतौर उनके कुछ आमाल के बदले के है। जैसे और जगह है (وَ بَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَ السَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ) (7/आराफ़ : 168) हमने उन्हें भलाइयों, बुराइयों में मुब्तला किया ताकि वह लौट जाएँ। तुम ज़मीन में चल फिरकर आप ही देख लो कि तुमसे पहले जो मुश्रिक थे उनके नतीजे क्या हुए? रसूलों की न मानने की वजह से अल्लाह तआला के साथ कुफ़्र करने का क्या कुछ वबाल उन पर आया? यह देखो और इब्रत हासिल करो।

فَاَقِمۡ وَجۡهَكَ لِلدِّيۡنِ الۡقَيِّمِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ يَوۡمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوۡمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوۡنَ
﴿٤٣﴾ مَنۡ كَفَرَ فَعَلَيۡهِ كُفۡرُهٗ‌ ۚ وَمَنۡ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنۡفُسِهِمۡ يَمۡهَدُوۡنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجۡزِىَ الَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنۡ فَضۡلِهٖ‌ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖۤ اَنۡ يُّرۡسِلَ
الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيۡقَكُمۡ مِّنۡ رَّحۡمَتِهٖ وَلِتَجۡرِىَ الۡفُلۡكُ بِاَمۡرِهٖ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ
فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوۡمِهِمۡ فَجَآءُوۡهُمۡ
بِالۡبَيِّنٰتِ فَانۡتَقَمۡنَا مِنَ الَّذِيۡنَ اَجۡرَمُوۡا‌ ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيۡنَا نَصۡرُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "पस तू अपना रुख़ उस सच्चे और सीधे दीन की तरफ़ ही रख, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसकी बाज़गश्त (रिर्टन) अल्लाह तआला की तरफ़ से है ही नहीं। उस दिन सब मुतफ़रिक़ हो जाएँगे। (43) कुफ़्र करने वालों पर उनका कुफ़्र होगा और नेक काम करने वाले अपनी ही आरामगाह सँवार रहे हैं। (44) ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपने फ़ज़्ल से जज़ा दे जो ईमान लाये और नेक आमाल किये। वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (45) उसकी निशानियों में से ख़ुशख़बरियाँ देने वाली हवाओं को चलाना भी है इसलिए कि तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाये और इसलिए कि उसके हुक्म से कश्तियाँ चलें और इसलिए कि उसके फ़ज़्ल को तुम ढूँढो और इसलिए कि तुम शुक्रगुज़ारी करो। (46) हमने तुझसे पहले भी अपने रसूलों को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा। वह उनके पास दलीलें लाये। फिर हमने गुनहगारों से इंतिक़ाम लिया। हम पर मोमिनों की मदद करना लाज़मी है।" (47)

क़ियामत अल्लाह तआला के एक हुक्म से आ जाएगी (आ. 43 से 47) : अल्लाह तआला अपने बन्दों को दीन पर जम जाने की और चुस्ती से अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदारी करने की हिदायत करता है और फ़र्माता है कि मज़बूत दीन की तरफ़ हमा तन मुतवज्जह हो जाओ, इससे पहले कि क़ियामत का दिन आ जाए। जब उसके आने का अल्लाह तआला का हुक्म हो चुकेगा फिर उस हुक्म को या उस आने वाली साअत को कोई लौटा नहीं सकता। उस दिन नेक बुरे अलग अलग हो जाएँगे। एक जमाअत जन्नत में एक जमाअत भड़कती हुई आग में। काफ़िर अपने कुफ़्र के बोझ तले दब रहे होंगे। और नेक आमाल लोग अपने किये हुए बेहतरीन आरामदेह ज़ख़ीरे पर ख़ुश व ख़ुर्रम होंगे। रब तआला उन्हें उनकी नेकियों का अज्र बहुत कुछ बढ़ा चढ़ाकर कई कई गुना करके दे रहा होगा। एक एक नेकी दस दस बल्कि सात सात सौ बल्कि उससे भी बहुत ज़्यादा करके उन्हें मिलेगी। कुफ़्फ़ार को अल्लाह तआला दोस्त नहीं रखता लेकिन ताहम उन पर भी ज़ुल्म न होगा।

बारिश अल्लाह की क़ुदरत की निशानी और नेअ़मत है : बारिश के आने से पहले भीनी भीनी हवाओं का चलना और लोगों को बारिश की उम्मीद दिलाना। उसके बाद मेंह (बारिश) बरसाना ताकि बस्तियाँ आबाद रहें, जानदार रहें, समुन्द्रों में, दरियाओं में जहाज़ और कश्तियाँ चलें। क्योंकि कश्तियों का चलना भी हवा पर मौक़ूफ़ है। अब तुम अपनी तिजारत और कमाई धंधे के लिए इधर से उधर और उधर से इधर जा आ सको। पस तुम्हें चाहिए कि अल्लाह तआ़ला की इन अनगिनत बेशुमार नेअ़मतों पर उसका शुक्रिया अदा करो। फिर अपने नबी अकरम (ﷺ) को तस्कीन और तसल्ली देने के लिए फ़र्माता है कि अगर आपको लोग झुठलाते हैं तो आप उसे कोई अनोखी बात न समझें। आपसे पहले के रसूलों को भी उनकी उम्मतों ने ऐसे ही टेढ़े तिरछे फ़िक़रे सुनाए हैं। वह भी साफ़ रोशन और वाज़ेह दलीलें, मोजिज़े और अह़काम लाये थे, आख़िरकार झुठलाने वाले अ़ज़ाब के शिकन्जे में कस दिये गए और मोमिनों को उस वक़्त हर क़िस्म की बुराई से नजात मिली। अपन फ़ज़्लो करम से अल्लाह तआ़ला जल्ल शानुहू ने अपने नफ़्से करीम पर यह बात लाज़िम कर ली है कि वह अपने ईमान वाले बन्दों को मदद देगा। जैसे फ़र्मान है (كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ) (6/अन्आम : 55) इब्ने अबी ह़ातिम में ह़दीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "जो मुसलमान भाई की आबरू बचा ले अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि वह उससे जहन्नम की आग को हटा ले। फिर आप (ﷺ) ने पढ़ा (حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ) (30/रूम : 47) (अह़मद : 6/449; और इसकी सनद ज़ईफ़ है बिदूनि ज़िक्रुल आयत इस रिवायत में लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है।)

***

اَللّٰهُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَیَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ كَیْفَ یَشَآءُ وَیَجْعَلُهٗ كِسَفًا
فَتَرَی الْوَدْقَ یَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَاۤ اَصَابَ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ
یَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ یُّنَزَّلَ عَلَیْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِیْنَ ﴿۴۹﴾ فَانْظُرْ
اِلٰۤی اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَیْفَ یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْیِ الْمَوْتٰی ۚ وَهُوَ عَلٰی
كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۵۰﴾ وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِیْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ یَكْفُرُوْنَ ﴿۵۱﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआ़ला हवाएँ चलाता है वह बादल को उठाती हैं फिर अल्लाह तआ़ला अपनी मंशा के मुताबिक़ उसे आसमान में फैला देता है और उसके टुकड़े टुकड़े कर देता है फिर तेरे देखते हुए उसके अंदर से क़तरे निकलते हैं और जिन्हें अल्लाह तआ़ला चाहता है उन अपने बन्दों पर वह पानी बरसाता है तो वह ख़ुश ख़ुश हो जाते हैं। (48) यक़ीन मानना कि बारिश उन पर बरसे उससे पहले पहले तो नाउम्मीद हो रहे थे। (49) पस तू रह़मते इलाही के आसार देख

कि ज़मीन की मौत के बाद किस तरह अल्लाह तआला इसे ज़िन्दा कर देता है? कुछ शक नहीं कि वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और वह हर हर चीज़ पर क़ादिर है। (50) और अगर हम तुंद हवा चला दें और यह लोग खेतियों को मुरझाई हुई पीली पड़ी हुई देख लें तो फिर उसके बाद नाशुक्री करने लगें।" (51)

ठण्डी ठण्डी हवाएँ और बारिश अल्लाह तआला का इन्आम (आ. 48 से 51) : अल्लाह तआला बयान करता है कि वह हवाएँ भेजता है जो बादलों को उठाती हैं या तो समुन्द्रों पर से या जिस तरह और जहाँ से अल्लाह तआला का हुक्म हो। फिर रब्बुल आलमीन बादल को आसमान पर फैला देता है उसे बढ़ा देता है थोड़े को ज़्यादा कर देता है तुमने अक्सर देखा होगा कि बालिश्त दो बालिश्त का बादल उठा फिर जो वह फैला तो आसमान के किनारे ढाँप लिए। और कभी यह भी देखा होगा कि समुन्द्रों से पानी के भरे बादल उठते हैं। इसी मज़्मून को आयत (وَ هُوَ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ) (7/आराफ़ : 57) में बयान फ़र्माया है फिर उसे टुकड़े टुकड़े और तह ब तह कर देता है। वह पानी से स्याह हो जाते हैं। ज़मीन के क़रीब हो जाते हैं। फिर बारिश उन बादलों के बीच से बरसने लगती है जहाँ बरसी वहीं के लोगों की बाछें खिल गईं। फिर फ़र्माता है कि यही लोग बारिश से नाउम्मीद हो चुके थे, और पूरी नाउम्मीदी के वक़्त बल्कि नाउम्मीदी के बाद उन पर बारिशें बरसीं और जल थल हो गए। दो दफ़ा मिन क़ब्लि का लफ़्ज़ लाना ताकीद के लिए है। ही की ज़मीर का मरजअ इन्ज़ाल है और यह भी हो सकता है कि यह तासीसी दलालत हो, यानी बारिश होने से पहले यह उसके मोहताज थे और वह हाजत पूरी हो उससे पहले वक़्त के ख़त्म हो जाने के क़रीब बारिश न होने की वजह से यह मायूस हो चुके थे। फिर उस नाउम्मीदी के बाद दफ़अतन बादल उठता है और बरस जाता है और रेल पेल कर देता है और उनकी ख़ुश्क ज़मीन तर हो जाती है, क़हतसाली तरसाली में बदल जाती है। या तो ज़मीन साफ़ चटयल मैदान थी या हर तरफ़ हरयावल दिखाई देने लगती है। देख लो कि परवरदिगारे आलम बारिश से किस तरह मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है? याद रखो कि जिस रब तआला की यह क़ुदरत तुम देख रहे हो वह एक दिन मुर्दों को उनकी क़ब्रों से भी निकालने वाला है, जबकि उनके जिस्म गल सड़ गए होंगे। समझ लो कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। फिर फ़र्माता है कि अगर हम तेज़ हवा चला दें, अगर आँधियाँ आ जाएँ और इनकी लहलहाती हुई खेतियाँ बर्बाद हो जाएँ तो वह फिर से कुफ़्र करने लग जाते हैं। चुनाँचे सूरह वाक़िया में भी यही बयान हुआ है (اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾) (56/वाक़िया : 63) से (महरूमून) तक। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं "हवाएँ आठ क़िस्म की हैं, चार रहमत की चार ज़हमत की। नाशरात, मुबश्शिरात, मुर्सलात, और ज़ारियात तो रहमत की हैं और अक़ीम, आसिफ़, सरसर और क़ासिफ़ अज़ाब की।" उनमें से पहली दो ख़ुशकियों की हैं और आख़िरी दो तरी की। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "हवाएँ दूसरी से मुसख़्ख़र हैं यानी दूसरी ज़मीन से जब अल्लाह तआला ने आदियों की हलाकत का इरादा किया तो हवाओं के दारोग़ा को यह हुक्म दिया। उसने पूछा कि जनाब बारी तआला! क्या मैं हवाओं के ख़ज़ाने में इतना सूराख़ कर दूँ जितना बेल का नथना होता है? तो फ़र्माने रब तआला हुआ कि नहीं! नहीं! अगर ऐसा हुआ तो तमाम ज़मीन और ज़मीन की सारी चीज़ें उलट पलट हो जाएँगी इतना नहीं बल्कि इतना सूराख़ करो जितना अंगूठी में होता है।" अब सिर्फ़ इतने से सूराख़ से हवा चली जहाँ पहुँची वहाँ भुस उड़ा दिया। जिस चीज़ पर से गुज़री उसे बेनिशान कर

दिया। यह हदीस ग़रीब है और इसका मरफ़ूअ होना मुंकर है। ज़्यादा ज़ाहिर यही है कि यह ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) का क़ौल है।

***

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾ وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

तर्जुमा : ''बेशक तू मुर्दों को नहीं सुना सकता और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकता है जबकि पीठ फेरकर मुड़ गए हों। (52) और न तू अंधों को उनकी गुमराही से हिदायत करने वाला है तू तो सिर्फ़ उन ही लोगों को सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं और हैं भी वह इताअतगुज़ार।'' (53)

क्या मुर्दे भी सुनते हैं? (आ. 52, 53) : बारी तआला अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है कि जिस तरह यह तेरी क़ुदरत से ख़ारिज है कि मुर्दों को जो क़ब्रों में हों तू अपनी आवाज़ सुना सके और जिस तरह यह नामुम्किन है कि बहरे शख़्स को जबकि वह पीठ फेरे मुँह मोड़े जा रहा हो तू अपनी बात सुना सके, इसी तरह से जो हक़ से अंधे हों तू उनकी रहबरी हिदायत की तरफ़ नहीं कर सकता। हाँ! अल्लाह तआला तो हर चीज़ पर क़ादिर है। वह जब चाहे मुर्दों को ज़िन्दों की आवाज़ भी सुना सकता है, हिदायत ज़लालत उसकी तरफ़ से है। तू तो सिर्फ़ उन्हें सुना सकता है जो ईमान वाले हों और अल्लाह तआला के सामने झुकने वाले हों, उसके फ़र्मांबरदार हों, यह लोग हक़ को सुनते हैं और मानते भी हैं। यह तो हुई हालत मुसलमान की और उससे पहले जो हालत बयान हुई वह काफ़िर की है। जैसे और आयत में है (إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ)(6/अन्आम : 36) तेरी पुकार वही क़बूल करेंगे जो कान धरकर सुनेंगे, मुर्दों को अल्लाह तआला ज़िन्दा उठायेगा, फिर सब उसकी तरफ़ लौटाए जाएँगे। एक रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने उन मुश्रिकीन से जो जंगे बद्र में मुसलमानों के हाथों क़त्ल किये गए थे और बद्र की खाइयों में उनकी लाशें फेंक दी गई थीं उनकी मौत के तीन दिन बाद उनसे ख़िताब करके उन्हें डाँटा और ग़ैरत दिलाई। हज़रत उमर (रज़ि.) ने यह देखकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) उनसे बात करते हैं जो मरकर मुर्दा हो गए हैं, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है तुम भी मेरी इस बात को जो मैं उन्हें कह रहा हूँ। इतना नहीं सुनते जितना यह सुन रहे हैं। हाँ! वह जवाब नहीं दे सकते।'' हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस वाक़िया को हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की ज़ुबानी सुनकर फ़र्माया कि, ''आप (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया है कि वह अब बख़ूबी जानते हैं कि जो मैं उनसे कहता था वह हक़ है। फिर आप (रज़ि.) ने मुर्दों के न सुन सकने पर इसी आयत से इस्तिदलाल किया कि (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्ले अबी जहल : 3980, 3981; सहीह मुस्लिम : 932) हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया था यहाँ तक कि हुज़ूर(ﷺ) की यह बात उन्होंने सुन ली ताकि उन्हें पूरी नदामत और काफ़ी शर्मसारी हो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्ले

अबी जहल : 3976; लेकिन उलमा के नज़दीक हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की रिवायत बिलकुल सहीह है क्योंकि इसके बहुत से शवाहिद हैं। इब्ने अब्दुल बर्र (रह.) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरफ़ूअन एक रिवायत सेहत करके वारिद की है कि "जो शख़्स अपने किसी भाई की क़ब्र के पास से गुज़रता है जिसे यह दुनिया में पहचानता था और सलाम करता था तो अल्लाह तआला उसकी रूह लौटा देता है यहाँ तक कि वह जवाब दे।" (अल् इस्तिज़्कार शरहुल मौता : 1/185; ह : 151; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, इसमें फ़ातिमा बिन्ते रय्यान मज्हूला है और इब्ने अब्दुल बर्र ने इसे सहीह नहीं कहा है।)

***

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला वह है कि जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा किया फिर उस कमज़ोरी के बाद तवानाई दी फिर उस तवानाई के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा कर दिया। जो चाहता है पैदा करता है। वह सबसे पूरा वाक़िफ़ और सब पर पूरा क़ादिर है। (54) जिस दिन क़ियामत बरपा हो जाएगी गुनहगार लोग क़समें खाने लगेंगे कि एक घड़ी के सिवा नहीं ठहरे। इसी तरह यह बहके हुए ही रहे। (55) और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया है वह जवाब देंगे कि तुम तो जैसा कि किताबुल्लाह में है यौमे क़ियामत तक ठहरे रहे। आज का यह दिन क़ियामत ही का दिन है लेकिन तुम तो यक़ीन ही नहीं रखते थे। (56) आज ज़ालिमों को उनकी उज़्र मअज़िरत कुछ काम न आएगी और न उनसे तौबा तलब की जाएगी।" (57)

इंसान की असल क्या है? (आ. 54 से 57) : इंसान की तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली पर नज़र डालो उसकी असल तो मिट्टी से है, फिर नुत्फ़े से, फिर ख़ून बस्ता से, फिर गोश्त के लोथड़े से, फिर उसे हड्डियाँ पहनाई जाती हैं, फिर हड्डियों पर गोश्त पोस्त पहनाया जाता है फिर रूह फूँकी जाती है फिर माँ के पेट से ज़ईफ़ व नहीफ़ होकर निकलता है फिर थोड़ा थोड़ा बढ़ता जाता है और मज़बूत होता जाता है फिर बचपन के ज़माने की बहारें देखता है फिर जवानी के क़रीब पहुँचता है फिर जवान होता है। आख़िर नशोनुमा मौक़ूफ़ हो जाती है। अब क़वा फिर मुज़्महिल होने शुरू होते हैं, ताक़तें घटने लगती हैं। अधेड़ उम्र को पहुँचता है फिर बुढ़ा हो जाता है फिर

बुढ़ा फूस हो जाता है। ताक़त के बाद की यह नाताक़ती भी क़ाबिले इब्रत होती है कि हिम्मत पस्त है, देखना, सुनना, चलना, फिरना, उचकना, पकड़ना, ग़र्ज़ हर ताक़त घट जाती है। धीरे धीरे बिलकुल जवाब दे जाती है और सारी चीज़ें बदल जाती हैं। बदन पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रुख़सार पिचक जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं, बाल सफ़ेद हो जाते हैं। यह है कुव्वत के बाद की ज़ईफ़ी और बुढ़ापा। वह जो चाहता है करता है। बनाना बिगाड़ना उसकी क़ुदरत के अदना करिश्मे हैं। सारी मख़्लूक़ उसकी गुलाम, वह सबका मालिक, वह आलिम वह क़ादिर, न उसका सा किसी का इल्म, न उस जैसी किसी की क़ुदरत। हज़रत अतिया औफ़ी (रह.) कहते हैं कि "मैंने इस आयत को (ज़ुअफ़न) तक हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) के सामने पढ़ा तो आप (रज़ि.) ने भी इसे तिलावत किया और फ़र्माया मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने इस आयत को इतना ही पढ़ा था जो आप पढ़ने लगे, जिस तरह मैंने तुम्हारी क़िरअत पर क़िरअत शुरू कर दी।" (अहमद : 2/58; अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ : 3978; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; तिर्मिज़ी : 2936; इसकी सनद में अतिया औफ़ी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 216)

मुज्रिम की दुनिया और आख़िरत में झूठी क़समें : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि कुफ़्फ़ार दुनिया और आख़िरत के कामों से बिलकुल जाहिल हैं। दुनिया की उनकी जिहालत तो यह है कि अल्लाह तआला के साथ औरों को शरीक करते हैं और आख़िरत में यह जिहालत करेंगे कि क़समें खाकर कहेंगे कि हम दुनिया में सिर्फ़ एक साअत ही रहे।

इससे मक़सद उनका यह होगा कि इतने थोड़े से वक़्त में हम पर कोई हुज्जत क़ायम नहीं हुई, हमें मअज़ूर समझा जाए। इसीलिए फ़र्माया कि यह जैसे यहाँ बहकी बहकी बातें कर रहे हैं, दुनिया में भी यह बहके हुए ही रहे। फ़र्माता है कि इनके इस कहने पर उलमा-ए-किराम जैसे दुनिया में इन्हें दलाइल देकर क़ाइल मअक़ूल करते रहे, आख़िरत में भी उनसे कहेंगे कि तुम झूठी क़समें खा रहे हो, तुम किताबुल्लाह यानी किताबुल आमाल में अपनी पैदाइश से लेकर जी उठने तक ठहरे रहे लेकिन तुम बेइल्म और निरे जाहिल लोग हो। पस क़ियामत के दिन ज़ालिमों को अपने करतूत से मअज़िरत करना सिर्फ़ बेकार होगा और वह दुनिया की तरफ़ लौटाए न जाएँगे। जैसे फ़र्मान है (وَ اِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ) (41/हामीम सज्दा : 24) यानी "अगर वह दुनिया की तरफ़ लौटना चाहें तो लौट नहीं सकते।"

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَلَىِٕنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : "बेशक हमने इस क़ुरआन में लोगों के सामने तमाम मिसालें बयान कर दी हैं। तू इनके पास कोई भी निशानी ला यह काफ़िर तो यही कहेंगे कि तुम बेहूदा गो झूठे हो। (58) अल्लाह तआला इन लोगों के दिलों पर जो समझ नहीं रखते, यूँ ही मुहर कर देता है। (59) तू सब्र कर यक़ीनन अल्लाह तआला का वादा सच्चा है तुझे वह लोग ख़फ़ीफ़ न करें जो यक़ीन नहीं रखते।" (60)

नबी (ﷺ) को सब्र की तल्कीन (आ. 58 से 60) : हक़ को हमने इस पाक कलाम में पूरी तरह वाज़ेह कर दिया है और मिसालें दे देकर समझा दिया है कि लोगों पर हक़ खुल जाए और उसकी ताबेदारी में लग जाएँ। उनके पास तो कोई भी मोजिज़ा आ जाए, कैसा ही निशाने हक़ देख लें लेकिन यह तो झट से बिला ग़ौर अलल फ़ोर कह देंगे कि यह जादू है, बातिल है, झूठ है। देखिए चाँद को दो टुकड़े होते हुए देखते हैं और ईमान नहीं लाते।

ख़ुद क़ुरआने करीम की आयत (اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ) (10/यूनुस : 96) में है कि जिन पर तेरे रब तआला की बात साबित हो चुकी है वह ईमान नहीं लाएँगे गो उनके पास तमाम निशानियाँ आ जाएँ यहाँ तक कि वह दर्दनाक अज़ाबों का मुआयना कर लें। पस यहाँ भी फ़र्माता है कि बेइल्म लोगों के दिलों पर इसी तरह मुहरे इलाही लग जाती है। ऐ नबी (ﷺ)! आप सब्र कीजिए इनकी मुख़ालिफ़त और दुश्मनी पर दरगुज़र किये चले जाइए। अल्लाह तआला का वादा सच्चा है, वह ज़रूर तुम्हें एक दिन इन पर ग़ालिब करेगा और तेरी मदद करेगा और दुनिया और आख़िरत में तुझे और तेरे ताबेदारों को मुख़ालेफ़ीन पर ग़ल्बा देगा। तुम्हें चाहिए कि अपने काम पर लगे रहो। हक़ पर जम जाओ, उससे एक इंच इधर उधर न हटो, इसी में सारी हिदायत है बाक़ी सब बातिल के ढ़ेर हैं।

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं "हज़रत अली (रज़ि.) एक मर्तबा सुबह की नमाज़ में थे जो एक ख़ारजी ने आपका नाम लेकर ज़ोर से इस आयत की तिलावत की (وَ لَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ) (39/ज़ुमर : 65) आपने ख़ामोशी से इस आयत को सुना समझा और नमाज़ ही में उसके जवाब में आयत (فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ) (30/रूम 60) तिलावत फ़र्माई।" (तारीख़ लि इब्ने जरीर : 4/54; और वह हसन है; हाकिम : 3/146; बि सनदिन आख़र व सनदुहू ज़ईफ़ुन) (वह हदीस जिससे इस मुबारक सूरत की फ़ज़ीलत और इसकी क़िरअत का सुबह की नमाज़ में मुस्तहब होना साबित होता है।)

एक सहाबी (रज़ि.) फ़र्माते हैं, "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़ाते हुए इसी सूरत की क़िरअत की। अस्नाए क़िरअत में आपको वहम सा हो गया, फ़ारिग़ होकर फ़र्माने लगे तुममें कुछ ऐसे लोग हैं जो हमारे साथ नमाज़ में शामिल हो जाते हैं लेकिन बाक़ायदा ठीक ठाक वुज़ू नहीं करते। तुममें से जो भी हमारे साथ नमाज़ में शामिल हो उसे अच्छी तरह वुज़ू करना चाहिए।" (अहमद : 3/471; नसाई, किताबुल इफ़्तिताह ; बाब अल् क़िराअतु फ़िस्सुब्हि बिर्रूम : 948 और वह सहीह है।) इसकी इस्नाद हसन है। मतन भी हसन है और इसमें एक अजीब भेद और बहुत बड़ी ख़बर है और वह यह है कि आपके मुक़्तदियों के वुज़ू बिलकुल दुरुस्त न होने का असर आप पर भी पड़ा। पस साबित हुआ कि मुक़्तदियों की नमाज़ मुअल्लक़ (जुड़ी हुई) है इमाम की नमाज़ के साथ।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह रूम की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

सूरह लुकमान

سورۃ لقمان

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह लुक़मान - 31

आयातः 34 मक्की सूरह, पैराग्राफः 4

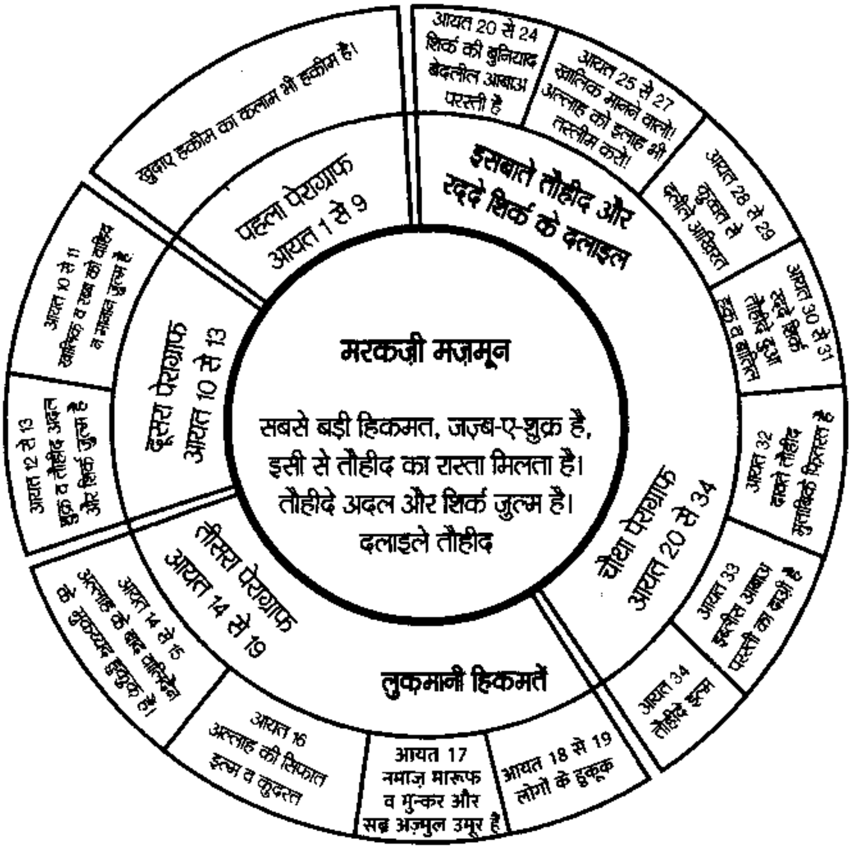

ज़मानए नुज़ूल :

सूरह लुकमान, सूरह अनकबूत और हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी) से पहले, 5 नबवी के अवाइल में नाज़िल हुई। नौ मुस्लिम नौजवानों को हिदायत दी गई है कि उन्हें अपने मुश्रिक वालिदैन के साथ हुस्ने सुलुक तो लाज़िमन करना चाहिए, लेकिन शिर्क के मसले पर उन की इताअत जाइज़ नहीं।

तफ़्सीर सूरह लुक़्मान

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۲﴾ هُدًى وَّرَحۡمَةً لِّلۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۳﴾ الَّذِيۡنَ يُقِيۡمُوۡنَ
الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ يُوۡقِنُوۡنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنۡ رَّبِّهِمۡ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّشۡتَرِىۡ لَهۡوَ الۡحَدِيۡثِ لِيُضِلَّ عَنۡ سَبِيۡلِ
اللّٰهِ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿۶﴾ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِ اٰيٰتُنَا
وَلّٰى مُسۡتَكۡبِرًا كَاَنۡ لَّمۡ يَسۡمَعۡهَا كَاَنَّ فِىۡۤ اُذُنَيۡهِ وَقۡرًا ۚ فَبَشِّرۡهُ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ﴿۷﴾

तर्जुमा : "अलिफ़ लाम मीम (1) यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (2) जो नेक लोगों के लिए रहबर और सरासर रहमत है। (3) जो लोग नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते रहते हैं और आख़िरत पर पूरा यक़ीन रखते हैं। (4) यही लोग हैं जो अपने रब तआला की तरफ़ से हिदायत पर हैं और यही लोग नजात पाने वाले हैं। (5) कुछ लोग ऐसे भी हैं जो लग़्व बातों को मोल लेते हैं कि बेइल्मी के साथ लोगों को अल्लाह की राह से बहकाएँ और उसे हँसी बनाएँ। यही वह लोग हैं जिनके लिए रुस्वा करने वाले अज़ाब हैं। (6) जब उसके सामने हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं तो तकब्बुर करता हुआ इस तरह मुँह फेर लेता है कि गोया उसने सुना ही नहीं, गोया कि उसके दोनों कानों में टेंट हैं, तू उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दे।"(7)

क़ुरआन मजीद हिदायत, रहमत और शिफ़ा है (आ. 1 से 7) : सूरह बक़रह की तफ़्सीर के पहले में ही हुरूफ़े मुक़त्तआत के मआनी और मतलब की तौज़ीह कर दी गई है। यह क़ुरआन हिदायत, शिफ़ा और रहमत है उन नेककारों के लिए जो शरीअत के पूरे पाबन्द हैं। नमाज़ें अदा करते हैं। अरकान, औक़ात वग़ैरह की हिफ़ाज़त के साथ साथ ही नवाफ़िल व सुन्नत वग़ैरह भी नहीं छोड़ते। फ़र्ज़ ज़कात अदा करते हैं, सिलारहमी, सुलूक व एहसान, सख़ावत और दाद व दहिश करते रहते हैं। आख़िरत की जज़ा का उन्हें पूरा यक़ीन है, इसलिए अल्लाह तआला की तरफ़ पूरी रग़बत करते हैं, सवाब के काम करते हैं और रब तआला के अज्र पर नज़रें रखते हैं। न

रियाकारी करते हैं, न लोगों से दाद चाहते हैं। इन औसाफ़ वाले राह पाये हुए हैं, राहे अल्लाह तआला पर लगा दिये गए हैं और यही वह लोग हैं जो दीन व दुनिया में फ़लाह़, नजात और कामयाबी ह़ासिल करेंगे।

गाने, म्यूज़िक, मूसीक़ी कुफ़्फ़ार का शेवा है : ऊपर बयान हुआ था नेक बख़्तों का जो किताबुल्लाह से हिदायत पाते थे और उसे सुनकर नफ़ा उठाते थे। तो यहाँ बयान हो रहा है कि इन बदबख़्तों का जो अल्लाह तआला के कलाम को सुनकर नफ़ा ह़ासिल करने से बाज़ रहते हैं और बजाय इसके गाने बजाने बाजे गाजे ढोल ताशे सुनते हैं। चुनाँचे इस आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं "क़सम अल्लाह तआला की! इससे मुराद गाना और राग है।" (त़ब्री : 20/127; ह़ाकिम : 2/411; और सनद इसकी ह़सन है।) एक और जगह है कि आपसे इस आयत का मत़लब पूछा गया तो आपने तीन बार क़सम खाकर फ़र्माया कि, "इससे मक़्सद गाना और राग रागनियाँ हैं।" यही क़ौल ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, जाबिर (रज़ि.), इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, मुजाहिद, मक्ह़ूल, अ़म्र बिन शुऐब, अ़ली बिन जुज़ैमा (रह़ि.) का है। इमाम ह़सन बस़री (रह़.) फ़र्माते हैं कि "यह आयत गाने बजाने, बाजों गाजों के बारे में उतरी है। "ह़ज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं कि "इससे मुराद सिर्फ़ वही नहीं जो इस लहव व लइब में पैसे ख़र्चे यहाँ मुराद ख़रीद से इसे मह़बूब रखना और पसंद करना है। इंसान को यही गुमराही काफ़ी है कि वह बात़िल की बात को ह़क़ पर पसंद कर ले और नुक़्सान की चीज़ को नफ़ा की बात पर मुक़द्दम कर ले।" (त़ब्री : 20/127) एक क़ौल यह भी है कि लग़्व बात ख़रीदने से मुराद गाने वाली लौण्डियों की ख़रीददारी है। चुनाँचे इब्ने अबी ह़ातिम वग़ैरह में रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "गाने वालियों की ख़रीदो फ़रोख़्त ह़लाल नहीं और उनकी क़ीमत का खाना ह़राम है" उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी है। इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) भी इस ह़दीस को लाये हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति लुक़्मान : 3195; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में उ़बैदुल्लाह बिन ज़ह़िर (अल् जरह़ वत्तअ़दील : 5/315) और अ़ली बिन यज़ीद (अल्मीज़ान : 3/161; रक़्म : 5966) ज़ईफ़ रावी हैं।) और इसे ग़रीब कहा है और इसके एक रावी अ़ली बिन यज़ीद को ज़ईफ़ कहा है। मैं कहता हूँ ख़ुद अ़ली, उनके उस्ताद और उनके कुल शागिर्द ज़ईफ़ हैं , वल्लाहु आ़लम! ज़ह़्ह़ाक (रह़.) का क़ौल है कि "मुराद इससे शिर्क है।" इमाम इब्ने जरीर (रह़.) का फ़ैस़ला यह है कि "हर वह कलाम जो कलामे इलाही और इत्तिबाअ़े शरअ़ से रोके वह इस आयत के हुक्म में दाख़िल है।" (त़ब्री :20/130) इससे ग़र्ज़ इसकी इस्लाम और इस्लाम की मुख़ालिफ़त होती है। एक क़िरअत में (लि यज़िल्ल) है तो लाम लामे आ़क़िबत होगा या लामे तअ़लील होगा। यानी अम्र तक़्दीरी उनकी इस कारगुज़ारी से होकर रहेगा। ऐसे लोग अल्लाह तआ़ला की राह को हँसी बना लेते हैं। आयाते इलाही को भी मज़ाक़ में उड़ाते हैं। अब इनका अंजाम भी सुन लो कि जिस त़रह़ इन्होंने राहे इलाही की, किताबे इलाही की एहानत की, क़ियामत के दिन इनकी एहानत होगी और ख़त़रनाक अ़ज़ाबों में ज़लील व रुस्वा होंगे। फिर बयान हो रहा है कि यह बदनसीब जो खेल तमाशों, बाजों गाजों पर राग रागनियों पर रीझा हुआ है। यह क़ुरआन की आयतों से भागता है, इनसे कान बहरे कर लेता है, यह इसे अच्छी नहीं मालूम होतीं। सुन भी लेता है तो अनसुनी कर देता है। बल्कि इनका सुनना इसे नागवार गुज़रता है कोई मज़ा नहीं आता। वह इसे फ़िज़ूल काम क़रार देता है चूँकि इसकी कोई अहमियत और इ़ज़्ज़त उसके दिल में

नहीं इसलिए वह इनसे कोई नफ़ा हासिल नहीं कर सकता, वह इनसे तो सिर्फ़ बेपरवाह है। ख़ैर यहाँ अल्लाह तआला की आयतों से उकताता है तो क़ियामत के दिन अज़ाब भी वह होंगे कि उकता उकता उठे। यहाँ आयाते क़ुरआनी सुनकर इसे दुख होता है वहाँ दुख देने वाले अज़ाब इसे भुगतने पड़ेंगे।

***

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ﴿٨﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

तर्जुमा : "बेशक जिन लोगों ने ईमान क़बूल किया और काम भी मुताबिक़े सुन्नत किये उनके लिए नेअमतों वाली जन्नतें हैं। (8) जहाँ वह हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआला का वादा सच्चा है। वह बहुत बड़ी इज़्ज़त वाला और कामिल हिक्मत वाला है।" (9)

मुहसिन और मुन्इमे हक़ीक़ी (वास्तविक अता करने वाला) अल्लाह ही है (आ. 8, 9) : नेक लोगों का अंजाम बयान हो रहा है कि जो अल्लाह तआला पर ईमान लाये, रसूलुल्लाह (ﷺ) को मानते रहे, शरीअत की मातहती में नेक काम करते रहे उनके लिए जन्नतें हैं जिनमें तरह तरह की नेअमतें लज़ीज़ ग़िज़ाएँ, बेहतरीन पोशाकें, उम्दा उम्दा सवारियाँ, पाकीज़ा नूरानी चेहरों वाली बीवियाँ हैं। वहाँ उन्हें और उनकी नेअमतों को हमेशगी है कभी ज़वाल नहीं। न तो यह मरें, न इनकी नेअमतें फ़ना हों, न कम हों, न ख़राब हों। यह हतमन और यक़ीनन होने वाला है क्योंकि अल्लाह तआला फ़र्मा चुका है और रब तआला की बातें बदलती नहीं, उसके वादे टलते नहीं। वह करीम है, मन्नान है, मुहसिन है, मुन्इम है, जो चाहे कर सकता है। हर चीज़ पर क़ादिर है, अज़ीज़ है, सब कुछ उसके क़ब्ज़े में है, हक़ीम है, कोई काम, कोई बात, कोई फ़ैसला हिक्मत से ख़ाली नहीं। उसने क़ुरआने करीम को मोमिनों के लिए हादी और शाफ़ी बनाया है, हाँ! बेईमानों के कानों में बोझ हैं और आँखों में अंधापन है। और आयत (وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ) (17/बनी इस्राईल : 82) यानी जो क़ुरआन हमने नाज़िल किया है वह मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है और ज़ालिम तो नुक़्सान में ही बढ़ते हैं।

***

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾ هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾

तर्जुमा : "उसी ने आसमानों को बग़ैर सतून के पैदा किया है तुम उन्हें देख रहे हो और उसने ज़मीन में पहाड़ों को डाल दिया ताकि वह तुम्हें जुंबिश न दे सके और हर तरह के जानदार ज़मीन में फैला दिये और हमने आसमान से पानी बरसाकर ज़मीन में हर क़िस्म के नफ़ीस जोड़े उगा दिये। (10) यह है मख़्लूक़े इलाही। अब तुम मुझे इसके सिवा दूसरे किसी की कोई मख़्लूक़ तो दिखाओ। कुछ नहीं बल्कि यह ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।" (11)

ज़मीनो आसमान का ख़ालिक़ अल्लाह है (आ. 10, 11) : अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपनी क़ुदरते कामिला का बयान फ़र्माता है कि ज़मीन व आसमान और सारी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह ही है। आसमान को उसने बग़ैर ख़म्बों के ऊँचा कर रखा है। वाक़ेइ में कोई सतून है ही नहीं। गो मुजाहिद (रह.) का यह क़ौल भी है कि "सतून हमें नज़र नहीं आते।" इस मसला का पूरा फ़ैसला मैं सूरह रअद की तफ़्सीर में लिख चुका हूँ इसलिए यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं। ज़मीन को मज़बूत करने के लिए और हिलने जुलने से बचाने के लिए उसने इसमें पहाड़ों की मेखें गाढ़ दीं कि वह तुम्हें ज़लज़ले और जुंबिश से बचा ले। इस क़द्र क़िस्म क़िस्म के, भाँत भाँत के जानदार उस ख़ालिक़े हक़ीक़ी ने पैदा किये कि आज तक उनका कोई हस्र नहीं कर सका। अपना ख़ालिक़ और ख़ल्लाक़ होना बयान करके अब राज़िक़ और रज़्ज़ाक़ होना बयान फ़र्मा रहा है कि आसमान से बारिश उतारकर ज़मीन में से तरह तरह की पैदावार उगा दी जो देखने में ख़ुशमंज़र, खाने में बेज़रर, नफ़ा में बहुत बेहतर। शअबी (रह.) का क़ौल है कि "इंसान भी ज़मीन की पैदावार है। जन्नती करीम हैं और दोज़ख़ी लईम हैं।" (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/289) अल्लाह तआला की यह सारी मख़्लूक़ तो तुम्हारे सामने है अब जिन्हें तुम उसके सिवा पूजते हो ज़रा बताओ तो उनकी मख़्लूक़ कहाँ है? जब नहीं तो वह ख़ालिक़ नहीं और जब ख़ालिक़ नहीं तो मअबूद नहीं, फिर उनकी इबादत निरा ज़ुल्म और सख़्त नाइंसाफ़ी है। फ़िल्वाक़ेअ अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने वालों से ज़्यादा अँधा, बहरा, बेअक़्ल, बेइल्म, बेसमझ, बेवक़ूफ़ और कौन होगा?

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑫

तर्जुमा : "हमने यक़ीनन लुक़्मान (عليه السلام) को हिक्मत दी थी कि तू अल्लाह तआला का शुक्र कर। हर शुक्र करने वाला अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है। जो भी नाशुक्री करे वह जान ले कि अल्लाह तआला बेनियाज़ और ता'रीफ़ों वाला है।" (12)

क्या हज़रत लुक़्मान (عليه السلام) नबी थे (आ. 12) : इसमें सलफ़ का इख़्तिलाफ़ है कि हज़रत लुक़्मान (عليه السلام) नबी थे या न थे? अक्सर हज़रात फ़र्माते हैं कि आप नबी न थे, परहेज़गार वली और अल्लाह तआला

के प्यारे बुज़ुर्ग बन्दे थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "आप हब्शी गुलाम थे और बढ़ई थे।" (तब्री : 20/135) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से जब सवाल हुआ तो आपने फ़र्माया, "हज़रत लुक़्मान पस्त क़द ऊँची नाक वाले मोटे होंठ वाले नौबी थे।" (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/310) सईद बिन मुसय्यिब (रह.) फ़र्माते हैं कि "आप मिस्र के रहने वाले हब्शी थे। हिक्मत आपको अ़ता हुई थी लेकिन नबुव्वत नहीं मिली थी। (तब्री : 20/135) आपने एक मर्तबा एक स्याह रंग गुलाम हब्शी से फ़र्माया, अपनी रंगत की वजह से अपने आपको हक़ीर न समझ, तीन शख़्स जो तमाम लोगों से अच्छे थे, तीनों स्याह रंग थे। हज़रत बिलाल (रज़ि.) जो हुज़ूरे रिसालत पनाह (ﷺ) के गुलाम थे, हज़रत मिहजइ (रज़ि.) जो जनाब फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) के गुलाम थे और हज़रत लुक़्मान हकीम जो हब्शा के नौबी थे।" (तब्री : 20/135)

हज़रत ख़ालिद रुबई (रह.) का क़ौल है कि "हज़रत लुक़्मान जो हब्शी गुलाम बढ़ई थे उनसे एक रोज़ उनके मालिक ने कहा कि बकरी ज़िब्ह करो और उसके दो बेहतरीन और नफ़ीस टुकड़े गोश्त के मेरे पास लाओ। वह दिल और ज़ुबान ले गए। कुछ दिनों के बाद फिर उनके आक़ा ने यही हुक्म दिया और कहा कि आज उसके सारे गोश्त में से जो बदतरीन और ख़बीस टुकड़ा हो वह ला दो। आप आज भी यही दो चीज़ें ले गए। मालिक ने पूछा, इसकी क्या वजह है कि बेहतरीन टुकड़े तुझसे माँगे तो तू यही दो लाया और बदतरीन टुकड़े माँगे तो तूने यही ला दिये। यह क्या बात है? आपने फ़र्माया, जब यह अच्छे रहें तो इनसे बेहतर जिस्म का कोई हिस्सा नहीं, और जब यह बुरे बन जाएँ तो फिर सबसे बदतर भी यही हैं।" (तब्री : 20/135) हज़रत मुजाहिद (रह.) का क़ौल है कि "हज़रत लुक़्मान (عليه السلام) नबी न थे, नेक बंदे थे।" (तब्री : 20/134) स्याह फ़ाम गुलाम थे। मोटे होंठों वाले और भरे क़दमों वाले।" और बुज़ुर्ग से यह भी मरवी है कि बनी इस्राईल में क़ाज़ी थे। एक और क़ौल है कि हज़रत दाऊद (عليه السلام) के ज़माने में थे। एक बार आप किसी मज्लिस में वअ़ज़ फ़र्मा रहे थे तो एक चरवाहे ने आपको देखकर कहा, क्या तू वही नहीं है जो मेरे साथ फ़लाँ फ़लाँ जगह बकरियाँ चराया करता था? आपने फ़र्माया हाँ! मैं वही हूँ। उसने कहा, फिर तुझे यह मर्तबा कैसे हासिल हुआ? फ़र्माया सच बोलने और बेकार कलाम न करने से। और रिवायत में है कि आपने अपनी बुलंदी की वजह यह बयान की कि अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और अमानत की अदायगी और कलाम की सच्चाई और बेनफ़ा कामों का छोड़ देना। अल्ग़र्ज़ ऐसे ही आसार साफ़ हैं कि आप नबी न थे। लेकिन उनमें भी आपका गुलाम होना बयान किया गया है जो सबूत है इस अम्र का कि आप नबी न थे, क्योंकि गुलामी नबुव्वत के ख़िलाफ़ है। अम्बिया (عليهم السلام) आ़ली नसब और आ़ली ख़ानदान वाले हुआ करते हैं।

इसीलिए जुम्हूर सलफ़ का क़ौल है कि हज़रत लुक़्मान नबी न थे। हाँ! हज़रत इक्रिमा (रह.) से मरवी है कि "आप नबी थे लेकिन यह भी जबकि सनद साबित हो जाए।" लेकिन इसकी सनद में जाबिर बिन यज़ीद जअ़फ़ी हैं जो ज़ईफ़ हैं, वल्लाहु आ़लम! कहते हैं कि हज़रत लुक़्मान हकीम से एक शख़्स ने कहा क्या तू बनी हसहास का गुलाम नहीं? आपने फ़र्माया, हाँ! हूँ। उसने कहा, क्या तू बकरियों का चरवाहा नहीं? आपने फ़र्माया, हाँ! हूँ। कहा क्या तू स्याह रंग नहीं? आपने फ़र्माया, ज़ाहिर है मैं स्याह रंग हूँ। तुम यह बतलाओ कि तुम क्या पूछना चाहते हो? उसने कहा, यही कि क्या वजह है कि तेरी मज्लिस भरी रहती है लोग तेरे दरवाज़े पर

आते रहते हैं और तेरी बातें शौक़ से सुनते हैं? आपने फ़र्माया, सुनो भाई! जो बातें मैं तुम्हें कहता हूँ उन पर अ़मल कर लो, तुम भी मुझ जैसे हो जाओगे। आँखें हराम चीज़ों से बंद कर लो। ज़ुबान बेहूदा बातों से रोक लो। माल हलाल खाया करो, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करो। ज़बान से सच बात बोला करो। वादे को पूरा किया करो। मेहमान की इ़ज़्ज़त करो, पड़ौसी का ख़्याल रखो, बेफ़ायदा कामों को छोड़ दो, इन आ़दतों की वजह से मैंने बुज़ुर्गी पायी है।''

अबुद्दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हज़रत लुक़्मान हकीम किसी बड़े घराने के अमीर और बहुत ज़्यादा कुंबे वाले न थे। हाँ! उनमें बहुत सी भली आ़दतें थीं, वह ख़ुश ख़ल्क़, ख़ामोश, ग़ौरो फ़िक्र करने वाले, गहरी नज़र वाले, दिन को न सोने वाले थे। लोगों के सामने थूकते न थे, न लोगों के सामने पाख़ाना पेशाब और ग़ुस्ल करते थे, लग़्व कामों से दूर भागते थे, हँसते न थे, जो कलाम करते थे हिक्मत से ख़ाली न होता था, जिस वक़्त उनकी औलाद फ़ौत हुई, यह बिलकुल न रोये। वह बादशाहों, अमीरों के पास इसलिए जाते थे कि ग़ौरो फ़िक्र और इ़ब्रत व नसीहत हासिल करें। इसी वजह से उन्हें बुज़ुर्गी मिली।'' हज़रत क़तादा (रह.) से एक अ़जीब असर वारिद है कि ''हज़रत लुक़्मान को हिक्मत व नबुव्वत के क़बूल करने में इख़्तियार दिया गया तो आपने हिक्मत क़बूल की। रातों रात उन पर हिक्मत बरसा दी गई और रग व पे में हिक्मत भर दी गई। सुबह को उनकी बातें और उनकी आ़दतें सब हकीमाना हो गई। आपसे सवाल हुआ कि आपने नबुव्वत के मुक़ाबले में हिक्मत कैसे इख़्तियार की? तो जवाब दिया कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझे नबी बना देता तो और बात थी मुम्किन था कि मंसबे नबुव्वत को मैं निभा जाता। लेकिन जब मुझे इख़्तियार दिया गया तो मुझे डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि मैं नबुव्वत का बोझ न सह सकूँ, इसलिए मैंने हिक्मत ही को पसंद किया।'' इस रिवायत के एक रावी सईद बिन बशीर हैं जिनमें ज़ुअफ़ है, वल्लाहु आ़लम! हज़रत क़तादा (रह.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं ''मुराद हिक्मत से इस्लाम की समझ है।'' हज़रत लुक़्मान नबी न थे, न उन पर वह़ी आती थी। पस समझ, इ़ल्म और इ़ब्रत मुराद है। हमने उन्हें अपना शुक्र बजा लाने का हुक्म फ़र्माया था कि मैंने तुझे जो इ़ल्म व अ़क़्ल दी है और दूसरों पर जो बुज़ुर्गी अ़ता की है उस पर तू मेरी शुक्रगुज़ारी कर। शुक्रगुज़ार कुछ मुझ पर एहसान नहीं करता वह अपना ही भला करता है। जैसे और आयत में है (وَ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ) (30/रूम : 44)) ''नेकी वाले अपने लिए ही भला तौशा तैयार करते हैं।'' यहाँ फ़र्मान है कि अगर कोई नाशुक्री करे तो अल्लाह तआ़ला को उसकी नाशुक्री ज़रर नहीं पहुँचाती वह अपने बन्दों से बेपरवाह है सब उसके मोहताज हैं वह सबसे बेनियाज़ है। सारी ज़मीन वाले भी अगर काफ़िर हो जाएँ तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, वह सबसे ग़नी है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, हम उसके सिवा किसी और की इ़बादत नहीं करते।

***

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۳﴾ وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰی وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِیْ عَامَیْنِ اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَلِوَالِدَیْكَ ؕ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿۱۴﴾ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤی اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾

तर्जुमा : ''जबकि लुक़्मान ने वअ़ज़ कहते हुए अपने लड़के से फ़र्माया कि मेरे प्यारे बच्चे! अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक न करना। बेशक शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है। (13) हमने इंसान को उसके माँ बाप के बारे में नसीहत की है। उसकी माँ ने ज़ुअ़फ़ पर ज़ुअ़फ़ उठाकर उसे ह़मल में रखा और उसकी दूध छुटाई दो बरस में है कि तू मेरी और अपने माँ बाप की शुक्रगुज़ारी कर। मेरी ही त़रफ़ तुझे लौटकर आना है। (14) अगर वह दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू मेरे साथ उसे शरीक करे जिसका तुझे इल्म न हो तो उनका कहना न मानना, हाँ! दुनिया में उनके साथ अच्छी त़रह बसर करना और उसकी राह चलना जो मेरी त़रफ़ झुका हुआ हो। तुम्हारा सबका लौटना मेरी ही त़रफ़ है। तुम जो कुछ करते हो उससे फिर मैं तुम्हें ख़बरदार कर दूँगा।'' (15)

ह़ज़रत लुक़्मान (عليه السلام) की अपने बेटे को नसीहत (आ. 13 से 15) : ह़ज़रत लुक़्मान (عليه السلام) ने अपने साह़बज़ादे को जो नसीहत व वसिय्यत की थी उसका बयान हो रहा है। यह लुक़्मान बिन अ़न्क़ाअ बिन सुदून थे। इनके बेटे का नाम बमौजिबे बयान सुहैली, साराान है। अल्लाह तआ़ला ने उनका ज़िक्र अच्छाई से किया है और यह फ़र्माया है कि उन्हें ह़िक्मत इनायत की गई थी। उन्होंने जो बेहतरीन वअ़ज़ अपने लड़के को सुनाया था और मुफ़ीद ज़रूरी और उ़म्दा नसीह़तें उन्हें की थीं उनका ज़िक्र हो रहा है। ज़ाहिर है कि औलाद से ज़्यादा प्यारी चीज़ इंसान को और कोई नहीं होती और इंसान अपनी बेहतरीन और अनमोल चीज़ अपनी औलाद को देना चाहता है। तो सबसे पहले यह नसीह़त की कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की इबादत करना उसके साथ किसी को शरीक न करना। याद रखो इससे बड़ी बेह़याई इससे ज़्यादा बुरा काम और कोई नहीं। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से स़ह़ीह़ बुख़ारी में मरवी है कि ''जब आयत (اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ) (6/अन्आम : 82) उतरी तो अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) पर बड़ी मुश्किल आ पड़ी और उन्होंने ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें से वह कौन है जिसने कोई गुनाह किया

ही न हो? और आयत में है कि ईमान को जिन्होंने ज़ुल्म से नहीं मिलाया वही अमन वाले और राहे रास्त वाले हैं। तो आपने फ़र्माया, ज़ुल्म से मुराद आम गुनाह नहीं हैं बल्कि ज़ुल्म से मुराद वह ज़ुल्म है जो हज़रत लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़र्माया था कि बच्चे! अल्लाह तआला के साथ शरीक न ठहराना यह बड़ा भारी ज़ुल्म है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह लुक़्मान बाब (ला तुश्रिक बिल्लाह. इन्नशिर्का ल ज़ुल्मुन अज़ीम) : 4776; सहीह मुस्लिम : 124; तिर्मिज़ी : 3067; अहमद : 1/387)

इस पहली वसिय्यत के बाद हज़रत लुक़्मान (عليه السلام) दूसरी वसिय्यत करते हैं और वह भी दर्जे और ताकीद के लिहाज़ से वाक़ेई ऐसी ही है कि इस पहली वसिय्यत से मिलाई जाए। यानी माँ बाप के साथ सुलूक और एहसान करना, जैसे फ़र्मान जनाब बारी तआला है (وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا) (17/बनी इस्राईल : 23) यानी ''तेरा रब तआला यह फ़ैसला कर चुका है कि सिवाय उसके किसी और की तुम इबादत न करो और माँ बाप के साथ सुलूक व एहसान करते रहो।''

उमूमन कुरआने करीम में इन दोनों चीज़ों का बयान एक साथ है। यहाँ भी इसी तरह है। वह्न के मअनी मशक़्क़त, तक्लीफ़ ज़ुअफ़ वग़ैरह हैं। (तब्री : 20/137) एक तक्लीफ़ तो हमल की होती है जिसे माँ बर्दाश्त करती है। हमल के दुख दर्द की हालत सबको मालूम है। फिर दो साल तक उसे दूध पिलाती रहती है और उसकी परवरिश में लगी रहती है। चुनाँचे और आयत में है (وَ الْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ) (2/बक़रह : 233) यानी ''जो लोग अपनी औलाद को पूरा पूरा दूध पिलाना चाहें उनके लिए आख़िरी इंतिहाई म्याद यह है कि दो साल कामिल तक उन बच्चों को उनकी माएँ अपना दूध पिलाती रहें।''

चूँकि एक और आयत में फ़र्माया गया है (وَحَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا) (46/अहक़ाफ़ : 15) यानी ''मुद्दते हमल और दूध छुटाई कुल तीस माह है।'' इसलिए हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और दूसरे बड़े बड़े इमामों ने इस्तिदलाल किया है कि हमल की कम से कम मुद्दत छः माह है। माँ की इस तक्लीफ़ को औलाद के सामने इसलिए ज़ाहिर किया जाता है कि औलाद अपनी माँ की उन मेहरबानियों को याद करके शुक्रगुज़ारी, इताअत और एहसान करे। और आयत में फ़र्माने आलीशान है (وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا) (17/बनी इस्राईल : 24) ''हमसे दुआ करो और कहो कि मेरे सच्चे परवरदिगार मेरे माँ बाप पर इस तरह रहमो करम फ़र्मा जिस तरह मेरे बचपन में वह मुझ पर रहमो करम किया करते थे। यहाँ फ़र्माया ताकि तू मेरा और अपने माँ बाप का एहसानमंद हो। सुन ले आख़िरी लौटना तो मेरी ही तरफ़ है अगर मेरी इस बात को मान लिया तो भरपूर जज़ा दूँगा।

इब्ने अबी हातिम में है कि जब हज़रत मुआज़ (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अमीर बनाकर भेजा। आपने वहाँ पहुँचकर सबसे पहले खड़े होकर ख़ुत्बा पढ़ा। जिसमें अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़र्माया, ''मैं तुम्हारी तरफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) का भेजा हुआ आया हूँ, यह पैग़ाम लेकर कि तुम एक अल्लाह तआला ही की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, मेरी बातें मानते रहो, मैं तुम्हारी

ख़ैरख़्वाही में कोई कोताही न करूँगा। सबको लौटकर अल्लाह तआला की तरफ़ जाना है। फिर या तो जन्नत मकान बनेगी या जहन्नम ठिकाना होगा। फिर वहाँ से न निकलना होगा न मौत आएगी।" (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद ज़ईफ़ अबू इस्हाक़ अन्अन; हाकिम : 1/83; बि सनदिन आख़र व सनदुहू ज़ईफ़ुन) फिर फ़र्माया अगर तुम्हारे माँ बाप तुम्हें इस्लाम के सिवा और दीन क़बूल करने को कहें, गो वह तमामतर ताक़त ख़र्च कर डालें, ख़बरदार! तुम उनकी मानकर हर्गिज़ मेरे साथ शरीक न करना। लेकिन इससे यह मतलब नहीं कि तुम उनके साथ सुलूक व एहसान करना भी छोड़ दो। नहीं! दुनियावी हुक़ूक़ जो तुम्हारे ज़िम्मे उनके हैं अदा करते रहो। ऐसी बातें उनकी न मानो बल्कि उनकी ताबेदारी करो जो मेरी तरफ़ रुजूअ हो चुके हैं। सुन लो तुम सब लौटकर एक दिन मेरे सामने आने वाले हो उस दिन मैं तुम्हें तुम्हारे तमामतर आमाल की ख़बर दूँगा।

तब्रानी की किताबुल अशरा में है कि हज़रत सअद बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "यह आयत मेरे बारे में नाज़िल हुई है। मैं अपनी माँ की बहुत ख़िदमत किया करता था और उनका पूरा इताअतगुज़ार था। जब मुझे अल्लाह तआला ने इस्लाम की तरफ़ हिदायत की तो मेरी वालिदा मुझ पर बहुत बिगड़ीं और कहने लगीं, बच्चे! यह नया दीन तू कहाँ से निकाल लाया। सुनो! मैं तुम्हें हुक्म देती हूँ कि इस दीन से दस्तबरदार हो जाओ वरना मैं न खाऊँगी न पियूँगी और यूँ ही भूखी मर जाऊँगी। मैंने इस्लाम को छोड़ा नहीं और मेरी माँ ने खाना पीना छोड़ दिया और चारों तरफ़ से मुझ पर आवाज़ें कशी होने लगी कि यह अपनी माँ का क़ातिल है। मैं बहुत ही दिल तंग हुआ। अपनी वालिदा की ख़िदमत में बार बार अर्ज़ किया, ख़ुशामदें कीं समझाया कि अल्लाह तआला के लिए अपनी ज़िद से बाज़ आ जाओ यह तो नामुम्किन है कि मैं इस सच्चे दीन को छोड़ दूँ। इसी ज़िद में मेरी वालिदा पर तीन दिन का फ़ाक़ा गुज़र गया और उसकी हालत बहुत ही ख़राब हो गई तो मैं उसके पास गया और मैंने कहा, मेरी अच्छी अम्माजान सुनो! तुम मुझे मेरी जान से ज़्यादा अज़ीज़ हो लेकिन मेरे दीन से ज़्यादा अज़ीज़ नहीं हो। अल्लाह की क़सम! एक नहीं तुम्हारी एक सौ जानें हों और इसी भूख प्यास में एक एक करके सब निकल जाएँ तो भी मैं आख़िरी लम्हा तक अपने सच्चे दीन इस्लाम को न छोड़ूँगा, हर्गिज़ न छोड़ूँगा। अब मेरी माँ मायूस हो गईं और खाना पीना शुरू कर दिया।"

***

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي
الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿16﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰي مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿17﴾ وَلَا تُصَعِّرْ
خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿18﴾

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "प्यारे बेटे! अगरचे कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो फिर वह भी ख़्वाह किसी पत्थर के तले हो या आसमानों में हो या ज़मीन में हो उसे अल्लाह तआला ज़रूर लाएगा। अल्लाह तआला बड़ा बारीक बीन और ख़बरदार है। (16) ऐ मेरे छोटे बेटे! तू नमाज़ क़ायम रखना, अच्छे कामों की नसीहत करते रहना, बुरे कामों से मना किया करना और जो मुसीबत तुझ पर आ जाए उस पर सब्र करना। यक़ीन मान कि यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (17) लोगों के सामने अपने रुख़सार न फुला और ज़मीन में इतराकर अकड़कर न चल किसी तकब्बुर करने वाले शेख़ी ख़ोरे को अल्लाह तआला पसंद नहीं फ़र्माता। (18) अपनी रफ़्तार में म्यानारवी कर और अपनी आवाज़ को पस्त कर। यक़ीनन बद से बदतर आवाज़ गधों की आवाज़ है।" (19)

मज़ीद ईमान अफ़रोज़ नसीहत (आ. 16 से 19) : हज़रत लुक़्मान (रह.) की यह और वसिय्यतें हैं और चूँकि यह सब हिक्मतों से पुर हैं, क़ुरआन उन्हें बयान कर रहा है ताकि लोग उन पर अमल करें। फ़र्माते हैं कि बुराई, ख़ता, ज़ुल्म अगरचे राई के दाने के बराबर हो, फिर वह ख़्वाह कितना ही पोशीदा और लुका छिपा हो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे पेश करेगा। मीज़ान में रखी जाएँगी और बदला दिया जाएगा। नेक काम पर जज़ा, बद पर सज़ा। जैसे फ़र्मान है (وَ نَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ) (21/अम्बिया : 47) यानी क़ियामत के दिन अदल की तराज़ू रखकर हर एक को बदला देंगे, कोई ज़ुल्म न किया जाएगा। और आयत में है ज़र्रा बराबर नेकी और ज़र्रा बराबर बुराई हर एक देख लेगा ख़्वाह वह नेकी या बदी किसी मकान में, महल में, क़िले में, पत्थर के सूराख़ों में, आसमानों के कोनों में, ज़मीन की तह में कहीं भी हो अल्लाह तआला मख़्फ़ी नहीं, वह उसे लाकर पेश करेगा वह बड़े बारीक इल्म वाला है। छोटी से छोटी चीज़ भी उस पर ज़ाहिर है, अंधेरी रात में चींटी जो चल रही हो उसके पैर की आहट का भी वह इल्म रखता है। कुछ ने यह भी जाइज़ रखा है कि (इन्नहा) में ज़मीर शान की और क़िस्सा की है और इस बिना पर उन्होंने मिस्क़ालु की लाम का पेश पढ़ना भी जाइज़ रखा है लेकिन पहली बात ही ज़्यादा अच्छी है। कुछ कहते हैं सख़रतिन से मुराद वह पत्थर है जो सातवीं ज़मीन के नीचे है। इसकी कुछ सनदें भी सुद्दी (रह.) ने ज़िक्र की हैं अगर सहीह साबित हो जाएँ। कुछ सहाबा (रज़ि.) वग़ैरह से यह मरवी तो है, वल्लाहु आलम! बहुत मुम्किन है कि यह भी बनी इस्राईल से मंक़ूल हो लेकिन उनकी किताबों की किसी बात को हम न सच्ची मान सकें, न झुठला सकें। बज़ाहिर मालूम होता है कि बक़द्रे राई के दाना के कोई अमल हक़ीर हो और ऐसा पोशीदा हो कि किसी पत्थर के अंदर हो। जैसे मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अगर तुममें से कोई शख़्स कोई अमल करे किसी बेसूराख़ के पत्थर के अंदर जिसका न कोई दरवाज़ा हो, न खिड़की हो, न सूराख हो, ताहम अल्लाह तआला उसे लोगों पर ज़ाहिर कर देगा ख़्वाह कुछ ही अमल हो, नेक हो या बद।" (अहमद : 3/28; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) फिर फ़र्माते हैं, बेटे! नमाज़ का ख़्याल रखना। इसके फ़राइज़ इसके वाजिबात,

अरकान, औक़ात वग़ैरह की पूरी हिफ़ाज़त करना। अपनी ताक़त के मुताबिक़ कोशिश के साथ अल्लाह तआला की बातों की तब्लीग़ अपनों परायों में करते रहना, भली बातों के करने को बुरी बातों से बचने को हर एक से कहना और चूँकि नेकी का हुक्म, बुराई से रोक वह चीज़ है जो उमूमन लोगों को कड़वी लगती है और हक़ (कहने वाले) शख़्स से लोग दुश्मनी रखते हैं, इसलिए साथ ही फ़र्माया कि लोगों से जो ईज़ा और मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र कर, दर हक़ीक़त अल्लाह तआला की राह में नंगी तलवार रहना और हक़ पर मुसीबतें झेलते हुए सुस्त न पड़ना यह बड़ा भारी और जवाँमर्दी का काम है। फिर फ़र्माते हैं अपना चेहरा लोगों से न फेर, उन्हें हक़ीर समझकर या अपने आपको बड़ा समझकर लोगों से तकब्बुर न कर। बल्कि नर्मी बरत, ख़ुशख़ल्क़ी से पेश आ, ख़ंदा पेशानी से बात कर। हदीसे मुबारका में है कि "किसी मुसलमान भाई से तू कुशादा पेशानी से हँस मुख होकर मिल ले यह भी तेरी बड़ी नेकी है।" तहमद और पाजामे को टख़्ने से नीचा न कर। यह तकब्बुर व गुरूर है और तकब्बुर और गुरूर अल्लाह तआला को पसंद नहीं है। (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब मा जाअ फ़ी इस्बालिल इज़ार : 4084; और इसकी सनद सहीह है।) हज़रत लुक़्मान (रह.) भी अपने बच्चे को तकब्बुर न करने की वसिय्यत करते हैं कि ऐसा न हो कि अल्लाह तआला के बन्दों को हक़ीर समझकर तू उनसे चेहरा फेर ले और मिस्कीनों से बात करने में भी शर्माये। मुँह मोड़े हुए बातें करना भी गुरूर में दाख़िल है। बाछें फाड़कर लहजा बदलकर हुकूमत के साथ घमण्ड भरे अल्फ़ाज़ से बातचीत भी मना है। सअर एक बीमारी है जो ऊँटों की गर्दन में ज़ाहिर होती है या सिर में और उससे गर्दन टेढ़ी हो जाती है। पस मुतकब्बिर शख़्स को उसी टेढ़ मुँह शख़्स से मिला दिया गया है। अरब उमूमन तकब्बुर के मौक़े पर सअर का इस्तेमाल करते हैं और यह इस्तेमाल उनके शेअरों में भी मौजूद है। ज़मीन पर ऐंठ अकड़कर, इतराकर, गुरूर व तकब्बुर से न चलो, यह चाल अल्लाह तआला को नापसंद है। अल्लाह तआला उन लोगों को नापसंद रखता है जो ख़ुद बीं, मुतकब्बिर, सरकश और फ़ख़्र व गुरूर करने वाले हों। और आयत में है (وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾) (17/बनी इस्राईल : 37) यानी "अकड़कर ज़मीन पर न चलो, न तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो, न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो।" इस आयत की तफ़्सीर भी इसकी जगह गुज़र चुकी है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने एक बार तकब्बुर का ज़िक्र आ गया तो आपने उसकी बड़ी मज़म्मत फ़र्माई और फ़र्माया "ऐसे ख़ुद पसंद मग़रूर लोगों से अल्लाह तआला गुस्सा होता है।" इस पर एक सहाबी (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं जब कपड़े धोता हूँ और ख़ूब सफ़ेद हो जाते हैं तो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं मैं उनसे ख़ुश होता हूँ। इसी तरह जूते में अच्छा तस्मा भला लगता है। कोड़े का ख़ूबसूरत ग़िलाफ़ भला मालूम होता है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह तकब्बुर नहीं है। तकब्बुर उसका नाम है कि तू हक़ को हक़ीर समझे और लोगों को ज़लील ख़्याल करे।" (मुअजमुल कबीर : 1317; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुहम्मद बिन अबी लैला ज़ईफ़, मज्मउज़्ज़वाइद : 5/133) यह रिवायत और तरीक़ से बहुत लम्बी मरवी है और इसमें हज़रत साबित (रज़ि.) के इंतिक़ाल और इनकी वसिय्यत का ज़िक्र भी है। और म्यानारवी की चाल चलाकर न बहुत आहिस्ता ख़ुरामा ख़ुरामाँ, न बहुत जल्दी लम्बे डग भर भरकर। कलाम में मुबालग़ा न कर, बेफ़ायदा चीख़ चिल्ला नहीं। बदतरीन आवाज़ गधे की है जो पूरी ताक़त लगाकर बेकार चिल्लाता है, बावजूद यह कि अल्लाह तआला के सामने अपनी आजिज़ी ज़ाहिर करता है। पस यह बुरी मिसाल देकर समझा दिया

कि बिला वजह चीख़ना, डाँट-डपट करना हराम है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "बुरी मिसालों के लायक़ हम नहीं। अपनी दे दी हुई चीज़ को वापिस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता जो क़ै (उल्टी) करके चाट लेता है।" (सहीह बुख़ार, किताबुल हिबा, बाब ला यहिल्लु लि अहदिन अय्यंरजिड़ फ़ी हिबतिही व सदक़तिही : 2622; तिर्मिज़ी : 1298; अहमद : 1/217) नसाई में इस आयत की तफ़्सीर में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "जब मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआला से उसका फ़ज़्ल तलब करो। और जब गधे की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआला से पनाह तलब करो, इसलिए कि वह शैतान को देखता है।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ख़ैरुल मालिल मुस्लिम ग़नम...: 3303; सहीह मुस्लिम : 2729; अबूदाऊद : 5102; तिर्मिज़ी : 3459) एक रिवायत में है रात को। (सुननुल कुब्रा : 10779; और इसकी सनद सहीह है।) वल्लाहु आलम!

हज़रत लुक़्मान (عليه السلام) के अक़्वाले ज़रीं (बेशक़ीमती बातें) : यह वसिय्यतें हज़रत लुक़्मान हकीम की निहायत ही नफ़ाबख़्श हैं, क़ुरआन हकीम ने इसीलिए बयान फ़र्माई हैं। आपसे और भी बहुत से हकीमाना क़ौल और वअज़ व नसीहत के कलिमात मरवी है बतौर नमूना के और दस्तूर के हम भी थोड़े से बयान करते हैं। मुस्नद अहमद में बज़ुबाने मुबारक रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत लुक़्मान हकीम का एक क़ौल यह भी मरवी है कि "अल्लाह तआला को जब कोई चीज़ सौंप दी जाए तो अल्लाह तबारक व तआला उसकी हिफ़ाज़त करता है।" (अहमद : 2/97; और इसकी सनद सहीह है, सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 1035, 10353; शुअबुल ईमान : 3344) और हदीस में आपका यह क़ौल भी मरवी है कि "तसन्नोअ से बच यह रात के वक़्त डरावनी चीज़ है और दिन को मज़म्मत व बुराई वाली चीज़ है।" (हाकिम : 2/411; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) आपने अपने बेटे से यह भी फ़र्माया था कि "हिक्मत से मिस्कीन लोग बादशाह बन जाते हैं।" (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/316) आपका फ़र्मान है कि "जब किसी मज्लिस में पहुँचो पहले इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ सलाम करो फिर मज्लिस के एक तरफ़ बैठ जाओ। दूसरे न बोलें तो तुम भी ख़ामोश रहो। और अगर वह लोग ज़िक्रुल्लाह करें तो तुम उनमें सबसे ज़्यादा हिस्सा लेने की कोशिश करो और अगर गपशप शुरू कर दें तो तुम उस मज्लिस को छोड़ दो।" मरवी है कि "आप अपने बच्चे को नसीहत करने के लिए जब बैठे तो राई की भरी हुई एक थैली अपने पास रख ली थी और हर हर नसीहत के बाद एक दाना उसमें से निकाल लेते यहाँ तक कि थैली ख़ाली हो गई तो आपने फ़र्माया, बच्चे! अगर इतनी नसीहत किसी पहाड़ को करता तो वह भी टुकड़े टुकड़े हो जाता।" चुनाँचे आपके साहबज़ादे का भी यही हाल हुआ। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हब्शियों का ख़्याल रखा कर उनमें से तीन शख़्स अहले जन्नत के सरदार हैं, लुक़्मान हकीम, नज्जाशी और बिलाल मुअज़्ज़िन।" (तबरानी : 11482; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है, बातिल उबैन बिन सुफ़्यान व उस्मान बिन अब्दुर्रहमान मजरूहान; किताबुल मजरूहीन : 1/180; अल्मौज़ूआत : 2/231)

तवाज़ोअ और फ़रोतनी का बयान : हज़रत लुक़्मान (रह.) ने उस बच्चे को इसकी वसिय्यत की थी और इब्ने अबिद्दुनिया (रह.) ने इस मसले पर एक मुस्तक़िल किताब लिखी है। हम उसमें से अहम बातें यहाँ ज़िक्र कर देते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "बहुत से परागन्दा बालों वाले मेले कुचेले कपड़ों वाले जो किसी बड़े

घर तक नहीं पहुँच सकते, अल्लाह तआला के यहाँ इतने बड़े मर्तबे वाले हैं कि अगर वह अल्लाह तआला की कोई क़सम खा ले तो अल्लाह तआला उसे भी पूरी फ़र्मा दे।'' (मुअजमुल औसत : 865; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/264; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, अब्दुल्लाह बिन मूसा तैमी ज़ईफ़ वलिल हदीसि शवाहिद ज़ईफ़ा) और हदीस में है कि बराअ बिन मालिक ऐसे ही लोगों में से हैं। एक मर्तबा हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत मुआज़ (रज़ि.) को क़ब्रे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास रोते देखकर पूछा तो जवाब दिया कि साहिबे क़ब्र (ﷺ) से एक हदीस मैंने सुनी थी जिसे याद करके रो रहा हूँ। मैंने आप (ﷺ) से सुना, फ़र्माते थे थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है। अल्लाह तआला उन्हें दोस्त रखता है जो मुत्तक़ी हैं, जो लोगों में छुपे छुपाये हैं, जो किसी गिनती में नहीं आते, अगर वह किसी मज्मअ़े में न हों तो कोई उनका पुरसाने हाल नहीं, अगर आ जाएँ तो कोई आवभगत नहीं लेकिन उनके दिल हिदायत के चराग़ हैं वह हर एक ग़ुबार आलूद अंधेरे से बचकर नूर हासिल कर लेते हैं। (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब मन तरज्जा लहुस्सलामत मिनल फ़ितन.... : 3989; और वह ज़ईफ़ है; हाकिम : 1/4) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं यह मेले कुचेले कपड़ों वाले जो ज़लील गिने जाते हैं अल्लाह तआला के यहाँ ऐसे मुक़र्रब हैं कि अगर अल्लाह तआला पर क़सम खा लें तो अल्लाह तआला पूरी कर दे, भले उन्हें अल्लाह तआला ने दुनिया नहीं दी लेकिन अगर उनकी ज़ुबान से पूरी जन्नत का सवाल भी निकल जाए तो अल्लाह तआला पूरा कर लेता है।'' (ज़ईफ़; इसकी सनद में हमीद बिन अ़ता अअरजि ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 1/614; रक़म : 2340) जबकि इस रिवायत का पहला हिस्सा सहीह रिवायात से साबित है जो गुज़र चुका है)

आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मेरी उम्मत में ऐसे लोग भी हैं कि अगर तुममें से किसी के दरवाज़े पर आकर वह लोग एक दीनार (अशरफ़ी) एक दिरहम (रुपया) बल्कि एक फ़िलूस (पैसा) भी माँगें तो तुम न दो लेकिन अल्लाह तआला के वह ऐसे प्यारे हैं कि अगर अल्लाह तआला से जन्नत की जन्नत माँगें तो परवरदिगार दे दे, हाँ! दुनिया न तो उन्हें देता है, न रोकता है इसलिए कि यह कोई क़द्र के क़ाबिल चीज़ नहीं। यह मेली कुचेली दो चादरों में रहते हैं अगर किसी मौक़े पर क़सम खा बैठें तो जो क़सम उन्होंने खाई हो अल्लाह तआला पूरी करता है।'' (यह रिवायत मुर्सल है जबकि मौसूल अल मुअजमुल औसत : 7544; और मज्मउज़्ज़वाइद : 10/264 में (अगर वह दुनिया का सवाल करें तो वह भी मिल जाएगा) के अल्फ़ाज़ नहीं हैं। और औसत वाली इस रिवायत की सनद ज़ईफ़ है, अअमश व अबू मुआविया दोनों मुदल्लस रावी हैं।)

हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''जन्नत के बादशाह वह लोग हैं जो परागन्दा और बिखरे हुए बालों वाले हैं, ग़ुबार आलूद और गर्द से अटे हुए, वह अमीरों के घर जाना चाहें तो उन्हें इजाज़त नहीं मिलती। वह अगर किसी बड़े घराने में निकाह की माँग कर डालें तो वहाँ की बेटी उन्हें नहीं मिलती। उन मिस्कीनों से इंसाफ़ के बर्ताव नहीं बरते जाते। उनकी हाजतें और उनकी उमंगें और मुरादें पूरी होने से पहले वह ख़ुद ही फ़ौत हो जाते हैं और आरज़ूएँ दिल की दिल में रह जाती हैं, उन्हें क़ियामत के दिन इस क़द्र नूर मिलेगा कि अगर वह बाँटा जाये तो तमाम दुनिया को काफ़ी हो जाए।'' (इस सनद में औफ़ का अबू हुरैरा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है, शुअबुल ईमान लिल बैहक़ी : 10486 में दूसरी सनद है वह भी हसन

बसरी की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है।) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह.) के शेअरों में है कि बहुत से वह लोग जो दुनिया में हक़ीर व ज़लील समझे जाते हैं कल क़ियामत के दिन तख़्तो ताज वाले, मुल्क व मनाल वाले, इज़्ज़त व जलाल वाले बने हुए हों गे। बाग़ात में नहरों में नेअमतों में राहतों में मशग़ूल होंगे। रसूले करीम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि जनाब बारी तआला का इर्शाद है कि सबसे ज़्यादा मेरा पसंदीदा वली वह है जो मोमिन हो कम माल वाला, कम जानों वाला, नमाज़ी, इबादत व इताअतगुज़ार, पोशीदा व ऐलानिया मुतीअ हो, लोगों में उसकी इज़्ज़त और उसका वक़ार न हो, उसकी जानिब उँगलियाँ न उठती हों और वह उस पर साबिर हो।'' फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपने हाथ झाड़कर फ़र्माया ''उसकी मौत जल्दी आ जाती है, उसकी मीरास बहुत कम होती है, उसकी रोने वालियाँ थोड़ी होती हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िल किफ़ाफ़ि वस्सब्रि अलैहि : 2347; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने माजा : 4117; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इस रिवायत में अली बिन यज़ीद अल्हानी मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 3/161; रक़म : 5966) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला के सबसे ज़्यादा महबूब बन्दे ग़रीब लोग हैं जो अपने दीन को लिये फिरते हैं जहाँ दीन के कमज़ोर होने का ख़तरा होता है वहाँ से निकल खड़े होते हैं। यह क़ियामत के दिन हज़रत ईसा (عليه السلام) के साथ जमा होंगे।'' हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ (रह.) का क़ौल है कि ''मुझे यह बात पहुँची कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन अपने बन्दे से कहेगा कि क्या मैंने तुझ पर इन्आम व इकराम नहीं किया? क्या मैंने तुझे दिया नहीं? क्या मैंने तेरा जिस्म नहीं ढाँपा? क्या मैंने यह नहीं दिया? क्या मैंने यह नहीं किया? क्या लोगों में तुझे इज़्ज़त नहीं दी थी? वग़ैरह तो अगर हो सके तो जहाँ तक इन सवालों का मौक़ा कम मिले अच्छा। क्या फ़ायदा कि लोग ख़ूबियाँ बयान करें? और अगर वह मज़म्मत भी करें तो हमारा क्या बिगाड़ेगा? हमारे नज़दीक तो वह शख़्स ज़्यादा अच्छा है जिसे लोग बुरा कहते हों और वह अल्लाह तआला के नज़दीक अच्छा हो।'' इब्ने मुहैरीज़ (रह.) तो दुआ करते थे कि ''ऐ अल्लाह! मेरी शोहरत न हो।'' ख़लील बिन अहमद (रह.) अपनी दुआ में कहते थे कि ''ऐ अल्लाह! मुझे अपनी नज़रों में तू बुलंदी अता फ़र्मा और ख़ुद मेरी नज़र में मुझे बहुत हक़ीर कर दे और लोगों की नज़र में मुझे दरम्याना दर्जे का रख।'' फिर ''शोहरत'' का बाब बाँधकर इमाम साहब (रह.) इस हदीस को लाये हैं ''इंसान को यही बुराई काफ़ी है कि लोग उसकी दीनदारी या दुनियादारी की शोहरत देने लगें और उसकी तरफ़ उँगलियाँ उठने लगें, इशारे होने लगें, बस इसी में आकर बहुत से लोग हलाक हो जाते हैं मगर जिन्हें अल्लाह तआला बचा ले। सुनो! अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि वह दिलों और अमलों को देखता है।'' (और इसकी सनद ज़ईफ़ है) हज़रत हसन (रह.) से भी यही रिवायत मुर्सलन मरवी है जब आपने यह रिवायत बयान की तो किसी ने कहा आपकी तरफ़ भी तो उँगलियाँ उठती हैं, आपने फ़र्माया, ''तुम समझे नहीं, मुराद उँगलियाँ उठने से दीनी बिदअत या दुनियावी फ़िस्क़ो फ़िजूर है।'' हज़रत अली (रज़ि.) का फ़र्मान है कि ''शोहरत पाने की चाहत न करो। अपने आपको ऊँचा न करो कि लोगों में चर्चे होने लगें। इल्म हासिल करो लेकिन छुपाओ, चुप रहो ताकि सलामत रहो, नेकों को ख़ुश रखो, बदकारों से नफ़रत करो, हज़रत इब्राहीम बिन अदहम (रह.) फ़र्माते हैं ''शोहरत का चाहने वाला अल्लाह तआला का वली नहीं होता।'' हज़रत अय्यूब (रह.) का फ़र्मान है कि ''जिसे अल्लाह तआला दोस्त बना लेता है वह तो लोगों से अपना दर्जा छुपाता फिरता है।''

मुहम्मद बिन अला (रह.) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला के दोस्त लोग अपने आपको ज़ाहिर नहीं करते।" सिमाक बिन सलमा (रह.) का क़ौल है "आम लोगों में मेल जोल से और अहबाब की ज़्यादती से परहेज़ करो।" हज़रत अबान बिन उस्मान (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "अगर अपने दीन को सलामत रखना चाहते हो तो लोगों से कम जान पहचान रखो।" हज़रत अबुल आलिया (रह.) का क़ायदा था जब देखते कि उनकी मज्लिस में तीन से ज़्यादा लोग जमा हो गए तो उन्हें छोड़कर ख़ुद चल देते। हज़रत तलहा (रज़ि.) ने जब अपने साथ भीड़ देखी तो कहने लगे, तमअ (लालच) की मक्खियाँ और आग के परवाने।" हज़रत हंज़ला (रज़ि.) को लोग घेरे खड़े थे तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कोड़ा ताना और फ़र्माया, "इसमें ताबेअ की ज़िल्लत और मत्बूअ के लिए फ़ित्ना है।" हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के साथ जब लोग चलने लगे तो आपने फ़र्माया, "अगर मेरी पोशीदगियाँ तुम पर खुल जाएँ तो तुममें से दो भी शायद मेरे पीछे चलना पसंद न करते।" हम्माद बिन ज़ेद (रह.) कहते हैं कि "जब हम किसी मज्लिस के पास से गुज़रते और हमारे साथ अय्यूब (रह.) होते तो लोग सलाम करते और वह सख़्ती से जवाब देते। पस यह एक नेअमत थी। आप लम्बी क़मीस़ पहनते। उस पर लोगों ने कहा, तो आपने जवाब दिया कि लम्बी क़मीस़ अगले ज़माने में शोहरत की चीज़ थी। लेकिन अब यह शोहरत इसके ऊँचा करने में है। एक बार आपने अपनी टोपियाँ मस्नून रंग की रंगवाईं कुछ दिनों पहनकर उतार दीं और फ़र्माया, मैंने देखा कि आम लोग इन्हें नहीं पहनते।" हज़रत इब्राहीम नख़ई (रह.) का क़ौल है कि "न तो ऐसा लिबास पहनो कि लोगों की उँगलियाँ उठें, न इतना घटिया पहनो कि लोग हिक़ारत से देखें।" सौरी (रह.) फ़र्माते हैं "आम सलफ़ का यही मअमूल था कि न बहुत बढ़िया कपड़ा पहनते थे न बिलकुल घटिया।" अबू क़िलाबा (रह.) के पास एक शख़्स बहुत ही बेहतरीन और शोहरत का लिबास पहने हुए आया, तो आपने फ़र्माया, "उस आवाज़ देने वाले गधे से बचो।" हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं कि "कुछ लोगों ने दिलों में तो तकब्बुर भर रखा है और ज़ाहिरी लिबास में तवाज़ोअ कर रखी है गोया चादर एक भारी हथोड़ा है।" हज़रत मूसा (عليه السلام) का मक़ूला है कि "आप (عليه السلام) ने बनी इस्राईल से फ़र्माया, मेरे सामने तू दरवेशों की पोशाक में आये हो हालाँकि तुम्हारे दिल भेड़ियों जैसे हैं। सुनो! लिबास चाहे बादशाहों जैसा पहनो मगर दिल ख़ौफ़े इलाही से नर्म रखो।"

अच्छे अख़्लाक़ का बयान : हुज़ूर (ﷺ) सबसे बेहतर अख़्लाक़ वाले थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब कुन्नियतु लिस् सबी व क़ब्ल अय्युलद लिर्रिजाल : 6203; सहीह मुस्लिम : 2310; अबूदाऊद : 4773; तिर्मिज़ी : 2015) आप (ﷺ) से सवाल हुआ कि कौनसा मोमिन बेहतर है? फ़र्माया "सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाला।" (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुल मौत वल इस्तिअदाद लहू : 4259; और वह हसन है।) आप (ﷺ) का फ़र्मान है कि "बावजूद कम आमाल के सिर्फ़ अच्छे अख़्लाक़ की वजह से इंसान बड़े बड़े दर्जे और जन्नत की आला मंज़िल हासिल कर लेता है और बावजूद बहुत सारी नेकियों के सिर्फ़ अख़्लाक़ की बुराई की वजह से जहन्नम के नीचे के तब्क़े में चला जाता है। (इब्ने अबिदुनिया फ़ित्तवाज़ोअ वल ख़ुमूल : 168; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) फ़र्माते हैं अच्छे अख़्लाक़ ही में दुनिया आख़िरत की भलाई है। (तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़िल किब्र : 2000; और इसकी सनद ज़ईफ़ है। इसकी सनद में उमर बिन राशिद यमानी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 3/193; रक़म : 6101) फ़र्माते हैं इंसान अपनी ख़ुश अख़्लाक़ी की वजह से रातों

को क़ियाम करने वाले और दिनों को रोज़े रखने वालों के दर्जों को पा लेता है।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी हुस्निल ख़ल्क़ : 4798; और वह हसन है; अहमद : 6/94; इब्ने हिब्बान : 480) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सवाल हुआ कि दुख़ूले जन्नत को मूजिब (वाजिब करने वाला) आम तौर से क्या है? ''फ़र्माया अल्लाह तआला का डर और अख़्लाक़ की अच्छाई। पूछा गया आम तौर से जहन्नम में कौनसी चीज़ ले जाती है? फ़र्माया दो सूराख़दार चीज़ें, यानी मुँह और शर्मगाह।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब माज जाअ फ़ी हुस्निल ख़ल्क़ : 2004; और इसकी सनद सहीह है; इब्ने माजा : 4246; इब्ने हिब्बान : 476) एक बार चंद आराब के इस सवाल पर कि इंसान को सबसे बेहतर अतिया क्या मिला है? फ़र्माया, ''हुस्ने अख़्लाक़।'' (अहमद : 4/278; ह : 18454; और इसकी सनद सहीह है। हाकिम : 1/121) फ़र्माते हैं नेकी की तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा वज़नी चीज़ और कोई नहीं। (तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़ी हुस्निल ख़ुल्क़ : 2003; और इसकी सनद हसन है।) फ़र्माते हैं तुममें सबसे ज़्यादा बेहतर वह है जो सबसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब सिफ़तुन्नबी (ﷺ) : 3559; सहीह मुस्लिम : 2321; अहमद : 2/161) फ़र्माते हैं जिस तरह मुजाहिद को जो राहे अल्लाह तआला में जिहाद करता है सुबह शाम अज्र मिलता है उसी तरह अच्छे अख़्लाक़ पर भी अल्लाह तआला सवाब अता करता है। (इसकी सनद में मुहम्मद बिन अबी सारा का हसन से सुनना साबित नहीं लिहाज़ा यह सनद ज़ईफ़ है।) इर्शाद है तुममें सबसे ज़्यादा महबूब और सबसे ज़्यादा क़रीब मुझसे वह है जो सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाला हो। मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा बुग़्ज़ व नफ़रत के क़ाबिल और सबसे दूर मुझसे जन्नत की मंज़िल में वह है जो बदख़ुल्क़, बद गो, बदज़ुबान हो। (अहमद : 4/193; ह : 17732; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने हिब्बान : 482; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मक्हूल लम युदरिक अबा सअल्बा (रज़ि.)) फ़र्माते हैं कामिल ईमान वाले अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं जो हर एक से सुलूक व मुहब्बत से मिलें जुलें। (शुअबुल ईमान : 8118; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अली बिन आसिम ज़ईफ़ मशहूर है।) इर्शाद है जिसकी पैदाइश और अख़्लाक़ अच्छे हैं उसे अल्लाह तआला जहन्नम का लुक़्मा नहीं बनाएगा। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) इर्शाद है दो ख़स्लतें मोमिन में जमा नहीं होतीं, बुख़्ल और बदख़ुल्क़ी। फ़र्माते हैं बदख़ुल्क़ी से ज़्यादा बड़ा कोई गुनाह नहीं। (तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़िल बुख़्लि : 1962; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में सदक़ा बिन मूसा ज़ईफ़ रावी है।) इसलिए कि बदअख़्लाक़ी से एक से एक बड़े गुनाह में मुब्तला हो जाता है। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इर्शाद है कि ''अल्लाह तआला के नज़दीक बदख़ुल्क़ी से बड़ा कोई गुनाह नहीं। अच्छे अख़्लाक़ से गुनाह माफ़ हो जाते हैं। बदअख़्लाक़ियाँ नेक आमाल को बर्बाद कर देती हैं जैसे शहद को सिरका ख़राब कर देता है।'' (इब्ने अब्बास (रज़ि.) से अल्मुअजमुल औसत : 854; और इसकी सनद हसन और मज्मउज़्ज़वाइद : 8/24 में मौजूद है।) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं ''गुलाम ख़रीदने से माल नहीं बढ़ता लेकिन ख़ुश अख़्लाक़ से लोग बहुत से गर्वीदा और फ़िदाई हो सकते हैं।'' (मुस्नदे अबी यअला : 6550; मुस्नदे बज़्ज़ार : 1977; हाकिम : 1/124; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ और मर्दूद है, अत्तर्ग़ीब : 3935)

तकब्बुर की मज़म्मत का बयान : इमाम मुहम्मद बिन सीरीन (रह.) का क़ौल है "कहा अच्छा ख़ुल्क़ दीन की मदद है" हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "वह जन्नत में नहीं जाएगा जिसके दिल में राई के बराबर तकब्बुर है। और वह जहन्नमी नहीं जिसके दिल में राई के दाने के बराबर ईमान हो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमुल किब्र व बयानुहू : 91; अबूदाऊद : 4091; तिर्मिज़ी : 1998; इब्ने माजा : 4173; अहमद : 1/413; इब्ने हिब्बान : 224) फ़र्माते हैं "जिस दिल में एक ज़र्रे के बराबर तकब्बुर हो वह औंधे मुँह जहन्नम में जाएगा।" (अहमद : 2/215; और इसकी सनद सहीह है।) इर्शाद है कि इंसान अपने ग़ुरूर और ख़ुद पसंदी में बढ़ते बढ़ते अल्लाह तआला के यहाँ जब्बारों में लिख दिया जाता है फिर सरकशियों के अ़ज़ाब में फंस जाता है। इमाम मालिक बिन दीनार (रह.) फ़र्माते हैं कि "एक दिन हज़रत सुलेमान बिन दाऊद (عليه السلام) अपने तख़्त पर बैठे थे। आप (अ.) के दरबारी में उस वक़्त दो लाख इंसान थे और दो लाख जिन्न थे। आप (عليه السلام) को आसमान तक पहुँचाया गया यहाँ तक कि फ़रिश्तों की तस्बीह की आवाज़ कान में आने लगी और ज़मीन तक लाया गया यहाँ तक कि समुन्द्र के पानी से आप (عليه السلام) के क़दम भीग गये। फिर हातिफ़े ग़ेब ने निदा दी कि अगर इसके दिल में एक दाने के बराबर भी तकब्बुर होता तो जितना ऊँचा गया था उससे ज़्यादा नीचे धंसा दिया जाता।" हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अपने ख़ुत्बे में इंसान की शुरुआती पैदाइश का बयान करते हुए फ़र्माया कि "यह दो शख़्सों की पेशाबगाह से निकलता है इस तरह इसे बयान फ़र्माया कि सुनने वाले घिन करने लगे।" इमाम शअ़बी (रह.) का क़ौल है कि "जिसने दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया वह बड़ा ही सरकश और जब्बार है। फिर आपने यह आयत पढ़ी (اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ) (28/क़सस : 19) क्या तू मुझे भी क़त्ल करना चाहता है? जैसे कि तूने कल एक शख़्स को क़त्ल किया है। तेरा इरादा तो दुनिया में सरकश और जब्बार बनकर रहने का मालूम होता है।" हज़रत हसन (रह.) का मक़ूला है कि "वह इंसान जो हर दिन में दो मर्तबा अपना पाख़ाना अपने हाथ से धोता है वह किस बिना पर तकब्बुर करता है और उसका वस्फ़ अपने में पैदा करना चाहता है जिसने आसमानों को पैदा किया है और अपने क़ब्ज़े में रखा है।" ज़ह्हाक बिन सुफ़्यान (रह.) से दुनिया की मिसाल उस चीज़ से भी देना मरवी है जो इंसान से निकलती है। इमाम मुहम्मद बिन हुसैन बिन अ़ली (रह.) फ़र्माते हैं "जिस दिल में जितना तकब्बुर और घमण्ड होता है उतनी ही अ़क़्ल उसकी कम हो जाती है।" यूनुस बिन उ़बेद (रह.) फ़र्माते हैं कि "सज्दा करने के साथ तकब्बुर और तौहीद के साथ निफ़ाक़ नहीं हुआ करता। बनी उमय्या मार मारकर अपनी औलाद को अकड़कर चलना सिखाते थे।" हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) को आपकी ख़िलाफ़त से पहले एक बार इठलाती हुई चाल चलते हुए देखकर हज़रत ताऊस (रह.) ने उनके पहलू में एक कचोका मारा और फ़र्माया "यह चाल उसकी है जिसके पेट में पाख़ाना भरा हुआ है। हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) बहुत शर्मिन्दा हुए और कहने लगे, माफ़ कीजिए हमें मार मारकर इस चाल की आ़दत डलवाई गई है।

फ़ख़्र व घमण्ड की मज़म्मत का बयान : रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो शख़्स फ़ख़्र व ग़ुरूर से अपना कपड़ा नीचे लटकाकर घसीटेगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ नज़रे रहमत से न देखेगा।" (और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ज़ईफ़ है, इब्ने अबिद्दुनिया

फ़ित्तवाज़ोअ़ वल ख़ुमूल : 238; सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब जर्रु इज़ारिही मिन ग़ैरि ख़ैला : 5784; सहीह मुस्लिम : 2085; अबूदाऊद : 4085; इब्ने माजा : 3569) फ़र्माते हैं उसकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन नज़रे रहमत से नहीं देखेगा जो अपना तहबंद लटकाये। (सहीह बुख़ारी, किताबुल लिबास, बाब जर्र सौबहू मिनल ख़ैला : 5788; सहीह मुस्लिम : 2087; इब्ने माजा : 3571) एक शख़्स दो उम्दा चादरें ओढ़े दिल में गुरूर से अकड़ता हुआ जा रहा था कि अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया। क़ियामत तक वह धंसता हुआ चला जाएगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल् लिबास, बाब मन जर्र सौबहू मिनल ख़ैला : 5789; सहीह मुस्लिम : 2088)

***

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ
ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۭ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ
مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۭ
اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۭ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا
يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۭ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾
نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : ''क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान की हर चीज़ को तुम्हारे काम में लगा रखा है और तुम्हें अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअ़मतें भरपूर दे रखी हैं कुछ लोग अल्लाह तआ़ला के बारे में बग़ैर इल्म के और बग़ैर हिदायत के बग़ैर रोशन किताब के झगड़ा करते हैं। (20) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआ़ला की उतारी हुई वही की ताबेदारी करो तो उनका जवाब होता है कि हमने तो जिस तरीक़ पर अपने बाप दादों को पाया है उसकी ताबेदारी करेंगे, भला अगरचे शैतान इनके बड़ों को दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ बुला रहा हो। (21) जो शख़्स अपने मुँह को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह कर दे और हो भी वह नेक इंसान यक़ीनन उसने मज़बूत कड़ा थाम लिया। तमाम कामों का अंजाम अल्लाह तआ़ला की

तरफ़ है। (22) काफ़िरों के कुफ़्र से आप (ﷺ) रंजीदा न हों। आख़िर इन सबका लौटना तो हमारी ही जानिब है। उस वक़्त इनके किये तक से अल्लाह तआला इन्हें बाख़बर कर देगा। वह तो दिलों के भेदों तक से वाक़िफ़ है। (23) हम इन्हें गो (भले) कुछ यूँ ही सा फ़ायदा दे दें, लेकिन आख़िरकार इन्हें निहायत बेचारगी की हालत में सख़्त अज़ाबों की तरफ़ हँका ले जाएँगे।" (24)

अल्लाह तआला का अपनी नेअमतों का इज़्हार (आ. 20 से 24) : अल्लाह तबारक व तआला अपनी नेअमतों का इज़्हार फ़र्मा रहा है कि देखो! आसमान के सितारे तुम्हारे लिए काम में मशग़ूल हैं, चमक चमककर तुम्हें रोशनी पहुँचा रहे हैं, बादल, बारिश, ओले, ख़ुश्की सब तुम्हारे नफ़ा की चीज़ें हैं, ख़ुद आसमान तुम्हारे लिए महफ़ूज़ और मज़बूत छत है। ज़मीन की नहरें, चश्मे, दरिया, समुन्द्र, दरख़्त, खेती, फल, फूल यह सब नेअमतें भी उसी ने दे रखी हैं। फिर उन ज़ाहिरी बेशुमार नेअमतों के अलावा बातिनी बेशुमार नेअमतें भी उसने तम्हें दे रखी हैं। मस्लन रसूलों को भेजना, किताबों का नाज़िल फ़र्माना, शक शुब्हा वग़ैरह दिलों से दूर करना वग़ैरह। इतनी बड़ी और इतनी सारी नेअमतें जिसने दे रखी हैं हक़ यह था कि उसकी ज़ात पर सबके सब ईमान लाते लेकिन अफ़सोस कि बहुत लोग अब तक अल्लाह तआला के बारे में यानी उसकी तौहीद और उसके रसूलों की रिसालत के बारे में ही उलझे हैं और सिर्फ़ जिहालत से ज़लालत से बग़ैर किसी सनद और दलील के अड़े हुए हैं। जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआला की नाज़िलकर्दा वह्यी की इत्तिबाअ करो तो निरी बेहयाई का जवाब देते हैं कि हम तो अपने अगलों की तक़्लीद करेंगे भले इनके बाप दादा सिर्फ़ कम अक़्ल और बेराह थे, शैतान के फँदे में फंसे हुए थे और उसने उन्हें दोज़ख़ की राह पर डाल दिया था। यह थे इनके सलफ़ और यह हैं इनके ख़लफ़।

अल्लाह तआला फ़र्मांबरदार बन्दे की हिफ़ाज़त करता है : फ़र्माता है कि जो अपने अमल में इख़्लास पैदा करे जो अल्लाह तआला का सच्चा फ़र्मांबरदार बन जाए जो शरीअत का ताबेदार हो जाए, अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करे, अल्लाह तआला के मनाकर्दा कामों से दूर रहे, उसने मज़बूत दस्तावेज़ ले लिया गोया अल्लाह तआला का वादा ले लिया कि अज़ाबों से वह नजात याफ़्ता है। कामों का अंजाम अल्लाह तआला के हाथ है। ऐ प्यारे पैग़म्बर (ﷺ)! काफ़िरों के कुफ़्र से आप ग़मगीन न हों। अल्लाह तआला की तक़्दीर यूँ ही जारी हो चुकी है सबका लौटना अल्लाह तआला की तरफ़ है। उस वक़्त आमाल के बदले मिलेंगे, उस अल्लाह तआला पर कोई बात पोशीदा नहीं। दुनिया में मज़े कर लें फिर तो उन अज़ाबों को बेबसी से सहना पड़ेगा जो बहुत सख़्त और निहायत घबराहट वाले हैं। जैसे और आयत में है (إِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ) (16/नहल : 116) अल्लाह तआला पर झूठ इफ़्तिरा करने वाले फ़लाह से महरूम रह जाते हैं। फ़ायदा दुनिया का तो ख़ैर अलग चीज़ है लेकिन हमारे यहाँ आ चुकने के बाद तो अपने कुफ़्र से सख़्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

***

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٢٥ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٢٦

तर्जुमा : ''अगर तू इनसे पूछेगा कि आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ कौन है? तो यह ज़रूर यही जवाब देंगे कि (अल्लाह तआला) तू कह दे कि सब ता'रीफ़ों के लायक़ अल्लाह तआला ही है लेकिन उनमें के अक्सर बेइल्म हैं। (25) आसमानों में और ज़मीन में जो कुछ है वह सब अल्लाह तआला ही का है। यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत बड़ा ग़नी बेनियाज़ और सज़ावारे हम्दो सना है।'' (26)

जब ख़ालिक़ अल्लाह तआला है तो मअबूद क्यूँ नहीं (आ. 25, 26) : अल्लाह तआला बयान फ़र्माता है कि यह मुश्रिक इस बात को मानते हुए कि सबका ख़ालिक़ अकेला एक अल्लाह तआला ही है फिर भी दूसरों की इबादत करते हैं। हालाँकि उनकी निस्बत ख़ुद जानते हैं कि यह अल्लाह तआला के पैदा किये हुए और उसके मातहत हैं। इनसे अगर पूछा जाए कि ख़ालिक़ कौन है? तो इनका जवाब बिलकुल सच्चा होता है कि अल्लाह तआला! तू कह कि अल्लाह तआला का शुक्र है, इतना तो तुम्हें इक़रार है। बात यह है कि अक्सर मुश्रिक बेइल्म होते हैं। ज़मीन व आसमान की हर छोटी बड़ी, छुपी खुली चीज़ अल्लाह तआला की पैदा की हुई और उसी की मिल्कियत है। वह सबसे बेनियाज़ है और सब उसके मोहताज हैं, वही सज़ावारे हम्द है, वही ख़ूबियों वाला है। पैदा करने में भी, अह्काम मुक़र्रर करने में भी वह क़ाबिले ता'रीफ़ ही है।

***

وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا
نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢٧ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ
وَّاحِدَةٍ ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٢٨

तर्जुमा : ''रूए ज़मीन के तमाम दरख़्तों की अगर क़लमें बन जाएँ और तमाम समुन्द्रों की स्याही हो और उनके बाद सात समुन्द्र और हो ताहम अल्लाह तआला के कलिमात ख़त्म नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह तआला ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (27) तुम सबकी पैदाइश और मरने के बाद ज़िन्दा होना ऐसा ही है जैसे एक जी का। बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला, देखने वाला है।'' (28)

क़लम और क़िरतास अल्लाह तआला की ता'रीफ से आजिज़ हैं (आ. 27, 28) : अल्लाह रब्बुल आलमीन अपनी इज़्ज़त, किब्रियाई, बड़ाई, बुज़ुर्गी, जलालत और शान बयान कर रहा है। अपनी पाक सिफ़तें, अपने बुलंदतरीन नाम और अपने बेशुमार कलिमात का ज़िक्र कर रहा है जिन्हें न कोई गिन सके, न शुमार कर सके, न उन पर किसी का एहाता हो, न उनकी हक़ीक़त को कोई पा सके। सय्यदुल बशर ख़ातिमुन्नबिय्यीन (ﷺ) फ़र्माया करते थे (ला उहसी सनाअन अलैका कमा अस्नेता अला नफ़्सिक) (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब मा युक़ालु फ़िर्रुकूइ वस्सुजूद : 486) ''ऐ अल्लाह! मैं तेरी नेअमतों का इतना शुमार भी नहीं कर सकता जितनी सना (तारीफ़) तूने अपनी ख़ुद बयान की है।'' पस यहाँ जनाब बारी तआला इर्शाद फ़र्माता है कि अगर रूए ज़मीन के तमामतर दरख़्त क़लमें बन जाएँ और तमाम समुन्द्रों के पानी स्याही बन जाएँ और उनके साथ ही सात समुन्द्र और भी मिलाये जाएँ और अल्लाह तआला की अज़्मत व सिफ़ात, जलालत व बुज़ुर्गी के कलिमात लिखने शुरू किये जाएँ तो यह तमाम क़लम घिस जाए, ख़त्म हो जाएँ, सब स्याहियाँ पूरी हो जाएँ, ख़त्म हो जाएँ लेकिन अल्लाह तआला वहदहू ला शरीक लहू की ता'रीफ़ें ख़त्म न होंगी। यह न समझा जाये कि सात से ज़्यादा समुन्द्र हों तो फिर अल्लाह तआला के पूरे कलिमात लिखने के लिए काफ़ी हो जाएँ। नहीं यह गिनती तो ज़्यादती दिखाने के लिए है और यह भी न समझा जाए कि सात समुन्द्र मौजूद हों और वह आलम को घेरे हुए हैं। अल्बत्ता बनी इस्राईल की उन सात समुन्द्रों की बाबत ऐसी रिवायतें हैं लेकिन न तो उन्हें सच कहा जा सकता है और न झुठलाया जा सकता है। हाँ! जो हमने बयान की है इसकी ताईद इस आयत से भी होती है (قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا) (18/कहफ़ : 109) यानी अगर समुन्द्र स्याही बन जाएँ और रब तआला के कलिमात का लिखना शुरू हो तो कलिमाते रब्बानी के ख़त्म होने से पहले ही समुन्द्र ख़त्म हो जाए अगरचे ऐसा ही और समुन्द्र उसकी मदद में लाएँ। पस यहाँ भी मुराद सिर्फ़ उसी जैसा एक ही समुन्द्र लाना नहीं बल्कि वैसा एक फिर एक और भी वैसा ही फिर वैसा ही फिर वैसा ही, अलग़र्ज़ ख़्वाह कितने ही आ जाएँ लेकिन अल्लाह तआला की बातें ख़त्म नहीं हो सकतीं। हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं ''अगर अल्लाह तआला लिखवाना शुरू करे कि मेरा यह अम्र और यह अम्र तो तमाम क़लमें टूट जाएँ और तमाम समुन्द्रों के पानी ख़त्म हो जाएँ।'' मुश्रिकीन कहते थे कि यह कलाम अब ख़त्म हो जाएगा, जिसका रद्द इस आयत में हो रहा है कि न रब तआला के अजायबात ख़त्म हों, न उसकी हिक्मत की इंतिहा, न उसकी सिफ़त और उसके इल्म का आख़िर। तमाम बन्दों के इल्म अल्लाह तआला के इल्म के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे समुन्द्र के मुक़ाबले में एक क़तरा। अल्लाह तआला की बातें फ़ना नहीं होतीं न उसे कोई गिन सकता है। हम जो कुछ उसकी ता'रीफ़ें करें वह उनसे सिवा है। यहूद के उलमा ने मदीना तय्यिबा में रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा था कि यह जो आप कुरआन में पढ़ते हैं (وَمَآ أُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيْلًا) (17/बनी इस्राईल : 85) यानी ''तुम्हें बहुत ही कम इल्म दिया गया है'' इससे क्या मुराद है हम या आपकी क़ौम? आपने फ़र्माया, हाँ! सब।'' उन्होंने कहा, फिर आप कलामुल्लाह की आयत को क्या करेंगे जहाँ फ़र्मान है कि तौरात में हर चीज़ का बयान है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सुनो वह और तुम्हारे पास जो कुछ भी है वह सब अल्लाह तआला के कलिमात के मुक़ाबले में बहुत कम है। तुम्हें जो किफ़ायत हो उतना अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़र्मा दिया है।'' इस पर यह आयत उतरी (तब्री : 20/152; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इस रिवायत में मुहम्मद बिन अबी मुहम्मद मज्हूल रावी है (ज़ुअफ़ाउ वल मतरूकीन : 3/96; रक़म 3179) लेकिन इससे

मालूम होता है कि आयत मदनी होनी चाहिए। हालाँकि मशहूर यह है कि आयत मक्की है, वल्लाहु आलम! अल्लाह तआला हर चीज़ पर ग़ालिब है तमाम चीज़ें उसके सामने पस्त व आजिज़ हैं, कोई उसके इरादा के ख़िलाफ़ नहीं जा सकता। वह अपने काम, क़ौल, शरीअत, हिक्मत और तमाम सिफ़तों में सबसे आला और सब पर ग़ालिब व क़ह्हार है। फिर फ़र्माता है तमाम लोगों को पैदा करना और उन्हें मार डालने के बाद ज़िन्दा कर देना मुझ पर ऐसा ही आसान है जैसे शख़्से वाहिद का। उसका तो किसी बात का हुक्म फ़र्मा देना काफ़ी है। एक आँख झपकाते जितनी देर भी नहीं लगती। न दोबारा कहना पड़े, न अस्बाब और माद्दे की ज़रूरत। एक फ़र्मान में क़ियामत क़ायम हो जाएगी, एक ही आवाज़ के साथ सब जी उठेंगे। अल्लाह तआला तमाम बातों का सुनने वाला है सबके कामों का जानने वाला है। एक शख़्स की बातें और उसके काम जैसे उस पर मख़्फ़ी नहीं इसी तरह तमाम जहान के मामलात उससे पोशीदा नहीं।

***

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : "क्या तू नहीं देखता? कि अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में खपा देता है। सूरज चाँद को उसी ने फ़र्मांबरदार कर रखा है कि हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता रहे। अल्लाह तआला हर चीज़ से जो तुम करते हो ख़बरदार है। (29) यह सब इंतिज़ामात इस वजह से हैं कि अल्लाह तआला हक़ है और उसके सिवा जिन जिनको लोग पुकारते हैं सब बातिल हैं और यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत बुलंदियों वाला बड़ी शान वाला है।" (30)

दिन, रात और मौसमी तग़य्युरात (चेलेन्ज) अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला की निशानी (आ. 29, 30) : रात को कुछ घटाकर दिन को कुछ बढ़ाने वाला और दिन को कुछ घटाकर रात को कुछ बढ़ाने वाला अल्लाह तआला ही है। जाड़ों के दिन छोटे और रातें बड़ी, गर्मियों के दिन बड़े और रातें छोटी, उसी की क़ुदरत का ज़हूर है। सूरज चाँद उसी के तहते फ़र्मान हैं। जो जगह मुक़र्रर है वहीं चलते हैं, क़ियामत तक बराबर इसी चाल चलते रहेंगे, अपनी जगह से इधर उधर नहीं हो सकते। सहीहैन में है "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से पूछा कि जानते हो कि यह सूरज कहाँ जाता है? जवाब दिया कि अल्लाह तआला और उसका रसूल (ﷺ) ख़ूब जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह जाकर अल्लाह तआला के अर्श के नीचे सज्दे में गिर पड़ता है और अपने रब तआला से इजाज़त चाहता है। क़रीब है कि एक दिन उससे कह दिया जाएगा कि जहाँ से आया है वहीं चला जा।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तुश्शम्स वल

क़मर : 3199; सहीह मुस्लिम : 159; सुननुल कुब्रा : 11176; इब्ने हिब्बान : 6153) इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि "सूरज बमंज़िलहू साक़िया के है। दिन को अपने दौरान में जारी रहता है, गुरूब होकर रात को फिर ज़मीन के नीचे गर्दिश करता रहता है यहाँ तक कि अपनी मश्रिक़ से ही तुलूअ हो।" इसी तरह चाँद भी। अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से ख़बरदार है। जैसे फ़र्मान है क्या तू नहीं जानता कि ज़मीन आसमान में जो कुछ है सबका इल्म अल्लाह तआला को है। सबका ख़ालिक़ सबका आलिम अल्लाह तआला ही है। जैसे इर्शाद है अल्लाह तआला ने सात आसमान पैदा किये और उन्हीं के मिस्ल ज़मीनें बनाईं, आख़िर तक। यह निशानियाँ परवरदिगारे आलम इसलिए ज़ाहिर फ़र्माता है कि तुम उनसे अल्लाह तआला के हक़्क़े वुजूद पर ईमान लाओ और उसके सिवा सबको बातिल मानो। वह सबसे बेनियाज़ और बेपरवाह है। सबके सब उसके मोहताज और उसके चौखट के फ़क़ीर हैं। सब उसकी मख़्लूक़ और उसके ग़ुलाम हैं, किसी को एक ज़र्रे के हरकत में लाने की क़ुदरत नहीं। भले सारी मख़्लूक़ मिलकर इरादा कर ले कि एक मक्खी पैदा करें सब आजिज़ आ जाएँगे और हर्गिज़ इतनी क़ुदरत भी नहीं पाएँगे। वह सबसे बुलंद है जिस पर कोई चीज़ नहीं वह सबसे बड़ा है जिसके सामने किसी को कोई बड़ाई नहीं। हर चीज़ उसके सामने हक़ीर और पस्त है।

***

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۱﴾ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ
فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۲﴾

तर्जुमा : "क्या तू इस पर ग़ौर नहीं करता कि दरिया में कश्तियाँ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से चल रही हैं इसलिए कि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दे। यक़ीनन इसमें हर एक सब्रो शुक्र करने वाले के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं। (31) और जब इन पर लहरें सायबानों की तरह छा जाती हैं तो वह निहायत ख़ुलूस के साथ एतिक़ाद करके अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं। फिर जब बारी तआला उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ पहुँचाता है तो कुछ उनमें से एतिदाल पर रहते हैं। हमारी आयतों का इंकार सिर्फ़ वही करते हैं जो बदअहद और नाशुक्रे हों।" (32)

तलातुमख़ेज़ समुन्द्र और कश्तियाँ (आ. 31, 32) : अल्लाह तआला के हुक्म से समुन्द्रों में जहाज़ रानी हो रही है। अगर वह पानी में कश्ती को थामने की और कश्ती में पानी को काटने की क़ुव्वत न रखता तो पानी में कश्तियाँ कैसे चलतीं? वह तुम्हें अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखला रहा है। मुसीबत में सब्र और राहत में शुक्र करने वाले इनसे बहुत कुछ इब्रतें हासिल कर सकते हैं। जब इन कुफ़्फ़ार को समुन्द्रों में मौजें घेर लेती हैं और इनकी कश्ती डगमगाने लगती है और मौजें पहाड़ों की तरह इधर से उधर और उधर से इधर

कश्तियों के साथ अटखेलियाँ करने लगती हैं तो अपना शिर्क कुफ़्र सब भूल जाते हैं और गिरयावज़ारी से एक रब को पुकारने लगते हैं। जैसे और जगह है (وَ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ) (17/बनी इस्राईल : 67) दरिया में जब तुम्हें ज़रर पहुँचता है तो सिवाय अल्लाह तआला के सबको खो बैठते हो। और आयत में है (فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ)(29/अन्कबूत : 65) इनकी उस वक़्त की लजाजत पर अगर हमें रहम आ गया हो और इन्हें समुन्द्र से पार कर दिया तो सिवाय चंद के सब काफ़िर हो जाते हैं। मुजाहिद (रह.) ने यही तफ़्सीर की है। (तब्री : 20/157) जैसे फ़र्मान है (اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ) (29/अन्कबूत : 65) लफ़्ज़ी मअनी यह हैं कि उनमें से कुछ दरम्यानी दर्जे के होते हैं। (तब्री : 20/157) जैसे फ़र्मान है (فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ) (35/फ़ातिर : 32) उनमें के कुछ ज़ालिम हैं कुछ म्याना रू हैं आख़िर तक। और यह भी हो सकता है कि दोनों ही मुराद हों तो मतलब यह होगा कि जिसने ऐसी हालत देखी हो जो इस मुसीबत से निकला हो उसे तो चाहिए कि नेकियों में पूरी तरह कोशिश करे लेकिन ताहम यह बीच में ही रह जाते हैं और कुछ तो फिर कुफ़्र पर चले जाते हैं। ख़त्तार कहते हैं ग़द्दार को जो अहदशिकन हो। ख़तर के मअनी पूरी अहदशिकनी के हैं। कफ़ूर कहते हैं मुंकिर को जो नेअमतों से हट जाए, मुंकिर हो जाए। शुक्र तो एक तरफ़ भूल जाए और ज़िक्र भी न करे।

***

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٙ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۳۴﴾

तर्जुमा : "लोगों! अपने रब तआला का लिहाज़ रखो और उस दिन का डर करो जिस दिन बाप अपने बेटे को कोई नफ़ा न पहुँचा सकेगा और न बेटा अपने बाप का ज़रा सा भी नफ़ा करने वाला होगा। याद रखो कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा है देखो! तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाले और न धोखेबाज़ शैतान तुम्हें धोखे में डाल दे। (33) समझ रखो कि अल्लाह तआला ही के पास क़ियामत का इल्म है वही बारिश नाज़िल करता है और माँ के पेट में जो कुछ है उसे जानता है। कोई भी नहीं जानता कि कल क्या कुछ करेगा? न किसी को यह मालूम है कि किस ज़मीन में मरेगा। याद रखो अल्लाह तआला ही पूरे इल्म वाला और सहीह ख़बरों वाला है।" (34)

क़ियामत के दिन नफ़्सा नफ़्सी का आलम होगा (आ. 33, 34) : अल्लाह तआला लोगों को क़ियामत के दिन से डरा रहा है और अपने तक़्वे का हुक्म कर रहा है। इर्शाद है उस दिन बाप अपने बच्चे को या बच्चा अपने बाप को कुछ काम न आएगा। एक दूसरे का फ़िदया न हो सकेगा। तुम दुनिया पर एतिमाद न कर लो, दारे आख़िरत को फ़रामोश न कर जाओ, शैतान के फ़रेब में न आ जाओ, वह तो सिर्फ़ पर्दा की आड़ में शिकार खेलना जानता है। इब्ने अबी हातिम में है उज़ैर (ﷺ) ने जब अपनी क़ौम की तक्लीफ़ मुलाहिज़ा की और ग़म व रंज बहुत बढ़ गया नींद उचाट हो गई तो अपने रब तआला की तरफ़ झुक पड़े। फ़र्माते हैं, मैंने निहायत तज़र्रोअ वज़ारी की, ख़ूब रोया, गिड़गिड़ाया, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, दुआएँ माँगीं। एक बार रो-रोकर तज़र्रोअ कर रहा था कि मेरे सामने एक फ़रिश्ता आ गया। मैंने उससे पूछा कि क्या नेक लोग बुरों की सिफ़ारिश करेंगे? या बाप बेटों के काम आएँगे? उसने फ़र्माया, क़ियामत का दिन झगड़ों के फ़ैसलों का दिन है। उस दिन अल्लाह तआला ख़ुद सामने होगा, कोई बग़ैर उसकी इजाज़त के लब न हिला सकेगा, किसी को दूसरे के बारे में पकड़ा न जाएगा, न बाप बेटे के बदले, न बेटा बाप के बदले, न भाई भाई के बदले, न ग़ुलाम आक़ा के बदले, न किसी का ग़म व रंज करेगा न किसी को किसी से शफ़क़त व मुहब्बत होगी, न एक दूसरे की तरफ़ से पकड़ा जाएगा। हर शख़्स आपाधापी में होगा, हर एक अपनी फ़िक्र में होगा, हर एक को अपना रोना पड़ा होगा, हर एक अपना बोझ उठाये हुए होगा, न किसी और का।

ग़ैब के ख़ज़ानों की कुँजियाँ अल्लाह तआला के पास है : यह ग़ैब की वह चाबियाँ हैं जिनका इल्म सिवाय अल्लाह तआला के किसी और को नहीं मगर इसके बाद कि अल्लाह तआला इसे मालूम कराये। क़ियामत के आने का सही वक़्त न तो कोई नबी मुर्सल जाने न कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता, उसका वक़्त तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है। इसी तरह बारिश कब कहाँ और कितनी बरसेगी, इसका इल्म भी किसी को नहीं। हाँ! जब उन फ़रिश्तों को हुक्म होता जो उस पर मुक़र्रर हैं तब वह जानते हैं और जैसे अल्लाह तआला मालूम कराये। इसी तरह हामिला के पेट में क्या है? उसे भी सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है, हाँ! जब जनाब बारी तआला की तरफ़ से फ़रिश्तों को हुक्म होता है जो उसी काम पर मुक़र्रर हैं तब उन्हें पता चलता है कि नर होगा या मादा, लड़का होगा या लड़की, नेक होगा या बुरा। इसी तरह किसी को यह भी मालूम नहीं कि कल वह क्या करेगा? न किसी को यह इल्म है कि वह कहाँ मरेगा? और आयत में है (وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ) (6/अन्आम : 59) ''ग़ैब की चाबियाँ अल्लाह तआला ही के पास हैं जिन्हें सिवाय उसके और कोई नहीं जानता।'' और हदीस में है कि ग़ैब की चाबियाँ यही पाँच चीज़ें है जिनका बयान आयत (اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ) (31/लुक़्मान : 34) में है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''पाँच बातें हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा और कोई नहीं जानता, फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत फ़र्माई। (अहमद : 5/353; और इसकी सनद हसन है; बज़्ज़ार : 2249; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/89) बुख़ारी की हदीस के अल्फ़ाज़ तो यह हैं कि यह पाँच ग़ैब की कुँजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता..। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिस्क़ाअ, बाब ला यदरी मता यजीउल मतर इल्लल्लाहु तआला : 1039) मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है, ''मुझे हर चीज़ की कुँजियाँ दी गई हैं मगर

पाँच, फिर यही आयत आप (ﷺ) ने पढ़ी।'' (अह़मद : 2/85, 86; ह़ : 5579; और इसकी सनद सह़ीह़ है; बुख़ारी : 4772; बिग़ैरि हाज़ल् लफ़्ज़ मुख़्तसरन जिद्दा) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमारी मज्लिस में बैठे हुए थे जो एक साहब तशरीफ़ लाए। पूछने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ईमान क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला को, फ़रिश्तों को, किताबों को, रसूलों को, आख़िरत को, मरने के बाद दोबारा जी उठने को मान लेना। उसने पूछा, इस्लाम क्या है? फ़र्माया, एक अल्लाह तआला की इबादत करना, उसके साथ किसी को शरीक न करना, नमाज़ें पढ़ना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना। उसने पूछा, एह़सान किया है? फ़र्माया, तेरा इस त़रह़ अल्लाह तआला की इबादत करना गोया तू उसे देख रहा है और अगर तू नहीं देखता तो वह तुझे देख रहा है। उसने कहा, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) क़ियामत कब है? फ़र्माया, इसका इल्म न मुझे है, न तुझे। हाँ! मैं उसकी निशानियाँ बतलाता हूँ। जब लौण्डी अपने मियाँ को जने और जब नंगे पैरों और नंगे बदनों वाले लोगों के सरदार बन जाएँ। इल्मे क़ियामत उन पाँच चीज़ों में से है जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। वह शख़्स वापिस चला गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जाओ उसे वापिस बुला लाओ। लोग दौड़ पड़े, लेकिन वह कहीं भी नज़र न आये। आपने फ़र्माया, यह जिब्रईल (عليه السلام) थे लोगों को दीन सिखाने आये थे।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह लुक़्मान बाब क़ौलुहू (इन्नल्लाहा इन्दहू इल्मुस्साअति) : 4777; सह़ीह़ मुस्लिम : 9, 10)

हमने इस ह़दीस का मत़लब शरह़ बुख़ारी में ख़ूब बयान कर दिया है। मुस्नद में है कि ह़ज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने अपनी हथेलियाँ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के घुटनों पर रखकर यह सवालात किये थे कि इस्लाम क्या है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह कि तू अपना चेहरा अल्लाह तआला की त़रफ़ मुतवज्जह कर दे और अल्लाह तआला के वाह़िद ला शरीक होने की गवाही दे और मुह़म्मद (ﷺ) के अ़ब्द व रसूल होने की। जब तक यह कर ले तो तू मुसलमान हो गया। पूछा, अच्छा ईमान किस चीज़ का नाम है? फ़र्माया, अल्लाह तआला पर, आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, किताब पर, नबियों पर अक़ीदा रखना, मौत और मौत के बाद दोबारा उठाये जाने की ज़िन्दगी को मानना, जन्नत व दोज़ख़, ह़िसाब मीज़ान और तक़्दीर की भलाई बुराई पर ईमान रखना।'' पूछा जब मैं ऐसा कर लूँ तो क्या मैं मोमिन हो जाऊँगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ!'' फिर एह़सान का पूछा और जवाब पाया जो ऊपर ज़िक्र हुआ है, फिर क़ियामत का पूछा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सुब्ह़ानल्लाह! यह उन पाँच चीज़ों में से है जिन्हें सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है। फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। फिर निशानियों में यह भी ज़िक्र है कि लोग लम्बी चौड़ी इमारतें बनाने लगेंगे।'' (अह़मद : 1/319; इसकी सनद ह़सन है।) एक सह़ीह़ सनद के साथ मुस्नद अह़मद में मरवी है कि बनू आमिर क़बीले का एक शख़्स हुज़ूर (ﷺ) के पास आया, कहने लगा, मैं आऊँ? आपने अपने ख़ादिम को भेजा कि जाकर इन्हें अदब सिखाओ। यह इजाज़त माँगना नहीं जानते। इनसे कहो कि पहले सलाम करो फिर पूछो कि मैं आ सकता हूँ? उन्होंने सुन लिया और उसी त़रह़ सलाम किया और इजाज़त चाही। यह गये और जाकर कहा कि आप हमारे लिए क्या लेकर आए हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''भलाई ही भलाई। सुनो! तुम एक अल्लाह तआला की इबादत करो, लात व उ़ज़्ज़ा को छोड़ दो। दिन रात में पाँच नमाज़ें पढ़ा करो। साल भर

में एक महीने के रोज़े रखो। अपने मालदारों से ज़कात वसूल करके अपने फ़क़ीरों में बाँट दो। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या इल्म में से कुछ ऐसा भी बाक़ी है जिसे आप न जानते हों? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! ऐसा इल्म भी है जिसे सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं जानता। फिर आप (ﷺ) ने यही आयत पढ़ी। (अहमद : 5/368, 369; और इसकी सनद सहीह है।) मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि ''गाँव के रहने वाले एक शख़्स ने आकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से पूछा था कि मेरी औरत हमल से है बतलाइए क्या बच्चा होगा? हमारे शहर में क़हत है फ़र्माइए, बारिश कब होगी? यह तो मैं जानता हूँ कि मैं कब पैदा हुआ अब यह आप मालूम करा दीजिए कि कब मरूँगा? इसके जवाब में यह आयत उतरी कि मुझे इन चीज़ों का मुत्लक़ इल्म नहीं।'' मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं ''यही ग़ैब की कुँजियाँ हैं जिनकी निस्बत फ़र्माने बारी तआला है कि ग़ैब की कुँजियाँ अल्लाह तआला ही के पास हैं।'' हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं, ''जो तुमसे कहे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कल की बात जानते थे तो समझ लेना कि वह बड़ा झूठा है।'' अल्लाह तआला फ़र्माता है कि कोई नहीं जानता कि कल क्या करेगा।'' (तबरी : 20/160) क़तादा (रह.) का क़ौल है कि ''बहुत सी चीज़ें हैं जिनका इल्म अल्लाह तआला ने किसी को नहीं दिया, न नबी अकरम (ﷺ) को, न फ़रिश्तों को। अल्लाह तआला ही के पास क़ियामत का इल्म है, कोई नहीं जानता कि किस साल किस महीने किस दिन या किस रात में वह आएगी। इसी तरह बारिश का इल्म भी उसके सिवा किसी को नहीं कि कब आएगी? और कोई नहीं जानता कि हामिला के पेट का बच्चा नर है या मादा, गोरा होगा या काला? और कोई नहीं जानता कि कल वह नेकी करेगा या बदी (गुनाह)? मरेगा या जियेगा। बहुत मुम्किन है कल मौत या आफ़त आ जाए। न किसी को यह ख़बर है कि किस ज़मीन में वह दबाया जाएगा या समुन्द्र में बहाया जाएगा, या जंगल में मरेगा या नर्म या सख़्त ज़मीन में जाएगा।'' हदीसे मुबारका में है ''जब किसी की मौत दूसरी ज़मीन में होती है तो उसका वहीं का कोई काम निकल आता है और वहीं मौत आ जाती है।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब मा जाअ अनिन्नफ़्स तमूतु हैसु मा कुतिबा लहा : 2146, 2147; और इसकी सनद सहीह है; अहमद : 5/227; हाकिम : 1/42) और रिवायत में है कि यह फ़र्माकर रसूले करीम (ﷺ) ने यही आयत पढ़ी। आशा हिम्दानी के शेअर हैं जिनमें इस मज़्मून को निहायत ख़ूबसूरती से अदा किया है। एक रिवायत में है कि ''क़ियामत के दिन ज़मीन अल्लाह तआला से कहेगी कि यह हैं तेरी अमानतें जो तूने मुझे सौंप रखी थीं।'' (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुल मौति वल इस्तिअदाद लहू : 4263; वहुव सहीहुन; शुअबुल ईमान : 9889) तबरानी वग़ैरह में भी यह हदीस मौजूद है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह लुक़्मान की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह सजदा

سورة السجدة

FLOW CHART

तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE

नज़्मे जली

सूरह सज्दा - 32

आयातः 30 मक्की सूरह, पैराग्राफः 5

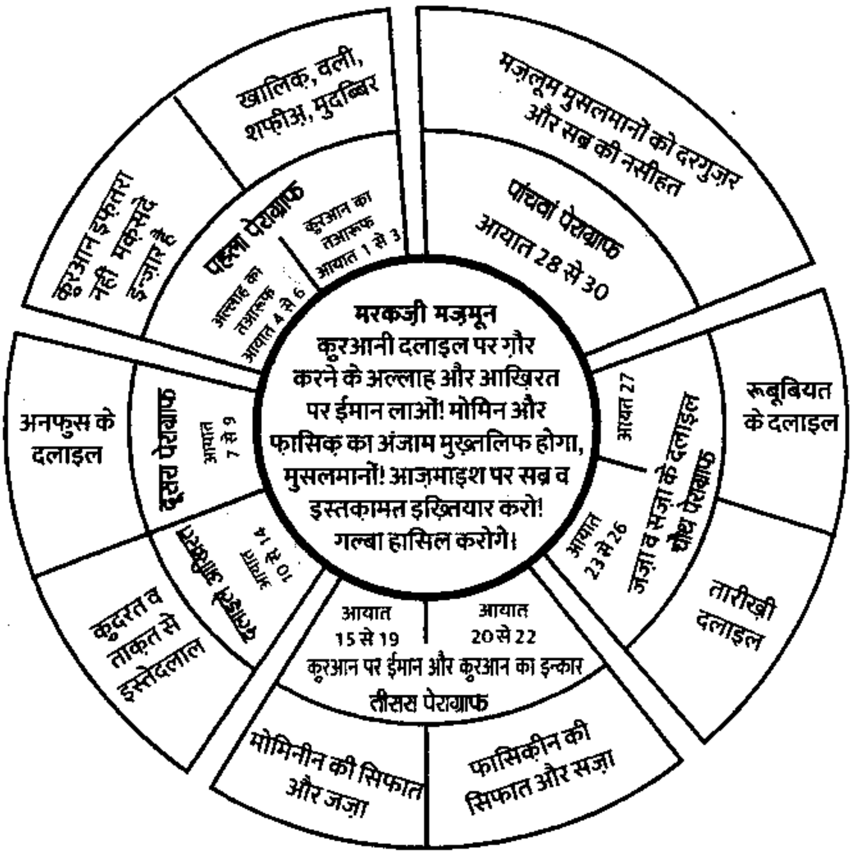

जमानए नुज़ूल :

सूरह सज्दा एलाने आम के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के दूसरे दौर (4 से 5 नबवी) के इब्तिदाइ दौर में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) पर मुफ़्तरी होने का इल्ज़ाम था। मुसलमानों पर ज़ुल्मो-सितम का आग़ाज़ नहीं हुवा था। क़ुरैश के नाम निहाद दानिश्वर मुश्रेकीन को उन के मुख़ालिफ़ मोमिनीन के किरदार पर ग़ौर करने की दावत दी गई।

तफ़्सीर सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा

सूरह सज्दा की फ़ज़ीलत : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल जुम्आ में हदीस वारिद की है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) जुम्आ के दिन सुबह की नमाज़ में (अलिफ़ लाम मीम अस्सज्दा) और (हल अता अलल इंसान) अल्ख़ पढ़ा करते थे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुम्आ, बाब मा युक़रअु फ़ी सलातिल फ़ज्रि यौमुल जुम्आ : 891; सहीह मुस्लिम : 880) मुस्नद अहमद में है कि "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमेशा सोने से पहले सूरह (अलिफ़ लाम मीम सज्दा) और सूरह (तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क) पढ़ लिया करते थे।" (अहमद : 3/340; तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि सूरतिल मुल्क : 2892; और इसकी सनद ज़ईफ़ है यह रिवायत अबुज़्ज़ुबैर मुदल्लस की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है। दारमी : 2/455; हाकिम : 2/412)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

الٓمّٓ ① تَنۡزِيۡلُ الۡكِتٰبِ لَا رَيۡبَ فِيۡهِ مِنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ② اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰىهُ ۚ بَلۡ هُوَ
الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكَ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اَتٰىهُمۡ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ لَعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ③ اَللّٰهُ
الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ ؕ
مَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا شَفِيۡعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوۡنَ ④ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ مِنَ السَّمَآءِ
اِلَى الۡاَرۡضِ ثُمَّ يَعۡرُجُ اِلَيۡهِ فِىۡ يَوۡمٍ كَانَ مِقۡدَارُهٗۤ اَلۡفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ ⑤ ذٰلِكَ عٰلِمُ
الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ⑥

तर्जुमा : "अलिफ़ लाम मीम (1) बिला शुब्हा इस किताब का उतारना तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है। (2) क्या यह कहते हैं कि इसने इसे गढ़ लिया है। नहीं! नहीं! बल्कि यह तेरे रब तआला की तरफ़ से हक़ है ताकि तू उन्हें डराये जिनके पास तुझसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, हो सकता है कि वह राहे रास्त पर आ जाएँ। (3) अल्लाह तआला वह है

जिसने आसमान व ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है सबको छः दिन में पैदा कर दिया फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ। तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मददगार और सिफ़ारिशी नहीं, क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते? (4) वह आसमान से ज़मीन की तरफ़ कामों की तदबीर उतारता है फिर एक ही दिन में उसकी तरफ़ चढ़ जाता है जिसका अंदाज़ा तुम्हारी गिनती के एक हज़ार साल के बराबर है। (5) यही है छुपे खुले का जानने वाला, ज़बरदस्त ग़ालिब, बहुत ही मेहरबान।'' (6)

क़ुरआन हकीम अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िलशुदा है (आ. 1 से 6) : सूरतों के शुरू में जो हुरूफ़े मुक़त्तआत हैं उनकी पूरी तफ़्सीर सूरह बक़रह में गुज़र चुकी है। यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। यह किताब क़ुरआने हकीम बेशक व शुब्हा अल्लाह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से नाज़िल हुआ है मुश्रिकीन का यह क़ौल ग़लत है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ख़ुद इसे गढ़ लिया है। नहीं! यह तो यक़ीनन अल्लाह तआला की तरफ़ से है। इसलिए उतरा है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस क़ौम को डरावे के साथ आगाह कर दें जिनके पास आप (ﷺ) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया। ताकि वह हक़ की इत्तिबाअ़ करके नजात हासिल कर लें।

ज़मीन व आसमान की तख़लीक़ का तज़्किरा : तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है। उसने छः दिन में ज़मीनों आसमान बनाये। फिर अ़र्श पर क़रार पकड़ा। इसकी तफ़्सीर गुज़र चुकी है। मालिक ख़ालिक़ वही है हर चीज़ की नकेल उसी के हाथ में है। तदबीरें सब कामों की वही करता है, हर चीज़ पर ग़ल्बा उसी का है। उसके सिवा मख़्लूक़ का न कोई वाली न उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिशी। ऐ वह लोगों! जो उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो, दूसरों पर भरोसा करते हो, क्या तुम नहीं समझ सकते कि इतनी बड़ी क़ुदरतों वाला क्यूँ किसी को अपना शरीकेकार बनाने लगा? वह बराबरी से, वह वज़ीर व मुशीर से, वह शरीक व सहीम से पाक, मुनज़्ज़ा और मुबर्रा है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, न उसके अलावा कोई पालनहार है। नसाई में है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मेरा हाथ थामकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान और इनके बीच की तमाम चीज़ें पैदा करके सातवें दिन अ़र्श पर क़ियाम किया। मिट्टी हफ़्ते के दिन बनी, पहाड़ इतवार के दिन, दरख़्त पीर के दिन, बुराईयाँ मंगलवार के दिन, नूर बुध के दिन, जानवर जुमेरात के दिन, आदम (ﷺ) जुम्आ के दिन अ़स्र के बाद दिन की आख़िरी घड़ी में, इसे तमाम रूए ज़मीन की मिट्टी से पैदा किया जिसमें लाल स्याह, अच्छी बुरी हर तरह की थी इसी बाइस औलादे आदम भली बुरी हुई।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब इब्तिदाउल ख़ल्क़ व ख़ल्क़े आदम : 2889; सुननुल कुब्रा : 11010; इब्ने हिब्बान : 6161; अहमद : 2/327) इमाम बुख़ारी (रह.) इसे मुअ़ल्लल बताते हैं।

फ़र्माते हैं और सनद से मरवी है कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने इसे कअ़ब अहबार से बयान किया है और हज़राते मुहद्दिसीन (रह.) ने भी इसे मअ़लूल बताया है, वल्लाहु आलम!

उसका हुक्म सातों आसमान के ऊपर से उतरता है और सातों ज़मीनों के नीचे तक पहुँचता है। जैसे और आयत में है (اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ) (65/तलाक़ : 12) अल्लाह तआला ने सात आसमान बनाए और उन ही के मिस्ल ज़मीनें, उसका हुक्म इन सबके बीच उतरता है। आमाल अपने दीवान की तरफ़ उठाए और चढ़ाए जाते हैं जो आसमाने दुनिया के ऊपर है। ज़मीन से पहला आसमान पाँच सौ साल की दूरी पर है और इतना ही उसका घेराव है। इतना उतरना चढ़ना अल्लाह तआला की कुदरत से फ़रिश्ता एक आँख झपकने में कर लेता है। इसीलिए फ़र्माया एक दिन में जिसकी मिक़्दार तुम्हारी गिनती के ऐतिबार से एक हज़ार साल की है। इन उमूर का मुदब्बिर अल्लाह तआला है। वह अपने बन्दों के आमाल से बाख़बर है। सब छोटे बड़े अमल उसकी तरफ़ चढ़ते हैं। वह ग़ालिब है जिसने हर चीज़ को अपना मातहत कर रखा है, कुल बन्दे और कुल गर्दनें उसके सामने झुकी हुई हैं, वह अपने मोमिन बन्दों पर बहुत ही मेहरबान है, अज़ीज़ है अपनी रहमत में, और रहीम है अपनी इज़्ज़त में।

***

الَّذِیْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِیْنٍ ۝٧ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ
سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ۝٨ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِی الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِیْ
خَلْقٍ جَدِیْدٍ ؕ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠ قُلْ یَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِیْ
وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١

तर्जुमा : "जिसने निहायत ख़ूब बनाई जो चीज़ भी बनाई और इंसान की बनावट मिट्टी से शुरू की। (7) फिर उसकी नस्ल एक बेवक़अत पानी के ख़ुलासे से पैदा की। (8) जिसे ठीक ठाक करके उसमें अपनी रूह फूँकी, उसी ने तुम्हारे कान आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत ही थोड़ा एहसान मानते हो। (9) कहने लगे क्या जब हम ज़मीन में खो जाएँगे क्या फिर नई पैदाइश में आ जाएँगे? बात यह है कि इन लोगों को अपने परवरदिगार की मुलाक़ात का यक़ीन ही नहीं। (10) कह दे कि तुम्हें मौत का वह फ़रिश्ता फ़ौत करेगा जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है फिर तुम सब परवरदिगार की तरफ़ लौटाए जाओगे।" (11)

उसकी हर तख़्लीक़ शाहकार है (आ. 7 से 11) : फ़र्माता है अल्लाह तबारक व तआला ने हर चीज़ क़रीने से, बेहतरीन तौर से, बेहतरीन तर्कीब पर, ख़ूबसूरत बनाई है। हर चीज़ की पैदाइश कितनी उम्दा, कैसी

मुस्तहकम और मज़बूत है। आसमान व ज़मीन की पैदाइश के साथ ही ख़ुद इंसान की पैदाइश पर ग़ौर करो। उसका शुरू देखो कि मिट्टी से पैदा हुआ है। अबुल बशर हज़रत आदम (عليه السلام) मिट्टी से पैदा हुए। फिर उनकी नस्ल नुत्फ़े से जारी रखी जो मर्द की पीठ और औरत के सीने से निकलता है। फिर उसे यानी आदम (अ.) को मिट्टी से पैदा करने के बाद ठीक ठाक और दुरुस्त किया और उसमें अपने पास की रूह फूँकी। तुम्हें कान, आँख, समझ अता की। अफ़सोस कि फिर भी तुम शुक्रगुज़ारी में कसरत नहीं करते। नेक अंजाम और ख़ुश व ख़ुर्रम वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की दी हुई ताक़तों को उसी की राह में ख़र्च करता है जल्ल शानुहू व अज़्ज़ इस्मुहू।

मौत के फ़रिश्ते से मुलाक़ात : कुफ़्फ़ार का अक़ीदा बयान हो रहा है कि वह मरने के बाद जीने के क़ाइल नहीं और इसे वह महाल (असंभव) जानते हैं और कहते हैं कि जब हमारे रेज़े रेज़े जुदा हो जाएँगे और मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाएँगे फिर भी हम नये सिरे से बनाए जा सकते हैं? अफ़सोस! यह लोग अपने ऊपर अल्लाह तआला को भी क़यास करते हैं और अपनी महदूद कुदरत पर अल्लाह तआला की नामालूम कुदरत का अंदाज़ा करते हैं। मानते हैं, जानते हैं कि अल्लाह तआला ने पहली बार पैदा किया है। ताज्जुब है कि फिर दोबारा पैदा करने पर उसे क़ादिर क्यूँ नहीं मानते? हालाँकि उसका तो सिर्फ़ फ़र्मान चलता है। जहाँ कहा, यूँ हो जा, वहीं वह हो गया। इसीलिए फ़र्मा दिया कि उन्हें अपने परवरदिगार की मुलाक़ात से इंकार है। उसके बाद की आयत में फ़र्माया, मलकुल मौत एक फ़रिश्ते का लक़ब है। हज़रत बराअ (रज़ि.) की वह हदीस जिसका बयान सूरह इब्राहीम में गुज़र चुका है, उससे भी पहली बात यही समझ में आती है और कुछ आसार में उनका नाम इज़्राईल भी है और यही मशहूर है। (तब्री : 20/175) हाँ! उनके साथ और उनके साथ काम करने वाले और फ़रिश्ते भी हैं जो जिस्म से रूह को निकालते हैं और नरख़रे तक पहुँच जाने के बाद मलकुल मौत उसे ले लेते हैं। उनके लिए ज़मीन समेट दी गई है और ऐसी है जैसे हमारे सामने कोई तशतरी रखी हुई हो कि जो चाहा उठा लिया। (तब्री : 20/175) एक मुर्सल हदीस है (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/332) भी इस मज़्मून की है और इब्ने अब्बास(रज़ि.) का मक़ूला भी है।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक अंसारी के सिरहाने मलकुल मौत को देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मलकुल मौत मेरे सहाबी के साथ आसानी कीजिए। आपने जवाब दिया कि ऐ अल्लाह के नबी! तस्कीने ख़ातिर रखिए और दिल ख़ुश कीजिए, अल्लाह की क़सम! मैं ख़ुद ईमान वाले के साथ निहायत ही नर्मी करने वाला हूँ। सुनो! या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम है अल्लाह तआला की तमाम दुनिया के हर कच्चे पक्के घर में ख़्वाह वह ख़ुश्की में हो या तरी में हर दिन में मेरे पाँच फेरे होते हैं। हर छोटे बड़े को मैंउससे भी ज़्यादा जानता हूँ जितना वह ख़ुद अपने आपको जानते हों। या रसूलल्लाह (ﷺ)! यक़ीन मानिए कि अल्लाह तआला की क़सम! मैं तो एक मच्छर की जान क़ब्ज़ करने की भी कुदरत नहीं रखता जब तक कि मुझे अल्लाह तआला का हुक्म न हो जाए।'' हज़रत जअफ़र (रज़ि.) का बयान है कि ''मलकुल मौत (عليه السلام) का दिन में पाँच वक़्त एक एक शख़्स को ढूँढ भाल करना यही है कि आप (अ.) पाँचों नमाज़ों के वक़्त देख लिया करते हैं अगर वह नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाला है तो फ़रिश्ते उसके क़रीब रहते हैं और शैतान उससे दूर रहता है

और उसके आख़िरी वक़्त फ़रिश्ता उस ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की तल्क़ीन करता है। (यह मुअज़ल मुन्क़तअ रिवायत है और इसकी सनद में अम्र बिन शुमर कज़्ज़ाब रावी है (अल्मीज़ान : 3/268; रक़म : 6384) लिहाज़ा यह रिवायत मौज़ूअ है।) मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं "हर दिन हर घर पर मलकुल मौत दो दफ़ा आते हैं।" कअब अह्बार उसके साथ ही यह भी फ़र्माते हैं कि "हर दरवाज़े पर ठहरकर दिन भर में सात बार नज़र मारते हैं कि उसमें कोई वह तो नहीं जिसकी रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म हो चुका हो।" फिर क़ियामत के दिन सबका लौटना अल्लाह तआला की तरफ़ है। क़ब्रों से निकलकर मैदाने महशर में अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होकर अपनी अपनी करनी का फल पाएँगे।

***

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ
مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

तर्जुमा : **"काश कि तू देखता जबकि यह गुनहगार लोग अपने रब के सामने सर झुकाए हुए होंगे, कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हमने देख लिया और सुन लिया अब तू हमें वापिस लौटा दे। तो नेक आमाल करेंगे, हम यक़ीन करने वाले हैं। (12) अगर हम चाहते तो हर शख़्स को हिदायत नसीब कर देते लेकिन मेरी यह बात बिलकुल हक़ हो चुकी है कि मैं ज़रूर ज़रूर जहन्नम को इंसानों और जिन्नों से भर दूँगा। (13) अब तुम अपने उस दिन की मुलाक़ात के फ़रामोश कर देने का मज़ा चखो। हमने भी तुम्हें भुला दिया अपने किये हुए आमाल की शामत से अबदी** अज़ाब का लुत्फ़ उठाओ।"(14)

क़ियामत के दिन गुनहगारों की हालत ज़ार (आ. 12 से 14) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब यह गुनहगार अपना दोबारा जीना ख़ुद अपनी आँखों से देख लेंगे और निहायत ज़िल्लत व हिक़ारत के साथ नादिम होकर गर्दनें झुकाये सर डाले अल्लाह तआला के सामने खड़े होंगे, उस वक़्त कहेंगे ऐ अल्लाह! हमारी आँखें रोशन हो गईं, कान खुल गए। अब हम तेरे अह्काम की बजाआवरी के लिए हर तरह तैयार हैं। उस दिन ख़ूब सोच समझ वाले दाना बीना हो जाएँगे। सब अंधापन और बहरापन जाता रहेगा ख़ुद अपने आपको मलामत करने लगेंगे और जहन्नम में जाते हुए कहेंगे कि अगर कानों और आँखों से दुनिया में काम लेते तो आज जहन्नमी न बनते। अब अल्लाह तआला से अर्ज़ करेंगे कि हमें फिर से दुनिया में भेज दे तो हम नेक आमाल

कर आएँ। हमें अब यक़ीन आ गया कि तेरी मुलाक़ात सच है तेरा क़लाम ह़क़ है। लेकिन अल्लाह तआ़ला को ख़ूब मालूम है कि यह लोग अगर दोबारा भी भेजे जाएँ तो यही ह़रकत करेंगे फिर से अल्लाह तआ़ला की आयतों को झुठलाएँगे दोबारा नबियों को सताएँगे। जैसे कि ख़ुद कुरआने करीम की आयत (وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ) (6/अन्आम : 27) में है। इसीलिए यहाँ फ़र्माता है कि अगर हम चाहते तो हर शख़्स को हिदायत कर देते, जैसे फ़र्मान है अगर तेरा रब तआ़ला चाहता तो ज़मीन का एक एक रहने वाला मोमिन बन जाता, लेकिन अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला सादिर हो चुका है कि इंसान और जिन्नात से जहन्नम भरनी है। यह अटल अम्र है। अल्लाह तआ़ला की ज़ात से और उसके पूरे पूरे कलिमात से हम उसके तमाम अ़ज़ाबों से पनाह चाहते हैं। जहन्नम वालों से बतौर सरजनिश के कहा जाएगा कि इस दिन की मुलाक़ात की फ़रामोशी का मज़ा चखो और इसके झुठलाने का ख़मियाज़ा भुगतो। इसे मुश्किल समझकर तुमने वह मामला किया कि जो एक भूलने वाला किया करता है। अब हम भी तुम्हारे साथ यही सलूक करेंगे। अल्लाह तआ़ला की ज़ाते ह़क़ीक़ी निस्यान और भूल से पाक है। यह तो सिर्फ़ बदले के तौर पर फ़र्माया गया है। चुनाँचे और रिवायत में है (الْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا) (45/जासिया : 34) "आज हम तुम्हें भूल जाते हैं जैसे तुम इस दिन की मुलाक़ात को भूले बैठे थे। अपने कुफ़्र व तक्ज़ीब की वजह से अब दाइमी अ़ज़ाब का मज़ा चखो।" और आयत में है (لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا) (78/नबा : 24) वहाँ ठण्डक और पानी न रहेगा सिवाय गर्म पानी और लहू पीप के और कुछ न होगा...।

***

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۩ ⑮ تَتَجَافٰى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُونَ ⑯ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑰

तर्जुमा : "हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं जिन्हें जब कभी इनसे नसीहत की जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब तआ़ला की ह़म्द के साथ उसकी तस्बीह़ पढ़ते हैं और तकब्बुर से अलग थलग रहते हैं। (15) उनकी गर्दनें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं। अपने रब तआ़ला को ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ पुकारते रहते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है वह ख़र्च करते रहते हैं। (16) कोई नफ़्स नहीं जानता जो कुछ हमने उनकी आँखों की ठण्डक उनके लिए पोशीदा कर रखी है, जो कुछ वह करते थे यह उसका बदला है।"(17)

रज़ा-ए-इलाही की तलाश का हुक्म (आ. 15 से 17) : सच्चे ईमान वालों की निशानी यह है कि वह दिल के कानों से हमारी आयतों को सुनते हैं और उन पर अमल करते हैं। ज़बानी हक़ मानते हैं और दिल से भी बरहक़ जानते हैं। सज्दा करते हैं और अपने रब तआला की तस्बीह और हम्द बयान करते हैं, और इत्तिबाअ से जी नहीं चुराते। न अकड़ते ऐंठते हैं। यह बुरी आदत काफ़िरों की है। जैसे फ़र्माया (إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ) (40/मोमिन : 60) यानी "मेरी इबादत से तकब्बुर करने वाला ज़लीलो ख़्वार होकर जहन्नम में जाएँगे। उन सच्चे ईमान वालों की एक अलामत यह भी है कि वह रातों को नींद छोड़कर अपने बिस्तरों से अलग होकर नमाज़ें अदा करते हैं, तहज्जुद पढ़ते हैं। (तब्री : 20/180) मग़्रिब व इशा के बीच की नमाज़ भी कुछ ने मुराद ली है। कोई कहता है मुराद इससे इशा की नमाज़ का इंतिज़ार करना है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिस् सज्दा : 3196; और इसकी सनद हसन है, यह रिवायत मौक़ूफ़ है।) और क़ौल है कि इशा की और सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ना मुराद है। वह अल्लाह तआला से दुआएँ करते हैं उसके अज़ाबों से नजात पाने के लिए और उसकी नेअमतें हासिल करने के लिए। साथ ही सदक़ा ख़ैरात भी करते रहते हैं। अपनी हैसियत के मुताबिक़ राहे रब में देते रहते हैं। वह नेकियाँ भी करते हैं जिनका ताल्लुक़ उन्हीं की ज़ात से है और वह नेकियाँ भी हाथ से जाने नहीं देते जिनका तअल्लुक़ दूसरों से है। इन बेहतरीन नेकियों में सबसे बढ़े हुए वह हैं जो दरजात में भी सबसे आगे हैं। यानी सय्यद औलादे आदम फ़ख़्रे दो जहाँ हज़रत मुहम्मद (ﷺ) जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) के शेअरों में है,

व फ़ीना रसूलुल्लाहि यत्लू किताबहू — इज़नशक़्क़ मअरूफ़ुन मिनस्सुब्हि सातिऊ

यबीतु युजाफ़ी जन्बहू अन फ़िराशिही — इज़स्तस्क़लत बिल मुश्रिकीनल मज़ाजिऊ

यानी "हममें अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) हैं जो सुबह होते ही अल्लाह तआला की पाक किताब की तिलावत करते हैं। रातों को जबकि मुश्रिकीन गहरी नींद में सोते हैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की करवट आपके बिस्तर से अलग होती है।"(सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब हिजाउल मुश्रिकीन : 6151) मुस्नदे अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआला दो शख़्सों से बहुत ही ख़ुश होता है एक तो वह जो रात को मीठी नींद सोया हुआ है लेकिन दफ़अतन अपने रब तआला की नेअमतें और उसकी सज़ाएँ याद करके उठ बैठता है अपने नर्म व गर्म बिस्तर को छोड़कर मेरे सामने खड़ा होकर नमाज़ शुरू कर देता है। दूसरा वह शख़्स जो एक ग़ज़्वे में है काफ़िरों से लड़ते लड़ते मुसलमानों का पासा कमज़ोर पड़ जाता है लेकिन यह शख़्स यह समझकर कि भागने में अल्लाह तआला की नाराज़गी है आगे बढ़ने में रब तआला की रज़ामंदी है, मैदान की तरफ़ लौटता है और काफ़िरों से जिहाद करता है यहाँ तक कि अपना सिर उसके नाम पर क़ुर्बान कर देता है। अल्लाह तआला फ़ख़्र से अपने फ़रिश्तों को उसे दिखाता है और उनके सामने उसके अमल की ता'रीफ़ करता है।" (अहमद : 1/416; अबूदाऊद, किताबुल जिहाद,बाब फ़िर्रजुल यशरी नफ़्सहू : 2536; और इसकी सनद हसन है, इब्ने हिब्बान : 2557; हाकिम : 2/112) मुस्नद अहमद में है हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैं नबी (ﷺ) के साथ एक सफ़र में था। सुबह के वक़्त में आप

(ﷺ) के क़रीब ही चल रहा था। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ)! मुझे कोई ऐसा अमल बतलाइए जो मुझे जन्नत में पहुँचा दे और जहन्नम से अलग कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तूने सवाल तो बड़े काम का किया लेकिन अल्लाह तआला जिस पर आसान कर दे उस पर बहुत आसान है। सुन! तू अल्लाह तआला की इबादत करता रह, उसके साथ किसी को शरीक न कर, नमाज़ों की पाबन्दी कर, रमज़ान के रोज़े रख, बैतुल्लाह का हज्ज कर, ज़कात अदा करता रह, आ! अब मैं तुझे भलाइयों के दरवाज़े बतला दूँ। रोज़ा ढाल है सदक़ा गुनाहों को माफ़ करा देता है और इंसान की आधी रात की नमाज़। फिर आप (ﷺ) ने आयत (ततजाफ़ा) की (यअलमून) तक तिलावत की, फिर फ़र्माया अब मैं तुझे इस अम्र के सिर, इसके सतून और इसकी कोहान की बुलंदी बतलाऊँ। इन तमाम काम का सिर तो इस्लाम है, इसके सतून नमाज़ है, इसके कोहान की बुलंदी अल्लाह तआला की राह का जिहाद है। फिर फ़र्माया अब मैं तुझे इन तमाम कामों के सरदार की ख़बर देता हूँ? फिर अपनी ज़ुबान पकड़कर फ़र्माया, इसे रोक रख। मैंने कहा, क्या हम अपनी बातचीत पर भी पकड़े जाएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ मुआज़ (रज़ि.)! अफ़सोस तुझे यह मालूम ही नहीं कि इंसान को ओंधे मुँह जहन्नम में डालने वाली चीज़ तो उसकी ज़बान के किनारे ही हैं।" (अहमद : 5/231; तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी हुर्मतिस्सलाति : 2616; और वह हसन है; इब्ने माजा : 3973; सुननुल कुब्रा : 11392) यही हदीस कई सनदों से मरवी है। एक में यह भी है कि इस आयत (ततजाफ़ा) को पढ़कर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "इससे मुराद बन्दे का रात की नमाज़ पढ़ना है।" और रिवायत में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का यह फ़र्मान मरवी है कि इंसान का आधी रात को क़याम करना। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इसी आयत को तिलावत फ़र्माना है। एक हदीस में है कि "क़ियामत के दिन जबकि पहले व आख़िर सब लोग मैदाने महशर में जमा होंगे तो एक मुनादी फ़रिश्ता बाआवाज़े बुलंद निदा करेगा जिसे तमाम मख़्लूक़ सुनेगी, वह कहेगा कि आज सबको मालूम हो जाएगा कि सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार अल्लाह तआला के नज़दीक कौन है? फिर लौटकर आवाज़ लगाएगा कि तहज्जुद गुज़ार लोग उठ खड़े हों और इस आयत की तिलावत करेगा तो यह लोग उठ खड़े होंगे और गिनती में बहुत कम होंगे।" हज़रत बिलाल (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "जब आयत उतरी हम लोग मज्लिस में बैठे थे और कुछ सहाबा (रज़ि.) मग़रिब के बाद से लेकर इशा तक नमाज़ में मशग़ूल रहते थे, पस यह आयत नाज़िल हुई।" इस हदीस की यही एक सनद है। फिर फ़र्माता है उनके लिए जन्नत में क्या क्या नेअमतें और लज़्ज़तें पोशीदा बना रखी हैं उसका किसी को इल्म नहीं। चूँकि यह लोग भी पोशीदा तौर पर इबादत करते थे उसी तरह हमने भी पोशीदा तौर पर उनकी आँखों की ठण्डक और उनके दिल का सुख तैयार कर रखा है जो न किसी आँख ने देखा, न किसी दिल पर ख़्याल गुज़रा। बुख़ारी की हदीसे क़ुदसी में है कि "मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह रहमतें और नेअमतें मुहय्या कर रखी हैं जो न किसी आँख के देखने में आईं न किसी कान में सुनने में, न किसी के दिल के सोचने में। इस हदीस को बयान करके हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) रावी हदीस ने कहा क़ुरआन की इस आयत को पढ़ लो (फ़ला तअलमु नफ़्सुन) आख़िर तक। इस रिवायत में (क़ुर्रति) के बजाय (क़ुर्राति) पढ़ना भी मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह सज्दा : 4779; बाब क़ौलुहू (फ़ला तअलमु नफ़्सुम मा उख़्फ़िय....) : ... ; सहीह मुस्लिम : 2824) और रिवायत में फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) है कि "जन्नत की नेअमतें जिसे मिलीं वह कभी भी बेनेअमत नहीं होने

का।'' उनके कपड़े पुराने न होंगे, उनकी जवानी ढलेगी नहीं, उनके लिए जन्नत में वह है जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी इंसान के दिल पर उनका वहम व गुमान हुआ। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी दवामि नईमे अहलिल जन्नति व अहलिहा... : 2836; अहमद : 2/416)

- एक हदीस में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने जन्नत का वस्फ़ बयान करते हुए आख़िर में यही फ़र्माया ''और फिर यह आयत (ततजाफ़ा) से (यअ़मलून) तक तिलावत फ़र्माई।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब सिफ़तुल जन्ना : 2825) हदीसे क़ुदसी में है मैंने अपने बन्दों के लिए ऐसी नेअ़मतें तैयार की हैं जो न आँखों ने देखी हैं न कानों ने सुनी हैं बल्कि अंदाज़े में भी नहीं आ सकतीं। सहीह मुस्लिम में है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अल्लाह रब्बुल आलमीन अ़ज़्ज़ व जल्ल से अ़र्ज़ किया कि ऐ बारी तआ़ला! अदना जन्नती का दर्जा क्या है? जवाब मिला कि अदना जन्नती वह शख़्स है जो कुल जन्नतियों की जन्नत में चले जाने के बाद आएगा, उससे कहा जाएगा, जन्नत में दाख़िल हो जाओ, वह कहेगा, ऐ अल्लाह! कहाँ जाऊँ? हर एक ने अपनी जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया है और अपनी चीज़ें संभाल ली हैं। उससे कहा जाएगा कि क्या तू इस पर ख़ुश नहीं कि तेरे लिए इतना हो जितना दुनिया के किसी बड़े बादशाह के पास था? वह कहेगा कि परवरदिगार! मैं इस पर ख़ुश हूँ। अल्लाह तआ़ला कहेगा कि तेरे लिए इतना है और इतना ही और, और इतना ही और, इतना ही और, पाँच गुना। यह कहेगा बस बस ऐ रब तआ़ला! मैं राज़ी हो गया। अल्लाह तआ़ला कहेगा यह सब हमने तुझे दिया और इसका दस गुना और भी दिया और भी जिस चीज़ को तेरा दिल चाहे और जिससे तेरी आँखें ठण्डी रहें। यह कहेगा मेरे परवरदिगार! मेरी तो बाछें खिल गईं, जी ख़ुश हो गया।'' हज़रत मूसा (عليه السلام) ने कहा ''फिर ऐ अल्लाह! आला दर्जा के जन्नती की क्या कैफ़ियत है? फ़र्माया यह वह लोग हैं जिनकी ख़ातिर व मदारत की करामत मैंने अपने हाथ से बोई और उस पर अपनी मुहर लगा दी, फिर न तो वह किसी के देखने में आई, न किसी के सुनने में, न किसी के ख़्याल में।'' इसका मिस्दाक़ अल्लाह तआ़ला की किताब की आयत (फ़ला तअ़लम) आख़िर तक है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्नति मंज़िलुहा फ़ीहा : 189; तिर्मिज़ी : 3198; इब्ने हिब्बान : 6216) हज़रत आ़मिर बिन अ़ब्दुल वाहिद (रह.) फ़र्माते हैं ''मुझे यह बात पहुँची है कि एक जन्नती अपनी हूर के साथ मुहब्बत प्यार में सत्तर साल तक मशग़ूल रहेगा किसी दूसरी चीज़ की तरफ़ उसका ध्यान ही न होगा, फिर जो दूसरी तरफ़ ध्यान करेगा तो देखेगा कि पहली से बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत और नूरानी चेहरे वाली एक और हूर है, वह उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जह देखकर ख़ुश होकर कहेगी कि अब मेरी मुराद भी पूरी होगी। यह कहेगा कि तू कौन है? वह जवाब देगी मैं मज़ीद में से हूँ। अब यह सर्रापा उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाएगा, फिर सत्तर साल तक दूसरी तरफ़ देखेगा भी नहीं। इतनी मुद्दत के बाद फिर जो उसका ध्यान दूसरी तरफ़ जाएगा तो देखेगा कि उससे भी अच्छी एक और हूर है। वह कहेगी अब वक़्त आ गया कि आप में मेरा हिस्सा भी हो। यह पूछेगा, तुम कौन हो? वह जवाब देगी, मैं उनमें से हूँ जिनकी निस्बत जनाब बारी तआ़ला ने फ़र्माया है कोई नहीं जानता कि इनके लिए अल्लाह तआ़ला ने इनकी आँखों की क्या क्या ठण्डक छुपा रखी है।

हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़र्माते हैं ''फ़रिश्ते जन्नतियों के पास दुनिया के दिन के अंदाज़े से हर

दिन में तीन तीन बार जन्नते अदन के रब्बानी तोहफ़े लेकर जाएँगे जो उनकी जन्नत में नहीं, इसी का बयान इस आयत में है। वह फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि अल्लाह तआला तुमसे ख़ुश है। हज़रत अबुल यमान होज़नी या किसी और से मरवी है कि ''जन्नत के सौ दर्जे हैं पहला दर्जा चाँदी का है उसकी ज़मीन भी चाँदी की, उसके महल्लात भी चाँदी के, उसकी मिट्टी मुश्क है, दूसरा दर्जा सोने का है, ज़मीन भी सोने की मकानात भी सोने के, बरतन भी सोने के, मिट्टी मुश्क है, तीसरी मोती की, ज़मीन भी मोती की, घर भी मोती का, बर्तन भी मोती के, और मिट्टी मुश्क की। और बाक़ी सत्तान्वे तो वह हैं जो न किसी आँख ने देखे, न किसी कान ने सुने, न किसी इंसान के दिल में गुज़रे। फिर इसी आयत की तिलावत फ़र्माई।'' इब्ने जरीर में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) हज़रत रूहुल अमीन (عليه السلام) से रिवायत करते हैं कि इंसान की नेकियाँ बुराइयाँ लाई जाएँगी, कुछ कुछ से कम की जाएँगी फिर अगर एक नेकी भी बाक़ी बच गई तो अल्लाह तआला उसे बढ़ा देगा और जन्नत में कुशादगी अ़ता करेगा।'' (तबरी : 20/185; इस रिवायत की सनद में ग़ितरीफ़ मज्हूलुल हाल रावी है लिहाज़ा यह सनद ज़ईफ़ है।)

रावी ने यज़्दाद से पूछा कि नेकियाँ कहाँ चली गईं? तो उन्होंने इस आयत की तलावत की कि (أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ) (46/अह्क़ाफ़ : 16)

यानी ''यह वह लोग हैं जिनके अच्छे आमाल हमने क़बूल कर लिये और उनकी बुराइयों से हमने दरगुज़र किया।'' रावी ने कहा फिर इस आयत के क्या मअनी हैं? (فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ) (32/सज्दा : 17) फ़र्माया, बन्दा जब कोई नेकी लोगों से छुपाकर करता है तो अल्लाह तआला भी क़ियामत के दिन उसके आराम की चीज़ें जो उसके लिए पोशीदा रख छोड़ी थीं, अ़ता करेगा।

***

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ
كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي
كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ
مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : "क्या वह जो मोमिन हो मिस्ल उसके है जो फ़ासिक़ हो? बराबर नहीं हो सकते। (18) जिन लोगों ने ईमान क़बूल किया और नेक आमाल भी किये उनके लिए हमेशगी वाली जन्नतें हैं, मेहमानदारी है उनके आमाल के बदले जो वह करते थे। (19) लेकिन जिन लोगों ने हुक्म अदूली की उनका ठिकाना दोज़ख़ है। जब कभी उससे बाहर निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जाएँगे और कह दिया जाएगा कि अपने झुठलाने के बदले आग का अज़ाब चखो। (20) बिल यक़ीन हम उन्हें क़रीब के छोटे से अज़ाब उस बड़े अज़ाब से पहले उसके सिवा भी चखाएँगे ताकि वह लौट आएँ। (21) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जिसे अल्लाह तआला की आयतों से वअज़ किया गया फिर भी उसने उनसे मुँह फेर लिया। यक़ीन मानो कि हम भी गुनहगारों से इंतिक़ाम लेने वाले हैं।"(22)

मोमिन और फ़ासिक़ बराबर नहीं (आ. 18 से 22) : अल्लाह तआला के अदलो करम का बयान इन आयतों में है कि उसके नज़दीक नेककार और बदकार बराबर नहीं। जैसे फ़र्मान है (اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ) (45/जासिया : 21) यानी "क्या उन लोगों ने जो बुराइयाँ कर रहे हैं यह समझ रखा है कि उन्हें मिस्ल ईमान वालों और नेक अमल करने वालों के कर दें? इनकी मौत ज़ीस्त बराबर है? यह कैसे बुरे मंसूबे बना रहे हैं" और आयत में है (اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ) (38/साद : 28) यानी ईमान वाले नेक अमल लोगों को क्या हम ज़मीन के फ़सादियों के बराबर कर दें? परहेज़गारों को गुनहगारों के बराबर कर दें? और आयत में है (لَا يَسْتَوِىْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ) (59/हश्र : 20) दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं हो सकते।

यहाँ भी फ़र्माया कि मोमिन और काफ़िर क़ियामत के दिन एक मर्तबा के नहीं होंगे। कहते हैं कि यह आयत हज़रत अली (रज़ि.) और उक़्बा बिन अबी मुईत के बारे में नाज़िल हुई है। (तब्री : 20/188) फिर इन दोनों क़िस्मों का तफ़्सीली बयान किया कि जिसने अपने दिल से कलामे इलाही की तस्दीक़ की और उसके मुताबिक़ अमल भी किया तो उन्हें वह जन्नतें मिलेंगी जिनमें मकानात हैं, बुलंद बालाख़ाने हैं और रिहाइशी आराम के तमाम सामान हैं। यह उनकी नेक अमली के बदले की मेहमानदारी होगी और जिन लोगों ने इताअत छोड़ दी उनकी जगह जहन्नम में होगी जिसमें से वह निकल न सकेंगे। जैसे और आयत में है (كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا) (22/अलहज्ज : 22) यानी "जब कभी वहाँ के ग़म से छुटकारा चाहेंगे दोबारा वहीं झोंक दिये जाएँगे।" हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ (रह़.) फ़र्माते हैं "अल्लाह की क़सम! उनके हाथ पैर बँधे हुए होंगे, आग के शोले उन्हें ऊपर नीचे ले जा रहे होंगे, फ़रिश्ते उन्हें सज़ाएँ दे रहे होंगे और झिड़ककर फ़र्माते होंगे कि इस जहन्नम के अज़ाब का मज़ा चखो जिसे तुम झूठ जानते थे।" अज़ाबे अदना से मुराद दुनियावी मुसीबतें, आफ़तें दुख दर्द और बीमारियाँ हैं यह इसलिए होती हैं कि इंसान होशियार हो जाए और अल्लाह तआला की तरफ़ झुक जाए। (तब्री : 20/189, 190) और बड़े अज़ाबों से नजात हासिल कर ले। एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद गुनाहों की वह मुक़र्ररकर्दा सज़ाएँ हैं जो दुनिया में दी जाती हैं जिन्हें शरई इस्तिलाह में हुदूद कहते हैं। और यह भी मरवी है कि इससे मुराद क़ब्र का अज़ाब है। नसाई में है कि इससे

मुराद क़हत़सालियाँ हैं। हज़रत उबय (रज़ि.) फ़र्माते हैं "चाँद का शक़्क़ हो जाना, धुएँ का आना और पकड़ और बर्बादकुन अ़ज़ाब। (अह़मद : 5/128; और इसकी सनद स़ह़ीह़ है; यह रिवायत मौक़ूफ़ स़ह़ीह़ है। और इसकी अस़ल स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब अद्दुख़ान : 2799 में मौजूद है।) और बद्र के दिन इन कुफ़्फ़ार का क़ैद होना और क़त्ल किया जाना क्योंकि बद्र की उस हार ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा के घर घर को मातमकदा बना दिया था।" इन अ़ज़ाबों की त़रफ़ इस आयत में इशारा है। फिर फ़र्माता है जो अल्लाह तआ़ला की आयतें सुनकर उसकी वज़ाहत को पाकर फिर उनसे मुँह मोड़े बल्कि उनका इंकार कर जाए उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा? हज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ऐराज़ न करो ऐसा करने वाले बेइ़ज़्ज़त, बेवक़्अ़त और बड़े गुनहगार हैं।" यहाँ भी फ़र्मान होता है कि ऐसे गुनहगारों से हम ज़रूर इंतिक़ाम लेंगे। जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "तीन काम जिसने किये वह मुज्रिम हो गया जिसने बेवजह कोई झण्डा बाँधा, जिसने माँ बाप की नाफ़र्मानी की, जिसने ज़ालिम के ज़ुल्म में उसका साथ दिया।" यह मुज्रिम लोग हैं और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है कि हम मुज्रिमों से बाज़पुर्स करेंगे और उनसे पूरा बदला लेंगे (और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इस रिवायत में अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन उ़बेदुल्लाह स़हबी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/632; रक़म : 5116)

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : "बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी तुझे हर्गिज़ उसकी मुलाक़ात में शक न करना चाहिए। और हमने उसे बनी इस्राईल की हिदायत का ज़रिया बनाया। (23) और हमने उनमें से चूँकि उन लोगों ने स़ब्र किया था ऐसे पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों को हिदायत करते थे और थे भी वह हमारी आयतों पर यक़ीन रखने वाले। (24) तेरा रब तआ़ला इन सबके बीच उन तमाम बातों का फ़ैस़ला क़ियामत के दिन करेगा जिनमें यह इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।" (25)

मेअ़राज की रात आप (ﷺ) की मूसा (عليه السلام) से मुलाक़ात (आ. 23 से 25) : फ़र्माता है कि हमने मूसा (عليه السلام) को किताब (तौरात) दी तो उसकी मुलाक़ात के बारे में शक व शुब्हा में न रह। क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं "यानी मेअ़राज वाली रात में।" (त़ब्री : 20/193) ह़दीस में है कि "मैंने मेअ़राज वाली रात ह़ज़रत मूसा बिन इमरान (عليه السلام) को देखा कि वह गंदुम गूँ रंग के, लम्बे क़द के, घुँघराले बालों वाले थे ऐसे जैसे क़बीला शनुव्वा के आदमी होते हैं। उसी रात में ह़ज़रत ईसा (عليه السلام) को भी देखा, वह दरम्याना क़द के लाल

व सफ़ेद थे, सीधे बाल थे, मैंने उसी रात हज़रत मालिक (रह.) को देखा जो जहन्नम के दारोग़ा हैं। और दज्जाल को देखा।'' यह सब उन निशानियों में से हैं जो अल्लाह तआला ने आपको दिखाईं। पस तू उसकी मुलाक़ात में शक व शुब्हा न कर। आप (ﷺ) ने यक़ीनन हज़रत मूसा (عليه السلام) को देखा और उनसे मिले जिस रात आप (ﷺ) को मेअराज कराई गई। (तब्री : 20/194) मूसा (عليه السلام) को हमने बनी इस्राईल का हादी बना दिया। (तब्रानी : 12758; और इसकी सनद ज़ईफ़ है क़तादा और सईद बिन अबी उरूबा दोनों मुदल्लस हैं। मज्मउज़्ज़वाइद : 7/93) और यह भी हो सकता है कि इस किताब को हमने इस्राइलियों की हिदायत बनाई। जैसे सूरह बनी इस्राईल में है (وَ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ) (17/बनी इस्राईल : 2) यानी हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हादी बनाया कि तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न समझो। फिर फ़र्माता है कि चूँकि वह अल्लाह तआला के अहकाम की बजाआवारी और उसकी नाफ़र्मानियों के तर्क और उसकी बातों की तस्दीक़ और उसके रसूलों की इत्तिबाअ पर सब्र से जमे रहे हमने उनमें से हिदायत के पेशवा बना दिये जो अल्लाह तआला के अहकाम लोगों को पहुँचाते हैं, भलाई की तरफ़ बुलाते हैं, बुराईयों से रोकते हैं लेकिन जब उनकी हालत बदल गई, उन्होंने कलामुल्लाह में तब्दील तहरीफ़ तावील शुरू कर दी तो अल्लाह तआला ने भी उनसे ये मंसब छीन लिया। उनके दिल सख़्त कर दिये। अमले सालेह और ऐतिक़ादे सहीह उनसे दूर हो गया। पहले तो यह दुनिया से बचे हुए थे।'' हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं ''यह लोग ऐसे ही थे इंसान को लायक़ है कि इसका पेशवा हो जिसकी यह इक़्तिदा करके दुनिया से बचा हुआ रहे। आप फ़र्माते हैं कि ''दीन के लिए इल्म ज़रूरी है जैसे जिस्म के लिए ग़िज़ा ज़रूरी है।'' हज़रत सुफ़्यान (रह.) से हज़रत अली (रज़ि.) के इस क़ौल के बारे में सवाल हुआ कि सब्र का दर्जा ईमान में कैसा है? फ़र्माया ऐसा है जैसा सिर का जिस्म में। क्या तूने अल्लाह तआला के इस फ़र्मान को नहीं सुना हमने उनके सब्र की वजह से ऐसा पेशवा बना दिया कि वह हमारे हुक्म की हिदायत करते थे। आपने फ़र्माया, मतलब यह है कि चूँकि उन्होंने तमाम कामों के सिर को ले लिया अल्लाह तआला ने भी उन्हें पेशवा बना दिया। चुनाँचे फ़र्मान है हमने बनी इस्राईल को किताब, हिक्मत और नबुव्वत दी और पाकीज़ा रोज़ियाँ इनायत कीं और जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी, आख़िर तक। यहाँ भी यही आयत के आख़िर में फ़र्माया कि जिन अक़ाइद व आमाल में उनका इख़्तिलाफ़ है, उनका फ़ैसला क़ियामत के दिन ख़ुद अल्लाह कर देगा।

***

اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ
زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : ''क्या इस बात ने भी इन्हें हिदायत नहीं दी कि हमने इनसे पहले बहुत सी उम्मतों को हलाक कर दिया जिनके मकानों में यह चल फिर रहे हैं, इसमें तो बड़ी बड़ी इब्रतें हैं। क्या फिर भी यह नहीं सुनते? (26) क्या यह नहीं देखते कि हम पानी को बंजर, ग़ैर आबाद ज़मीन की तरफ़ बहाकर ले जाते हैं फिर उसकी वजह से हम खेतियाँ निकालते हैं जिसे उनके चौपाए और यह ख़ुद खाते हैं। क्या फिर भी यह नहीं देखते?'' (27)

रसूलों की मुख़ालिफ़त का अंजाम (आ. 26, 27) : क्या यह इस बात के मुलाहिज़ा के बाद भी राहे रास्त पर नहीं चलते? कि इनसे पहले के गुमराहों को हमने तहो-बाला कर दिया है। आज उनके खोज मिट गए। उन्होंने भी रसूलों को झुठलाया, अल्लाह तआला की बातों से बेपरवाही की। अब यह झुठलाने वाले भी उन ही के मकानों में रहते सहते हैं। उनकी वीराना इनके अगले मालिकों की हलाकत इनके सामने है लेकिन ताहम यह इब्रत हासिल नहीं करते। इसी बात को क़ुरआने हकीम ने कई जगह बयान किया है कि यह ग़ैर आबाद खण्डर, यह उजड़े हुए महल्लात तो तुम्हारी आँखों को और तुम्हारे कानों को खोलने के लिए अपने अंदर बहुत सी निशानियाँ रखते हैं। देख लो अल्लाह तआला की बातें न मानने का रसूलों की हक़ारत करने का कितना बुरा अंजाम हुआ। क्या तुम्हारे कान उनकी ख़बर से नाआशना हैं?

यह नदी नाले आबशार और समुन्द्र क़ुदरते इलाही की निशानी : फिर जनाब बारी तआला अपने लुत्फ़ो करम को एहसान व इन्आम को बयान फ़र्मा रहा है कि आसमान से पानी उतारता है, पहाड़ों से ऊँची जगहों से सिमट कर नालों के, नदियों के, दरियाओं के ज़रिये वह इधर उधर फैल जाता है। बंजर ग़ैर आबाद ज़मीन उससे हरियावल वाली हो जाती है। ख़ुश्की तरी से मौत ज़ीस्त से बदल जाती है। भले मुफ़स्सिरीन का क़ौल यह भी है कि (जुरुज़) मिस्र की ज़मीन है लेकिन यह ठीक नहीं है। हाँ! मिस्र में भी ऐसी ज़मीन हो तो हो आयत में मुराद तमाम वह हिस्से हैं जो सूख गए हों, जो पानी के मोहताज हों, सख़्त हो गए हों, ज़मीन पेवस्त के मारे फटने लगी हो। बेशक मिस्र की ज़मीन भी ऐसी है दरियाए नील से वह सैराब की जाती है। हब्श की बारिशों का पानी अपने साथ लाल रंग की मिट्टी को भी घसीटता जाता है और मिस्र की ज़मीन जो शोर और रेतीली है वह इस पानी और इस मिट्टी से खेती के क़ाबिल बन जाती है और हर साल हर फ़सल का ग़ल्ला ताज़ा पानी से उन्हें मयस्सर हो जाता है जो इधर उधर का होता है। उस हकीम व करीम, मन्नान व रहीम की यह सब मेहरबानियाँ हैं, उसी की ज़ात क़ाबिले ता'रीफ़ है।

रिवायत है कि जब मिस्र फ़तह हुआ तो मिस्र वाले बूदना के महीने में हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) के पास आए और कहने लगे कि हमारी क़दीमी आदत है कि इस महीने में किसी को दरिय-ए-नील की भेंट चढ़ाते हैं और अगर न चढ़ाएँ तो दरिया में पानी नहीं आता। हम ऐसा करते हैं कि इस महीने की बारहवीं तारीख़ को हम एक बाकिरा लड़की को लेते हैं जो अपने माँ बाप की इकलौती हो उसके वालदेन को दे दिलाकर रज़ामंद कर लेते हैं और उसे बहुत उम्दा कपड़े और बहुत क़ीमती ज़ेवर पहनाकर, बना सँवारकर उस नील में डाल देते हैं तो उसका बहाव चढ़ता है वरना पानी चढ़ता ही नहीं। सिपह सालारे इस्लाम हज़रत अम्र बिन आस

(रज़ि.) फ़ातेहे मिस्र ने जवाब दिया कि यह एक जाहिलाना और अहमक़ाना रस्म है, इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता। इस्लाम तो ऐसी आदतों को मिटाने के लिए आया है। तुम ऐसा नहीं कर सकते। वह बाज़ रहे, दरिया-ए-नील का पानी न चढ़ा। महीना पूरा निकल गया लेकिन दरिया ख़ुश्क पड़ा हुआ है। लोग तंग आकर इरादे करने लगे कि मिस्र को छोड़ दें, यहाँ की बूदो बाश तर्क कर दें। अब फ़ातेहे मिस्र को ख़्याल गुज़रता है और दरबारे ख़िलाफ़त को इसकी ख़बर देता है। उसी वक़्त ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की तरफ़ से जवाब आता है कि आपने जो किया, अच्छा किया अब मैं अपने इस ख़त में एक पर्चा दरिय-ए-नील के नाम भेज रहा हूँ, तुम उसे लेकर नील के दरिया में डाल दो। हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) ने उस पर्चे को निकालकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि ''यह ख़त है अल्लाह तआला के बन्दे अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ि.) की तरफ़ से अहले मिस्र के दरिया-ए-नील की तरफ़, बाद हम्दो सलात के मतलब यह है कि अगर तू अपनी तरफ़ से अपनी मर्ज़ी से चल रहा है तो ख़ैर न चल, और अगर अल्लाह तआला वाहिद क़ह्हार तुझे जारी रखता है तो हम अल्लाह तआला से दुआ माँगते हैं वह तुझे रवाँ कर दे।'' यह पर्चा लेकर हज़रत अमीरे लश्कर ने दरिया-ए-नील में डाल दिया। अभी एक रात भी गुज़रने नहीं पाई थी जो दरिया-ए-नील में सोलह हाथ गहरा पानी चलने लगा और उसी वक़्त मिस्र की ख़ुश्कसाली तरसाली से, गिरानी अरज़ानी से बदल गई। ख़त के साथ ही ख़ित्ता ख़ित्ता सरसब्ज़ हो गया और दरिया पूरी रवानी से बहता रहा। उसके बाद से हर साल जो जान चढ़ाई जाती थी वह बच गई और मिस्र से उस नापाक रस्म का हमेशा के लिए ख़ात्मा हो गया। (और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) (किताबुस्सुन्ना लिल हाफ़िज़ अबुल क़ासिम अलल अल्काई) इसी आयत के मज़्मून की आयत यह भी है (فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ) (80/अबस : 24) यानी इंसान अपनी ग़िज़ा को देखे कि हमने बारिश उतारी और ज़मीन फाड़कर अनाज और फल पैदा किये। इसी तरह यहाँ भी फ़र्माया, क्या यह लोग उसे नहीं देखते? हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जुरूज़ वह ज़मीन है जिस पर बारिश नाकाफ़ी बरसती है फिर नालों और नहरों के पानी से वह सैराब होती है।'' मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं ''यह ज़मीन यमन में है।'' हसन (रह.) फ़र्माते हैं ''ऐसी बस्तियाँ यमन और शाम में हैं।'' इब्ने ज़ेद (रह.) वग़ैरह का क़ौल है ''यह वह ज़मीन है जिसमें पैदावार न हो और गुबार आलूद हो।'' इसी को आयत में बयान फ़र्माया है (وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ) (36/यासीन : 33) इनके लिए मुर्दा ज़मीन भी एक निशानी है जिसे हम ज़िन्दा कर देते हैं।

***

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞٢٨ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۞٢٩ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ۞٣٠

तर्जुमा : ''और कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा? अगर तुम सच्चे हो तो बतलाओ। (28) जवाब दे

कि फ़ैसले वाले दिन ईमान लाना बेईमानों को कुछ काम न आएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी। (29) अब तू इनका ख़्याल भी छोड़ दे और इंतिज़ार कर यह भी इंतिज़ार कर रहे हैं।'' (30)

काफ़िरों को हुक्म कि क़ियामत का इंतिज़ार करो (आ. 28 से 30) : काफ़िर ऐतिराज़न कहा करते थे कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम जो हमें कहा करते हो और अपने साथियों को भी मुत्मइन कर दिया है कि तुम हम पर फ़तह पाओगे और हमसे बदले लोगे, वह वक़्त कब आएगा? हम तो मुद्दतों से तुम्हें मग़लूब, ज़ेर और बेवक़्अत देख रहे हैं, छुप रहे हो, डर रहे हो, अगर सच्चे हो तो अपने ग़ल्बे का और अपनी फ़तह का वक़्त तो बतलाओ। अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि जब अ़ज़ाबे इलाही आ जाएगा और जब उसका गुस्सा और ग़ज़ब उतर पड़ेगा ख़्वाह दुनिया में हो ख़्वाह आख़िरत में उस वक़्त का ईमान लाना नफ़ा न देगा और न मोहलत दी जाएगी। जैसे फ़र्मान है (فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ) (40/मोमिन : 83) यानी जब उनके पास अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर दलीलें लेकर आए तो यह अपने पास के इल्म पर नाज़ाँ होने लगे, पूरी दो आयतों तक। इससे फ़तहे मक्का मुराद नहीं। फ़तहे मक्का के दिन तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने काफ़िरों का इस्लाम लाना क़बूल किया था और तक़रीबन दो हज़ार आदमी उस दिन मुसलमान हुए थे। अगर इस आयत में फ़तहे मक्का मुराद होती तो चाहिए था कि अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर (ﷺ) इनका इस्लाम क़बूल न करते। जैसे इस आयत में है कि उस दिन काफ़िरों का इस्लाम लाना क़बूल न होगा। बल्कि यहाँ मुराद फ़तह से फ़ैसला है जैसे कुरआन में है (فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَ بَيْنَهُمْ فَتْحًا) (26/शोअ़रा : 118) हमारे बीच तू फ़तह कर यानी फ़ैसला कर। और जैसे और जगह है (قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ) (34/सबा : 26) यानी ''अल्लाह तआ़ला हमें जमा करेगा फिर हमारे आपस के फ़ैसले करेगा।'' और आयत में है (وَ اسْتَفْتَحُوْا وَ خَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ) (14/इब्राहीम : 15) यह फ़ैसला चाहते हैं, सरकश ज़िद्दी तबाह हुए। और जगह है (وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا) (2/बक़रह : 89) इससे पहले वह काफ़िरों पर फ़तह चाहते थे। और आयत में फ़र्माने बारी तआ़ला है (اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ)(8/अन्फ़ाल : 19) अगर तुम फ़ैसले के आरज़ूमंद हो तो लो! फ़तह आ चुकी। फिर फ़र्माता है कि आप इन मुश्रिकीन से बेपरवाह हो जाइए जो रब तआ़ला ने उतारा है उसे पहुँचाते रहिए। जैसे और आयत में है कि अपने रब तआ़ला की वह्यी की इत्तिबाअ़ करो उसके सिवा कोई और मअ़बूद नहीं...। फिर फ़र्माया तुम अपने रब तआ़ला के वादों को सच्चा मान लो उसकी बातें अटल हैं, उसके फ़र्मान सच्चे हैं, वह बहुत जल्द तुझे तेरे मुख़ालेफ़ीन पर ग़ालिब करेगा वह वादाख़िलाफ़ी से पाक है। यह भी इंतिज़ार में है चाहते हैं कि आप पर कोई आफ़त आये लेकिन इनकी यह चाहतें बेकार हैं। अल्लाह तआ़ला अपने वालों को भूलता नहीं न उन्हें छोड़ता है। भला जो रब तआ़ला के अहकाम पर जमे रहें अल्लाह तआ़ला की बातें दूसरों को पहुँचाएँ, वह ताईदे ऐज़दी से कैसे महरूम कर दिये जाएँ? यह जो कुछ तुम पर देखना चाहते हैं वह उन पर उतरेगा। नक्बत व अदबार में हाय वाय वावीला में गिरफ़्तार किये जाएँगे। रब तआ़ला के अ़ज़ाबों का शिकार होंगे। कह दो कि अल्लाह तआ़ला हमें काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है।

''अल्हम्दु लिल्लाह! अलिफ़ लाम मीम सज्दा की तफ़्सीर मुकम्मल हुई''

सूरह अहज़ाब

سورة الاحزاب

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह अहज़ाब - 33

आयातः 73 मदनी सूरह, पैराग्राफः 12

(ज़मानए नुज़ूल : 5 हिजरी)

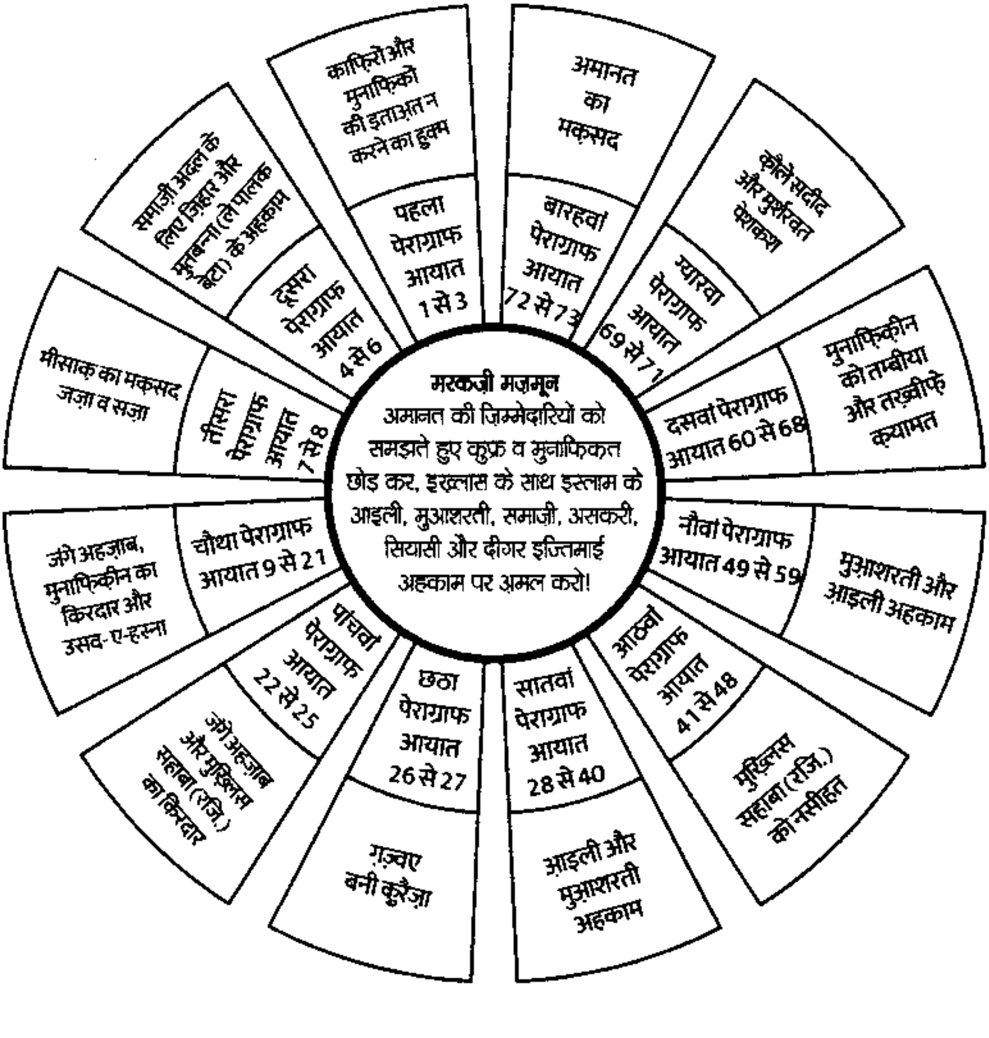

तफ़्सीर सूरह अहज़ाब

हज़रत ज़र (रह़.) से हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने पूछा कि सूरह अहज़ाब की कितनी आयतें शुमार होती हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तेहत्तर (73)। हज़रत उबय (रज़ि.) ने फ़र्माया, ''नहीं! नहीं! मैंने तो देखा है कि यह सूरह बक़रह के क़रीब क़रीब थी। इसी में यह आयत भी पढ़ी जाती थी (अश्शैख़ु वश्शैख़तु इज़ा ज़नया फ़र्जुमूहुमा अल्बत्तत नकालम् मिनल्लाहि वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन ह़कीम) यानी जब बूढ़ा मर्द और बूढ़ी औरत बदकारी करें तो उन्हें ज़रूर संगसार करो, यह सज़ा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है, अल्लाह तआ़ला बड़ा ग़ालिब और ह़िक्मत वाला है।'' (अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद फ़ी ज़वाइदिही : 5/132; और इसकी सनद ह़सन है; व नसख़ल बाक़ी व बक़ियत हाज़िहिस्सूरतू फ़ी अ़हदि रसूलिल्लाहि (ﷺ), सुननुल कुब्रा : 7150; इब्ने ह़िब्बान : 4429; मुस्नदे तयालिसी : 540) इससे मालूम होता है कि इस सूरत की कुछ आयतें अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हटा दी गईं। वल्लाहु आ़लम!

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ① وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ② وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ؕ وَكَفٰى بِاللهِ وَكِيْلًا ③

तर्जुमा : ''ऐ नबी (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला से डरते रहना और मुनाफ़िक़ों की बातों में न आ जाना, अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाला और बड़ी ह़िक्मत वाला है। (1) जो कुछ तेरी जानिब तेरे रब की तरफ़ से वही की जाती है उसकी ताबेदारी करता रह। यक़ीन मानो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हर एक अ़मल से बाख़बर है। (2) तू अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा रख, वह कारसाज़ी के लिए काफ़ी है।''(3)

अल्लाह तआ़ला पर तवक्कल रखो (आ. 1 से 3) : तंबीह की एक मुअस्सिर सूरत यह भी है कि बड़े को कहा जाए ताकि छोटा चौकन्ना हो जाए। जब अल्लाह तआ़ला अपने नबी अकरम (ﷺ) को कोई बात

ताकीदी से कहे तो ज़ाहिर है कि औरों पर वह ताकीद और भी ज़्यादा है। तक़्वा उसे कहते हैं कि अल्लाह तआला की हिदायत के मुताबिक़ सवाब के तलब की निय्यत से अल्लाह तआला के फ़र्मान की इताअत की जाए और फ़र्माने बारी तआला के मुताबिक़ उसके अज़ाबों से बचने के लिए उसकी नाफ़र्मानियाँ तर्क की जाएँ। काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बातें न मानना, न उनके मश्वरों पर कारबन्द होना, न उनकी बातें क़बूलियत के इरादे से सुनना। इल्म व हिक्मत का मालिक अल्लाह तआला ही है चूँकि वह अपने वसीअ इल्म से हर काम का नतीजा जानता है और अपनी बेपायाँ हिक्मत से उसका कोई काम ग़ैर हकीमाना नहीं होता तो तू उसी की इताअत करता रह ताकि बुरे अंजाम से और बिगाड़ से बचा रहे। जो क़ुरआन व सुन्नत तेरी तरफ़ वही हो रहा है उसकी पैरवी कर, अल्लाह तआला पर किसी का कोई काम छुपा हुआ नहीं। अपने तमाम उमूर व अह्वाल में अल्लाह तआला की ज़ात पर ही भरोसा रख। उस पर भरोसा करने वालों को वह काफ़ी है क्योंकि तमाम कारसाज़ी पर वह क़ादिर है। उसकी तरफ़ झुकने वाला कामयाब ही कामयाब है।

***

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓئِ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ
اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ
الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا
اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۭ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ
وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

तर्जुमा : "किसी आदमी के सीने में अल्लाह तआला ने दो दिल नहीं रखे। और अपनी जिन बीवियों को तुम माँ कह बैठते हो उन्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारी सचमुच की माएँ नहीं बनाया, और न तुम्हारे गोद लिये लड़कों को तुम्हारे वाक़ेई बेटे बनाए हैं। यह तो तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं। अल्लाह तआला हक़ बात फ़र्माता है और वह सीधी राह सुझाता है। (4) गोद लिये लड़कों को उनके हक़ीक़ी बापों की तरफ़ निस्बत करके बुलाओ अल्लाह तआला के नज़दीक पूरा इंसाफ़ यही है। फिर अगर तुम्हें उनके हक़ीक़ी बापों का इल्म ही न हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं। तुमसे भूल चूक से जो कुछ हो जाए उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं, अल्बत्ता गुनाह वह है जिसको तुम जान बूझकर और दिल के इरादे के साथ करो। अल्लाह तआला बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है।" (5)

गोद लिए लड़के हक़ीक़ी बेटे नहीं हो सकते (आ. 4, 5) : मक़सद को बयान करने से पहले बतौर मुक़द्मे और सबूत के मस्लन एक वह बात बयान की जिसे सब महसूस करते हैं और फिर उसकी तरफ़ से ज़हन हटाकर अपने मक़सद की तरफ़ ले गए। बयान किया कि यह तो ज़ाहिर है कि किसी इंसान के दिल दो नहीं होते, इसी तरह तुम समझ लो कि अपनी जिस बीवी को तुम माँ कह दो वह वाक़ेई माँ नहीं हो जाती। ठीक इसी तरह दूसरे की औलाद को अपना बेटा बना लेने से सचमुच बेटा नहीं हो जाता। अपनी बीवी से अगर किसी ने बहालते ग़ज़ब व गुस्से कह दिया कि तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की पीठ तो उस कहने से वह सचमुच माँ नहीं बन जाती। जैसे फ़र्माया (مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۖ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔىْ وَلَدْنَهُمْ) (58/मुजादिला : 2) यानी ऐसा कह देने से वह माएँ नहीं बन जातीं। माएँ तो वह हैं जिनके बतन (पेट) से पैदा हुए हैं। इन दोनों बातों के बयान के बाद असल मक़सद बयान किया कि तुम्हारे गोद लिये लड़के भी दरहक़ीक़त तुम्हारी औलाद नहीं। यह आयत हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) के बारे में उतरी है जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के आज़ादकर्दा थे उन्हें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने नबुव्वत से पहले अपना मुतबन्ना (गोद लिया बेटा) बना रखा था। उन्हें ज़ेद बिन मुहम्मद कहा जाता था। इस आयत से उनकी निस्बत और उस इल्हाक़ का तोड़ देना मंज़ूर है जैसे कि इसी सूरत के अस्ना में है (مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ) (33/अहज़ाब : 40) तुममें से किसी मर्द के बाप मुहम्मद (ﷺ) नहीं हैं बल्कि वह अल्लाह तआला के रसूल और नबियों के ख़त्म करने वाले हैं और अल्लाह तआला को हर चीज़ का इल्म है।'' यहाँ फ़र्माया यह तो सिर्फ़ तुम्हारी एक जुबानी बात है जो तुम किसी के लड़के को किसी का लड़का कहो, इससे हक़ीक़त बदल नहीं सकती। वाक़ेइ में इसका बाप वह है जिसकी पीठ से यह निकला। यह नामुम्किन है कि एक लड़के के दो बाप हों। जैसे यह नामुम्किन है कि एक सीने में दो दिल हों। अल्लाह तआला हक़ फ़र्माने वाला और सीधा रास्ता दिखाने वाला है।

कुछ लोग कहते हैं यह आयत एक कुरैशी के बारे में उतरी है जिसने मशहूर कर रखा था कि उसके दो दिल हैं और दोनों अक़्लो फ़हम से भरे हैं। अल्लाह तआला ने उस बात की तर्दीद की है। इब्ने अब्बास(रज़ि.) का बयान है कि ''हुज़ूरे अकरम (ﷺ) नमाज़ में थे आप (ﷺ) को कुछ ख़तरा गुज़रा उस पर जो मुनाफ़िक़ नमाज़ में शामिल थे वह कहने लगे, देखो! इसके दो दिल हैं एक तुम्हारे साथ एक उनके साथ।'' इस पर यह आयत उतरी कि अल्लाह तआला ने किसी शख़्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए।

ज़ोहरी (रह.) फ़र्माते हैं ''यह तो सिर्फ़ बतौरे मिसाल के फ़र्माया गया है यानी जिस तरह किसी शख़्स के दो दिल नहीं होते।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल अहज़ाब : 3199; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अहमद : 1/168; इसकी सनद में क़ाबूस बिन अबी ज़िब्यान ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान 5/367; रक़म : 6788) इसी तरह किसी बेटे के दो बाप नहीं होते। इसी के मुताबिक़ हमने भी इस आयत की तफ़्सीर की है। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। पहले तो रुख़्सत थी कि ले पालक लड़के को पालने वाले की तरफ़ निस्बत करके उसका बेटा कहकर पुकारा जाए लेकिन अब इस्लाम इसको मंसूख़ (खत्म) कर रहा है और फ़र्मा रहा है कि इनके अपने हक़ीक़ी बाप जो हैं उनकी तरफ़ मंसूब करके इन्हें पुकारो। अदल, नेकी, इंसाफ़ और रास्ती यही है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस आयत के उतरने से पहले हम (हज़रत ज़ेद) को ज़ेद बिन मुहम्मद कहा करते थे लेकिन इसके नाज़िल होने के बाद हमने यह कहना छोड़ दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब (उदऊहुम लि आबाइहिम हुव अक़्सतु इन्दल्लाहि) : 4782; सहीह मुस्लिम : 2425; तिर्मिज़ी : 3209) बल्कि पहले तो ऐसे गोद लिए बच्चों के वह तमाम हुक़ूक़ होते थे जो सगी और सुल्बी औलाद के होते हैं। चुनाँचे इस आयत के उतरने के बाद हज़रत सहला बिन्ते सुहैल (रज़ि.) हाज़िरे ख़िदमते नबवी (ﷺ) होकर अ़र्ज़ करती हैं कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने सालिम को मुँह बोला बेटा बना रखा था अब क़ुरआन ने उनके बारे में फ़ैसला कर दिया। मैं उससे अब तक पर्दा नहीं करती वह आते जाते हैं लेकिन मेरा ख़्याल है मेरे शौहर हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) उनकी इस तरह आने से कुछ बेज़ार हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''फिर क्या है जाओ सालिम को अपना दूध पिला दो उस पर हराम हो जाओगी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुर्रज़ाइ, बाब रज़ाअ़तुल कबीर : 453; अबूदाऊद : 2061; इब्ने हिब्बान : 4214; बि तसर्रुफ़िन यसीर) अल्ग़र्ज़ यह हुक्म मंसूख़ हो गया, अब साफ़ लफ़्ज़ों में ऐसे लड़कों की बीवियों की भी हिल्लत उन्हें लड़का बनाने वालों के लिए बयान कर दी और जब हज़रत ज़ेद (रज़ि.) ने अपनी बीवी साहिबा हज़रत ज़ेनब बिन्ते जहश (रज़ि.) को तलाक़ दे दी तो आप (ﷺ) ने ख़ुद अपना निकाह उनसे कर लिया, और मुसलमान उस एक मुश्किल से भी छूट गए, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! इसी का लिहाज़ रखते हुए जहाँ हराम औरतों का ज़िक्र किया वहाँ फ़र्माया (وَ حَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ) (4/निसाअ : 23) यानी तुम्हारी अपनी सुल्ब से जो लड़के हों उनकी बीवियाँ तुम पर हराम हैं। हाँ! रज़ाई लड़का नसबी और सुल्बी लड़के के हुक्म में है जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रज़ाअ़त से वह तमाम रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब से हराम होते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादात, बाब अश्शहादतु अल अंसाबु वर्रज़ाइ : 2645; सहीह मुस्लिम : 1447) यह भी ख़्याल रहे कि प्यार से किसी को बेटा कह देना यह और चीज़ है यह मम्नूअ़ नहीं।

मुस्नद अहमद वग़ैरह में है, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हम सब ख़ानदाने अ़ब्दुल मुत्तलिब के छोटे बच्चों को मुज़दलिफ़ा से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रात को ही जम्रात की तरफ़ रुख़्सत कर दिया और हमारी रानें थपकते हुए हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे बेटों! सूरज निकलने से पहले जम्रात पर कंकरियाँ न मारना।'' (अबूदाऊद, किताबुल मनासिक, बाब अत्तअजीलु मन जमआ : 1940; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, ला रिसालुहू अल्हसनुल अ़रनी की इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत मुर्सल है। नसाई : 3066; इब्ने माजा : 3025; अहमद : 1/234) यह वाक़िया 10 हिज्री माह ज़िल हिज्ज का है और इसकी दलालत ज़ाहिर है। हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) जिनके बारे में यह हुक्म जारी हुआ यह 8 हिज्री में जंगे मोता में शहीद हुए। सहीह मुस्लिम में मरवी है कि हज़रत अनस (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना बेटा कहकर बुलाया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब जवाज़ु क़ौलिही लिग़ैरि इब्निही बि इब्नी...: 2151; अबूदाऊद : 4964; तिर्मिज़ी : 2831) इसे बयान करके कि गोद लिये बच्चों को उनके बाप की तरफ़ मंसूब करके पुकारा करो, पालने वालों की तरफ़ नहीं। फिर फ़र्माता है कि अगर तुम्हें उनके बापों का इल्म न हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई और इस्लामी दोस्त हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जब उ़म्रतुल क़ज़ा के साल मक्का मुकर्रमा से वापिस लौटे

तो हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की साहबज़ादी चचा चचा कहती हुई आप (ﷺ) के पीछे दौड़ीं। हज़रत अली (रज़ि.) ने उन्हें लेकर फ़ातिमा ज़ोहरा (रज़ि.) को दे दिया और फ़र्माया, यह चचाज़ाद बहन हैं इन्हें अच्छी तरह रखो। हज़रत ज़ेद और हज़रत जअफ़र (रज़ि.) फ़र्माने लगे इस बच्ची के हक़दार हम हैं हम इन्हें पालेंगे। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते थे, नहीं! यह मेरे यहाँ रहेंगी। हज़रत अली (रज़ि.) ने तो यह दलील दी कि मेरे चचा की लड़की हैं। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मेरे भाई की लड़की है। जअफ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) कहने लगे मेरे चचा की लड़की हैं और इनकी चची मेरे घर में हैं यानी हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस (रज़ि.)। आख़िर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने यह फ़ैसला किया कि "साहबज़ादी तो अपनी ख़ाला के पास रहें क्योंकि ख़ाला माँ की जगह है। हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया, तू मेरा है और मैं तेरा हूँ। हज़रत जअफ़र (रज़ि.) से फ़र्माया तू सूरत सीरत में मेरे मुशाबेह है।

हज़रत ज़ेद (रज़ि.) से फ़र्माया तू हमारा भाई और हमारा मौला है। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सुलह, बाब कैफ़ा युक्तबु हाज़ा मा सालह...: 2699; अहमद : 4/298; इब्ने हिब्बान : 44873)इस हदीस में बहुत से अहकाम हैं। सबसे बेहतर तो यह है कि हज़रत ज़ेद (रज़ि.) से फ़र्माया, तुम हमारे भाई और हमारे दोस्त हो।" हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, "इसी आयत के मातहत मैं तुम्हारा भाई हूँ।" उबय (रज़ि.) फ़र्माते हैं "अल्लाह की क़सम! अगर यह भी मालूम होता कि इनके वालिद कोई ऐसे वैसे ही थे तो भी यह उनकी तरफ़ मंसूब होते।" हदीसे मुबारका में है कि "जो शख़्स जान बूझकर अपनी निस्बत अपने बाप की तरफ़ से दूसरे की तरफ़ करे उसने कुफ़्र किया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब नम्बर 5, हदीस : 3508; सहीह मुस्लिम : 61) इससे सख़्त वईद पाई जाती है और साबित होता है कि सही निस्बत से अपने आपको हटाना बहुत बड़ा कबीरा गुनाह है। फिर फ़र्माता है जब तुमने अपने तौर पर जितनी ताक़त तुममें है, तहक़ीक़ करके किसी को किसी की तरफ़ निस्बत किया और हक़ीक़त में वह निस्बत ग़लत है तो उस ख़ता पर तुम्हारी पकड़ नहीं। चुनाँचे ख़ुद परवरदिगार ने हमें दुआ सिखाई कि हम उसकी जनाब में कहें (رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا) (2/बक़रह : 286) "ऐ अल्लाह! हमारी भूल चूक और ग़लती न पकड़।" सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि "जब मुसलमानों ने यह दुआ पढ़ी जनाब बारी तआला ने फ़र्माया, मैंने यह दुआ क़बूल की।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानु तजावज़ल्लाहु तआला अन हदीसिन् नफ़्सि वल ख़्वातिर : 126) सहीह बुख़ारी में है "जब हाकिम अपनी कोशिश में कामयाब हो जाए अपने इज्तिहाद में सेहत को पहुँच जाए तो उसे दोहरा अज्र मिलता है और अगर ख़ता कर जाए तो उसे एक अज्र मिलता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल एअतिसाम, बाब अल्हुज्जतु अला मन क़ाल... : 7353; सहीह मुस्लिम : 1716) और हदीस में है कि "अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को उनकी ख़ताएँ भूल चूक और जो काम उनसे ज़बरदस्ती कराये जाएँ उनसे दरगुज़र कर लिया है।" (इब्ने माजा, किताबुत्तलाक़, बाब तलाक़ुल मक्रूह वन्नासी : 2043; वहुवसहीहुन बिश्शवाहिद) यहाँ भी यह फ़र्माकर इर्शाद फ़र्माया कि हाँ! जो काम तुम क़सदे क़ल्ब से जान बूझकर करो वह बेशक क़ाबिले गिरफ़्त हैं। क़समों के बारे में भी यही हुक्म है। ऊपर जो हदीस बयान हुई कि नसब बदलने वाला कुफ़्र का मुर्तकिब है वहाँ भी लफ़्ज़ हैं कि बावजूद जानने के। आयते क़ुरआन

जो अब तिलावतन मंसूख़ है इसमें था (फ़इन्ना कुफ़रन बिकुम अन तर्ग़बू अन आबाइकुम) यानी तुम्हारा अपने बाप की तरफ़ से निस्बत हटाना कुफ्र है। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआला ने हुज़ूर (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा आपके साथ किताब नाज़िल की उसमें रजम की भी आयत थी हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद भी रजम किया। (यानी शादीशुदा ज़ानियों को संगसार किया) और हमने भी आप (ﷺ) के बाद रजम किया। हमने क़ुरआन में यह आयत भी पढ़ी है कि अपने बापों से अपना सिलसिला न हटाओ, यह कुफ्र है।" हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इर्शाद है "मुझे तुम मेरी तारीफ़ों में इस तरह बढ़ा चढ़ा न देना जैसे ईसा बिन मरयम (عليه السلام) के साथ हुआ। मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ तो तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और अल्लाह का रसूल कहना।" एक रिवायत में सिर्फ़ इब्ने मरयम (عليه السلام) है। (अहमद : 1/47; सहीह बुख़ारी, किताबुल हुदूद, बाब रजमुल हुब्ला फ़िज़्ज़िना इज़ा अहसनत : 6830) और हदीस में है "तीन ख़स्लतें लोगों में हैं जो कुफ्र हैं, नसब में तानाज़नी, मय्यित पर नोहा, सितारों से बारिश माँगना।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, बाब तशदीदु फ़िन्नियाहा : 934; इब्ने माजा : 1581; अहमद : 5/342; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1577; इनमें (हसब पर फ़ख़्र) का इज़ाफ़ा है।)

***

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝

तर्जुमा : "पैग़म्बर मोमिनों पर ख़ुद उनसे भी ज़्यादा हक़ रखने वाले हैं और पैग़म्बर की बीवियाँ मोमिनों की माएँ हैं। और रिश्तेदार किताबुल्लाह की रू से बनिस्बत दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों के आपस में ज़्यादा हक़दार हैं, हाँ! तुम्हें अपने दोस्तों के साथ सुलूक करने की इजाज़त है। यह हुक्म लोहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है।" (6)

रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपनी उम्मत पर मेहरबान होना (आ. 6) : चूँकि रब्बुल इज़्ज़त वहदहू ला शरीक लहू को इल्म है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपनी उम्मत पर ख़ुद उनकी अपनी जानों से भी ज़्यादा मेहरबान हैं, इसलिए आप (ﷺ) को उनकी अपनी जानों से भी उनका ज़्यादा इख़्तियार दिया। यह ख़ुद अपने लिए कोई तज्वीज़ न करें बल्कि हर हुक्म रसूलुल्लाह (ﷺ) का दिलो जान के साथ क़बूल करते जाएँ। जैसे फ़र्माया (فَلَا وَ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ) (4/निसाअ : 65) तेरे रब तआला की क़सम! यह मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के तमाम इख़्तिलाफ़ात में तुझे हकम न मान लें। और तेरे तमामतर अहकाम और फ़ैसलों को दिलो जान से, बकुशादा पेशानी (सही मन से) क़बूल न कर लें। सहीह हदीसे मुबारका में है "उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है तुममें से कोई ईमान वाला हो ही नहीं सकता जब तक कि मैं उसे

उसके नफ़्स से उसके माल से उसकी औलाद से और दुनिया के कुल लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब हुब्बुर्रसूल (ﷺ) मिनल ईमान : 15; सहीह मुस्लिम : 44; मुस्नदे अबी अवाना : 1/330; अहमद : 3/177; इब्ने माजा : 67; इब्ने हिब्बान : 179; बिदूनि ज़िक्र (मिन नफ़्सिही)

एक और सहीह हदीस में है कि "हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप मुझे तमाम जहान से ज़्यादा महबूब हैं लेकिन हाँ! ख़ुद मेरे अपने नफ़्स से। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "नहीं! नहीं! उमर (रज़ि.)! जब तक कि मैं तुझे ख़ुद तेरे नफ़्स से भी ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।" यह सुनकर जनाब फ़ारूके आज़म (रज़ि.) फ़र्माने लगे, क़सम अल्लाह की या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अब मुझे हर चीज़ से यहाँ तक कि मेरी अपनी नफ़्स से भी ज़्यादा अज़ीज़ हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब ठीक है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान वन्नुज़ूर, बाब कैफ़ कानत यमीनुन्नबी (ﷺ) : 6632) बुख़ारी में इस आयत की तफ़्सीर में है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "तमाम मोमिनों का ज़्यादा हक़दार दुनिया और आख़िरत में ख़ुद उनकी अपनी जानों से भी मैं हूँ। अगर तुम चाहो तो पढ़ लो (اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ) (33/अहज़ाब : 6) सुनो जो मुसलमान माल छोड़कर मरे उसका माल तो उसके वारिसों का हिस्सा है और अगर कोई मर जाए और उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो या उसके छोटे छोटे बाल बच्चे हों तो उस क़र्ज़ की अदायगी का मैं ज़िम्मेदार हूँ और उन बच्चों की परवरिश मेरे ज़िम्मे है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब, बाब (अन्नबिय्यु औला बिल मुअमिनीना मिन अन्फ़ुसिहिम) : 4781; अहमद : 2/356) फिर फ़र्माता है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.), हुर्मत और एहतिराम में, इज़्ज़त और इकराम में, बुज़ुर्गी और एअज़ाम में तमाम मुसलमानों में ऐसी हैं जैसी ख़ुद उनकी माएँ। हाँ! माँ के और अहकाम मस्लन ख़ल्वत या उनकी लड़कियों और बहनों से निकाह की हुर्मत यह यहाँ साबित नहीं, भले कुछ उलमा ने उनकी बेटियों को भी मुसलमानों की बहनें लिखा है जैसे कि हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) ने मुख़्तसर में निस्फ़न फ़र्माया है लेकिन यह इबारत का इत्लाक़ है न कि हुक्म का इस्बात।

हज़रत मुआविया (रज़ि.) वग़ैरह को जो किसी न किसी उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) के भाई थे उन्हें मामू कहा जा सकता है या नहीं? इसमें इख़्तिलाफ़ है। इमाम शाफ़ेई (रह.) ने तो कहा है कि कह सकते हैं। रही यह बात कि हुज़ूरे अकरम(ﷺ)को अबुल मोमिनीन कह सकते हैं या नहीं? यह ख़याल रहे कि अबुल मोमिनीन कहने में मुसलमान औरतें भी आ जाएँगी, जमा मुज़क्कर सालिम में बएतिबार तग़्लीब के मुअन्नस भी शामिल है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "नहीं कह सकते।"

इमाम शाफ़ेई (रह.) के दो क़ौलों में भी ज़्यादा सहीह क़ौल यही है। उबय बिन कअ़ब और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की क़िरअत में (उम्महातुहुम) के बाद यह लफ़्ज़ हैं, (वहुव अबुल्लहुम) यानी आप (ﷺ) उनके वालिद हैं। मज़हबे शाफ़ेई में भी एक क़ौल यही है और कुछ ताईद इस हदीस से भी होती है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मैं तुम्हारे लिए क़ायम मक़ाम बाप के हूँ, मैं तुम्हें तालीम दे रहा हूँ। सुनो! तुममें से जब कोई पाख़ाने में जाए तो न क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे, न पीठ करे, न अपने दाहिने हाथ से ढेले ले, न दाहिने हाथ

से इस्तिंजा करे। आप (ﷺ) तीन ढेले लेने का हुक्म देते थे और गोबर और हड्डी से इस्तिंजा करने से मना करते थे।'' (अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाब कराहयतु इस्तिक़्बालुल क़िब्लत इन्दा क़ज़ाइल हाजत : 8; और इसकी सनद हसन है; नसाई : 40; इब्ने माजा : 313) दूसरा क़ौल यह है कि ''हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को बाप न कहा जाए क्योंकि क़ुरआन मजीद में है (مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ) (33/अहज़ाब : 40) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तुममें से किसी मर्द के बाप नहीं।'' फिर फ़र्माता है कि बनिस्बत आम मोमिनों मुहाजिरीन और अंसार के वर्से के ज़्यादा मुस्तहिक़ क़राबतदार हैं। इससे पहले रसूले करीम (ﷺ) ने मुहाजिरीन और अंसार में जो भाईचारा कराया था उसी के ऐतिबार से यह आपस में एक दूसरे के वारिस होते थे और क़समें खाकर एक दूसरों के जो हलीफ़ बने हुए थे यह भी आपस में वर्सा बाँट लिया करते थे। इसको इस आयत से मंसूख़ कर दिया। पहले अगर किसी अंसारी सहाबी (रज़ि.) का इंतिक़ाल हो जाता तो उसके वारिस उसकी क़राबत के लोग नहीं होते थे बल्कि मुहाजिरीन होते थे जिनके बीच अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) ने भाईचारा करा दिया था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़राइज़, बाब ज़विल अरहाम : 6747) हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम (रज़ि.) का बयान है कि ''यह हुक्म ख़ास अंसार व मुहाजिरीन के बारे में उतरा है हम जब मक्का छोड़कर मदीना आये तो हमारे पास कुछ माल न था यहाँ आकर हमने अंसारियों से भाईचारा किया, यह बेहतरीन भाई साबित हुए यहाँ तक कि उनके फ़ौत होने के बाद उनके माल के वारिस भी हम होते थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का भाईचारा हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद (रज़ि.) के साथ था। हज़रत उमर (रज़ि.) का फ़लाँ के साथ। हज़रत उस्मान (रज़ि.) का एक ज़रक़ी शख़्स के साथ। ख़ुद मेरा (हज़रत) कअब बिन मालिक (रज़ि.) के साथ। यह ज़ख़्मी हुए और यह ज़ख़्म भी कारी थे अगर उस वक़्त उनका इंतिक़ाल हो जाता तो मैं भी उनका वारिस होता। फिर यह आयत उतरी और मीरास का आम हुक्म हमारे लिए भी हो गया।'' (हाकिम : 4/344, 345; और इसकी सनद हसन है।) फिर फ़र्माता है वर्सा तो इनका नहीं लेकिन वैसे अगर तुम अपने इन मुख़्लिस अहबाब के साथ सुलूक करना चाहो तो तुम्हें इख़्तियार है, वसिय्यत के तौर पर कुछ दे दिला सकते हो। फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला का यह हुक्म पहले ही से इस किताब में लिखा हुआ था जिसमें कोई तरमीम व तब्दीली नहीं हुई। बीच में जो भाईचारे पर वर्सा बटता था यह सिर्फ़ एक ख़ास मस्लिहत की बिना पर ख़ास वक़्त तक के लिए था अब यह हटा दिया गया और असली हुक्म दे दिया गया, वल्लाहु आलम!

***

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ
مَرْيَمَ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝٧ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَاَعَدَّ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٨

तर्जुमा : "जबकि हमने तमाम नबियों से अहद लिया बिल्ख़ुसूस तुझसे और नूह (अलैहिस्सलाम) से और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से और मूसा (अलैहिस्सलाम) से और मरयम के बेटे ईसा (अलैहिस्सलाम) से और अहद भी हमने उनसे पक्का और पुख़्ता लिया। (7) ताकि आख़िरकार अल्लाह तआला सच्चों से उनकी सच्चाई पूछ ले। न मानने वालों के लिए हमने अलमनाक अज़ाब तैयार कर रखे हैं।"(8)

ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों और दीगर नबियों से अहद (आ. 7, 8) : फ़र्मान है कि इन पाँचों ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों से और आम नबियों से सबसे हमने अहद व वादा लिया है, वह मेरे दीन की तब्लीग़ करेंगे, उस पर क़ायम रहेंगे, आपस में एक दूसरे की मदद व इम्दाद और ताईद करेंगे और इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद रखेंगे। इसी अहद का ज़िक्र इस आयत में है (وَ إِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ) (3/आले इमरान : 81) यानी अल्लह तआला ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से क़ौल क़रार लिया कि जो कुछ किताब व हिक्मत देकर मैं तुम्हें भेजूँ फिर तुम्हारे साथ की चीज़ की तस्दीक़ करने वाला रसूल आ जाए तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और उसकी मदद करना। बोलो! तुम्हें मंज़ूर है? और मेरे सामने इसका पुख़्ता वादा करते हो? सबने जवाब दिया कि, हाँ! हमें मंज़ूर है। जनाब बारी तआला ने फ़र्माया, बस अब गवाह रहना और मैं ख़ुद भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। यहाँ आम नबियों का ज़िक्र करके फिर ख़ास जलीलुल क़द्र पैग़म्बरों का नाम भी ले लिया। इसी तरह उनके नाम इस आयत में भी (شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا) (42/शूरा : 13) यहाँ हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है जो ज़मीन पर अल्लाह तआला के पैग़म्बर थे, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ज़िक्र है जो सबसे आख़िरी पैग़म्बर थे और इब्राहीम, मूसा, ईसा (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है। जो दरम्यानी पैग़म्बर थे। एक लताफ़त इसमें यह है कि पहले पैग़म्बर हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) के बाद के पैग़म्बर हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र किया और आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पहले के पैग़म्बर हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र किया और दरम्यान पैग़म्बरों में से हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा (अ.) का ज़िक्र किया। यहाँ तो तर्तीब यह रखी कि फ़ातेह का ज़िक्र करके बीच के नबियों का बयान किया और इस आयत में सबसे पहले ख़ातिमुन्नबिय्यीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम लिया इसलिए कि सबसे अशरफ़ व अफ़ज़ल आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही हैं। फिर एक के बाद एक जिस तरह आये हैं उसी तरह तर्तीबवार बयान किया, अल्लाह तआला अपने तमाम नबियों पर अपना दुरूदो सलाम नाज़िल करे।

इस आयत की तफ़्सीर में हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फ़र्मान है कि "पैदाइश के एतिबार से मैं सब नबियों से पहले हूँ और दुनिया में आने के एतिबार से सबसे आख़िर हूँ, पस मुझ ही से शुरुआत की है।" (इसकी सनद में सईद बिन बशीर ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/128; रक़म : 3143) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) यह हदीस इब्ने अबी हातिम में है लेकिन इसके एक रावी सईद बिन बशीर ज़ईफ़ हैं और सनद से यह मुर्सल मरवी है और यही ज़्यादा मुशाबिहत रखती है। और कुछ ने इसे मौक़ूफ़ रिवायत की है, वल्लाहु आलम! हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के पसंदीदा पाँच पैग़म्बर हैं, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा (अलैहिस्सलाम) और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)" इसमें एक रावी हमज़ा ज़ईफ़ है। यह भी कहा गया है कि इस आयत में जिस अहदो मीसाक़ का ज़िक्र है, यह वह है जो रोज़े अज़ल में

हज़रत आदम (ﷺ) की पीठ से तमाम इंसानों को निकालकर लिया था। हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) से मरवी है कि ''हज़रत आदम (ﷺ) को बुलंद किया गया, आपने अपनी औलाद को देखा उनमें मालदार, मुफ़्लिस, ख़ूबसूरत और हर तरह के लोग देखे तो कहा कि ऐ अल्लाह! क्या अच्छा होता कि तूने इन सबको बराबर ही रखा होता। अल्लाह तआला जल्ला जलालुहू ने फ़र्माया कि यह इसलिए है कि मेरा शुक्र अदा किया जाए। उनमें जो अम्बिया-ए-किराम (अ.) थे उन्हें भी आप(ﷺ) ने देखा, वह मिस्ल रोशनी के नमूदार थे। उन पर नूर बरस रहा था, उनसे नबुव्वत और रिसालत का एक और ख़ास अहद लिया गया था, जिसका बयान इस आयत में है, सादिक़ून से उनके सिदक़ का सवाल हो यानी उनसे जो अहादीसे रसूल (ﷺ) पहुँचाने वाले थे। (तबरी : 20/214) इनकी उम्मतों में से जो भी इनको न माने उसे सख़्त अज़ाब होगा। ऐ अल्लाह तआला! तू गवाह रह हमारी गवाही है हम दिल से मानते हैं कि बेशक तेरे रसूलों ने तेरा पैग़ाम तेरे बन्दों को बग़ैर कमी बेशी के पहुँचा दिया। उन्होंने पूरी ख़ैरख़्वाही की और हक़ को साफ़ तौर पर नुमायाँ तरीक़े से वाज़ेह कर दिया। जिसमें कोई पोशीदगी कोई शुब्हा किसी तरह का शक न रहा। गो बदनसीब, ज़िद्दी, झगड़ालू लोगों ने उन्हें न माना। हमारा ईमान है कि तेरे रसूलों की तमाम बातें सच और हक़ हैं और जिसने उनकी राह न पकड़ी वह गुमराह और बातिल पर है।

***

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱذْكُرُوا نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٩﴾ إِذْ جَآءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ
وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ ٱلْأَبْصَٰرُ وَبَلَغَتِ ٱلْقُلُوبُ ٱلْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِٱللَّهِ
ٱلظُّنُونَا۠ ﴿١٠﴾

तर्जुमा : ''ऐ ईमानवालों! अल्लाह तआला ने जो एहसान तुम पर किया उसे याद करो जबकि तुम्हारे मुक़ाबले को फ़ौजें आईं फिर हमने उन पर तेज़ तुंद आँधी और लश्कर भेजे जिन्हें तुमने देखा ही नहीं। (9) जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला सबको देखता है। जबकि दुश्मन तुम्हारे पास ऊपर से और नीचे से आ गये और जबकि आँखें पथरा गईं और कलेजे मुँह को आ गए और तुम अल्लाह तआला की निस्बत मुख़्तलिफ़ गुमान करने लगे।'' (10)

जंगे ख़ंदक़ में अल्लाह की मदद का नुज़ूल (आ. 9, 10) : जंगे ख़ंदक़ में जो 5 हिज्री माहे शव्वाल में हुई थी अल्लाह तआला ने मोमिनों पर जो अपना फ़ज़्लो-एहसान किया था उसका बयान हो रहा है। जबकि मुश्रिकीन ने पूरी ताक़त से और पूरे इत्तिहाद से मुसलमानों को मिटा देने के इरादे से ज़बरदस्त लश्कर लेकर

हमला किया था। कुछ लोग कहते हैं जंगे ख़ंदक़ 4 हिज्री में हुई थी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल ख़ंदक़ क़ब्ल हदीस : 4097) उस लड़ाई का क़िस्सा यह है कि बनू नज़ीर के यहूदी सरदारों ने जिनमें सलाम बिन अबू हुक़ैक़, सलाम बिन मिश्कम, किनाना बिन रबीअ वग़ैरह थे, मक्का में आकर क़ुरैशियों को जो पहले ही से तैयार थे, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से लड़ाई करने पर आमादा किया और उनसे वादा किया कि हम अपने ज़ेरे असर लोगों के साथ आप (ﷺ) की जमाअत में शामिल हैं। उन्हें आमादा करके यह लोग क़बीला ग़त्फ़ान के पास गए उनसे भी साज़बाज़ करके अपने साथ शामिल कर लिया। क़ुरैशियों ने भी इधर उधर फिरकर तमाम अरब में आग लगाकर सब गिरे पड़े लोगों को भी अपने साथ शामिल कर लिया। उन सबका सरदार अबू सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब बना और ग़त्फ़ान का सरदार उयैयना बिन हसन बिन बद्र मुक़र्रर हुआ। उन लोगों ने कोशिश करके दस हज़ार का लश्कर इकट्ठा किया और मदीने की तरफ़ चढ़ दौड़े। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को जब उस लश्करकशी की ख़बरें पहुँचीं तो आपने बमश्वरा हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) मदीना मुनव्वरह की मश्रिक़ी सिम्त में ख़ंदक़ यानी खाई खुदवाई। उस ख़ंदक़ के खोदने में तमाम सहाबा (रज़ि.) मुहाजिरीन व अंसार शामिल थे और ख़ुद आप भी ब-नफ़्से नफ़ीस उसमें हिस्सा लेते थे, खोदने में भी और मिट्टी ढोने में भी। मुश्रिकीन का लश्कर बिला मुज़ाहिमत मदीना मुनव्वरह तक पहुँच गया और मदीना के मश्रिक़ी हिस्से में उहुद पहाड़ के मुत्तसिल अपना पड़ाव जमाया। यह था मदीना तय्यिबा का निचला हिस्सा, ऊपर के हिस्से में उन्होंने अपनी एक बड़ी भारी जमइयत भेज दी जिसने अआली मदीना में लश्कर का पड़ाव डाला और नीचे ऊपर मुसलमानों को महसूर कर लिया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने साथ के सहाबा (रज़ि.) को जो तीन हज़ार से नीचे थे और कुछ रिवायात में है कि सिर्फ़ सात सौ थे, लेकर उनके मुक़ाबले पर आए। सल्अ पहाड़ी को आप (ﷺ) ने अपनी पुश्त पर किया और दुश्मनों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़ौज की तर्तीब दी। ख़ंदक़ जो आपने खोदी और खुदवाई थी उसमें पानी वग़ैरह न था वह सिर्फ़ एक गढ़ा था जो मुश्रिकीन के रेले को बेरोक आने नहीं देता था। आप (ﷺ) ने बच्चों और औरतों को मदीने के एक महल्ले में कर दिया था। यहूदियों की एक जमाअत बनू क़ुरैज़ा मदीना तय्यिबा में थी। मश्रिक़ी जानिब उनका महल्ला था नबी अकरम (ﷺ) से उनका मुआहिदा (समझौता) सुलह मज़बूत था, उनका भी बड़ा गिरोह था। तक़रीबन आठ सौ जंगजू लड़ने के क़ाबिल मैदान में मौजूद थे। मुश्रिकीन और यहूद ने उनके पास हुय्यी बिन अख़्तब नज़री को भेजा। उसने उन्हें भी शीशे में उतारकर सब्ज़ बाग़ दिखलाकर अपनी तरफ़ कर लिया और उन्होंने भी ठीक मौक़े पर मुसलमानों के साथ वादाख़िलाफ़ी की और एलानिया तौर पर सुलह तोड़ ली। बाहर से दस हज़ार का वह लश्कर जो घेरा डाले पड़ा है, अंदर से इन यहूदियों की बग़ावत जो बग़ली फोड़े की तरह उठ खड़े हुए। मुसलमान बत्तीस दाँतों में ज़ुबान या आटे में नमक की तरह हो गए। यह कुल सात सौ आदमी कर ही क्या सकते थे। यह वह वक़्त था जिसका नक़्शा क़ुरआने करीम ने खींचा है कि आँखें पथरा गईं, दिल उलट गए, तरह तरह के ख़यालात आने लगे, झिंझोड़ दिये गए और सख़्त इम्तिहान में मुब्तला हो गए। महीने भर तक मुहासिरा की यही तल्ख़ सूरत क़ायम रही।

गो मुश्रिकीन की यह जुर्अत नहीं हुई कि ख़ंदक़ से पार होकर दस्ती लड़ाई लड़ते, लेकिन हाँ! घेरा

डाले हुए पड़े रहे और मुसलमानों को तंग कर दिया। अल्बत्ता अम्र बिन अब्दूद आमिरी जो अरब का मशहूर शुजाअ पहलवान और फ़ने सिपह सालारी में यक्ता (बेमिसाल) था, साथ ही बहादुर जी दार और क़वी था, एक बार हिम्मत करके अपने साथ चंद जाँबाज़ पहलवानों को लेकर ख़ंदक़ से अपने घोड़ों को कुदा लाया। यह हाल देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सवारों की तरफ़ इशारा किया, लेकिन कहा जाता है कि उन्हें तैयार न पाकर आप (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को हुक्म दिया कि तुम उसके मुक़ाबले पर जाओ, आप गए थोड़ी देर तक तो दोनों बहादूरों में तलवार चलती रही लेकिन आख़िरकार शेरे इलाही ने कुफ़्र के उस देव को तहे तेग़ किया जिससे मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने समझ लिया कि फ़तह हमारी है। फिर परवरदिगार ने वह तेज़ व तुंद आँधी भेजी कि मुश्रिकीन के तमाम ख़ेमे उखड़ गए कोई चीज़ क़रीने से न रही, आग का जलाना मुश्किल हो गया, कोई पनाह की जगह नज़र न आई। आख़िरकार तंग आकर नामर्दी से वापिस हुए, जिसका बयान इस आयत में है। जिस हवा का इस आयत में ज़िक्र है बक़ौले मुजाहिद (रह.) यह सबा है और इसकी ताईद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के इस फ़र्मान से भी होती है कि "मैं सबा हवा से मदद दिया गया हूँ और आदी दुबूर हवा से हलाक किये गए थे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल ख़ंदक़ व हियल अहज़ाब : 4105; सहीह मुस्लिम : 900) इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं "जुनूबी हवा ने शिमाली हवा से इस जंगे अहज़ाब में कहा कि चल! हम तुम जाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की मदद करें तो शिमाली हवा ने कहा कि गर्मी रात को नहीं चला करती। फिर उन पर सबा हवा भेजी गयी।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुझे मेरे मामू हज़रत उस्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) ने ख़ंदक़ वाली रात सख़्त जाड़े और तेज़ हवा में मदीना मुनव्वरह भेजा कि खाना और ओढ़ने के लिए ले आऊँ। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से इजाज़त चाही तो आपने इजाज़त मर्हमत फ़र्माइ और इर्शाद फ़र्माया कि मेरे जो सहाबी तुम्हें मिलें उन्हें कहना कि मेरे पास चले आएँ। अब मैं चला। हवाएँ ज़न्नाटे की शाएँ शाएँ चल रही थीं। मुझे जो मुसलमान मिला मैंने उसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का पैग़ाम पहुँचा दिया और जिसने सुना, उल्टे पैर फ़ौरन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तरफ़ चल दिया यहाँ तक कि उनमें से किसी ने पीछे मुड़कर भी न देखा। हवा मेरी ढाल को धक्के दे रही थी और वह मुझे लग रही थी यहाँ तक कि उसका लोहा मेरे पैर पर गिर पड़ा जिसे मैंने नीचे फेंक दिया।" उस हवा के साथ ही साथ अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते भी नाज़िल किये थे जिन्होंने मुश्रिकीन के दिल और सीने ख़ौफ़ और रुअब से भर दिये। यहाँ तक कि जितने सरदाराने लश्कर थे अपने मातहत सिपाहियों को अपने पास बुला बुलाकर कहने लगे, नजात की सूरत तलाश करो, बचाव का इंतिज़ाम करो। यह था फ़रिश्तों का डाला हुआ डर और रुअब और यही वह लश्कर है जिसका बयान इस आयत में है कि उस लश्कर को तुमने नहीं देखा। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) से एक नौजवान शख़्स ने जो कूफ़े के रहने वाले थे कहा कि "ऐ अबू अब्दुल्लाह! तुम बड़े ख़ुशनसीब हो कि तुमने अल्लाह तआला के रसूल को देखा और आप (ﷺ) की मज्लिस में बैठे, बताओ तो तुम क्या करते थे? हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! हम जाँनिसारियाँ करते थे। नौजवान कहने लगे, सुनिए चचा! अगर हम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ज़माने को पाते तो अल्लाह की क़सम! आप (ﷺ) को क़दम भी ज़मीन पर न रखने देते, अपनी गर्दनों पर उठाकर ले जाते। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, भतीजे लो! एक वाक़िया सुनो। जंगे ख़ंदक़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) देर रात तक नमाज़ पढ़ते रहे। फ़ारिग़ होकर पूछा कि

कोई है जो जाकर लश्करे कुफ़्फ़ार की ख़बर लाए? अल्लाह तआला के नबी उससे शर्त करते हैं कि वह जन्नत में दाख़िल होगा। कोई खड़ा न हुआ क्योंकि ख़ौफ़, भूख और सर्दी की इंतिहा थी। फिर आप (ﷺ) देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। फिर फ़र्माया, है कोई जाकर यह ख़बर लाये कि मुख़ालेफ़ीन ने क्या किया? अल्लाह तआला के रसूल उसे मुत्मइन करते हैं कि वह ज़रूर वापिस आएगा और मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में मेरा रफ़ीक़ करे। अब के भी कोई खड़ा न हुआ, और खड़ा होता कैसे? भूख के मारे पेट कमर से लग रहा था सर्दी के मारे दाँत से दाँत बज रहा था, ख़ौफ़ के मारे पत्ते पानी हो रहे थे। आख़िरकार मेरा नाम लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आवाज़ दी, अब तो खड़े होने के अलावा चारा ही न था। फ़र्माने लगे, हुज़ैफ़ा! तू जा और देख कि वह इस वक़्त क्या कर रहे हैं ? देख जब तक मेरे पास वापिस न पहुँच जाओ कोई नया काम न करना। मैंने बहुत ख़ूब कहकर अपनी राह ली और जुर्अत के साथ मुश्रिकों में घुस गया, वहाँ जाकर अजीब हाल देखा कि दिखाई न देने वाले अल्लाह तआला के लश्कर अपना काम फुर्ती से कर रहे हैं। चूल्हों पर से देगें हवा ने उलट दी हैं, ख़ेमों की मेखें उखड़ गई हैं, आग जला नहीं सकते, कोई चीज़ अपने ठिकाने नहीं रही। उस वक़्त अबू सुफ़्यान खड़ा हुआ और बाआवाज़े बुलंद मुनादी की कि ऐ क़ुरैशियों! अपने अपने साथी से होशियार हो जाओ। अपने साथी को देखभाल लो, ऐसा न हो कि कोई ग़ैर खड़ा हुआ हो। मैंने यह सुनते ही मेरे पास जो एक क़ुरैशी जवान था उसका हाथ पकड़ लिया और उससे पूछा, तू कौन है? उसने कहा मैं फ़लाँ बिन फ़लाँ हूँ। मैंने कहा अब होशियार रहना।

फिर अबू सुफ़्यान ने कहा, क़ुरैशियों! बख़ुदा हम इस वक़्त किसी ठहरने की जगह पर नहीं हैं। हमारे मवेशी, हमारे ऊँट हलाक हो रहे हैं। बनू क़ुरैज़ा ने हमसे वादाख़िलाफ़ी की, उसने हमें बड़ी तक्लीफ़ पहुँचाई। फिर इस हवा ने तो हमें परेशान कर रखा है, हम पका खा नहीं सकते, आग तक जला नहीं सकते, ख़ेमें डेरे ठहर नहीं सकते, मैं तो तंग आ गया हूँ और मैंने तो इरादा कर लिया है कि वापिस हो जाऊँ। पस मैं तुम सबको हुक्म देता हूँ कि वापिस चलो। इतना कहते ही अपने ऊँट पर जो ज़ानू बँधा हुआ बैठा था चढ़ गया और उसे मारा वह तीन पैर से ही खड़ा हो गया। फिर उसका पैर खोला। उस वक़्त ऐसा अच्छा मौक़ा था कि अगर मैं चाहता तो एक तीर ही में अबू सुफ़्यान का काम तमाम कर देता। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्मा रखा था कि कोई नया काम न करना, इसलिए मैंने अपने दिल को रोक लिया। अब मैं वापिस लौटा और अपने लश्कर में आ गया जब मैं पहुँचता हूँ तो मैंने देखा, रसूलुल्लाह (ﷺ) एक चादर को लपेटे हुए जो आपकी किसी बीवी साहिबा की थी, नमाज़ में मशग़ूल हैं। आप (ﷺ) ने मुझे देखकर अपने दोनों पैरों के बीच बिठा लिया और चादर मुझे भी ओढ़ा दी। फिर रुकूअ व सज्दा किया और मैं वहीं चादर ओढ़े बैठा रहा, जब आप (ﷺ) फ़ारिग़ हुए तो मैंने सारा वाक़िया बयान किया।'' क़ुरैशियों के वापिस जाने की ख़बर जब क़बीला ग़त्फ़ान को पहुँची तो उन्होंने भी सामान बाँधा और वापिस लौट गए। और रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब मैं चला तो बावजूद कड़ाके की सख़्त सर्दी के क़सम अल्लाह तआला मुझे यह मालूम होता था कि गोया मैं किसी गर्म हम्माम में हूँ। उस वक़्त अबू सुफ़्यान आग सुलगाये हुए ताप रहा था। मैंने उसे देखकर पहचानकर अपना तीर कमान में चढ़ा लिया और चाहता ही था कि चला दूँ और वह बिलकुल निशाने में था,

नामुम्किन था कि मेरा निशाना ख़ाली जाए लेकिन मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) का वो फ़र्मान याद आ गया कि कोई ऐसी हरकत न करना कि वह चौकन्ने होकर भड़क उठें। तो मैंने अपना इरादा छोड़ दिया। जब मैं वापिस आया उस वक़्त भी मुझे कोई सर्दी महसूस न हुई बल्कि यह मालूम हो रहा था कि गोया मैं हम्माम में चल रहा हूँ। हाँ! जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास पहुँच गया तो बड़े ज़ोर की सर्दी लगने लगी और मैं कपकपाने लगा तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपनी चादर मुझको ओढ़ा दी। मैं जो ओढ़कर लेटा तो मुझे नींद आ गई और सुबह तक पड़ा सोता रहा, सुबह ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे यह कहकर जगाया कि ऐ सोने वाले बेदार हो जा।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब ग़ज़्वतुल अहज़ाब : 1788; इब्ने हिब्बान : 7125; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/449) और रिवायत में है कि जब उस ताबेई (रह.) ने कहा कि काश कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखते और आप (ﷺ) के ज़माने को पाते, तो हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि काश! कि तुम जैसा ईमान हमें नसीब होता कि बावजूद न देखने के पूरा और पुख़्ता अक़ीदा रखते हो। बिरादरज़ादे! जो तमन्ना तुम करते हो, यह तमन्ना ही है, न जाने होते तो क्या करते? हम पर तो ऐसे मुश्किल वक़्त आये हैं। यह कहकर फिर आपने मुंदर्जा बाला ख़ंदक़ वाली रात का वाक़िया बयान किया। उसमें यह भी है कि हवा झड़ी और आँधी के साथ बारिश भी थी। और रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ के वाक़ियात को बयान कर रहे थे जो अहले मज्लिस ने कहा अगर हम उस वक़्त मौजूद होते तो यूँ और यूँ करते ''उस पर आप (रज़ि.) ने यह वाक़िया बयान किया कि बाहर से तो दस हज़ार का लश्कर घेरे हुए है और अंदर से बनू क़ुरैज़ा के आठ सौ आदमी बिगड़े हुए हैं, बाल बच्चे और औरतें मदीना तय्यिबा में हैं, ख़तरा लगा हुआ है, अगर बनू क़ुरैज़ा ने इस तरफ़ रुख़ किया तो एक साअत में ही औरतों बच्चों का फ़ैसला कर देंगे। अल्लाह की क़सम! उस रात जैसी ख़ौफ़ व हिरास वाली हालत कभी हम पर नहीं गुज़री। फिर वह हवाएँ चलती हैं, आँधियाँ उठती हैं, अंधेरा छा जाता है, कड़क गरज और बिजली होती है कि अल्अज़्मतु लिल्लाहि। साथी को देखना तो कहाँ? अपनी उँगलियाँ भी नज़र न आती थीं। जो मुनाफ़िक़ हमारे साथ थे वह एक एक होकर यह बहाना बनाकर कि हमारे बाल बच्चे और औरतें वहाँ हैं और घर का निगहबान कोई नहीं, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से आकर इजाज़त चाहने लगे और आप (ﷺ) ने भी किसी एक को न रोका। जिसने कहा कि मैं जाऊँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''शौक़ से जाओ।'' वह एक एक होकर सिरकने लगे और हम सिर्फ़ तीन सौ के क़रीब रह गए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अब तशरीफ़ लाए एक एक को देखा मेरी अजीब हालत थी न मेरे पास दुश्मन से बचने के लिए कोई हथियार था न सर्दी से महफ़ूज़ रहने के लिए कोई कपड़ा था। सिर्फ़ मेरी बीवी की एक छोटी सी चादर थी जो मेरे घुटनों तक भी नहीं पहुँचती थी। जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मेरे पास पहुँचे उस वक़्त मैं अपने घुटनों में सिर डाले हुए दुबककर बैठा हुआ कपकपा रहा था। आप (ﷺ) ने पूछा यह कौन है? मैंने कहा, हुज़ैफ़ा। फ़र्माया, हुज़ैफ़ा सुन! अल्लाह की क़सम! मुझ पर तो ज़मीन तंग हो गई कि कहीं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मुझे खड़ा न करें, मेरी तो दुर्गत हो रही है लेकिन करता क्या, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान था, मैंने कहा, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सुन रहा हूँ। इर्शाद?'' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''दुश्मनों में एक नई बात होने वाली है, जाओ उनकी ख़बर लाओ।'' अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मुझसे ज़्यादा न तो किसी को ख़ौफ़ था न घबराहट थी, न सर्दी थी लेकिन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का हुक्म सुनते ही खड़ा हो गया और चलने लगा तो मैंने

सुना कि आप (ﷺ) मेरे लिए दुआ कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! इसके आगे से पीछे से दायें से बायें से ऊपर से नीचे से इसकी हिफ़ाज़त फ़र्मा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की इस दुआ के साथ ही मैंने देखा कि किसी क़िस्म का ख़ौफ़ डर या दहशत मेरे दिल में था ही नहीं। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे आवाज़ देकर फ़र्माया, "देखो! हुज़ैफ़ा वहाँ जाकर मेरे पास वापिस आने तक कोई नई बात न करना।" इस रिवायत में यह भी है कि मैं अबू सुफ़्यान को उससे पहले न पहचानता था। मैं गया तो वहाँ यही आवाज़ें लग रही थीं कि चलो, कूच करो, वापिस चलो। एक अजीब बात मैंने यह भी देखी कि वह ख़तरनाक हवा जो देगें उलट देती थीं वह सिर्फ़ उनके लश्कर के एहाता तक ही थी, अल्लाह की क़सम! उससे एक बालिश्त भर बाहर न थी। मैंने देखा कि पत्थर उड़ उड़कर उन पर गिरते थे। जब मैं वापिस चला हूँ तो मैंने देखा कि तक़रीबन बीस सवार हैं जो अमामे बाँधे हुए हैं। उन्होंने मुझसे फ़र्माया, जाओ और रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर दो कि अल्लाह तआला ने आपको किफ़ायत कर दी और आपके दुश्मनों को मात दी। उसमें यह भी बयान है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की आदत में दाख़िल था कि जब कभी कोई घबराहट और दिक़्क़त का वक़्त होता तो आप नमाज़ शुरू कर देते। जब मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यह ख़बर दी उसी वक़्त यह आयत उतरी। पस आयत में नीचे की तरफ़ से आने वालों से मुराद बनू क़ुरैज़ा हैं, शिद्दते ख़ौफ़ और सख़्त घबराहट से आँखें उलट गई थीं और दिल हलक़ों तक पहुँच गए थे और तरह तरह के गुमान हो रहे थे। यहाँ तक कि कुछ मुनाफ़िक़ों ने समझ लिया था कि अब की लड़ाई में काफ़िर ग़ालिब आ जाएँगे। आम मुनाफ़िक़ों का तो पूछना ही क्या है? मअतब बिन क़ुशैर कहने लगा कि हुज़ूर (ﷺ) तो हमें कह रहे थे कि हम क़ैसर व किसरा के ख़ज़ानों के मालिक बनेंगे और यहाँ हालत यह है कि पाख़ाने को जाना भी दुभर हो रहा है। यह मुख़्तलिफ़ गुमान मुख़्तलिफ़ लोगों के थे, मुसलमान तो यक़ीन करते थे कि ग़ल्बा हमारा ही है। जैसाकि फ़र्मान है (وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ) (33/अहज़ाब : 22) लेकिन मुनाफ़िक़ीन कहते थे कि अब की बार सारे मुसलमान हुज़ूर (ﷺ) समेत गाजर मूली की तरह काटकर रख दिये जाएँगे। सहाबा (रज़ि.) ने ऐन उस घबराहट और परेशानी के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि हुज़ूर (ﷺ)! इस वक़्त हमें उससे बचाव की कोई दुआ तल्क़ीन करें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया दुआ माँगो (अल्लाहुम्मस्तुरऔरातिना वामिरोंआतिना) ऐ अल्लाह! हमारी पर्दापोशी कर, ऐ अल्लाह! हमारे ख़ौफ़ डर को अम्नो अमान से बदल दे। इधर मुसलमानों की यह दुआएँ बुलंद हुई उधर लश्करे रब्बानी हवाओं की शक्ल में आया और काफ़िरों का तिया पाँचा कर दिया। (अहमद : 3/3; ह : 1996, 1; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; लि इंक़िताइही, फ़ी सिमाइ रबीअ मिन अबी सईद ख़ुदरी (रज़ि.) नज़र वज़ुबैर बिन अब्दुल्लाह ज़ईफ़; यह रिवायत ज़ईफ़ है।) फ़ल्हम्दु लिल्लाह!

***

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ﴿١١﴾ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢﴾ وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ
يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ
بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾

तर्जुमा : "यहीं मोमिनों का इम्तिहान कर लिया गया और पूरी तरह वह झिंझोड़ दिये गए। (11) उस वक़्त मुनाफ़िक़ और कमज़ोर दिल वाले कहने लगे अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) ने हमसे सिर्फ़ धोखे फ़रेब के ही वादे किये थे। (12) उन ही की एक जमाअत ने हाँक लगाई कि ऐ मदीना वालों ! तुम्हारे ठहरने का यह मक़ाम नहीं, चलो लौट चलो। उनकी एक और जमाअत यह कहकर नबी अकरम (ﷺ) से इजाज़त माँगने लगी कि हमारे घर ख़ाली और ग़ैर महफ़ूज़ हैं, दरअसल वह खुले हुए और ग़ैर महफ़ूज़ न थे लेकिन इनका तो पुख़्ता इरादा भाग जाने का हो चुका था।" (13)

मुनाफ़िक़ों का मैदाने जंग से फ़रार (आ. 11 से 13) : इस घबराहट और परेशानी का हाल बयान हो रहा है जो जंगे अहज़ाब के मौक़े पर मुसलमानों की थी कि बाहर से दुश्मन अपनी पूरी कुव्वत और काफ़ी लश्कर से घेरा डाले खड़ा है। अंदर शहर में बग़ावत की आग भड़की हुई है। यहूदियों ने दफ़अतन सुलह तोड़कर बेचैनी पैदा कर दी है। मुसलमान खाने पीने तक से तंग हो गए हैं। मुनाफ़िक़ खुल्लम खुल्ला अलग हो गए हैं। ज़ईफ़ दिल लोग तरह तरह की बातें बना रहे हैं, कह रहे हैं कि बस अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) के वादे देख लिए। कुछ लोग हैं जो एक दूसरे के कान में सूर फूँक रहे हैं कि मियाँ पागल हो गए हो? देख नहीं रहे? दो घड़ी में नक़्शा पलटने वाला है, भाग चलो, लौटो लौटो वापिस चलो। यस्रिब से मुराद मदीना तय्यिबा है। जैसे सहीह हदीस में है कि "मुझे ख़्वाब में तुम्हारी हिज्रत की जगह दिखाई गई है। जो दो संगलाख़ मैदानों के बीच है, पहले तो मेरा ख़्याल हुआ था कि यह हिज्र है लेकिन नहीं वह जगह यस्रिब है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब इज़ा रआ बक़रन तन्हर : 7035; सहीह मुस्लिम : 2272; इब्ने हिब्बान : 6276) और रिवायत में है कि वह जगह मदीना तय्यिबा है, वह ताबा है। (अहमद : 4/285; मुस्नदे अबी यअला : 1688; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, इस रिवायत में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 2/365) यह हदीस सिर्फ़ मुस्नद अहमद में है और इसकी इस्नाद में ज़ुअफ़ है। कहा गया है कि अमालीक़ में से जो शख़्स यहाँ आकर ठहरा था चूँकि उसका नाम यस्रिब बिन उबेद बिन महलाईल बिन औस बिन अम्लाक़ बिन लाविद बिन इरम बिन साम बिन नूह था, इसलिए इस शहर का नाम यस्रिब मशहूर हो गया। यह भी क़ौल है कि तौरात में इसके ग्यारह नाम आये हैं। मदीना, ताबा, जलीला, जाबिरा, मुहब्बा, महबूबा, क़ासिमा,

मजबूरा, अज़्रा, मरहूमा, तैबा। कअ़ब अह़बार (रह़.) फ़र्माते हैं कि ''हम तौरात में यह इबारत पाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मदीना मुनव्वरा से फ़र्माया, ऐ तैबा और ऐ ताबा और ऐ मस्कीना! ख़ज़ानों में मुब्तला न हो, तमाम बस्तियों पर तेरा दर्जा बुलंद होगा।'' कुछ लोग तो उस मौक़े ख़ंदक़ पर कहने लगे, यहाँ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास ठहरने की जगह नहीं, अपने घरों को लौट चलो, बनू ह़ारिसा कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे घरों में चोरी होने का ख़तरा है'' वह ख़ाली पड़े हैं हमें वापिस जाने की इजाज़त मिलनी चाहिए। औस बिन क़ैज़ी ने भी यही कहा था। (त़ब्री : 20/225) कि हमारे घरों में दुश्मन के घुस जाने का अंदेशा है हमें जाने की इजाज़त दीजिए। अल्लाह तआ़ला ने उनके दिल की बात बतला दी कि यह तो ढोंग रचाया है ह़क़ीक़त में उ़ज़्र कुछ भी नहीं, नामर्दी से भगोड़ापन दिखाते हैं, लड़ाई से जी चुराकर सिरकना चाहते हैं।

***

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا
﴿١٤﴾ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ﴿١٥﴾
قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا
﴿١٦﴾ قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ
وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧﴾

तर्जुमा :''अगर मदीने के चारों तरफ़ से इन पर लश्कर दाख़िल हो जाएँ फिर इनसे फ़ित्ना त़लब किया जाए तो यह ज़रूर उसे बरपा कर देंगे और कुछ ढील भी करेंगे तो यूँ ही सी। (14) इससे पहले तो इन्होंने अल्लाह तआ़ला से अ़हद किया था कि पीठ न फेरेंगे। अल्लाह तआ़ला से किये हुए अ़हद की बाज़पुर्स ज़रूर है। (15) कह दे कि भले तुम मौत से या ख़ौफ़े क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हें कुछ भी काम न आएगा और उस वक़्त तुम बहुत ही कम फ़ायदेमंद किये जाओगे। (16) पूछ तू कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें कोई बुराई पहुँचाना चाहे या तुम पर कोई फ़ज़्ल करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें बचा सके या तुमसे रोक सके? अपने लिए सिवाय अल्लाह तआ़ला के न कोई हिमायती पाएँ, न मददगार।'' (17)

जिहाद से फ़रार होने की साज़िश (आ. 14 से 17) : जो लोग यह उ़ज़्र करके जिहाद से भाग रहे थे कि हमारे घर अकेले पड़े हैं जिनका बयान ऊपर गुज़रा। उनकी निस्बत जनाब बारी तआ़ला फ़र्माता है कि अगर उन पर दुश्मन मदीने के चारों त़रफ़ से और हर हर रुख़ से आ जाए फिर उनसे कुफ़्र में दाख़िल होने का सवाल किया जाए

तो बेताम्मुल कुफ़्र को क़बूल कर लेंगे लेकिन थोड़े ख़ौफ़ और ख़्याली दहशत की बिना पर ईमान से दस्तबरदारी कर रहे हैं। यह उनकी मज़म्मत बयान की है। फिर फ़र्माता है यही तो हैं जो इससे पहले लम्बी लम्बी डींगें मारते थे कि ख़्वाह कुछ ही क्यूँ न हो जाए हम मैदाने जंग से पीठ फेरने वाले नहीं, क्या यह नहीं जानते कि यह जो वादे उन्होंने अल्लाह तआला से किये थे अल्लाह तआला इनकी बाज़ पुर्स करेगा। फिर इर्शाद होता है कि मौत व फ़ौत से भागना, लड़ाई से मुँह छुपाना, मैदान में पीठ दिखाना जान नहीं बचा सकता बल्कि बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तआला की अचानक पकड़ के जल्द आ जाने की वजह से हो जाए और दुनिया का थोड़ा सा नफ़ा भी हासिल न हो सके। हालाँकि दुनिया तो आख़िरत जैसी बाक़ी चीज़ के मुक़ाबले पर कुल की कुल हक़ीर और सिर्फ़ नाचीज़ है। फिर फ़र्माया कि सिवाय अल्लाह तआला के कोई न दे सके, न दिला सके, न मददगारी कर सके, न हिमायत पर आ सके। अल्लाह तआला अपने इरादों को पूरा करके ही रहता है।

***

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ
الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ
اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ
حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۭ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला तुममें से उन्हें बख़ूबी जानता है जो दूसरों को रोकते हैं और अपने भाईबन्दों से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ। और कभी कभी ही लड़ाई में आ जाते हैं। (18) तुम्हारी मदद में पूरे बख़ील हैं, फिर जब डर दहशत का मौक़ा आ जाए तो तू उन्हें देखेगा कि तेरी तरफ़ नज़रें जमा देते हैं और उनकी आँखें इस तरह घूमती हैं जैसे उस शख़्स की जिस पर मौत की ग़शी तारी हो। फिर जब ख़ौफ़ जाता रहता है तो तुम पर अपनी तेज़ ज़बानों से बड़ी बातें बनाते हैं माल के बड़े ही हरीस़ (लालची) हैं। यह ईमान लाए ही नहीं हैं। अल्लाह तआला ने उनके तमाम आमाल नाबूद कर दिये हैं और अल्लाह तआला पर यह बहुत ही आसान है।" (19)

जिहाद से फ़रार हक़ीक़त में ईमान से फ़रार होना है (आ. 18, 19) : अल्लाह तआला अपने मुहीत़ इल्म से उन्हें ख़ूब जानता है जो दूसरों को भी जिहाद से रोकते हैं। अपने हम सोह्बतों से यार व दोस्तों से कुंबे क़बीले वालों से कहते हैं कि आओ! तुम भी हमारे साथ रहो, अपने घरों को अपने आराम को अपनी ज़मीन

वो अपने जोरू बच्चों को न छोड़ो। ख़ुद भी जिहाद में आते नहीं, यह और बात है कि किसी किसी वक़्त मुँह दिखा जाएं और नाम लिखा जाएँ। यह बड़े कंजूस हैं, न इनसे तुम्हें कोई। मदद पहुँचे, न इनके दिल में तुम्हारी हमदर्दी, न माले ग़नीमत में तुम्हारे हिस्से पर यह ख़ुश। ख़ौफ़ के वक़्त तो इन नामर्दों के हाथों के तोते उड़ जाते हैं, आँखें छाछ पानी हो जाती हैं। मायूसाना निगाहों से तकने लगते हैं। लेकिन ख़ौफ़ दूर हुआ कि इन्होंने लम्बी लम्बी ज़बानें निकाल डालीं और बढ़े-चढ़े दावे करने लगे। हमें दो, हमें दो का गुल मचा देते हैं। हम आपके साथी हैं, हमने जंगी ख़िदमात अंजाम दी हैं हमारा हिस्सा है और जंग के वक़्त झूठ और नामर्दी दोनों ऐब जिसमें जमा हों उस जैसा बेख़ैर इंसान और कौन होगा? अम्न के वक़्त अय्यारी, बदख़ुल्क़ी, बदज़ुबानी और लड़ाई के वक़्त नामर्दी, रूबाबाज़ी और ज़नानापन। लड़ाई के वक़्त हाइज़ा औरतों की तरह अलग और यक्सू और माल लेने के वक़्त गधों की तरह ढेंचू ढेंचू। अल्लाह तआला फ़र्माता है बात यह है कि इनके दिल शुरू से ही ईमान से ख़ाली हैं, इसलिए इनके आमाल भी अकारत है। यह सब अल्लाह तआला पर आसान है।

***

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۚ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي
الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ
لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ
كَثِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : "समझते हैं कि अब तक लश्कर चले नहीं गए और अगर फ़ौजें आ जाएँ तो तमन्नाएँ करते हैं कि काश कि वह जंगलों में बादिया नशीनों के साथ होते कि तुम्हारी ख़बरें पूछा करते। अगर वह तुममें मौजूद हों तो भी क्या? यूँ ही दिखावे के लिए ज़रा सी लड़ाई लड़ लें। (20) यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) में उम्दा नमूना मौजूद है हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआला की और क़ियामत के दिन की तवक़्क़ुअ रखता है और बकसरत अल्लाह तआला की याद करता है। (21) ईमान वालों ने जब कुफ़्फ़ार के लश्कर को देखा बेसाख़्ता कह उठे कि इन ही का वादा हमें अल्लाह तआला ने और उसके रसूल ने दिया था और अल्लाह तआला और उसके रसूल सच्चे हैं। यह तो ईमान में और शेव-ए-फ़र्मांबरदारी में और भी बढ़ गए।" (22)

निफ़ाक़ बुज़दिली है (आ. 20 से 22) : इनकी बुज़दिली और डरपोकी का यह आलम है कि अब तक

इन्हें इस बात का यक़ीन ही नहीं हुआ कि लश्करे कुफ़्फ़ार लौट गया। और ख़तरा है कि वह फिर कहीं आन पड़े। मुश्रिकीन के लश्करों को देखते ही छक्के छूट जाते हैं और कहते हैं काश कि हम मुसलमानों के साथ इस शहर में ही न होते। बल्कि गँवारों के साथ किसी उजाड़ गाँव या कसीद दरवाज़े के जंगल में होते, किसी आते जाते से पूछ लेते कि कहो भई! लड़ाई का क्या हश्र हुआ? अल्लाह तआला फ़र्माता है यह अगर तुम्हारे साथ भी हों तो बेकार हैं, इनके दिल मुर्दा हैं, नामर्दी के घुन ने इन्हें खोखला कर रखा है, यह क्या लड़ेंगे और कौनसी बहादुरी दिखाएँगे?

रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है : यह आयत बहुत बड़ी दलील है इस अम्र पर कि हुज़ूर (ﷺ) के कुल क़ौल, फ़ेअल, अहवाल, इक़्तिदा, पैरवी और ताबेदारी के लायक़ हैं। जंगे अहज़ाब में भी जो सब्र व तहम्मुल और अदीमुल मिसाल शुजाअत की मिसाल हुज़ूर (ﷺ) ने क़ायम की, जैसे राहे अल्लाह तआला की तैयारी, शौक़े जिहाद और सख़्ती के वक़्त भी रब से आसानी की उम्मीद उस वक़्त आपने दिखाई यक़ीनन यह तमाम चीज़ें इस क़ाबिल हैं कि मुसलमान इन्हें अपनी ज़िन्दगी का जुज़वे अज़ीम (अहम हिस्सा) बना लें और अपने प्यारे पैग़म्बर हबीबे इलाही अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) को अपने लिए बेहतरीन नमूना बनालें और इन औसाफ़ से अपने आपको भी मौसूफ़ करें। इसीलिए क़ुरआने करीम में लोगों को जो उस वक़्त सटपटा रहे थे और घबराहट व परेशानी का इज़्हार करते थे, फ़र्माता है कि तुमने मेरे नबी अकरम (ﷺ) की ताबेदारी क्यूँ न की? मेरे रसूल तो तुममें मौजूद थे, उनका नमूना तुम्हारे सामने था। तुम्हें सब्रो इस्तिक़्लाल की न सिर्फ़ तल्क़ीन की थी बल्कि साबित क़दमी, इस्तिक़्लाल और इत्मिनान का पहाड़ तुम्हारी निगाहों के सामने था। तुम जबकि अल्लाह तआला पर क़ियामत पर ईमान रखते हो फिर कोई वजह न थी कि तुम अपने रसूल को अपने लिए नमूना और नज़ीर न क़ायम करते?

फिर अल्लाह तआला की फ़ौज के सच्चे मोमिनों की, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सच्चे साथियों के ईमान की पुख़्तगी बयान हो रही है कि उन्होंने जब टिड्डीदल लश्करे कुफ़्फ़ार को देखा तो पहली निगाह में ही बोल उठे कि इन्हीं पर फ़तह पाने की हमें ख़ुशख़बरी दी गई है, इन ही की हार का हमसे वादा हुआ है और वादा भी किसका, अल्लाह तआला का और रसूलुल्लाह (ﷺ) का। और यह नामुम्किन सी बात है कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) का वादा ग़लत हो। यक़ीनन इस जंग की फ़तह का ताज होगा हमारे सिर पर। इनके इस कामिल यक़ीन और सच्चे ईमान को रब तआला ने भी देख लिया और दुनियाआख़िरत में अंजाम की बेहतरी उन्हें अता की। बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तआला के जिस वादे की तरफ़ इसमें इशारा है वह आयत यह हो जो सूरह बक़रह में गुज़र चुकी है (اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ) (2/बक़रह : 214) यानी क्या तुमने यह समझ लिया है कि बग़ैर इसके कि तुम्हारी आज़माइश हो तुम जन्नत में चले जाओगे? तुमसे अगले लोगों की आज़माइश भी हुई, उन्हें भी दुख दर्द लड़ाई भिड़ाई में मुब्तला किया गया यहाँ तक कि उन्हें हिलाया गया कि ईमान वालों और ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़बान से निकल गया कि अल्लाह की मदद कब आएगी? याद रखो रब तआला की मदद बहुत ही क़रीब है। (तब्री : 20/236) यानी यह तो सिर्फ़ इम्तिहान है इधर तुमने साबित क़दमी दिखाई और उधर रब तआला की मदद आई। अल्लाह तआला और उसका रसूल (ﷺ)

सच्चा है। फ़र्माता है कि इन अस्हाबे रसूल का ईमान अपने मुख़ालेफ़ीन की इस क़द्र जमइयत देखकर और बढ़ गया। यह अपने ईमान में अपनी तस्लीम में और बढ़ गए। यक़ीने कामिल हो गया, फ़र्मांबरदारी और बढ़ गइ। इस आयत में दलील है ईमान की ज़्यादती होने पर और बनिस्बत औरों के उनके ईमान के क़वी होने पर। जुम्हूरे अइम्मा किराम (रह.) का भी यही फ़र्मान है कि ईमान बढ़ता और घटता है। हमने भी इसकी तक़रीर शरह बुख़ारी के शुरू में कर दी है, वलिल्लाहिल ह़म्द वल मिन्हू। पस फ़र्माता है कि उस तंगी तुर्शी ने, उस सख़्ती और तंगहाली ने, उस ह़ाल और उस नक़्शा ने, उनका जो ईमान अल्लाह तआला पर था, उसे और बढ़ा दिया और जो तस्लीम की ख़ू उनमें थी कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें माना करते थे और उन पर आमिल थे इस इताअत में और बढ़ गए।

***

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : ''मोमिनों में वह जवाँ मर्द हैं जिन्होंने जो अ़हद अल्लाह तआला से किये थे उन्हें सच्चा कर दिखाया। कुछ ने तो अपना अ़हद पूरा कर दिया और कुछ मौक़े के इंतिज़ार में हैं और उन्होंने कोई तब्दीली नहीं की। (23) ताकि अल्लाह तआला सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और अगर चाहे मुनाफ़िक़ों को सज़ा दे या उन पर भी मेहरबानी करे। अल्लाह तआला बड़ा ही बख़्शने वाला और बहुत ही मेहरबानी करने वाला है।''(24)

मोमिनों और काफ़िरों में फ़र्क़ (आ. 23, 24) : मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका कि वक़्त से पहले तो जाँ निसारी के लम्बे चौड़े दावे करते थे लेकिन वक़्त आने पर पूरे बुज़दिल और नामर्द साबित हुए, सारे दावे और वादे रखे के रखे रह गए और बजाय साबित क़दमी के पीठ फेरकर भाग खड़े हुए। यहाँ मोमिनों का ज़िक्र हो रहा है कि उन्होंने अपने वादे पूरे कर दिखाए। कुछ ने तो जामे शहादत नोश फ़र्मा लिया और कुछ इसके इंतिज़ार में बेचैन हैं। सह़ीह़ बुख़ारी में है ह़ज़रत साबित (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''जब हमने क़ुरआन लिखना शुरू किया तो एक आयत मुझे नहीं मिलती थी ह़ालाँकि सूरह अह़ज़ाब में वह आयत मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से सुनी थी। आख़िर (ह़ज़रत) ख़ुज़ैमा बिन साबित अंसारी (रज़ि.) के पास यह आयत मिली। यह वह स़ह़ाबी हैं जिनकी अकेले की गवाही को रसूले करीम (ﷺ) ने दो गवाहों के बराबर कर दिया था। वह आयत (مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ) (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अह़ज़ाब बाब (फ़मिन्हुम मन क़ज़ा नह़बहू वमिन्हुम मंय्यन्तज़िर...) : 4784; तिर्मिज़ी : 3104)

यह आयत (हज़रत) अनस बिन नज़्र (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब बाब (फ़मिन्हुम मन क़ज़ा नहबहू वमिन्हुम मंय्यन्तज़िर...) : 4783 वाक़िया यह है कि आप जंगे बद्र में शरीक नहीं हो सके थे जिसका उन्हें सख़्त अफ़सोस था कि सबसे पहली जंग में जिसमें ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ब नफ़्से नफ़ीस शरीक थे मैं शामिल न हो सका अब जो जिहाद का मौक़ा आएगा मैं अल्लाह तआला को अपनी सच्चाई दिखा दूँगा, और यह भी कि मैं क्या करता हूँ? इससे ज़्यादा कहते हुए ख़ौफ़ खाया। अब जंगे उहुद का मौक़ा आया तो उन्होंने देखा कि सामने से हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) वापिस आ रहे हैं उन्हें देखकर ताज्जुब से फ़र्माया ऐ अबू अम्र! कहाँ जा रहे हो? अल्लाह की क़सम! मुझे उहुद पहाड़ के उस तरफ़ से जन्नत की ख़ुश्बूएँ आ रही हैं। यह कहते ही आप आगे बढ़े और मुश्रिकीन में ख़ूब तलवार चलाई। चूँकि मुसलमान लौट गए थे यह तंहा थे, इनके बेपनाह हमलों ने कुफ़्फ़ार के दाँत खट्टे कर दिये और भिड़ भिड़ाकर आ गए और चारों तरफ़ से घेर लिया और शहीद कर दिया। आपको अस्सी से ऊपर ज़ख़्म आये थे, कोई नेज़े का कोई तलवार का कोई तीर का। शहादत के बाद कोई आपको पहचान न सका, यहाँ तक कि आपकी हमशीरा ने आपको पहचाना और वह भी हाथों की उँगलियों की पोरियाँ देखकर। उन्हीं के बारे में यह आयत नाज़िल हुई। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब सबूतुल जन्नत लिश्शहीद : 1903; तिर्मिज़ी : 3200; अहमद : 3/194) और यही ऐसे थे जिन्होंने जो कहा था कर दिखाया, रज़ियल्लाहु अन्हुम। और रिवायत में है कि जब मुसलमान भागे तो आपने फ़र्माया, ''इलाही! इन्होंने जो किया मैं इससे अपनी मअज़ूरी ज़ाहिर करता हूँ और मुश्रिकों ने जो किया उससे बेज़ार हूँ।'' इसमें यह भी है कि हज़रत सअद (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया, ''मैं आपके साथ हूँ। साथ चले भी लेकिन फ़र्माते हैं जो वह कर रहे थे वह मेरी ताक़त से बाहर था।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अहज़ाब : 3201; सहीह मुस्लिम : 2805) हज़रत तलहा (रज़ि.) का बयान इब्ने अबी हातिम में है कि ''जंगे उहुद से जब रसूलुल्लाह (ﷺ) वापिस मदीना आए तो मिम्बर पर चढ़कर अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की और मुसलमानों से हमदर्दी ज़ाहिर की। जो जो शहीद हो गए थे उनके दर्जों की ख़बर दी। फिर इसी आयत की तिलावत की। एक मुसलमान ने खड़े होकर पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! जिन लोगों का इस आयत में ज़िक्र है वह कौन हैं? उस वक़्त मैं सामने से आ रहा था और हज़्रमी सब्ज़ रंग के दो कपड़े पहने हुए था। आपने मेरी तरफ़ इशारा किया और फ़र्माया, ऐ पूछने वाले! यह भी उन ही में से हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अहज़ाब : 3203; और इसकी सनद हसन है; मुस्नदे अबी यअला : 663 बि तसर्रुफ़िन यसीर) इनके साहबज़ादे हज़रत मूसा बिन तलहा (रज़ि.) हज़रत मुआविया (रज़ि.) के दरबार में गए, जब वहाँ से वापिस आने लगे, दरवाज़े से बाहर निकले ही थे जो जनाब मुआविया (रज़ि.) ने वापिस बुलाया और फ़र्माया, आओ! मुझसे एक हदीस सुनते जाओ। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि तुम्हारे वालिद तलहा (रज़ि.) उनमें से हैं जिनका बयान इस आयत में है कि उन्होंने अपना अहद और नज़्र पूरी कर दी।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अहज़ाब : 3202; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 126)

रब्बुल आलमीन उनका बयान फ़र्माकर फ़र्माता है कि कुछ उस दिन के इंतिज़ार में हैं कि फिर लड़ाई हो

और वह अपनी कारगुज़ारी अल्लाह तआला को दिखाएँ और जामे शहादत नोश फ़र्माएँ। पस कुछ ने तो सच्चाई और वफ़ादारी साबित कर दी और कुछ मौक़े के इंतिज़ार में हैं। उन्होंने न अहद बदला, न नज़्र को पूरी न करने का उन्हें ख़्याल गुज़रा, बल्कि वह अपने वादे पर क़ायम हैं। वह मुनाफ़िक़ों की तरह वक़्त पर बहाने बनाने वाले नहीं। यह ख़ौफ़ और यह ज़लज़ला सिर्फ़ इस वास्ते था कि ख़बीस और पाक की तमीज़ हो जाए और बुरे भले का हाल हर एक पर खुल जाए। क्योंकि अल्लाह तआला तो आलिमुल ग़ैब है, उसके नज़दीक तो छुपा खुला बराबर है जो नहीं हुआ उसे भी वह तो उसी तरह जानता है जिस तरह उसे जो हो चुका है। लेकिन उसकी आदत है कि जब तक मख़्लूक़ अमल न कर ले उन्हें सिर्फ़ अपने इल्म की बिना पर जज़ा सज़ा नहीं देता। जैसे उसका फ़र्मान है (وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ)(47/मुहम्मद : 31) "हम तुम्हें ख़ूब परखकर मुजाहिदीन साबिरीन को तुममें से अलग कर देंगे" पस वुजूद से पहले का इल्म फिर वुजूद के बाद का इल्म, दोनों अल्लाह तआला को हैं और उसके बाद जज़ा सज़ा। जैसे फ़र्माया (مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ) (3/आले इमरान : 179) यानी "अल्लाह तआला जिस हाल पर तुम हो उसी पर मोमिनों को छोड़ दे ऐसा नहीं जब तक वह भले बुरे की तमीज़ न करे। न अल्लाह तआला ऐसा है कि तुम्हें ग़ैब पर ख़बर कर दे।" पस यहाँ भी फ़र्माता है कि यह इसलिए कि सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और अहद शिकन मुनाफ़िक़ों को सज़ा दे, या उन्हें तौफ़ीक़े तौबा दे कि यह अपनी रविश बदल दें और सच्चे दिल से अल्लाह तआला की तरफ़ झुक जाएँ तो अल्लाह तआला भी उन पर मेहरबान हो जाए और उनकी ख़ताएँ माफ़ कर दे। इसलिए कि वह अपनी मख़्लूक़ की ख़ताएँ माफ़ करने वाला और उन पर मेहरबानियाँ करने वाला है। उसकी राफ़्त और रहमत ग़ज़ब व गुस्से से बढ़ी हुई है।

***

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने काफ़िरों को गुस्से में भरे हुए ही नामुराद लौटा दिया कि उनकी कोई मुराद पूरी न हुई और उस जंग में अल्लाह तआला ख़ुद मोमिनों को काफ़ी हो गया। अल्लाह तआला बड़ी कुव्वतों वाला और ग़ालिब है।" (25)

जंगे अहज़ाब में अल्लाह की मदद का नुज़ूल (आ. 25) : अल्लाह अपना एहसान बयान कर रहा है कि उसने तूफ़ाने बाद व बाराँ भेजकर और अपने न नज़र आने वाले लश्कर उतारकर काफ़िरों का धड़ तोड़ दिया और उन्हें सख़्त मायूसी और नामुरादी के साथ मुहासिरा हटाना पड़ा। बल्कि अगर रहमतुल लिल्आलमीन की उम्मत में यह न होते तो यह हवाएँ उनके साथ वही करतीं जो आदियों के साथ उस बेबरकत हवा ने किया था। चूँकि रब्बुल आलमीन का फ़र्मान है कि तू जब तक इनमें है अल्लाह तआला इन्हें आम अज़ाब नहीं करेगा।

लिहाज़ा इन्हें सिर्फ़ इनकी शरारत का मज़ा चखाएगा। इनके मज्मऐ को मुंतशिर करके इन पर से अपना अ़ज़ाब हटा लिया चूँकि इनका यह इज्तिमाअ़ सिर्फ़ हवाये नफ़्सानी था। इसलिए हवा ने ही उन्हें परागंदा कर दिया, जो सोच समझकर आये थे सब ख़ाक़ में मिल गया। कहाँ की ग़नीमत? कहाँ की फ़तह़? जान के लाले पड़ गए। और हाथ मलते, दाँत पीसते, पेच व ताब खाते, ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ नामुरादी और नाकामयाबी से वापिस हुए। दुनिया का ख़सारा अलग हुआ, आख़िरत का वबाल अलग है। क्योंकि जो शख़्स किसी काम का क़सद करे और अपने क़सद को अ़मली सूरत भी दे दे तो फिर उसमें कामयाब हो या न हो गुनहगार तो हो ही गया। पस रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़त्ल और आपके दीन को फ़ना करने की आरज़ू, फिर एहतिमाम, फिर इक़्दाम सब कुछ उन्होंने कर लिया लेकिन क़ुदरत ने दोनों जहान का भार उन पर लादकर उन्हें जले दिल वापिस किया। अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ही मोमिनों की तरफ़ से उनका मुक़ाबला किया, न मुसलमान उनसे लड़े, न उन्हें हटाया बल्कि मुसलमान अपनी जगह रहे और वह भागते बने। अल्लाह तआ़ला ने अपने लश्कर की लाज रख ली और अपने बन्दे की मदद की और ख़ुद ही काफ़ी हो गया। इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माया करते थे "अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह अकेला है उसने अपने वादे को सच्चा किया, अपने बन्दे की मदद की, अपने लश्कर की इ़ज़्ज़त की, तमाम दुश्मनों से ख़ुद ही निपट लिया और सबको हरा दिया। उसके बाद और कोई भी नहीं।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल ख़ंदक़ : 4114; सह़ीह़ मुस्लिम : 2724; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/456) हुज़ूर (ﷺ) ने जंगे अह़ज़ाब के मौक़े पर जनाब बारी तआ़ला से जो दुआ माँगी थी, वह भी बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया (अल्लाहुम्म मुंज़िलल किताबि शरीअ़ल ह़िसाबिहज़्मिल अह़ज़ाब व ज़लज़िलुहुम) "ऐ अल्लाह! ऐ किताब के उतारने वाले! जहल्द ह़िसाब लेने वाले! इन लश्करों को शिकस्त दे और इन्हें हिला डाल।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल ख़ंदक़ : 4115; सह़ीह़ मुस्लिम : 1742; बैहक़ी : 3/456) इस फ़र्मान (व कफ़ल्लाहुल मोमिनीनल क़िताल) यानी अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों की किफ़ायत जंग से कर दी। इसमें एक निहायत लत़ीफ़ बात यह है कि न सिर्फ़ उस जंग से ही मुसलमान छूट गए नहीं! बल्कि आइन्दा हमेशा ही स़ह़ाबा (रज़ि.) उससे बच गए कि मुश्रिकीन उन पर चढ़ाई करें। चुनाँचे आप तारीख़ देख लें जंगे ख़ंदक़ के बाद काफ़िरों की हिम्मत पड़ी ही नहीं कि वह मदीना त़य्यिबा पर या हुज़ूर (ﷺ) पर किसी जगह ख़ुद चढ़ाई करते। उनके मंहूस क़दमों से अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) के मस्कन व आरामगाह को मह़फ़ूज़ कर लिया, फ़ल्ह़म्दु लिल्लाह! बल्कि बरख़िलाफ़ इसके मुसलमान उन पर चढ़ गए यहाँ तक कि अ़रब की सरज़मीन से अल्ल्लाह तआ़ला ने शिर्क व कुफ़्र को ख़त्म कर दिया। जब उस जंग से काफ़िर लौटे उसी वक़्त रसूले अकरम (ﷺ) ने बत़ौर पेशीनगोई फ़र्मा दिया था कि इस साल के बाद क़ुरैश तुमसे जंग नहीं करेंगे बल्कि तुम उनसे जंग करोगे। (दलाइलुन्नबुव्वा : 3/458; इसकी सनद में मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ मुदल्लस रावी है (अत्तक़रीब : 2/144) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है जबकि (अब हम इनसे जंग करेंगे वह हमसे जंग नहीं करेंगे) के अल्फ़ाज़ से सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल ख़ंदक़ : 4110; अह़मद : 4/262; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/457 में मौजूद है।) चुनाँचे यही हुआ। यहाँ तक कि मक्का मुअज़्ज़मा फ़तह़ हो गया। अल्लाह तआ़ला की कुव्वत का मुक़ाबला बंदे के बस का नहीं। अल्लाह तआ़ला को कोई मग़्लूब नहीं कर

सकता। उसी ने अपनी मदद व क़ुव्वत से उन बिफरे हुए और बिखरे हुए लश्करों को पस्पा किया। उन्हें बराए नाम भी कोई नफ़ा न पहुँचा। उसने इस्लाम और अहले इस्लाम को ग़ालिब किया, अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने अ़ब्द व रसूल (ﷺ) की मदद फ़र्माई, फ़लहुल ह़म्द!

***

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ
وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : ''जिन अहले किताब ने उनसे साज़ बाज़ कर ली थी उन्हें भी अल्लाह तआ़ला ने उनके क़िलों से निकाल दिया। और उनके दिलों में भी रुअ़ब भर दिया कि तुम इनकी एक जमाअ़त को क़त्ल कर रहे हो और एक जमाअ़त को क़ैदी बना रहे हो। (26) उसने तुम्हें उनकी ज़मीनों का, उनके घरबार का, उनके माल का वारिस बना दिया और उस ज़मीन का भी जिस पर तुम्हारे क़दम ही नहीं गए। अल्लाह तआ़ला सब कुछ कर सकने पर क़ादिर है।'' (27)

बनू क़ुरैज़ा का मुहासिरा (घेराव) (आ. 26, 27) : इतना हम पहले लिख चुके हैं जब मुश्रिकीन व यहूद के लश्कर मदीना त़य्यिबा पर आये और उन्होंने घेरा डाला तो बनू क़ुरैज़ा के यहूदी जो मदीना त़य्यिबा में थे और जिनसे हुज़ूर (ﷺ) का समझौता हो चुका था, उन्होंने भी ऐन मौक़े पर बेवफ़ाई की, अ़हद तोड़कर आँखें दिखाने लगे। उनका सरदार कअ़ब बिन असद बातों में आ गया और हुय्य बिन अख़्तब ख़बीस ने उसे बदअ़हदी पर आमादा कर दिया, पहले तो यह न माना और अपने अ़हद पर क़ायम रहा। हुय्यी ने कहा कि देख तो सही मैं तुझे इ़ज़्ज़त का ताज पहनाने आया हूँ। क़ुरैश और उनके साथी, ग़त़फ़ान और उनके साथी और हम सब एक साथ हैं। हमने क़सम खा रखी है कि जब तक एक एक मुसलमान का क़ीमा न कर लें, यहाँ से नहीं हटने के, कअ़ब चूँकि दुनियादार शख़्स था उसने जवाब दिया कि यह फ़ालतू बात है। यह तुम्हारे बस के नहीं, तू हमें ज़िल्लत का त़ौक़ पहनाने आया है। तू बड़ा मंहूस शख़्स है, मेरे सामने से हट जा और मुझे अपनी मक्कारी का शिकार न बना। लेकिन हुय्यी फिर भी न हटा और उसे समझाता बुझाता रहा। आख़िर में कहा, सुन! अगर बिल फ़र्ज़ क़ुरैश और ग़त़फ़ान भाग भी जाएँ तो मैं अपनी जमाअ़त के साथ तेरी त़रफ़ आ जाऊँगा और जो कुछ तेरा और तेरी क़ौम का ह़ाल होगा वही मेरा और मेरी क़ौम का ह़ाल होगा। आख़िरकार कअ़ब पर हुय्यी का जादू चल गया और बनू क़ुरैज़ा ने सुलह़ तोड़ दी जिससे हुज़ूर (ﷺ) को और स़ह़ाबा (रज़ि.) को सख़्त स़दमा पहुँचा और बहुत ही भारी पड़ा। फिर जब अल्लाह तआ़ला ने अपने ग़ुलामों की मदद की और हुज़ूर (ﷺ) अस्ह़ाब (रज़ि.) के साथ मुज़फ़्फ़र व मंसूर मदीना मुनव्वरह को वापिस आए, स़ह़ाबा ने

हथियार खोल दिये और हुज़ूर (ﷺ) भी हथियार उतारकर हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में गर्दो गुबार से पाक साफ़ होने के लिए ग़ुस्ल करने को बैठे ही थे कि हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ज़ाहिर हुए, आपके सर पर रेशमी अमामा था, ख़च्चर पर सवार थे जिस पर रेशमी गद्दी थी, फ़र्माने लगे कि "या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आपने कमर खोल ली? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ!" हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने फ़र्माया, लेकिन फ़रिश्तों ने अब तक अपने हथियार अलग नहीं किये। मैं काफ़िरों के पीछे से अभी अभी आ रहा हूँ। सुनिए! अल्लाह तआला का हुक्म है कि बनू कुरैज़ा की तरफ़ चलिए और उनकी पूरी गोश माली कीजिए। मुझे भी अल्लाह तआला का हुक्म मिल चुका है कि मैं उन्हें थर्रा दूँ। हुज़ूर (ﷺ) उसी वक़्त उठ खड़े हुए, तैयार होकर सहाबा (रज़ि.) को कूच का हुक्म किया और फ़र्माया कि तुममें से हर एक असर की नमाज़ बनू कुरैज़ा में पढ़े, ज़ुहर के बाद यह हुक्म मिला था।

बनू कुरैज़ा का क़िला यहाँ से कई मील पर था। नमाज़ का वक़्त सहाबा (रज़ि.) को रास्ते ही में आ गया तो कुछ ने तो नमाज़ अदा कर ली और फ़र्माया, हुज़ूर (ﷺ) के इस फ़र्मान का मतलब यही था कि हम बहुत तेज़ चाल चलें। और कुछ ने कहा कि हम तो वहाँ पहुँचे बग़ैर नमाज़ नहीं पढ़ेंगे आपको यह बात मालूम हुई तो आपने दोनों में से किसी को डाँट डपट नहीं की। आप (ﷺ) ने मदीना तय्यिबा पर हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) को ख़लीफ़ा बनाया। हज़रत अली (रज़ि.) के हाथ में लश्कर का झण्डा दिया और आप (ﷺ) भी सहाबा (रज़ि.) के पीछे ही पीछे बनू कुरैज़ा की तरफ़ चले और जाकर उनके क़िला को घेर लिया, यह मुहासिरा पच्चीस दिन तक रहा। जब यहूदियों का नाक में दम आ गया और तंग हाल हो गए तो उन्होंने अपना हकम (सालिस) हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को बनाया जो क़बीला औस के सरदार थे। बनू कुरैज़ा में और औस में ज़माना जाहिलियत में इत्तिफ़ाक़ व यगानिगत थी, एक दूसरे के हलीफ़ थे इसलिए उन यहूदियों को ख़्याल रहा कि हज़रत सअद (रज़ि.) हमारा लिहाज़ और पास करेंगे जैसे कि अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल ने बनू क़ेनुक़ाअ को छुड़वाया था। इधर हज़रत सअद (रज़ि.) की यह हालत थी कि जंगे ख़ंदक़ में उन्हें अक्हल की रग में एक तीर लगा था जिससे ख़ून जारी था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ज़ख़्म पर दाग़ लगवाया था और मस्जिद के ख़ेमें में ही उन्हें रखा था कि पास ही पास एयादत और बीमारपुर्सी कर लिया करें। हज़रत सअद (रज़ि.) ने जो दुआएँ कीं उनमें से एक दुआ यह भी थी कि ऐ परवरदिगार! अगर अब भी कोई ऐसी लड़ाई बाक़ी है जिसमें कुफ़्फ़ार कुरैश तेरे नबी पर चढ़ आएँ तो तू मुझे ज़िन्दा रख कि मैं उसमें शिर्कत कर सकूँ और अगर तूने कोई ऐसी लड़ाई बाक़ी न रखी तो ख़ैर मेरा ज़ख़्मे ख़ून बहाता रहे लेकिन ऐ मेरे रब तआला! जब तक बनू कुरैज़ा की सरकशी की सज़ा से मैं अपनी आँखें ठण्डी न कर लूँ, तू मेरी मौत को मुअख़्ख़र करना। हज़रत सअद (रज़ि.) जैसे मुस्तजाबुद् दअवात की दुआ की क़बूलियत की शान देखिए कि आप यह दुआ करते हैं इधर यहूदाने बनू कुरैज़ा आपके फ़ैसले पर इज़्हारे रज़ामंदी करके क़िले को मुसलमानों के सुपुर्द करते हैं। जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) आदमी भेजकर आपको मदीना तय्यिबा से बुलवाते हैं कि आप आकर इनके बारे में अपना फ़ैसला सुना दें। यह गधे पर सवार करा लिये गए और सारा क़बीला औस लिपट गया कि देखिए! हज़रत ख़्याल रखिएगा, बनू कुरैज़ा आपके आदमी हैं, उन्होंने आप पर भरोसा किया है वह

आपके हलीफ़ हैं। आपकी क़ौम के दुख सुख के साथी हैं, आप उन पर रह़म कीजिएगा, उनके साथ नर्मी से पेश आइएगा। देखिए! इस वक़्त उनका कोई नहीं, वह आपके बस में हैं, वग़ैरह वग़ैरह। लेकिन ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) ख़ामोश थे, कोई जवाब नहीं देते थे। उन लोगों ने मजबूर किया कि जवाब दे, पीछा ही न छोड़ा। आख़िर आपने फ़र्माया, वक़्त आ गया है कि सअ़द (रज़ि.) उस बात का सबूत दे कि "उसे अल्लाह तआ़ला की राह में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नहीं।" यह सुनते ही उन लोगों के तो दिल डूब गए और समझ लिया कि बनू क़ुरैज़ा की ख़ैर नहीं।

जब ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) की सवारी उस ख़ेमे के क़रीब पहुँच गई जिसमें जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) थे तो आपने फ़र्माया, लोगों! अपने सरदार के इस्तिक़बाल के लिए उठो, चुनाँचे मुसलमान उठ खड़े हुए और आपको बाइ़ज़्ज़त व इकराम, वक़्अ़त व एह़तिराम से सवारी से उतारा। यह इसलिए था कि उस वक़्त आप ह़कम की ह़ैसियत में थे उनके फ़ैसले पूरे नातिक़ व नाफ़िज़ समझे जाएँ। आपके बैठते ही हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि यह लोग आपके फ़ैसले पर रज़ामंद होकर क़िले से निकल आए हैं, अब आप इनके बारे में जो चाहें हुक्म कीजिए। आप (रज़ि.) ने कहा, क्या जो मैं इन पर हुक्म करूँ वह पूरा होगा? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! क्यूँ नहीं। कहा और इस ख़ेमे वालों पर भी उसकी ता'मील ज़रूरी होगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यक़ीनन। पूछा और उस त़रफ़ वालों पर भी? और इशारा उस त़रफ़ किया जिस त़रफ़ ख़ुद रसूले अकरम (ﷺ) थे। लेकिन आपकी त़रफ़ नहीं देखा, आपकी बुज़ुर्गी और इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत की वजह से। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने जवाब दिया, हाँ! इस त़रफ़ वालों पर भी। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, अब मेरा फ़ैसला सुनिए। मैं कहता हूँ बनू क़ुरैज़ा में जितने लोग लड़ने वाले हैं उन्हें क़त्ल कर दिया जाए, उनकी औलाद को क़ैद कर लिया जाए, उनके माल क़ब्ज़े में ले लिये जाएँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ सअ़द! तुमने इनके बारे में वही हुक्म किया जो अल्लाह तआ़ला ने सातवें आसमान के ऊपर हुक्म किया है।" एक रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुमने सच्चे मालिक अल्लाह तआ़ला का जो हुक्म था, वही सुनाया है।"

फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के हुक्म से ख़ंदकें, खाई खुदवाकर उन्हें बँधा हुआ बुलवाकर उनकी गर्दनें मारी गईं, यह गिनती में सात आठ सौ थे। उनकी औ़रतें नाबालिग़ बच्चे और माल ले लिये गए। हमने यह तमाम वाक़ियात अपनी किताबुस्सियर में बस्त़ व तफ़्सील से लिख दिये हैं, वल्ह़म्दु लिल्लाह!

पस फ़र्माता है कि जिन अहले किताब यानी यहूदियों ने काफ़िरों के लश्करों की हिम्मत अफ़्ज़ाई की थी और उनका साथ दिया था उनसे भी अल्लाह तआ़ला ने उनके क़िले ख़ाली करा दिये। उस क़ौम बनू क़ुरैज़ा के बड़े सरदार जिनसे उनकी नस्ल जारी हुई थी, अगले ज़माने में आकर ह़िजाज़ में उसी त़मअ़ में बसे थे कि जिस नबी आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) की पेशीनगोई हमारी किताबों में है वह चूँकि यहीं होने वाले हैं तो हम सबसे पहले आप (ﷺ) की इत्तिबाअ़ की सआ़दत से मसऊ़द होंगे, लेकिन उन नाख़ल्फ़ों ने जब अल्लाह तआ़ला के वह नबी अकरम (ﷺ) आये, झुठलाया, जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला की लअ़नत उन पर नाज़िल हुई। "स़यास़ी" से मुराद क़िले हैं। (त़बरी : 20/249) इसी मअ़नी के लिहाज़ से सींगों को भी स़यास़ी कहते

हैं। इसलिए कि जानवर के सारे जिस्म के ऊपर और सबसे बुलंद यही होते हैं। उनके दिलों में अल्लाह तआला ने रुअब डाल दिया उन्होंने ही मुश्रिकीन को भड़काकर रसूलुल्लाह (ﷺ) पर चढ़ाई कराई थी। आलिम जाहिल बराबर नहीं होते। यही थे जिन्होंने मुसलमानों को जड़ों से उखाड़ देना चाहा था, लेकिन मामला उल्टा हो गया, पासा पलट गया, कुव्वत कमज़ोरी से और मुराद नामुरादी से बदल गई। नक़्शा बिगड़ गया, हिमायती खड़े हुए। यह बेदस्त व पारा हो गये। इज़्ज़त की ख़्वाहिश ने ज़िल्लत दिखाई, मुसलमानों के बर्बाद करने और पीस डालने की ख़ुशी ने अपने आपको पिसवा दिया और अभी आख़िरत की बदनसीबी बाक़ी है, कुछ क़त्ल कर दिये गए, बाक़ी क़ैद कर लिये गए। अतिया कुर्ज़ी का बयान है कि मैं जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने पेश किया गया तो मेरे बारे में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को कुछ तरद्दुद हुआ, फ़र्माया "इसे अलग ले जाओ, देखो! अगर इसके नाफ़ के नीचे बाल हों तो क़त्ल कर दो वरना क़ैदियों में बिठा दो।" देखा तो मैं बच्चा ही था, ज़िन्दा छोड़ दिया गया। (अबूदाऊद, किताबुल हुदूद, बाब फ़िल ग़ुलामि, युसीबुल हद्द : 4404; और इसकी सनद सहीह है; तिर्मिज़ी : 1584; नसाई : 3460; इब्ने माजा : 2541; अहमद : 4/310; इब्ने हिब्बान : 4780) उनकी ज़मीन के, उनके घर के, उनके माल के मालिक मुसलमान हो गए बल्कि उस ज़मीन के भी जो अब तक पड़ी थी और जहाँ मुसलमानों के निशाने क़दम भी न पड़े थे, यानी ख़ैबर की ज़मीन या मक्का मुकर्रमा की ज़मीन या फ़ारस की या रूम की ज़मीन और मुम्किन है कि यह कुल ख़ित्ते मुराद हों। अल्लाह तआला बड़ी कुदरतों वाला है। (तब्री : 20/250)

मुस्नद अहमद में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का बयान है कि "ख़ंदक़ वाले दिन मैं निकली कि लश्कर का कुछ हाल मालूम करूँ कि मुझे अपने पीछे से किसी के बड़े ज़ोर से आने की आहट और उसके हथियारों की झंकार सुनाई दी। मैं रास्ते से हटकर एक जगह बैठ गई देखा कि हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) लश्कर की तरफ़ जा रहे हैं और उनके साथ उनके भाई हारिस बिन औस थे जिनके हाथ में उनकी ढाल थी। हज़रत सअद (रज़ि.) लोहे की ज़िरह पहने हुए थे लेकिन बड़े लम्बे चौड़े थे, ज़िरह पूरे बदन पर नहीं आई थी, हाथ खुले थे, अश्आरे रजज़ पढ़ते हुए झूमते झामते चले जा रहे थे। मैं यहाँ से और आगे बढ़ी और एक बाग़ीचे में चली गई वहाँ कुछ मुसलमान मौजूद थे जिनमें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी थे और एक साहब जो ख़ूद ओढ़े हुए थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने मुझे देख लिया। फिर क्या था बड़े ही बिगड़े और मुझसे फ़र्माने लगे, यह दिलेरी तुम नहीं जानतीं लड़ाई हो रही है? अल्लाह तआला जाने क्या नतीजा हो? तुम कैसे यहाँ चली आईं? वग़ैरह वग़ैरह। ग़र्ज़ मुझे इस क़द्र मलामत की कि ज़मीन फट जाती तो मैं उसमें समा जाती। जो साहिबे मिग़्फ़र (ख़ूद) से अपने मुँह छुपाये हुए थे, उन्होंने उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की यह बातें सुनकर अपने सिर से लोहे का टोप उतारा, देखा अब मैं पहचान गई कि वह हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि.) थे, उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि.) को ख़ामोश किया कि क्या मलामत शुरू कर रखी है, नतीजे का क्या डर है? क्यूँ तुम्हें इतनी घबराहट है? कोई भाग के जाएगा कहाँ, सब कुछ अल्लाह तआला के हाथ है। हज़रत सअद (रज़ि.) को एक कुरैशी ने ताककर तीर लगाया और कहा, ले! मैं इब्ने अरक़ा हूँ। हज़रत सअद (रज़ि.) की रगे उक्हल पर वह तीर पड़ा और पेवस्त हो गया। ख़ून के फ़व्वारे छूट गए। उसी वक़्त आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे मौत न देना जब

तक कि बनू क़ुरैज़ा की तबाही अपनी आँखों से न देख लूँ। अल्लाह तआला की शान से उसी वक़्त ख़ून थम गया। मुश्रिकीन को हवाओं ने भगा दिया और अल्लाह तआलला ने मोमिनों की किफ़ायत कर दी। अबू सुफ़्यान और उसके साथी तो भागकर तिहामा में चले गए। उयेयना बिन बद्र और उसके साथी नजद में चले गए। बनू क़ुरैज़ा ने अपने क़िले में जाकर पनाह ले ली। मैदान ख़ाली देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तय्यिबा वापिस तशरीफ़ ले आए। हज़रत सअद (रज़ि.) के लिए मस्जिद में ही चमड़े का एक ख़ेमा नसब किया गया। उसी वक़्त जिब्राईल (عليه السلام) आए आपका चेहरा गर्द आलूद था, फ़र्माने लगे, आपने हथियार खोल दिये हालाँकि फ़रिश्ते अब तक हथियारबंद हैं। उठिये बनू क़ुरैज़ा से भी फ़ैसला कर लीजिए, उन पर चढ़ाई कीजिए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़ौरन हथियार लगाए और सहाबा (रज़ि.) में भी कूच की मुनादी करा दी। बनू तमीम के मकानात मस्जिदे नबवी (ﷺ) से मुत्तसिल ही थे, राह में आपने उनसे पूछा, क्यूँ भई! किसी को जाते हुए देखा? उन्होंने कहा कि, हाँ! अभी अभी हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) गए हैं। हालाँकि थे तो वह जिब्राईल (عليه السلام)। लेकिन आप (عليه السلام) की दाढ़ी चेहरा बिलकुल हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) से मिलता जुलता था।

अब आप (ﷺ) ने जाकर बनू क़ुरैज़ा के क़िले का मुहासिरा कर लिया। पच्चीस रोज़ तक यह मुहासिरा रहा। जब वह घबराए और तंग आ गए तो उनसे कहा गया कि क़िला हमें सौंप दो और तुम भी समर्पण कर दो, रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे बारे में जो चाहेंगे फ़ैसला कर देंगे। उन्होंने हज़रत अबू लबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर (रज़ि.) से मश्वरा किया कि इस सूरत में अपनी जान से हाथ धो लेना है। उन्होंने यह मालूम करके उसे तो नामंज़ूर कर दिया और कहने लगे हम क़िला ख़ाली कर देते हैं आपकी फ़ौज को क़ब्ज़ा दे देते हैं हमारे बारे में फ़ैसला हम हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को देते हैं। आपने उसे भी मंज़ूर कर लिया। हज़रत सअद (रज़ि.) को बुलवाया गया। आप तशरीफ़ ले आए, गधे पर सवार थे, जिस पर खजूर के दरख़्त की छाल की गद्दी थी। आप उस पर बमुश्किल सवार कराये गए थे। आपकी क़ौम आपको घेरे हुए थी और समझा रही थी कि देखो! बनू क़ुरैज़ा हमारे हलीफ़ हैं, हमारे दोस्त हैं। हमारी मौत व ज़ीस्त के शरीक हैं और उनके ताल्लुक़ात जो हमसे हैं वह आप पर पोशीदा नहीं। आप ख़ामोशी से सबकी बातें सुनते जाते थे। जब उनके महल्ले में पहुँचे तो उनकी तरफ़ नज़र डाली और कहा वक़्त आ गया है कि मैं अल्लाह तआला की राह में किसी मलामत करने वाले की मलामत की मुत्लक़न परवाह न करूँ।

जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ख़ेमे के पास उनकी सवारी रुकी तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "अपने सय्यद की तरफ़ उठो और उन्हें उतारो।" हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, हमारा सय्यद तो अल्लाह तआला ही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उतारो। लोगों ने मिल जुलकर उन्हें सवारी से उतारा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "सअद! इनके बारे में जो हुक्म करना चाहो, कर दो।" आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, इनके बड़े क़त्ल कर दिये जाएँ इनके छोटे ग़ुलाम बनाए जाएँ, इनका माल बाँट लिया जाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "सअद! तुमने इस हुक्म में अल्लाह तआला व रसूल (ﷺ) की पूरी मुवाफ़िक़त की।" फिर हज़रत सअद (रज़ि.) ने दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह! अगर तेरे नबी पर क़ुरैश की कोई और लड़ाई भी बाक़ी हो तो तू मुझे उसमें शामिल होने तक ज़िन्दा रख वरना अपनी तरफ़ बुला ले। उसी वक़्त ज़ख़्म से ख़ून बहना शुरू हो गया

हालाँकि वह पूरा भर चुका था। यूँ ही सा बाक़ी था। चुनाँचे उन्हें फिर वापिस उसी ख़ेमे में पहुँचा दिया गया और आप वहीं शहीद हो गए, ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) और आपके साथ हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर (रज़ि.) वग़ैरह भी आए, सब रो रहे थे और मैं अबूबक्र (रज़ि.) की आवाज़ और उमर (रज़ि.) की आवाज़ में तमीज़ भी कर रही थी, मैं उस वक़्त अपने हुज्रे में थी।'' वाक़ेई में अस्हाबे रसूल ऐसे ही थे, जैसे अल्लाह तआला ने फ़र्माया (रुहमाउ बैनहुम) आपस में एक दूसरे की पूरी मुहब्बत और एक दूसरे से उल्फ़त रखने वाले थे। हज़रत अल्क़मा (रह.) ने पूछा, उम्मुल मोमिनीन! यह तो फ़र्माईए कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किस तरह रोया करते थे? फ़र्माया, ''आपकी आँखें किसी पर आँसू बहाती थीं, हाँ! ग़म व रंज के मौक़े पर आप अपनी दाढ़ी मुबारक अपनी मुट्ठी में ले लेते थे।'' (अहमद : 6/141, 142; सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मरजउन्नबी (ﷺ) मिनल अहज़ाबि....: 4122; सहीह मुस्लिम : 1769; मुख़्तसरन इब्ने हिब्बान : 7028)

***

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝٢٨ وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٢٩

तर्जुमा : ''ऐ नबी (ﷺ)! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम्हारी मुराद ज़िन्दगानी दुनिया और ज़ीनते दुनिया है तो आओ! मैं तुम्हें कुछ दे दिला दूँ और तुम्हें अच्छाई के साथ छोड़ दूँ। (28) और अगर तुम्हारी मुराद अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) और आख़िरत का घर है तो यक़ीन मानो कि तुममें से नेक काम करने वालियों के लिए अल्लाह तआला ने बहुत ज़बरदस्त अज्र रख छोड़ा है।'' (29)

उम्महातुल मोमिनीन (रज़ि.) के फ़ज़ाइल (आ. 28, 29) : इन आयतों में अल्लाह तआला अपने नबी अकरम (ﷺ) को हुक्म देता है कि अपनी बीवियों को दो बातों में से एक की क़बूलियत का इख़्तियार दें। अगर तुम दुनिया और उसकी रौनक़ पर रीझी हुई हो तो आओ! तुम्हें अपने निकाह से अलग कर देता हूँ। और अगर तुम तंगी तुर्शी पर यहाँ सब्र करके अल्लाह तआला की ख़ुशी, रसूलुल्लाह (ﷺ) की रज़ामंदी चाहती हो और आख़िरत की रौनक़ पसंद है तो सब्रो सिहार से मेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ारो, अल्लाह तआला तुम्हें वहाँ की नेअमतों से सरफ़राज़ करेगा। अल्लाह तआला आप (ﷺ) की तमाम बीवियों से जो हमारी माएँ हैं ख़ुश रहे, सबने अल्लाह तआला को, उसके रसूल को और आख़िरत के घर को ही पसंद किया, जिस पर रब तआला राज़ी हुआ और फिर आख़िरत के साथ ही दुनिया की मुसर्रतें भी अता कीं। हज़रत आइशा (रज़ि.) का बयान है कि ''इस आयत के उतरते ही अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) मेरे पास आए और मुझसे कहने लगे

कि मैं एक बात का तुमसे ज़िक्र करने वाला हूँ, तुम जवाब में जल्दी न करना, अपने माँ बाप से मश्वरा करके जवाब देना। यह तो आप जानते ही थे कि नामुम्किन है कि मेरे वालिदेन मुझे आपसे जुदाई करने का मश्वरा दें। फिर आपने यह आयत पढ़कर सुनाई। मैंने फ़ौरन जवाब दिया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसमें माँ बाप से मश्वरा करने की कौनसी बात है। मुझे अल्लाह तआला पसंद है उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) पसंद हैं और दारे आख़िरत पसंद है। आप (ﷺ) की और तमाम बीवियों ने भी वही किया जो मैंने किया था।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब बाब क़ौलुहू (या अय्युन्नबिय्यु कुल लि अज़्वाजिका इन कुन्तुन्ना....) : 4785, 4786; सहीह मुस्लिम : 1475) और रिवायत में है कि तीन बार हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया कि ''देखो! बग़ैर अपने माँ बाप से मश्वरा किये कोई फ़ैसला न कर लेना।''

फिर जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मेरा जवाब सुना तो आप (ﷺ) ख़ुश हो गए और हँस दिये। फिर आप दूसरी अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.) के हुज्रों में तशरीफ़ ले गए। उनसे पहले ही फ़र्मा देते थे कि आइशा (रज़ि.) ने तो यह जवाब दिया है। वह कहती थीं यही जवाब हमारा भी है। फ़र्माती हैं कि इस इख़्तियार के बाद जब हमने आपको इख़्तियार दिया तो यह इख़्तियार तलाक़ में शुमार नहीं हुआ। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तलाक़, बाब मिन ख़ैरि अज़्वाजिही : 5262; सहीह मुस्लिम : 1477) मुस्नद अहमद में है कि ''हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहा। लोग आपके दरवाज़े पर बैठे हुए थे और आप (ﷺ) अंदर तशरीफ़ फ़र्मा थे, इजाज़त मिली नहीं। इतने में हज़रत उमर (रज़ि.) भी आ गए, इजाज़त चाही लेकिन उन्हें भी इजाज़त नहीं मिली। थोड़ी देर में दोनों को याद फ़र्माया गया। गए, देखा कि आप (ﷺ) की अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.), आप (ﷺ) के पास बैठी हैं और आप ख़ामोश हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, देखो! मैं अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ) को हँसा देता हूँ। फिर कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! काश कि आप देखते मेरी बीवी ने आज मुझसे रुपया पैसा माँगा मेरे पास था नहीं, जब ज़्यादा ज़िद्द करने लगीं तो मैंने उठकर गर्दन नापी। यह सुनते ही हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हँस दिये और फ़र्माने लगे, यहाँ भी यही क़िस्सा है। देखो! यह सब बैठी हुई मुझसे माल तलब कर रही हैं। अबूबक्र (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरफ़ लपके और उमर (रज़ि.) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) की तरफ़, और फ़र्माने लगे, अफ़सोस! तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) से वह माँगती हो जो आपके पास नहीं। वह तो कहिए ख़ैर गुज़री जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें रोक लिया वरना अजब नहीं दोनों बुज़ुर्ग अपनी अपनी बेटियों को मारते। अब तो सब बीवियाँ कहने लगीं कि अच्छा क़सूर हुआ, अब से हम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को हर्गिज़ इस तरह तंग न करेंगी।'' अब यह आयतें उतरीं और दुनिया और आख़िरत की पसंदीदगी में इख़्तियार दिया गया। सबसे पहले आप (ﷺ) हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) के पास गए, उन्होंने आख़िरत को पसंद किया, जैसे कि तफ़्सीलवार बयान गुज़र चुका। साथ ही यह दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अपनी किसी बीवी से यह न फ़र्माइएगा कि मैंने आप को इख़्तियार किया। आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे छुपाने वाला बनाकर नहीं भेजा बल्कि मैं सिखाने वाला, आसानी करने वाला बनाकर भेजा गया हूँ। मुझसे तो जो पूछेगी मैं साफ़ साफ़ बयान कर दूँगा। (अहमद : 3/328; सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब बयानु अन

तुख़य्यिरुहू इम्रातिही ला यकूनु तलाक़न इल्ला बिन्नियत : 1478) हज़रत अली (रज़ि.) का फ़र्मान है कि तलाक़ का इख़्तियार नहीं दिया गया था बल्कि दुनिया या आख़िरत की तर्जीह का इख़्तियार दिया था। (अहमद : 1/78; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ज़वाइद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल इस रिवायत में मुहम्मद बिन उबेदुल्लाह मदनी ज़ईफ़ है।(अल्मीज़ान : 3/634; रक़म : 7904) और अली बिन हुसैन का हज़रत अली (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।) लेकिन इसकी सनद में भी इंक़िताअ है और यह आयत के ज़ाहिरी लफ़्ज़ों के भी ख़िलाफ़ है क्यों कि पहली आयत के आख़िर में साफ़ मौजूद है कि आओ! मैं तुम्हारे हुक़ूक़ अदा कर दूँ और तुम्हें रिहाई दे दूँ। इसमें उलमा-ए-किराम का भले इख़्तिलाफ़ है कि अगर आप (ﷺ) तलाक़ दे दें तो फिर किसी को उनसे निकाह जाइज़ है या नहीं? लेकिन सहीह क़ौल यह है कि जाइज़ है ताकि उस तलाक़ से वह नतीजा मिले यानी दुनिया तलबी और दुनिया की ज़ीनत व रौनक़ हासिल हो सके, वल्लाहु आलम! जब यह आयत उतरी और जब उसका हुक्म हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अज़्वाजे मुतह्हरात उम्महातुल मोमिनीन (रज़ि.) को सुनाया, उस वक़्त आप (ﷺ) की नौ बीवियाँ थीं। पाँच तो क़ुरैशिया, आइशा, हफ़्सा, उम्मे हबीबा, सौदा और उम्मे सलमा (रज़ि.) और सफ़िया बिन्ते हुय्यी जो क़बीला नज़ीर की थीं और मैमूना बिन्ते हारिस जो हिलालिया थीं और ज़ेनब बिन्ते जहश जो असदिया थीं और जुवैरिया बिन्ते हारिस (रज़ि.) जो मुस्तल्क़िया थीं। (तब्री : 20/252)

***

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝٣٠

तर्जुमा : "ऐ नबी की बीवियों! तुममें से जो भी बद अख़लाक़ी करेगी, उसे दोहरा अज़ाब किया जाएगा। अल्लाह तआला के नज़दीक यह बहुत ही आसान सी बात है।" (30)

उम्महातुल मोमिनीन आम औरतों की तरह नहीं हैं (आ. 30) : हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बीवियों ने यानी मोमिनों की माओं ने जब अल्लाह तआला को, उसके रसूल (ﷺ) को और आख़िरत के भले घर को पसंद कर लिया और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के घर में वह हमेशा के लिए मुक़र्रर हो चुकीं तो अब जनाब बारी अज़्ज़ इस्मुहू इस आयत में उन्हें वअज़ कर रहा है और बतला रहा है कि तुम्हारा मामला आम औरतों जैसा नहीं है। अगर बिल्फ़र्ज़ तुमने नबी अकरम (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी से सरताबी की और अगर बिल्फ़र्ज़ तुमसे कोई बदख़ुल्क़ी सरज़द हुई तो तुम्हें दुनिया और आख़िरत में एताब होगा। चूँकि तुम्हारे बड़े रुत्बे हैं तुम्हें गुनाहों से बिलकुल दूर रहना चाहिए, वरना रुत्बे के मुताबिक़ मुश्किल भी बढ़ जाएगी। अल्लाह तआला पर सब बातें आसान और सहल हैं और यह याद रखना चाहिए कि यह फ़र्मान बतौरे शर्त के है और शर्त का वाक़ेअ होना ज़रूरी नहीं होता। जैसे फ़र्मान है (لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ) (39/ज़ुमर : 65) ऐ नबी! अगर तुम शिर्क

करोगे तो तुम्हारे आमाल अकारत हो जाएँगे.... नबियों का ज़िक्र करके फ़र्माया (وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ) (6/अन्आम : 88) अगर यह शिर्क करें तो इनकी नेकियाँ बेकार हो जाएँ। और आयत में है (قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ) (43/जुख़रुफ़ : 81) अगर रहमान के औलाद हो तो मैं तो सबसे पहले आबिद हूँ। और आयत में इर्शाद हो रहा है (لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ) (39/जुमर : 4) यानी अगर अल्लाह तआला को औलाद मंज़ूर होती तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता पसंद कर लेता वह पाक है, वह यक्ता और एक है, वह ग़ालिब और सब पर हुक्मरान है। पस इन पाँचों आयतों में शर्त के साथ बयान है लेकिन ऐसा हुआ नहीं, न नबियों से शिर्क होना मुम्किन, न रसूलों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) से यह मुम्किन, न अल्लाह तआला की औलाद, इसी तरह उम्महातुल मोमिनीन (रज़ि.) की निस्बत भी जो फ़र्माया कि अगर तुममें से कोई खुली लग्व हरकत करे तो उसे दुगुनी सज़ा होगी, इससे यह न समझा जाए कि वाक़ेई उनमें से किसी ने कोई ऐसी नाफ़र्मानी और बदख़ुल्क़ी की हो, नऊज़ुबिल्लाह!

अल्हम्दु लिल्लाह! 21वें पारे की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا
رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ
بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا
تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾
وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

तर्जुमा : "तुममें से जो कोई अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़र्मांबरदारी करेगी और नेक काम करेगी, हम उसे दोहरा अजर देंगे। और उसके लिए हमने बेहतरीन रोज़ी तैयार कर रखी है। (31) ऐ नबी की बीवियों! अगर तुम परहेज़गारी करो तो तुम मिस्ल मामूली औरतों के नहीं हो,

तुम नर्म लहजे से बात न किया करो कि जिसके दिल में बीमारी है, वह कोई ख़्याल करने लगे, हाँ! क़ायदे के मुताबिक़ बात किया करो। (32) और अपने घरों में क़रार से रहो और क़दीमी जाहिलियत के ज़माने की तरह अपने बनाव का इज़्हार न किया करो। नमाज़ अदा करती रहो, ज़कात देती रहो और अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत गुज़ारी करो। अल्लाह यही चाहता है कि ऐ नबी की घरवालियों ! तुमसे वह हर क़िस्म की लग़्वियात को दूर कर दे और तुम्हें ख़ूब साफ़ कर दे। (33) तुम्हारे घरों में अल्लाह तआला की जो आयतें और रसूल की जो अहादीस पढ़ी जाती हैं याद रखो यक़ीनन अल्लाह तआला लुत्फ़ो करम करने वाला ख़बरदार है।" (34)

फ़र्मांबरदारों के लिए दोहरा अज्र है (आ. 31 से 34) : इस आयत में अल्लाह तआला अपने अदल और फ़ज़्ल का बयान कर रहा है और हुज़ूर (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) से ख़िताब करके फ़र्मा रहा है कि तुम्हारी इताअत गुज़ारी और नेककारी पर तुम्हें दुगुना अज्र है और तुम्हारे लिए जन्नत में इज़्ज़त वाली रोज़ी है। क्योंकि यह अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) के साथ आपकी मंज़िल में होंगी और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की मंज़िल आला इल्लिय्यीन में है जो तमाम लोगों से बालातर है। उसी का नाम वसीला है। यह जन्नत की सबसे आला और सबसे ऊँची मंज़िल है, जिसकी छत अर्शे इलाही है।

नबी (ﷺ) की बीवियों के लिए आदाब : अल्लाह तआला अपने नबी अकरम (ﷺ) की बीवियों को आदाब सिखाता है और चूँकि तमाम औरतें उन ही के मातहत हैं इसलिए यह अहकाम सब मुसलमान औरतों के लिए हैं। पस फ़र्माया कि तुममें से जो परहेज़गारी करें वह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत और मर्तबे वाली हैं, मर्दों से जब तुम्हें कोई बात करनी पड़े तो आवाज़ बनाकर बात न करो जिनके दिलों में बीमारी है उन्हें तमअ पैदा हो बल्कि बात अच्छी और मुताबिक़े दस्तूर करो। औरतों को ग़ैर मर्दों से नज़ाकत के साथ ख़ुश आवाज़ी से बातें करनी मना हैं। घुल मिलकर वह सिर्फ़ अपने शौहरों से ही बातचीत कर सकती हैं। फिर फ़र्माया बग़ैर किसी ज़रूरी काम के घर से बाहर न निकलो। मस्जिद में नमाज़ के लिए आना भी शरई ज़रूरत है। जैसे कि हदीस में है, अल्लाह की लौण्डियों को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको। लेकिन उन्हें चाहिए कि सीधी सादी जिस तरह घरों में रहती हैं उसी तरह आएँ। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़ी ख़ुरूजिन्निसाइ इलल मसाजिद : 565; और इसकी सनद हसन है।)

एक रिवायत में है कि इनके लिए इनके घर बेहतर हैं। (अबूदाऊद, बाब मा जाअ फ़ी ख़ुरूजिन्निसाइ इलल मसाजिद : 567; और इसकी सनद सहीह है।) बज़्ज़ार में है कि औरतों ने हाज़िर होकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि जिहाद वग़ैरह की कुल फ़ज़ीलतें मर्द ही ले गए, अब आप हमें कोई ऐसा अमल बताएँ जिससे हम मुजाहिदीन की फ़ज़ीलत को पा सकें। आपने फ़र्माया, तुममें से जो अपने घर में पर्दे और इस्मत के साथ बैठी रहे वह जिहाद की फ़ज़ीलत पा लेगी। (बज़्ज़ार : 1475; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने हिब्बान : 1/199; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/307; मुस्नदे अबी यअला : 3416; इसकी सनद में रौह बिन मुसय्यिब, जुम्हूर

मुहद्दिसीन के नज़दीक ज़ईफ़ व मजरूह रावी है।)तिर्मिज़ी वग़ैरह में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "औरत सरतापा (सम्पुर्ण) पर्दे की चीज़ है। यह जब घर से बाहर क़दम निकालती है तो शैतान झाँकने लगता है। यह सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के क़रीब उस वक़्त होती है जबकि यह अपने घर के अंदरूनी हुज्रे (कमरे) में हो।" (तिर्मिज़ी, किताबुर्रज़ाइ, बाब इस्तिशराफ़ुश्शैतानुल मरअत इज़ा ख़रजत : 1173; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, क़तादा मुदल्लस रावी है और उनकी तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं। (यह सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के क़रीब उस वक़्त होती है जबकि यह...) के अल्फ़ाज़ उसमें नहीं हैं।)

अबूदाऊद वग़ैरह में है औरत की अपने घर की अंदरूनी कोठरी की नमाज़, घर की नमाज़ से अफ़ज़ल है और घर की नमाज़ सेहन की नमाज़ से बेहतर है। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अत्तशदीदु फ़ी ज़ालिक : 570; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; क़तादा मुदल्लस है और सिमाअ की सराहत नहीं।) जाहिलियत में औरतें बेपर्दा फिरा करती थीं। अब इस्लाम बेपर्दगी को हराम क़रार देता है। नाज़ से, इठलाकर चलना मम्नूअ है। दुपट्टा गले में डाल लिया लेकिन उसे लपेटना नहीं, जिससे गर्दन और कानों के ज़ेवरात दूसरों की नज़र में आएँ। यह जाहिलियत का बनाव था जिससे इस आयत में रोका गया है।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "हज़रत नूह (अलैहि.) और हज़रत इदरीस (रज़ि.) के बीच एक हज़ार साल का ज़माना था। उस बीच में हज़रत आदम (अलैहि.) की दो नस्लें आबाद थीं एक तो पहाड़ पर दूसरी नर्म ज़मीन पर। पहाड़ियों के मर्द अच्छी शक्ल के थे औरतें स्याह फ़ाम (काली कलूटी) थीं और ज़मीन वालों की औरतें ख़ूबसूरत थीं और मर्दों के रंग साँवले थे। इब्लीस इंसानी सूरत इख़्तियार करके उन्हें बहकाने के लिए नर्म ज़मीन वालों के पास आया और एक शख़्स का ग़ुलाम बनकर रहने लगा, फिर उसने बाँसुरी की तरह की एक चीज़ बनाई और उसे बजाने लगा। उसकी आवाज़ पर लोग दीवाने हो गए और भीड़ लगने लगी। और एक दिन मेले का मुक़र्रर हो गया जिसमें हज़ारों मर्द औरतें जमा होने लगी। इत्तिफ़ाक़न एक दिन एक पहाड़ी आदमी भी आ गया और उनकी औरतों को देखकर वापिस जाकर अपने लोगों में उनके हुस्न का चर्चा करने लगा, अब वह लोग बहुत ज़्यादा तादाद में आने लगे और धीरे धीरे उन औरतों और मर्दों में इख़्तिलात बढ़ गया और बदकारी और ज़िनाकारी का आम रवाज हो गया।"

यही जाहिलियत का बनाव है जिससे यह आयत रोक रही है। इन कामों से रोकने के बाद अब कुछ एह काम बयान हो रहे हैं कि अल्लाह तआला की इबादत में सबसे बड़ी इबादत नमाज़ है। उसकी पाबंदी करो और बहुत अच्छी तरह से अदा करती रहो। इसी तरह मख़्लूक़ के साथ भी नेक सलूक करो यानी ज़कात निकालती रहो। इन ख़ास अहकाम की बजाआवरी का हुक्म देकर फिर आम तौर पर अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी करने का हुक्म दिया। फिर फ़र्माया, इस अहले बैत से हर क़िस्म के मेल कुचेल के दूर करने का इरादा हो चुका है वह तुम्हें बिलकुल पाक साफ़ कर देगा। यह आयत इस बात पर नस़ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीवियाँ इन आयतों में अहले बैत में दाख़िल हैं इसलिए कि यह आयत उन ही के बारे में उतरी है। आयत का शाने नुज़ूल तो आयत के हुक्म में दाख़िल होता ही है। भले कुछ कहते हैं कि सिर्फ़ वही दाख़िल होता है और कुछ कहते हैं वह भी और उसके सिवा भी, और यह दूसरा क़ौल ही ज़्यादा सही है।

हज़रत इक्रिमा (रह.) तो बाज़ारों में मुनादी करते फिरते थे कि "यह आयत नबी अकरम (ﷺ) की बीवियों ही के बारे में ख़ास तौर पर नाज़िल हुई है।" (इब्ने जरीर) इब्ने अबी हातिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से भी यही मरवी है और हज़रत इक्रिमा (रह.) तो यहाँ तक फ़र्माते हैं कि जो चाहे मुझसे मुबाहिला कर ले यह आयत हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) ही की शान में नाज़िल हुई है। (तब्री : 20/267) इस क़ौल से अगर यह मतलब है कि शाने नुज़ूल यही है और नहीं, तो यह ठीक है और अगर इससे मुराद यह है कि अहले बैत में और कोई उनके सिवा दाख़िल ही नहीं, तो इसमें नज़र है। इसलिए कि अहादीस से अहले बैत में अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि .) के सिवा औरों का दाख़िल होना भी पाया जाता है।

मुस्नद अहमद और तिर्मिज़ी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ के लिए जब निकलते तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के दरवाज़े पर पहुँचकर फ़र्माते, "ऐ अहले बैत! नमाज़ का वक़्त हो गया है। फिर इसी आयते तत्हीर की तिलावत करते।" (अहमद : 3/259; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अहज़ाब : 3206; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुस्नदे अबी यअ़ला : 3978; मुस्नदे तयालिसी : 2059; मुअ़जमुल कबीर : 2671; मुश्किलुल आसार : 774; इसकी सनद में अ़ली बिन ज़ेद ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/306; रक़म : 264) इसमें एक रावी अबूदाऊद दाइमी नफ़ीअ़ बिन हारिस कज़्ज़ाब है। यह रिवायत ठीक नहीं।

अहले बैत की फ़ज़ीलत : मुस्नद में है शद्दाद बिन अ़म्मार कहते हैं "मैं एक बार हज़रत वासिला बिन अस्क़अ़ (रज़ि.) के पास गया। उस वक़्त वहाँ कुछ और लोग भी बैठे हुए थे और हज़रत अ़ली (रज़ि.) का ज़िक्र हो रहा था, वह आपको बुरा भला कह रहे थे। मैंने भी उनका साथ दिया। जब वह लोग चले गए तो मुझसे वासिला (रज़ि .) ने फ़र्माया, तूने भी हज़रत अ़ली (रज़ि.) की शान में गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कहे? मैंने कहा, हाँ! मैंने भी सबकी ज़बान में ज़बान मिलाई। तो फ़र्माया, सुन! मैंने जो देखा है तुझे सुनाता हूँ। एक बार मैं हज़रत अ़ली (रज़ि.) के घर गया तो मालूम हुआ कि आप हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की मज्लिस में गए हुए हैं। मैं उनके इंतिज़ार में बैठ गया। थोड़ी देर में देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आ रहे हैं और आपके साथ हज़रत अ़ली और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) भी हैं। दोनों बच्चे आपकी उँगली थामे हुए थे, आपने हज़रत अ़ली (रज़ि.) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को तो अपने सामने बिठा लिया और दोनों नवासों (दोइतों) को अपने घुटनों पर बिठा लिया और एक कपड़े से ढक लिया फिर इसी आयत की तिलावत करके फ़र्माया, ऐ अल्लाह! यह हैं मेरे अहले बैत और मेरे अहले बैत ज़्यादा हक़दार हैं।" (अहमद : 4/107; मुस्नदे अबी यअ़ला : 7486; तब्रानी : 2670; बैहक़ी : 2/152; हाकिम : 3/147; इमाम हाकिम ने इसको सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी मुवाफ़िक़त की है। इसकी सनद सहीह है।) दूसरी रिवायत में इतनी ज़्यादती भी है कि हज़रत वासिला (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैंने यह देखकर कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं भी आपके अहले बैत में से हूँ। आपने फ़र्माया, हाँ! तू भी मेरे अहले बैत में से है। हज़रत वासिला (रज़ि.) फ़र्माते हैं, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का यह फ़र्मान मेरे लिए बहुत ही बड़ी उम्मीद का है। (तफ़्सीर इब्ने जरीर : 6/22; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, अ़ब्दुल करीम बिन अबी उ़मैर नामालूम है और बाक़ी सनद सहीह है।) और रिवायत में है हज़रत वासिला

(रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास था जो हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) आए। आपने अपनी चादर उन पर डालकर फ़र्माया, ''ऐ अल्लाह! यह मेरे अहलो अयाल हैं या अल्लाह इनसे नापाकी को दूर कर और इन्हें पाक कर दे। मैंने कहा, मैं भी। आपने फ़र्माया, हाँ! तू भी। मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा मेरा मज़बूत अमल यही है।'' (मुअजमुल कबीर : 2669; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 9/168)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) फ़र्माती हैं ''हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मेरे घर में थे कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) हरीरे की एक पतीली भरी हुई लाईं। आपने फ़र्माया, अपने मियाँ को और अपने दोनों बच्चों को भी बुला लो, चुनाँचे वह भी आ गए और खाना शुरू हुआ। आप अपने बिस्तरे पर थे, ख़ैबर की एक चादर आपके नीचे बिछी हुई थी, मैं हुज्रे में नमाज़ अदा कर रही थी कि यह आयत उतरी। पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उन्हें चादर ओढ़ा दी और चादर में से एक हाथ निकालकर आसमान की तरफ़ उठाकर यह दुआ की कि, ''इलाही! यह मेरे अहले बैत और हिमायती हैं, तू इनसे नापाकी दूर कर और इन्हें ज़ाहिर कर। मैंने अपना सिर घर में से निकालकर कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं भी आप सबके साथ हूँ। आपने फ़र्माया, यक़ीनन तू बेहतरी की तरफ़ है वाक़ेई में तू ख़ैर की तरफ़ है।'' (अहमद : 6/292; और वह हदीस सहीह है।) इस रिवायत के रावियों में अता के उस्ताद का नाम नहीं जो मालूम हो सके कि वह कैसे रावी हैं, बाक़ी रावी सिक़ा हैं। दूसरी सनद से उन ही हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से मरवी है कि एक मर्तबा उनके सामने हज़रत अली (रज़ि.) का ज़िक्र आया ''तो आपने फ़र्माया, आयते तत्हीर तो मेरे घर में उतरी है। आप मेरे यहाँ आए और फ़र्माया, किसी और को आने की इजाज़त न देना, थोड़ी देर में हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) आईं। अब भला मैं बेटी को वालिद से कैसे रोकती फिर हज़रत हसन (रज़ि.) आए, नवासे को नाना से कौन रोके? फिर हज़रत हुसैन (रज़ि.) आए, मैंने उन्हें भी न रोका। फिर हज़रत अली (रज़ि.) आए। मैं उन्हें भी रोक न सकी। जब यह सब जमा हो गए तो जो चादर हुज़ूर (ﷺ) ओढ़े हुए थे उसी में उन सबको ले लिया और कहा, इलाही! यह मेरे अहले बैत हैं, इनसे पलीदी दूर कर दे और इन्हें ख़ूब पाक कर दे। पस यह आयत उस वक़्त उतरी जब यह चादर पर जमा हो चुके थे। मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं भी लेकिन अल्लाह तआला जानता है आप उस पर ख़ुश न हुए और फ़र्माया, तू ख़ैर की तरफ़ है।''

मुस्नद की एक और रिवायत में है कि ''मेरे घर में हुज़ूर (ﷺ) थे कि ख़ादिम ने आकर ख़बर दी, कहा फ़ातिमा (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) आ गए हैं तो आपने मुझसे फ़र्माया एक तरफ़ हो जाओ, मेरे अहले बैत आ गए। मैं घर के एक कोने में बैठ गई। जो दोनों नन्हें बच्चे और यह दोनों साहब तशरीफ़ लाए। आपने दोनों बच्चों को गोद में ले लिया, प्यार किया, एक हाथ हज़रत अली (रज़ि.) की गर्दन में दूसरा हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की गर्दन में डालकर उन दोनों को भी प्यार किया और एक काली चादर सब पर डालकर फ़र्माया, या अल्लाह! तेरी तरफ़ न कि आग की तरफ़, मैं और मेरी अहले बैत। मैंने कहा मैं भी? फ़र्माया, हाँ! तू भी।'' (अहमद : 6/296; और इसकी सनद ज़ईफ़ है) और रिवायत में है कि ''मैं उस वक़्त घर के दरवाज़े पर बैठी हुई थी। और मैंने कहा, या रसूलल्लाह(ﷺ)! क्या मैं अहले बैत में से नहीं हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया

तू भलाई की तरफ़ है और नबी की बीवियों में से है।'' और रिवायत में है ''मैंने कहा मुझे भी इनके साथ शामिल कर लीजिए, तो फ़र्माया तू मेरी अहल है। हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) स्याह चादर ओढ़े हुए एक दिन सुबह ही सुबह निकले और उन चारों को अपनी चादर तले लेकर यह आयत पढ़ी।'' (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब फ़ज़ाइले अहले बैतुन्नबी (ﷺ)) हज़रत आइशा (रज़ि.) से एक बार किसी ने हज़रत अली (रज़ि.) के बारे में सवाल किया। तो आपने फ़र्माया, ''वह सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) के महबूब थे उनके घर में आपकी साहबज़ादी थीं जो सबसे ज़्यादा आपको महबूब थीं। फिर चादर का वाक़िया बयान करके फ़र्माया, मैंने क़रीब जाकर कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं भी आपके अहले बैत में से हूँ। फ़र्माया दूर रहो, तुम यक़ीनन ख़ैर पर हो।'' (इसकी सनद में एक रावी मज्हूल है, लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.)से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मेरे और इन चारों के बारे में यह आयत उतरी है।'' और सनद से यह अबू सईद (रज़ि.) का अपना क़ौल होना मरवी है, वल्लाहु आलम! हज़रत सअद (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर वही नाज़िल हुई तो आपने उन चारों को अपने कपड़े तले लेकर फ़र्माया, या रब! यह मेरे अहल हैं और मेरे अहले बैत हैं।'' (इब्ने जरीर)

सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है हज़रत यज़ीद बिन हिब्बान (रह.) फ़र्माते हैं ''मैं और हुसैन बिन सबुरह और उमर बिन मुस्लिमा मिलकर हज़रत ज़ेद बिन अरक़म (रज़ि.) के पास गए। हुसैन कहने लगे, ऐ ज़ेद! आपको तो बहुत सी भलाइयाँ मिल गईं। आपने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ज़ियारत की, हदीस तो सुनाओ! आपने फ़र्माया, भतीजे! अब मेरी उम्र बड़ी हो गई। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का ज़माना दूर हो गया। कुछ बातें ज़हन से जाती रहीं। अब तो ऐसा करो जो बातें मैं ख़ुद बयान करूँ उन्हें क़बूल कर लो वरना मुझे तक्लीफ़ न दो। सुनो! मक्के और मदीने के बीच की एक पानी की जगह पर जिसे ख़ुम कहा जाता है, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने खड़े होकर हमें एक ख़ुत्बा सुनाया। अल्लाह तआला की हम्दो सना और वअ़ज़ व पंद के बाद फ़र्माया, मैं एक इंसान हूँ, बहुत मुम्किन है कि मेरे पास मेरे रब का क़ासिद आए और मैं उसकी मान लूँ। मैं तुममें दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। पहली तो किताबुल्लाह जिसमें हिदायत व नूर है। तुम अल्लाह तआला की किताब को लो और उसे मज़बूती से थाम लो। फिर तो आपने किताबुल्लाह की बड़ी रग़बत दिलाई और उसकी तरफ़ हमें ख़ूब मुतवज्जह किया। फिर फ़र्माया और मेरे अहले बैत के बारे में अल्लाह तआला को याद दिलाता हूँ। तीन मर्तबा यही कलिमा फ़र्माया। तो हुसैन ने हज़रत ज़ेद से पूछा, आप (ﷺ) के अहले बैत कौन हैं?

अहले बैत से कौन लोग मुराद हैं? क्या आपकी बीवियाँ आपके अहले बैत नहीं हैं? फ़र्माया, आपकी बीवियाँ तो आपकी अहले बैत हैं ही, लेकिन आपकी अहले बैत वह हैं, जिन पर आपके बाद सदक़ा खाना हराम है। पूछा, वह कौन हैं? फ़र्माया आले अ़ली, आले अ़क़ील, आले जअ़फ़र, आले अ़ब्बास (रज़ि.) पूछा क्या इन सब पर आप (ﷺ) के बाद सदक़ा हराम है। कहा, हाँ!'' दूसरी सनद से यह भी मरवी है कि ''मैंने पूछा, क्या आपकी बीवियाँ भी अहले बैत में दाख़िल हैं? कहा, नहीं! क़सम है अल्लाह तआला की! बीवी का तो यह है कि वह अपने शौहर के पास गो लम्बे अ़र्से से हो, लेकिन फिर अगर वह तलाक़ दे दे तो अपने मयके में और अपनी क़ौम में चली जाती है। आपके अहले बैत आपके अ़सल और अ़स्बा हैं जिन पर आपके बाद

सदक़ा हराम है।'' (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब मिन फ़ज़ाइले अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) : 2408) इस रिवायत में यही है लेकिन पहली रिवायत ही औला है और उसी को लेना ठीक है और इस दूसरी में जो है इससे मुराद सिर्फ़ हदीस में जिन अहले बैत का जिक्र है वह है। क्योंकि वहाँ वह आल मुराद है जिन पर सदक़ा खाना हराम है। या यह कि मुराद सिर्फ़ बीवियाँ ही नहीं बल्कि वह मअ आपके और आल के हैं। यही बात ज़्यादा राजेह है। और इससे इस रिवायत और इससे पहले की रिवायत में जमा भी हो जाती है और क़ुरआन और पहली हदीसों में भी जमा हो जाती है। लेकिन यह उस सूरत में कि इन अहादीस की सेहत को तस्लीम कर लिया जाए क्योंकि इनकी कुछ इस्नादों में नज़र है, वल्लाहु आलम! जिस शख़्स को नूरे मअरिफ़त हासिल हो और क़ुरआन में तदब्बुर करने की आदत हो वह यक़ीनन एक नज़र में जान लेगा कि इस आयत में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बीवियाँ बिला शक व शुब्हा दाख़िल हैं इसलिए कि ऊपर से कलाम ही उनके साथ और उन ही के बारे में चल रहा है। यही वजह है कि इसके बाद ही फ़र्माया कि अल्लाह तआला की आयतें और रसूल (ﷺ) की बातें जिनका दर्स तुम्हारे घरों में हो रहा है उन्हें याद रखो और उन पर अमल करो।

पस आयाते अल्लाह और हिक्मत से मुराद बक़ौल हज़रत क़तादा (रह.) वग़ैरह किताब व सुन्नत है। (तब्री : 20/268) पस यह ख़ास ख़ुसूसियत है जो उनके सिवा किसी और को नहीं मिली कि उनके घरों में अल्लाह तआला की वही और रहमते इलाही नाज़िल हुआ करती है और उनमें भी यह शर्फ़ हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) को बतौर औला और सबसे ज़्यादा हासिल है क्योंकि हदीस शरीफ़ में साफ़ वारिद है कि किसी औरत के बिस्तर पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तरफ़ वही नहीं आई सिवाय आप (रज़ि.) के बिस्तरे के। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले अस्हाबिन्नबी (ﷺ), बाब फ़ज़्ले आइशा (रज़ि.) : 3775) यह इसलिए भी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने आपके सिवा किसी और कुँवारी से निकाह नहीं किया था उनका बिस्तर सिवाय रसूलुल्लाह (ﷺ) के और किसी के लिए न था। पस इस ज़्यादती दर्जे और बुलंद मर्तबे की वह सहीह तौर पर मुस्तहिक़ थीं।

हाँ! जबकि आपकी बीवियाँ आपकी अहले बैत हुईं तो आपके क़रीबी रिश्तेदार बतौरे औला आपकी अहले बैत हैं जैसे हदीस में गुज़र चुका है कि मेरे अहले बैत ज़्यादा हक़दार हैं। इसकी मिसाल में यह आयत ठीक तौर पर पेश हो सकती है (لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ) (9/तौबा : 108) कि यह उतरी तो है मस्जिदे क़ुबा के बारे में, जैसे कि साफ़ साफ़ अहादीस में मौजूद है लेकिन सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सवाल हुआ कि इस मस्जिद से कौनसी मस्जिद मुराद है तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, वह मेरी ही मस्जिद है यानी मस्जिदे नबवी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब बयानुल मस्जिदल्लज़ी उस्सिसा अलत्तक़्वा...: 1398) पस जो सिफ़त मस्जिदे क़ुबा में थी वही सिफ़त चूँकि मस्जिदे नबवी में भी है इसलिए इस मस्जिद को भी उसी नाम से इस आयत के तहत दाख़िल कर दिया।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत अली (रज़ि.) की शहादत के बाद हज़रत हसन (रज़ि.) को ख़लीफ़ा बनाया गया। आप एक बार नमाज़ पढ़ा रहे थे कि बनू असद का एक शख़्स कूदकर आया और सज्दे की हालत में आपके जिस्म में ख़ंजर घोंप दिया। जो आपके नर्म गोश्त में लगा जिससे आप कई महीने बीमार रहे

जब अच्छे हो गए तो मस्जिद में आये। मिम्बर पर बैठकर ख़ुत्बा पढ़ा जिसमें फ़र्माया, ''ऐ इराक़ियों! हमारे बारे में ख़ौफ़े इलाही करो। हम तुम्हारे हाकिम हैं, तुम्हारे मेहमान हैं, हम अहले बैत हैं, जिनके बारे में आयत (इन्नमा युरीदुल्लाह...) उतरी है। इस पर आपने ख़ूब ज़ोर दिया और इस मज़्मून को बार बार अदा किया जिससे मस्जिद वाले रोने लगे।'' एक बार अली बिन हुसैन (रह.) ने एक शामी से फ़र्माया था, ''क्या तूने अहज़ाब की आयते तत्हीर नहीं पढ़ी? उसने कहा, हाँ! क्या उससे मुराद तुम हो? फ़र्माया, हाँ! अल्लाह तआला बड़े लुत्फ़ो करम वाला, बड़े इल्म और पूरी ख़बर वाला है, उसने जान लिया कि तुम उसके लुत्फ़ के अहल हो इसलिए उसने तुम्हें यह नेअमतें अता कीं और यह फ़ज़ीलतें तुम्हें दीं। पस आयत के मआनी मुताबिक़ तफ़्सीर इब्ने जरीर के हुए कि ऐ नबी की बीवियों! अल्लाह तआला की नेअमत तुम पर है उसे तुम याद करो कि उसने तुम्हें उन घरों में आबाद किया जहाँ आयाते अल्लाह और हिक्मत पढ़ी जाती है। तुम्हें अल्लाह तआला की इस नेअमत पर उसका शुक्र करना चाहिए और उसकी हम्द पढ़नी चाहिए कि तुम पर अल्लाह तआला का लुत्फ़ो करम है कि उसने तुम्हें उन घरों में आबाद किया। (तब्री : 20/268) हिक्मत से मुराद सुन्नत व हदीस है अल्लाह तआला अंजाम तक से ख़बरदार है इसलिए अपने पूरे और सहीह इल्म से जाँचकर तुम्हें अपने नबी अकरम (ﷺ) की बीवियाँ बनने के लिए चुन लिया पस दरअसल यह भी अल्लाह तआला का तुम पर एहसान है जो लतीफ़ व ख़बीर है हर चीज़ के जुज़ व कुल से।

***

إِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ
وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ
وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ
وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें, फ़र्मांबरदार मर्द और फ़र्मांबरदार औरतें, रास्तबाज़ मर्द और रास्तबाज़ औरतें, सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें, अपने नफ़्स की निगहबानी करने वाले मर्द और निगहबानी करने वालियाँ, बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और ज़िक्र करने वालियाँ, उन सबके लिए अल्लाह तआला ने वसीअ मग़्फ़िरत और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है।'' (35)

मोमिनों की अलामात और फ़ज़ाइल (आ. 35) : उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि ''आख़िर इसकी क्या वजह है कि मर्दों का ज़िक्र कुरआन में आता रहता है लेकिन हम औरतों का तो ज़िक्र ही नहीं किया जाता। एक दिन मैं अपने घर में बैठी अपने बाल बना रही थी कि मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की आवाज़ मिम्बर पर सुनी। मैंने बालों को तो यूँ ही लपेट लिया और हुज्रे में आकर आपकी बात सुनने लगी तो आप (ﷺ) उस वक़्त यही आयत तिलावत कर रहे थे।'' (अहमद : 6/305; और इसकी सनद सही है।) नसाई वग़ैरह में और बहुत सी रिवायतें आपसे मुख़्तसर मरवी हैं। एक रिवायत में है कि चंद औरतों ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से यह कहा था। और रिवायत में है कि औरतों ने अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.) से यह कहा था। इस्लाम और ईमान को अलग अलग बयान करना दलील है इस बात की कि ईमान इस्लाम का ग़ैर है और ईमान इस्लाम से मख़्सूस व मुम्ताज़ है (قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا) (49/हुजुरात : 14) वाली आयत और बुख़ारी मुस्लिम की हदीस कि ज़ानी ज़िना के वक़्त मोमिन नहीं होता। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मुहारिबीन, बाब इस्मुज़्ज़िना : 6809; सहीह मुस्लिम : 57; अबूदाऊद : 4689; तिर्मिज़ी : 2625; अहमद : 2/376; इब्ने हिब्बान : 186; बैहक़ी : 10/186) फिर इस अम्र पर इज्माअ कि ज़िना से कुफ़्र लाज़िम नहीं आता। यह इस पर दलील है और हम शरह बुख़ारी की इब्तिदा में इसे साबित कर चुके हैं (यह याद रहे कि इसमें फ़र्क़ उस वक़्त है जब इस्लाम हक़ीक़ी न हो। जैसे कि इमामुल मुहद्दिसीन हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने सहीह बुख़ारी ''किताबुल ईमान'' में बहुत से दलाइल के साथ साबित किया है, वल्लाहु आलम! मुतर्जिम)

कुनूत से मुराद सुकून के साथ इताअतगुज़ारी है जैसे (اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ) (39/ज़ुमर : 9) में है। और फ़र्मान है (وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ) (30/रूम : 26) यानी ''आसमान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदार है।'' और फ़र्माता है (يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ) (3/आले इमरान : 43) और फ़र्माता है (وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ) (2/बक़रह : 238) यानी ''अल्लाह तआला के सामने अदब के साथ, फ़र्मां बरदारी की सूरत में खड़े हुआ करो।'' पस इस्लाम के ऊपर का मर्तबा ईमान है और उनके इज्तिमाअ से इंसान में हुक्म बरदारी और इताअत गुज़ारी पैदा हो जाती है। बातों की सच्चाई अल्लाह तआला को बहुत ही महबूब है और यह आदत हर तरह महमूद है। सहाबा किबार में तो वह बुज़ुर्ग भी थे जिन्होने जाहिलियत के ज़माने में भी कोई झूठ न बोला था। सच्चाई ईमान की निशानी है और झूठ निफ़ाक़ की अलामत है। सच्चा नजात पाता है, सच ही बोला करो, सच्चाई नेकी की तरफ़ रहबरी करती है और नेकी जन्नत की तरफ़। झूठ से बचो, झूठ बदकारी की तरफ़ रहबरी करता है और फ़िस्क़ो फ़िजूर इंसान को जहन्नम की तरफ़ ले जाता है। इंसान सच बोलते बोलते और सच्चाई का क़सद करते करते अल्लाह तआला के यहाँ सिद्दीक़ लिख लिया जाता है और झूठ बोलते हुए और झूठ का क़सद करते हुए अल्लाह तआला के नज़दीक झूठा लिख लिया जाता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (या अय्युहल् लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाह वकूनू मअस्सादेक़ीन) : 6094; सहीह मुस्लिम : 2607; इब्ने हिब्बान : 273) और भी इस बारे में बहुत सी, इस इल्म पर कि तक़्दीर का लिखा टलता नहीं। सबसे ज़्यादा सख़्त सब्र सदमे के इब्तिदाई वक़्त पर है और इसी

का अज्र ज़्यादा है। फिर तो ज्यों ज्यों ज़माना गुज़रता है ख़्वाह मख़्वाह ही सब्र आ जाता है। ख़ुशूअ से मुराद तस्कीन, दिल जम्ई, तवाज़ोअ, फ़रौतनी और आजिज़ी है। यह इंसान में उस वक़्त आती है जबकि दिल में ख़ौफ़े इलाही हो और रब को हर वक़्त हाज़िर व नाज़िर जानता हो और इस तरह अल्लाह तआला की इबादत करने वाला हो, जैसे वह अल्लाह तआला को देख रहा है और यह नहीं तो कम अज़्कम इस दर्जा पर तो ज़रूर हो कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है। सदक़े से मुराद मोहताज ज़ईफ़ों को जिनकी कोई कमाई न हो, न जिनका कोई कमाने वाला हो। उन्हें अपना फ़ालतू माल देना इस निय्यत से कि अल्लाह तआला की इताअत हो और उसकी मख़्लूक़ का काम बने।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, "सात क़िस्म के लोगों को अल्लाह तआला अपने अर्श के साये में जगह देगा। जिस दिन उसके साये के सिवा कोई साया न होगा। उसमें एक वह भी है जो सदक़ा देता है लेकिन इस तरह छुपाकर कि दाहिने हाथ के ख़र्च की बाएँ हाथ को ख़बर नहीं लगती।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब मन जलस फ़िल मस्जिदि यंतज़िरुस्सलात : 660; सहीह मुस्लिम : 1031; इब्ने हिब्बान : 4486 अहमद : 2/439) और हदीस में है "सदक़ा ख़ताओं को इस तरह मिटा देता है जिस तरह पानी आग को बुझा देता है।" (तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी हुर्मतिस्सलाति : 2616; वहुव हसन; इब्ने माजा : 3973, 2110) और भी इस बारे में बहुत सी अहादीस हैं जो अपनी अपनी जगह मौजूद हैं। रोज़े की बाबत हदीस में है कि "यह बदन की ज़कात है।" (इब्ने माजा, किताबुस्सियाम, बाब फ़िस्सौमि ज़कातुल जसद : 1745; और सनद ज़ईफ़ है; मूसा बिन उबेद रावी ज़ईफ़ है। इब्ने अबी शैबा : 3/7) यानी इसे पाक साफ़ कर देता है और तबअन भी रद्दी इख़्लात को मिटा देता है।" हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़र्माते हैं "रमज़ान के रोज़े रखकर जिसने हर महीने में तीन रोज़े रख लिए वह (وَ الصّٰٓئِمِيْنَ وَ الصّٰٓئِمٰتِ) (33/अहज़ाब : 35) में दाख़िल हो गया।" (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/380) रोज़ा शहवत को भी झुका देने वाला है। हदीस में है "ऐ नौजवानों! तुममें से जिसे ताक़त हो वह तो अपना निकाह कर ले ताकि उससे निगाह नीची रहें और पाकदामनी हासिल हो जाए और जिसे निकाह की ताक़त न हो वह रोज़े रखे, यही उसके लिए गोया ख़सी होना है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (मनिस्तताअ मिन्कुमुल बाअत...) : 5065; सहीह मुस्लिम : 1400; अबूदाऊद : 2046; तिर्मिज़ी : 1081; इब्ने माजा : 1845; अहमद : 1/378; इब्ने हिब्बान : 4026) इसीलिए रोज़ों के ज़िक्र के बाद ही बदकारी से बचने का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि यह मुसलमान मर्द व औरत, हराम से और गुनाह के कामों से बचे रहते हैं। अपनी इस ख़ास क़ुव्वत को जाइज़ जगह सर्फ़ करते हैं। जैसे और आयत में है कि "यह लोग अपने बदन को रोके रहते हैं मगर अपनी बीवियों से और लौण्डियों से इन पर कोई मलामत नहीं।" हाँ! इसके सिवा जो और कुछ तलब करे वह हद से गुज़र जाने वाला है। ज़िक्रुल्लाह की निस्बत एक हदीस में है कि "जब मियाँ बीवी को रात के वक़्त जगाकर दो रकअत नमाज़ दोनों साथ पढ़ लें तो वह अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों में लिख लिए जाते हैं।" (अबूदाऊद, किताबुत्तत्व्वअ, बाब क़ियामुल्लैल : 1309; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सुफ़्यान और अअमश दोनों मुदल्लस रावी हैं और सिमाअ की सराहत नहीं। इब्ने माजा : 1335; सुननुल कुब्रा : 1310; इब्ने हिब्बान : 2529)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने पूछा कि "या रसूलल्लाह (ﷺ)! सबसे बड़े दर्जे वाला बंदा क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के नज़दीक कौन होगा? आपने फ़र्माया, सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाला। मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला की राह के मुजाहिद से भी? आपने फ़र्माया, अगरचे वह काफ़िरों पर तलवार चलाए यहाँ तक कि तलवार टूट जाए और वह ख़ून में रंग जाए, जब भी यह अल्लाह तआला का बकस्रत ज़िक्र करने वाला उससे अफ़ज़ल ही रहेगा।" (अहमद : 3/75; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।)

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मक्के के रास्ते में जा रहे थे। जम्दान पर पहुँचकर फ़र्माया यह जम्दान है मुफ़्रिद बनकर चले चलो, मुफ़्रिद सब्क़त कर गए। लोगों ने पूछा, मुफ़्रिद से क्या मुराद है? फ़र्माया अल्लाह तआला का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाले। फिर फ़र्माया कि, "ऐ अल्लाह! हज्ज व उमरे में अपना सर मुँडवाने वालों पर रहम फ़र्मा। लोगों ने कहा, बाल कतरवाने वालों के लिए भी दुआ कीजिए। आपने फ़र्माया, अल्लाह! सर मुँडवाने वालों को बख़्श। लोगों ने फिर कतरवाने वालों के लिए दरख़्वास्त की, तो आपने फ़र्माया, कतरवाने वाले को भी।" (अहमद : 2/411; वहुव सहीहुन बिशशवाहिद, इसकी अस्ल सहीह मुस्लिम : 2676 में मौजूद है।) आपका फ़र्मान है कि "अल्लाह तआला के अज़ाबों से नजात देने वाला कोई अमल ज़िक्रुल्लाह से बड़ा नहीं।" एक बार आपने फ़र्माया "मैं तुम्हें सबसे बेहतर सबसे पाक और सबसे बुलंद दर्जे का अमल बताऊँ? जो तुम्हारे हक़ में सोना चाँदी अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने से बेहतर हो, और उससे भी अफ़ज़ल हो कि कल तुम दुश्मनों से मुक़ाबला करो, तुम उनकी गर्दनें मारो, और वह तुम्हारी गर्दनें मारें। लोगों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! ज़रूर बतलाइए। फ़र्माया, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का ज़िक्र।" (अहमद : 5/239; और इसकी सनद ज़ईफ़ है इसकी सनद में ज़ियाद बिन अबी ज़ियाद है जिसका हज़रत मुआज़ (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।) मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि "एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि कौनसा मुजाहिद अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाला। उसने फिर रोज़ेदार के बारे में पूछा, यही जवाब मिला। फिर नमाज, ज़कात, हज्ज, सदक़ा सबकी बाबत पूछा और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने सबका यही जवाब दिया। तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) से कहा, फिर तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले बहुत ही बढ़ गए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ!" (अहमद : 3/438; और इसकी सनद ज़ईफ़ है)। कसरते ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत में और भी बहुत सी अहादीस आई हैं। इसी सूरत की आयत (يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ) (33/अहज़ाब : 41) की तफ़्सीर में हम इन अहादीस को बयान करेंगे, इंशाअल्लाह तआला। फिर फ़र्माया यह नेक सिफ़तें जिनमें हों हमने उनके लिए मग़्फ़िरत तैयार कर रखी है और अज्रे अज़ीम यानी जन्नत।

***

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ۝

तर्जुमा : "किसी मुसलमान मर्द व औरत को अल्लाह और उसके रसूल के फ़र्मान के बाद अपने किसी अम्र का कोई इख़्तियार बाक़ी नहीं रहता। याद रखो! अल्लाह तआला और उसके रसूल की जो भी नाफ़र्मानी करे वह सरीह (खुली) गुमराही में पड़ेगा।" (36)

पैग़म्बर (ﷺ) के हुक्म के आगे किसी को कुछ इख़्तियार नहीं (आ. 36) : रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) का पैग़ाम लेकर हज़रत ज़ेनब बिन्ते जहश (रज़ि.) के पास गए। उन्होंने कहा, मैं इनसे निकाह नहीं करूँगी। आपने फ़र्माया, ऐसा न कहो और इनसे निकाह कर लो। हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) ने जवाब दिया कि अच्छा! फिर कुछ मोहलत दीजिए, मैं कुछ सोच लूँ। अभी यह बातें हो रही थीं कि वह्यी नाज़िल हुई और यह आयत उतरी। उसे सुनकर हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप इस निकाह से रज़ामंद हैं? आपने फ़र्माया, हाँ! तो हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) ने जवाब दिया कि बस! फिर मुझे कोई इंकार नहीं। मैं अल्लाह के रसूल (ﷺ) की नाफ़र्मानी नहीं करूँगी, मैंने अपना नफ़्स उनके निकाह में दे दिया और रिवायत में है कि वजहे इंकार यह थी कि नसब के एतिबार से यह बनिस्बत हज़रत ज़ेद (रज़ि.) के ज़्यादा शरीफ़ थीं। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के आज़ादकर्दा ग़ुलाम थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद बिन असलम फ़र्माते हैं कि यह आयत उक़्बा बिन अबू मुईत की साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सुम (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है। सुलह हुदेबिया के बाद सबसे पहली मुहाजिर औरत यही थीं। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि हुज़ूर (ﷺ)! मैं अपना नफ़्स आप पर हिबा करती हूँ। आपने फ़र्माया, मुझे क़बूल है। फिर हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) से इनका निकाह करा दिया।" ग़ालिबन यह निकाह हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की अलैहिदगी के बाद हुआ होगा। इससे हज़रत उम्मे कुल्सुम नाराज़ हुई और उनके भाई भी बिगड़ बैठे कि हमारा अपना इरादा ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से निकाह का था, न कि आपके ग़ुलाम से निकाह करने का। इस पर यह आयत उतरी बल्कि इससे भी ज़्यादा मामला साफ़ कर दिया गया और फ़र्मा दिया गया कि (اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ) (33/अहज़ाब : 6) "नबी (ﷺ) मोमिनों की अपनी जानों से भी ज़्यादा औला हैं।" पस आयत (मा काना लि मोमिनिन) ख़ास है और इससे भी जामेअ आयत यह है। मुस्नद अहमद में है कि "एक अंसारी को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम अपनी लड़की का निकाह जुलैबीब से कर दो। उन्होंने जवाब दिया कि अच्छी बात है, मैं उसकी माँ से भी मश्वरा कर लूँ। जाकर उनसे मश्वरा किया तो उन्होंने कहा, यह नहीं हो सकता। हमने फ़लाँ फ़लाँ उनसे बड़े बड़े आदमियों के पैग़ाम तो वापिस कर दिये और अब जुलैबीब (रज़ि.) से निकाह कर दें। अंसारी (रज़ि.) अपनी बीवी का यह जवाब सुनकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में जाना चाहते ही थे कि लड़की जो पर्दे के पीछे से यह तमाम बातचीत सुन रही थी, बोल पड़ी कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात रद्द करते हो? जब आप (ﷺ) इससे ख़ुश हैं तो तुम्हें इंकार न करना चाहिए।

अब दोनों ने कहा कि बच्ची ठीक कहती है। बीच में रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं, इस निकाह से इंकार करना गोया हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पैग़ाम और आपकी ख़्वाहिश को रद्द करना है, यह ठीक नहीं। चुनाँचे अंसारी सीधा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि आप इस बात से ख़ुश हैं? आपने फ़र्माया, हाँ! मैं तो इससे रज़ामंद हूँ। कहा फिर आपको इख़्तियार है कि आप निकाह कर दीजिए। चुनाँचे निकाह हो गया। एक बार अहले इस्लाम मदीने वाले दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए निकले, लड़ाई हुई जिसमें हज़रत जुलैबीब (रज़ि.) शहीद हो गए। उन्होंने बहुत से काफ़िरों को क़त्ल किया था जिनकी लाशें उनके आसपास पड़ी हुई थीं। हज़रत अनस (रज़ि.) का बयान है कि मैंने ख़ुद देखा, उनका घर बड़ा आसूदा हाल था तमाम मदीना में उनसे ज़्यादा ख़र्चीला कोई न था।'' (अहमद : 3/136; और इसकी सनद सहीह है; इब्ने हिब्बान : 4059; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/368) और रिवायत में है हज़रत अबू बरज़ा असलमी (रज़ि.) का बयान है कि ''हज़रत जुलैबीब (रज़ि.) की तबीयत में मज़ाक़ था इसलिए मैंने अपने घर में कह दिया था कि यह तुम्हारे पास न आएँ। अंसारियों की आदत थी कि वह किसी औरत का निकाह नहीं करते थे यहाँ तक कि यह मालूम कर लें कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनकी बाबत कुछ नहीं फ़र्माते, फिर वह वाक़िया बयान किया जो ऊपर ज़िक्र हुआ।''

इसमें यह भी है कि हज़रत जुलैबीब (रज़ि.) ने सात काफ़िरों को उस ग़ज़्वे में क़त्ल किया था। फिर काफ़िरों ने भीड़ करके आपको शहीद कर दिया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनको तलाश करते हुए जब उनकी लाश के पास आये तो फ़र्माया, ''सात को मारकर फिर शहीद हुए हैं, यह मेरे हैं और मैं इनका हूँ।'' दो या तीन बार यही फ़र्माया। फिर क़ब्र खुदवाकर अपने हाथों पर उठाकर क़ब्र में उतारा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के दस्ते मुबारक ही उनका जनाज़ा था और कोई चारपाई वग़ैरह न थी। यह भी मज़्कूर नहीं कि उन्हें ग़ुस्ल दिया गया हो। उस नेकबख़्त अंसारिया औरत (रज़ि.) के लिए, जिन्होंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बात की इज़्ज़त रखकर अपने माँ बाप को समझाया था कि इंकार न करो। अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) ने यह दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! इस पर अपनी रहमतों की बारिश बरसा और इसे ज़िन्दगी के पूरे लुत्फ़ अता फ़र्मा, तमाम अंसार में उनसे ज़्यादा ख़र्च करने वाली कोई औरत न थीं। (अहमद : 4/422; और इसकी सनद सहीह है; इब्ने हिब्बान : 4035; सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब मिन फ़ज़ाइले जुलैबीब (रज़ि.) : 2472; मुख़्तसरन) उन्होंने जब पर्दे के पीछे से अपने वालदैन से कहा था कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बात रद् न करो, उस वक़्त यह आयत मा काना लि मोमिनिन) आख़िर तक नाज़िल हुई थी।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से हज़रत ताउस (रह.) पूछते हैं कि ''अस्र के बाद दो रकअतें पढ़ सकते हैं? तो आपने मना किया और इस आयत की तिलावत की। पस यह आयत गो शाने नुज़ूल के एतिबार से ख़ास है लेकिन हुक्म के एतिबार से आम है। अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) के फ़र्मान के होते हुए न तो कोई मुख़ालिफ़त कर सकता है, न उसे मानने न मानने का इख़्तियार किसी को बाक़ी रहता है, न राय क़यास करने का हक़, न किसी और बात का। जैसे फ़र्माया (فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ) (4/निसाअ : 65) यानी ''क़सम है तेरे रब की लोग ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि वह अपने आपस के तमाम इख़्तिलाफ़ात में

तुझे हाकिम न मान लें। फिर तेरे फ़र्मान से दिल में किसी क़िस्म की तंगी न रखें बल्कि दिल खोलकर तस्लीम कर लिया करें।'' सहीह हदीस में है कि ''उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कि तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसकी ख़्वाहिश उस चीज़ की ताबेदार न बन जाए जिसे मैं लाया हूँ।'' (शरहुस्सुन्ना : 104; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; हिशाम बिन हस्सान मुदल्लस व अ़न्अ़न व अम्मा नुऐम बिन हम्माद फ़ सदूक़ युहतज्जु बिही, मिश्कात किताबुल ईमान बाब अल्एतिसाम बिल किताबि वस्सुन्नति : 167) इसीलिए यहाँ भी इसके ख़िलाफ़ की बुराई बयान की कि अल्लाह तआ़ला की और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़र्मानी करने वाला खुल्लम खुल्ला गुमराह है। जैसे फ़र्मान है (فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ) (24/नूर : 63) यानी जो लोग इर्शादे नबी (ﷺ) के ख़िलाफ़ करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि ऐसा न हो उन पर कोई आफ़त आ पड़े या उन्हें कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हो।

***

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ۗ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَاۗىِٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝۳۷

तर्जुमा : ''जबकि तू उस शख़्स से कह रहा था जिस पर अल्लाह तआ़ला ने भी इन्आ़म किया और तूने भी कि तू अपनी बीवी को आबाद रख और अल्लाह तआ़ला से डर और तू अपने दिल में वह बात छुपाए हुए था जिसे अल्लाह तआ़ला ज़ाहिर करने वाला था और तू लोगों से डर रहा था, अल्लाह तआ़ला उसका ज़्यादा हक़दार था कि उससे डरे। पस जबकि ज़ेद ने उस औरत से अपनी ग़र्ज़ पूरी कर ली हमने उसे तेरे निकाह में दे दिया। ताकि मुसलमानों पर अपने गोद ली हुई औलादों की बीवियों के बारे में किसी तरह की तंगी न रहे। जबकि वह अपना जी उनसे भर लें। अल्लाह तआ़ला का यह हुक्म तो होकर ही रहने वाला था।'' (37)

हज़रत ज़ेद (रज़ि.) का वाक़िया (आ. 37) : अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि उसके नबी (ﷺ) ने अपने आज़ादकर्दा ग़ुलाम हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) को हर तरह समझाया उन पर अल्लाह तआ़ला का इन्आ़म था कि इस्लाम और मुताबिअ़ते रसूल (ﷺ) की तौफ़ीक़ दी और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का भी उन पर एहसान था कि उन्हें ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया। यह बड़ी शान वाले थे और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को बहुत ही प्यारे थे यहाँ तक कि उन्हें सब मुसलमान हुब्बुर्रसूल कहते थे। उनके साहबज़ादे हज़रत उसामा (रज़ि.) को

भी "हुब्ब बिन हुब्ब" (यानी महबूब बिन महबूब) कहते थे। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का इर्शाद है कि "जिस लश्कर में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उन्हें भेजते थे उस लश्कर का सरदार उनको बनाते थे। अगर यह ज़िन्दा रहते तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़लीफ़ा बन जाते।" (अहमद : 6/281; सुननुल कुब्रा : 8182; और इसकी सनद हसन है; हाकिम : 3/215) बज़्ज़ार में है हज़रत उसामा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैं मस्जिद में था मेरे पास हज़रत अब्बास और हज़रत अली (रज़ि.) आए और मुझसे कहा, जाओ! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से हमारे लिए इजाज़त तलब करो। मैंने आपको ख़बर की। आपने फ़र्माया, जानते हो वह क्यूँ आये हैं? मैंने कहा, नहीं! आपने फ़र्माया, लेकिन मैं जानता हूँ जाओ, बुला लाओ। यह आए और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़रा फ़र्माइए तो आपको अपने अहल में सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी बेटी फ़ातिमा(रज़ि.)। उन्होंने कहा, हम हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के बारे में नहीं पूछते। आपने फ़र्माया फिर उसामा बिन ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) जिन पर अल्लाह तआला ने इन्आम किया और मैंने भी। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे उसामा बिन ज़ेद (रज़ि.) : 3819; और इसकी सनद हसन है।) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनका निकाह अपनी फूफी उमैमा बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब की लड़की ज़ेनब बिन्ते जहश (रज़ि.) असदिया से कर दिया था। दस दीनार और सात दिरहम मुहर दिया था। एक दुपट्टा, एक चादर, एक कुर्ता, पचास मुद्द अनाज और दस मुद्द खजूरें दी थीं। एक साल और कुछ ऊपर तक तो यह घर बसा लेकिन फिर नाचाक़ी शुरू हो गई।" हज़रत ज़ेद (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आकर शिकायत की तो आप उन्हें समझाने लगे कि घर न तोड़ो अल्लाह तआला से डरो।" इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर ने इस जगह बहुत से ग़ैर सहीह आसार नक़्ल किये हैं जिनका नक़्ल करना भी हम नामुनासिब जानकर तर्क करते हैं क्योंकि उनमें से एक भी साबित और सहीह नहीं। मुस्नद अहमद में भी एक रिवायत हज़रत अनस (रज़ि.) से है, लेकिन इसमें भी बड़ी ग़राबत है। इसलिए हमने उसे भी वारिद नहीं किया।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि यह आयत हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) और हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) के बारे में उतरी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब क़ौलुहू (व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सिक...) : 4787; तिर्मिज़ी : 3212; इब्ने हिब्बान : 4045; अहमद : 3/149) इब्ने अबी हातिम में है कि अल्लाह तआला ने पहले ही से अपने नबी अकरम (ﷺ) को ख़बर दी थी कि हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) आपके निकाह में आएँगी यही बात थी जिसे आपने ज़ाहिर न किया और हज़रत ज़ेद (रज़ि.) को समझाया कि वह अपनी बीवी को अलग न करें। हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अगर अल्लाह तआला की वही किताबुल्लाह में से एक आयत भी छुपाने वाले होते तो इस आयत को छुपा लेते।" (तब्री : 4/274; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब मअनी क़ौलुल्लाहि तआला अज़्ज़ व जल्ल (व लक़द रआहू नज़्लतन उख़रा) : 177; और इसकी सनद सहीह है।) 'वतरन' के मअनी हाजत के हैं। मतलब यह है कि जब ज़ेद (रज़ि.) उनसे सेर हो गए और बावजूद समझाने बुझाने के मेल मिलाप न हो सका बल्कि तलाक़ हो गई तो अल्लाह तआला ने हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) को अपने नबी अकरम (ﷺ) के निकाह में दे दिया। इसलिए वली की ईजाब व क़बूल की मुहर और गवाहों की ज़रूरत न रही।" मुस्नद अहमद में है कि

"हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) की इद्दत पूरी हो चुकी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) से कहा, तुम जाओ और उन्हें मुझसे निकाह करने का पैग़ाम पहुँचाओ। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) गए उस वक़्त आप आटा गूँध रही थीं। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) पर उनकी अज़्मत इस क़द्र छाई कि सामने पड़कर बात न कर सके, मुँह फेरकर बैठ गए और ज़िक्र किया। माई साहिबा ने फ़र्माया, ठहरो! मैं अल्लाह तआला से इस्तिख़ारा कर लूँ यह तो खड़ी होकर नमाज़ पढ़ने लगीं। इधर रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वही उतरी जिसमें अल्लाह तआला ने फ़र्माया, मैंने उनका निकाह तुझसे कर दिया। चुनाँचे उसी वक़्त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बेइत्तिलाअ चले आए। फिर वलीमा की दअवत में आपने हम सबको गोश्त रोटी खिलाई। लोग खा पीकर चले गए। मगर चंद आदमी वहीं बैठे बातें करते रहे। आप बाहर निकलकर अपनी बीवियों के पास गए, आप उन्हें सलाम अलैक करते थे और वह आपसे पूछ रही थीं कि फ़र्माइए! बीवी साहिबा से ख़ुश तो हैं? मुझे यह याद नहीं कि मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को ख़बर दी या आप ख़बर दिये गए कि लोग वहाँ से चले गए उसके बाद आप उस घर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए मैं भी आपके साथ था। मैंने आपके साथ ही जाने का इरादा किया लेकिन आपने पर्दा करा दिया और मेरे और आपके बीच हिजाब हो गया और पर्दे की आयतें उतरीं और सहाबा (रज़ि.) को नसीहत की गई और फ़र्मा दिया गया कि नबी अकरम (ﷺ) के घरों में बेइजाज़त न जाओ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुन्निकाह, बाब ज़वाजु ज़ैनब बिन्ते जहश... : 1428; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 8180, मुख़्तसरन; अहमद : 3/195; मुस्नदे अबी यअला : 3332)

सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत ज़ेनब और अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.) से फ़ख़्रन कहा करती थीं कि "तुम सबके निकाह तुम्हारे वली वारिसों ने किये और मेरा निकाह ख़ुद अल्लाह तआला ने सातवें आसमान पर करा दिया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब वकान अर्शुहू अलल माइ : 7420) सूरह नूर की तफ़्सीर में हम यह रिवायत बयान कर चुके हैं कि "हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) ने कहा, मेरा निकाह आसमान से उतरा और उनके मुक़ाबले पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरी बरा'त की आयतें आसमान से उतरीं जिनका ज़ैनब (रज़ि.) ने इक़रार किया।" (तब्री : 19/118) इब्ने जरीर में है कि "हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक बार कहा मुझमें अल्लाह तआला ने तीन ख़ुसूसियतें रखी हैं जो आपकी और बीवियों में नहीं। एक तो यह कि मेरा और आपका दादा एक है दूसरे यह कि अल्लाह तआला ने आसमान से मुझे आपके निकाह में दिया, तीसरे यह कि हमारे बीच सफ़ीर हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) थे।" (तब्री, यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) फिर फ़र्माता है हमने उनसे निकाह करना तेरे साथ जाइज़ कर दिया ताकि मुसलमानों पर उनके ले पाक लड़कों की बीवियों के बारे में जब उन्हें तलाक़ दे दी जाए कोई हर्ज न रहे। यानी वह अगर चाहें तो उनसे निकाह कर सकें। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने नबुव्वत से पहले हज़रत ज़ेद (रज़ि.) को अपना मुतबन्ना बना रखा था। आम तौर पर उन्हें ज़ेद बिन मुहम्मद कहा जाता था। क़ुरआन ने इस निस्बत से भी मुमानिअत कर दी और हुक्म दिया कि उन्हें अपने हक़ीक़ी बाप की तरफ़ निस्बत करके पुकारा करो। फिर हज़रत ज़ेद (रज़ि.) ने जब हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) को तलाक़ दे दी तो अल्लाह तआला ने उन्हें अपने नबी (ﷺ) के निकाह में देकर यह बात भी हटा दी। जिस आयत में हराम औरतों का ज़िक्र आया है वहाँ भी यही

फ़र्माया कि तुम्हारे अपने सुल्बी लड़कों की बीवियाँ तुम पर हराम हैं ताकि ले पालक लड़कों की बीवियाँ इस हुक्म से ख़ारिज रहें क्योंकि ऐसे लड़के अरब में बहुत थे। यह अम्र अल्लाह के नज़दीक मुक़र्रर हो चुका था उसका होना हत्मी यक़ीनी और ज़रूरी था और हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) को यह शर्फ़ मिलना पहले ही से लिखा जा चुका था कि वह अज़्वाजे मुतहहरात उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) में दाख़िल हों।

***

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ۚ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ
وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ ﴿٣٨﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ
اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ
رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "जो चीज़ें अल्लाह तआला ने अपने नबी के लिए हलाल की हैं उनमें नबी पर कोई हर्ज नहीं। यही दस्तूरे इलाही उनमें भी रहा जो पहले हुए। अल्लाह तआला के काम अंदाज़े पर मुक़र्रर किये हुए हैं। (38) यह सब ऐसे थे कि अल्लाह तआला के अहकाम पहुँचाया करते थे और अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह तआला के सिवा किसी से नहीं डरते थे और अल्लाह तआला हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। (39) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप मुहम्मद (ﷺ) नहीं लेकिन आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और तमाम नबियों के ख़त्म करने वाले हैं अल्लाह तआला हर चीज़ को बख़ूबी जानने वाला है।" (40)

अहकामे इलाही ही नाफ़िज़ होने वाले हैं (आ. 38 से 40) : फ़र्माता है कि जब अल्लाह के नज़दीक अपने ले पालक मुतबन्ना की बीवी से उसकी तलाक़ के बाद निकाह करना हलाल है फिर उसमें नबी पर क्या हर्ज है, अगले नबियों पर जो हुक्मे इलाही नाज़िल होते थे उन पर अमल करने में उन पर कोई हर्ज न था। उससे ग़र्ज़ मुनाफ़िक़ों के इस क़ौल का रद्द करना है कि देखो! अपने आज़ादकर्दा गुलाम और ले पालक लड़के की बीवी से निकाह कर लिया। अल्लाह तआला के मुक़र्ररकर्दा उमूर होकर ही रहते हैं। वह जो चाहता है होता है जो नहीं चाहता नहीं होता।

औलिया अल्लाह की सिफ़तें : उनकी ता'रीफ़ हो रही है जो अल्लाह तआला की मख़्लूक़ को अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचाते हैं और अमानते इलाही की अदायगी करते हैं और उससे डरते रहते हैं और सिवाय अल्लाह के किसी का ख़ौफ़ नहीं करते। किसी सत्वत व शान से मरऊब होकर पैग़ामे इलाही के पहुँचाने में ख़ौफ़ नहीं खाते। अल्लाह तआला की नुसरत व मदद काफ़ी है। इस मंसब की अदायगी में सबके पेशवा बल्कि

एक अम्र में सबके सरदार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं। ख़्याल कीजिए कि मश्रिक़ व मग़रिब में हर एक बनी आदम को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अल्लाह तआला के दीन की तब्लीग़ की और जब तक अल्लाह तआला का दीन चार दाँगे आलम में फैल न गया। आप बराबर मशक़्क़त से अल्लाह तआला के दीन की इशाअत में लगे रहे। आपसे पहले के तमाम अम्बिया (عليهم السلام) अपनी अपनी क़ौम ही की तरफ़ आते रहे लेकिन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सारी दुनिया की तरफ़ अल्लाह तआला के रसूल बनकर आए थे। क़ुरआन में फ़र्माने इलाही है कि लोगों में ऐ'लान कर दो कि मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह तआला का रसूल हूँ, सलामुन अलैहि। फिर आपके बाद मंसबे तब्लीग़ आपकी उम्मत को मिला। उनमें सबके सरदार आपके सहाबा (रज़ि.) हैं, जो कुछ उन्होंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सीखा था, वो सब कुछ बाद वालों को सिखा दिया। तमाम क़ौल व फ़ेअल व अहवाल दिन और रात के, सफ़र और हज़र के, ज़ाहिर और पोशीदा दुनिया के सामने रख दिए, अल्लाह तआला उन पर अपनी रज़ामंदी नाज़िल करे फिर उनके बाद वाले उनके वारिस हुए और इसी तरह हर बाद वाले अपने से पहले वालों के वारिस बने और अल्लाह तआला का दीन उनसे फैलता रहा और क़ुरआनो हदीस लोगों के कानों में पड़ता रहा। हिदायत वाले उनकी इक़्तिदा से मुनव्वर होते रहे और तौफ़ीक़े ख़ैर वाले उनके मस्लक पर चलते रहे, अल्लाह करीम से हमारी दुआ है कि वह हमें भी उनमें से कर दे, आमीन!

हुज़ूर (ﷺ) किसी के वालिद नहीं : मुस्नद अहमद में है "तुममें से कोई अपने आपको ज़लील न करे, लोगों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! यह कैसे ? फ़र्माया ख़िलाफ़े शरअ काम देखकर लोगों के डर के मारे ख़ामोश रहे, क़ियामत के दिन उससे पूछताछ होगी कि तू क्यूँ ख़ामोश रहा? यह कहेगा कि लोगों के डर से। अल्लाह तआला कहेगा, सबसे ज़्यादा डर रखने के क़ाबिल तो मेरी ज़ात थी।" फिर अल्लाह तआला मना करता है कि किसी को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का साहबज़ादा न कहा जाए। लोग जो ज़ेद बिन मुहम्मद कहते थे जिसका बयान ऊपर गुज़र चुका है तो अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ज़ेद के वालिद नहीं। यही हुआ भी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की कोई नरीना औलाद बुलूग़त को पहुँची ही नहीं। क़ासिम, इब्राहीम (तय्यब) और अब्दुल्लाह (ताहिर) तीन बच्चे हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के बतन से हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के यहाँ पैदा हुए लेकिन तीनों बचपन ही में इंतिक़ाल कर गए। आपकी लड़कियाँ हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से चार थीं, ज़ेनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसुम और फ़ातिमा (रज़ि.), इनमें से तीन तो आपकी ज़िन्दगी ही में रहलत पा गईं सिर्फ़ हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का इंतिक़ाल आपके इंतिक़ाल के छः माह बाद हुआ।

हुज़ूर (ﷺ) आख़िरी नबी हैं : फिर फ़र्माता है बल्कि आप (ﷺ) अल्लाह तआला के रसूल और ख़ातिमुन् नबिय्यीन हैं। जैसे फ़र्माया, अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि जहाँ अपनी रिसालत रखता है। यह आयत दलील है इस अम्र पर कि आपके बाद कोई नबी नहीं और जब नबी ही नहीं तो रसूल कहाँ? कोई नबी रसूल आपके बाद नहीं आएगा। रिसालत तो नबुव्वत से भी ख़ास चीज़ है हर रसूल नबी है लेकिन हर नबी रसूल नहीं। लगातार अहादीस से भी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना साबित है। बहुत से सहाबा (रज़ि.) से यह अहादीस रिवायत की गई हैं। मुस्नद अहमद में है "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं मेरी मिसाल नबियों में ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने एक बहुत अच्छा और पूरा मकान बनाया लेकिन उसमें एक ईंट

की जगह छोड़ दी हो जहाँ कुछ न रखा, लोग उसे चारों तरफ़ देखते भालते और उसकी बनावट से ख़ुश होते लेकिन कहते क्या अच्छा होता कि इस ईंट की जगह भी भर दी जाती। पस मैं नबियों में उसी ईंट की जगह हूँ।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब (सलुल्लाह लियल वसीला...) : 3613; वहुव हसन; अहमद : 5/136, 137) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) भी इस हदीस को लाये हैं और इसे हसन सहीह कहा है। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''रिसालत और नबुव्वत ख़त्म हो गई, मेरे बाद न कोई रसूल है न नबी। सहाबा (रज़ि.) पर यह बात गिराँ गुज़री तो आपने फ़र्माया, लेकिन ख़ुशख़बरियाँ देने वाले। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा, ख़ुशख़बरियाँ देने वाले क्या हैं? फ़र्माया, मुसलमानों के ख़्वाब जो नबुव्वत के हिस्से में से एक हिस्सा है।'' यह हदीस भी तिर्मिज़ी शरीफ़ में है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे सहीह ग़रीब कहते हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुर्रुअया, बाब ज़हबतिन्नबुव्वतु व बक़ियतिल मुबश्शिरात : 2272; और इसकी सनद सहीह है; अहमद : 3/267)

महल की मिसाल वाली हदीस अबू दाऊद तयालिसी में भी है उसके आख़िर में यह है कि ''मैं उस ईंट की जगह हूँ। मुझसे अम्बिया (ﷺ) का सिलसिला ख़त्म किया गया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब ख़ातिमुन्नबिय्यीन (ﷺ) : 3534; सहीह मुस्लिम : 2287; मुस्नदे तयालिसी : 1785) मुस्नद की इस हदीस की सनद में है कि मैं आया और उस ख़ाली ईंट की जगह भर दी गई। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब ज़िक्रु कौनिही (ﷺ) ख़ातिमुन्नबिय्यीन : 2286; अहमद : 3/9) मुस्नद में है ''मेरे बाद नबुव्वत नहीं मगर ख़ुशख़बरी वाले। पूछा गया या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह क्या हैं? फ़र्माया, अच्छे ख़्वाब।'' (अहमद : 5/454; और इसकी सनद सहीह है; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/173) अब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरह में महल की ईंट की मिसाल वाली हदीस में है कि लोग उसे देखकर महल वाले से कहते हैं कि तूने इस ईंट की जगह क्यूँ छोड़ दी। पस मैं वह ईंट हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब ख़ातिमुन्नबिय्यीन (ﷺ) : 3535; सहीह मुस्लिम : 2286; अहमद : 2/312; इब्ने हिब्बान : 6405) सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मुझे तमाम अम्बिया पर छः फ़ज़ीलतें दी गई हैं मुझे जामेअ कलिमात अता किये गए हैं। सिर्फ़ रौब से मेरी मदद की गई। मेरे लिए ग़नीमत के माल हलाल किये गए हैं, मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद और वुज़ू बनाई गई है। मैं सारी मख़्लूक़ की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ। और मेरे साथ नबियों को ख़त्म किया गया है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अल्मसाजिदु व मवाज़िइस्सलात : 523; तिर्मिज़ी : 1553; इब्ने माजा : 567; मुख़्तसरन) यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह कहते हैं। सहीह मुस्लिम वग़ैरह में भी महल की मिसाल वाली रिवायत में यह अल्फ़ाज़ भी आए हैं कि मैं आया और मैंने उस ईंट वाली जगह को पुर कर दिया। (सहीह मुस्लिम : 2287; व तरक़ीमु दारुस्सलाम : 5963) मुस्नद अहमद में है मैं अल्लाह तआला के नज़दीक नबियों का ख़त्म करने वाला था उस वक़्त जबकि आदम (ﷺ) भी पूरे तौर पर पैदा भी नहीं हुए थे। (अहमद : 4/127; और इसकी सनद हसन है; तारीख़ुल कबीर : 6/68; इब्ने हिब्बान : 6404; सुन्नत लि इब्ने अबी आसिम : 409; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/223; शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी ने इस रिवायत को बिश्शवाहिद सहीह क़रार दिया है। देखिए (तख़रीज इब्ने कसीर : 1/386)

हुज़ूर (ﷺ) के चंद नाम : और हदीस में है कि ''मेरे कई नाम हैं, मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ और मैं माही

हूँ। अल्लाह तआला मेरी वजह से कुफ्र को मिटा देगा और मैं हाशिर हूँ तमाम लोगों का हश्र मेरे क़दमों तले होगा। और मैं आक़िब हूँ, जिसके बाद कोई नबी नहीं आएगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब मा जाअ फ़ी अस्माइ रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 3532; सहीह मुस्लिम : 2354; मुस्नदे तयालिसी : 924; अहमद : 4/80; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़ाक़ : 19757; तिर्मिज़ी : 284; इब्ने हिब्बान : 6313; मुस्नदे हुमैदी : 555) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''एक रोज़ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमारे पास आये गोया कि आप रुख़सत कर रहे हैं और तीन बार फ़र्माया. मैं उम्मी नबी हूँ, मेरे बाद कोई नबी नहीं। मैं फ़ातेह कलिमात दिया गया हूँ और निहायत जामेअ, और पूरे तौर पर मैं जानता हूँ कि जहन्नम के दारोग़े कितने हैं और अर्श के उठाने वाले कितने हैं। मेरा अपनी उम्मत से तआरुफ़ कराया गया है जब तक मैं तुममें हूँ मेरी सुनते रहो और मानते चले जाओ। जब मैं रुख़सत हो जाऊँ तो किताबुल्लाह को थाम लो इसके हलाल को हलाल और इसके हराम को हराम समझो।'' (अहमद : 2/212; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने लहीआ मुदल्लस व अन्अन)

आप (ﷺ) के बाद जो नबुव्वत का दावा करे वह झूठा है : इस बारे में और भी बहुत सी अहादीस हैं। अल्लाह तआला की इस वसीअ रहमत पर उसका शुक्र करना चाहिए कि उसने अपने रहमो करम से ऐसे बड़े रसूल (ﷺ) को हमारी तरफ़ भेजा और उन्हें ख़त्मुल मुर्सलीन और ख़ातिमुन्नबिय्यीन बनाया और यक्सूई वाला आसान सच्चा और सहल दीन आपके हाथों कमाल को पहुँचाया। रब्बुल आलमीन ने अपनी किताब में और रहमतुल लिल आलमीन ने अपनी लगातार अहादीस में यह ख़बर दे दी कि आपके बाद कोई नबी नहीं। पस जो शख़्स भी आपके बाद नबुव्वत या रिसालत का दावा करता है वह झूठा, मुफ़्तरी, दज्जाल, गुमराह और गुमराह करने वाला है भले वह शअबदे दिखाए और जादूगरी करे और बड़े कमालात और अक़्ल को हैरान कर देने वाली चीज़ें पेश करे और तरह तरह की रंगीनियाँ दिखाए लेकिन अक़्लमंद जानते हैं कि यह सब फ़रेब धोखा और मक्कारी है। यमन के मुद्दई नबुव्वत अस्वद अन्सी को और यमामा के मुद्दई नबुव्वत मुसैलिमा कज़्ज़ाब को देख लो कि दुनिया ने इन्हें बहुत अच्छी तरह देख लिया, समझ लिया और उनकी असलियत सब पर ज़ाहिर हो गई। यही हाल होगा हर उस शख़्स का जो क़ियामत तक इस दावे से मख़लूक़ के सामने आएगा कि उसका झूठ और उसकी गुमराही सब पर खुल जाएगी यहाँ तक कि सबसे आख़िरी दज्जाल मसीह दज्जाल आएगा। उसकी अलामतों में से भी हर आलिम और हर मोमिन उसका झूठा होना जान लेगा। पस यह भी अल्लाह तआला की एक नेअमत है कि ऐसे झूठे दावेदारों को यह नसीब ही नहीं होता कि वह नेकी के अहकाम दें और बुराई से रोकें। हाँ! जिन अहकाम में उनका अपना मक़सद होता है उन पर बहुत ज़ोर देते हैं उनके क़ौल व फ़ेअल, इफ़्तिरा व फ़िजूर वाले होते हैं। जैसे फ़र्माने बारी है (هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝) (26/शोअरा : 221, 222) यानी क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शयातीन किनके पास आते हैं? हर एक बोहतानबाज़ गुनहगार के पास, सच्चे नबियों का हाल इसके बिलकुल उल्टा होता है वह निहायत नेकी वाले, बहुत सच्चे हिदायत वाले, इस्तिक़ामत वाले, क़ौल व फ़ेअल के अच्छे, नेकियों का हुक्म देने वाले, बुराईयों से रोकने वाले होते हैं। साथ ही अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी ताईद होती है मोजिज़ों और ख़ारिक़े आदत चीज़ों से उनकी सच्चाई और ज़्यादा ज़ाहिर होती है और इस क़द्र ज़ाहिर

वाज़ेह और साफ़ दलीलें उनकी नबुव्वत पर होती हैं कि क़ल्बे सलीम उनके मानने पर मजबूर हो जाता है। अल्लाह तआला अपने सब सच्चे नबियों पर क़ियामत तक अपने दुरूदो सलाम नाज़िल फ़र्माता रहे, आमीन!

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ۝

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालों! अल्लाह तआला का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करते रहा करो। (41) और सुबह शाम उसकी पाकीज़गी बयान करो। (42) वह तुम पर अपनी रहमतें भेजता है उसके फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआए रहमत करते हैं वह तुम्हें अंधेरों से उजाले की तरफ़ ले जा रहा है। अल्लाह तआला मुसलमानों पर बहुत ही मेहरबान है। (43) जिस दिन यह अल्लाह तआला से मुलाक़ात करेंगे उनका तोहफ़ा सलाम होगा, उनके लिए अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा अज्र तैयार कर रखा है।" (44)

ज़िक्रे इलाही के फ़ज़ाइल व मसाइल (आ. 41 से 44) : बहुत सी नेअमतों के इन्आम करने वाले अल्लाह तआला का हुक्म हो रहा है कि हमें उसका बकसरत ज़िक्र करना चाहिए और उस पर भी हमें नेअमतों और बड़े अज्रो सवाब का वादा दिया जाता है। एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "क्या मैं तुम्हारे बेहतर अमल और बहुत ही पाकीज़ा काम और सबसे बड़े दर्जे की नेकी और सोने चाँदी को राहे इलाही ख़र्च करने से भी ज़्यादा बेहतर और जिहाद से भी ज़्यादा अफ़ज़ल काम न बताऊँ? लोगों ने पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! वह क्या है? फ़र्माया, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का ज़िक्र।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब नम्बर 4; हदीस : 3377; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 3790; अहमद : 6/446; हाकिम : 1/496) यह हदीस पहले (वज़्ज़ाकिरीनल्लाह) की तफ़्सीर में भी गुज़र चुकी है। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह दुआ सुनी है जिसे मैं किसी वक़्त छोड़ता नहीं। (अल्लाहुम्मज्अल्नी उअज़्ज़िमु शुक्रका वत्तबिउ नसीहतका व उक्सिरु ज़िक्रका व अहफ़ज़ु वसिय्यतक) यानी ऐ अल्लाह! तू मुझे अपना बहुत बड़ा शुक्रगुज़ार फ़र्मांबरदार बकसरत ज़िक्र करने वाला और तेरे अहकाम की हिफ़ाज़त करने वाला बना दे।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब दुआउ (अल्लाहुम्मज्अल्नी उअज़्ज़िमु शुक्रका...) : 3604; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अहमद : 2/311; इसकी सनद में फ़र्ज बिन फुज़ाला ज़ईफ़ (अल्मीज़ान : 3/343; रक़म : 6696) और अबू सईद मज्हूल रावी है।) दो आराबी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आये। एक ने पूछा, सबसे अच्छा शख़्स कौन है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जो लम्बी उम्र पाये और नेक आमाल करे।" दूसरे ने पूछा,

हुज़ूर (ﷺ)! अहकामे इस्लाम तो बहुत सारे हैं मुझे कोई चोटी का हुक्म बता दीजिए कि उससे चिमट जाऊँ। आपने फ़र्माया, "ज़िक्रुल्लाह में हर वक़्त अपनी ज़ुबान तर रख।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिज़्ज़िक्र : 3375; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 3793; अहमद : 4/190; हाकिम : 1/495) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला के ज़िक्र में हर वक़्त मशग़ूल रहो, यहाँ तक कि लोग तुम्हें मज्नून कहने लगें। (अहमद : 3/68; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; हाकिम : 1/499; इब्ने हिब्बान : 817; मुस्नदे अबी यअला : 1376; शुअबुल ईमान : 526) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला का बकसरत ज़िक्र करो यहाँ तक कि मुनाफ़िक़ तुम्हें रियाकार कहने लगें। (तब्रानी : 12786; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; हसन बिन अबी जअफ़र ज़ईफ़ुल हदीस मअ इबादतिही व फ़ज़्लिही हिल्यतुल औलिया : 3/80)

फ़र्माते हैं "जो लोग किसी मज्लिस में बैठें और वहाँ अल्लाह तआला का ज़िक्र न करें वह मज्लिस क़ियामत के दिन उन पर हसरत व अफ़सोस की वजह बनेगी।" (अहमद : 2/224; और वह हदीस हसन है; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/80) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "हर फ़र्ज़ काम की कोई हद है, फिर उज़्र की हालत में वह माफ़ भी है लेकिन ज़िक्रुल्लाह की कोई हद नहीं, न वह किसी वक़्त टलता है हाँ! कोई दीवाना हो तो और बात है।" खड़े बैठे, रात को, दिन को ख़ुश्की में, तरी में, सफ़र में, हज़र में, ग़िना में, फ़क़ीरी में, सेहत में, बीमारी में, पोशीदगी में, ज़ाहिरी में, ग़र्ज़ हर हाल में ज़िक्रे इलाही करना चाहिए। सुबह व शाम अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करनी चाहिए। तुम जब यह कर लोगे तो अल्लाह तआला तुम पर अपनी रहमतें नाज़िल करेगा और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए हर वक़्त दुआ करते रहेंगे। (तब्री : 20/280) इस बारे में और भी बहुत से अहादीस व आसार हैं। इस आयत में भी बकसरसत ज़िक्रुल्लाह की हिदायत हो रही है, बुज़ुर्गों ने ज़िक्रुल्लाह और वज़ाइफ़ की बहुत सी मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं जैसे इमाम नसाई, इमाम मअमरी (रहि.) वग़ैरह।

इन सब में बेहतरीन किताब इस मौज़ूअ पर हज़रत इमाम नववी (रह.) की है। सुबह शाम उसकी तस्बीह बयान करते रहो, जैसे फ़र्माया (فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾) (30/रूम : 17) अल्लाह तआला के लिए पाकी है जब तुम शाम करो और जब तुम सुबह करो, उसी के लिए हम्द है, आसमानों में और ज़मीन में और ज़वाल के बाद और ज़ुहर के वक़्त। फिर उसकी फ़ज़ीलत बयान करने और उसकी तरफ़ रग़बत दिलाने के लिए फ़र्माता है वह ख़ुद तुम पर रहमत भेज रहा है यानी जब वह तुम्हें याद रखता है तो क्या वजह कि तुम उसके ज़िक्र से ग़फ़्लत करो? जैसे फ़र्माया (كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ) (2/बक़रह : 151) जिस तरह हमने तुममें ख़ुद तुम्हीं में से रसूल भेजा जो तुम पर हमारी किताब पढ़ता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब व हिक्मत सिखाता है जिसे तुम जानते ही न थे। पस तुम मेरा ज़िक्र करो, मैं तुम्हारी याद करूँगा और तुम मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो। हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है जो मुझे अपने दिल में याद करता है मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ और जो मुझे किसी जमाअत में याद करता है मैं भी उसे जमाअत में याद करता हूँ जो उसकी जमाअत से बेहतर होती है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व युहज़्ज़िरकुमुल्लाहु नफ़्सह) : 7405; सहीह मुस्लिम : 2675; अहमद : 2/251; इब्ने हिब्बान : 328)

सलात के मअनी : सलात जब अल्लाह तआला की तरफ़ मुज़ाफ़ हो तो मतलब यह होता है कि अल्लाह तआला उसकी भलाई अपने फ़रिश्तों के सामने बयान करता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब बाब क़ौलुहू (इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लूना अलन्नबी) तअलीक़न क़ब्ल हदीस : 4797) और क़ौल में है मुराद इससे रहमत है और दोनों क़ौलों का अंजाम एक ही है। फ़रिश्तों की सलात उनकी दुआ और इस्तिग़फ़ार है जैसे और आयत में है (اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ) (40/मोमिन : 7) अर्श के उठाने वाले और उसके आसपास वाले अपने रब की हम्दो तस्बीह बयान करते हैं उस पर ईमान लाते हैं और मोमिन बन्दों के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं कि ऐ हमारे रब! तूने हर चीज़ को रहमत व इल्म से घेर लिया है। ऐ अल्लाह तआला! तू उन्हें बख़्श दे जो तौबा करते हैं और तेरी राह पर चलते हैं उन्हें अज़ाबे जहन्नम से भी नजात दे, उन्हें उन जन्नतों में ले जा जिनका तू उनसे वादा कर चुका है और उन्हें भी उनके साथ पहुँचा दे जो उनके बाप दादाओं, बीवियों और औलादों में से नेक हों, उन्हें बुराइयों से बचा ले आख़िर तक। वह अपनी रहमत को तुम पर नाज़िल करके अपने फ़रिश्तों की दुआ को तुम्हारे हक़ में क़बूल करके तुम्हें जिहालत व ज़लालत के अंधेरों से निकालकर हिदायत व यक़ीन के नूर की तरफ़ ले जाता है वह दुनिया और आख़िरत में मोमिनों पर रहीमो करीम है, दुनिया में हक़ की तरफ़ उनकी रहबरी करता है और रोज़ियाँ अता करता है और आख़िरत में घबराहट और डर ख़ौफ़ से बचा लेगा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) एक बार अपने अस्हाब (रज़ि.) के साथ रास्ते से गुज़र रहे थे एक छोटा बच्चा रास्ते में था। उसकी माँ ने जब एक जमाअत को आते हुए देखा तो मेरा बच्चा! मेरा बच्चा! कहती हुई दौड़ी और बच्चे को गोद में लेकर एक तरफ़ हट गयी। माँ की उस मुहब्बत को देखकर सहाबा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ख़्याल तो कीजिए, क्या यह अपने बच्चे को आग में डाल देगी? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनके मतलब को समझकर कहने लगे, ''क़सम अल्लाह की! अल्लाह तआला भी अपने दोस्तों को आग में नहीं डालेगा।'' (अहमद : 3/104; ह : 12018; और इसकी सनद ज़ईफ़ुन जिद्दा है, हमीद तवील मुदल्लस व अन्अन; मुस्नदे अबी यअला : 3747; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/212)

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि ''हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने एक क़ैदी औरत को देखा कि उसने अपने बच्चे को देखते ही उठा लिया। और अपने कलेजे से लगाकर उसे दूध पिलाने लगी। आपने फ़र्माया, बतलाओ तो अगर इसके इख़्तियार में हो तो क्या यह अपनी ख़ुशी से अपने बच्चे को आग में डाल देगी? सहाबा (रज़ि.) ने कहा, हर्गिज़ नहीं! आपने फ़र्माया, क़सम है अल्लाह तआला की! अल्लाह तआला अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा मेहरबान है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रहमतुल वलद व तक़बीलिही व मुआनिक़तिही : 5999; सहीह मुस्लिम : 2754; अल्अस्माउ वस्सिफ़ात : 1039) अल्लाह तआला की तरफ़ से उनका तोहफ़ा जिस दिन यह उससे मिलेंगे सलाम होगा। जैसे फ़र्माया (سَلٰمٌ ۗ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾) (36/यासीन : 58) क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं जो आपस में एक दूसरे को सलाम करेगा। (तबरी : 20/280) इसकी ताईद भी आयत (دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا) (10/यूनुस : 10) से होती है अल्लाह ने उनके लिए अज्रे अज़ीम यानी जन्नत मअ उसकी तमाम नेअमतों के तैयार कर रखी है जिसमें से हर नेअमत खाना, पीना, पहनना, ओढना, औरतें, लज़्ज़तें, मंज़र वग़ैरह ऐसी हैं कि आज तो किसी के ख़्वाब व ख़्याल में भी नहीं आ सकतीं और न ही देखने में या सुनने में आईं।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۝ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذۡنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيۡرًا ۝ وَبَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ بِاَنَّ لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ فَضۡلًا كَبِيۡرًا ۝ وَلَا تُطِعِ الۡكٰفِرِيۡنَ وَالۡمُنٰفِقِيۡنَ وَدَعۡ اَذٰىهُمۡ وَتَوَكَّلۡ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيۡلًا ۝

तर्जुमा : "ऐ नबी (ﷺ)! यक़ीनन हमने ही तुझे रसूल बनाकर भेजा है, गवाहियाँ देने वाला, ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला, आगाह करने वाला। (45) और अल्लाह तआला के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलाने वाला और रोशन चराग़ (46) तो मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुना दे कि उनके लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। (47) काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानना और जो ईज़ा इनकी तरफ़ से पहुँचे उसका ख़याल भी न कर, अल्लाह तआला पर भरोसा रख, काफ़ी है अल्लाह तआला काम बनाने वाला।" (48)

नबी(ﷺ) की सिफ़ाते आलिया (आ. 45 से 48) : अता बिन यसार (रह.) फ़र्माते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) से कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की सिफ़तें तौरात में क्या हैं? फ़र्माया, जो सिफ़तें क़ुरआन में हैं उन्हीं में से कुछ औसाफ़ आपके तौरात में भी हैं। तौरात में है ऐ नबी! हमने तुझे गवाह और ख़ुशी सुनाने वाला, डराने वाला और उम्मतियों को बचाने वाला बनाकर भेजा है, तू मेरा बन्दा और रसूल है। मैंने तेरा नाम मुतवक्किल रखा है तू बद गो और फ़ोहश कलाम नहीं है, न बाज़ारों में शोर मचाने वाला, वह बुराई के बदले बुराई नहीं करता बल्कि दरगुज़र करता है और माफ़ फ़र्माता है उसे अल्लाह तआला क़ब्ज़ नहीं करेगा जब तक लोगों के टेढ़ेपन दीन को उसकी ज़ात से बिलकुल सीधा कर दे और वह ला इलाहा इल्लल्लाहु के क़ाइल न हो जाएँ जिससे अँधी आँखें रोशन हो जाएँ और बहरे कान सुनने वाले बन जाएँ और पर्दों वाले दिलों के ज़ंग छूट जाएँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब कराहियतुस्सख़्ब फ़िस्सूक़ : 2125; अहमद : 2/174)

इब्ने अबी हातिम में है हज़रत वहब बिन मुनब्बा (रह.) फ़र्माते हैं "बनी इस्राईल के एक नबी हज़रत शुऐब (عليه السلام) पर अल्लाह तआला ने वही नाज़िल की कि अपनी क़ौम बनी इस्राईल में खड़े हो जाओ, मैं तुम्हारी ज़ुबान से अपनी बातें कहलाऊँगा" मैं उम्मियों में से एक नबी उम्मी को भेजने वाला हूँ, न बदख़ुल्क़ है, न बद गो, न बाज़ारों में शोरो गुल मचाने वाला, इस क़द्र सकून वाला है कि अगर चराग़ के पास से भी गुज़र जाए तो वह न बुझे और अगर बाँसों पर भी चले तो पैर की आहट न मालूम हो। मैं उसे ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजूँगा जो हक़ गो होगा। मैं उसकी वजह से आँखों को खोल दूँगा और बहरे कानों को सुनने वाला कर दूँगा और ज़ंग आलूद दिलों को साफ़ कर दूँगा। हर भलाई की तरफ़ उसकी रहबरी करूँगा, हर नेक ख़स्लत उसमें मौजूद रखूँगा। दिल जम्ई उसका लिबास होगी, नेकी उसका वतीरा होगा।

तक़्वा उसका ज़मीर होगा, हिक्मत उसकी गोयाई होगी, इस्लाम उसका दीन होगा, अहमद उसका नाम होगा, गुमराहों को मैं उसकी वजह से हिदायत दूँगा, जाहिलों को उसकी बदौलत उलमा बना दूँगा, तनज़्ज़ुल वालों को तरक़्क़ी पर पहुँचा दूँगा, अंजानों को मशहूर मअरूफ़ कर दूँगा, क़िल्लत को उसकी वजह से कसरत से, फ़क़ीरी को अमीरी से, फ़ुरक़त को उल्फ़त से, इख़्तिलाफ़ को इत्तिफ़ाक़ में बदल दूँगा। मुख़्तलिफ़ और मुतज़ाद दिलों को मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद कर दूँगा, जुदागाना ख़्वाहिशों को यक्सू कर दूँगा, दुनिया को उसकी वजह से हलाकत से बचा लूँगा, तमाम उम्मतों से उसकी उम्मत को आला व अफ़ज़ल बना दूँगा। वह लोगों को फ़ायदा पहुँचाने के लिए दुनिया में पैदा किये जाएँगे, हर एक को नेकी का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे, वह मुवह्हिद होंगे, मोमिन होंगे, इख़्लास वाले होंगे। रसूलों पर जो कुछ नाज़िल हुआ है सबको सच मानने वाले होंगे। वह अपनी मस्जिदों मज्लिसों और बिस्तरों पर चलते फिरते, उठते बैठते मेरी तस्बीह, हम्दो सना, बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करते रहेंगे। खड़े और बैठे नमाज़ें अदा करते रहेंगे। अल्लाह तआला के दुश्मनों से सफ़ें बाँधकर हमले करके जिहाद करेंगे। उनमें से हज़ारों लोग मेरी रज़ामंदी की जुस्तजू में अपना घर बार छोड़कर निकल खड़े होंगे। मुँह हाथ वुज़ू में धोया करेंगे, तहबंद आधी पिण्डली तक का बाँधेंगे। मेरी राह में क़ुर्बानियाँ देंगे, मेरी किताब उनके सीनों में होगी, रातों को आबिद और दिनों को मुजाहिद होंगे। मैं उस नबी के अहले बैत और औलाद में सब्क़त करने वाले सिद्दीक़, शुहदा और सालेह लोग पैदा करूँगा। उसकी उम्मत उसके बाद दुनिया को हक़ की हिदायत करेगी और हक़ के साथ अदलो इंसाफ़ करेगी, उनकी इम्दाद करने वालों को मैं इज़्ज़त वाला करूँगा और उनको मिलाने वालों की मैं मदद करूँगा। उनके मुख़ालिफ़ीन और उनके बाग़ी और उनके बदख़्वाहों पर मैं बुरे दिन लाऊँगा। मैं उन्हें उनके नबी का वारिस कर दूँगा जो अपने रब की तरफ़ लोगों को दअवत देंगे, नेकियों की बातें बतलाएँगे, बुराइयों से रोकेंगे, नमाज़ अदा करेंगे, ज़कात देंगे, वादे पूरे करेंगे। इस ख़ैर को मैं उनके हाथों पूरा करूँगा जो उनसे शुरू हुआ था। यह है मेरा फ़ज़्ल जिसे चाहूँ दूँ और मैं बहुत बड़े फ़ज़्लो करम का मालिक हूँ।'' इब्ने अबी हातिम में है कि ''आप (ﷺ) हज़रत अली और हज़रत मुआज़ (रज़ि.) को यमन का हाकिम बनाकर भेज रहे थे जो यह आयत उतरी। तो आपने उनसे फ़र्माया जाओ! ख़ुशख़बरियाँ सुनाना, नफ़रत न दिलाना, आसानी करना, सख़्ती न करना, देखो! मुझ पर यह आयत उतरी है।'' आख़िर तक (तब्रानी : 11841; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अरज़मी ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/585; रक़म : 4951) और क़तादा मुदल्लस हैं।)

तब्रानी में यह भी है कि आपने फ़र्माया ''मुझ पर यह उतरा है कि ऐ नबी (ﷺ)! हमने तुझे तेरी उम्मत पर गवाह बनाकर जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाला बनाकर और जहन्नम से डराने वाला बनाकर और अल्लाह तआला के हुक्म से उसकी तौहीद की शहादत की तरफ़ लोगों को बुलाने वाला बनाकर और रोशन चराग़ क़ुरआन के साथ बनाकर भेजा है। (मज्मउज़्ज़वाइद : 7/92; और वह ज़ईफ़ है) पस आप अल्लाह तआला की वह्दानियत पर कि उसके साथ और कोई मअबूद नहीं, गवाह हैं। और क़ियामत के दिन आप लोगों के आमाल पर गवाह होंगे। जैसे इर्शाद है (وَ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا) (4/निसाअ : 41) यानी ''हम तुझे उन पर गवाह बनाकर लाएँगे।'' और आयत में है कि तुम लोगों पर गवाह हो और तुम पर यह रसूल गवाह हैं।

आप मोमिनों को बेहतरीन अज्र की बशारत सुनाने वाले और काफ़िरों को बदतरीन अ़ज़ाब का डर सुनाने वाले हैं और चूँकि अल्लाह तआ़ला का हुक्म है उसकी बजाआवरी के मातहत आप मख़्लूक़ को ख़ालिक़ की इबादत की तरफ़ बुलाने वाले हैं। आपकी सच्चाई इस तरह ज़ाहिर है जैसे सूरज की रोशनी। हाँ! कोई ज़िद्दी अड़ जाए तो और बात है। ऐ नबी (ﷺ)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो, न उनकी तरफ़ कान लगाओ और उनसे दरगुज़र करो। यह जो ईज़ाएँ पहुँचाते हैं उन्हें ख़्याल में भी न लाओ और अल्लाह तआ़ला पर पूरा भरोसा रखो, वह काफ़ी है।

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

तर्जुमा : ''ऐ मुसलमानों! जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो। फिर हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो उन पर तुम्हारा कोई हक़ इद्दत का नहीं जिसे तुम शुमार करो। तुम्हें कुछ न कुछ उन्हें दे देना चाहिए और भले तरीक़े पर उन्हें रुख़्सत कर देना चाहिए।'' (49)

अगर जिमाअ़ से पहले तलाक़ दे तो कैसा है? (आ. 49) : इस आयत में बहुत से अहकाम हैं। इससे मालूम होता है कि सिर्फ़ अक़्द पर भी निकाह का इत्लाक़ होता है। उसके सबूत में उससे ज़्यादा सराहत वाली आयत और नहीं। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि लफ़्ज़े निकाह हक़ीक़त में सिर्फ़ ईजाब व क़बूल के लिए है? या सिर्फ़ जिमाअ़ के लिए है? या इन दोनों मज्मूअे के लिए? क़ुरआन करीम में इत्लाक़ अक़्द व वती दोनों पर ही हुआ है। लेकिन इस आयत में सिर्फ़ अक़्द पर ही इत्लाक़ है। इस आयत से यह भी साबित होता है कि दुख़ूल से पहले भी शौहर अपनी बीवी को तलाक़ दे सकता है। मोमिनात का ज़िक्र यहाँ पर बवजह ग़ल्बा के है, वरना हुक्म किताबिया औरत का भी यही है। सलफ़ की एक बड़ी जमाअ़त ने इस आयत से इस्तिदलाल करके कहा है कि तलाक़ उसी वक़्त वाक़ेअ़ होती है जब उससे पहले निकाह हो गया हो। इस आयत में निकाह के बाद तलाक़ को फ़र्माया है पस मालूम हुआ कि निकाह से पहले न तलाक़ सही है न वह वाक़ेअ़ होती है। (तब्री : 20/283) इमाम शाफ़ेई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) और बहुत बड़ी जमाअ़त सलफ़ व ख़लफ़ का यही मज़हब है। मालिक और अबू हनीफ़ा (रह.) का ख़्याल है कि निकाह से पहले भी तलाक़ दुरुस्त हो जाती है। मस्लन किसी ने कहा कि अगर मैं फ़लाँ औरत से निकाह कर लूँ तो उस पर तलाक़ है तो अब जब भी उससे निकाह करेगा, तलाक़ पड़ जाएगी। फिर मालिक और अबू हनीफ़ा (रह.) का उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो कहे कि जिस औरत से मैं निकाह करूँ उस पर तलाक़ है तो इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) तो कहते हैं जिससे वह निकाह करेगा उस पर तलाक़ पड़ जाएगी और इमाम मालिक (रह.) का क़ौल है कि नहीं पड़ेगी, क्योंकि किसी ख़ास औरत को मुक़र्रर करके उसने यह नहीं किया। जुम्हूर जो उसके ख़िलाफ़ हैं उनकी दलील यह

आयत है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा गया कि अगर किसी शख़्स ने निकाह से पहले यह कहा हो कि मैं जिस औरत से निकाह करूँ उस पर तलाक़ है तो क्या हुक्म है? आपने यह आयत तिलावत की और फ़र्माया, इस सूरत में तलाक़ नहीं होगी। क्योंकि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने तलाक़ को निकाह के बाद फ़र्माया है पस निकाह से पहले की तलाक़ कोई चीज़ नहीं।

मुस्नद अहमद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "इब्ने आदम जिसका मालिक न हो उसमें तलाक़ नहीं।" (अबूदाऊद, किताबुत्तलाक़,, बाब अत्तलाकु क़ब्लन्निकाह : 2190; और इसकी सनद हसन है; तिर्मिज़ी : 1181; इब्ने माजा : 2047; अहमद : 2/189; हाकिम : 2/305) और हदीस में है जो तलाक़ निकाह से पहले की हो वह किसी गिनती में नहीं।" (इब्ने माजा, किताबुत्त लाक़, बाब ला तलाक़ क़ब्लन्निकाह : 2048; वहुव हसन) पस अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब तुम औरतों को निकाह के बाद हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो उन पर कोई इद्दत नहीं बल्कि वह जिससे चाहें उसी वक़्त निकाह कर सकती हैं। हाँ! अगर ऐसी हालत में उसका शौहर फ़ौत हो गया हो तो यह हुक्म नहीं, उसे चार माह दस दिन की इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी। उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है। पस निकाह के बाद ही मियाँ ने बीवी को छूने से पहले ही अगर तलाक़ दे दी है तो अगर मुहर मुक़र्रर हो चुका है तो उसका आधा देना पड़ेगा वरना थोड़ा बहुत दे देना काफ़ी है। और आयत में है (وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ) (2/बक़रह : 237) यानी "अगर मुहर मुक़र्रर हो चुका है और हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दी तो आधे मुहर की वह मुस्तहिक़ है।" और आयत में इर्शाद है (لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ) (2/बक़रह : 236) यानी "अगर तुम अपनी बीवियों को हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो यह कुछ गुनाह की बात नहीं। अगर उनका मुहर मुक़र्रर न हुआ हो तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो, अपनी अपनी ताक़त के मुताबिक़ अमीर व ग़रीब दस्तूर के मुताबिक़ उनसे सुलूक करे, भले लोगों पर यह ज़रूरी है चुनाँचे ऐसा एक वाक़िया ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ भी गुज़रा कि आपने उमैमा बिन्ते शुराजील से निकाह किया, यह रुख़्सत होकर आ गईं। आप गये हाथ बढ़ाया तो गोया उसने उसे पसंद न किया। आपने हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) को हुक्म दिया कि "इनका सामान तैयार कर दें और दो कपड़े अरज़क़िया के इन्हें दे दें।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तलाक़, बाब मन तल्लक़ व हल युवज्जिहुर्रजल इम्रअतहू बित्तलाक़ : 5256) पस सराहन जमील यानी अच्छाई से रुख़्सत कर देना यही है कि इस सूरत में अगर मुहर मुक़र्रर है तो आधा दे दे और अगर मुक़र्रर नहीं तो अपनी ताक़त के मुताबिक़ उसके साथ सुलूक कर दे। (तब्री : 20/283)

***

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ
اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ
مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً
لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

तर्जुमा : "ऐ नबी (ﷺ)! हमने तेरे लिए तेरी वह बीवियाँ हलाल कर दी हैं जिन्हें तू उनके मुहर दे चुका है और वह लौण्डियाँ भी जो अल्लाह तआला ने ग़नीमत में तुझे दी हैं। और तेरे चचा की लड़कियाँ और फूफियों की बेटियाँ और तेरे मामू की बेटियाँऔर तेरी ख़ालाओं की बेटियाँ भी जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की है और वह ईमान वाली औरत जो अपने नफ़्स नबी को हिबा कर दे। यह इस सूरत में कि ख़ुद नबी भी उससे निकाह करना चाहे, यह ख़ास तौर पर सिर्फ़ तेरे लिए ही है और मोमिनों के लिए नहीं। हम उसे बख़ूबी जानते हैं जो हमने उन पर उनकी बीवियों और लौण्डियों के बारे में अहकाम मुक़र्रर कर रखे हैं, यह इसलिए कि तुझ पर हर्ज वाक़ेअ न हो। अल्लाह तआला बहुत बख़्शिश वाला और बड़े रहम वाला है।" (50)

पैग़म्बर (ﷺ) को कसरते अज़्वाज की इजाज़त (आ. 50) : अल्लाह तआला अपने नबी अकरम (ﷺ) से फ़र्मा रहा है कि आपने अपनी जिन बीवियों को मुहर दिये हैं वह सब आप पर हलाल हैं। आपकी तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) का मुहर साढ़े बारह ओक़िया था जिसके पाँच सौ दिरहम होते हैं। हाँ! उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान (रज़ि.) का मुहर हज़रत नज्जाशी (रज़ि.) ने अपने पास से चार सौ दीनार दिया था और इसी तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया बिन्ते हुय्यी का मुहर सिर्फ़ उनकी आज़ादी थी। ख़ैबर के क़ैदियों में आप भी थीं। फिर आप (ﷺ) ने उन्हें आज़ाद कर दिया और उसी आज़ादगी को मुहर क़रार दिया और निकाह कर लिया। और हज़रत जुवेरिया बिन्ते हारिसा मुस्तलिक़ा ने जितनी रक़म पर मुकातिबा किया था वह पूरी रक़म आपने हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शिमास (रज़ि.) को अदा करके उनसे अक़्द बाँधा था। अल्लाह तआला आपकी तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) पर अपनी रज़ामंदी नाज़िल करे। इसी तरह जो लौण्डियाँ ग़नीमत में आपके क़ब्ज़े में आईं, वह भी आप पर हलाल हैं। सफ़िया और जुवेरिया (रज़ि.) के मालिक आप हो गए थे। फिर आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे निकाह कर लिया। रैहाना बिन्ते शम्ऊन नसरिया और मारिया क़िब्तिया भी आपकी मिल्कियत में आई थीं। हज़रत मारिया

(रज़ि.) से आपका फ़रज़न्द भी हुआ जिनका नाम हज़रत इब्राहीम (रज़ि.) था। चूँकि निकाह के बारे में नसरानियों ने इफ़रात और यहूदियों ने तफ़रीत से काम लिया था। इसलिए इस अदलो इंसाफ़ वाली सहल और साफ़ शरीअत ने दरम्याना राहे हक़ को जाहिर कर दिया। नसरानी तो सात पुश्तों तक जिस औरत मर्द का नसब न मिलता हो, उनका निकाह जाइज़ जानते थे और यहूदी बहन और भाई की लड़की से भी निकाह कर लेते थे पस इस्लाम ने भांजी भतीजी से निकाह करने को रोका और चचा की लड़की फूफी की लड़की मामू की लड़की और ख़ाला की लड़की से निकाह को मुबाह क़रार दिया है। इस आयत के अल्फ़ाज़ की ख़ूबी पर नज़र डालिए कि अम्म और ख़ालि, चचा और मामू के लफ़्ज़ को तो वाहिद लाए और अम्मात और ख़ालात यानी फूफी और ख़ाला के लफ़्ज़ को जमा लाए। जिसमें मर्दों की एक क़िस्म की फ़ज़ीलत औरतों पर साबित हो रही है जैसे (يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ) (2/बक़रह : 257) और जैसे (وَ جَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَ) (6/अन्आम : 1) यहाँ भी चूँकि ज़ुलुमात और नूर यानी अंधेरे और उजाले का ज़िक्र था और उजाले को अंधेरे पर फ़ज़ीलत है इसलिए लफ़्ज़ ज़ुलुमात लाए और नूर मुफ़रद लाए। इसकी और भी कई नज़ीरें दी जा सकती हैं। फिर फ़र्माया जिन्होंने तेरे साथ हिज्रत की है। हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) फ़र्माती हैं मेरे पास हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का माँगा आया तो मैंने अपनी मअज़ूरी ज़ाहिर की, जिसे आपने तस्लीम कर लिया और यह आयत उतरी। मैं हिज्रत करने वालियों में न थी बल्कि फ़तहे मक्का के बाद ईमान लाने वालियों में थीं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अहज़ाब : 3214; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू सालेह बाज़ाम रावी ज़ईफ़ है। हाकिम : 2/420; बैहक़ी : 7/54) मुफ़स्सिरीन ने भी यही कहा है कि मुराद यह है कि जिन्होंने मदीने की तरफ़ आपके साथ हिज्रत की हो। क़तादा (रह.) से एक रिवायत में इससे मुराद इस्लाम लाना भी मरवी है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में (वल्लाती हाजर्ना मअका) है। (तबरी : 20/285) फिर फ़र्माया और वह मोमिना औरत जो अपना नफ़्स अपने नबी के लिए हिबा कर दे और नबी भी उससे निकाह करना चाहें तो बेमुहर दिये उसे निकाह में ला सकते हैं। पस यह हुक्म दो शर्तों के साथ है। जैसे आयत (وَ لَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ إِنْ أَرَدْتُّ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ أَنْ يُّغْوِيَكُمْ) (11/हूद : 34) में यानी हज़रत नूह (عليه السلام) अपनी क़ौम से फ़र्माते हैं अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूँ और अगर अल्लाह तआला तुम्हें इस नसीहत से मुस्तफ़ीद करना न चाहे तो मेरी नसीहत तुम्हें कोई नफ़ा नहीं दे सकती। और जैसे हज़रत मूसा (عليه السلام) के इस फ़र्मान में (إِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا إِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ) (10/यूनुस : 84) यानी ''ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह तआला पर ईमान लाए हो और अगर मुसलमान हो गए हो तो तुम्हें अल्लाह तआला ही पर भरोसा करना चाहिए। पस जैसे इन दोनों आयतों में दो दो शर्तें हैं इसी तरह इस आयत में भी दो शर्तें हैं। एक तो इसका अपना नफ़्स हिबा करना दूसरे आपका भी उसे अपने निकाह में लाने का इरादा करना। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास एक औरत आई और कहा मैं अपना नफ़्स आपके लिए हिबा करती हूँ। फिर वह देर तक खड़ी रही तो एक सहाबी (रज़ि.) ने खड़े होकर कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर आप इनसे निकाह का इरादा नहीं रखते हों तो मेरे निकाह में दे दीजिए। आपने फ़र्माया, ''तुम्हारे पास कुछ है भी? जो इन्हें मुहर में दें। जवाब दिया कि इस तहबंद के सिवा और कुछ नहीं। आपने फ़र्माया, यह अगर तुम इन्हें दे दोगे तो ख़ुद बग़ैर तहबंद के रह जाओगे कुछ और तलाश करो। उसने कहा, मैं और कुछ नहीं पाता। आपने फ़र्माया, तलाश तो

करो भले लोहे की अंगूठी ही मिल जाए। उन्होंने हर चंद तलाश की लेकिन कुछ भी न पाया। आपने फ़र्माया, कुरआन की कुछ सूरतें भी तुम्हें याद हैं? उसने कहा, हाँ! फ़लाँ फ़लाँ सूरतें याद हैं। आपने फ़र्माया, बस तो उन ही सूरतों पर मैंने इन्हें तुम्हारे निकाह में दे दिया।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुन्निकाह़, बाब तज़्वीजुल मुअस्सिर : 5087; सह़ीह़ मुस्लिम : 1425; अह़मद : 5/336; अबूदाऊद : 2111; तिर्मिज़ी : 111; इब्ने माजा : 1889; इब्ने हिब्बान : 4093) ह़ज़रत अनस (रज़ि.) जब यह वाक़िया बयान करने लगे तो उनकी स़ाह़बज़ादी भी सुन रही थीं। कहने लगीं उस औरत में बहुत ही कम ह़या थी। तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, ''वो तुमसे बेहतर थीं कि ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत की रग़बत कर रही थीं और आप पर अपना नफ़्स पेश कर रही थीं।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुन्निकाह़, बाब अरज़ल मरअतु नफ़्सहा अलर्रजुलिस्सालेह़ : 5120; अह़मद : 3/268)

मुस्नद अह़मद में है कि एक औरत ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आई और अपनी बेटी की बहुत सी ता'रीफ़ें करके कहने लगीं कि हुज़ूर (ﷺ)! मेरी मुराद यह है कि आप इससे निकाह़ कर लें। आपने क़बूल कर लिया। वह फिर भी ता'रीफ़ करती रहीं यहाँ तक कि कहा हुज़ूर (ﷺ)! न वह कभी बीमार पड़ी हैं, न सिर में दर्द हुआ है। यह सुनकर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं। (अह़मद : 3/155; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुस्नदे अबी यअला : 4234; मज्मउज़्ज़वाइद : 2/294; इसकी सनद में सिनान बिन रबीआ क़ौले राजेह़ में ज़ईफ़ है। लिहाज़ा इस्नाद के बारे में मेरी साबिक़ा तह़क़ीक़ मंसूख़ समझी जाए। 16 सितम्बर 2007 ईस्वी) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि ''अपने नफ़्स को हिबा करने वाली बीवी स़ाह़िबा ह़ज़रत ख़ौला बिन्ते ह़कीम (रज़ि.) थीं।'' और रिवायत में है यह क़बीला बनू सुलैम में से थीं। और रिवायत में है कि यह बड़ी नेकबख़्त औरत थीं, मुम्किन है कि उम्मे सुलैम ही ह़ज़रत ख़ौला (रज़ि.) हों। और यह भी हो सकता है कि यह दूसरी कोई औरत हों। इब्ने अबी ह़ातिम में है कि ''ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने तेरह औरतों से निकाह़ किया जिनमें से छः तो क़ुरैशिया थीं, ख़दीजा, आइशा, ह़फ़्स़ा, उम्मे ह़बीबा, सौदा और उम्मे सलमा (रज़ि.) और तीन बनू आमिर बिन स़अस़आ के क़बीले में से थीं और दो औरतें क़बीला बनू हिलाल बिन आमिर में से थीं। ह़ज़रत मैमूना बिन्ते ह़ारिस, यही वह हैं जिन्होंने अपना नफ़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) को हिबा किया था और ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) जिनकी कुन्नियत उम्मुल मसाकीन थीं और एक औरत बनू अबीबक्र बिन किलाब से, यह वही है जिसने दुनिया को इख़्तियार किया था और बनू जून में से एक औरत जिसने पनाह चाही थी। और एक असदिया जिनका नाम ज़ैनब बिन्ते जह़श है। दो कनीज़ें थीं। स़फ़िया बिन्ते ह़ुय्यी बिन अख़्तब और जुवेरिया बिन्ते ह़ारिस बिन अम्र बिन मुस्तलिक़ ख़ुज़ाइया (रज़ि.)।'' इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अपने नफ़्स को हिबा करने वाली औरत ह़ज़रत मैमूना बिन्ते ह़ारिस थीं। लेकिन इसमें इंक़िताअ है और यह रिवायत मुर्सल है। यह मशहूर बात है कि ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) जिनकी कुन्नियत उम्मुल मसाकीन थी, यह ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा थीं। क़बीला अंस़ार में से थीं और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ह़यात में ही इंतिक़ाल कर गईं, वल्लाहु आलम!

मक़्सद यह है कि वह औरतें जिन्होंने अपने नफ़्स का इख़्तियार आपको दिया था वह बहुत सी हैं। चुनाँचे सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि ''मैं उन औरतों पर ग़ैरत किया करती

थी। जो अपना नफ़्स हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को हिबा कर देती थीं और मुझे बड़ा ताज्जुब मालूम होता था कि औरतें अपना नफ़्स हिबा करती हैं। जब यह आयत उतरी कि (تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ تُئْوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآ) (33/अहज़ाब : 51) तू उनमें से जिसे चाहे उससे न कर और जिसे चाहे अपने पास जगह दे और जिनसे तूने यक्सूई कर ली है उन्हें भी अगर तुम ले आओ तो तुम पर कोई हर्ज नहीं। तो मैंने कहा बस तो अल्लाह तआला ने आप पर ख़ूब वुस्अत व कुशादगी कर दी।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब बाब क़ौलुहू (तुर्जी मन तशाउ मिन्हुन्ना...) : 4788; सहीह मुस्लिम : 1464)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''कोई ऐसी औरत हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास न थी जिसने अपना नफ़्स आपको हिबा कर दिया हो।'' हज़रत यूनुस बिन बुकैर (रह.) फ़र्माते हैं गो आपके लिए यह मुबाह था कि जो औरत अपने तौर पर आपको सौंप दे आप उसे अपने घर में रख लें, लेकिन आपने ऐसा किया नहीं क्योंकि यह अम्र आपकी मर्ज़ी पर रखा गया था। यह बात किसी और के लिए जाइज़ नहीं, हाँ! मुहर अदा कर दे तो बेशक जाइज़ है। चुनाँचे हज़रत बुरूअ बिन्ते वाशिक़ (रज़ि.) के बारे में जिन्होंने अपना नफ़्स सौंप दिया था, जब उसके शोहर इंतिक़ाल कर गए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यही फ़ैसला किया था कि उनके ख़ानदान की और औरतों के मिस्ल उन्हें मुहर दिया जाए जिस तरह मौत मुहर को मुक़र्रर कर देती है इसी तरह सिर्फ़ दुख़ूल से भी मुहर वाजिब हो जाता है। हाँ! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस हुक्म से मुस्तस्ना थे, ऐसी औरतों को कुछ देना आप पर वाजिब न था गो उसे शर्फ़ भी हासिल हो चुका हो इसलिए कि आपको बग़ैर मुहर के और बग़ैर वली के और बग़ैर गवाहों के निकाह कर लेने का इख़्तियार था जैसे कि हज़रत ज़ेनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) के क़िस्से में है।

हज़रत क़तादा (रज़ि.) फ़र्माते हैं, ''किसी औरत को यह जाइज़ नहीं कि अपने आपको बग़ैर वली और बग़ैर मुहर के किसी के निकाह में दे दे। हाँ! सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिए यह था।'' (तब्री : 20/288) और मोमिनों पर जो हमने मुक़र्रर कर दिया है उसे हम ख़ूब जानते हैं यानी वह चार से ज़्यादा बीवियाँ एक साथ नहीं रख सकते। (तब्री : 20/288) हाँ! उनके अलावा लौण्डियाँ रख सकते हैं और उनकी कोई तादाद मुक़र्रर नहीं। इसी तरह वली की, मुहर की, गवाहों की भी शर्त है। पस उम्मत के लिए तो यह हुक्म है और आप पर इसकी पाबन्दियाँ नहीं ताकि आप पर यह कोई हर्ज न हो। अल्लाह तआला बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है।

***

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ تُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾

तर्जुमा : "उनमें से जिसे तू चाहे मौक़ूफ़ रख दे और जिसे चाहे अपने पास रख ले और अगर तू उनमें से भी किसी को अपने पास बुला ले जिन्हें तूने मौक़ूफ़ कर रखा था तुझ पर कोई गुनाह नहीं। इसमें इस बात की ज़्यादा तवक़्क़ुअ है कि उन औरतों की आँखें ठण्डी रहें और वह रंजीदा न हों और जो कुछ भी तू इन्हें दे दे उस पर सबकी सब राज़ी रहें तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह तआला ख़ूब जानता है। अल्लाह तआला इल्म और हिल्म वाला है।" (51)

पैग़म्बर (ﷺ) को बीवियों को रखने या न रखने में इख़्तियार (आ. 51) : बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि "मैं उन औरतों पर आर रखा करती थी जो अपना नफ़्स हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को हिबा करें और कहती थीं कि औरतें बग़ैर मुहर के अपने आपको हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को हवाले करने में शर्माती नहीं हैं? यहाँ तक कि यह आयत उतरी तो मैंने कहा कि आपका रब आपके लिए कुशादगी करता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब, बाब क़ौलुहू (तुर्जी मन तशाउ मिन्हुन्न...) : 4788; सहीह मुस्लिम : 1464; इब्ने माजा : 2000; अहमद : 6/158) पस मालूम हुआ कि आयत से मुराद यही औरतें हैं। इनके बारे में अल्लाह के नबी (ﷺ) को इख़्तियार है कि जिसे चाहें क़बूल करें और जिसे चाहें, क़बूल न करें। फिर उसके बाद यह भी आपके इख़्तियार में है कि जिन्हें क़बूल न करें उन्हें जब चाहें नवाज़ दें। आमिर शअबी (रह.) से मरवी है कि जिन्हें मुअख़्ख़र कर रखा था उनमें हज़रत उम्मे शरीक थीं। एक मतलब इस जुम्ले का यह भी बयान किया गया है कि अपनी बीवियों के बारे में आपको इख़्तियार था कि अगर चाहें तक़्सीम करें, चाहें न करें, जिसे चाहें मुक़द्दम करें जिसे चाहें मुअख़्ख़र करें, इसी तरह ख़ास बातचीत में भी। लेकिन यह याद रहे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपनी पूरी उम्र बराबर अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात में अदल के साथ बराबरी की तक़्सीम करते रहे। कुछ फ़ुक़्हा-ए-शाफ़इया का क़ौल है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर तक़्सीम वाजिब थी।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि "इस आयत के नुज़ूल के बाद भी अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) हमसे इजाज़त लिया करते थे। मुझसे तो जब पूछते मैं कहती अगर मेरे बस में हो तो मैं किसी और के पास हर्गिज़ आपको न जाने दूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुतफ़्सीर, सूरतुल अहज़ाब, बाब क़ौलुहू (तुर्जी मन तशाउ मिन्हुन्न...) : 4789; सहीह मुस्लिम : 1476; अबूदाऊद : 2136; अहमद : 6/76; इब्ने हिब्बान : 4206) पस सही बात जो बहुत अच्छी है और जिससे इन अक़्वाल में मुताबिक़त भी हो जाती है वह यह है कि आयत आम है। अपने नफ़्स सौंपने वालियों और आपकी बीवियों को सबको शामिल है, हिबा करने वालियों के बारे में निकाह करने न करने का और निकाह वालियों में तक़्सीम करने न करने का आपको इख़्तियार था। (तबरी : 20/304) फिर फ़र्माता है कि यही हुक्म बिलकुल मुनासिब है और अज़्वाजे रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिए सहूलत वाला है। जब वह जान लेंगी कि आप बारियों के मुकल्लफ़ नहीं हैं फिर भी मसावात क़ायम रखते हैं तो उन्हें बहुत ख़ुशी होगी और मम्नून व शुक्रगुज़ार होंगी और आपके इंसाफ़ की दाद देंगी। अल्लाह तआला दिलों की हालतों से वाक़िफ़ है, वह जानता है कि किसे किस तरफ़ ज़्यादा रग़बत है।

मुस्नद अह़मद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने तौर पर सह़ीह़ तक़्सीम और पूरे अ़दल के बाद भी अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया करते थे कि इलाहल् आ़लमीन! जहाँ तक मेरे बस में था मैंने इंसाफ़ कर दिया। अब जो मेरे बस में नहीं उस पर तू मुझे मलामत न करना। (अबूदाऊद, किताबुन्निकाह़, बाब फ़िल क़समि बैनन्निसाइ : 2134; और इसकी सनद सह़ीह़ है; तिर्मिज़ी : 1140; नसाई : 3365; इब्ने माजा : 1971; अह़मद : 6/144; इब्ने अबी शैबा : 4/386; दारमी : 2/144; इब्ने ह़िब्बान : 4205; ह़ाकिम : 2/187; बैहक़ी : 7/998) यानी दिल के रुजूअ़ करने का इख़्तियार मुझे नहीं। अल्लाह तआ़ला सीनों की बातों का आ़लिम है लेकिन ह़िल्म व करम वाला है, चश्मपोशी करता है, माफ़ करता है।

***

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾

तर्जुमा : "इन औ़रतों के अ़लावा और औ़रतें आपके लिए ह़लाल नहीं और न यह ह़लाल है कि इन्हें छोड़कर और औ़रतों से निकाह़ करें अगरचे उनकी सूरत अच्छी भी लगती हो मगर जो तेरी मम्लूका हों। अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का पूरा निगहबान है।" (52)

अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए इन्आ़मे रब्बानी (आ. 52) : पहली आयतों में गुज़र चुका है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अज़्वाजे मुतह्हरात को इख़्तियार दिया कि अगर वह चाहें तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ज़ौजियत में रहें और अगर चाहें तो आपसे अलग हो जाएँ। लेकिन उम्महातुल मोमिनीन ने दामने रसूल को छोड़ना पसंद न किया। इस पर उन्हें अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से दुनियावी बदला में एक यह भी मिला कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को इस आयत में हुक्म हुआ कि अब इनके सिवा किसी और औ़रत से आप निकाह़ नहीं कर सकते, न आप इनमें से किसी को छोड़कर उसके बदले दूसरी ला सकते हैं गो वह कितनी ही अच्छी शक्लो सूरत की क्यूँ न हो? हाँ! लौण्डियों और कनीज़ों की और बात है। इसके बाद रब्बुल आ़लमीन ने यह तंगी आप पर से उठा ली और निकाह़ की इजाज़त दे दी लेकिन ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फिर और कोई निकाह़ किया ही नहीं। इस ह़र्ज के उठाने और फिर अ़मल के न होने में बहुत बड़ी मस्लिह़त यह थी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का यह एह़सान अपनी बीवियों पर रहे। चुनाँचे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि "आपकी वफ़ात से पहले ही अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए और औ़रतें भी ह़लाल कर दीं थीं।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन : बाब वमिन सूरतिल अह़ज़ाब : 3216; और इसकी सनद सह़ीह़ है; अह़मद : 6/41; इब्ने ह़िब्बान : 6366) ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से भी यह मरवी है कि ह़लाल करने वाली आयत (तुर्जी मन तशाउ मिन्हुन्ना) है यानी जो इस आयत से पहले गुज़र चुकी है। बयान में वह पहले है और उतरने में वह पीछे है। सूरह बक़रह में भी इसी त़रह़ इ़द्दते वफ़ात की पिछली आयत मंसूख़ है और पहली आयत उसकी नासिख़ है। (वल्लाहु आ़लम!)

इस आयत के एक और मअ़नी भी बहुत से ह़ज़रात से मरवी हैं। वह कहते हैं मत़लब इससे यह है कि जिन औ़रतों का ज़िक्र इससे पहले है उनके सिवा और ह़लाल नहीं। उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) से सवाल हुआ कि क्या हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की जो बीवियाँ थी अगर वह आपकी मौजूदगी में इंतिक़ाल कर जातीं तो आप और औ़रतों से निकाह़ नहीं कर सकते थे? आपने फ़र्माया, यह क्यूँ? तो साइल ने (ला यह़िल्लु) वाली आयत पढ़ी। यह सुनकर ह़ज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने फ़र्माया, "इसका मत़लब तो यह है कि औ़रतों की जो क़िस्में इससे पहले बयान हुई हैं यानी निकाह़ता बीवियाँ, लौण्डियाँ, चचा की, फूफी की, मामू की, ख़ालाओं की, बेटियाँ, हिबा करने वाली औ़रतें, उनके सिवा जो और क़िस्म की हों, जिनमें यह औसाफ़ न हों वह आप पर ह़लाल नहीं हैं।" (इब्ने जरीर) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सिवाय उन मुहाजिरात मोमिनात के और औ़रतों से निकाह़ करने की आपको मुमानिअ़त कर दी गई, ग़ैर मुस्लिम औ़रतों से निकाह़ ह़राम कर दिया गया। कुरआन में है (وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ) (5/माइदा : 5) यानी ईमान के बाद कुफ़्र करने वाले के आ़माल ग़ारत हैं। पस अल्लाह तआ़ला ने आयत (اِنَّآ اَحْلَلْنَا) (33/अह़ज़ाब : 50) में औ़रतों की जिन क़िस्मों का ज़िक्र किया वह तो ह़लाल हैं उनके अ़लावा और ह़राम हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब व़मिन सूरतिल अह़ज़ाब : 3215; और इसकी सनद ह़सन है।)

मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं "इनके सिवा हर क़िस्म की औ़रतें ख़्वाह वह मुसलमान हों, ख़्वाह ईसाई सब ह़राम हैं।" अबू स़ालेह़ फ़र्माते हैं कि "अ़राबिया और अंजान औ़रतों के निकाह़ से रोक दिये गए, लेकिन जो औ़रतें ह़लाल थीं उनमें से अगर चाहें सैंकड़ों कर लें, ह़लाल हैं।" अल्ग़र्ज़ आयत आ़म है उन औ़रतों को जो आपके घर में थीं और उन औ़रतों के अक़्साम बयान हुए सबको शामिल है और जिन लोगों से इसके ख़िलाफ़ मरवी है उनसे उसके मत़ाबिक़ भी मरवी है लिहाज़ा कोई मनफ़ी नहीं। हाँ! इस पर एक बात बाक़ी रह जाती है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) को त़लाक़ दे दी थी फिर उनसे रुजूअ़ कर लिया था और ह़ज़रत सौदा (रज़ि.) के फ़िराक़ का भी इरादा किया था जिस पर उन्होंने अपनी बारी का दिन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) को दे दिया। उसका जवाब इमाम इब्ने जरीर (रह़.) ने यह दिया है कि यह वाक़िया इस आयत के नाज़िल होने से पहले का है। बात यही है लेकिन हम कहते हैं इस जवाब की भी ज़रूरत नहीं। इसलिए कि आयत में इनके सिवा दूसरों से निकाह़ करने और उन्हें निकालकर औरों को लाने की मुमानिअ़त है न कि त़लाक़ देने की, वल्ल्लाहु आ़लम! ह़ज़रत सौदा (रज़ि.) वाले वाक़िया में आयत (وَ اِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ) (4/निसाअ : 128) उतरी है और ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) वाला वाक़िया अबूदाऊद वग़ैरह में मरवी है। (अबूदाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब मुराजिअ़ा : 2283; और इसकी सनद स़ह़ीह़ है; नसाई : 3590; इब्ने माजा : 2016; इब्ने ह़िब्बान : 4275; ह़ाकिम : 2/197; शैख़ अल्बानी (रह़.) ने इस रिवायत को सही क़रार दिया है। (सिलसिलतुस्सह़ीह़ : 2007)

अबू यअ़ला में है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) अपनी स़ाह़बज़ादी ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के पास एक दिन आए देखा कि वह रो रही हैं। पूछा कि शायद तुम्हें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने त़लाक़ दे दी। सुनो! अगर रुजूअ़ हो गया और फिर यही मौक़ा पेश आया तो क़सम अल्लाह की, मैं मरते दम तक तुमसे कलाम न करूँगा। (मुस्नदे

अबी यअ़ला : 172; इब्ने हिब्बान : 4276; दूसरा नुस्ख़ा : 4263; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अअ़मश मुदल्लस व अ़न्अ़न अ़न अबी सालेह रह.; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 9/244) आयत में अल्लाह तआ़ला ने आपको ज़ियादह करने से और किसी को निकालकर उसके बदले दूसरी को लाने से मना किया है मगर लौण्डियाँ हलाल रखी गयी हैं। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जाहिलियत में एक ख़बीस रिवाज यह भी था कि लोग आपस में बीवियों का तबादला कर लिया करते थे। यह अपनी उसे दे देता था और वह अपनी इसे दे देता था। इस्लाम ने इस गंदे रिवाज से मुसलमानों को रोक दिया। एक बार का वाक़िया है कि उ़येयना बिन हुसन फ़ुज़ारी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आये और अपनी जाहिलियत की आ़दत के मुताबिक़ बग़ैर इजाज़त लिये चले आये। उस वक़्त आपके पास हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बैठी हुई थीं। आपने फ़र्माया, "तुम बग़ैर इजाज़त क्यूँ चले आए? उसने कहा वाह! मैंने तो आज तक क़बीला मुज़र के ख़ानदान के किसी शख़्स से इजाज़त माँगी ही नहीं, फिर कहने लगा, यह आपके पास कौनसी औरत बैठी हुई थीं? आपने फ़र्माया, यह (उम्मुल मोमिनीन हज़रत) आ़इशा (रज़ि.) थीं। तो कहने लगा, हुज़ूर (ﷺ)! इन्हें छोड़ दें, मैं इनके बदले अपनी बीवी आपको देता हूँ जो ख़ूबसूरती में बेमिस्ल है। आपने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ने ऐसा करना हराम कर दिया है। जब वह चले गए तो माई साहिबा (रज़ि.) ने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह कौन था? आपने फ़र्माया, एक अहमक़ सरदार था, तुमने इनकी बातें सुनीं? इस पर भी यह अपनी क़ौम का सरदार है।" (बज़्ज़ार : 2251; दारे क़ुत्नी : 3/218; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/95; इसकी सनद में इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी फ़र्वा मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 1/193; रक़म : 768) इस रिवायत का एक रावी इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिलकुल गिरे हुए दर्जे का है।

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ
اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ
اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَاِذَا
سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا
كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ
كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿۵۳﴾ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۵۴﴾

तर्जुमा : "मुसलमानों! जब तक तुम्हें इजाज़त न दी जाए तुम नबी के घर में दाख़िल न हुआ करो। खाने के लिए भी इजाज़त के बाद जाओ यह नहीं कि पहले से जाकर बैठ गए और खाने के पकने का इंतिज़ार करते रहे बल्कि जब बुलाया जाये जाओ और जब खा चुको निकल खड़े हो जाया करो, फिर वहीं बातों में मशग़ूल न हो जाया करो, नबी को तुम्हारी यह हरकत नागवार गुज़रती है लेकिन वह लिहाज़ कर जाते हैं और अल्लाह तआला बयाने हक़ में किसी का लिहाज़ नहीं करता। जब तुम नबी की बीवियों से कोई चीज़ माँगों तो पर्दे के पीछे से माँगा करो, तुम्हारे और उनके दिलों की कामिल पाकीज़गी यही है। न तुम्हें यह जाइज़ है कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को तक्लीफ़ दो और न तुम्हें यह हलाल है कि आपके बाद किसी वक़्त भी आपकी बीवियों से निकाह करो। याद रखो कि अल्लाह के नज़दीक यह बहुत बड़ा गुनाह है। (53) तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तआला तो हर हर चीज़ का बख़ूबी इल्म रखने वाला है।" (54)

पर्दे का हुक्म और पैग़म्बर (ﷺ) के घर का एहतिराम (आ. 53, 54) : इस आयत में पर्दे का हुक्म है और शरई आदाब व अहकाम का बयान है। हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल के मुताबिक़ जो आयतें उतरी हैं उनमें एक यह भी है। बुख़ारी व मुस्लिम में आपसे मरवी है कि "तीन बातें मैंने कहीं जिनके मुताबिक़ ही रब्बुल आलमीन के अहकाम नाज़िल हुए! मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर आप मक़ामे इब्राहीम को क़िब्ला बनाएँ तो बेहतर हो। अल्लाह तआला का भी यही हुक्म उतरा कि (وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى) (2/बक़रह : 125) मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे तो यह अच्छा नहीं मालूम होता कि घर में हर कोई दाख़िल हो जाए, आप अपनी बीवियों को पर्दे का हुक्म दें तो अच्छा है। पस अल्लाह तआला की तरफ़ से पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ। जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की अज़्वाजे मुतहहरात ग़ैरत की वजह से कुछ कहने सुनने लगीं तो मैंने कहा किसी गुरूर में न रहना, अगर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तुम्हें छोड़ दें तो अल्लाह तआला तुमसे बेहतर बीवियाँ आपको दिलवायेगा। चुनाँचे यही आयत कुरआन में नाज़िल हुई।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, सूरह बक़रह बाब (वत्तख़ज़ू मिम मक़ामि इब्राहीमा मुसल्ला) : 4483; तिर्मिज़ी : 2959; अहमद : 1/24; इब्ने हिब्बान : 6892) सहीह मुस्लिम में एक चौथी मुवाफ़िक़त भी मज़्कूर है, वह बद्र के क़ैदियों का फ़ैसला है। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा (रज़ि.), बाब मिन फ़ज़ाइले उमर (रज़ि.) : 2399) और रिवायत में है। 6 हिज्री माह ज़ी क़अदा में जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत ज़ेनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से निकाह किया जो निकाह ख़ुद अल्लाह तआला ने कराया था, उसी सुबह को पर्दे की आयत नाज़िल हुई है। कुछ हज़रात कहते हैं, यह वाक़िया 3 हिज्री का है, वल्लाहु आलम!

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने जब हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) से निकाह किया तो लोगों की दावत की वह खा पीकर बातों में बैठे रहे। आपने उठने की तैयारी भी की, फिर भी वह न उठे, यह देखकर आप खड़े हो गए। आपके साथ ही कुछ लोग तो उठकर चल दिये। लेकिन फिर भी तीन शख़्स वहीं बैठे रह गए और बातें करते रहे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पलटकर आये तो देखा कि वह अभी तक बातों में लगे हुए हैं।

आप फिर लौट गए। जब यह लोग चले गए तो हज़रत अनस (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को ख़बर दी। अब आप घर में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मैंने भी जाना चाहा तो आपने अपने और मेरे बीच पर्दा कर दिया और यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब क़ौलुहू (ला तदख़ुलू बुयूतन् नबिय्यि इल्ला...) : 4791; सहीह मुस्लिम : 1428) और रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उस मौक़े पर गोश्त रोटी खिलाई थी और हज़रत अनस (रज़ि.) को भेजा था कि लोगों को बुला लाएँ। लोग आते थे, खाते थे और वापिस जाते थे। जब एक भी ऐसा न बचा कि जिसे हज़रत अनस (रज़ि.) बुलाते, तो आपको ख़बर दी। आपने फ़र्माया, ''अब दस्तरख़्वान बढ़ा दो।'' लोग सब चले गए मगर तीन शख़्स बातों में लगे रहे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) यहाँ से निकलकर हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गए और फ़र्माया, ''अस्सलामु अलयकुम अहलुल बैत व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। माई साहिबा ने जवाब दिया, व अलयकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि! फ़र्माईए हुज़ूर (ﷺ)! बीवी साहिबा से ख़ुश तो हैं? आपने फ़र्माया, अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दे। इसी तरह आप अपनी तमाम अज़्वाजे मुतहहरात के पास गए और सब जगह यही बातें हुईं। अब लौटकर जो आये तो देखा कि वह तीनों साहब अब तक गए नहीं। चूँकि आप में शर्म व हया लिहाज़ व मुरव्वत बेहद था। इसलिए आप कुछ फ़र्मा न सके और फिर से हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे की तरफ़ चले, अब न जाने मैंने ख़बर दी या आपको ख़ुद ख़बरदार कर दिया गया कि वह तीनों भी चले गए तो आप फिर आये और चौखट में एक क़दम रखते ही आपने पर्दा डाल दिया और पर्दा की आयत नाज़िल हुई।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब क़ौलुहू (ला तदख़ुलू बुयूतन् नबिय्यि इल्ला...) : 4793) एक रिवायत में बजाय तीन शख़्सों के दो का ज़िक्र है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब क़ौलुहू (ला तदख़ुलू बुयूतन् नबिय्यि इल्ला...) : 4794) इब्ने अबी हातिम में है कि ''आपके किसी नए निकाह पर हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने मालीदा बनाकर एक लगन में रखकर हज़रत अनस (रज़ि.) से कहा, इसे अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) को पहुँचाओ और कह देना थोड़ा सा तोहफ़ा हमारी तरफ़ से क़बूल कीजिए और मेरा सलाम भी कह देना। उस वक़्त लोग थे भी तंगी में। मैंने जाकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को सलाम किया, माई साहिबा का सलाम पहुँचाया और पैग़ाम भी। आपने उसे देखा और फ़र्माया, अच्छा इसे रख दो! मैंने घर के एक कोने में रख दिया। फिर फ़र्माया जाओ फ़लाँ और फ़लाँ को बुला लाओ। बहुत से लोगों के नाम लिए और फ़र्माया इनके अलावा जो मुसलमान मिल जाए। मैंने यही किया। जो मिला उसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के यहाँ खाने के लिए भेजता रहा। वापिस लौटा तो देखा कि घर और अंगनाई और बैठक सब लोगों से भरा है। तक़रीबन तीन सौ आदमी जमा हो गए थे। अब मुझसे आपने फ़र्माया, जाओ वह प्याला उठा लाओ, मैं लाया तो आपने अपना हाथ उस पर रखकर दुआ की और जो अल्लाह तआला ने चाहा आपने ज़ुबान से कहा, फिर फ़र्माया, चलो! दस दस आदमी हल्क़ा करके बैठ जाओ और बिस्मिल्लाह कह कहकर अपने अपने आगे से खाना शुरू करो। इसी तरह खाना शुरू हुआ और सबके सब खा चुके तो आपने फ़र्माया, प्याला उठा लो। हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने प्याला उठाकर देखा तो मैं नहीं कह सकता कि जिस वक़्त रखा था उस वक़्त उसमें ज़्यादा खाना था या अब? चंद लोग आपके घर में ठहर गए उनमें बातें हो रही थीं और उम्मुल मोमिनीन दीवार की तरफ़ मुँह फेरे बैठी हुई थीं। उनका इतनी देर तक न हटना हुज़ूरे अकरम

(ﷺ) पर शाक़ गुज़र रहा था। लेकिन शर्म व लिहाज़ की वजह से कुछ फ़र्माते न थे अगर उन्हें इस बात का इल्म हो जाता तो वह निकल जाते लेकिन वह बेफ़िक्री से बैठे ही रहे। आप घर से निकलकर और अज़्वाजे मुतह्हरात के हुज्रों के पास चले गए। फिर वापिस आये तो देखा कि वह बेफ़िक्री से बैठे ही रहे। आप घर से निकलकर और अज़्वाजे मुतहिरात के हुज्रों के पास चले गए। फिर वापिस आए तो देखा कि वह बैठे हुए हैं। अब तो यह भी समझ गए बड़े नादिम हुए और झट से निकल चले। आप अंदर बढ़े और पर्दा लटका दिया। मैं भी हुज्रे ही में था जो यह आयत उतरी और आप उसकी तिलावत करते हुए बाहर आए। सबसे पहले इस आयत को औरतों ने सुना और मैं तो सबसे पहले उनका सुनने वाला हूँ।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब अल् हदियते लिल ऊरूस : 5163; सहीह मुस्लिम : 1428; तिर्मिज़ी : 3218) पहले हज़रत ज़ेनब के पास आपका पैग़ाम ले जाने की रिवायत आयत (فَلَمَّا قَضٰى) (33/अहज़ाब : 37) की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है। इसके आख़िर में कुछ रिवायात में यह भी है कि फिर लोगों को नसीहत की गई और हाशिम की इस हदीस में इस आयत का बयान भी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुन्निकाह, बाब ज़वाजु ज़ेनब बिन्ते जहश रज़ि. व नुज़ूलुल हिजाब... : 1428)

इब्ने जरीर में है कि रात के वक़्त अज़्वाजे मुतह्हरात क़ज़ाए हाजत के लिए जंगल को जाया करती थीं। हज़रत उमर (रज़ि.) को यह पसंद न था। आप फ़र्माया करते थे कि उन्हें इस तरह न जाने दीजिए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस पर तवज्जह न फ़र्माते थे। एक बार हज़रत सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) निकलीं तो चूँकि फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) की मंशा यह थी कि किसी तरह अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) का यह निकलना बंद हुआ, इसलिए उन्हें उनके क़द व क़ामत की वजह से पहचानकर बआवाज़े बुलंद कहा कि हमने तुम्हें ऐ सौदा (रज़ि.)! पहचान लिया। इसके बाद पर्दे की आयतें उतरीं। इस रिवायत में यूँ ही है, लेकिन मशहूर यह है कि यह वाक़िया नुज़ूले हिजाब के बाद का है।

चुनाँचे मुस्नद अहमद में हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत है कि हिजाब के हुक्म के बाद हज़रत सौदा(रज़ि.) निकलीं.... इसमें यह भी है कि यह उसी वक़्त वापिस आ गईं। हुज़ूर (ﷺ) शाम का खाना तनावुल फ़र्मा रहे थे एक हड्डी हाथ में थी। आकर वाक़िया बयान किया उसी वक़्त वही नाज़िल हुई जब ख़त्म हुई उस वक़्त भी वह हड्डी हाथ मेंही थी, अभी छोड़ी ही न थी तो आपने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी ज़रूरतों की बिना पर बाहर निकलने की इजाज़त देता है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब क़ौलुहू (ला तदख़ुलू बुयूतन्नबिय्यि...) : 4795; सहीह मुस्लिम : 2170; अहमद : 6/56; अबू यअला : 4433) आयत में अल्लाह तआला मुसलमानों को इस आदत से रोकता है जो जाहिलियत में और इब्तिदाए इस्लाम में उनमें थीं कि बेइजाज़त दूसरे के घर में चले जाना। पस अल्लाह तआला इस उम्मत का इकराम करते हुए इसे यह अदब सिखाता है। चुनाँचे एक हदीस में भी यह मज़्मून है कि ख़बरदार! औरतों के पास न जाओ। (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब ला यख़लवुन्न रजुलुन बि इम्रातिल इल्ला ज़ू मरहम... : 5232) सहीह मुस्लिम : 2172; तिर्मिज़ी : 1171; अहमद : 4/149; इब्ने हिब्बान : 5588) फिर अल्लाह तआला ने उन्हें मुस्तस्ना कर लिया जिन्हें इजाज़त दे दी जाए, तो फ़र्माया मगर यह कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने की

तरफ़ ऐसे तौर पर कि तुम उसकी तैयारी के मुतंज़िर न रहो। मुजाहिद और क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि खाने के पकने और उसके तैयार होने के वक़्त ही न पहुँचो। (तब्री : 20/306) जब समझा कि खाना तैयार होगा, जा घुसे ये ख़स्लत अल्लाह को पसंद नहीं, ये दलील है तुफ़ैली बनने की हुर्मत पर इमाम ख़तीब बग़दादी (रह.) ने इसकी मज़म्मत में पूरी एक किताब लिखी है। फिर फ़र्माया जब बुलाए जाओ तो जाओ और जब खा चुको तो निकल जाओ। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि "तुममें से किसी को जब उसका भाई बुलाए तो उसे दावत क़बूल करनी चाहिए ख़्वाह निकाह की हो या कोई और।" (सहीह मुस्लिम, किताबुन्निकाह, बाब अल्अम्रु बि इजाबतिद्दाई इला दअ़वत : 1429) और हदीस में है "अगर मुझे एक खुर की दावत दी जाए तो भी मैं उसे क़बूल करूँगा। दस्तूरे दअ़वत में यह भी बयान किया। कि जब खा चुको तो फिर मेज़बान के यहाँ चौकड़ी मारकर न बैठ जाओ, बल्कि वहाँ से चले जाओ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब मन अजाब इला कराइ : 5187; अहमद : 2/424; इब्ने हिब्बान : 5291) बातों में मशग़ूल न हो जाया करो, जैसे उन तीन शख़्सों ने किया था जिससे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को तक्लीफ़ हुई लेकिन शर्म और लिहाज़ से कुछ न बोले। इसी तरह यह मतलब भी है कि तुम्हारा बेइजाज़त हुज़ूर (ﷺ) के घरों में चले जाना आप पर शाक़ (भारी) गुज़रता है लेकिन आप बवजह शर्म व हया के तुमसे कह नहीं सकते। अल्लाह तआ़ला तुमसे साफ़ साफ़ बयान कर रहा है कि अब ऐसा न करना। वह हक़ तआ़ला हुक्म देने से हया नहीं करता। तुम्हें जिस तरह बेइजाज़त आपकी बीवियों के पास जाना मना है। इसी तरह उनकी तरफ़ आँख उठाकर देखना भी हराम है अगर तुम्हें उनसे कोई ज़रूरी चीज़ लेनी देनी भी हो तो पस पर्दा लेन देन हो। इब्ने अबी हातिम में है पहले ही से खाने में शरीक थीं। हज़रत उमर (रज़ि.) अज़्वाजे मुतह्हरात के पर्दे की तमन्ना में थे, खाते हुए उँगलियों से उँगलियाँ लग गई तो बे साख़्ता फ़र्माने लगे, काश कि मेरी मान ली जाती और पर्दा कराया जाता तो किसी की निगाह भी न पड़ती। (सुननुल कुब्रा : 11419; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) उस वक़्त पर्दे का हुक्म उतरा।" फिर पर्दे की ता'रीफ़ कर रहा है कि मर्दों औरतों के दिलों की पाकीज़गी का यह ज़रिया है। किसी शख़्स ने आपकी किसी बीवी से आपके बाद निकाह करने का इरादा किया होगा इस आयत में यह हराम क़रार दिया गया चूँकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बीवियाँ ज़िन्दगी में और जन्नत में भी आपकी बीवियाँ हैं और जुम्ला मुसलमानों की वह माएँ हैं इसलिए मुसलमानों पर उनसे निकाह करना सिर्फ़ हराम है, यह हुक्म उन बीवियों के लिए जो आपके घर में आपके इंतिक़ाल के वक़्त थीं, सबके नज़दीक इज्माअ़न है लेकिन जिस बीवी को आपने अपनी ज़िन्दगी में तलाक़ दे दी और उससे मेल हो चुका हो तो उससे कोई और निकाह कर सकता है या नहीं? इसमें दो मज़हब हैं और जिससे दुख़ूल न किया हो और तलाक़ दे दी हो उससे दूसरे निकाह कर सकते हैं। क़ीला बिन्ते अश्अ़स बिन क़ैस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की मिल्कियत में आ गई थी, आपके इंतिक़ाल के बाद उसने इक्रिमा (रज़ि.) बिन अबू जहल से निकाह कर लिया।

हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पर यह गिराँ गुज़रा लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने समझाया कि ऐ ख़लीफ़-ए-रसूल! यह हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बीवी न थी न इसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने इख़्तियार दिया, न इसे पर्दे का हुक्म दिया और इसकी क़ौम की रुद्दत के साथ की इसकी रुद्दत की वजह से अल्लाह तआ़ला ने इसे हुज़ूरे

अकरम (ﷺ) से बरी कर दिया, यह सुनकर हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) को इत्मिनान हो गया। पस इन दोनों बातों की बुराई बयान फ़र्माता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को तक्लीफ़ देना उनकी बीवियों से उनके बाद निकाह कर लेना, यह दोनों गुनाह अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत बड़े हैं। तुम्हारी पोशीदा और ऐलानिया बातें सब अल्लाह तआला पर ज़ाहिर हैं उस पर कोई छोटी से छोटी चीज़ भी पोशीदा नहीं। आँखों की ख़यानत को सीने में छुपी हुई बातों को और दिल के इरादों को वह जानता है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ
اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۗ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا
عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : "औरतों पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने बापों और अपने बेटों और भाईयों और भतीजों और भांजों और मिल्कियत के मातहतों के सामने हों। औरतों अल्लाह तआला से डरती रहो अल्लाह तआला यक़ीनन हर चीज़ पर गवाह है। (55) अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते उस नबी (ﷺ) पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालों! तुम उन पर दुरूद भेजो और अच्छी तरह सलाम भी भेजते रहा करो।" (56)

जिनसे पर्दा न करने की इजाज़त है (आ. 55, 56) : चूँकि ऊपर की आयतों में अजनबियों से पर्दे का हुक्म हुआ था इसलिए जिन क़रीबी रिश्तेदारों से पर्दा न था उनका बयान इस आयत में कर दिया। सूरह नूर में भी इसी तरह फ़र्माया कि औरतें अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें, मगर अपने शौहर, बापों, ससुरों, शौहर के लड़कों, भाईयों, भतीजों, भांजों, औरतों और मिल्कियत जिनकी उनके हाथों में हो, उनके सामने यह काम करने वाले ग़ैर ख़्वाहिशमंद मर्दों या बच्चों के सामने, इसकी पूरी तफ़्सीर इसी आयत के तहत में गुज़र चुकी है। चचा और मामू का ज़िक्र यहाँ इसलिए नहीं किया गया कि मुम्किन है कि वह अपने लड़कों के सामने इनके औसाफ़ बयान करें। हज़रत शअबी और हज़रत इक्रिमा (रह.) तो इन दोनों के सामने औरत का दुपट्टा उतारना मकरूह जानते थे। (तब्री : 20/318) (निसाइहिन्न) से मुराद मोमिन औरतें हैं। मातहत से मुराद लौण्डी गुलाम हैं, जैसे कि पहले इसका बयान गुज़र चुका है और हदीस भी हम वहीं वारिद कर चुके हैं। सईद बिन मुसय्यिब (रह.) फ़र्माते हैं "इससे मुराद सिर्फ़ लौण्डियाँ हैं।" अल्लाह तआला से डरती रहो। अल्लाह तआला हर चीज़ पर शाहिद है। छुपा खुला सब उसे मालूम है। उस मौजूद और हाज़िर का ख़ौफ़ रखो और उसका लिहाज़ करती रहो।

आयते दुरूद और सलात के मआनी : सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबुल आलिया (रह.) से मरवी है कि "अल्लाह तआला का अपने नबी पर दुरूद भेजना अपने फ़रिश्तों के सामने आपकी सना व सिफ़त का बयान करना है और फ़रिश्तों का दुरूद आपके लिए दुआ करना है।" इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यानी बरकत की दुआ (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब क़ौलुहू (इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लूना अलन्नबी...) तअलीक़न क़ब्ल हदीस : 4797) अक्सर अहले इल्म का क़ौल है कि अल्लाह तआला का दुरूद रहमत है फ़रिश्तों का दुरूद इस्तिग़फ़ार है। (तिर्मिज़ी, किताबुल वित्र, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिस्सलाति अलन्नबिय्यि (ﷺ) तहत रक़म 485 बेसनद है।) अता (रह.) फ़र्माते हैं, "अल्लाह तबारक व तआला की सलात सुब्बूहुन कुद्दूसुन सबक़त रहमती ग़ज़बी है।" मक़्सूद इस आयते शरीफ़ा से यह है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की क़द्र व मंज़िलत, इज़्ज़त और मर्तबत लोगों की निगाहों में जच जाए वह जान लें कि ख़ुद अल्लाह तआला आपका सना ख़्वाँ है और उसके फ़रिश्ते आप पर दुरूद भेजते रहते हैं, मलओ आला की यह ख़बर देकर अब ज़मीन वालों को हुक्म देता है कि तुम भी आप (ﷺ) पर दुरूद सलाम भेजा करो ताकि आलमे अल्वा और आलमे सुफ़्ला के लोगों का इस पर इज्माअ हो जाए। हज़रत मूसा (عليه السلام) से बनी इस्राईल ने पूछा था कि क्या अल्लाह तआला तुम पर सलात भेजता है, तो अल्लाह तआला ने वही भेजी कि इनसे कह दो कि हाँ! अल्लाह तआला अपने नबियों और रसूलों पर रहमत भेजता रहता है। इसकी तरह इस आयत में भी इर्शाद है। दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि यही रहमत अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों पर भी फ़र्माता रहता है। इर्शाद होता है (هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَ مَلٰٓئِكَتُهٗ) (33/अहज़ाब : 43) यानी ऐ ईमान वालों! तुम अल्लाह तआला का बकसरत ज़िक्र करते रहा करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयान किया करो। वह ख़ु द तुम पर दुरूद भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी। और आयत में है (وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ) (2/बक़रह : 155) सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे जिन्हें जब कभी कोई मुसीबत पहुँचती है तो वह (इन्ना लिल्लाहि....) पढ़ते हैं। उन पर उनके रब की तरफ़ से दुरूद नाज़िल होते हैं। हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते सफ़ों के दाहिनी तरफ़ वालों पर सलात भेजते रहते हैं। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मंय्यस्तहिब्बु अंय्यलियल इमाम फ़िस्सफ़ व कराहियतुत्तअख़्ख़ुर : 676; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 1005; इब्ने हिब्बान : 2160)

दुरूद के अल्फ़ाज़ : दूसरी हदीस में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की एक शख़्स के लिए यह दुआ मरवी है कि "ऐ अल्लाह! आले अबी औफ़ा पर अपनी रहमत नाज़िल कर।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब सलातुल इमाम व दआइही लि साहिबिस्सदक़ति... : 1497; सहीह मुस्लिम : 1078; अबूदाऊद : 1590; अहमद : 4/353; मुस्नदे तयालिसी : 819) हज़रत जाबिर (रज़ि.) की बीवी साहिबा ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से दरख़्वास्त की कि मेरे लिए और मेरे शौहर के लिए सलात भेजते तो आपने फ़र्माया, "अल्लाह तआला तुझ पर और तेरे शौहर पर दुरूद नाज़िल करे।" (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब अस्सलातु अला ग़ैरिन्नबी : 1533; और इसकी सनद सहीह है; अहमद : 3/198; दारमी : 1/24; इब्ने हिब्बान : 916; बैहक़ी : 2/153) दुरूद शरीफ़ के बयान की बहुत सी अहादीस हैं जिनमें से थोड़ी हम यहाँ वारिद करते हैं। (वल्लाहुल मुस्तआन) बुख़ारी शरीफ़ में है कि आपसे कहा गया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम आपको सलाम करना तो

जानते हैं, सलात का तरीक़ा क्या है? आपने अत्तहिय्यातु के बाद दोनों दुरूद बतलाए लेकिन दोनों में व अ़ला आले इब्राहीम का लफ़्ज़ नहीं है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अह़ज़ाब, बाब क़ौलुहू (इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अ़लन्नबिय्यि) : 4797; अह़मद : 4/244; सह़ीह़ मुस्लिम : 406) एक और रिवायत अ़ला इब्राहीमा का लफ़्ज़ नहीं (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अस्सलातु अ़लन्नबिय्यि बअ़दत्तशह्हुद : 405) और रिवायत में पहला दुरूद तो पूरे लफ़्ज़ों के साथ है और दूसरा कुछ तग़य्युर के साथ। अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला आख़िर में व अ़लैना मअ़हुम भी कहते थे। (तिर्मिज़ी, किताबुल वित्र, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिस्सलाति अ़लन्नबिय्यि (ﷺ) : 483; और वह सह़ीह़ है।)

सलाम के अल्फ़ाज़ : जिस सलाम का यहाँ ज़िक्र है वह अत्तहिय्यात में (अस्सलामु अ़लैका अय्युहन्नबिय्यु व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू) है यह अत्तहिय्यात आप मिस्ल क़ुरआन की सूरत के सिखाया करते थे। एक रिवायत में (अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिन अ़ब्दिका व रसूलिक) भी है और पिछले दुरूद में क़द्रे तग़य्युर है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अह़ज़ाब, बाब क़ौलुहू (इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अ़लन्नबिय्यि) : 4798; इब्ने माजा : 903) एक रिवायत में दुरूद के अल्फ़ाज़ यह हैं (अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव्व अज़्वाजिही व ज़ुर्रियतिही कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीमा व बारिक अ़ला मुह़म्मदिंव्व अज़्वाजिही व ज़ुर्रियतिही कमा बारकता अ़ला इब्राहीमा इन्नका ह़मीदुम मजीद) (सह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया बाब नम्बर : 10; ह़दीस : 3369; सह़ीह़ मुस्लिम : 407; अबूदाऊद : 979; इब्ने माजा : 905) कुछ रिवायतों में अ़ला आले इब्राहीम के बाद फ़िल आ़लमीन का लफ़्ज़ भी है। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अस्सलातु अ़लन्नबिय्यि बअ़दत्तशह्हुद : 405) एक रिवायत में सवाल में यह लफ़्ज़ भी हैं कि दुरूद नमाज़ में हम किस तरह़ पढ़ें.... (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अस्सलातु अ़लन्नबिय्यि बअ़दत्तशह्हुद : 981; और वह सह़ीह़ है; अह़मद : 4/119; इब्ने ख़ुज़ैमा : 711; इब्ने ह़िब्बान : 1959; ह़ाकिम : 1/468) इमाम शाफ़ेई का मज़हब है कि नमाज़ के आख़िरी तशह्हुद में अगर किसी ने दुरूद नहीं पढ़ा तो उसकी नमाज़ सही नहीं होगी दुरूद का पढ़ना उस जगह वाजिब है। कुछ मुताख़्ख़िरीन ने इस मसले में इमाम साह़ब का रद्द किया है और कहा है कि यह सिर्फ़ उन ही का क़ौल है और इसके ख़िलाफ़ इज्माअ़ है। ह़ालाँकि यह ग़लत है सह़ाबा (रज़ि.) की एक और जमाअ़त ने यही कहा है। मस्लन ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द, ह़ज़रत अबू मसऊ़द बद्री, ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.)। ताबेईन में भी इस मज़हब के लोग गुज़रे हैं जैसे शअ़बी, अबू जअ़फ़र बाक़िर, मुक़ातिल बिन ह़य्यान (रह़ि.) वग़ैरह और शाफ़ेईया का तो सबका यही मज़हब है इमाम अह़मद का भी आख़िरी क़ौल यही है जैसे कि अबू ज़रअ़ा दमिश्क़ी का बयान है। इस्ह़ाक़ बिन राहवे, इमाम मुह़म्मद बिन इब्राहीम फ़क़ीह (रह़.) भी यही कहते हैं बल्कि कुछ ह़ंबली अइम्मा ने भी कहा है कि कम अज़्कम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नमाज़ में कहना वाजिब है जैसे कि सह़ाबा के सवाल पर आपने तालीम दी और हमारे कुछ साथियों ने आपकी आल पर दुरूद भेजना भी वाजिब कहा है। अल्ग़र्ज़ दुरूद का नमाज़ में वाजिब होने का क़ौल बहुत ज़ाहिर है और ह़दीस में इसकी दलील भी मौजूद है और सलफ़ और ख़लफ़ में इमाम शाफ़ेई (रह़.) के अलावा और अइम्मा भी इसके क़ाइल रहे हैं। पस यह कहना किसी तरह़ सही नहीं कि इमाम साह़ब ही का यह क़ौल है और यह ख़िलाफ़े इज्माअ़ है इसकी ताईद इस सह़ीह़ ह़दीस से भी

होती है जो मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, नसाई, इब्ने ख़ुज़ैमा वग़ैरह में है कि "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सुन रहे थे एक शख़्स ने बग़ैर अल्लाह तआला की हम्दो सना किये और बग़ैर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर दुरूद पढ़े अपनी नमाज़ में दुआ की तो आपने फ़र्माया इसने बहुत जल्दी की। फिर उसे बुलाकर फ़र्माया या किसी और को फ़र्माया कि जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़े तो पहले अल्लाह तआला की ता'रीफ़ें बयान करे फिर दुरूद पढ़े फिर जो चाहे दुआ माँगे।" (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाबुद्दुआइ : 1481; और इसकी सनद हसन है; तिर्मिज़ी : 3477; नसाई : 1285; अहमद : 6/18; इब्ने ख़ुज़ैमा : 709; इब्ने हिब्बान : 1960; हाकिम : 1/230) इब्ने माजा में है जिसका वुज़ू नहीं उसकी नमाज़ नहीं, जो वुज़ू में बिस्मिल्लाह न कहे उसका वुज़ू नहीं, जो नबी अकरम (ﷺ) पर दुरूद न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं। (इब्ने माजा, किताबुत्तहारत, बाब मा जाअ फ़ित्तस्मियति फ़िल वुज़ूइ : 400; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अब्दुल मुहैमिन रावी ज़ईफ़ है। दारे कुत्नी : 3551; हाकिम : 1/269; बैहक़ी : 2/379) जो अंसार से मुहब्बत न रखे उसकी नमाज़ नहीं। लेकिन इसकी सनद में अब्दुल मुहैमिन नामी रावी मतरूक है। तब्रानी में यह रिवायत उनके भाई से मरवी है लेकिन उसमें भी नज़र है और मअरूफ़ रिवायत पहली ही है, वल्लाहु आलम! मुस्नद में है कि हमने कहा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हम आप पर सलाम कहना तो जानते हैं दुरूद सिखा दीजिए। तो आपने फ़र्माया यूँ कहो (अल्लाहुम्मज्अल सलवातिका व रहमतिका व बरकातिका अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा जअल्तहा अला इब्राहीमा व आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद) (अहमद : 5/353; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; इस रिवायत में अबू दाऊद अल्अअमी मतरूक रावी है।) इसका एक रावी अबूदाऊद अअमी जिसका नाम नुफ़ैअ बिन हारिस है वह मतरूक है। हज़रत अली (रज़ि.) से लोगों को इस दुआ का सिखाना भी मरवी है –

اللهم داحی المدحوات وباری المسموکات وجبار القلوب علی فطر تها شقیتها وسعیدها اجعل شرائف صلواتک ونواحی برکاتک وفضائل الائک علی محمد عبدک و رسولک الفاتح لما اغلق والخاتم لما سبق والمعلن الحق بالحق والدامغ لجیشات الاباطیل کما حمل فاضطلع بامرک بطاعتک مستوفزا فی مرضاتک غیر نکل فی قدم ولا وهن فی عزم واعیا لوحیک حافظا لعهدک ماضیا علی نفاذ أمرک حتی اوریٰ قبسا لقباس الاء الله تصل باهله اسبابه به هدیت القلوب بعد خوضات الفتن والاثم وابهج موضحات الاعلام ونائرات الاحکام ومنیرات الاسلام فهو امینک المامون وخازن علمک المخزون وشهیدک یوم الدین وبعیثک نعمته و رسولک بالحق رحمته اللهم افسح له فی عدنک واجزه مضاعفات الخیر من فضلک له مهنات غیر مکدرات من فوز ثوابک المعلول وجزیل عطائک المحلول اللهم أعل علی بناء الناس بناءه واکرم مثواه لدیک ونزله واتمم له نوره واجزه من ابطغائک له مقبول الشهادة مرضی المقالته ذا منطق عدل وخطته فصل وحجته وبرهان عظیم

(इसकी सनद में सलामा कंदी मज्हूल और इसका हज़रत अली (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने फ़र्माया है, लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।)

मगर इसकी सनद ठीक नहीं। इसका रावी अबुल हज्जाज हुज़्ज़ी सलामा कुंदी न तो मअरूफ़ है न

उसकी मुलाक़ात हज़रत अली (रज़ि.) से साबित है। इब्ने माजा में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब तुम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर दुरूद भेजो तो बहुत अच्छा दुरूद पढ़ा करो बहुत मुम्किन है कि तुम्हारा यह दुरूद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर पेश किया जाए।'' लोगों ने कहा, फिर आप ही हमें कोई ऐसा दुरूद सिखा दें। आपने फ़र्माया ''बेहतर है यह पढ़ो (अल्लाहुम्मज्अल सलवातिका व रह़मतिका व बरकातिका अला सय्यिदिल मुर्सलीना व इमामिल मुत्तक़ीना व ख़ातिमिन्नबिय्यीना मुहम्मदिन अब्दिका व रसूलिका इमामिल ख़ैरि व क़ाइदिल ख़ैरि व रसूलिर्रहमति, अल्लाहुम्मब्अस्हु मक़ामम् महमूदय्यंग़्बितुहूल अव्वलूना वल आख़रून) इसके बाद अत्तहिय्यात के बाद के दोनों दुरूद हैं।'' (इब्ने माजा, किताब इक़ामतुस्सलवात, बाब अस्सलातु अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 906; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन मसऊदी मुख़्तलत रावी है (अत्तक़रीब : 1/687; रक़म : 1008) यह रिवायत भी मौक़ूफ़ है। इब्ने जरीर की एक रिवायत में है कि हज़रत यूनुस बिन हब्बाब ने अपने फ़ारस के एक ख़ुत्बे में इस आयत की तिलावत की फिर लोगों के दुरूद के तरीक़े के सवाल को बयान करके हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के जवाब में व अरहम मुहम्मदंव्व आला मुहम्मदिन कमा रहिम्ता आल इब्राहीमा को भी बयान किया है। (इसकी सनद में एक रावी है जिसका नाम नहीं लिया गया है लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) इससे यह भी इस्तिदलाल किया गया है कि आपके लिए रहम की दुआ भी है। जुम्हूर का यही मज़हब है। इसकी मज़ीद ताईद इस हदीस से भी होती है जिसमें है कि एक आराबी ने अपनी दुआ में कहा था, ऐ अल्लाह! मुझ पर और मुहम्मद (ﷺ) पर रहम कर और हमारे साथ किसी और पर रहम न कर तो आपने उससे फ़र्माया तूने बहुत ही ज़्यादा कुशादा चीज़ को तंग कर दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रहमतुन्नास वल बहाइम : 6010; अबूदाऊद : 380; तिर्मिज़ी : 148; अहमद : 2/239; इब्ने हिब्बान : 987) क़ाज़ी अयाज़ (रह.) ने जुम्हूर मालिकिया से इस का अदमे जवाज़ नक़्ल किया है। अबू मुहम्मद बिन अबू ज़ैद भी इसके जवाज़ की तरफ़ गए हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है कि जब तक कोई शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है तब तक फ़रिश्ते भी उसके लिए दुआए रहमत करते रहते हैं। अब तुम्हें इख़्तियार है कि कमी करो या ज़्यादती करो। (इब्ने माजा, किताब इक़ामतुस्सलवात, बाब अस्सलातु अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 907; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; आसिम बिन उबैदुल्लाह रावी ज़ईफ़ है। अहमद : 3/445) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं ''सबसे औला क़ियामत के दिन मुझसे वह होगा जो सबसे ज़्यादा मुझ पर दुरूद पढ़ा करता था।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल वित्र, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिस्सलाति अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 484; और इसकी सनद हसन है; तारीख़ुल कबीर : 5/177; इब्ने हिब्बान : 911)

फ़र्मान है ''जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे अल्लाह तआला उस पर अपनी दस रहमतें भेजता है। इस पर एक शख़्स ने कहा, फिर मैं अपनी दुआ का आधा वक़्त दुरूद में ही ख़र्च करूँगा। फ़र्माया, जैसी तेरी मर्ज़ी। उसने कहा, फिर मैं दो तिहाइयाँ कर लूँ? आपने फ़र्माया, अगर चाहे। उसने कहा, फिर तो मैं अपना सारा ही वक़्त उसके लिए ही कर देता हूँ। आपने फ़र्माया उस वक़्त अल्लाह तआला तुझे दीन व दुनिया के ग़म से नजात दे देगा और तेरे गुनाह माफ़ कर देगा।'' (और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) उबय बिन कअब (रज़ि.) का बयान है कि ''आधी रात को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बाहर निकलते और फ़र्माते हैं, हिला देने वाली आ रही है और उसके पीछे ही पीछे लगने वाली भी है। हज़रत उबय (रज़ि.) ने एक मर्तबा कहा, हुज़ूरे अकरम (ﷺ)! मैं रात

को कुछ नमाज़ पढ़ा करता हूँ तो इसका तिहाई हिस्सा आप पर दुरूद पढ़ता रहूँ। आपने फ़र्माया, आधा हिस्सा। उन्हों ने कहा आधा कर लूँ? फ़र्माया दो तिहाई। कहा अच्छा मैं पूरा वक़्त इसी में गुज़ारूँगा। आपने फ़र्माया तब तो अल्लाह तआला तेरे तमाम गुनाह माफ़ कर देगा।'' (तिर्मिज़ी, बाब फ़ज़्लुस्सलात अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 14; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है।)

इसी रिवायत की एक और सनद में है दो तिहाई रात गुज़रने के बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ''लोगों! अल्लाह तआला को याद करो, लोगों ज़िक्रुल्लाह करो। देखो! कपकपा देने वाली आ रही है मौत अपने साथ की कुल मुसीबतों और आफ़तों को लिए हुए चली आ रही है। मौत अपने साथ की कुल चीज़ों को लिये हुए आ रही है। हज़रत उबय (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आप पर बकसरत दुरूद पढ़ता हूँ पस कितना वक़्त इसमें गुज़ारूँ? आपने फ़र्माया, जितना तू चाहे। कहा चौथाई? फ़र्माया, जितना चाहो और ज़्यादा कर लो तो और अच्छा है। कहा आधा? तो यही जवाब दिया। पूछा दो तिहाई? तो यही जवाब मिला। कहा बस तो मैं सारा ही वक़्त इसमें गुज़ारूँगा। फ़र्माया फिर अल्लाह तआला तुझे तेरे तमाम हम व ग़म से बचा लेगा और तेरे गुनाह माफ़ कर देगा।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब फ़ित्तर्ग़ीब फ़ी ज़िक्रुल्लाहि व ज़िक्रुल मौत.... : 2457; अहमद : 5/136; हाकिम : 2/513; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अक़ील रावी ज़ईफ़ है।)

एक शख़्स ने आपसे कहा, हुज़ूर (ﷺ)! अगर मैं अपनी तमामतर सलात आप ही पर कर दूँ तो? आपने फ़र्माया ''दुनिया और आख़िरत के तमाम मक़ासिद पूरे हो जाएँगे?'' (अहमद : 5/136; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''आप एक बार घर से निकले मैं साथ हो लिया, आप खजूरों के एक बाग़ में गए वहाँ जाकर सज्दे में गिर गए और इतना लम्बा सज्दा किया इस क़द्र देर लगाई कि मुझे तो यह खटका गुज़रा कि कहीं आपकी रूह परवाज़ न कर गई हो। क़रीब जाकर आपको देखने लगा। इतने में आपने सर उठाया। मुझसे पूछा क्या बात है? मैंने अपनी हालत ज़ाहिर की। फ़र्माया, बात यह थी कि जिब्राईल (عليه السلام) मेरे पास आए और मुझसे फ़र्माया, मैं तुम्हें बशारत सुनाता हूँ कि जनाब बारी अ़ज़्ज़ व इस्मुहू फ़र्माता है जो तुझ पर दुरूद भेजेगा मैं भी उस पर दुरूद भेजूँगा और जो तुझ पर सलाम भेजेगा मैं भी उस पर सलाम भेजूँगा।'' (अहमद : 1/191; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अब्दुल वाहिद बिन मुहम्मद के सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) से सुनने में नज़र है। हाकिम : 2/333; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 2/287)

और रिवायत में है कि यह सज्दा इस अम्र पर अल्लाह तआला के शुक्रिये का था। (अहमद : 1/191; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) एक बार हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने किसी काम के लिए निकले, कोई न था, जो आपके साथ जाता तो हज़रत उमर (रज़ि.) जल्दी से पीछे पीछे गए। देखा कि आप सज्दे में हैं। दूर हटकर खड़े हो गए आपने सर उठाकर उनकी तरफ़ देखकर फ़र्माया, ''तुमने यह बहुत अच्छा किया कि मुझे सज्दे में देखकर पीछे हट गए। सुनो! मेरे पास जिब्राईल (عليه السلام) आए और फ़र्माया, आपकी उम्मत में से जो एक बार आप पर दुरूद भेजेगा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें उतारेगा और उसके दस दर्जे बुलंद कर देगा।'' (मुअजमुस् सग़ीर : 2/90; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।)

एक बार आप अपने सहाबा (रज़ि.) के पास आये। चेहरे से ख़ुशी ज़ाहिर हो रही थी। सहाबा (रज़ि.) ने सबब पूछा तो फ़र्माया। "एक फ़रिश्ते ने आकर मुझे यह बशारत दी कि मेरा उम्मती जब मुझ पर दुरूद भेजेगा तो अल्लाह तआला की दस रहमतें उस पर उतरेंगी। इसी तरह एक सलाम के बदले दस सलाम।" (नसाई, किताबुस्सहव; बाब फ़ज़्लुत्तस्लीम अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 1284; और इसकी सनद हसन है; अहमद : 4/30; इब्ने हिब्बान : 915; हाकिम : 2/420) और रिवायत में है कि "एक दुरूद के बदले दस नेकियाँ मिलीं, दस गुनाह माफ़ होंगे, दस दर्जे बढ़ेंगे और इसी के मिस्ल उस पर लौटाया जाएगा।" (अहमद : 4/29; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, अबू मअशर रावी ज़ईफ़ है।) जो शख़्स मुझ पर एक दुरूद भेजेगा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल करेगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अस्सलातु अलन्नबिय्यि (ﷺ) बअदत्तशहहुद : 408; अबूदाऊद : 1530; तिर्मिज़ी : 485; इब्ने हिब्बान : 906; अहमद : 3/372) फ़र्माते हैं "मुझ पर दुरूद भेजा करो, वह तुम्हारे लिए ज़कात है और मेरे लिए वसीला तलब किया करो वह जन्नत में एक आला दर्जा है जो एक शख़्स को ही मिलेगा क्या अजब कि वह मैं ही हूँ।" (अहमद : 2/365; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुस्नदे अबी यअला : 6414) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) का क़ौल है कि "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर जो दुरूद भेजता है अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते उस पर सत्तर दुरूद भेजते हैं। अब जो चाहे कम करे और जो चाहे ज़्यादती करे। सुनो! एक बार हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमारे पास आए ऐसे कि गोया कोई किसी की रुख़सत कर रहा हो। तीन बार फ़र्माया, कि मैं उम्मी नबी मुहम्मद (ﷺ) हूँ, मेरे बाद कोई नबी नहीं, मुझे निहायत खुला बहुत जामेअ और ख़त्म कर देने वाला कलाम दिया गया है। मुझे जहन्नम के दारोग़ों की, अर्श के उठाने वालों की गिनती बतला दी गई है मुझ पर ख़ास इनायत की गई है और मुझे और मेरी उम्मत को आफ़ियत अता की गई है। जब तक मैं तुममें मोजूद हूँ, सुनते और मानते रहो, जब मुझे मेरा रब ले जाए तो तुम किताबुल्लाह को मज़बूत थामे रहना। उसके हलाल को हलाल और उसके हराम को हराम समझना।" (अहमद : 2/172; और इसकी सनद ज़ईफ़ है (अत्तक़रीब : 1/44; रक़म : 574) फ़र्माते हैं कि जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाए उसे चाहिए कि मुझ पर दुरूद भेजे। एक बार के दुरूछ भेजने से अल्लाह तआला उस पर अपनी रहमतें नाज़िल करता है।" (सुननुल कुब्रा : 9889; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू इस्हाक़ सबीई अन्अन; मुस्नदे अबी यअला : 4002; मुस्नदे अबी तयालिसी : 2122) एक दुरूद दस रहमतें दिलवाता है और दस गुनाह माफ़ कराता है। (नसाई, किताबुस्सहव, बाब अल्फ़ज़्लु फ़िस्सलाति अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 1298; और इसकी सनद सहीह है; अल्अदबुल मुफ़्रद : 643; अहमद : 3/102; इब्ने हिब्बान : 904) "बख़ील वह है जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरूद न पढ़ा।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब रग़िम अन्फ़ु रजुलिन ज़ुकिरत इन्दहू : 3546; और इसकी सनद हसन है; सुननुल कुब्रा : 9884; अहमद : 1/301; हाकिम : 1/549) और रिवायत में है "ऐसा शख़्स सबसे बड़ा कंजूस है।" एक मुर्सल हदीस में है कि "इंसान को यह कंजूसी काफ़ी है कि मेरा नाम सुनकर दुरूद न पढ़े।" फ़र्माते हैं "वह शख़्स बर्बाद हुआ जिसके पास मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरूद न भेजा। वह भी बर्बाद हुआ जिसकी ज़िन्दगी में रमज़ान आया और ख़त्म हो जाने तक उसके गुनाह माफ़ न हुए। वह भी बर्बाद हुआ जिसने अपने माँ बाप के बुढ़ापे के ज़माने को पा लिया फिर भी उन्होंने उसे जन्नत में न पहुँचाया।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब रग़िम अन्फ़ु रजुलिन ज़ुकिरत इन्दहू : 3545; और इसकी सनद हसन है।)

यह अहादीस दलील हैं इस अम्र पर कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर दुरूद पढ़ना वाजिब है। उलमा की एक जमाअत का भी यही क़ौल है जैसे तहावी, हलीमी वग़ैरह। इब्ने माजा में है "जो मुझ पर दुरूद पढ़ना भूल गया उसने जन्नत की राह से ख़ता की।" (इब्ने माजा, किताब इक़ामतुस्सलवात, बाब अस्सलातु अलन्नबिय्यि (ﷺ) : 908; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; जब्बारा बिन मुग़्लिस रावी सख़्त ज़ईफ़ है।) यह हदीस मुर्सल है लेकिन पहली अहादीस से इसकी पूरी तक़्वियत हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं मज्लिस में एक बार तो वाजिब है फिर मुस्तहब है। (तिर्मिज़ी, तहत, रक़म : 3545 बेसनद है।) चुनाँचे तिर्मिज़ी की एक हदीस में है "जो लोग किसी मज्लिस में बैठें और अल्लाह तआला के ज़िक्र और दुरूद पढ़े बग़ैर उठ खड़े हों वह मज्लिस क़ियामत के दिन उन पर वबाल हो जाएगी। अगर अल्लाह तआला चाहे तो उन्हें अज़ाब करे चाहे माफ़ कर दे।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा जाअ फ़िल क़ौमि यज्लिसूना वला यज़्कुरूनल्लाह : 3380; और वह सहीह है; अहमद : 2/446; इब्ने हिब्बान : 590) और रिवायत में ज़िक्रुल्लाह का ज़िक्र नहीं। इसमें यह भी है कि गो वह जन्नत में जाएँ, लेकिन महरूमी सवाब के बाइस इन्हें सख़्त अफ़सोस रहेगा। कुछ का क़ौल है कि उम्रभर में एक मर्तबा आप पर दुरूद वाजिब है फिर मुस्तहब है ताकि आयत की ता'मील हो जाएगी। क़ाज़ी अयाज़ (रह.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर दुरूद भेजने के वुजूब को बयान करके इसी क़ौल की ताईद की है। लेकिन तब्री (रह.) फ़र्माते हैं कि आयत से तो इस्तिहबाब ही साबित होता है और इस पर इज्माअ का दावा किया है। बहुत मुम्किन है कि इनका मतलब भी यही हो कि एक बार वाजिब फिर मुस्तहब जैसे आपकी नबुव्वत की गवाही। लेकिन मैं कहता हूँ बहुत से ऐसे औक़ात हैं जिनमें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर दुरूद पढ़ने का हमें हुक्म मिला है। लेकिन कुछ वक़्त वाजिब है और कुछ जगह वाजिब नहीं। चुनाँचे अज़ान सुनकर देखिए मुस्नद की हदीस में है "जब तुम अज़ान सुनो तो जो मुअज़्ज़िन कह रहा है तुम भी कहो फिर मुझ पर दुरूद भेजो, एक के बदले दस दुरूद अल्लाह तुम पर भेजेगा फिर मेरे लिए वसीला माँगो जो जन्नत की एक मंज़िल है और एक ही बन्दा उसका मुस्तहिक़ है। मुझे उम्मीद है कि वह बन्दा मैं हूँ। सुनो! जो मेरे लिए वसीला की दुआ करता है उसके लिए मेरी सिफ़ारिश हलाल हो जाती है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिहबाबुल क़ौल मिस्ल क़ौलिल मुअज़्ज़िन लिमन समिअहू : 384; अबूदाऊद : 523; तिर्मिज़ी : 3614; अहमद : 2/168; इब्ने हिब्बान : 1690; बैहक़ी : 1/410) पहले दुरूद की ज़कात होने की हदीस में भी इसका बयान गुज़र चुका है। फ़र्मान है कि जो शख़्स दुरूद भेजे और कहे अल्लाहुम्म अंज़िल्हुल मक़अदल मुक़र्रब इन्दका यौमल क़ियामति, उसके लिए मेरी सिफ़ारिश क़ियामत के दिन वाजिब हो जाएगी। (अहमद : 4/108; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; वफ़ा बिन शुरैह मज्हूलुल हाल लम यूसिक़्हू ग़ैरू इब्ने हिब्बान, अल्मुअजमुलऔसत : 3309; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/163)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से दुआ मंक़ूल है (अल्लाहुम्म तक़ब्बल शफ़ाअत मुहम्मदिल कुब्रा वर्फ़अ दरजतहुल उल्या व अअतिहु सुअलहू फ़िल आख़िरति वल ऊला कमा आतैता इब्राहीमा व मूसा

मस्जिद में जाने और मस्जिद से निकलने के वक़्त। चुनाँचे मुस्नद में है कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) फ़र्माती हैं "जब हुज़ूर (ﷺ) मस्जिद में जाते तो दुरूद व सलाम पढ़कर अल्लाहुम्मग़्फ़िर-ली ज़ुनूबी वफ़्तह ली अब्वाबा रहमतिक। और जब मस्जिद से निकलते तो दुरूदो सलाम के बाद अल्लाहुम्मग़्फ़िर-ली

जुनूबी वफ़्तह़ ली अब्वाबा फ़ज़्लिक पढ़ते। (तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ मा यक़ूलु इन्द दुख़ूलिल मस्जिद : 314; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; लैस बिन अबी सुलैम रावी ज़ईफ़ है। इब्ने माजा : 771; अह़मद : 6/282; मुस्नदे अबी यअ़ला : 6822; शरह़स्सुन्ना : 381; इब्ने अबी शैबा : 1/338) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का फ़र्मान है जब मस्जिद में जाओ तो नबी अकरम (ﷺ) पर दुरूद पढ़ा करो।

नमाज़ के आख़िरी क़अ़दा में अत्तह़िय्यात का दुरूद। इसकी बह़स पहले गुज़र चुकी है। हाँ! पहले तशह्हुद में इसे किसी ने वाजिब नहीं कहा, अल्बत्ता मुस्तह़ब होने का एक क़ौल शाफ़ेई (रह़.) का है गो दूसरा क़ौल उसके ख़िलाफ़ भी उन्हीं से मरवी है।

जनाज़े की नमाज़ में आप पर दुरूद पढ़ना। चुनाँचे सुन्नत त़रीक़ा यह है कि पहली तक्बीर में सूरह फ़ातिह़ा पढ़े, दूसरी में दुरूद पढ़े, तीसरी में मय्यित के लिए दुआ करे, चौथी में अल्लाहुम्म ला तह़रिम्ना अज्रहू वला तफ़्तिन्ना बअ़दहू आख़िर तक पढ़े। एक स़ह़ाबी का क़ौल है, मस्नून नमाज़े जनाज़ा यूँ है कि इमाम तक्बीर कहकर आस्ता से अल्ह़म्दु पढ़े फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर दुरूद भेजे और जनाज़े के लिए मुख़्लिसाना दुआ करे और तक्बीरों में कुछ न पढ़े। फिर आहिस्ता से सलाम फेर दे। (ह़ाकिम : 1/360; वहुव स़ह़ीहुन; नसाई : 4/75; ह़ : 1991; बैहक़ी : 4/39; अल्उम्म लिश्शाफ़ेई : 1/239)

ईद की नमाज़ में ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द, ह़ज़रत अबू मूसा और ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के पास आकर वलीद बिन उ़क़्बा (रज़ि.) ने कहा ईद का दिन है। बताओ तक्बीरों की क्या कैफ़ियत है? अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, तक्बीरे तह़रीमा कहकर अल्लाह तआ़ला की ह़म्द कर, अपने नबी करीम (ﷺ) पर दुरूद भेज फिर दुआ माँग फिर तक्बीर कहकर, यही कर फिर तक्बीर कहकर यही कर, फिर तक्बीर कहकर यही कर, फिर तक्बीर कहकर। फिर क़िरअत कर फिर तक्बीर कहकर रुकूअ़ कर। फिर खड़ा होकर पढ़ और अपने रब की ह़म्द बयान कर और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर स़लवात पढ़ और दुआ कर और तक्बीर कह और इसी त़रह़ कर फिर रुकूअ़ में जा। ह़ज़रत हुज़ैफ़ा और ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने भी इसकी तस्दीक़ की।''

दुआ के ख़ात्मे पर। तिर्मिज़ी में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का क़ौल है कि दुआ आसमान व ज़मीन में मुअ़ल्लक़ रहती है यहाँ तक कि तू दुरूद पढ़े तब चढ़ती है। (तिर्मिज़ी, किताबुल वित्र, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिस्स़लाति अ़लन्नबिय्यि (ﷺ) : 486; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू क़ुर्रा मज्हूल रावी है।) एक रिवायत मरफ़ूअ़ भी इसी त़रह़ की आई है। उसमें यह भी है कि दुआ के शुरू में दरम्यान में और आख़िर में दुरूद पढ़ लिया करो। एक ग़रीब और ज़ईफ़ ह़दीस में है कि मुझे सवार के प्याले की त़रह़ न कर लो कि जब वह अपनी तमाम ज़रूरी चीज़ें ले लेता है तो पानी का कटोरा भर लेता है अगर वुज़ू की ज़रूरत पड़ी तो वुज़ू किया प्यास लगी तो पी लिया वरना पानी बहा दिया। दुआ के शुरू में दुआ के बीच में और दुआ के आख़िर में मुझ पर दुरूद पढ़ा करो। ख़ुसूसन दुआए क़ुनूत में दुरूद की ज़्यादा ताकीद है। ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) फ़र्माते हैं, ''मुझे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने यह कलिमात सिखाए जिन्हें वित्रों में पढ़ा करता हूँ (अल्लाहुम्मह दिनी फ़ीमन हदैत व आ़फ़िनी फ़ीमन आ़फ़ैत व तवल्लनी फ़ीमन तवल्लैत व बारिक ली फ़ीमा अअ़तैत व क़िनी शर्रमा क़ज़ैत फ़ इन्नका तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अ़लैक इन्नहू ला यज़िल्लु मंव्वलैता वला यइ़ज़्ज़ु मन आ़दैता तबारकता रब्बना व

तआलैत) (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब क़ुनूत फ़िल वित्र : 1425, 1426; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 464; इब्ने माजा : 1178; अहमद : 1/200; इब्ने हिब्बान : 945) नसाई की रिवायत में आख़िर में यह अल्फ़ाज़ भी हैं (सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यि) (नसाई, किताब क़ियामुल्लैल, बाब अद्दुआउ फ़िल वित्र : 1747; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अब्दुल्लाह बिन अली की हसन बिन अली (रज़ि.) से मुलाक़ात साबित नहीं है, पस सनद मुंक़तअ है।) जुम्आ के दिन और जुम्आ की रात में।

मुस्नद अहमद में है "सबसे अफ़ज़ल दिन जुम्अे का दिन है। इसी में हज़रत आदम (عليه السلام) पैदा किये गए इसी में क़ब्ज़ किये गए, इसी में नफ़्ख़ा है, इसी में बेहोशी है, पस तुम इस दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजो। तुम्हारे दुरूद मुझ पर पेश किये जाते हैं।" सहाबा(रज़ि.) ने पूछा आप तो ज़मीन में दफ़्नाये गए होंगे। फिर हमारे दुरूद आप पर कैसे पेश किये जाएँगे? आपने फ़र्माया, "अल्लाह तआला ने नबियों के जिस्मों को खाना ज़मीन पर हराम कर दिया है।" (अबूदाऊद, किताबु सलातिल जुम्अति, बाब फ़ज़्ल यौमुल जुम्आ : 1047; और इसकी सनद ज़ईफ़; अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन तमीम रावी ज़ईफ़ है। नसाई : 1375; इब्ने माजा : 1085; अहमद : 4/8; इब्ने हिब्बान : 910) इब्ने माजा में है "जुम्अे के दिन कसरत से दुरूद पढ़ो। इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। जब कोई मुझ पर दुरूद पढ़ता है उसका दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है जब तक वह फ़ारिग़ हो। पूछा गया मौत के बाद भी? फ़र्माया, अल्लाह तआला ने ज़मीन पर नबियों के जिस्मों को गलाना सड़ाना हराम कर दिया है, अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिये जाते हैं।" (इब्ने माजा, किताबुल जनाइज़, बाब ज़िक्रु वफ़ातिही व दफ़निही (ﷺ) : 1636; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) यह हदीस ग़रीब है और इसमें इंक़िताअ है। उबादा बिन नसई ने हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) को पाया नहीं, वल्लाहु आलम! बैहक़ी में भी हदीस है कि जुम्अे के दिन और जुम्अे की रात मुझ पर कसरत से दुरूद भेजो। (बैहक़ी : 3/249) लेकिन वह भी ज़ईफ़ है। एक रिवायत में है उसका जिस्म ज़मीन नहीं खाती जिससे रूहुल क़ुदुस ने कलाम किया हो। लेकिन यह हदीस मुर्सल है। एक और मुर्सल हदीस में भी जुम्अे के दिन और रात में दुरूद की कसरत का हुक्म है। इसी तरह ख़तीब पर भी दोनों ख़ुत्बों में दुरूद वाजिब है इसके बग़ैर ख़ुत्बे सहीह न होंगे। इसलिए कि यह इबादत है और इसमें ज़िक्रुल्लाह वाजिब है पस ज़िक्रे रसूल भी वाजिब होगा। जैसे अज़ान व नमाज़। शाफ़ेई और अहमद का यही मज़हब है।

अबूदाऊद में है "जो मुसलमान मुझ पर सलाम पढ़ता है। अल्लाह तआला मेरी रूह को लौटा देता है यहाँ तक कि मैं उसके सलाम का जवाब दूँ।" (अबूदाऊद, किताबुल मनासिक, बाब ज़ियारतुल क़ुबूर : 2041; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सनद में इंक़िताअ का शुब्हा है; अहमद : 2/527) अबूदाऊद में है "अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ, मेरी क़ब्र पर उर्स मेला न लगाओ, मुझ पर दुरूद पढ़ो गो तुम कहीं भी हो लेकिन तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचाया जाता है।" (अबूदाऊद, किताबुल मनासिक, बाब ज़ियारतिल क़ुबूर : 2042; और इसकी सनद हसन है।) क़ाज़ी इस्माईल बिन इस्हाक़ अपनी किताब फ़ज़्लुस्सलात में एक रिवायत लाये हैं कि "एक शख़्स हर सुबह रौज़-ए-रसूल पर आता था और दुरूद व सलाम पढ़ता था। एक दिन उससे हज़रत अली बिन हुसैन बिन अली (रह.) ने कहा, तुम रोज़ ऐसा क्यूँ करते हो? उसने जवाब दिया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर सलाम करना मुझे बहुत मरग़ूब है। आपने फ़र्माया, सुनो! मैं तुम्हें एक हदीस सुनाऊँ। मैंने

अपने वालिद से उन्होंने मेरे दादा से सुना है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी क़ब्र को ईद न बनाओ, न अपने घरों को क़ब्रें बनाओ, जहाँ कहीं तुम हो, वहीं से मुझ पर दुरूद व सलाम भेजो, वह मुझे पहुँच जाते हैं।" (मुस्नदे अबी यअ़ला : 469; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; फ़ीही मंय्यज्हल ह़ालुही) इसकी इस्नाद में एक रावी मुब्हम है जिसका नाम मज़्कूर नहीं और सनद से यह रिवायत मुर्सल मरवी है। ह़सन बिन ह़सन बिन अ़ली (रह़.) से मरवी है कि उन्होंने आपकी क़ब्र के पास कुछ लोगों को देखकर उन्हें यह ह़दीस सुनाई कि आपकी क़ब्र पर मेला लगाने से आपने रोक दिया है। (मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 6727; और इसकी सनद ज़ईफ़ है वहुव मुसलसल बिल एलल) मुम्किन है कि इनकी किसी बेअदबी की वजह से यह ह़दीस आपको सुनाने की ज़रूरत पड़ी हो। मस्लन वह बुलंद आवाज़ से बोल रहे हों। यह भी मरवी है कि आपने एक शख़्स को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के रौज़े पर पे दर पे आते हुए देखकर फ़र्माया कि तू और जो शख़्स उंदुलुस में हो, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर सलाम भेजने के एतिबार से बिलकुल एक जैसे हैं।

त़ब्रानी में है "जहाँ कहीं तुम हो वहीं सलाम भेजो। तुम्हारे सलाम मुझे पहुँचा दिये जाते हैं।" त़ब्रानी में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया कि यह ख़ास़ राज़ है। अगर तुम मुझसे न पूछते तो मैं भी न बताता। सुनो! मेरे साथ फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। जब मेरा ज़िक्र किसी मुसलमान के सामने किया जाता है और वह मुझ पर दुरूद भेजता है तो वह फ़रिश्ते कहते हैं। अल्लाह तआ़ला तुझे बख़्शे और ख़ुद अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन पर आमीन कहते हैं। (त़ब्रानी : 2753; और इसकी सनद मौज़ूअ़ है इसकी सनद में ह़कम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ख़त़ाफ़ है जिसे हैसमी ने कज़्ज़ाब कहा है। मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/96) यह ह़दीस बहुत ग़रीब है और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है।

मुस्नद अह़मद में है "अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन पर चलते फिरते रहते हैं मेरी उम्मत के सलाम मुझ तक पहुँचाते रहते हैं।" (नसाई, किताबुस्सह्व, बाब अत्तस्लीमु अ़लन्नबिय्यि (ﷺ) : 1283; और इसकी सनद स़ह़ीह़ है; अह़मद : 1/452) नसाई वग़ैरह में भी यह ह़दीस है। एक ह़दीस में है कि "जो मेरी क़ब्र के पास से मुझ पर सलाम पढ़ता है उसे मैं सुनता हूँ और जो दूर से सलाम भेजता है उसे मैं पहुँचाया जाता हूँ।" (इसकी सनद में मुह़म्मद बिन मरवान सुद्दी मतरूक (व मुत्तहम) रावी है। जिस त़रह़ कि ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने फ़र्माया है लिहाज़ा यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ व मर्दूद है।) यह ह़दीस सनदन स़ह़ीह़ नहीं। मुह़म्मद बिन मरवान सुद्दी स़ग़ीर मतरूक है।

(10) हमारे साथियों का क़ौल है कि एह़राम वाला जब लब्बैक पुकारे तो उसे भी दुरूद पढ़ना चाहिए। दारे क़ुत़्नी वग़ैरह में क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबूबक्र स़िद्दीक़ का फ़र्मान मरवी है कि लोगों को इस बात का हुक्म किया जाता था। स़ह़ीह़ सनद से ह़ज़रत फ़ारूक़े आ़ज़म (रज़ि.) का क़ौल मरवी है कि "जब तुम मक्का पहुँचो तो सात बार त़वाफ़ करो। मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअ़त नमाज़ अदा करो, फिर स़फ़ा पर चढ़ो इतना कि वहाँ से बैतुल्लाह नज़र आए। वहाँ खड़े होकर सात तक्बीरें कहो, उनके बीच अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना बयान करो। और दुरूद पढ़ो और अपने लिए दुआ़ करो। फिर मरवा पर भी इसी त़रह़ करो।"

(11) हमारे साथियों ने यह भी कहा है कि ज़िब्ह़ के वक़्त भी अल्लाह तआ़ला के नाम के साथ दुरूद

पढ़ना चाहिए। आयत (وَ رَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ) (94/अलम नशरह : 4) से उन्होंने ताईद चाही है क्योंकि इसकी तफ़्सीर में है कि जहाँ अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाए, वहीं आपका नाम भी लिया जाएगा, जुम्हूर उसके मुख़ालिफ़ हैं वह कहते हैं कि यहाँ सिर्फ़ ज़िक्रुल्लाह काफ़ी है। जैसे खाने के वक़्त और जिमाअ के वक़्त वग़ैरह वग़ैरह कि इन औक़ात में दुरूद का पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं हुआ। एक हदीस में है कि अल्लाह तआला के तमाम अम्बिया और रसूलों पर भी सलात व सलाम भेजो वह भी मेरी तरह अल्लाह तआला के भेजे हुए हैं। लेकिन इसकी सनद में दो ज़ईफ़ रावी हैं। उमर बिन हारून और उनके उस्ताद।

(12) कान की सनसनाहट के वक़्त भी दुरूद पढ़ना एक हदीस में है अगर उसकी इस्नाद सहीह साबित हो जाएँ तो सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा में है "जब तुममें से किसी के कान में सरसराहट हो तो मुझे ज़िक्र करके दुरूद पढ़े और कहे कि जिसने मुझे भलाई से याद किया उसे अल्लाह तआला भी याद करे।" इसकी सनद ग़रीब है और इसके सबूत में नज़र है।

मसला : अहले किताबत इस बात को मुस्तहब जानते हैं कि कातिब जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का नाम लिखे साथ लिखे। एक हदीस में है कि "जो शख़्स किसी किताब में मुझ पर दुरूद लिखे उसके दुरूद का सवाब उस वक़्त तक जारी रहता है जब तक वह किताब रहे" लेकिन कई वजह से यह हदीस सहीह नहीं। बल्कि इमाम ज़हबी (रह.) के उस्ताद तो उसे मौज़ूअ कहते हैं। हदीस बहुत से तरीक़ से मरवी है। लेकिन उसकी एक सनद भी सहीह नहीं। ख़तीब बग़दादी (रह.) अपनी किताब आदाबुर्रावी वस्सामिउ में लिखते हैं। मैंने इमाम अहमद (रह.) की दस्ती लिखी हुई किताब में बहुत जगह रसूलुल्लाह (ﷺ) का नाम देखा जहाँ दुरूद लिखा हुआ न था। आप ज़ुबानी दुरूद पढ़ लिया करते थे। (फ़स्ल) नबियों के सिवा ग़ैर नबियों पर सलात भेजना अगर तब्अन हो तो बेशक जाइज़ है जैसे हदीस में है, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिव्व आलिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रियतिही हाँ! सिर्फ़ ग़ैर नबियों पर सलात भेजने में इख़्तिलाफ़ है कुछ तो इसे जाइज़ बतलाते हैं और दलील में आयत (هُوَ الَّذِىْ يُصَلِّىْ عَلَيْكُمْ) (33/अहज़ाब : 43) और (أُولَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ) (2/बक़रह : 157) और (وَ صَلِّ عَلَيْهِمْ) (9/तौबा : 103) पेश करते हैं और यह हदीस भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास किसी क़ौम का सदक़ा आता तो आप (ﷺ) फ़र्माते सल्लि अलैहिम चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "जब मेरे वालिद आपके पास अपना सदक़ा का माल लाए तो आप (ﷺ)ने फ़र्माया (अल्लाहुम्मा सल्लि अला आले अबी औफ़ा) (बुख़ारी व मुस्लिम, इसकी तख़रीज पहले गुज़र चुकी है।) एक और हदीस में है कि एक औरत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझ पर और मेरे शौहर पर सलात भेजिए। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "सल्लल्ललाहु अलैकि व अला ज़ौजिका।" (इसकी तख़रीज पहले ही गुज़र चुकी है।) लेकिन जुम्हूर उलमा इसके ख़िलाफ़ हैं और कहते हैं कि अम्बिया के सिवा औरों पर ख़ास तौर से सलात भेजना मम्नूअ है। इसलिए इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल अम्बिया (عليهم السلام) के लिए इस क़द्र बकसरत हो गया है कि सुनते ही ज़हन में यही ख़याल जाता है कि यह नाम किसी नबी का है तो एहतियात इसी में है कि ग़ैर नबी के लिए यह अल्फ़ाज़ न कहे जाएँ। मस्लन अबूबक्र (عليه السلام) और अली (عليه السلام) न कहा जाए गो मअनी इसमें कोई क़बाहत नहीं जैसे मुहम्मद अज़्ज़ व जल्ल नहीं कहा जाता। हालाँकि ज़ी इज़्ज़त और ज़ी मर्तबा आप भी हैं। इसलिए कि यह अल्फ़ाज़ अल्लाह तआला की ज़ात के लिए मशहूर हो चुके हैं और किताब व सुन्नत में सलात का इस्तेमाल

ग़ैर अम्बिया के लिए हुआ है। वह बतौर दुआ के है। इसी वजह से आले अबी औफ़ा को उसके बाद किसी ने इन अल्फ़ाज़ से याद नहीं किया। न हज़रत जाबिर (रज़ि.) और उनकी बीवी को, यही मस्लक हमें भी अच्छा लगता है, वल्लाहु आलम! कुछ एक और वजह भी बयान करते हैं। यानी यह कि ग़ैर अम्बिया (ﷺ) के लिए यह अल्फ़ाज़ सलात इस्तेमाल करना बद दीनों का शैवा हो गया है वह अपने बुज़ुर्गों के हक़ में यही अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं पस इनकी इक़्तिदा हमें न करनी चाहिए। इसमें भी इख़्तिलाफ़ है कि यह मुख़ालिफ़त किस दर्जे की है, हुर्मत के तौर पर या कराहियत के तौर पर या ख़िलाफ़े औला। सहीह यह है कि यह मकरूह तंज़ीही है इसलिए कि बिदअतियों का तरीक़ा है जिस पर कारबंद होना हमें ठीक नहीं और मकरूह वही होता है जिसमें नही मक़्सूद हो। ज़्यादातर ऐतिबार इसमें इसी पर है कि सलात का लफ़्ज़ सलफ़ में नबियों पर ही बोला जाता रहा जैसे कि अज़्ज़ व जल्ल का लफ़्ज़ अल्लाह तआला ही के लिए बोला जाता रहा। अब रहा सलाम सो इसके बारे में शैख़ अबू मुहम्मद जुवैनी फ़र्माते हैं कि यह भी सलात के मअनी में है। पस ग़ायब पर इसका इस्तेमाल न किया जाए और जो नबी न हो उसके लिए ख़ास तौर से उसे भी न बोला जाए। पस अली (ﷺ) न कहा जाए। ज़िन्दों और मुर्दों का यही हुक्म है, हाँ! जो सामने मौजूद हो उससे ख़िताब करके सलामुन अलैक या सलामुन अलयकुम या अस्सलामु अलैक या अलयकुम कहना जाइज़ है और इस पर इज्माअ है। यहाँ पर यह बात याद रखनी चाहिए कि उमूमन मुसन्निफ़ीन के क़लम से अली (ﷺ) निकलता है या अली कर्रमल्लाहू वज्हहू निकलता है गो मअनन इसमें कोई हर्ज न हो लेकिन इससे और सहाबा की जनाब में एक तरह की सूए अदबी पायी जाती है। हमें सब सहाबा(रज़ि.) के साथ हुस्ने अक़ीदत रखनी चाहिए। यह अल्फ़ाज़ ता'ज़ीम व तकरीम के हैं इसलिए हज़रत अली (रज़ि.) से ज़्यादा मुस्तहिक़ इनके हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर और उस्मान (रज़ि.) हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "नबी करीम (ﷺ) के सिवा किसी और पर सलात न भेजनी चाहिए। हाँ! मुसलमान मर्दों औरतों के लिए दुआए मग़्फ़िरत करनी चाहिए।" हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने अपने एक ख़त में लिखा कि "कुछ लोग आख़िरत के आमाल से दुनिया के जमा करने की फ़िक्र में हैं और कुछ मौलवी वअज़ में अपने ख़लीफ़ों और अमीरों के लिए सलात के वही अल्फ़ाज़ बोलते हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिए थे। जब तेरे पास मेरा यह ख़त पहुँचे तो उनसे कह देना कि सलात सिर्फ़ नबियों के लिए है और आम मुसलमानों के लिए इसके सिवा जो चाहें दुआ करें।"

हज़रत कअब (रह.) कहते हैं "हर सुबह सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरकर क़ब्रे रसूलुल्लाह (ﷺ) को घेर लेते हैं और अपने पर समेटकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के लिए दुआए रहमत करते रहते हैं और सत्तर हज़ार रात को आते हैं। यहाँ तक कि क़ियामत के दिन जब आपकी क़ब्र मुबारक शक़्क़ होगी तो आपके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हों गे। (फ़रअ) इमाम नववी (रह.) फ़र्माते हैं कि "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर सलात व सलाम एक साथ भेजने चाहिएँ सिर्फ़ सल्लल्लाहु अलैहि या सिर्फ़ अलैहिस्सलाम न कहे।" इस आयत में भी दोनों ही का हुक्म है। पस बेहतर यह है कि यूँ कहा जाए, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लिम तस्लीमन

***

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٨﴾

तर्जुमा : ''जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) को ईज़ा देते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआला की फटकार है और उनके लिए निहायत ज़लील अज़ाब हैं। (57) जो लोग मोमिन मर्दों और औरतों को ईज़ा दें बग़ैर किसी जुर्म के जो उनसे सरज़द हुआ हो, वह बड़े ही बोहतानबाज़ और खुल्लम खुल्ला गुनहगार हैं।'' (58)

अल्लाह तआला, रसूल (ﷺ) और मोमिनों को ईज़ा देना गुनाह है (आ. 57, 58) : जो लोग अल्लाह तआला के अह्काम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके उसके रोके हुए कामों से न रुककर उसकी नाफ़र्मानियों पर जमकर उसे नाराज़ कर रहे हैं और उसके रसूल के ज़िम्मे तरह तरह के बोहतान बाँधते हैं वह मल्ऊन और मुअज़्ज़ब हैं। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं ''इससे मुराद तस्वीरें बनाने वाले हैं।'' बुख़ारी व मुस्लिम में फ़र्माने रसूल है कि ''अल्लाह तआला फ़र्माता है। मुझे इब्ने आदम ईज़ा देता है, वह ज़माने को गालियाँ देता है और ज़माना मैं हूँ। मैं ही दिन रात का हेर फेर कर रहा हूँ।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (युरीदूना अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि) : 7491; सहीह मुस्लिम : 2246; अबूदाऊद : 5274; अहमद : 2/238; इब्ने हिब्बान : 7516) मतलब यह है कि जाहिलियत वाले कहा करते थे। हाय ज़माने को हलाकी, उसने हमारे साथ यह किया और यूँ किया। पस अल्लाह तआला के अफ़्आल को ज़माने की तरफ़ मंसूब करके फिर ज़माने को बुरा कहते थे। तो गोया अफ़्आल के फ़ाइल यानी ख़ुद अल्लाह को बुरा कहते थे। हज़रत सफ़िया (रज़ि.) से जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने निकाह किया तो उस पर भी कुछ लोगों ने बातें बनानी शुरू की थीं। बक़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) यह आयत इस बारे में उतरी। (तब्री : 20/323) आयत आम है किसी तरह भी अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) को तक्लीफ़ दे वह इस आयत के मातहत मल्ऊन और मुअज़्ज़ब है। इसलिए कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ईज़ा देनी गोया अल्लाह तआला को ईज़ा देनी है। जिस तरह आपकी इताअत ऐन इताअते इलाही है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''मैं तुम्हें अल्लाह तआला को याद दिलाता हूँ। देखो अल्लाह तआला को बीच में रखकर मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरे अस्हाब को मेरे बाद निशाना न बना लेना। मेरी मुहब्बत की वजह से उनसे भी मुहब्बत रखना, उनसे बुग़्ज़ व बेर रखने वाला मुझसे दुश्मनी करने वाला है उन्हें जिसने ईज़ा दी उसने मुझे तक्लीफ़ दी और जिसने मुझे तक्लीफ़ दी उसने अल्लाह तआला को तक्लीफ़ दी। और जिसने अल्लाह तआला को तक्लीफ़ पहुँचाई यक़ीन मान कि अल्लाह तआला उसकी भूसी उड़ा देगा।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मन सब्ब अस्हाबन्नबी (ﷺ) : 3862; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अहमद : 5/54, 55; इब्ने हिब्बान : 7256; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद

मज्हूलुल हाल रावी है।) यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है। जो लोग ईमान वालों की तरफ़ इन बुराइयों को मंसूब करते हैं जिनसे वह बरी हैं वह बड़े बोहतानबाज़ हैं और ज़बरदस्त गुनहगार हैं। इस वईद में सबसे पहले तो कुफ़्फ़ार दाख़िल हैं। फिर राफ़ज़ी शिया जो सहाबा (रज़ि.) पर ऐबगिरी करते हैं और अल्लाह तआला ने जिनकी ता'रीफ़ें की हैं यह उन्हें बुरा कहते हैं। अल्लाह तआला ने साफ़ फ़र्मा दिया है कि वह अंसार व मुहाजिरीन से ख़ुश है। कुरआने करीम में जगह जगह इनकी मदह व सताइश मौजूद है लेकिन यह बेख़बर कुंद ज़हन उन्हें बुरा कहते हैं। इनकी मज़म्मत करते हैं और उनमें वह बातें बताते हैं जिनसे वह बिलकुल अलग हैं। हक़ यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से इनके दिल अंधे हो गए हैं। इसलिए इनकी ज़ुबानें भी उल्टी चलती हैं। क़ाबिले मदह लोगों की मज़म्मत करते हैं और मज़म्मत वालों की तारीफ़ें करते हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सवाल होता है कि ग़ीबत किसे कहते हैं? आप फ़र्माते हैं "तेरा अपने भाई का इस तरह ज़िक्र करना जिसे अगर वह सुने तो उसे बुरा मालूम हो। आपसे सवाल हुआ कि अगर वह बात उसमें हो तब? आपने फ़र्माया, तब तो ग़ीबत है वरना बोहतान है।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल ग़ीबत : 4874; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 1934; अहमद : 2/384; इब्ने हिब्बान : 5758; इस मअनी की रिवायत सहीह मुस्लिम 2589 में भी मौजूद है।) एक बार आपने अस्हाब (रज़ि.) से सवाल किया कि सबसे बड़ी सूदख़ोरी क्या है? उन्होंने कहा, अल्लाह जाने और अल्लाह का रसूल जाने। आपने फ़र्माया, "सबसे बड़ा सूद अल्लाह तआला के नज़दीक किसी मुसलमान की आबरूरेज़ी करना है। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।" (इब्ने अबी हातिम व मुस्नद अबी लैला : 4689; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अम्मार बिन अनस सराबिही इमरान अनस मक्की वहुव ज़ईफ़ुन)

***

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ
الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا
يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ
اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : "ऐ नबी (ﷺ)! अपनी बीवियों से और अपनी साहबज़ादियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें। इससे बहुत जल्द उनकी

शनाख़्त (पहचान) हो जाया करेगी फिर न सताई जाएँगी। अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। (59) अगर अब भी यह मुनाफ़िक़ और वह जिनके दिलों में बीमारी है और मदीना के वह लोग जो ग़लत अफ़वाहें उड़ाने वाले हैं बाज़ न आये तो हम तुझे उनकी तबाही पर मुसल्लत कर देंगे फिर तो वह चंद दिन ही तेरे साथ इस शहर में रह सकेंगे। (60) उन पर फटकार बरसाई गई। जहाँ भी मिल जाएँ पकड़ा जाए और ख़ूब मार पीट की जाए। (61) इनसे अगलों में भी अल्लाह तआला का यही दस्तूर जारी रहा, तू अल्लाह तआला के दस्तूर में कभी रद्दोबदल न पाएगा।'' (62)

मोमिन औरतों को पर्दे का हुक्म (आ. 59 से 62) : अल्लाह तआला अपने नबी करीम (ﷺ) को फ़र्माता है कि आप मोमिन औरतों से फ़र्मा दें बिलख़ुसूस अपनी बीवियों और साहबज़ादियों से क्यूँ कि वह तमाम दुनिया की औरतों से बेहतर व अफ़ज़ल हैं कि वह अपनी चादरें क़द्रे लटका लिया करें ताकि जाहिलियत की औरतों से मुम्ताज़ हो जाएँ। इसी तरह लौण्डियों से भी आज़ाद औरतों की पहचान हो जाए। ''जिल्बाब'' उस चादर को कहते हैं जो औरतें अपने दुपट्टा के ऊपर डाल लेती हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला मुसलमान औरतों को हुक्म देता है कि जब वह अपने किसी काम के लिए बाहर निकलें तो जो चादर वह ओढ़ती हैं उसे सर पर से झुकाकर मुँह ढाँक लिया करें। सिर्फ़ एक आँख खुली रखें।'' (तब्री : 20/324) इमाम मुहम्मद बिन सीरीन (रह.) के सवाल पर हज़रत उबेदह सलमानी (रह.) ने अपना चेहरा और सर ढाँककर और बाएँ आँख खुली रखकर बतला दिया कि यह मतलब इस आयत का है। (तब्री : 20/325) हज़रत इक्रिमा (रह.) का क़ौल है कि अपनी चादर से अपना गला ढाँप ले। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) फ़र्माती हैं ''इस आयत के उतरने के बाद अंसार की औरतें जब निकलती थीं तो इस तरह लगी छुपी चलती थीं कि गोया उनके सरों पर परिन्द हों। स्याह चादरें अपने ऊपर डाल लिया करती थीं।'' (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला (युदनीना अलैहिन्ना मिन जलाबीबिहिन्न) : 3101; और इसकी सनद हसन है।) जब ज़ोहरी (रह.) से सवाल हुआ कि क्या लौण्डियाँ भी चादर ओढ़ें? ख़्वाह शौहरों वाली हों या बेशौहरों वाली हों। फ़र्माया, दुपट्टा तो ज़रूर ओढ़ें अगर वह शौहरों वालियाँ हों और चादर न ओढ़ें ताकि उनमें और आज़ाद औरतों में फ़र्क़ रहे।

हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह .) से मंक़ूल है कि ''ज़िम्मी काफ़िरों की औरतों की ज़ीनत का देखना सिर्फ़ ख़ौफ़े ज़िना की वजह से मम्नूअ है न कि उनकी हुर्मत व इज़्ज़त की वजह से क्योंकि आयत में मोमिनों की औरतों का ज़िक्र है चादर का लटका लेना चूँकि अलामत है आज़ाद पाक दामन औरतों की इसलिए यह चादर के लटकाने से पहचान ली जाएँगी कि यह न वाही औरतें हैं न लौण्डियाँ हैं।'' सुद्दी (रह.) का क़ौल है कि ''फ़ासिक़ लोग अंधेरी रातों में रास्ते से गुज़रने वाली औरतों पर आवाज़ें कसते थे इसलिए यह निशान हो गया कि घर गृहस्थ वाली औरतों और लौण्डियों बाँदियों वग़ैरह में तमीज़ हो जाए और उन पाकदामन औरतों पर कोई लब न हिला सके।' ' फिर फ़र्माया कि जाहिलियत के ज़माने में जो बेपर्दगी की रस्म थी, जब तुम अल्लाह के इस हुक्म के आमिल बन जाओगे तो अल्लाह तआला तमाम अगला ख़ताओं को माफ़ कर देगा और तुम

पर रहमो करम करेगा। फिर फ़र्माता है कि अगर मुनाफ़िक़ लोग और बदकार लोग और झूठी अफ़वाहें दुश्मनों की चढ़ाई वग़ैरह की उड़ाने वाले अब भी बाज़ न आये और हक़ के तरफ़दार न हुए तो हम ऐ नबी (ﷺ)! तुझे उन पर ग़ालिब और मुसल्लत कर देंगे फिर तो वह मदीना में ठहर ही नहीं सकेंगे बहुत जल्द तबाह हो जाएँगे और जो कुछ दिन उनके मदीने की इक़ामत के गुज़रेंगे वह भी लअ़नत व फटकार में ज़िल्लत और मार में गुज़रेंगे। हर तरफ़ से धुत्कारे जाएँगे, राँदा दरगाह हो जाएँगे, जहाँ पाये जाएँगे गिरफ़्तार कर लिये जाएँगे और बुरी तरह क़त्ल किये जाएँगे ऐसे कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन पर जबकि वह अपनी सरकशी से बाज़ न आएँ मुसलमानों को ग़ल्बा देना यह हमारी क़दीमी सुन्नत है जिसमें न कभी तग़य्युर व तबद्दुल हुआ, न अब होगा।

***

يَسْئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَا
يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا
اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا
﴿٦٧﴾ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾

तर्जुमा : "लोग तुझसे क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। तू कह दे कि उसका इल्म तो अल्लाह ही को है तुझे क्या ख़बर बहुत मुम्किन है क़ियामत बिलकुल ही क़रीब हो। (63) अल्लाह तआला ने काफ़िरों पर लअ़नत की है और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (64) जिसमें वह हमेशा रहेंगे कोई हामी और मददगार न पाएँगे। (65) उस दिन उनके चेहरे आग में उलट पलट दिये जाएँगे। हसरत व अफ़सोस से कहेंगे कि काश! कि हम अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) की इताअ़त करते। (66) और कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बुज़ुर्गों की मानी जिन्होंने हमें राहे रास्त से भटका दिया। (67) परवरदिगार! तू उन्हें दुगुना अज़ाब कर और उन पर बहुत बड़ी लअ़नत नाज़िल फ़र्मा।" (68)

क़ियामत क़ायम होने का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है (आ. 63 से 68) : लोग यह समझकर कि क़ियामत कब आएगी, उसका इल्म हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को है, आपसे सवाल करते थे तो अल्लाह तआला ने सबको अपने नबी की ज़ुबानी मालूम करा दिया कि उसके नबी को नहीं मालूम। यह सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है। सूरह आराफ़ में भी यह बयान है और इस सूरत में भी। पहली सूरत मक्के में उतरी थी

यह सूरह मदीने में नाज़िल हुई जिससे ज़ाहिर करा दिया कि इब्तिदा से इंतिहा तक क़ियामत के सह़ीह़ वक़्त की तअय्युन आपको मालूम न थी। हाँ! इतना अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को मालूम करा दिया था कि क़ियामत का वक़्त है क़रीब जैसे और आयत में है (اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ) (54/क़मर : 1) और आयत में है (اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ) (21/अम्बिया : 1) और (اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ) (16/नह़ल : 1) वग़ैरह। अल्लाह तआला ने काफ़िरों को अपनी रह़मत से दूर कर दिया है उन पर अपनी हमेशा की लअनत नाज़िल की है। दारे आख़िरत में उनके लिए जहन्नम तैयार है जो बड़ी भड़कने वाली चीज़ है जिसमें वह हमेशा रहेंगे, न कभी निकल सकें न छूट सकेंगे और वहाँ न कोई अपना फ़रियादरस पाएँगे। न कोई दोस्त व मददगार जो उन्हें छुड़ा ले या बचा सके। यह जहन्नम में मुँह के बल डाले जाएँगे। उस वक़्त तमन्ना करेंगे कि काश! हम अल्लाह और रसूल के ताबेदार होते। मैदाने क़ियामत में भी इनकी यही तमन्नाएँ रहेंगी। हाथों को चबाते हुए कहेंगे कि काश! हम क़ुरआन के आमिल होते। काश! कि मैंने फ़लाँ को दोस्त न बनाया होता। इसने तो मुझे क़ुरआन व ह़दीस से बहका दिया। फ़िल्वाक़ेअ शैतान इंसान को ज़लील करने वाला है।

और आयत में है (رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝) (15/ह़िज्र : 2) बहुत जल्द कुफ़्फ़ार आरज़ू करेंगे कि काश! वह मुसलमान होते। उस वक़्त कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हमने अपने सरदारों और अपने उलमा की पैरवी की, उमरा और मशाएख़ीन के पीछे लगे, रसूल का ख़िलाफ़ किया और यह समझा कि हमारे बड़े सीधे रास्ते पर हैं, उनके पास ह़क़ है। आज साबित हुआ कि दरह़क़ीक़त वह कुछ न थे। उन्होंने तो हमें बहका दिया। परवरदिगार! तू इन्हें दोहरा अज़ाब दे, एक तो इनके अपने कुफ़्र का एक हमें बर्बाद करने का और इन पर बदतरीन लअनत नाज़िल कर। एक क़िरअत में (कबीरन) के बदले (कसीरन) है मतलब दोनों का यक्साँ हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम में है ''ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किसी ऐसी दुआ की दरख़्वास्त की जिसे वह नमाज़ में पढ़ें तो आपने यह दुआ सिखाई (अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव्वला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूबा इल्ला अन्त फ़ग़्फ़िर-ली मग़्फ़िरतम् मिन इन्दिका वर्ह़म्नी इन्नका अन्तल ग़फ़ूरुर रह़ीम) यानी ''ऐ अल्लाह! मैं ने बहुत से गुनाह किये हैं, मैं मानता हूँ कि तेरे सिवा कोई उन्हें माफ़ करने वाला कोई नहीं, पस तू अपने पास की बख़्शिश से मुझे बख़्श दे और मुझ पर रह़म कर, तू बड़ा ही बख़्शने वाला मेहरबान है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अद्दुआइ क़ब्लस्सलाम : 834; सह़ीह़ मुस्लिम : 2705; तिर्मिज़ी : 3531; इब्ने माजा : 3835; अह़मद : 1/4; इब्ने ह़िब्बान : 1976) इस ह़दीस में भी ज़ुल्मन कसीरन और कबीरन दोनों ही मरवी हैं। कुछ लोगों ने यह भी कहा है कि दुआ में कसीरन कबीरन दोनों लफ़्ज़ मिलाए लेकिन यह ठीक नहीं बल्कि ठीक यह है क भी कसीरन कहे कभी कबीरन दोनों लफ़्ज़ों में से जिसे चाहे कहे, इख़्तियार है जैसे कि आयत में दोनों क़िरअतों में से जिसे चाहे पढ़ सकता है। लेकिन दोनों को जमा नहीं कर सकता, वल्लाहु आलम! ह़ज़रत अली (रज़ि.) का एक साथी आपके मुख़ालेफ़ीन से कह रहा था कि क्या तुम अल्लाह तआला के यहाँ जाकर यह कहोगे कि (रब्बना इन्ना अतअना)

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

तर्जुमा : "ईमान वालों ! उन लोगों जैसे न बन जाना जिन्होंने मूसा (عليه السلام) को तक्लीफ़ दी जो दाग़ वह लगाते थे अल्लाह तआला ने उन्हें उससे बरी कर दिया। वह अल्लाह तआला के नज़दीक इज़्ज़तदार थे।" (69)

हज़रत मूसा (عليه السلام) का एक अजीब वाक़िया (आ. 69) : सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि "हज़रत मूसा (عليه السلام) बहुत ही शर्मीले और बड़े लिहाज़ वाले थे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहज़ाब बाब (ला तकूनू कल्लज़ीना आज़व मूसा) : 4796) यही मतलब है कुरआन की इस आयत का। किताबुत्तफ़्सीर में तो इमाम साहब (रह.) इस हदीस को इतनी ही मुख़्तसर लाए हैं। लेकिन अहादीसे अम्बिया के बयान में इसे लम्बी लाए हैं। उसमें यह भी है कि वह बवजह सख़्त हया व शर्म के अपना बदन किसी के सामने नंगा नहीं करते थे। बनी इस्राईल आपकी ईज़ा के दर पे हो गए और यह उड़ा दिया कि चूँकि इनके जिस्म पर बर्स के दाग़ हैं या इनके बैज़े बढ़ गए हैं या कोई और आफ़त है जिस वजह से यह इस क़द्र पर्दादारी करते हैं। अल्लाह तआला का इरादा हुआ कि यह बदगुमानी आपसे दूर कर दे। एक दिन हज़रत मूसा (عليه السلام) तंहाई में नंगे नहा रहे थे। एक पत्थर पर आपने कपड़े रख दिये थे। जब गुस्ल से फ़ारिग़ होकर आए, कपड़े लेने चाहे तो पत्थर आगे को सिरक गया आप अपनी लकड़ी लिए उसके पीछे गए। वह दौड़ने लगा, आप भी ऐ पत्थर! मेरे कपड़े, कहते हुए उसके पीछे दौड़ने लगे, बनी इस्राईल की जमाअत एक जगह बैठी हुई थी। जब आप वहाँ तक पहुँच गए तो अल्लाह तआला के हुक्म से पत्थर ठहर गया। आपने अपने कपड़े पहन लिए। बनी इस्राईल ने आपके तमाम जिस्म को देख लिया और जो निकम्मी बातें उनके कानों में पड़ी थीं उनसे अल्लाह तआला ने अपने नबी को बरी कर दिया। गुस्से में हज़रत मूसा (عليه السلام) ने तीन या चार या पाँच लकड़ियाँ पत्थर पर मारी थीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, वल्लाह! लकड़ी की मार के निशान उस पत्थर पर पड़ गए।" इसी बरा'त वग़ैरह का ज़िक्र इस आयत में है। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब नम्बर : 28; हदीस : 3404; सहीह मुस्लिम : 339; तिर्मिज़ी : 3221)

यह हदीस मुस्लिम में नहीं है, यह रिवायत बहुत सी सनदों से बहुत सी किताबों में है। कुछ रिवायतें मौक़ूफ़ भी हैं। हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि "एक बार हज़रत मूसा (عليه السلام) और हज़रत हारून (عليه السلام) पहाड़ पर गए थे। जहाँ हज़रत हारून (عليه السلام) का इंतिक़ाल हो गया। लोगों ने हज़रत मूसा (عليه السلام) की तरफ़ बदगुमानी की और आपको सुनाना शुरू कर दिया। परवरदिगारे आलम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया और वह उसे उठा लाए और बनी इस्राईल की मज्लिस के पास से गुज़रे, अल्लाह तआला ने उसे ज़बान दी और कुदरती मौत का इज़्हार किया।" उनकी क़ब्र का सही पता मालूम नहीं है सिर्फ़ उस टीले का लोगों को इल्म है और वही उनकी क़ब्र की जगह जानता है लेकिन बेज़ुबान तो है। (हाकिम : 2/579) हो सकता है कि ईज़ा यही हो और

हो सकता है कि वह ईज़ा हो जिसका बयान पहले गुज़रा। लेकिन मैं कहता हूँ यह भी हो सकता है कि यह और वह दोनों हों बल्कि इनके सिवा और भी ईज़ाएँ हों। "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने एक बार लोगों में कुछ तक़्सीम किया। इस पर एक शख़्स ने कहा, इस तक़्सीम से अल्लाह तआला की रज़ामंदी का इरादा नहीं किया गया। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने जब यह सुना तो मैंने कहा। ऐ अल्लाह तआला! के दुश्मन! मैं तेरी इस बात की ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज़रूर दूँगा। चुनाँचे मैंने जाकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को ख़बर कर दी। आपका चेहरा लाल हो गया। फिर फ़र्माया "अल्लाह तआला की रहमत हो मूसा (عليه السلام) पर वह इससे बहुत ज़्यादा ईज़ा दिये गए लेकिन उन्होंने सब्र किया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा ताइफ़ फ़ी शव्वालि सनति सिमान : 4335; सहीह मुस्लिम : 1062; अहमद : 1/235; इब्ने हिब्बान : 2917)

और रिवायत में है कि "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का आम इर्शाद था कि कोई भी मेरे पास किसी की तरफ़ से कोई बात न पहुँचाए। मैं चाहता हूँ कि मैं तुममें आकर बैठूँ तो मेरे दिल में किसी की तरफ़ से कोई बात चुभती न हो। एक बार कुछ माल आपके पास आया आपने उसे लोगों में बाँट दिया। दो शख़्स उसके बाद आपस में बातें कर रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) उनके पास से गुज़रे, एक दूसरे से कह रहा था कि अल्लाह की क़सम! इस तक़्सीम से न तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अल्लाह तआला की ख़ुशी का इरादा किया न आख़िरत के घर का। मैं ठहर गया और दोनों की बातें सुनीं। फिर ख़िदमते नबवी (ﷺ) में हाज़िर हुआ और कहा कि आपने तो यह फ़र्माया है कि किसी की कोई बात मेरे सामने न लाया करो। अभी का वाक़िया है कि मैं जा रहा था जो फ़लाँ और फ़लाँ से मैंने यह बातें सुनीं। उसे सुनकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ग़ुस्से से लाल हो गया और आप पर यह बात बहुत ही भारी पड़ी। फिर मेरी तरफ़ देखकर फ़र्माया। अब्दुल्लाह! जाने दो। देखो, मूसा (عليه السلام) इससे भी ज़्यादा सताये गए लेकिन उन्होंने सब्र किया।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी रफ़इल हदीस मिनल मज्लिस : 4860; मुख़्तसरन; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; वलीद बिन हिशाम मस्तूर और ज़ेद बिन ज़ाइद मज्हूलुल हाल रावी है। तिर्मिज़ी : 3896; अहमद : 1/395 वल् लफ़्ज़ु लहू) कुरआन फ़र्माता है मूसा (عليه السلام) अल्लाह तआला के नज़दीक बड़े मर्तबे वाले थे मुस्तजाबुद्दअवात थे। जो दुआ करते थे क़बूल होती थी। हाँ! अल्लाह तआला का दीदार न हुआ, इसलिए कि यह ताक़ते इंसानी से ख़ारिज था। सबसे बढ़कर उनकी वजाहत का सबूत इससे मिलता है कि उन्होंने अपने भाई हारून (عليه السلام) के लिए नबुव्वत माँगी। अल्लाह तआला ने वह भी अता की। फ़र्माता है (وَ وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝) (19/मरयम : 53) हमने उसे अपनी रहमत से उसके भाई हारून (عليه السلام) को नबी बनाकर दिया।

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ

عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا

الْاِنْسَانُ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ

وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालों ! अल्लाह तआला से डरो और सीधी सीधी सच्ची बातें किया करो। (70) ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे काम सँवार दे और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे। जो भी अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की ताबेदारी करे, उसने बड़ी मुराद पा ली। (71) हमने अपनी अमानत (कुरआन) को आसमानों पर ज़मीन पर और पहाड़ों पर पेश किया लेकिन सबने इसके उठाने से इंकार कर दिया और इससे डर गए मगर इंसान ने इसे उठा लिया, वह बड़ा ही ज़ालिम जाहिल है। (72) यह इसलिए कि अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ मर्दों औरतों को और मुश्रिक मर्दों औरतों को सज़ा दे और मोमिन मर्दों औरतों की तौबा क़बूल करे। अल्लाह तआला बड़ा ही बख़्शने वाला और मेहरबान है।" (73)

मोमिन को सीधी बात करनी चाहिए (आ. 70 से 73) : अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को अपने तक़्वे की हिदायत करता है उनसे फ़र्माता है कि इस तरह वह उसकी इबादत करें कि गोया उसे अपनी आँखों से देख रहे हैं और बात बिलकुल साफ़ सीधी सच्ची और भली बोला करें। जब वह दिल में तक़्वा ज़बान पर सच्चाई इख़्तियार कर लेंगे तो उसके बदले में अल्लाह तआला उन्हें आमाले सालेहा की तौफ़ीक़ देगा और उनके तमाम गुनाह माफ़ कर देगा। बल्कि आइन्दा के लिए भी इस्तिग़फ़ार की तौफ़ीक़ देगा ताकि गुनाह बाक़ी न रह जाएँ। अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़र्मांबरदार सच्चे कामयाब हैं जहन्नम से दूर और जन्नत से सरफ़राज़ हैं। एक दिन ज़ुहर की नमाज़ के बाद मर्दों की तरफ़ मुतवज्जह होकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "मुझे अल्लाह तआला का हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला से डरते रहने और सीधी बात बोलने का हुक्म दूँ। फिर औरतों की तरफ़ देखकर भी यही फ़र्माया।" (इब्ने अबी हातिम) (अहमद : 4/391; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/97; इसकी सनद में लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है।)

इब्ने अबिद्दुनिया की किताबुत्तक़्वा में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमेशा मिम्बर पर हर ख़ुत्बे में यह आयत तिलावत फ़र्माया करते थे। लेकिन इसकी सनद ग़रीब है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है जिसे यह बात पसंद हो कि लोग उसकी इज़्ज़त करें उसे अल्लाह तआला से डरते रहना चाहिए। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं क़ौले सदीद ला इलाहा इल्लल्लाह है। ख़ब्बाब (रह.) फ़र्माते हैं सच्ची बात क़ौले सदीद है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं हर सीधी बात क़ौले सदीद है। यह सब क़ौले सदीद में दाख़िल है।

अल्लाह तआला की अमानत से क्या मुराद है? हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि

''अमानत'' से मुराद यहाँ इताअत है इसे हज़रत आदम (ﷺ) पर पेश करने से पहले ज़मीन व आसमान और पहाड़ों पर पेश किया गया। लेकिन वह बारे अमानत न उठा सके और अपनी मजबूरी और मअज़ूरी का इज़्हार किया। अल्लाह तआला ने उसे अब हज़रत आदम (ﷺ) पर पेश किया कि यह सब तो इंकारी हैं तुम कहो। आपने पूछा, ऐ अल्लाह! इसमें बात क्या है? फ़र्माया अगर बजा लाओगे तो सवाब पाओगे और बुराई की सज़ा पाओगे। आपने फ़र्माया, मैं तैयार हूँ। आपसे यह भी मरवी है कि अमानत से मुराद फ़राइज़ हैं। दूसरों पर जो पेश किया था यह बतौर हुक्म के न था बल्कि जवाब तलब किया था तो उनका इंकार और इज़्हार मजबूरिये गुनाह न थी। बल्कि इसमें एक क़िस्म की ता'ज़ीम थी कि बावजूद पूरी ताक़त के अल्लाह तआला के डर से थर्रा उठे कि कहीं पूरी अदायगी न हो सके और मारे न जाएँ लेकिन इंसान जो कि भोला था उसने इस बारे अमानत को ख़ुशी ख़ुशी उठा लिया। (तब्री : 20/337) आप ही से यह भी मरवी है कि ''असर के क़रीब यह अमानत उठाई थी और मग़रिब से पहले ही ख़ता सरज़द हो गई।'' (हाकिम : 2/422; और इसकी सनद हसन है।) हज़रत उबय (रज़ि.) का बयान है कि ''औरत की पाकदामनी भी अल्लाह तआला की अमानत है। (तब्री : 20/338; हाकिम : 2/422; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) क़तादा (रह.) का क़ौल है दीन, फ़राइज़, हुदूद सब अल्लाह तआला की अमानत है।'' (तब्री : 20/339) जनाबत का गुस्ल भी बक़ौले कुछ अमानत है। ज़ेद बिन असलम (रह.) फ़र्माते हैं ''तीन चीज़ें अल्लाह तआला की अमानत हैं, ग़ुस्ले जनाबत और रोज़ा और नमाज़।'' मतलब यह है कि यह चीज़ें सबकी सब अमानते इलाही में दाख़िल हैं। कुल अहकाम को बजा लाने, कुल मम्नूआत से परहेज़ करने का इंसान मुकल्लफ़ है जो बजा लाएगा सवाब पाएगा जहाँ गुनाह करेगा सज़ा पाएगा।

इमाम हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं ख़याल करो आसमान बावजूद इस पुख़्तगी और ज़ीनत और नेक फ़रिश्तों का मस्कन (ठहरने की जगह) होने के अल्लाह तआला की अमानत बर्दाश्त न कर सका जब इसने ये मालूम किया कि बजाआवरी अगर न हुई तो अज़ाब होगा। ज़मीन बावजूद सलाहियत और सख़्ती के लम्बाई और चौड़ाई के, डर गई और अपनी आजिज़ी ज़ाहिर करने लगी। पहाड़ बावजूद अपनी बुलंदी और ताक़त और सख़्ती के उससे काँप गए और अपनी लाचारी ज़ाहिर करने लगे। मुक़ातिल (रह.) फ़र्माते हैं, ''पहले आसमानों ने जवाब दिया और कहा, यूँ तो हम मुतीअ हैं लेकिन हाँ! यह बात हमारे बस की नहीं, क्योंकि अदमे बजाआवरी की सूरत में ख़तरा बहुत बड़ा है। फिर ज़मीन से कहा गया कि अगर पूरी उतरी तो फ़ज़्लो करम से नवाज़ूँगा। लेकिन उसने कहा, यूँ तो हर तरह ताबेअ फ़र्मान हूँ जो फ़र्माया जाये अमल करूँ मेरी वुस्अत से तो यह बाहर है। फिर पहाड़ों से कहा गया। उन्होंने भी जवाब दिया कि नाफ़र्मानी तो हम करने के नहीं, अमानत डाल दी जाए तो उठा लेंगे, लेकिन यह बस की बात नहीं। हमें माफ़ फ़र्माया जाए। फिर हज़रत आदम (ﷺ) से कहा गया। उन्होंने कहा ऐ अल्लाह तआला! अगर पूरा उतरूँ तो क्या मिलेगा? फ़र्माया बड़ी बुज़ुर्गी व जन्नत मिलेगी, रहमो करम होगा और अगर इताअत न की तो नाफ़र्मानी की फिर सख़्त सज़ा होगी और आग में डाल दिये जाओगे। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! मंज़ूर है।'' मुजाहिद (रह.) फ़र्माते है ''आसमान ने कहा मैंने सितारों को जगह दी, फ़रिश्तों को उठा लिया लेकिन यह नहीं उठा सकूँगा। यह तो फ़राइज़ का तहम्मुल है जिसकी मुझ में ताक़त नहीं। ज़मीन ने कहा मुझमें तूने दरख़्त बोये, दरिया जारी किये, लोगों को बसाएगा, लेकिन यह अमानत

मेरे बस की नहीं, मैं फ़र्ज़ की पाबन्द होकर सवाब की उम्मीद पर अ़ज़ाब के एहतिमाल को नहीं उठा सकती। पहाड़ों ने भी यही कहा। लेकिन इंसान ने इसे लपककर उठा लिया।'' कुछ रिवायात में है कि तीन दिन तक वह गिरया वज़ारी करते रहे और अपनी बेबसी बतलाते रहे लेकिन इंसान ने इसे अपने सिर पर उठा लिया। अल्लाह तआ़ला ने उससे फ़र्माया, अब सुन! अगर तू नेक निय्यत रहा तो मेरी एआनत हमेशा तेरे शामिले हाल रहेगी, तेरी आँखों पर मैं दो पलकें कर देता हूँ कि मेरी नाराज़गी की चीज़ों से तू उन्हें बन्द कर ले, मैं तेरी ज़ुबान पर दो होंठ बना देता हूँ कि जब वह मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बोलना चाहे तो तू उसे बन्द कर ले, तेरी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त के लिए मैं लिबास नाज़िल करता हूँ कि मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तू उसे न खोले। ज़मीन व आसमान ने सवाब अ़ज़ाब से इंकार कर दिया और फ़र्मांबरदारी में मुसख़्ख़र रहे। लेकिन इंसान ने इसे उठा लिया।

एक बिलकुल ग़रीब मरफ़ूअ़ ह़दीस में है कि ''अमानत और वफ़ा इंसान पर नबियों की मअ़रिफ़त नाज़िल हुई अल्लाह तआ़ला का कलाम उनकी ज़ुबानों में उतरा, नबियों की सुन्नतों से उन्होंने हर भलाई और बुराई मालूम कर ली। हर शख़्स की नेकी बदी को जान लिया। याद रखो! सबसे पहले लोगों में अमानतदारी थी, फिर वफ़ा और अ़हद की निगहबानी और ज़िम्मेदारी को पूरा करना था। अमानतदारी के धुंधले से निशान लोगों के दिलों तक और मेरी उम्मत तक पहुँची। याद रखो अल्लाह तआ़ला उसी को हलाक करता है जो अपने आपको हलाक कर ले, उसे छोड़कर ग़फ़्लत में पड़ जाए। लोगों! होशियार रहो! देखते भालते रहो शैत़ानी वस्वसों से बचो। अल्लाह तआ़ला तुम्हें आज़मा रहा है कि तुममें से अच्छे अ़मल करने वाला कौन है? (इसकी सनद में ईसा बिन इब्राहीम बिन त़हमान हाशमी मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 3/308; रक़म : 6546) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं जो शख़्स ईमान के साथ इन चीज़ों को लाएगा, जन्नत में जाएगा। पाँचों वक़्तों में नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करता हो, वुज़ू, रुकूअ़, सज्दा और वक़्त समेत ज़कात को अदा करता हो, दिल की ख़ुशी के साथ ज़कात की रक़म निकालता हो। सुनो! अल्लाह की क़सम! यह बग़ैर ईमान के हो ही नहीं सकता। और अमानत को अदा करे।'' ह़ज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) से सवाल हुआ कि अमानत की अदायगी से क्या मुराद है? फ़र्माया, जनाबत का ग़ुस्ल। पस अल्लाह तआ़ला ने इब्ने आदम पर अपने दीन में से किसी चीज़ की इसके सिवा अमानत नहीं दी। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अल्मुह़ाफ़िज़तु अ़लस्सलवात : 429; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 1/47; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबान बिन अ़याश रावी मतरूक है।) तफ़्सीर इब्ने जरीर में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआ़ला की राह का क़त्ल तमाम गुनाहों को मिटा देता है मगर अमानत की ख़यानत को नहीं मिटाता। उन ख़ाइनों से क़ियामत के दिन कहा जाएगा जाओ उनकी अमानतें अदा करो। यह जवाब देंगे ऐ अल्लाह तआ़ला! कहाँ से अदा करें? दुनिया तो जाती रही। तीन बार यही सवाल व जवाब होगा। फिर हुक्म होगा कि इन्हें इनकी माँ हाविया में ले जाओ, फ़रिश्ते धक्के देते हुए गिरा देंगे, यहाँ तक कि उसकी तह तक पहुँच जाएँगे तो उन्हें इसी अमानत की हम शक्ल जहन्नम की आग की चीज़ नज़र पड़ेगी यह उसे लेकर ऊपर को चढ़ेंगे जब किनारे तक पहुँचेंगे तो पैर फिसल जाएगा। फिर गिर पड़ेंगे और जहन्नम के नीचे तक गिरते चले जाएँगे। फिर लाएँगे फिर गिरेंगे। हमेशा उसी अ़ज़ाब में रहेंगे। अमानत वुज़ू में भी है, नमाज़ में भी है, अमानत बातचीत में भी है और उन सबसे ज़्यादा अमानत उन चीज़ों में है जो किसी के पास बत़ौर अमानत रखी जाएँ।''

हज़रत बरा (रज़ि.) से सवाल होता है कि आपके भाई अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) यह क्या हदीस बयान कर रहे हैं ? तो आप उसकी तस्दीक़ करते हैं कि हाँ! ठीक है। (तब्री : 20/340; और इसकी सनद ज़ईफ़ है व हदीस की असल सनदन हसन है।) हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से मरवी है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने दो अहादीस सुनीं। एक को मैंने अपनी आँखों से देख लिया और दूसरी के ज़हूर का इंतिज़ार है। एक तो यह कि आपने फ़र्माया, अमानत लोगों की जिबिल्लत में उतारी गई, फिर क़ुरआन उतरा, अहादीस बयान हुईं फिर आपने अमानत के उठ जाने की बाबत फ़र्माया, इंसान सोयेगा जो उसके दिल से अमानत उठ जाएगी और ऐसा निशान रह जाएगा जैसे किसी के पैर पर कोई अंगारा लुढ़ककर आ गया हो और फफोला पड़ गया हो कि उभरा हुआ मालूम होता है। लेकिन अंदर कुछ भी नहीं। फिर आपने एक कंकर लेकर उसे अपने पैर पर लुढ़का कर दिखा दिया कि इस तरह लोग लेन देन ख़रीदो फ़रोख़्त किया करेंगे। लेकिन तक़रीबन एक भी ईमानदार न होगा यहाँ तक कि मशहूर हो जाएगा कि फ़लाँ क़बीले में कोई अमानतदार है और यहाँ तक कि कहा जाएगा कि यह शख़्स कैसा अक़्लमंद किस क़द्र ज़ैरक दाना और फ़रासत वाला है हालाँकि इसके दिल में दाने बराबर भी ईमान न होगा।'' हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''देखो! इससे पहले तो मैं हर एक से उधार सुधार कर लिया करता था क्योंकि अगर मुसलमान है तो ख़ुद वह मेरा हक़ दे जाएगा और अगर यहूदी व नसरानी है तो हुकूमते इस्लाम मुझे उससे दिलवा देगी। लेकिन अब तो सिर्फ़ फ़लाँ फ़लाँ को ही उधार देता हूँ बाक़ी बंद कर दिया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब रफ़उल अमानत : 6497; सहीह मुस्लिम : 143; तिर्मिज़ी : 2179; इब्ने माजा : 2053; अहमद : 5/383; इब्ने हिब्बान : 6762; बैहक़ी : 10/122)

मुस्नद अहमद में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि ''चार बातें जब तुझ में हों फिर अगर सारी दुनिया भी फ़ौत हो जाए तो तुझे नुक़्सान नहीं, अमानत की हिफ़ाज़त, बातचीत की सदाक़त, हुस्ने अख़्लाक़ और हलाल की रोज़ी।'' (अहमद : 2/177; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह.) की किताबुज़्ज़ुहद में है कि जबला बिन सहीम हज़रत ज़ियाद के साथ थे इत्तिफ़ाक़ से उनके मुँह से बातों ही बातों में निकल गया, क़सम है अमानत की! इस पर हज़रत ज़ियाद रोने लगे और बहुत रोये। मैं डर गया कि मुझसे कोई सख़्त गुनाह सरज़द हो गया। मैंने कहा, क्या वह इसे मकरूह जानते थे? फ़र्माया, हाँ! हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) इसे बहुत मकरूह जानते थे और इससे मना करते थे। अबूदाऊद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''वह हममें से नहीं जो अमानत की क़सम खाए।'' (अबूदाऊद, किताबुल ईमान वन्नुज़ूर, बाब कराहियतुल हलफ़ बिल अमानत : 3253; और इसकी सनद सहीह है; इब्ने हिब्बान : 1318; अहमद : 5/352) अमानतदारी जो हज़रत आदम(عليه السلام) ने की उसका नतीजा यह होगा कि मुनाफ़िक़ मर्द व औरत और मुश्रिक मर्द व औरत, यानी वह जो ज़ाहिर में मुसलमान और बातिन में काफ़िर थे और वह जो अंदर बाहर यक्साँ काफ़िर थे उन्हें तो सख़्त सज़ा मिले और मोमिन मर्द व औरत पर रहमते इलाही नाज़िल हो। जो अल्लाह तआला को उसके फ़रिश्तों को और उसके रसूल (ﷺ) को मानते थे और अल्लाह तआला के सच्चे फ़र्मांबरदार है। अल्लाह तआला ग़फ़ूरुर रहीम है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह अहज़ाब की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

सूरह सबा

سورة سبأ

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह सबा - 34

आयातः 54 मक्की सूरह, पैराग्राफः 7

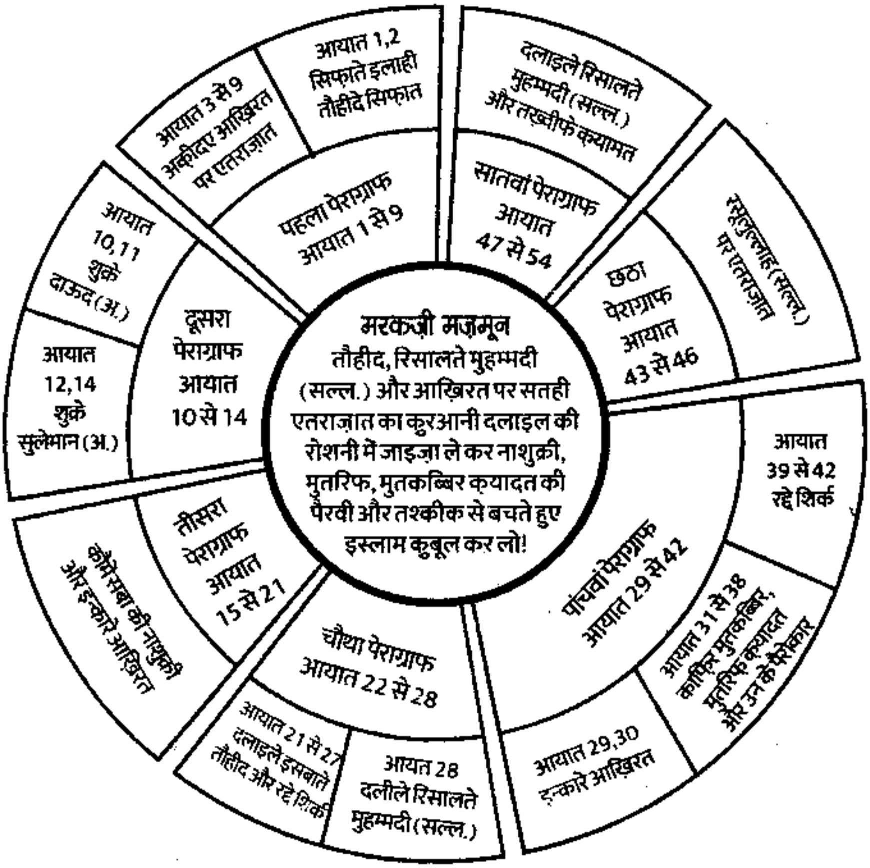

ज़मानए नुज़ूल :

सूरह सबा ऐलाने आम के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के दूसरे दौर (4 से 5 नबवी) के इब्तिदाई दौर में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) पर शको-रैब के साथ इल्ज़ामात के बोछार हो रही थी, जैसेः मजनून, शाइर, मुफ़्तरी वग़ैरह लेकिन मुख़ालिफ़त ने शिद्दत पैदा नहीं की थी। आले दाऊद (अ.) से जिस शुक्र का मुतालबा किया गया था, वही कुरैश से किय गया है और उन्हें कौमें सबा के अंजाम से डराया गया है। जिन्नता और मलाइका की इबादत के अक़ीदे को तर्क करने का मश्वरा भी दिया गया है।

तफ़्सीर सूरह सबा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ
الْخَبِيْرُ ① يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا
يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ②

तर्जुमा : "तमाम ता'रीफ़ें उस मअ़बूदे बरहक़ के लिए सज़ावार हैं जिसकी मिल्कियत में वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीन में है आख़िरत में भी क़ाबिले ता'रीफ़ वही है। वह बड़ी ह़िक्मतों वाला और पूरा ख़बरदार है। (1) जो ज़मीन में जाए और जो उससे निकले जो आसमान से उतरे और जो चढ़कर उसमें जाए वह सबसे बाख़बर है। और वह मेहरबान निहायत बख़्शने वाला है।" (2)

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं (आ. 1, 2) : चूँकि दुनिया और आख़िरत की सब नेअ़मतें रह़मतें अल्लाह तआ़ला ही की त़रफ़ से हैं सारी हुकूमतों का ह़ाकिम वही एक है। इसलिए हर क़िस्म की हर एक ता'रीफ़ व सना का मुस्तह़िक़ भी वही है। वही मअ़बूद है जिसके सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, उसी के लिए दुनिया और आख़िरत की ह़म्दो-सना सज़ावार है उसी की हुकूमत है और उसी की त़रफ़ सब लौटाए जाते हैं। ज़मीनों आसमान में जो कुछ है सब उसके मातह़त है, जितने भी हैं सब उसके गुलाम हैं, उसके क़ब्ज़े में हैं, सब पर तसर्रुफ़ उसी का है। जैसे और आयत में है (وَ اِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَ الْاُوْلٰى ﴿١٣﴾) (92/लैल : 13) आख़िरत में उसी की ता'रीफ़ें होंगी। वह अपने क़ौल व फ़ेअ़ल और तक़्दीर सबमें हुकूमतों वाला है और ऐसा ख़बरदार है जिस पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, जिससे कोई ज़र्रा पोशीदा नहीं, जो अपने अह़काम में ह़कीम, जो अपनी मख़्लूक़ से बाख़बर। जितने क़त़रे बारिश के ज़मीन में जाते हैं जितने दाने उसमें बोये जाते हैं, उसके इल्म से बाहर नहीं। जो ज़मीन से निकलता है, उगता है उसे भी वह जानता है। उसके मुह़ीत़ और वसीअ़ और बेपायाँ इल्म से कोई चीज़ दूर नहीं। हर चीज़ की गिनती कैफ़ियत और सिफ़त उसे मालूम है। आसमान से जो बारिश

बरसती है उसके क़तरों की गिनती भी उसके इल्म में महफ़ूज़ है जो रिज़्क़ वहाँ से उतरता है। उसके इल्म से नेक आमाल वग़ैरह जो आसमान पर चढ़ते हैं वह भी उसके इल्म में हैं। वह अपने बन्दों पर ख़ुद उससे भी ज़्यादा मेहरबान है इसी वजह से उनके गुनाहों पर इत्तलाअ रखते हुए उन्हें जल्दी से सज़ा नहीं देता बल्कि छूट देता है कि वह तौबा कर लें और बुराइयाँ छोड़ दें, रब की तरफ़ रुजूअ कर लें। फिर ग़फ़ूर है, इधर बन्दा झुका, गिरयावज़ारी की, उधर उसने बख़्श दिया, माफ़ फ़र्मा दिया, दरगुज़र कर लिया। तौबा करने वाला धुत्कारा नहीं जाता। तवक्कल करने वाला नुक़्सान नहीं उठाता।

***

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا
يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرُ
اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۳﴾ لِّيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۴﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِىْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ
﴿۵﴾ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِىْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِىْۤ اِلٰى
صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿۶﴾

तर्जुमा :''कुफ़्फ़ार कहते हैं कि क़ियामत क़ायम होने ही की नहीं। तू कह दे कि मुझे मेरे रब की क़सम! जो आलिमुल ग़ैब है कि वह यक़ीनन तुम पर आएगी, अल्लाह तआला से एक ज़र्रे के बराबर की चीज़ भी छुपी हुई नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में बल्कि उससे भी छोटी और बड़ी हर चीज़ खुली किताब में मौजूद है। (3) ताकि वह ईमान वालों और नेक लोगों को भला बदला अता करे, यही लोग हैं जिनके लिए मग़्फ़िरत और बाकरामत रोज़ी है। (4) हमारी आयतों के मुक़ाबले में जिन्होंने कोशिश की है यह वह लोग हैं जिनके लिए अलमनाक सज़ाओं का अज़ाब है। (5) जिन्हें इल्म है कि वह देख लेंगे कि जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है वह सरासर हक़ है और अल्लाह तआला ग़ालिब ख़ूबियों वाले की राह की रहबरी करता है।'' (6)

क़ियामत बरहक़ है (आ. 3 से 6) : पूरे क़ुरआन में तीन आयतें हैं जहाँ क़ियामत के आने पर क़सम खाकर बयान किया गया है। एक तो सूरह यूनुस में (وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِىْ وَرَبِّىْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕۚ وَمَاۤ اَنْتُمْ)

(بِمُعْجِزِيْنَ) (10/यूनुस : 53) लोग तुझसे पूछते हैं कि क्या क़ियामत का आना हक़ ही है? तू कह दे कि हाँ! हाँ! मेरे रब की क़सम! वह यक़ीनन हक़ ही है और तुम अल्लाह तआला को मग़लूब नहीं कर सकते। दूसरी आयत यही। तीसरी आयत सूरह तग़ाबुन में (زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ) (64/तग़ाबुन : 7) यानी कुफ़्फ़ार का ख़्याल है कि वह क़ियामत के दिन उठाये न जाएँगे, तू कह दे कि हाँ! मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाये जाओगे। फिर अपने आमाल की ख़बर दिये जाओगे और यह तो अल्लाह तआला पर बिलकुल ही आसान है। पस यहाँ भी काफ़िरों का इंकारे क़ियामत ज़िक्र करके अपने नबी (ﷺ) को उनका जवाबे क़स्मिया बतलाकर फिर इसकी मज़ीद ताकीद करते हुए फ़र्माता है कि वह अल्लाह तआला जो आलिमुल ग़ैब है जिससे कोई ज़र्रा छुपा हुआ नहीं सब उसके इल्म में है। गो हड्डियाँ सड़ गल जाएँ, उनके रेज़े अलग अलग हो जाएँ। लेकिन वह कहाँ हैं ? कितने हैं? सब वह जानता है। वह उन सबके जमा करने पर पूरा क़ादिर है जैसे कि पहले उन्हें पैदा किया। वह हर चीज़ का जानने वाला है और तमाम चीज़ें उसके पास उसकी किताब में भी लिखी हुई हैं। फिर क़ियामत के आने की हिक्मत बयान की कि ईमान वालों को उनकी नेकियों का बदला मिले, वह मग़्फ़िरत और रिज़्के करीम से नवाज़े जाएँ और जिन्होंने अल्लाह तआला की बातों से ज़िद्द की रसूलों की न मानी, उन्हें बदतरीन और सख़्त सज़ाएँ हों। नेककार मोमिन जज़ा और बदकार कुफ़्फ़ार सज़ा पाएँगे। जैसे फ़र्माया जहन्नमी और जन्नती बराबर नहीं। जन्नती कामयाब और मक़्सद वर हैं।

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना हक़ है : और आयत में है (اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا) (38/साद : 28) यानी मोमिन और मुफ़्सिद, मुत्तक़ी और फ़ाजिर बराबर नहीं। फिर क़ियामत की एक और हिक्मत बयान की कि ईमान वाले भी क़ियामत के दिन नेकों को जज़ा और बुरों को सज़ा होते हुए देखेंगे तो वह इल्मुल यक़ीन से ऐनुल यक़ीन हासिल कर लेंगे और उस वक़्त कह उठेंगे कि हमारे रब के रसूल हमारे पास हक़ लाये थे और उस वक़्त कहा जाएगा कि यह है जिसका वादा रहमान ने दिया था और रसूलों ने सच सच कह दिया था। अल्लाह तआला ने तो लिख दिया था कि तुम क़ियामत तक रहोगे तो अब क़ियामत का दिन आ चुका, वह अल्लाह तआला अज़ीज़ है यानी बुलंद जनाब वाला, बड़ी सरकार वाला है, बहुत इज़्ज़त वाला है पूरे ग़ल्बे वाला है, न उस पर किसी का बस, न किसी का ज़ोर, हर चीज़ उसके सामने पस्त और आजिज़। वह क़ाबिले ता'रीफ़ है अपने क़ौल और फ़ेअल शरअ व फ़ेअल में उन तमाम में उसकी सारी मख़्लूक़ उसकी सना करने वाली है, जल्ल व अला।

***

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ
خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۞ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي
الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۞ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ

السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ۭ

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ⑨

तर्जुमा : ''काफ़िरों ने कहा आओ हम तुम्हें एक ऐसा शख़्स बतलाएँ जो तुम्हें यह ख़बर दे रहा है कि जब तुम बिलकुल ही रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो तुम फिर से एक नई पैदाइश में आओगे। (7) हम नहीं कह सकते कि ख़ुद इसने ही अल्लाह तआला पर झूठ बाँध लिया है या इसे दीवानगी है हक़ीक़त यह है कि आख़िरत पर यक़ीन न रखने वाले ही अज़ाब में और दूर की गुमराही में पड़े हैं। (8) क्या वह अपने आगे पीछे आसमान व ज़मीन को देख नहीं रहे। अगर हम चाहें तो इन्हें ज़मीन में धंसा दें या इन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। यक़ीनन इसमें पूरी दलील है हर उस बन्दे के लिए जो दिल से मुतवज्जह हो।'' (9)

दोबारा जी उठने पर कुफ़्फ़ार का मज़ाक़ (आ. 7 से 9) : काफ़िर और मुल्हिद जो क़ियामत के आने को मुहाल (असम्भव) जानते हैं और इस पर अल्लाह तआला के नबी का मज़ाक़ बनाते थे। उनके कुफ़्रिया कलिमात का ज़िक्र हो रहा है कि वह आपस में कहते थे लो और सुनो! हममें एक साहब हैं जो फ़र्माते हैं कि जब मरकर मिट्टी में मिल जाएँगे और चूरा चूरा और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे। उसके बाद भी हम ज़िन्दा किये जाएँगे, इस शख़्स की निस्बत दो ही ख़्याल हो सकते हैं, या तो यह कि होश व हवास की दुरुस्ती में वह अमदन अल्लाह तआला के ज़िम्मे एक झूठ बोल रहा है और जो उसने नहीं फ़र्माया वह उसकी तरफ़ निस्बत करके यह कह रहा है और अगर यह नहीं तो इसका दिमाग़ ख़राब है, मज्नून है, बेसोचे समझे जो जी में आया, ज़बान पर चढ़ा, कह देता है। अल्लाह तआला उन्हें जवाब देता है कि यह दोनों बातें नहीं। हुज़ूर (ﷺ) सच्चे हैं, नेक हैं, राहयाफ़्ता हैं, दाना हैं, बातिनी और ज़ाहिरी बसीरत वाले हैं। लेकिन इसका क्या किया जाए कि मुंकिर लोग जिहालत और बेसमझी से काम ले रहे हैं और ग़ौरो फ़िक्र से बात की तह तक पहुँचने की कोशिश ही नहीं करते, एक इंकार सीख लिया है जिसे जाबजा और बेजा इस्तेमाल करते रहते हैं जिसकी वजह से हक़ बात और सीधी राह इनसे छूट जाती है और बहुत दूर निकलकर खड़े हो जाते हैं। क्या उसकी कुदरत में तुम कोई कमी देख रहे हो। जिसने मुहीत आसमान और बसीत ज़मीन पैदा कर दी। जहाँ जाओ न आसमान का साया छूटे न ज़मीन का फ़र्श।

जैसे फ़र्मान है (وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝) (51/ज़ारियात , 47, 48) ''हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और हम कुशादगी वाले हैं। ज़मीन को हमने ही बिछाया और हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।''

यहाँ भी फ़र्माया कि आगे देखो तो और पीछे देखो तो इसी तरह दाएँ नज़र डालो तो और बायें तरफ़ इल्तिफ़ात करो तो वसीअ आसमान और बसीत ज़मीन नज़र आएगी। इतनी बड़ी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ इतनी

ज़बरदस्त क़ुदरतों पर क़ादिर, क्या तुम जैसी छोटी से मख़्लूक़ को फ़ना करके फिर पैदा करने पर क़ुदरत नहीं रख सकता? वह तो क़ादिर है कि अगर चाहे तुम्हें ज़मीन में धंसा दे या आसमान तुम पर तोड़ दे। यक़ीनन तुम्हारे ज़ुल्म और गुनाह इसी क़ाबिल हैं। लेकिन अल्लाह तआला का हुक्म और अफ़्व है कि वह तुम्हें मोहलत दिये हुए है। जिसमें अक़्ल हो जिसमें दूरबीनी का माद्दा हो, जिसमें ग़ौरो फ़िक्र की आदत हो। जिसमें अल्लाह तआला की तरफ़ झुकने वाली तबीयत हो, जिसके सीने में दिल, दिल में हिक्मत और हिक्मत में नूर हो, वह तो इन ज़बरदस्त निशानात को देखने के बाद उस क़ादिर व ख़ालिक़ अल्लाह तआला की इस क़ुदरत में शक कर ही नहीं सकता कि मरने के बाद फिर जीना है। आसमानों जैसे शामियाने और ज़मीनों जैसे फ़र्श जिसने पैदा कर दिये उस पर इंसान की पैदाइश क्या मुश्किल है? जिसने हड्डियों, गोश्त और खाल को शुरूआत में पैदा किया। उसे इनके सड़ गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बाद इकट्ठा करके उठाना बिठाना क्या भारी है?

इसी को और आयत में फ़र्माया (أَوَ لَيْسَ الَّذِىْ) (36/यासीन : 81) यानी जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा कर दिया वह इन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं ? बेशक क़ादिर है और आयत में है (لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ) (40/मोमिन : 57) यानी "इंसानों की पैदाइश से बहुत ज़्यादा मुश्किल तो आसमान व ज़मीन की पैदाइश है लेकिन अक्सर लोग बेइल्मी बरतते हैं।"

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۙ يٰجِبَالُ اَوِّبِىْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ⑩ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۗ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ⑪

तर्जुमा : "हमने दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर अपना फ़ज़्ल किया। ऐ पहाड़ो! इसके साथ रग़बत से तस्बीह पढ़ा करो। और परिन्दों को भी और हमने उसके लिए लोहा नर्म कर दिया। (10) कि तू पूरी पूरी ज़िरहें बना और जोड़ों में अंदाज़ा रख, तुम सब नेक काम किया करो। यक़ीन मानो कि मैं तुम्हारे आमाल को देख रहा हूँ।" (11)

हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) की फ़ज़ीलत (आ. 10, 11) : अल्लाह तआला बयान करता है कि उसने अपने बन्दे और रसूल हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर दुनियावी और आख़िरत की रहमत नाज़िल की, नबुव्वत भी दी, बादशाहत भी, लाव लश्कर भी दिये, ताक़त व क़ुव्वत भी दी, फिर एक पाकीज़ा मोजिज़ा यह अता फ़र्माया कि इधर नग़मए दाऊदी हवा में गूँजा, उधर पहाड़ों को और परिन्दों को भी वजद आ गया। पहाड़ों ने आवाज़ में आवाज़ मिलाकर अल्लाह तआला की हम्दो सना शुरू की। परिन्दों ने पर हिलाने छोड़ दिये और अपनी क़िस्म क़िस्म की प्यारी प्यारी बोलियों में रब तआला की वहदानियत के गीत गाने लगे। सहीह हदीस में है कि "रात को हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे जिसे सुनकर अल्लाह तआला के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ठहर गए। देर तक सुनते रहे फिर कहने लगे, इन्हें नग़म-ए-दाऊदी का कुछ हिस्सा मिल गया।" (सहीह

मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब इस्तिहबाबु तहसीनिस्सौत बिल कुरआन : 793; अहमद : 5/349; बैहक़ी : 10/230) अबू उस्मान नहदी (रह.) का बयान है कि "अल्लाह की क़सम! हमने हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से ज़्यादा प्यारी आवाज़ किसी बाजे की भी नहीं सुनी।" (अव्विबी) के मअनी हब्शी ज़बान में यह हैं कि तस्बीह बयान करो। लेकिन हमारे नज़दीक इसमें मज़ीद ग़ौर की ज़रूरत है। लुग़ते अरबी में यह लफ़्ज़ तर्जीअ के मअनी में मौजूद है। पस पहाड़ों को और परिन्दों को हुक्म हो रहा है कि वह हज़रत दाऊद (ﷺ) की आवाज़ के साथ अपनी आवाज़ भी मिला लिया करें। तावीब के एक मअनी दिन को चलने के भी आते हैं।

जैसे सरिय के मअनी रात को चलने के हैं लेकिन यह मअनी भी यहाँ कुछ ज़्यादा मुनासिबत नहीं रखते। यहाँ तो यही मतलब है कि दाऊद (ﷺ) की तस्बीह की आवाज़ में तुम भी आवाज़ मिलाकर ख़ुश आवाज़ी से रब की हम्द बयान करो। और फ़ज़्ल उन पर यह हुआ कि उनके लिए लोहा नर्म कर दिया गया। न उन्हें लोहे को भट्टी में डालने की ज़रूरत न हथोड़े मारने की हाजत। हाथ में आते ही ऐसा हो जाता था जैसे धागा। (तब्री : 20/359) अब लोहे से ब फ़र्माने इलाही आप ज़िरहें बनाते थे। बल्कि यह भी कहा गया है कि दुनिया में सबसे पहले ज़िरह आप ही ने ईजाद की थी। (तब्री : 20/359) हर रोज़ सिर्फ़ एक ज़िरह बनाते छः हज़ार दिरहम में बिक जाती दो हज़ार घरबार में ख़र्च के लिए रख छोड़ते, चार हज़ार लोगों के खिलाने पिलाने में ख़र्च कर देते। ज़िरह बनाने की तर्कीब ख़ुद अल्लाह तआला की सिखाई हुई थी कि कड़ियाँ ठीक ठीक रखें, हल्क़े छोटे छोटे हों कि ठीक न बैठें, बहुत बड़े न हों कि ढीलापन रह जाए। बल्कि नाप तोल और सहीह अंदाज़ से हल्क़े और कड़ियाँ हों।

इब्ने असाकिर में है कि "हज़रत दाऊद (ﷺ) भेस बदलकर निकला करते और रिआया के लोगों से मिलकर उनसे और बाहर के आने जाने वालों से पूछते कि दाऊद (ﷺ) कैसा आदमी है? लेकिन हर शख़्स को ता'रीफ़ें करता हुए ही पाते। किसी से कोई बात अपनी निस्बत क़ाबिले इस्लाह न सुनते।

एक बार अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ते को इंसानी सूरत में नाज़िल किया। हज़रत दाऊद (ﷺ) की उनसे भी मुलाक़ात हुई तो जैसे औरों से पूछते थे उनसे भी सवाल किया। उन्होंने कहा, दाऊद (ﷺ) है तो अच्छे आदमी अगर एक कमी उसमें न होती तो कामिल बन जाते। आपने बड़ी रग़बत से पूछा कि वह क्या है? फ़र्माया यह कि वह अपना बोझ मुसलमानों के बैतुल माल पर डाले हुए है। ख़ुद भी उसी में से लेते हैं और अपने अहलो अयाल को भी उसी में से खिलाते हैं। हज़रत दाऊद (ﷺ) के दिल में बात बैठ गई कि यह शख़्स ठीक कहता है। उसी वक़्त जनाब बारी की तरफ़ झुके और गिरयावज़ारी के साथ दुआएँ करने लगे कि ऐ अल्लाह तआला! मुझे कोई काम काज ऐसा सिखा दे कि जिससे मेरा पेट भर जाया करे, कोई सन्अत और कारीगरी मुझे बता दे कि जिससे मैं इतना माल हासिल कर लिया करूँ कि वह मुझे और मेरे बाल बच्चों को काफ़ी हो जाये।" अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िरहें बनानी सिखाई और फिर अपनी रहमत से लोहे को उनके लिए बिलकुल नर्म कर दिया। सबसे पहले ज़िरहें आपने ही बनाई हैं। एक ज़िरह बनाकर बेची और उसकी क़ीमत के तीन हिस्से कर लेते। एक अपने खाने पीने के लिए, एक सदक़ा के लिए, एक रख छोड़ने के लिए ताकि दूसरी ज़िरह बनाने तक अल्लाह तआला के बन्दों को देते रहें। हज़रत दाऊद (ﷺ) को नग़मा दिया गया था। वह

सिर्फ़ बेनज़ीर था। अल्लाह तआला की किताब पढ़ने को बैठते आवाज़ निकलते ही चरिन्द, परिन्द, वुहूश तुयूर (चिड़िये), पहाड़ कंकर सब वजद में आ जाते और हर चीज़ सब्रो सुकून के साथ महवियत के आलम में आपकी आवाज़ से मुतास्सिर होकर किताबुल्लाह में मशगूल हो जाती। सारे बाजे शयातीन ने नग़मा दाऊदी से निकाले हैं। आपकी बेमिस्ल ख़ुशआवाज़ी की यह चिड़ावनी नक़्लें हैं। अपनी इन नेअमतों को बयान करके हुक्म देता है कि अब तुम्हें भी चाहिए कि नेक आमाल करते रहो। मेरे फ़र्मान के ख़िलाफ़ न करो, यह बहुत बुरी बात है कि जिसके इतने बड़े और बेपायाँ एहसान हों, उसकी फ़र्मांबरदारी तर्क कर दी जाए। मैं तुम्हारा आमाल का निगराँ हूँ, तुम्हारा कोई अमल छोटा बड़ा नेक बद मुझसे पोशीदा नहीं।

***

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ
يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ
﴿١٢﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ
اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : ''हमने सुलेमान (ﷺ) के लिए हवा को मुसख़्ख़र कर दिया कि सुबह की मंज़िल उसकी महीने भर की होती थीं और शाम की मंज़िल भी। और हमने उनके लिए तांबे का चश्मा बहा दिया। और उसके रब के हुक्म से कुछ जिन्नात भी उसकी मातहती में उसके सामने काम करते थे। और उनमें से जो कभी हमारे हुक्म से सरताबी करे हम उसे भड़कती हुई आग के अज़ाब का मज़ा चखाएँगे। (12) जो कुछ सुलेमान (ﷺ) चाहते वह जिन्नात तैयार कर देते मस्लन क़िले और मुजस्समे और हौज़ों के बराबर लगन और चूल्हों पर जमी हुई मज़बूत देगें, ऐ आले दाऊद! उसके शुक्रिये में नेक अमल करो मेरे बन्दों में से शुक्रगुज़ार बन्दे कम ही होते हैं।'' (13)

हज़रत सुलेमान (ﷺ) पर अल्लाह तआला के इन्आमात (आ. 12, 13) : हज़रत दाऊद (ﷺ) पर जो नेअमतें नाज़िल की थीं उनका बयान करके फिर आपके फ़रज़न्द हज़रत सुलेमान (ﷺ) पर जो नेअमतें नाज़िल की थीं उनका बयान हो रहा है कि उनके लिए हमने हवा को ताबेअ फ़र्मान बना दिया। महीने भर की राह सुबह ही सुबह पूरी हो जाती और उतनी ही दूरी का सफ़र शाम को हो जाता। मस्लन दमिश्क़ से तख़्त मअ फ़ौज व अस्बाब के उड़ाया और थोड़ी देर में अस्तख़र पहुँचा दिया जो तेज़ सवार के लिए भी महीने भर का सफ़र था। इसी तरह शाम को वहाँ से तख़्त उड़ा शाम ही को काबुल पहुँच गया। (तब्री : 20/362) तांबे को बतौर पानी करके अल्लाह तआला ने उसके चश्मे बहा दिये थे कि जिस काम में जिस तरह जिस वक़्त लाना

चाहें बिला वक़्त ले लिया करें। यह तांबा उन्हीं के वक़्त से काम में आ रहा है। सुद्दी (रह.) का क़ौल है कि तीन दिन तक यह बहता रहा। जिन्नात को उनकी मातहती में कर दिया। जो वह चाहते अपने सामने उनसे काम लेते उनमें से जो जिन्न अहकामे सुलेमानी की ता'मील से जी चुराता, फ़ौरन आग से जला दिया जाता। इब्ने अबी हातिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जिन्नात की तीन क़िस्में हैं एक तो पर वाले हैं, दूसरी क़िस्म साँप और कहते हैं तीसरी क़िस्म वह है जो सवारियों पर सवार होते हैं उतरते हैं वग़ैरह।'' यह हदीस बहुत ग़रीब है। इब्ने अन्अम से रिवायत है कि जिन्नात की तीन क़िस्में हैं ''एक के लिए तो अज़ाब सवाब है। एक आसमान व ज़मीन में उड़ते रहते हैं, एक साँप कुत्ते हैं। इंसानों की तीन क़िस्में हैं, एक वह जिन्हें अल्लाह तआला अपने अर्श तले साया देगा। जिस दिन सिवाय उसके साये के और कोई साया न होगा और एक क़िस्म मिस्ल चौपायों के है बल्कि उनसे भी बदतर और तीसरी क़िस्म इंसानी सूरतों में शैतानी दिल रखने वाले।''

हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं कि जिन्न इब्लीस की औलाद में से हैं और इंसान हज़रत आदम (عليه السلام) की औलाद में से हैं। दोनों में मोमिन भी हैं और काफ़िर भी, अज़ाब सवाब में दोनों शरीक हैं, दोनों के ईमानदार वलिउल्लाह हैं और दोनों के बेईमान शैतान हैं।'' (महारीब) कहते हैं बेहतरीन इमारतों को, घर के बेहतरीन हिस्से को मज्लिस की सदारत की जगह को, बक़ौल मुजाहिद (रह.) उन इमारतों को जो महल्लात से कम दर्जा की हों। ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं मस्जिदों को। क़तादा (रह.) कहते हैं बड़े बड़े महल और मस्जिदों को। इब्ने ज़ेद (रह.) कहते हैं घरों को। (तमासील) कहते हैं तस्वीरों को, यह तांबे की थीं। बक़ौल क़तादा (रह.) वह मिट्टी और शीशे की थीं। (जवाब) जमा है (जाबियातुन) की जाबिया उस हौज़ को कहते हैं जिसमें पानी आता रहता है, यह मिस्ल तालाब के थीं। बहुत बड़े बड़े लगन (बर्तन) थे ताकि हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की बहुत बड़ी फ़ौज के लिए खाना एक ही वक़्त बहुत सारा तैयार हो सके और उनके सामने लाया जा सके। और जमी हुई देगें जो बवजह बड़े होने के और भारी पन के इधर उधर नहीं की जा सकती थीं। उनसे अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया था कि दीन व दुनिया की जो नेअमतें मैंने तुम्हें दे रखी हैं उन पर मेरा शुक्र करो। शुक्र मसदर है बग़ैर फ़ेअल के या मफ़ऊल लहू है। और दोनों तक़्दीरों पर उसमें दलालत है कि शुक्र जिस तरह क़ौल और इरादा से होता है फ़ेअल से भी होता है। जैसे शायर का क़ौल है,

अफ़ादत्कुमुन्नअमाअ मिन्नी सलासतुन यदी व लिसानी वज़्ज़मीरल मुहज्जबा

इसमें भी शायर नेअमतों का शुक्र तीनों तरह मानता है। फ़ेअल से ज़ुबान से और दिल से। हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी (रह.) से मरवी है कि नमाज़ भी शुक्र है और रोज़ा भी शुक्र है और भला अमल जिसे तू अल्लाह तआला के लिए करे, शुक्र है और सबसे अफ़ज़ल शुक्र हम्द है। (तब्री : 20/369)

मुहम्मद बिन कअब कुर्ज़ी (रह.) फ़र्माते हैं ''शुक्र अल्लाह तआला का तक़्वा और नेक अमल है'' आले दाऊद दोनों तरह का शुक्र अदा करते थे। क़ौलन भी और फ़ेअलन भी। साबित बिनानी (रह.) फ़र्माते हैं, हज़रत दाऊद (عليه السلام) ने अपनी अहलो अयाल औलाद और औरतों पर इस तरह औक़ात की पाबंदी के साथ नफ़्ल नमाज़ तक़्सीम की थी कि हर वक़्त कोई न कोई नमाज़ में मशग़ूल नज़र आता। बुख़ारी व मुस्लिम में है

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते, "अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा पसंद हज़रत दाऊद (عليه السلام) की नमाज़ थी। आप आधी रात सोते, तिहाई रात क़ियाम करते और छठा हिस्सा सोये रहते। इसी तरह सब रोज़ों से ज़्यादा महबूब रोज़े भी अल्लाह तआला को आप ही के थे। आप एक दिन रोज़े से रहते और एक दिन बेरोज़ा। एक ख़ूबी आप में यह भी थी कि दुश्मन से जिहाद के वक़्त मुँह न फेरते।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब अहब्बुस्सलाति इलल्लाहि सलाते दाऊद : 3419, 3420; सहीह मुस्लिम : 1159; अबूदाऊद : 2448; सुननुल कुब्रा : 1327; इब्ने माजा : 1712) इब्ने माजा में है कि "हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की वालिदा माजिदा ने आपसे फ़र्माया कि प्यारे बच्चे रात को बहुत न सोया करो। रात को ज़्यादा नींद इंसान को क़ियामत के दिन फ़क़ीर बना देती है।" (इब्ने माजा, किताब इक़ामतिस्सलवात, बाब मा जाअ फ़ी क़ियामिल्लैल : 1332; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; यूसुफ़ बिन मुहम्मद बिन मुंकदिर और सुनैद बिन दाऊद ज़ईफ़ रावी हैं। शुअबुल ईमान : 4746; अल् मौज़ूआत : 3/68)

इब्ने अबी हातिम में इस मौक़े पर हज़रत दाऊद (عليه السلام) की एक मुतव्वल (सविस्तार) हदीस मरवी है। उसी किताब में यह भी मरवी है कि हज़रत दाऊद (عليه السلام) ने जनाब बारी में अर्ज़ किया कि इलाहल आलमीन! तेरा शुक्र कैसे अदा होगा, शुक्रगुज़ारी ख़ुद तेरी एक नेअमत है। जवाब मिला, दाऊद! अब तूने मेरी शुक्रगुज़ारी अदा कर ली जबकि तूने उसे जान लिया कि कुल नेअमतें मेरी ही तरफ़ से हैं। फिर एक वाक़िये की ख़बर दी जाती है कि बन्दों में से शुक्रगुज़ार बन्दे बहुत ही कम हैं।

***

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ

فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

तर्जुमा : "फिर जब हमने उन पर मौत का हुक्म भेज दिया तो उनकी मौत की ख़बर जिन्नात को किसी ने न दी सिवाय घुन के कीड़े के जो उनकी लकड़ी को खा रहा था। पस जब सुलेमान (عليه السلام) गिर पड़े उस वक़्त जिन्नों ने जान लिया कि अगर वह ग़ैब दाँ होते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में मुब्तला न रहते।" (14)

हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की मौत का ज़िक्र (आ. 14) : हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की मौत की कैफ़ियत बयान हो रही है और यह भी कि जो जिन्नात उनके फ़र्मान के तहत काम काज में मसरूफ़ थे, उन पर भी उनकी मौत कैसे नामालूम रही, वह इंतिक़ाल के बाद भी लकड़ी को टेके खड़े ही रहे और यह उन्हें ज़िन्दा समझते हुए सर झुकाये अपने सख़्त सख़्त कामों में मशग़ूल रहे। मुजाहिद (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं "तक़रीबन साल भर इसी तरह गुज़रा। जिस लकड़ी के सहारे आप खड़े थे जब उसे दीमक चाट गई और वह खोखली हो गई तो आप गिर पड़े। अब जिन्नात और इंसानों को आपकी मौत का पता चला। तब तो न सिर्फ़ इंसानों को बल्कि ख़ुद जिन्नात

को भी यक़ीन हो गया कि उनमें से कोई भी ग़ैब का जानने वाला नहीं।''

एक मरफ़ूअ मुंकर और ग़रीब ह़दीस में है लेकिन तह़क़ीक़ी बात यह है कि इसका मरफ़ूअ होना ठीक नहीं, फ़र्माते हैं कि ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) जब नमाज़ पढ़ते तो एक दरख़्त अपने सामने देखते, उससे पूछते कि तू कैसा दरख़्त है? तेरा क्या नाम है? वह बता देता। आप उसे उसी इस्तेमाल में लाते। एक बार जब नमाज़ को खड़े हुए और इसी त़रह़ एक दरख़्त देखा तो पूछा तेरा नाम क्या है? उसने कहा, ख़ुरूब। पूछा, किस काम का है? कहा इस घर को उजाड़ने के लिए। तब आपने दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह! मेरी मौत की ख़बर जिन्नात पर ज़ाहिर न होने दे ताकि इंसानों को यक़ीन हो जाए कि जिन्न छुपी हुई बातें नहीं जानते। अब आप एक लकड़ी पर टेक लगाकर खड़े हुए और जिन्नात को मुश्किल मुश्किल काम सौंप दिये। आपका इंतिक़ाल हो गया लेकिन लकड़ी के सहारे आप वैसे ही खड़े रहे। जिन्नात देखते रहे और समझते रहे कि आप ज़िन्दा हैं। अपने अपने काम में मशग़ूल रहे। एक साल कामिल हो गया चूँकि दीमक आपकी लकड़ी को चाट रही थी। साल भर गुज़रने पर वह उसे खा गई और अब ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) गिर पड़े और इंसानों ने जान लिया कि जिन्नात ग़ैब नहीं जानते। वरना साल भर तक इस मुसीबत में न रहते। लेकिन इसका रावी अ़ता बिन मुस्लिम ख़ुरासानी की कुछ अह़ादीस में नकारत होती थी।

कुछ सह़ाबा(रज़ि.) से मरवी है कि ''ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की आ़दत थी आप साल साल दो दो साल या कमो बेश मुद्दत के लिए मस्जिदे क़ुदुस में ए'तिकाफ़ में बैठ जाते, आख़िरी बार इंतिक़ाल के वक़्त भी आप मस्जिद बैतुल मक़्दिस में थे। हर सुबह़ एक दरख़्त आपके सामने नमूदार होता, आप उससे नाम पूछते फ़ायदा पूछते, वह बताता। आप उसी काम में लेते। बिल आख़िर एक दरख़्त ज़ाहिर हुआ जिसने अपना नाम ख़ुरूबा बताया। कहा तू किस काम का है? कहा इस मस्जिद के उजाड़ने के लिए। ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) समझ गये। फ़र्माने लगे मेरी ज़िन्दगी में तो यह मस्जिद वीरान होगी नहीं। अल्बत्ता तू मेरी मौत और वीरानी के लिए है। चुनाँचे आपने उसे अपने बाग़ में लगा दिया। मस्जिद की बीच की जगह में खड़े होकर एक लकड़ी के सहारे नमाज़ शुरू कर दी। वहीं इंतिक़ाल हो गया। लेकिन किसी को उसका इ़ल्म न हुआ। शयात़ीन सबके सब अपनी नौकरी बजा लाते रहे कि ऐसा न हो हम सुस्ती करें और अल्लाह तआ़ला के रसूल आ जाएँ तो हमें सज़ा दें, यह मेह़राब के आगे पीछे आये। उनमें जो एक बहुत बड़ा पाजी शैत़ान था। उसने कहा, देखो जी! इसमें आगे और पीछे सूराख़ हैं अगर मैं यहाँ से जाकर वहाँ से निकल आऊँ तो मेरी त़ाक़त मानोग या नहीं? चुनाँचे वह गया और निकल आया। लेकिन उसे ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की आवाज़ न आई। देख तो सकते न थे क्योंकि ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की त़रफ़ निगाह भरकर देखते ही वह मर जाते थे। लेकिन उसके दिल में कुछ ख़्याल सा गुज़रा। उसने फिर और जुर्अत की और मस्जिद में चला गया। देखा कि वहाँ जाने के बाद भी वह न जला तो उसकी हिम्मत और बढ़ गई। और उसने निगाह भरकर आपको देखा तो देखा कि वह गिर पड़े हैं और इंतिक़ाल कर चुके हैं। अब आकर सबको ख़बर दी, लोग आए, मेह़राब को खोला तो वाक़ेई अल्लाह के रसूल को ज़िन्दा न पाया। आपको मस्जिद से निकाल लाए। मुद्दत इंतिक़ाल का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए उन्होंने उसी लकड़ी को दीमक के सामने डाल दिया। एक दिन रात तक जिस क़द्र दीमक ने उसे खाया, उसे देखकर अंदाज़ा

किया तो मालूम हुआ कि आपके इंतिक़ाल को पूरा साल गुज़र चुका है। तमाम लोगों को उस वक़्त कामिल यक़ीन हो गया कि जिन्नात जो बनते थे कि हम ग़ैब की ख़बरें जानते हैं यह सिर्फ़ झूठ था। वरना साल भर तक क्यूँ मुसीबत पीटते रहते। उस वक़्त से जिन्नात घुन के कीड़े को मिट्टी और पानी ला दिया करते थे। गोया उसका शुक्रिया अदा करते हैं , कहा यह भी था कि अगर तू कुछ खाता पीता होता तो हम बेहतर से बेहतर खाना तुझे पहुँचाते।'' लेकिन हैं यह सब बातें बनी इस्राईल के उलमा की, उनमें से जो मुताबिक़े हक़ हों क़बूल, ख़िलाफ़े हक़ हों मर्दूद, दोनों से अलग हों वह न तस्दीक़ के क़ाबिल, न तक्ज़ीब के, वल्लाहु आलम!

हज़रत ज़ेद बिन असलम (रह़.) से मरवी है कि ''हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने मलकुल मौत से कह रखा था कि मेरी मौत का वक़्त मुझे कुछ पहले बता देना। हज़रत मलकुल मौत ने यही किया, तो आपने जिन्नात को बग़ैर दरवाज़े के एक शीशे का मकान बनाने का हुक्म दिया और उसमें एक लकड़ी पर टेक लगाकर नमाज़ शुरू की यह मौत की डर की वजह से न था। हज़रत मलकुल मौत अपने वक़्त पर आए और रूह क़ब्ज़ कर गए। फिर लकड़ी के सहारे आप साल भर तक उसी तरह खड़े रहे। जिन्नात इधर उधर से देखकर आपको ज़िन्दा समझ कर अपने कामों में आपकी हैबत की वजह से मशग़ूल रहे। लेकिन जो कीड़ा आपकी लकड़ी को खा रहा था जब वह आधी खा चुका तो अब लकड़ी बोझ न सहार सकी और आप गिर पड़े, जिन्नात को आपकी मौत का यक़ीन हो गया और वह भाग खड़े हुए।'' और भी बहुत से सलफ़ से यह मरवी है।

***

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَالٍ ۬ ۚ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ
وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ۝15 فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ۝16 ذٰلِكَ
جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجْزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝17

तर्जुमा : '' क़ौमे सबा के लिए अपनी बस्तियों में क़ुदरते इलाही की निशानी थी। उनके दाएँ बाएँ दो बाग़ थे। अपने रब की दी हुई रोज़ी खाओ और उसका शुक्र अदा करो, उम्दा शहर और बख़्शने वाला रब। (15) लेकिन उन्होंने रूगर्दानी की तो हमने उन पर ज़ोर की रौ का पानी का नाला भेज दिया और हमने उनके हरे भरे बाग़ों के बदले दो ऐसे बाग़ दिये जो बदमज़ा मेवों वाले और बकसरत झाउ और कुछ बेरी के दरख़्तों वाले थे। (16) हमने उनकी नाशुक्री का यह बदला उन्हें दिया। हम ऐसी सख़्त सज़ा बड़े बड़े नाशुक्रों ही को देते हैं।'' (17)

क़ौमे सबा का तज़्किरा (आ. 15 से 17) : क़ौमे सबा यमन में रहती थी। तुब्बअ भी उनमें से ही थे।

बिल्क़ीस भी उन ही में से थीं। यह बड़ी नेअमतों और राहतों में थे। चैन आराम से ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। अल्लाह तआला के रसूल उनके पास आए, उन्होंने शुक्र करने की तल्क़ीन की। रब की वह्दानियत की तरफ़ बुलाया, उसकी इबादतें समझाईं तो कुछ ज़माने तक यूँ ही रहे लेकिन फिर जबकि उन्होंने सरताबी और रूगर्दानी की, अह्कामे इलाही बेपरवाही से टाल दिये तो उन पर ज़ोर का सैलाब आया और तमाम मुल्क और बाग़ात और खेतियाँ वग़ैरह बर्बाद हो गईं। जिसकी तफ़्सील यह है। रसूलुल्ल्लाह (ﷺ) से सवाल हुआ कि "सबा किसी औरत का नाम है या मर्द का या जगह का? तो आपने फ़र्माया, यह एक मर्द था जिसके दस लड़के थे जिनमें से छः तो यमन में जा बसे थे और चार शाम में। मिज़्हज, कुंदा, अज़्द, अशअरी, अन्मार, हिम्यर यह छः क़बीले यमन में। लख़म, जुज़ाम, आमिला और ग़स्सान यह चार क़बीले शामी हैं।" (अह्मद : 1/316; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अल्मुस्तदरक : 2/243; ह : 3585; और इसकी सनद में नज़र है; अब्दुल्लाह बिन अयाश लअला इब्ने लहीआ व अन्अन) फ़र्वा बिन मुसैक (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, क्या मैं अपनी क़ौम में से मानने वालों और आगे बढ़ने वालों को लेकर न मानने और पीछे हटने वालों से लड़ूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! जब मैं जाने लगा तो आप (ﷺ) ने मुझे बुलाकर फ़र्माया, देखो! पहले उन्हें इस्लाम की दावत देना, न मानें तब जिहाद की तैयारी करना। मैंने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! यह सबा किसका नाम है? आप (ﷺ) का जवाब तक़रीबन वही है जो ऊपर ज़िक्र हुआ है। उसमें यह भी है कि क़बीला अन्मार में से बुजैला और ख़स्अम भी हैं।" (अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ : 3988; और इसकी सनद हसन है; तिर्मिज़ी : 3222) एक और लम्बी रिवायत में इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में उसी के साथ है कि हज़रत फ़रवा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा था कि "या रसूलल्लाह (ﷺ)! जाहिलियत के ज़माने में क़ौमे सबा की इज़्ज़त थी मुझे अब उनके इर्तिदाद का डर है तो अगर आप इजाज़त दें तो मैं उनसे जिहाद करूँ। आपने फ़र्माया उनके बारे में हुक्म नहीं दिया गया।" पस यह आयत आख़िर तक उतरी। इसमें ग़राबत है। इससे तो यह पाया जाता है कि आयत मदनी है हालाँकि सूरत मक्की है।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ सबा का नसब नामा इस तरह बयान करते हैं, अब्दुश्शम्स बिन यश्जिब बिन यअरिब बिन क़हतान, इसे सबा इसलिए कहते हैं कि उसी ने सबसे पहले अरब में दुश्मन के क़ैद करने का रिवाज निकाला और उसी ने सबसे पहले माले ग़नीमत को फ़ौजियों में बांटने का रिवाज डाला। इस वजह से उसे राइश भी कहते हैं। माल को रय्याश भी अरबी में कहते हैं। यह भी मज़्कूर है कि उस बादशाह ने हुज़ूर (ﷺ) के तशरीफ़ लाने से पहले ही आपकी पेशगोई की थी कि मुल्क का मालिक हमारे बाद एक नबी होगा जो हरम की इज़्ज़त करेगा। उसके बाद उसके ख़लीफ़ा होंगे, जिनके सामने दुनिया के बादशाह सर नगूँ हो जाएँगे। फिर हममें भी बादशाहत आएगी और बनू क़हतान के नेक बादशाह भी होंगे। उस नबी का नाम अह्मद होगा (ﷺ)। काश! मैं भी उनकी नबुव्वत के ज़माने को पा लेता तो हर तरह की ख़िदमत को ग़नीमत समझता। लोगों! जब भी वह अल्लाह तआला के रसूल ज़ाहिर हों, तो तुम पर फ़र्ज़ है कि उनका साथ दो और उनके मददगार बन जाओ और जो भी आपसे मिले, उस पर मेरी जानिब से फ़र्ज़ है कि वह आपकी ख़िदमत में मेरा सलाम पहुँचा दे। (अक्लील हम्दानी) क़हतान के बारे में तीन क़ौल हैं। एक यह कि वह इरम बिन साम बिन नूह

की नस्ल से है। दूसरा यह कि वह आबिर यानी हज़रत हूद (ﷺ) की नस्ल से है, तीसरा यह कि हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम (ﷺ) की नस्ल से है। इन सबको तफ़्सील के साथ हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र (रह.) ने अपनी किताब अल्अंबाह में ज़िक्र किया है। कुछ रिवायतों में जो आया है कि सबा अरब में से थे उसका मतलब यह है कि उन लोगों में से जिनकी नस्ल से अरब हुए। उनका नस्ले इब्राहीमी में से होना मशहूर नहीं, वल्लाहु आलम!

सहीह बुख़ारी में है क़बीला असलम जब तीरों से निशाना बाज़ी कर रहे थे और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनके पास से निकले तो आपने फ़र्माया, ''ऐ औलादे इस्माईल! तीरअंदाज़ी किये जाओ तुम्हारे वालिद भी पूरे तीरअंदाज़ थे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब तहरीजु अलर्रमी.... : 2899; अहमद : 4/50; इब्ने हिब्बान : 4693) इससे तो मालूम होता है कि सबा का सिलसिल-ए-निस्बत ख़लीलुर्रहमान (ﷺ) तक पहुँचता है। असलम अंसार का एक क़बीला था और अंसार सारे के सारे ग़स्सान में से हैं और यह सब यमनी थे सबा की औलाद हैं। यह लोग मदीने में उस वक़्त आये थे जब सैलाब से उनका वतन तबाह हो गया। एक जमाअत यहाँ आकर बसी थी, दूसरी शाम चली गई, उन्हें ग़स्सानी इसलिए कहते हैं कि उसी नाम की पानी वाली एक जगह पर यह ठहरे थे। यह भी कहा गया है कि यह मुशल्लल के क़रीब है। हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़ि.) के शेअर में भी इसका सबूत मिलता है कि एक पानी वाली जगह या उस कूएँ का नाम ग़स्सान था। यह जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी दस औलादें थीं। उससे मुराद सुल्बी औलादें नहीं। क्योंकि कुछ कुछ दो दो तीन तीन नस्लों के बाद के भी हैं जैसे कि कुतुबे अंसाब में मौजूद है। यह जो शाम और यमन में जाकर आबाद हुए यह भी सैलाब के आने के बाद का ज़िक्र है कुछ वहीं रहे कुछ इधर उधर चले गए। दीवार का क़िस्सा यह है कि उनके दोनों जानिब पहाड़ थे जहाँ से नहरें और चश्मे बह बहकर उनके शहरों में आते थे इसी तरह नाले भी और दरिया भी इधर उधर से आते थे। उनके क़दीमी बादशाहों में से किसी ने उन दोनों पहाड़ों के बीच एक मज़बूत पुश्ता बनवा दिया था। जिस दीवार की वजह से पानी इधर उधर हो गया था। ख़ूबसूरत दरिया जारी रहा करता था। जिसके दोनों जानिब बाग़ात और खेतियाँ लगा दी थीं। पानी की कसरत और ज़मीन की उम्दगी की वजह से यह ख़ित्ता बहुत ही ज़रख़ेज़ और हरा भरा रहा करता था। यहाँ तक कि हज़रत क़तादा (रह.) का बयान है कि कोई औरत अपने सर पर छबड़ी रखकर चलती थी कुछ दूर जाने तक वह कटोरी फलों से बिलकुल भर जाती थी। दरख़्तों से जो फल ख़ुद बख़ुद झड़ते थे, वह इस क़द्र कसरत से होते थे कि हाथ से तोड़ने की ज़रूरत न होती थी। (तब्री : 20/376) यह दीवार मारिब में थी जो सन्आ से तीन मंज़िल पर थी और सद्दे मारिब के नाम से मशहूर थी। आबो हवा की उम्दगी सेहत मिज़ाज और एतिदाल इनायते इलाही से इस तरह था कि उनके यहाँ मक्खी मच्छर और ज़हरीले जानवर भी न होते थे। यह इसलिए था कि वह लोग अल्लाह तआला की तौहीद को मानें और दिलो जान के साथ उसकी ख़ुलूस के साथ इबादत करें। यह थी वह निशानी कुदरत की जिसका ज़िक्र इस आयत में है कि दोनों पहाड़ों के बीच आबाद बस्ती और बस्ती के दोनों तरफ़ हरे भरे फलदार बाग़ात और सरसब्ज़ खेतियाँ। उनसे जनाब बारी ने फ़र्मा दिया था कि अपने रब की दी हुई रोज़ियाँ खाओ पियो और उसके शुक्र में लगे रहो। लेकिन उन्होंने अल्लाह तआला की

तौहीद को और उसकी नेअ़मतों के शुक्र को भुला दिया और सूरज की पूजा करने लगे। जैसे कि हुदहुद ने हज़रत सुलेमान (عليه السلام) को ख़बर दी थी कि (جِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِيْنٍ) (27/नम्ल : 22) यानी मैं तुम्हारे पास सबा की एक पुख़्ता ख़बर लाया हूँ, एक औरत उनकी बादशाहत कर रही है जिसके पास तमाम चीज़ें मौजूद, अज़ीमुश्शान तख़्त, सल्तनत पर वह मुतमक्किन है। रानी और रिआया सब सूरज के पुजारी हैं। शैतान ने उन्हें बहका रखा है। रास्ते से भटके हुए हैं। मरवी है कि बारह या तेरह पैग़म्बर उनके पास आये थे। आख़िरकार शामते आमाल रंग लाई। जो दीवार उन्होंने बना रखी थी उसे चूहों ने अंदर से खोखला कर दिया और बारिश के ज़माने में टूट गई, पानी की रेल पेल हो गई। उन दरियाओं के चश्मों के बारिश के नालों के सब पानी आ गए। उनकी बस्तियाँ उनके महल्लात, उनके बाग़ात और उनकी खेतियाँ सब तबाह व बर्बाद हो गईं। हाथ मलते रह गए कोई तदबीर कारगर न हुई। फिर तो वह तबाही आई कि उस ज़मीन पर कोई फलदार दरख़्त जमता ही न था। पीलू के, झाउ के, कीकर के, बबूल के और ऐसे ही बेमेवा बदमज़ा बेकार दरख़्त उगते थे। हाँ! अल्बत्ता कुछ बेरियों के दरख़्त उग गए थे जो निस्बतन और दरख़्तों से कारआमद थे। लेकिन वह भी बहुत ज़्यादा ख़ारदार और बहुत कम फलदार थे। यह था उनके कुफ़्रो शिर्क, सरकशी और तकब्बुर का बदला कि नेअ़मतें खो बैठे और ज़हमतों में मुब्तला हो गए। काफ़िरों को यही और इस जैसी ही सख़्त सज़ाएँ दी जाती हैं। हज़रत इब्ने ख़ैरा (रह.) फ़र्माते हैं "गुनाहों का बदला यही होता है कि इबादतों में सुस्ती आ जाए, रोज़गार में तंगी वाक़ेअ हो, लज़्ज़तों में सख़्ती आ जाए। यानी जहाँ किसी राहत का मुँह देखा कि कोई ज़हमत आ पड़ी, मज़ा मिट्टी हो गया।"

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ

سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾ فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "हमने उनके और उन बस्तियों के बीच जिनमें हमने बरकत दे रखी थी चंद बस्तियाँ और रखी थीं जो बरसरे राह ज़ाहिर थीं और उनमें चलने की मंज़िलें हमने मुक़र्रर कर दी थीं, उनमें रातों और दिनों को अम्नो अमान के साथ चलते फिरते रहो। (18) लेकिन उन्होंने फिर दरख़्वास्त की कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़र दूर दराज़ के कर दे चूँकि ख़ुद उन्होंने अपने हाथों अपना बुरा किया, इसलिए हमने उन्हें गुज़िश्ता फ़सानों की सूरत में कर दिया और उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये हर एक सब्रो शुक्र करने वाले के लिए इस वाक़िये में बहुत सी इब्रतें हैं।"(19)

क़ौमे सबा पर इन्आमाते इलाही (आ. 18, 19) : उन पर जो और नेअ़मतें की थीं, उनका ज़िक्र हो रहा है कि क़रीब क़रीब आबादियाँ थीं। किसी मुसाफ़िर को अपने सफ़र में तौशा या पानी साथ ले जाने की ज़रूरत न थी। हर हर मंज़िल पर पुख़्ता मज़ेदार ताज़े मेवे ख़ुशगवार मीठा पानी मौजूद। हर रात को किसी बस्ती में

गुज़ार लें और राहत व आराम अम्नो अमान से जाएँ आएँ। कहते हैं कि बस्तियाँ सन्आ के क़ुर्ब व ज़वार में थीं। बाइद की दूसरी क़िरअत (बअ्इद)है इस राहत व आराम से फूल गए और जिस तरह बनी इस्राईल ने मन्न व सल्वा के बदले लहसुन प्याज़ वग़ैरह तलब किया था, उन्होंने भी दूर दराज़ के सफ़र तै करने की चाहत की ताकि दरम्यान में जंगल भी आएँ ग़ैर आबाद जगहें भी आएँ, तो खाने पीने का लुत्फ़ भी आए। क़ौमे मूसा की इस तलब ने उन पर ज़िल्लत व मस्कनत डाली। इसी तरह उन्हें भी फ़राख़ी रोज़ी के बाद हलाकत मिली। भूख और ख़ौफ़ में पड़े। इत्मिनान और अम्न ग़ारत हुआ। उन्होंने कुफ़्र करके ख़ुद अपना ही बिगाड़ा, अब उनकी कहानियाँ रह गईं। लोगों में उनके अफ़साने रह गए। तितर बितर हो गए यहाँ तक कि जो क़ौम तीन तेरह हो जाए तो अरब में उन्हें सबाइयों की मसल सुनाते हैं।

इक्रिमा (रह.) उनका क़िस्सा यूँ बयान करते हुए कहते हैं कि ''उनमें एक काहिना और एक काहिन था जिनके पास जिन्नात इधर उधर की ख़बरें लाया करते थे। उस काहिन को कहीं से पता चल गया कि इस बस्ती की वीरानी का ज़माना क़रीब आ गया है और यहाँ के लोग हलाक होने वाले हैं। था यह बड़ा मालदार, ख़ुसूसन जायदाद बहुत सारी थी, उसने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिए और इन हवेलियों मकानात और बाग़ात की निस्बत क्या इंतिज़ाम करना चाहिए। आख़िर एक बात उसकी समझ में आ गई। उसके ससुराल के लोग बहुत सारे थे और वह क़बीला भी बहादुर होने के अलावा मालदार था। उसने अपने लड़के को बुलाया और उससे कहा, सुनो! कल लोग मेरे पास जमा हो जाएँगे। मैं तुझे किसी काम को कहूँगा तू इंकार कर देना, मैं तुझे बुरा भला कहूँगा, तू मुझे भी मेरी गालियों का जवाब देना, मैं उठकर तुझे थप्पड़ मारूँगा , तू भी उसके जवाब में मुझे थप्पड़ मारना। उसने कहा, अब्बाजान! मुझसे यह कैसे हो सकेगा? काहिन ने कहा तुम नहीं समझते, एक ऐसा ही अहम मामला दरपेश है और तुम्हें मेरा हुक्म मान लेना चाहिए। उसने इक़रार किया, दूसरे दिन जबकि उसके पास उसके मिलने जुलने वाले सब जमा हो गए। उसने अपने उस लड़के से किसी काम को कहा। उसने साफ़ इंकार कर दिया। उसने उसे गालियाँ दीं , तो उसने भी सामने गालियाँ दीं, यह गुस्से में उठा और उसे मारा, लड़के ने भी पलटकर उसे पीटा और यह ग़ज़बनाक हुआ और कहने लगा। छुरी लाओ मैं तो इसे ज़िब्ह कर दूँगा। तमाम लोग घबरा गए हर चंद समझाया लेकिन यह यही कहता रहा कि मैं तो इसे ज़िब्ह करूँगा। लोग दौड़े भागे गए और लड़के के ननिहाल वालों को ख़बर दी, सब लोग आ गये। पहले तो मिन्नत समाजत की मनवाना चाहा लेकिन यह कब मानने वाला था। उन्होंने कहा आप इसे कोई और सज़ा दीजिए। उसने कहा मैं तो इसे लिटाकर बाक़ायदा ज़िब्ह करूँगा। उन्होंने कहा, आप ऐसा नहीं कर सकते। इससे पहले हम आपको मार डालेंगे। उसने कहा जब यहाँ तक बात पहुँच गई है तो मैं ऐसे शहर में नहीं रहना चाहता जहाँ मेरे और मेरी औलाद के बीच और लोग पड़ें। मुझसे मेरे मकानात, जायदाद और ज़मीनें ख़रीद लो मैं यहाँ से कहीं और चला जाता हूँ। चुनाँचे उसने सब कुछ बेच डाला और क़ीमत नक़द वसूल कर ली। जब इस तरफ़ से इत्मिनान हो गया तो उसने अपनी क़ौम को ख़बर दी कि सुनो! अज़ाबे इलाही आ रहा है, ज़वाल का वक़्त क़रीब पहुँच चुका है। अब तुममें से जो मेहनत करके लम्बा सफ़र करके नए घरों का आरज़ूमंद हो तो वह ओमान चला जाए और जो खाने पीने का शौक़ीन हो वह बसरा चला जाए और जो मज़ेदार खजूरें बाग़ात में

बैठकर आज़ादी से खाना चाहता हो वह मदीने चला जाए। क़ौम को उसकी बातों का यक़ीन था। जिसे जो जगह और जो चीज़ पसंद आई और उसी तरफ़ मुँह उठाये भागा। कुछ ओमान की तरफ़, कुछ बसरा की तरफ़ और कुछ मदीने की तरफ़। उस तरफ़ तीन क़बीले चले थे औस, ख़ज़रज और बनू उस्मान। जब यह लोग बत्ने मुर्र में पहुँचे तो बनू उस्मान ने कहा, हमें तो यह जगह बहुत पसंद है। अब हम आगे नहीं जाएँगे, चुनाँचे यह यहीं बस गए और इसी वजह से इन्हें ख़ुज़ाआ कहा गया क्योंकि वह अपने साथियों से पीछे रह गए। औस व ख़ज़रज बराबर मदीने पहुँचे और यहाँ आकर क़ियाम किया।''

यह असर भी अजीबो ग़रीब है। जिस काहिन का इसमें ज़िक्र है उसका नाम अम्र बिन आमिर है, यह यमन का सरदार था और सबा के बड़े लोगों में से था और उनका काहिन था। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि सबसे पहले यही यमन से निकला था इसलिए कि सद्दे मारिब को खोखला करते हुए इसने चूहों को देख लिया था और समझ गया था कि अब यमन की ख़ैर नहीं यह दीवार गिरी और सैलाब सब तहोबाला कर देगा तो उसने अपने सबसे छोटे लड़के को वह मकर सिखाया जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़रा। उस वक़्त उसने गुस्से में कहा कि मैं ऐसे शहर में रहना पसंद नहीं करता। मैं अपनी जायदादें और ज़मीनें इसी वक़्त बेचता हूँ। लोगों ने कहा, अम्र के इस गुस्से को ग़नीमत जानो। चुनाँचे सस्ता महंगा सब कुछ बेच डाला और फ़ारिग़ होकर चल पड़ा। क़बीला असद भी उसके साथ हो लिया। रास्ते में उक्का उनसे लड़े। बराबर बराबर की लड़ाई रही जिसका ज़िक्र अब्बास बिन मिरदास सुलमी के शेअरों में भी है। फिर यह यहाँ से चलकर मुख़्तलिफ़ शहरों में पहुँच गए। आले जफ़्ना बिन अम्र बिन आमिर शाम में गए औस व ख़ज़रज मदीने में। ख़ुज़ाआ सर में, अज़्द सिराते मिरात में। अज़्द ओमान में, यहाँ सैल आई (यानी सैलाब आया) जिसने मारिब के बंद को तोड़ दिया। सुद्दी ने इस क़िस्से में बयान किया है कि उसने अपने मुक़ाबले के लिए अपने बेटे को नहीं बल्कि भतीजे को कहा था। कुछ अहले इल्म का बयान है कि उसकी औरत ने जिसका नाम तरीफ़ा था। अपनी कहानत से यह बात मालूम करके सबको बतलाई थी।

और रिवायत में है कि ओमान में ग़स्सानी और अज़्दही हलाक कर दिये गए। बावजूद मीठे और ठण्डे पानी की रेल पेल, फलों और खेतों के बेशुमार रोज़ी के सैले अरिम से यह हालत हो गई कि एक एक बूँद पानी को तरस गए। यह पकड़ और अज़ाब यह तंगी और सज़ा जो उन्हें पहुँची उससे हर साबिर व शकिर इब्रत हासिल कर सकता है कि अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियाँ किस तरह इंसान को घेर लेती हैं, आफ़ियत को हटाकर आफ़त को ले आती हैं। मुसीबतों पर सब्र नेअमतों पर शुक्र करने वाले इसमें दलाइले क़ुदरत पाएँगे। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला ने मोमिन के लिए तअज्जुबनाक फ़ैसला किया है अगर राहत मिले और यह शुक्र करे तो अज्र पाए और अगर इसे मुसीबत पहुँचे और सब्र करे तो अज्र पाये, ग़र्ज़ मोमिन को हर हालत पर अज्रो सवाब मिलता है। इसका हर काम नेक है यहाँ तक कि मुहब्बत के साथ जो लुक़्मा उठाकर यह अपनी बीवी के मुँह में दे उस पर भी इसे सवाब मिलता है।'' (अहमद : 1/173; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू इस्हाक़ अन्अन व हदीस शाफ़ेई (ह : 129 और इसकी सनद सहीह है।) युनी अन्हू, अमलुल यौमि वल्लैलह : 1075)

बुख़ारी व मुस्लिम में है आप फ़र्माते हैं "तअज्जुब है कि मोमिन के लिए अल्लाह तआला की हर क़ज़ा भलाई के लिए ही होती है अगर उसे राहत और ख़ुशी पहुँचती है तो शुक्र करके भलाई हासिल करता है और अगर बुराई और ग़म पहुँचता है तो यह सब्र करता है और बदला हासिल करता है। यह नेअमत तो सिर्फ़ मोमिन को ही हासिल है कि जिसकी हर हालत बेहतरी और भलाई वाली है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्मोमिनु अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैर : 2999; इब्ने हिब्बान : 2896; अहमद : 4/333; अन सुहैब (रज़ि.)) हज़रत मुतरिफ़ (रह.) फ़र्माते हैं "सब्र और शुक्र करने वाला बन्दा कितना अच्छा है कि जब उसे नेअमत मिले तो शुक्र करे और जब ज़हमत पहुँचे तो सब्र करे।"

***

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢٠ وَمَا كَانَ لَهٗ

عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى

كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝٢١

तर्जुमा : "शैतान ने उनके बारे में जो सोच रखा था उसे सच्चा कर दिखाया यह लोग सबके सब उसके ताबेदार बन गए, सिवाय मोमिनों की जमाअत के। (20) शैतान का उन पर कोई ज़ोर और दबाव न था, ताकि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों में मुमताज़ तौर पर ज़ाहिर कर दें, जो आपसे शक में हैं। तेरा रब हर रह चीज़ पर निगहबान है।" (21)

शैतान का बहकावा (आ. 20, 21) : सबा के क़िस्से के बयान के बाद शैतान के और मुरीदों का आम तौर पर ज़िक्र करता है कि वह हिदायत के बदले ज़लालत भलाई के बदले बुराई ले लेते हैं। इब्लीस ने राँदा दरगाह होकर जो कहा था कि मैं आदम (अ.) की औलाद को हर तरह बर्बाद करने की कोशिश करूँगा, और सिवाय थोड़ी सी जमाअत के बाक़ी के सब लोगों को तेरी सीधी राह से भटका दूँगा। उसने यह कर दिखाया उनके साथ उतरा, उस वक़्त वह बहुत ख़ुश था और जी में इठला रहा था कि इन्हें मैंने बहका लिया तो इनकी औलाद को तबाह कर देना तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है। उस ख़बीस का क़ौल था कि मैं इब्ने आदम को सब्ज़ बाग़ दिखाता रहूँगा। ग़फ़्लत में रखूँगा, तरह तरह से धोखे दूँगा और अपने जाल में फँसाये रखूँगा। जिसके जवाब में जनाब बारी जल्ल जलालुहू ने फ़र्माया था। मुझे भी अपनी इज़्ज़त की क़सम! मौत के ग़रग़रे से पहले जब कभी वह तौबा करेगा मैं फ़ौरन क़बूल कर लूँगा। वह मुझे जब पुकारेगा मैं उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाऊँगा। मुझसे जब कभी जो कुछ माँगेगा मैं उसे दूँगा। मुझसे जब वह बख़्शिश तलब करेगा मैं उसे बख़्श दूँगा। (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/695)

इसका कोई ग़ल्बा हुज्जत ज़बरदस्ती, मारपीट इंसान पर न थी। सिर्फ़ धोखा फ़रेब और मकरबाज़ी थी

जिसमें यह सब फंस गए। इसमें हिक्मते इलाही यह थी कि मोमिन व काफ़िर ज़ाहिर हो जाएँ हुज्जते इलाही ख़त्म हो जाए। आख़िरत को मानने वाले शैतान की नहीं मानेंगे। इसके मुंकिर रहमान की इत्तिबाअ नहीं करेंगे। अल्लाह तआला हर चीज़ पर निगहबान है। मोमिनों की जमाअत उसकी हिफ़ाज़त का सहारा लेती है। इसलिए इब्लीस उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता और काफ़िरों की जमाअत ख़ुद अल्लाह तआला को छोड़ देती है। इसलिए उन पर से अल्लाह तआला की निगहबानी हट जाती है और वह शैतान के हर फ़रेब का शिकार बन जाते हैं।

***

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۗ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा : "कह दे कि अल्लाह तआला के सिवा जिन जिनका तुम्हें गुमान है सबको पुकार लो। न तो उनमें से किसी को आसमानों और ज़मीनों में से एक ज़र्रा का इख़्तियार है न उनका उनमें कोई हिस्सा है, न उनमें से कोई अल्लाह तआला का मददगार है। (22) दरख़्वास्ते शिफ़ाअत भी उसके पास कुछ नफ़ा नहीं देती। सिवाय उनके जिनके लिए इजाज़त हो जाए यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी तो पूछते हैं तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फ़र्माया? जवाब देते हैं कि हक़ फ़र्माया और वह बुलंद व बाला और बहुत बड़ा है।" (23)

सब इख़्तियारात अल्लाह ही के पास हैं (आ. 22, 23) : बयान हो रहा है कि अल्लाह तआला अकेला है, वाहिद है, अहद है, फ़र्द है, समद है। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं। वह बेनज़ीर, बेशरीक, और बेमिस्ल है। उसका कोई शरीक नहीं, साथी नहीं, मुशीर नहीं, वज़ीर नहीं, मददगार पुश्तपनाह नहीं। फिर ज़िद्द करने वाला और ख़िलाफ़ कहने वाला तो कहाँ? जिन जिनको पुकारा करते हो पुकारकर देख लो मालूम हो जाएगा कि एक ज़र्रे के भी मुख़्तार नहीं। सिर्फ़ बे बस और बिलकुल मोहताज व आजिज़ हैं। न ज़मीनों में उनकी कुछ चले, न आसमानों में, जैसे और आयत में है (وَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ) (35/फ़ातिर : 13) कि वह एक खजूर के छिल्के के भी मालिक नहीं और यही नहीं कि उन्हें ख़ुद इख़्तियारी हुकूमत न हो, न सही शिर्कत के तौर पर भी नहीं। न अल्लाह तआला उनसे अपने किसी काम में मदद लेता है बल्कि यह सबके सब फ़क़ीर मोहताज हैं। उसके दर के गुलाम और उसके बन्दे हैं। उसकी अज़्मत व किब्रियाई इज़्ज़त व बड़ाई ऐसी है कि बग़ैर उसकी इजाज़त के किसी की जुर्अत नहीं कि उसके सामने किसी की सिफ़ारिश

के लिए भी होंठ हिलाए। जैसे फ़र्मान है (مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ) (2/बक़रह : 255) कौन है? जो उसके सामने किसी की सिफ़ारिश बग़ैर उसकी रज़ामंदी के कर सके। और आयत में है (وَ كَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ) (53/नज्म : 26) यानी आसमानों के कुल फ़रिश्ते भी उसके सामने किसी की सिफ़ारशि के लिए होंठ नहीं हिला सकते मगर जिसके लिए अल्लाह तआला अपनी रज़ामंदी से इजाज़त दे दे। और जगह फ़र्मान है (وَ لَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى) (21/अम्बिया : 28) वह लोग सिर्फ़ उनकी सिफ़ारिश कर सकते हैं जिनके लिए अल्लाह तआला की रज़ामंदी हो। वह तो ख़ुद ही उसके डर से थरथरा रहे हैं। तमाम औलादे आदम के सरदार सबसे बड़े शफ़ीअ और सिफ़ारिशी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) भी जब क़ियामत के दिन मक़ामे महमूद में सिफ़ारिश के लिए तशरीफ़ ले जाएँगे कि अल्लाह तआला आए और मख़्लूक़ के फ़ैसले करे, उस वक़्त की निस्बत आप फ़र्माते हैं, "मैं अल्लाह तआला के सामने सज्दे में गिर पड़ूँगा। अल्लाह तआला ही जानता है कि कब तक सज्दे में पड़ा रहूँगा। उस सज्दे में इस क़द्र अपने रब की ता'रीफ़ें बयान करूँगा कि इस वक़्त तो वह अल्फ़ाज़ भी मुझे मालूम नहीं। फिर मुझसे कहा जाएगा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाइये बात कीजिए आपकी बात सुनी जाएगी, आप माँगिये आपको दिया जाएगा। आप सिफ़ारिश कीजिए क़बूल की जाएगी...।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लिमा ख़लक़्तु बियदि) : 7410; सहीह मुस्लिम : 193)

रब की अज़्मत का एक और मक़ाम बयान हो रहा है कि जब वह अपनी वही में कलाम करता है और आसमानों के मुक़र्रब फ़रिश्ते उसे सुनते हैं तो हैबत से काँप उठते हैं और ग़शी वाले की तरह हो जाते हैं। जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है। (फ़ज़्ज़अ) की दूसरी क़िरअत (फ़ुर्रिग़) भी आई है। मतलब दोनों का एक है तो अब आपस में एक दूसरे से पूछते हैं कि उस वक़्त रब का क्या हुक्म नाज़िल हुआ? पस अहले अर्श अपने पास वालों को, वह अपने पास वालों को यूँ ही दर्जा बदर्जा हुक्मे इलाही पहुँचा देते हैं। बिला कमो कास्त ठीक ठीक उसी तरह पहुँचा देते हैं। एक मतलब इस आयत का यह भी बयान किया गया है कि जब सक्रात का वक़्त आता है उस वक़्त मुश्रिक यह कहते हैं और इसी तरह क़ियामत के दिन भी जब अपनी ग़फ़्लत से उठेंगे और होश व हवास क़ायम हो जाएँगे उस वक़्त यह कहेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फ़र्माया? जवाब मिलेगा हक़। फ़र्माया हक़ फ़र्माया और जिस चीज़ से दुनिया में बेफ़िक्र थे आज उनके सामने पेश कर दी जाएगी। तो दिलों से घबराहट दूर किये जाने के यह मअनी हुए कि जब आँखों पर से पर्दा उठा दिया जाएगा उस वक़्त सब शक व तक्ज़ीब अलग हो जाएँगे। शैतानी वस्वसे दूर हो जाएँगे, उस वक़्त रब की मुद्दतों की हक़्क़ानियत तस्लीम करेंगे और उसकी बुलंदी और बड़ाई के क़ाइल होंगे। पस न तो मौत के वक़्त का इक़रार नफ़ा दे, न क़ियामत के मैदान का इक़रार फ़ायदा पहुँचाए। लेकिन इमाम इब्ने जरीर (रह.) के नज़दीक पहली तफ़्सीर ही राजेह है यानी मुराद इससे फ़रिश्ते हैं। और यही ठीक भी है और इसी की ताईद अहादीस व आसार से भी होती है।

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़्सीर के मौक़े पर है कि "जब अल्लाह तआला किसी अम्र (मुआमले) का फ़ैसला आसमान में करता है तो फ़रिश्ते आजिज़ी के साथ अपने पर झुका लेते हैं और रब का कलाम ऐसा वाक़ेअ होता है जैसे उस ज़ंजीर की आवाज़ जो पत्थरों पर बजाई जाती हो। जब हैबत कम हो जाती

है तो पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने उस वक़्त क्या फ़र्माया? जवाब मिलता है कि जो फ़र्माया हक़ है और वह अ़ली व कबीर है। कुछ बार ऐसा होता है कि जो जिन्नात फ़रिश्तों की बातें सुनने की ग़र्ज़ से आसमान की त़रफ़ चढ़ते हैं और जो तह ब तह एक दूसरे के ऊपर हैं वह कोई कलिमा सुन लेते हैं। ऊपर वाला नीचे वाले को वह अपने से नीचे वाले को सुना देता है और वह काहिनों के कानों तक पहुँचा दिया जाता है। उनके पीछे फ़ौरन उनके जलाने को आग का शोला लपकता है। लेकिन कभी कभी तो वह आए उससे पहले ही एक दूसरे को पहुँचा देता है और कभी पहुँचाने से पहले ही जला दिया जाता है। काहिन उस एक कलिमे के साथ सौ झूठ मिलाकर लोगों में फैलाता है। वह एक बात सच्ची निकलती है लोग उसके मुरीद बन जाते हैं कि देखो! यह बात उसके कहने के मुताबिक़ सही हुई।'' (स़हीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हिज्र बाब क़ौलुहू (इल्ला मनिस्तरक़स्सम्अ फ़ अत्बअहू शिहाबुम्मुबीन) : 4701; अबूदाऊद : 3989; तिर्मिज़ी : 3223; इब्ने माजा : 194; इब्ने हिब्बान : 36)

मुस्नद अह़मद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) एक मर्तबा स़ह़ाबा (रज़ि.) के पास बैठे हुए थे जो एक सितारा झड़ा और ज़बरदस्त रोशनी हो गई। आपने पूछा कि ''जाहिलियत में तुम्हारा ख़्याल इन सितारों के झड़ने की निस्बत क्या था? उन्होंने कहा, हम इस मौक़े पर समझते थे कि या तो कोई बहुत बड़ा आदमी पैदा हुआ या मरा।'' ज़ोहरी (रह़.) से सवाल हुआ कि ''क्या जाहिलियत के ज़माने में भी सितारे झड़ते थे? कहा, हाँ! लेकिन कम आपकी बिअ़सत के ज़माने से उनमें बहुत ज़्यादती हो गई।'' हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! किसी की मौत और ज़िन्दगी से कोई वास्ता नहीं। बात यह है कि जब हमारा रब तबारक व तआ़ला किसी हुक्म का आसमानों में फ़ैसला करता है तो ह़ामिलाने अ़र्श उसकी तस्बीह़ बयान करते हैं फिर सातवें आसमान वाले फिर छठे आसमान वाले यहाँ तक कि यह तस्बीह़ आसमाने दुनिया तक पहुँचती है। फिर अ़र्श के आसपास के फ़रिश्ते अ़र्श के उठाने वाले फ़रिश्तों से पूछते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने क्या फ़र्माया? वह उन्हें बतलाते हैं। फिर हर नीचे वाला ऊपर वाले से पूछता है और वह उसे बतलाता है यहाँ तक कि आसमाने अव्वल वालों को ख़बर पहुँचती है। कभी उचक ले जाने वाले जिन्नात उसे सुन लेते हैं तो उन पर यह सितारे फेंके जाते हैं। ताहम जो बात अल्लाह तआ़ला को पहुँचानी मंज़ूर होती है उसे वह ले उड़ते हैं। और उसके साथ बहुत कुछ झूठ शामिल करके लोगों में शोहरत ह़ासिल करते हैं।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब तह़रीमुल कहानत व आतियानिल कह्हान : 2229; तिर्मिज़ी : 3224; इब्ने ह़िब्बान : 6129; अह़मद : 1/218)

इब्ने अबी ह़ातिम में है ''अल्लाह तआ़ला जब अपने अम्र की वह़ी (मैसेज) करता है तो आसमान मारे ख़ौफ़ के कपकपा जाता है और फ़रिश्ते हैबतज़दा होकर सज्दे में गिर पड़ते हैं। सबसे पहले जिब्रईल (4) सर उठाते हैं और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान सुनते हैं, फिर उनकी जुबानी और फ़रिश्ते सुनते हैं और वह कहते जाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ह़क़ फ़र्माया, वह बुलंदी और बड़ाई वाला है। यहाँ तक कि वह अल्लाह तआ़ला का अमीन फ़रिश्ता जिसकी त़रफ़ हो, उसे पहुँचा देता है।'' ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और क़तादा (रह़.) से मरवी है कि यह उस वह़ी का ज़िक्र है जो ह़ज़रत ईसा (4) के बाद नबियों के न होने के ज़माने में बन्द रहकर फिर इब्तिदाअन खत्मुल मुर्सलीन (0) पर नाज़िल हुई। ह़क़ीक़त यह है कि उस इब्तिदाई वह़ी के भी इस आयत के तह़त में दाख़िल होने में कोई शक नहीं। लेकिन आयत शामिल है इसे और उसे सबको।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ يَجْمَعُ
بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۭ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۶﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ
بِهٖ شُرَكَاۗءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾

तर्जुमा : ''पूछ कि तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी कौन पहुँचाता है? ख़ुद जवाब दे कि अल्लाह तआला। सुनो! हम या तुम या तो यक़ीनन हिदायत पर या खुली गुमराही में हैं। (24) कह कि हमारे किये हुए गुनाहों की बाबत तुमसे कोई सवाल न किया जाएगा, न तुम्हारे आमाल की बाज़पुर्स हमसे की जाएगी। (25) नहीं! ख़बर दे दे कि हम सबको हमारा रब जमा करके फिर हममें सच्चे फ़ैसले कर देगा। वह फ़ैसले चुकाने वाला है और दाना। (26) कह कि अच्छा मुझे भी तो उन्हें दिखा दो जिन्हें तुम शरीके इलाही ठहराकर उसके साथ मिला रहे हो, ऐसा हर्गिज़ नहीं, बल्कि वही अल्लाह है ग़ालिब बाहिक्मत।'' (27)

कुछ सिफ़ाते इलाही का बयान (आ. 24 से 27) : अल्लाह तआला इस बात को साबित कर रहा है कि सिर्फ़ वही ख़ालिक़ राज़िक़ है और सिर्फ़ वही उलूहियत वाला है। जैसे उन लोगों को इसका इक़रार है कि आसमान से बारिशें बरसाने वाला और ज़मीनों से अनाज उगाने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। ऐसे ही इन्हें यह भी मान लेना चाहिए कि इबादत के लायक़ भी फ़क़त वही है। फिर फ़र्माता है कि जब हम तुममें इतना बड़ा इख़्तिलाफ़ है तो ला महाला एक हिदायत पर और दूसरा ज़लालत पर है। यह नहीं हो सकता कि दोनों फ़रीक़ हिदायत पर हों या दोनों ज़लालत पर हों। हम मुवह्हिद हैं और तौहीद के दलाइल खुले खुले और बहुत वाज़ेह हम बयान कर चुके हैं और तुम शिर्क पर हो जिसकी कोई दलील तुम्हारे हाथों में नहीं। पस यक़ीनन हम हिदायत पर और यक़ीनन तुम ज़लालत पर हो। अस्हाबे रसूल ने मुश्रिकों से यही कहा था कि हम फ़रीक़ैन में से एक ज़रूर सच्चा है क्योंकि इस क़द्र तज़ाद व तबायुन के बाद दोनों का सच होना तो अक़्लन महाल है। (तब्री : 20/401) इस आयत के एक मअनी यह भी बयान किये गए हैं कि हम ही हिदायत पर और तुम गुमराही पर हो। हमारा तुम्हारा बिलकुल कोई रिश्ता नहीं। हम तुमसे और तुम्हारे आमाल से बरिउज़्ज़िमा हैं। हाँ! जिस राह पर हम चल रहे हैं, उसी राह पर तुम भी आ जाओ तो बेशक तुम हमारे हो और हम तुम्हारे वरना हम तुममें कोई लगाव नहीं। और आयत में भी है कि अगर यह तुझे झुठलाएँ तो कह दे कि मेरा अमल मेरे साथ और तुम्हारा अमल तुम्हारे साथ है। तुम मेरे आमाल से चिढ़ते हो और मैं तुम्हारे अमलों से बेज़ार हूँ।

सूरह (قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ) (109/काफ़िरून : 1) में भी इसी बेतअल्लुक़ी और बरा'त का ज़िक्र

है। रब्बुल आलमीन तमाम आलम को मैदाने क़ियामत में इकट्ठे करके स च्चे फ़ैसले कर देगा। नेकों को उनकी जज़ा और बुरों को उनकी सज़ा देगा। उस दिन तुम्हें हमारी हक़्क़ानियत व सदाक़त मालूम हो जाएगी। जैसे इर्शाद है (وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ) (30/रूम : 14) क़ियामत के दिन सब जुदा जुदा हो जाएँगे। ईमान वाले जन्नत के पाक बगीचों में ख़ुश वक़्त व फ़रहाँ होंगे। और हमारी आयतों और आख़िरत के दिन को झुठलाने वाले कुफ़्र करने वाले दोज़ख़ के गड्ढों में हैरान व परेशान होंगे। वह हाकिम व आदिल है। हक़ीक़ते हाल का पूरा आलिम है तुम अपने इन मअबूदों को ज़रा मुझे भी बता दो लेकिन कहाँ से सबूत दे सकोगे। जबकि मेरा रब बेनज़ीर है, बेशरीक और अदीमुल मिस्ल है। वह अकेला है वह इज़्ज़त वाला है जिसने सबको अपने क़ब्ज़े में कर रखा है और हर एक पर ग़ालिब आ गया है। हकीम है अपने क़ौल व फ़ेअल में इसी तरह शरीअत और तक़्दीर में भी, बरकतों वाला पाक मुनज़्ज़ा और मुश्रिकों की तमाम तोहमतों से अलग है।

***

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞٢٨
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞٢٩ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ
عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۞٣٠

तर्जुमा : ''हमने तुझे तमाम लोगों के लिए ख़ुशखबरियाँ सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। हाँ! यह सही है कि लोगों की अकसरियत बेइल्म (गँवार/अनपढ़) है। (28) पूछते हैं कि वह वादा है कब? सच्चे हो तो बता दो। (29) जवाब दे कि वादे का दिन ठीक मुअय्यन है। जिसमें एक पल न तुम पीछे हट सकते हो, न आगे बढ़ सकते हो।'' (30)

पैग़म्बर (ﷺ) नज़ीर व बशीर है (आ. 28 से 30) : अल्लाह तआला अपने बन्दे और अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से फ़र्मा रहा है कि हमने तुझे तमाम कायनात की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा है। जैसे और जगह है (قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا) (7/आराफ़ : 158) ऐलान कर दो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह तआला का रसूल हूँ। और आयत में है (تَبٰرَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا) (25/फ़ुरक़ान : 1) बाबरकत है वह अल्लाह जिसने अपने बन्दे पर क़ुरआन नाज़िल किया ताकि वह तमाम जहान को होशियार कर दे। यहाँ भी फ़र्माया कि इताअतगुज़ारों को बशारते जन्नत दे और नाफ़र्मानों को जहन्नम। लेकिन अक्सर लोग अपनी जिहालत से नबी की नबुव्वत को नहीं मानते। जैसे फ़र्माया (وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ) (12/यूसुफ़ : 103) भले तू हर चंद चाहे ताहम अक्सर लोग बेईमान रहेंगे। और जगह इर्शाद हुआ अगर बड़ी जमाअत की मानेगा तो वह ख़ुद तुझे भी राहे रास्त से हटा देंगे पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की रिसालत आम लोगों की तरफ़ थी। अरब व अजम सबकी

तरफ़। अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा प्यारा वह है जो सबसे ज़्यादा उसका ताबेअ फ़र्मान हो। (तब्री : 20/405)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को आसमान वालों पर और नबियों पर, सब पर फ़ज़ीलत दी है। लोगों ने इसकी दलील पूछी तो आपने फ़र्माया, देखो कुरआन फ़र्माता है कि हर रसूल को उसकी क़ौम की ज़ुबान के साथ भेजा ताकि वह उसमें खुल्लम खुल्ला तब्लीग़ कर दे और हुज़ूर (ﷺ) की निस्बत फ़र्माता है कि हमने तुझे आम लोगों की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा।'' बुख़ारी व मुस्लिम में फ़र्माने रिसालत मआब (ﷺ) है कि ''मुझे पाँच सिफ़तें ऐसी दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गईं। महीने भर की राह तक मेरी मदद सिर्फ़ रोअब से की गई। मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद और पाक बनाई गई है, मेरी उम्मत में से जिस किसी को जिस जगह नमाज़ का वक़्त आ जाए वह उसी जगह नमाज़ पढ़ ले। मुझसे पहले किसी नबी के लिए ग़नीमतों का माल हलाल नहीं किया गया था मेरे लिए ग़नीमतें हलाल कर दी गईं। मुझे सिफ़ारिश दी गई, हर नबी सिर्फ़ अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था और मैं तमाम लोगों की तरफ़ भेजा गया हूँ यानी जिन्न व इंसान, अरब व अजम सबकी तरफ़।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तयम्मुम, बाब नम्बर 1; हदीस : 335; सहीह मुस्लिम : 521; अहमद : 5/145) फिर काफ़िरों का क़ियामत को महाल मानना बयान हो रहा है कि पूछते हैं क़ियामत कब आएगी? जैसे और जगह है बेईमान तो उसकी जल्दी मचा रहे हैं, और बाईमान इससे कपकपा रहे हैं और इसे हक़ जानते हैं....। जवाब देता है कि तुम्हारे लिए वादा का दिन मुक़र्रर हो चुका है। जिसमें तक़्दीम ताख़ीर, कमी ज़्यादती नामुम्किन है। जैसे (إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ) (71/नूह : 4) और फ़र्माया (وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُودٍ) (11/हूद : 104) यानी वह मुक़र्ररा वक़्त पीछे हटने का नहीं। तुम्हें उस वक़्ते मुक़र्ररा तक ढील है जब वह दिन आ गया फिर कोई लब भी न हिला सकेगा। उस दिन कुछ नेकबख़्त होंगे और कुछ बदबख़्त।

***

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ
الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُم ۖ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾
وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن

نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۭ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۭ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ

فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۳۳

तर्जुमा : "काफ़िरों ने कहा हम न तो इस क़ुरआन को मानें न इससे पहले की किताबों को। ऐ देखने वाले! काश कि तू उन ज़ालिमों को उस वक़्त देखता जबकि यह अपने रब के सामने खड़े हुए एक दूसरे को इल्ज़ाम दे रहे होंगे। अदना दर्जे के लोग बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम तो मुसलमान होते। (31) यह बड़े उन छोटों को जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास हिदायत आ चुकने के बाद हमने तुम्हें इससे रोका था? नहीं! बल्कि तुम ख़ुद ही गुनहगार थे। (32) इसके जवाब में यह अदना लोग उन मुतकब्बिरों से कहेंगे, नहीं! नहीं! बल्कि तुम्हारा दिन रात मकर व फ़रेब से हमें अल्लाह तआला के साथ कुफ़्र करने और उसके शरीक मुक़र्रर करने का हुक्म देना बाइस हुआ हमारी बेईमानी का। अज़ाब को देखते ही सबके सब दिल ही दिल में पशेमान (शर्मसार) हो रहे होंगे। काफ़िरों की गर्दनों में हम तौक़ डाल देंगे। उन्हें सिर्फ़ उनके किये कराये आमाल का बदला दिया जाएगा।" (33)

काफ़िरों की हठधर्मी व सरकशी (आ. 31 से 33) : काफ़िरों की सरकशी और बातिल की ज़िद का बयान हो रहा है कि उन्होंने फ़ैसला कर लिया है। उन्हें अपने क़ौल का मज़ा उस वक़्त आएगा जब अल्लाह तआला के सामने जहन्नम के किनारे खड़े खड़े छोटे बड़ों को, बड़े छोटों को इल्ज़ाम लगा रहे होंगे, हर एक दूसरे को क़सूरवार ठहराएगा। ताबेदार अपने सरदारों से कहेंगे कि अगर तुम हमें न रोकते तो हम ज़रूर ईमान लाए हुए होते। उनके बुज़ुर्ग उन्हें जवाब देंगे कि क्या हमने तुम्हें रोका था? हमने एक बात कही तुम जानते थे कि यह बेदलील है।

दूसरी जानिब से दलीलों की बरसती हुई बारिश तुम्हारी आँखों के सामने थी। फिर तुमने उसकी पैरवी छोड़कर हमारी क्यूँ मान ली? यह तो तुम्हारी अपनी बेअक़्ली थी, तुम ख़ुद शहवत परस्त थे। तुम्हारे अपने दिल अल्लाह तआला की बातों से भागते थे। रसूलों की ताबेदारी ख़ुद तुम्हारी तबीअतों पर शाक़ गुज़रती थी। सारा क़सूर तुम्हारा अपना है हमें क्या इल्ज़ाम दे रहे हो? यह बेदलील अपने बुज़ुर्गों की मान लेने वाले इन्हें फिर जवाब देंगे कि दिन रात की तुम्हारी धोखेबाज़ियाँ, जअल साज़ियाँ, फ़रेबकारियाँ हमें इत्मिनान दिलाना कि हमारे फ़ेअल और अक़ाइद ठीक हैं। हमसे बार बार कुफ़्र और शिर्क के न छोड़ने को, पुराने दीन के न बदलने को, बाप दादों की रविश पर क़ायम रहने को कहना, हमारी कमर थपकना, यही सबब हुआ हमारे ईमान से रुक जाने का। तुम ही आ आकर हमें अक़्ली ढकोसले सुनाकर इस्लाम से फेरते थे। दोनों इल्ज़ाम भी देंगे, बरा'त भी करेंगे लेकिन दिल में अपने किये पर पछता रहे होंगे। उन सबके हाथों को गर्दन से मिलाकर तौक़ व ज़ंजीर से जकड़ दिये जाएँगे। अब हर एक को उनके आमाल के मुताबिक़ बदला मिलेगा। गुमराह करने वालों को भी और

गुमराह होने वालों को भी। हर एक को पूरा पूरा अ़ज़ाब होगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जहन्नमी जब हँकाकर जहन्नम के पास पहुँचाये जाएँगे तो जहन्नम के एक ही शोले की लपट से सारे जिस्म का गोश्त झुलस कर पैरों पर आ पड़ेगा।" (इसकी सनद मे ज़र्रार बिन सुर्द मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 2/327; रक़म : 3951) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।)

इब्ने अबी हातिम हसन बिन यह्या ख़ुशनी (रह.) फ़र्माते हैं कि "जहन्नम के हर क़ैदख़ाने, हर ग़ार, हर ज़ंजीर, हर क़ैद पर जहन्नमी का नाम लिखा हुआ है। जब हज़रत सुलेमान दारानी के सामने यह बयान हुआ तो आप बहुत रोये और फ़र्माने लगे, हाय! हाय! फिर क्या हाल होगा उसका जिस पर यह सब अ़ज़ाब जमा हो जाएँगे। पैरों में बेड़ियाँ हों, हाथों में हथकड़ियाँ गर्दन में तौक़ हों, फिर जहन्नम के ग़ार में धकेल दिया जाए। अल्लाह तआ़ला! तू बचाना, परवरदिगार! तू हमें सलामत रखना।" अल्लाहुम्म सल्लिम अल्लाहुम्म सल्लिम!

***

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾
وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۳۵﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ
بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۙ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ
بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۚ
وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۳۹﴾

तर्जुमा : "हमने तो जिस बस्ती में जो भी आगाह करने वाला भेजा वहाँ के सरकशों ने यही कहा कि जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए हो हम उसके साथ काफ़िर हैं। (34) कहने लगे, हम माल व औलाद में बहुत बढ़े हुए हैं यह नहीं हो सकता कि हम अ़ज़ाब किये जाएँ। (35) कह दे कि मेरा रब जिसके लिए चाहे रोज़ी कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (36) तुम्हारे माल और औलाद ऐसे नहीं कि तुम्हें हमारे पास मर्तबों से क़रीब कर दें, हाँ! जो ईमान लाएँ और नेक अ़मल करें उनके लिए उनके आ़माल का दोहरा अज्र है और वह

निडर व बेख़ौफ़ होकर बालाख़ानों में बिराज रहे होंगे।(37) जो लोग हमारी आयतों के मुक़ाबले की तगो दो में लगे रहते हैं यही हैं जो अ़ज़ाब में हाज़िर किये जाएँगे।(38) ऐलान कर दे कि मेरा रब अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे रोज़ी कुशादा करता है और जिसके लिए चाहे तंग कर देता है। तुम जो कुछ भी अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे अल्लाह तआ़ला उसका पूरा पूरा बदला देगा। और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।'' (39)

रसूलुल्लाह (ﷺ) को तसल्लियाँ (आ. 34 से 39) : अल्लाह तआ़ला अपने नबी (ﷺ) को तसल्ली देता है और अगले पैग़म्बरों की सी सीरत रखने को फ़र्माता है। फ़र्माता कि जिस बस्ती में जो रसूल गया उसका मुक़ाबला हुआ। बड़े लोगों ने कुफ़्र किया, हाँ! ग़ुरबा ने ताबेदारी की। जैसे कि क़ौमे नूह़ ने अपने नबी से कहा था। (اَنُؤْمِنُ لَكَ وَ اتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ) (26/शोअ़रा : 111) हम तुझ पर कैसे ईमान लाएँ। तेरे मानने वाले तो सब नीचे दर्जे के लोग हैं। यही मज़्मून दूसरी आयत (وَ مَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ) (11/हूद : 27) में है। क़ौमे स़ालेह़ के मुतकब्बिर लोग ज़ईफ़ों से कहते हैं (اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ) (7/आराफ़ : 75) क्या तुम्हें (ह़ज़रत) स़ालेह़ (عليه السلام) के नबी होने का यक़ीन है? उन्होंने कहा हाँ! हम तो मोमिन हैं। तो मुतकब्बिरीन ने स़ाफ़ कहा कि हम नहीं जानते। और आयत में है (وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا) (6/अन्आ़म : 53) यानी इस त़रह़ हमने एक को दूसरे से फ़ित्ने में डाला ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला ने हम सबमें से एह़सान किया अल्लाह तआ़ला शुक्रगुज़ारों को जानने वाला नहीं। और फ़र्मान है हर बस्ती में वहाँ के बड़े लोग मुज्रिम और मक्कार होते हैं और फ़र्मान है (وَ اِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا) (17/बनी इस्राईल : 16) जब किसी बस्ती की हलाकत का हम इरादा करते हैं तो उसके सरकश लोगों को कुछ अह़काम देते हैं। वह नहीं मानते फिर हम उन्हें हलाक कर देते हैं। पस यहाँ भी फ़र्माता है कि हमने जिस बस्ती में कोई नबी व रसूल भेजा वहाँ के जाह व ह़शमत, शानो शौकत वाले रईसों और अमीरों ने सरदारों और बड़े लोगों ने झट से अपने कुफ़्र का ऐलान कर दिया।

इब्ने अबी ह़ातिम में है कि ''अबू रज़ीन (रह़.) फ़र्माते हैं कि दो शख़्स आपस में शरीक थे। एक समुन्द्र पार चला गया एक वहीं रहा। जब हुज़ूर (ﷺ) मब्ऊस हुए तो उसने अपने साथी से लिखकर पूछा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का क्या ह़ाल है? उसने जवाब में लिखा कि गिरे पड़े लोगों ने उनकी बात मानी है। शरीफ़ क़ुरैशियों ने उनकी इत़ाअ़त नहीं की। उस ख़त़ को पढ़कर वह अपनी तिजारत छोड़ छाड़कर सफ़र करके अपने साझेदार (शरीक) के पास पहुँचा। यह पढ़ा लिखा था। आसमानी किताबों का इल्म इसे ह़ासिल था। उससे पूछा कि बताओ हुज़ूर (ﷺ) कहाँ हैं? मालूम करके आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। आपसे पूछा कि आप लोगों को किस चीज़ की दअ़वत देते हैं। आपने इस्लाम के अरकान उसके सामने बयान किये वह उन्हें सुनते ही ईमान ले आया। आपने फ़र्माया, तुम्हें इसकी तस्दीक़ क्यूँकर हो गई? उसने कहा, इस बात से कि तमाम अम्बिया (عليهم السلام) के इब्तिदाअन मानने वाले हमेशा ज़ईफ़ मिस्कीन लोग ही होते हैं। इस पर यह आयतें उतरीं और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने आदमी भेजकर उनसे कहलवाया कि तुम्हारी बात की सच्चाई अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल की है।'' इसी त़रह़ हिरक़्ल ने कहा था जबकि उसने अबू सुफ़्यान से उनकी जाहिलियत की ह़ालत में

हुज़ूर (ﷺ) की निस्बत पूछा था कि क्या शरीफ़ लोगों ने उनकी ताबेदारी की है या ज़ईफ़ों ने? तो अबू सुफ़्यान (रज़ि.) ने जवाब दिया कि ज़ईफ़ों ने। उस पर हिरक़्ल ने कहा था कि हर रसूल का पहले ताबेदारी करने वाले यही ज़ईफ़ लोग होते हैं। (स़हीह़ बुख़ारी, किताब बदउल वह़ी, बाब कैफ़ काना बदउल वह़ी इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 7; स़हीह़ मुस्लिम : 1773) फिर फ़र्माया, यह ख़ुशह़ाल लोग माल व औलाद की कसरत पर ही फ़ख़्र करते हैं और उसे दलील बनाते हैं इस बात की कि वह रब के पसंदीदा हैं अगर अल्लाह तआला की ख़ास़ इनायत व मेहरबानी उस पर न होती तो उन्हें यह नेअमतें न देता और जब यहाँ रब मेहरबान है तो आख़िरत में भी वह मेहरबान ही रहेगा। क़ुरआन ने हर जगह उनकी इस बात का रद्द किया है।

एक जगह फ़र्माया (أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم) (23/मोमिनून : 55) क्या इनका ख़्याल है कि माल व औलाद की ज़्यादती इनके लिए बेहतरी है? नहीं! बल्कि बुराई है लेकिन यह बेशऊर हैं। और आयत में है (وَ لَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ) (9/तौबा : 85) इनका माल और इनकी औलाद तुझे धोखे में न डाले। इससे इन्हें दुनिया में भी सज़ा होगी और मरते दम तक यह कुफ़्र पर ही रहेंगे। और आयात में है (ذَرْنِي وَ مَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا) (74/मुद्दस्सिर : 11) यानी मुझे और उस शख़्स को छोड़ दे जिसे मैंने मुमताज़ कर दिया है और बकसरत माल दे रखा है और हाज़िर बाश फ़रज़न्द दे रखे हैं और हर त़रह़ का ऐश उसके लिए मुहय्या कर दिया है ताहम उसे त़मअ़ है कि मैं और ज़्यादा दूँ। ऐसा नहीं यह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है कुछ ही ज़माना जाता है कि इसे मैं दोज़ख़ के पहाड़ों पर चढ़ाऊँगा। उस शख़्स का वाक़िया भी मज़्कूर हुआ है जिसके दो बाग़ थे माल वाला, फलों वाला, औलाद वाला था, लेकिन किसी चीज़ ने कोई फ़ायदा न दिया। अ़ज़ाबे इलाही से सब चीज़ें दुनिया में ही तबाह और ख़ाके स्याह हो गईं। अल्लाह तआला जिसकी रोज़ी कुशादा करनी चाहे, कुशादा कर देता है और अल्लाह तआला जिसकी रोज़ी तंग करना चाहे तंग कर देता है। दुनिया तो वह अपने दोस्तों दुश्मनों सबको देता है। ग़नी या फ़क़ीर होना उसकी रज़ामंदी और नाराज़गी की दलील नहीं, बल्कि इसमें और ही हिक्मतें होती हैं जिन्हें अक्सर लोग जान नहीं सकते। माल व औलाद को हमारी इनायत की दलील बनाना ग़लती है, यह कोई हमारे पस मर्तबे बुलंद करने वाली चीज़ नहीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि दिलों और अ़मलों को देखता है।" (स़हीह़ मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब तह़रीमुल मुस्लिम व ख़ज़लहू.... : 2564)

हाँ! उसके पास दरजात दिलाने वाली चीज़ ईमान और नेक आ़माल हैं। इनकी नेकियों के बदले इन्हें बहुत बढ़ा चढ़ाकर दिये जाएँगे। एक एक नेकी दस दस गुना बल्कि सात सात सौ गुना करके दी जाएगी जन्नत की बुलंदतरीन मंज़िलों में हर डर ख़ौफ़ से हर खटके और ग़म से पुरअम्न होंगे, न कोई दुख दर्द होगा न ईज़ा और स़दमा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिनका ज़ाहिर बात़िन से और बात़िन ज़ाहिर से नज़र आता है। एक आ़राबी ने कहा, यह बालाख़ाने किसके लिए हैं? आपने फ़र्माया जो नर्मकलामी करे और खाना खिलाए और बकसरत रोज़े रखे, और लोगों की नींद के वक़्त तहज्जुद पढ़े। (तिर्मिज़ी, किताब स़िफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी स़िफ़ति ग़ुरफ़ि अहलिल जन्ना : 2527; वहुव ह़सन; इब्ने अबी शैबा : 8/265; मुस्नदे अबी यअ़ला : 428)

जो लोग अल्लाह तआला की राह से औरों को रोकते हैं। रसूलों की ताबेदारी से लोगों को बाज़ रखते हैं। अल्लाह तआला की आयतों की तस्दीक़ नहीं करने देते वह जहन्नम की सज़ाओं में हाज़िर किये जाएँगे और बराबर बदला पायेंगे। फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला अपनी हिक्मते कामिला के मुताबिक़ जिसे चाहे बहुत सारी दुनिया देता है औ जिसे चाहे बहुत कम देता है। यह सुख उठा रहा है वह दुख दर्द में मुब्तला है। रब की हिक्मतों को कोई नहीं जान सकता उसकी मस्लिहतें वही ख़ूब जानता है। जैसे फ़र्माया (أُنظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا) (17/बनी इस्राईल : 21) तू देख ले कि हमने किस तरह एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दे रखी है और अल्बत्ता आख़िरत दर्जों में और फ़ज़ीलतों में बहुत बड़ी है। यानी जिस तरह फ़क्रो ग़िना के साथ दर्जों की ऊँच नीच यहाँ है, इसी तरह आख़िरत में भी आमाल के मुताबिक़ दरजात व दरकात होंगे। नेक लोग तो जन्नतों के बुलंद व बालाख़ानों में, और बुरे लोग जहन्नम के नीचे के तब्क़े के जेलखानों में। दुनिया में सबसे बेहतर शख़्स बफ़र्माने रसूलुल्लाह वह है "जो सच्चा मुसलमान हो और बक़द्रे किफ़ायत रोज़ी पाता हो और अल्लाह तआला की तरफ़ से क़नाअत भी दिया गया हो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़िल किफ़ाफ़ वल क़नाअत : 1054; तिर्मिज़ी : 2348; इब्ने माजा : 4138; अहमद : 2/168; इब्ने हिब्बान : 67)

अल्लाह तआला के हुक्म या उसकी इबाहत के मातहत तुम जो कुछ ख़र्च करोगे उसका बदला वह तुम्हें दोनों जहान में देगा। सहीह हदीस में है "तू ख़र्च कर तो तुझ पर ख़र्च किया जाएगा।" और हदीस में है कि "हर सुबह एक फ़रिश्ता दुआ करता है, ऐ अल्लाह! बख़ील के माल को तल्फ़ और बर्बाद कर, दूसरा दुआ करता है ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को नेक बदला दे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (फ़ अम्मा मन अअ़्ता वत्तक़ा...) : 1442; सहीह मुस्लिम : 1010) हज़रत बिलाल (रज़ि.) से एक बार हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ बिलाल! ख़र्च कर और अर्श वाले की तरफ़ से तंगी का ख़्याल भी न कर।" (तब्रानी : 1020; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; क़ैस बिन रबीअ ज़ईफ़ रावी है, मुस्नदे शिहाब : 749) इब्ने अबी हातिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "तुम्हारे इस ज़माने के बाद ऐसा ज़माना आ रहा है जो काट खाने वाला होगा। माल होगा लेकिन मालदार गोया अपने माल पर दाँत गाढ़े हुए होंगे कि कहीं ख़र्च न हो जाए। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने इसी आयत (वमा अन्फ़क़्तुम...) की तिलावत की।" (इसकी सनद में कौसर बिन हकीम मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 3/316; रक़म : 6984) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) और हदीस में है बदतरीन लोग वह हैं जो बेबस और मुज़तर लोगों की चीज़ें कम दामों में ख़रीदते फिरें, याद रखो ऐसी बेअ (तिजारत) हराम है। मुज़्तर की बेअ हराम है। मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करे, न उसे रुस्वा करे। अगर तुझसे हो सके तो दूसरों के साथ सुलूक और भलाई कर, वरना उसकी हलाकत को तू न बढ़ा।" (इसकी सनद भी पहली सनद की तरह यानी सख़्त ज़ईफ़ है।) यह हदीस इस सनद से ग़रीब है और ज़ईफ़ भी है। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं "कहीं इस आयत का ग़लत मतलब न ले लेना अपने माल को ख़र्च करने में दरम्याना रवी इख़्तियार करना। रोज़ियाँ बट चुकी हैं, रिज़्क़ मक़्सूम है।"

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۗ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : "इन सबको अल्लाह तआला उस दिन जमा करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या यह लोग तुम्हारी इबादत करते थे? (40) वह कहेंगे तेरी ज़ात पाक है हमारा वली तो तू है न कि यह। यह लोग जिनकी इबादत करते थे इनमें के अक्सर को उन ही पर ईमान था। (41) पस आज तुममें से कोई भी किसी के लिए भी किसी क़िस्म के नफ़े व नुक़्सान का मालिक न होगा। हम ज़ालिमों से कह देंगे कि इस आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते रहे।" (42)

अल्लाह तआला फ़रिश्तों से सवाल करेगा (आ. 40 से 42) : मुश्रिकीन को शर्मिन्दा, लाजवाब और बेउज़्र करने के लिए उनके सामने फ़रिश्तों से सवाल होगा कि जिनकी मस्नूई शक्लें बनाकर यह मुश्रिक दुनिया में पूजते रहे कि वह उन्हें अल्लाह तआला से मिला दें। सवाल होगा कि क्या तुमने उन्हें अपनी इबादत करने का कहा था?

जैसे सूरह फ़ुरक़ान में है (ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ) (25/फ़ुरक़ान : 17) यानी क्या तुमने उन्हें गुमराह किया था? या यह ख़ुद ही बहके हुए थे? हज़रत ईसा (عليه السلام) से सवाल होगा कि तुम लोगों से कह आए थे कि अल्लाह तआला को छोड़कर मेरी और मेरी वालिदा की इबादत करना। आप जवाब देंगे कि ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात पाक है मुझे जो कहना सज़ावार न था उसे मैं कैसे कह देता। इसी तरह फ़रिश्ते भी अपनी बरा'त ज़ाहिर करेंगे और कहेंगे तू इससे बहुत बुलंद व पाक है कि तेरा कोई शरीक हो, हम तो ख़ुद तेरे बन्दे हैं। हम इन से बेज़ार हैं और अब भी इनसे अलग हैं। यह शयातीन की पूजा करते थे। शैतानों ने ही इनके लिए बुतों की पूजा को मुज़य्यन कर रखा था और इन्हें गुमराह कर दिया था। इनमें से अक्सर का एतिक़ाद शैतान ही पर था।

जैसे फ़र्माने बारी तआला है (اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ) (4/निसाअ : 117, 118) यानी यह लोग अल्लाह तआला को छोड़कर औरतों की पूजा करते हैं और सरकश शैतान की इबादत करते हैं, जिस पर अल्लाह तआला की फटकार है। पस जिन जिनसे तुम ऐ मुश्रिकों! उम्मीद लगाये हुए थे उनमें से एक भी तुम्हें कोई नफ़ा न पहुँचा सकेगा। इस शिद्दत व कर्ब के वक़्त यह सारे झूठे मअबूद तुमसे अलग हो जाएँगे। क्योंकि इन्हें किसी की किसी तरह के नफ़ा व ज़रर का इख़्तियार था ही नहीं। आज हम ख़ुद मुश्रिकों से फ़र्मा देंगे कि लो! जिस अज़ाबे जहन्नम को झुठला रहे थे उसका मज़ा चखो।

وَاِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ یُّرِیْدُ اَنْ یَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ
یَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًی ؕ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا
جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۴۳﴾ وَمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ یَّدْرُسُوْنَهَا وَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ
اِلَیْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِیْرٍ ﴿۴۴﴾ وَكَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ
فَكَذَّبُوْا رُسُلِیْ ۫ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۴۵﴾

तर्जुमा : "जब इनके सामने हमारी साफ़ साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह शख़्स तो तुम्हें तुम्हारे बाप दादाओं के मअबूदों से रोक देना चाहता है इसके सिवा कोई बात नहीं। और कहते हैं कि यह तो तराशा हुआ बोहतान है। हक़ इनके पास आ चुका लेकिन फिर भी काफ़िर यही कहते रहे कि यह तो खुला हुआ जादू है। (43) इन मक्के वालों को न तो हमने किताबें दे रखी हैं जिन्हें यह पढ़ते हों, न इनके पास तुझसे पहले कोई आगाह करने वाला आया है। (44) इनसे पहले के लोगों ने भी हमारी बातों को झूठा जाना था इन्हें हमने जो दे रखा था यह तो उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे, उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया फिर देख कि मेरे अज़ाबों की क्या कैफ़ियत हुई।" (45)

क़ुरआन किताबे हक़ है (आ. 43 स 45) : काफ़िरों की वह शरारत बयान हो रही है जिसकी वजह से वह रब्बानी अज़ाबों के मुस्तहिक़ हुए हैं कि अल्लाह तआला का कलाम ताज़ा ब ताज़ा उसके अफ़ज़ल रसूल की ज़बान से सुनते हैं। क़बूल करना, मानना, उसके मुताबिक़ अमल करना तो एक तरफ़। और कहते हैं कि देखो! यह शख़्स तुम्हें तुम्हारे पुराने और सच्चे दीन से रोक रहा है और अपने बातिल ख़्यालात की तरफ़ तुम्हें बुला रहा है यह क़ुरआन तो इसका ख़ुद तराशा हुआ है आप ही गढ़ लेता है और यह तो जादू है और इसका जादू होना कुछ ढका छुपा नहीं, बिलकुल ज़ाहिर है। फिर फ़र्माता है कि इन अरब की तरफ़ न तो इससे पहले कोई किताब भेजी गई है, न आपसे पहले इनमें कोई रसूल आया है इसलिए इन्हें मुद्दतों से तमन्ना थी कि अगर अल्लाह तआला का रसूल हममें आता अगर किताबुल्लाह हममें उतरती तो हम सबसे ज़्यादा मानने वाले और पाबन्द हो जाते। लेकिन जब अल्लाह तआला ने उनकी यह देरीना आरज़ू पूरी की तो लगे झुठलाने और इंकार करने। इससे अगली उम्मतों के नतीजे इनके सामने हैं। वह क़ुव्वत व ताक़त, मालो मताअ अस्बाबे दुनिया में इनसे बहुत ज़्यादा रखते थे यह तो अभी उनके 10वें हिस्से को भी नहीं पहुँचे लेकिन मेरे अज़ाबों के उतरने के बाद न माल काम आए न औलादें और न कुंबे क़बीले काम आए, न क़ुव्वत व ताक़त ने कोई फ़ायदा दिया, बर्बाद कर दिये गए।

जैसे फ़र्माया (وَ لَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ) (46/अह्क़ाफ़ : 26) यानी हमने इन्हें कुव्वत व ताक़त दे रखी थी आँखेंऔर कान भी रखते थे, दिल भी थे लेकिन मेरी आयतों के इंकार पर जो अ़ज़ाब आए, उस वक़्त किसी चीज़ ने कुछ फ़ायदा न दिया और जिसके साथ मज़ाक़ उड़ाते थे उसने उन्हें आ घेरा। क्या यह लोग ज़मीन में चल फिरकर अपने से अगले का अंजाम देखते नहीं जो इनसे तादाद में ज़्यादा ताक़त में बढ़े हुए थे।

मतलब यह है कि रसूलों के झुठलाने के बाइस पीस दिये गए, जड़ से उखाड़ दिये गए। तुम देख लो ग़ौर कर लो कि मैंने किस तरह अपने रसूलों की मदद की और किस तरह झुठलाने वालों पर अपना अ़ज़ाब उतारा?

***

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "कह दे कि मैं तुम्हें सिर्फ़ एक ही बात की नसीहत करता हूँ कि तुम ख़ुलूस के साथ ज़िद छोड़कर दो दो मिल मिलकर या तंहा तंहा खड़े होकर सोचो तो सही। तुम्हारे इस रफ़ीक़ को कोई जुनून नहीं वह तो तुम्हें एक बड़ी सख़्त आफ़त के आने से पहले होशियार करने वाला है।" (46)

पैग़म्बर (ﷺ) मज्नून नहीं हैं (आ. 46) : हुक्म होता है कि यह काफ़िर जो तुझे मज्नून कहते हैं इनसे कह कि एक काम तो करो, ख़ुलूस के साथ तअ़स्सुब और ज़िद को छोड़कर ज़रा सी देर सोचो तो आपस में एक दूसरे से पूछताछ करो कि क्या मुहम्मद (ﷺ) मज्नून हैं? और ईमानदारी से एक दूसरे को जवाब दो। हर शख़्स तंहा तंहा भी ग़ौर करे और दूसरे से भी पूछे। लेकिन यह शर्त है कि ज़िद और हट को दिमाग़ से निकालकर, तअ़स्सुब और हठधर्मी छोड़कर। तुम्हें ख़ुद मालूम हो जाएगा तुम्हारे दिल से आवाज़ उठेगी कि हक़ीक़त में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को जुनून नहीं, बल्कि वह आप तुम सबके ख़ैरख़्वाह हैं दर्दमंद हैं। एक आने वाले ख़तरे से जिससे तुम बेख़बर हो वह तुम्हें आगाह कर रहे हैं।

कुछ लोगों ने इस आयत से तंहा और जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का मतलब समझा है और इसके सबूत में एक हदीस भी पेश करते हैं। लेकिन वह हदीस ज़ईफ़ है। उसमें है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "मैं तीन चीज़ें दिया गया हूँ जो मुझसे पहले किसी को नहीं दी गई। यह मैं फ़ख़्र के तौर पर नहीं कह रहा हूँ। मेरे लिए माले ग़नीमत हलाल किये गए, मुझसे पहले किसी के लिए वह हलाल नहीं किये गए थे। वह माले ग़नीमत को जमा करके जला देते थे। और मैं हर सुर्ख़ व स्याह की तरफ़ भेजा गया हूँ। हर नबी सिर्फ़ अपनी ही क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा। मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद और वुज़ू की चीज़ बना दी गई है कि मैं उसकी मिट्टी से तयम्मुम कर लूँ और जहाँ भी रहूँ और नमाज़ का वक़्त आ जाए नमाज़ अदा कर लूँ। अल्लाह तआ़ला फ़र्माता

है अल्लाह तआला के सामने बाअदब खड़े हो जाया करो। दो दो और एक एक। और एक महीने की राह तक मेरी मदद सिर्फ़ रुअब से की गई है।'' (इब्ने अबी ह़ातिम, और सनद ज़ईफ़ है; उस्मान बिन अबी आतिका और अली बिन ज़ेद सख़्त ज़ईफ़ है।) बहुत मुम्किन है कि इसमें आयत का ज़िक्र और इसे जमाअत से या अलग नमाज़ पढ़ लेने के मअनी में ले लेना। यह रावी का अपना क़ौल हो और इस तरह बयान कर दिया गया हो कि बज़ाहिर वह अल्फ़ाज़ ह़दीस के मालूम होते हैं क्योंकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़ुसूसियात की अह़ादीस बसनदे सह़ीह़ बहुत सी मरवी हैं और किसी में भी यह अल्फ़ाज़ नहीं, वल्लाहु आलम!

आप लोगों को उस अज़ाब से डराने वाले हैं जो उनके आगे है और जिससे यह बिलकुल बेख़बर बेफ़िक्री से बैठे हुए हैं। सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है कि ''नबी करीम (ﷺ) एक दिन सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ गए और अरब के दस्तूर के मुताबिक़ या सबाह़ा कहकर आवाज़ बुलंद की जो अलामत थी कि कोई शख़्स किसी अहम बात के लिए बुला रहा है। आदत के मुताबिक़ उसे सुनते ही लोग जमा हो गए। आपने फ़र्माया, सुनो! अगर मैं तुम्हें ख़बर दूँ कि दुश्मन तुम्हारी तरफ़ चढ़ाई करने चला आ रहा है और अजब नहीं कि सुबह़ व शाम ही तुम पर ह़मला कर दे। तो क्या तुम मुझे सच्चा समझोगे? सबने एक ज़बान होकर कहा, हाँ! बेशक हम आपको सच्चा जानेंगे। आपने फ़र्माया, सुनो! मैं तुम्हें उस अज़ाब से डरा रहा हूँ जो तुम्हारे आगे है।'' यह सुनकर अबू लहब मल्ऊन ने कहा, तेरे हाथ टूटें क्या इसीलिए तूने हम सबको यहाँ जमा किया था। इस पर सूरह (تَبَّتْ يَدَآ) (111/लहब : 1) उतरी। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह सबा बाब (इन हुव इल्ला नज़ीरुल्लकुम बैन यदय अज़ाबिन शदीद) : 4801; सह़ीह़ मुस्लिम : 208) यह अह़ादीस (وَ اَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ) (26/शोअरा : 214) की तफ़्सीर में गुज़र चुकी हैं। मुस्नद अह़मद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) निकले और हमारे पास आकर तीन बार आवाज़ दी। फ़र्माया, लोगों! मेरी और अपनी मिसाल जानते हो? उन्होंने कहा अल्लाह तआला को और उसके रसूल को पूरा इ़ल्म है। आपने फ़र्माया, मेरी और तुम्हारी मिसाल उस क़ौम जैसी है जिन पर दुश्मन ह़मला करने वाला था। उन्होंने अपना आदमी भेजा कि जाकर देखे और दुश्मन के नक़्ल व ह़रकत से उन्हें ख़बरदार करे उसने जब देखा कि दुश्मन उनकी तरफ़ चला आ रहा है और क़रीब पहुँच चुका है तो वह लपका हुआ क़ौम की तरफ़ बढ़ा कि कहीं ऐसा न हो मैं उन्हें ख़बरदार करूँ उससे पहले ही दुश्मन का ह़मला न हो जाए इसलिए उसने रास्ते में ही अपना कपड़ा हिलाना शुरू कर दिया कि होशियार हो जाओ दुश्मन आ पहुँचा है। तीन बार यही कहा।'' (अह़मद : 5/348; और इसकी सनद ह़सन है; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/314) और ह़दीस में है मैं और क़ियामत एक साथ ही भेजे गए हैं। क़रीब था कि क़ियामत मुझसे पहले आ जाती। (अह़मद : 5/348; और इसकी सनद ह़सन है; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/314)

***

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ

۝ قُلْ اِنَّ رَبِّىْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ

وَمَا يُعِيْدُ ۝ قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِىْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِىٓ اِلَىَّ

رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ۝

तर्जुमा : "कह दे कि जो बदला मैं तुमसे माँगू वह तुम्हें ही दिया। मेरा बदला तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है वह हर चीज़ पर हाज़िर व ख़बरदार है। (47) कह दे कि मेरा रब हक़ सच्ची वही नाज़िल करता है, वह हर छुपे का जानने वाला है। (48) कह दे कि हक़ आ चुका। बातिल न तो पहली बार उभरा न दोबारा उभर सकेगा। (49) कह दे कि अगर मैं बहक जाऊँ तो मेरे बहकने का वबाल मुझ ही पर है और अगर मैं राहे हिदायत पर हूँ तो बसबब इस वही के जो मेरे परवरदिगार ने मुझे की है वह बड़ा ही सुनने वाला और बहुत ही क़रीब है।" (50)

पैग़म्बर (ﷺ) मुहसिने इंसानियत हैं (आ. 47 से 50) : हुक्म हो रहा है कि मुश्रिकों से फ़र्मा दीजिए कि मैं जो तुम्हारी ख़ैरख़्वाही करता हूँ। तुम्हें अहकामे दीनी पहुँचा रहा हूँ, वअज़ व नसीहत करता हूँ उस पर मैं तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता। बदला तो अल्लाह तआला ही देगा जो तमाम चीज़ों की हक़ीक़त से बाख़बर है। मेरी तुम्हारी हालत उस पर ख़ूब रोशन है। फिर जो फ़र्माया इसी तरह की आयत (يُلْقِى الرُّوْحَ) (40/ग़ाफ़िर : 15) है यानी अल्लाह तआला अपने फ़र्मान से जिब्रईल (عليه السلام) को जिस पर चाहता है अपनी वही के साथ भेजता है। वह हक़ के साथ फ़रिश्ता उतारता है वह अल्लामुल ग़ुयूब है उस पर आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं। अल्लाह तआला की तरफ़ से हक़ और मुबारक शरीअत आ चुकी है। बातिल परागन्दा और बूदा होकर बर्बाद हो गया। जैसे फ़र्मान है (بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ) (21/अम्बिया : 18) हम बातिल पर हक़ को नाज़िल करके बातिल के टुकड़े उड़ा देते हैं और उसकी भूसी उड़ जाती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे मक्का वाले दिन जब बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हुए तो वहाँ के बुतों को अपनी कमान की लकड़ी से गिराते जाते थे और ज़बान से फ़र्माते जाते थे। (وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا) (17/ बनी इस्राईल : 81) हक़ आ गया, बातिल मिट गया, वह था ही मिटने वाला।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (वक़ुल जाअल हक़्क़ु व ज़हक़ल बातिल...) : 4720; सहीह मुस्लिम : 1781; तिर्मिज़ी : 3138)

बातिल का और नाहक़ का दबाव सब दब गया। कुछ मुफ़स्सिरीन से मरवी है कि मुराद यहाँ बातिल से इब्लीस है। यानी न उसने किसी को पहले पैदा किया न आइन्दा कर सके, न मुर्दे को ज़िन्दा कर सके, न उसे

कोई और ऐसी कुदरत हासिल है। बात तो यह भी सच्ची है लेकिन यह मुराद यहाँ नहीं। वल्लाहु आलम! फिर जो फ़र्माया, इसका मतलब यह है कि ख़ैर सबकी सब अल्लाह तआला की तरफ़ से है। और अल्लाह तआला की भेजी हुई वह्यी में है वही सरासर हक़ है और हिदायत व बयान व रुश्द है। गुमराह होने वाले आप ही बिगड़ रहे और अपना ही नुक़सान कर रहे हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) से जबकि मुफ़व्वज़ा का मसला पूछा गया था तो आपने फ़र्माया था इसमें अपनी राय से बयान करता हूँ। अगर सही हो तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ से है और ग़लत हो तो मेरी और शैतान की तरफ़ से है और अल्लाह तआला और उसका रसूल (ﷺ) इससे बरी है। (अबूदाऊद, किताबुन्निकाह, बाब फ़ीमन तज़व्वजा व लम युसम्मि लहा सदाक़न हत्ता मात : 2116; और वह सहीह है; नसाई : 3360) वह अल्लाह तआला अपने बन्दों की बातों का सुनने वाला है और क़रीब है पुकारने वाले की हर पुकार को हर वक़्त सुनता और क़बूल करता है। सहीह की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक बार अपने अस्हाब (रज़ि.) से फ़र्माया। "तुम किसी बहरे या ग़ायब को नहीं पुकार रहे, जिसे तुम पुकार रहे हो वह समीअ, क़रीब व मुजीब है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा ख़ैबर : 4202; सहीह मुस्लिम : 2704; अहमद : 4/402; अबूदाऊद : 1527; तिर्मिज़ी : 3371; इब्ने माजा : 3824; मुस्नदे अबी यअ़ला : 7252)

***

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ
لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن
مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ
كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

तर्जुमा : "और अगर आप वह वक़्त मुलाहिज़ा करें जबकि यह कुफ़्फ़ार घबराये फिरेंगे फिर निकल भागने की कोई सूरत न होगी और क़रीब ही की जगह से गिरफ़्तार कर लिए जाएँगे। (51) उस वक़्त कहेंगे कि हम इस कुरआन पर ईमान लाए लेकिन इस क़द्र दूर जगह से कैसे हाथ पहुँच सकता है। (52) इससे पहले तो इन्होंने इससे कुफ़्र किया था। और दूर दराज़ से बिन देखे ही फेंकते रहे। (53) उनकी चाहतों और उनके बीच पर्दा हाइल कर दिया गया जैसे कि इससे पहले भी इन जैसों के साथ किया गया। यह थे ही शक व तरद्दुद में।" (54)

क़ियामत के दिन पशेमानी और ईमान का इक़रार नफ़ा न देगा (आ. 51 से 54) : अल्लाह तबारक व तआला फ़र्मा रहा है कि ऐ नबी (ﷺ)! काश कि आप इन काफ़िरों की क़ियामत के दिन की घबराहट देखते

कि हर चंद अ़ज़ाबों से छुटकारा चाहेंगे लेकिन बचाव की कोई सूरत नहीं पाएँगे। न भागकर छुपकर न किसी की हिमायत न किसी की पनाह से बल्कि फ़ौरन ही पास से ही पकड़ लिए जाएँगे। इधर क़ब्रों से निकले उधर गिरफ़्तार कर लिये गए। इधर खड़े हुए उधर गिरफ़्तार कर लिये गए। यह भी मतलब हो सकता है कि दुनिया में अ़ज़ाबों में ही फँस गए चुनाँचे बद्र वग़ैरह के मैदानों में क़त्ल व असीर (कैदी) हुए। लेकिन सही यही है कि मुराद क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब हैं। कुछ कहते हैं बनू अ़ब्बास की ख़िलाफ़त के ज़माने में मक्के मदीने के बीच उनके लश्करों का ज़मीन में धंसाया जाना मुराद है। इब्ने जरीर (रह़.) ने इसे बयान करके इसकी दलील में एक ह़दीस वारिद की है जो बिलकुल ही मौज़ूअ और गढ़ी हुई है लेकिन तअ़ज्जुब पर तअ़ज्जुब है कि इमाम स़ाह़ब (रह़.) ने इसका मौज़ूअ होना बयान नहीं किया। क़ियामत के दिन कहेंगे कि हम ईमान क़बूल करते हैं। अल्लाह तआ़ला पर उसके फ़रिश्तों पर उसकी किताबों पर उसके रसूलों पर ईमान लाए, जैसे और आयत में है (وَ لَوْ تَرٰى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ) (32/सज्दा : 12) काश कि तू देखता जबकि गुनहगार लोग अपने रब के सामने सर नगूँ खड़े होंगे और शर्मिन्दगी से कह रहे होंगे कि ''ऐ अल्लाह! हमने देख सुन लिया। हमें यक़ीन आ गया, अब तू हमें फिर से दुनिया में भेज दे तो हम दिल से मानेंगे। लेकिन कोई शख़्स जिस त़रह़ बहुत दूर की चीज़ को लेने के लिए दूर से ही हाथ बढ़ाये और वह उसके हाथ नहीं आ सकती, ठीक इसी त़रह़ यही ह़ाल इन लोगों का है कि आख़िरत में वह काम करते हैं जो दुनिया में करना चाहिए था तो आख़िरत में वह ईमान लाना बेकार है। अब न दुनिया में लौटाये जाएँगे और न उस वक़्त की गिरयावज़ारी, तौबा, फ़रियाद, ईमान व इस्लाम कुछ काम आये। इससे पहले दुनिया में तो मुंकिर रहे, न अल्लाह तआ़ला को माना, न रसूल पर ईमान लाए, न क़ियामत के क़ाइल हुए, यूँ ही जैसे कोई बिन देखे अंदाज़े से ही निशाने पर तीरबाज़ी कर रहा हो। इसी त़रह़ अल्लाह तआ़ला की बातों को अपने गुमान से ही रद्द करते रहे। नबी को कभी काहिन कह दिया, कभी शायर कह दिया, कभी जादूगर कहा और कभी दीवाना, सिर्फ़ अटकल पच्चू। क़ियामत को झुठलाते रहे और बेदलील औरों की इ़बादत करते रहे, जन्नत दोज़ख़ का मज़ाक़ बनाते रहे। अब ईमान में और इनके बीच पर्दा आ गया। तौबा में और इनके बीच पर्दा पड़ गया। दुनिया इनसे छूट गई यह दुनिया से अलग हो गए। इब्ने अबी ह़ातिम ने यहाँ पर अ़जीबो ग़रीब असर नक़्ल किया है जिसे हम पूरा ही नक़्ल करते हैं।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''बनी इस्राईल में एक फ़ातेह़ शख़्स था जिसके पास माल बहुत था जब वह मर गया और उसका लड़का वारिस हुआ तो बुरी त़रह़ नाफ़र्मानियों में माल लुटाने लगा। उसके चचाओं ने उसे मलामत की और समझाया, उसने गुस्से में आकर सब चीज़ें बेचकर रुपये लेकर ऐ़न सजाजा के पास आकर एक मह़ल बनवाकर यहाँ रहने लगा। एक रोज़ ज़ोर की आँधी उठी। जिसमें एक बहुत ख़ूबसूरत ख़ुशरू औरत उसके पास आ पड़ी। उसने उससे पूछा, तुम कौन हो? इसने कहा, बनी इस्राईली शख़्स हूँ। कहा यह मह़ल और माल आप ही का है? उसने कहा, हाँ! पूछा आपकी बीवी भी है? कहा, नहीं! कहा फिर तुम अपनी ज़िन्दगी का लुत्फ़ क्या उठाते हो? अब इसने पूछा कि क्या तुम्हारा शौहर है, उसने कहा, नहीं। कहा फिर मुझे क़बूल करो। उसने जवाब दिया मैं यहाँ से मील भर दूर रहती हूँ कल तुम यहाँ से अपने साथ दिन भर का खाना पीना लेकर चलो और मेरे यहाँ आओ, रास्ते में कुछ अ़जायबात देखो तो घबराना नहीं। उसने क़बूल

किया और दूसरे दिन तौशा लेकर चला। मील भर दूर जाकर एक निहायत आलीशान महल देखा, दस्तक देने से एक ख़ूबसूरत नौजवान शख़्स आया। पूछा आप कौन हैं? जवाब दिया बनी इस्राईली हूँ। कहा कैसे आये हो? कहा इस मकान की मलिका ने बुलवाया है। पूछा रास्ते में कुछ होलनाक चीज़ें भी देखीं? जवाब दिया, हाँ! और अगर मुझे यह कहा हुआ न होता कि घबराना मत, तो मैं होल व दहशत से हलाक हो गया होता। मैं चला, एक चौड़े रास्ते पर पहुँचा तो देखे कि एक कुतिया मुँह फाड़े हुए बैठी है। मैं घबराकर दौड़ा तो देखा कि मुझसे आगे आगे वह है और उसके पिल्ले (बच्चे) उसके पेट में हैं और भौंक रहे हैं। उस नौजवान ने कहा, तू उसे नहीं पायेगा। यह तो आख़िर ज़माने होने वाली एक बात की मिसाल तुझे दिखाई गई है कि एक नौजवान बूढ़े बड़ों की मज्लिस में बैठेगा और उनसे अपने राज़ की पोशीदा बातें करेगा। मैं और आगे बढ़ा तो देखा। एक सौ बकरियाँ हैं जिनके थन दूध से भरे हैं। एक बच्चा है जो दूध पी रहा है जब वह दूध ख़त्म हो जाता है और वह जान लेता है कि और कुछ बाक़ी नहीं रहा तो वह मुँह खोल देता है गोया और माँग रहा है। उस नौजवान दरबान ने कहा तू उसे भी नहीं पाएगा। यह मिसाल तुझे बतलाई गई है उन बादशाहों की जो आख़िर ज़माने में आएँगे। लोगों से सोना चाँदी घसीटेंगे यहाँ तक कि समझ लेंगे कि अब किसी के पास कुछ नहीं बचा तो भी वह ज़ुल्मो ज़्यादती करके मुँह फैलाये रहेंगे। उसने कहा, मैं और आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि एक दरख़्त है निहायत तरोताज़ा, ख़ुश रंग और ख़ुश वज़अ, मैंने उसकी एक टहनी तोड़नी चाही तो दूसरे दरख़्त से आवाज़ आई कि ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरी डाली तोड़ जा। फिर तो हर एक दरख़्त से यही आवाज़ आने लगी। दरबान ने कहा, तू उसे भी न पाएगा इसमें इशारा है कि आख़िर ज़माने में मर्दों की क़िल्लत और औरतों की कसरत हो जाएगी। यहाँ तक कि जब एक मर्द की तरफ़ से औरत को पैग़ाम जाएगा तो दस बीस औरतें उसे अपनी तरफ़ बुलाने लगेंगी। उसने कहा मैं और आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि एक दरिया के किनारे एक शख़्स खड़ा हुआ है और लोगों को पानी भर भरकर दे रहा है फिर अपनी मश्क में डालता है लेकिन उसमें एक क़तरा भी नहीं ठहरता। दरबान ने कहा तू उसे भी नहीं पाएगा, इसमें इशारा है कि आख़िर ज़माने में ऐसे उलमा और वाएज़ीन होंगे जो लोगों को इल्म सिखाएँगे भली बातें बतलाएँगे लेकिन ख़ुद अमल नहीं करेंगे बल्कि ख़ुद गुनाहों में मुब्तला रहेंगे। फिर जो मैं आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि एक बकरी है। कुछ लोगों ने तो उसके पैर पकड़ रखे हैं कुछ ने उसकी दुम थाम रखी है, कुछ ने सींग पकड़ रखे हैं, कुछ उस पर सवार हैं और कुछ उसका दूध निकाल रहे हैं। उसने कहा, यह मिसाल है दुनिया की, जो उसके पैर थामे हुए हैं, यह तो वह हैं जो दुनिया से गिर गए जिन्हें यह न मिली। जिसने सींग थाम रखे हैं यह वह है जो अपना गुज़ारा कर लेता है लेकिन तंगी तुर्शी से, दुम पकड़ने वाले वह हैं जिनसे दुनिया भाग चुकी है। सवार वह हैं जो अज़्ख़ुद तारिके दुनिया हो गये हैं। हाँ! दुनिया से सही फ़ायदा उठाने वाले वह हैं जिन्हें तुमने उस बकरी का दूध निकालते हुए देखा। उन्हें ख़ुशी हो, यह मुस्तहिक़्के मुबारकबाद हैं। उसने कहा, मैं और आगे चला तो देखा कि एक शख़्स एक कूएँ में से पानी खींच रहा है और एक हौज़ में डाल रहा है। जिस हौज़ में से पानी फिर कुएँ में चला जाता है। उसने कहा, यह वह शख़्स है जो नेक अमल करता है लेकिन क़बूल नहीं होते। उसने कहा, फिर मैं आगे बढ़ा तो देखा कि एक शख़्स ने दाने ज़मीन में बोये, उसी वक़्त खेती तैयार हो गई और बहुत अच्छे नफ़ीस गेहूँ निकल आए। कहा, यह वह शख़्स है जिसकी नेकियाँ अल्लाह तआला क़बूल करता है। उसने कहा, मैं और आगे बढ़ा तो देखा कि शख़्स चित्त लेटा पड़ा है।

मुझसे कहने लगा, भाई! मेरा हाथ पकड़कर बिठा दो। अल्लाह की क़सम! जबसे मैं पैदा हुआ हूँ बैठा ही नहीं। मेरे हाथ पकड़ते ही वह खड़ा होकर तेज़ दौड़ा, यहाँ तक कि मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया। उस दरबान ने कहा, यह तेरी उम्र थी जो जा चुकी और ख़त्म हो गई। मैं मलकुल मौत हूँ और जिस औरत से तू मिलने आया है उसकी सूरत में भी मैं ही था। अल्लाह तआला के हुक्म से तेरे पास आया था कि तेरी रूह इस जगह क़ब्ज़ करूँ, फिर तुझे जहन्नम में डाल दूँ। इसके बारे में यह आयत (वहीला बैनहुम...) नाज़िल हुई।'' यह असर ग़रीब है और इसकी सेहत में भी नज़र है। आयत का मतलब ज़ाहिर है कि काफ़िरों की जब मौत आती है, उनकी रूह हयाते दुनिया की लज़्ज़तों में अटकी रहती है। लेकिन मौत मोहलत नहीं देती और उनकी ख़्वाहिश के और उनके बीच वह हाइल हो जाती है। जैसे उस शख़्स मग़रूर व मफ़्तून का हाल हुआ कि गया तो औरत ढूँढ़ने को और मुलाक़ात हुई मलकुल मौत से, उम्मीद पूरी हो उससे पहले रूह परवाज़ हो गई। फिर फ़र्माता है कि इनसे पहले की उम्मतों के साथ भी यही किया गया वह भी मौत के वक़्त ज़िन्दगी और ईमान की आरज़ू करते रहे जो सिर्फ़ बेकार थी। जैसे फ़र्माने इलाही है (40/मोमिन : 84) जब उन्होंने हमारे अ़ज़ाब देख लिए तो कहने लगे, ''हम अल्लाह तआला वाहिद पर ईमान लाये और जिस जिसको हम शरीके इलाही बनाते थे उन सबसे हम इंकार करते हैं। लेकिन उस वक़्त के उनके ईमान लाने ने उन्हें कोई फ़ायदा न दिया।'' इनसे पहलों में भी यही तरीक़-ए-इलाही जारी रहा। कुफ़्फ़ार नफ़ा से महरूम ही हैं। यहाँ फ़र्माया कि दुनिया में तो ज़िन्दगी भर शक व शुब्हा में और तरद्दुद में ही रहे। इसी वजह से अ़ज़ाब के देख लेने के बाद का ईमान बेकार रहा। हज़रत क़तादा (रह.) का आबे ज़र से लिखने के लायक़ यह क़ौल है जो आप फ़र्माते हैं शुब्हात से और शुकूक से बचो, इस पर जिसकी मौत आई वह क़ियामत के दिन भी उसी पर उठाया जाएगा और जो यक़ीन पर मरा उसे यक़ीन पर ही उठाया जाएगा। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला अल्मुवफ़्फ़िक़ु लिस्सवाब

अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से सूरह सबा की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह फ़ातिर

سورة فاطر

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह फ़ातिर - 35

आयातः 45 मक्की सूरह, पैराग्राफः 7

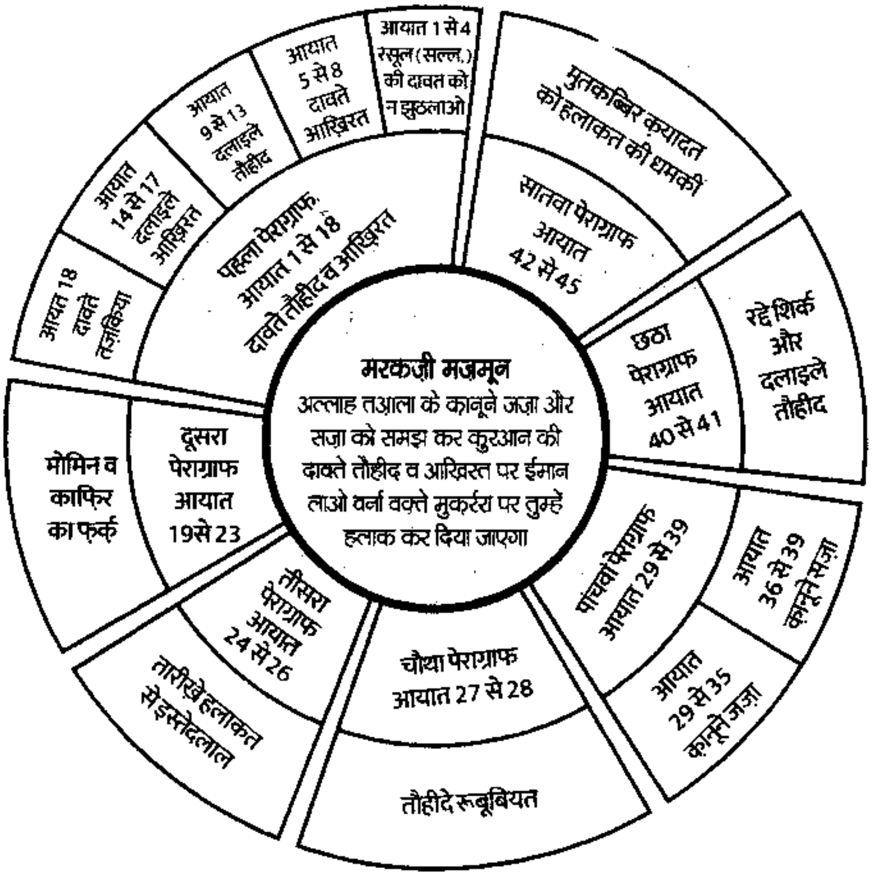

जमानए नुज़ूल :

सूरह फातिर, रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के तीसरे दौर (6से 10 नबवी) में नाज़िल हुई जब शिद्दते मुख़ालिफ़त में आप (सल्ल.) के ख़िलाफ साज़िशें हो रही थी। कुरैश की (मुतकब्बिर कयादत) को कानूने जज़ा व सज़ा बता कर (हलाकत की धमकी) दी गई है।

तफ़्सीर सूरह फ़ातिर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى
وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ① مَا يَفْتَحِ
اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

तर्जुमा : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो इब्तिदाअन आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला और दो दो तीन तीन चार चार परों वाले फ़रिश्तों को अपना पैग़ाम पहुँचाने वाला। बनाने वाला है मख़्लूक़ में, जो चाहे ज़्यादती करता है। अल्लाह तआला यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है। (1) अल्लाह तआला जो रहमत लोगों के लिए खोल दे तो उसका बंद करने वाला कोई नहीं और जिसको बन्द कर दे तो उसके बाद उसका कोई जारी करने वाला नहीं, और वही है ग़ालिब हिक्मत वाला।" (2)

अल्लाह तआला की ता'रीफ़ (आ. 1, 2) : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं (फ़ातिर) के बिलकुल ठीक मअनी मैंने सबसे पहले एक आराबी की ज़ुबानी सुनकर मालूम किये। वह अपने एक साथी आराबी से झगड़ता हुआ आया। एक कूएँ के बारे में उनका इख़्तिलाफ़ था। तो आराबी ने कहा अना फ़तरतुहा यानी पहले पहल मैंने ही उसे बनाया है। (अदुर्रुल मंसूर : 7/3) पस मअनी यह हुए कि इब्तिदा बेनमूना सिर्फ़

अपनी क़ुदरते कामिला से अल्लाह तबारक व तआला ने ज़मीनो आसमान को पैदा किया। ज़ह्हाक (रह.) से मरवी है कि फ़ातिर के मअ़नी ख़ालिक़ के हैं। (अद्दुर्रुल मंसूर : 7/3) अपने और अपने नबियों के बीच क़ासिद उसने अपने फ़रिश्तों को बनाया है जो परों वाले हैं, उड़ते हैं ताकि जल्दी से अल्लाह तआला का पैग़ाम उसके रसूलों तक पहुँचाएँ। उनमें से कुछ दो परों वाले हैं, "कुछ के तीन पर हैं, कुछ के चार चार पर हैं, कुछ के उनसे भी ज़्यादा हैं। चुनाँचे ह़दीस में है कि "रसूलुल्लाह (सअव) ने लैलतुल मेअ़राज में ह़ज़रत जिब्रईल (अ.) को देखा उनके छः सौ पर थे और हर दो पर के बीच मश्‍रिक़ व मग़्‍रिब जितना फ़ासला था।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब इज़ा क़ाल अह़दुकुम आमीन वल मलाइकतु फ़िस्समाइ ..: 3232, 3233; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 174) यहाँ भी फ़र्माता है, रब जो चाहे अपनी मख़्लूक़ में ज़्यादती करे। जिसके चाहता है उससे भी ज़्यादा पर कर देता है और कायनात में जो चाहे रचाता है। इससे मुराद अच्छी आवाज़ भी ली गई है। चुनाँचे एक शाज़ क़िरअत (फ़िल ह़ल्क़ि) 'ह़' के साथ भी है, वल्लाहु आलम!

अल्लाह तआला हर चीज़ पर ग़ालिब है : अल्लाह तआला का चाहा हुआ सब कुछ होकर रहता है बग़ैर उसकी चाहत के कुछ भी नहीं होता। जो वह दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसे वह रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं। नमाज़े फ़र्ज़ के सलाम के बाद रसूलुल्लाह (सअव) हमेशा यही कलिमात पढ़ते।" (ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु वलहुल ह़म्दु वहुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर. अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा अअ़्तैत वला मुअ़तिय लिमा मनअ़त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल जद्दु) और हुज़ूरे अकरम (सअव) फ़िज़ूलगोई और कसरते सवाल और माल की बर्बादी से मना करते थे और आप लड़कियों को ज़िन्दा दरगोर करने वाला और माओं की नाफ़र्मानियाँ करने और ख़ुद लेने और दूसरों को न देने से भी रोकते थे।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब मा यक्रहू मन क़ीलो क़ाल : 6473; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 593; अह़मद : 4/254) स़ह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है कि "रसूलुल्लाह (सअव) रुकूअ़ से सर उठाते हुए (समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदह) कहकर फ़र्माते। (अल्लाहुम्म रब्बना लकल ह़म्दु मिल्अस्समाइ वल अर्ज़ि व मिल्अ मा शिअत मिन शैइन बअ़दु अल्लाहुम्म अहलुस्सनाइ वल मज्दि अह़क़्क़ु मा क़ालल अ़ब्दु व कुल्लुना लक अ़ब्दुन अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा अअ़्तैत वला मुअ़तिय लिमा मनअ़त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल जद्द) (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलु इज़ा रफ़अ़ रअसहू मिनर्रुकूअ़ : 477; अबूदाऊद : 5847; अह़मद : 3/87; इब्ने ह़िब्बान : 1905) इसी आयत जैसी आयत (وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ) (6/अन्आम : 17) और भी इसकी नज़ीर की आयतें बहुत सी हैं। ह़ज़रत इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते कि, "बारिश बरसती तो ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं हम पर फ़तह़ के तारे से बारिश बरसाई गई। फिर इसी आयत की तिलावत करते।" (इब्ने अबी ह़ातिम)

***

يَاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ
السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٣ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ
رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٤ يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٥ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ
فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝٦

तर्जुमा :''लोगों! तुम पर जो इन्आम अल्लाह तआला ने किये हैं उन्हें याद रखो। क्या अल्लाह तआला के सिवा और कोई भी ख़ालिक़ है जो तुम्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुँचाए उसके सिवा कोई मअबूद नहीं पस तुम कहाँ उल्टे जाते हो? (3) अगर यह तुझे झुठलाएँ तो तुझसे पहले के तमाम रसूल भी झुठलाए जा चुके हैं , तमाम काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाते हैं। (4) लोगों! अल्लाह का वादा सच्चा है तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगानी धोखे में न डाले और न धोखेबाज़ शैतान ग़फ़्लत में डाले। (5) याद रखो! शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम उसे दुश्मन जानो। वह तो अपने गिरोह को सिर्फ़ इसलिए ही बुलाता है कि वह सब जहन्नम पहुंच जाएँ।'' (6)

अल्लाह की नेअमतों से अल्लाह की पहचान (आ. 3 से 6) : इस बात की दलील बयान हो रही है कि इबादतों के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की ज़ात है क्यों कि ख़ालिक़ व राज़िक़ सिर्फ़ वही है फिर उसके सिवा दूसरों की इबादत करना फ़ाश ग़लती है। दरअसल उसके सिवा लायक़े इबादत और कोई नहीं । फिर तुम इस वाज़ेह दलील और ज़ाहिर बुरहान के बाद कैसे बहक रहे हो और दूसरों की इबादत की तरफ़ झुके जाते हो? वल्लाहु आलम!

शैतान लोगों का वाज़ेह दुश्मन है : ऐ नबी करीम (सअव)! अगर आपके ज़माने के कुफ़्फ़ार आपकी मुख़ालिफ़त करें और आपकी बतलाई हुई तौहीद और ख़ुद आपकी सच्ची रिसालत को झुठलाएँ तो आप शिकस्ता दिल न हो जाया करें। अगले नबियों के साथ भी यही होता रहा। सब कामों का लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है। वह सबको उनके तमाम कामों का बदले देगा और सज़ा जज़ा सब कुछ होगी। लोगों! क़ियामत का दिन हक़ है वह यक़ीनन आने वाला है। वह वादा अटल है। वहाँ की नेअमतों के बदले यहाँ के फ़ानी ऐश पर उलझ न जाओ। दुनिया की ज़ाहिरी ऐश वहाँ की हक़ीक़ी ख़ुशी से कहीं तुम्हें महरूम न कर दे, इसी तरह शैतान मक्कार से भी होशियार रहना। उसके चलते फिरते जादू में न फँस जाना। उसकी झूठी और चिकनी चुपड़ी बातों में आकर अल्लाह के रसूल (सअव) के हक़ कलाम को न छोड़ देना। सूरह लुक़्मान के आख़िर में भी यही

फ़र्माया है। पस ग़ुरूर यानी धोखेबाज़ यहाँ शैतान को कहा गया है। (तब्री : 20/438) जब मुसलमानों और मुनाफ़िक़ों के बीच क़ियामत के दिन दीवार खड़ी कर दी जाएगी। जिसमें दरवाज़ा होगा जिसके अंदरूनी हिस्से में रहमत होगी और ज़ाहिरी हिस्से में अज़ाब होगा उस वक़्त मुनाफ़िक़ीन मोमिनीन से कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथी न थे? यह जवाब देंगे कि हाँ! साथी तो थे लेकिन तुमने तो अपने आपको फ़ित्ने में डाल दिया था और सोचते ही रहे शक व शुब्हा दूर ही न किया। ख़्वाहिशों को पूरा करने में डूबे रहे। यहाँ तक कि अल्लाह तआला का हुक्म आ पहुँचा और धोखेबाज़ शैतान ने तुम्हें भुलावे (धोखे) में ही रखा। इस आयत में भी शैतान को ग़ुरूर कहा गया है। फिर शैतानी दुश्मनी को बयान किया कि वह तो तुम्हें ख़बरदार करके तुम्हारी दुश्मनी और बर्बादी का बेड़ा उठाये हुए है। फिर तुम क्यूँ उसकी बातों में आ जाते हो और उसके धोखे में फँस जाते हो? उसकी और उसकी फ़ौज की तो ऐन तमन्ना है कि वह तुम्हें भी अपने साथ घसीटकर जहन्नम में ले जाए, अल्लाह तआला क़वी व अज़ीज़ से हमारी दुआ है कि वह हमें शैतान का दुश्मन ही रखे और उसके मकर से हमें महफ़ूज़ रखे और अपनी किताब और अपने नबी की सुन्नतों की पैरवी करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन! वह हर चीज़ पर क़ादिर है और दुआओं का क़बूल करने वाला है। जिस तरह इस आयत में शैतान की दुश्मनी का बयान किया गया है उसी तरह सूरह कहफ़ की आयत (وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ) (18/कहफ़ : 50) में भी उसकी दुश्मनी का ज़िक्र है।)

***

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝

तर्जुमा : "जो लोग काफ़िर हुए उनके लिए सख़्त सज़ा है और जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल किये उनके लिए बख़्शिश है और बहुत बड़ा अज्र है। (7) क्या पस वह शख़्स जिसके लिए उसके बुरे आमाल ज़ीनत दिये गए हैं और वह उन्हें अच्छे आमाल समझता है यक़ीन मानो कि अल्लाह तआला जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहे राहे रास्त दिखाता है। पस तुझे उन पर ग़म खा खाकर अपनी जान हलाकत में न डालनी चाहिए। यह जो कुछ कर रहे हैं इससे यक़ीनन अल्लाह तआला बख़ूबी वाक़िफ़ है।" (8)

दुनिया की ज़िन्दगी आरज़ी है (आ. 7, 8) : ऊपर बयान गुज़रा था कि शैतानों के ताबेदारों की जगह जहन्नम है इसलिए यहाँ बयान हो रहा है कि कुफ़्फ़ार के लिए सख़्ततर अज़ाब हैं। इसलिए कि यह शैतान के ताबेअ और रहमान के नाफ़र्मान हैं। मोमिनों से जो गुनाह हो भी जाएँ बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तआला उन्हें माफ़ कर दे और जो नेकियाँ उनकी हैं उन पर उन्हें बड़ा भारी अज्रो सवाब मिलेगा। काफ़िर और बदकार लोग अपने बुरे अमलों को नेकियाँ समझ बैठे हैं। तो ऐसे गुमराह लोगों पर तेरा कोई बस नहीं? हिदायत व गुमराही अल्लाह तआला के हाथ है। पस तुझे इन पर ग़मगीन न होना चाहिए। मुक़द्दराते इलाही जारी हो चुके हैं। मस्लिहते मालिकुल मुलूक को उसके सिवा कोई नहीं जानता। हिदायत व ज़लालत में भी उसकी हिक्मत है, कोई काम उस सच्चे हकीम के हिक्मत से ख़ाली नहीं। लोगों के तमाम काम उस पर वाज़ेह हैं। हुज़ूर (सअव) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआला ने अपनी तमाम मख़्लूक़ को अंधेरे में पैदा किया। फिर उन पर अपना नूर डाला। पस जिस पर वह नूर पड़ गया वह दुनिया में आकर सीधी राह चला और जिसे उस दिन वह नूर न मिला वह दुनिया में आकर भी हिदायत से बहरावर न हो सका। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अल्लाह अज़्ज़ा जल्ल के इल्म के मुताबिक़ क़लम चलकर ख़ुश्क हो गया।" (हाकिम : 1/30, 31; ह : 83; और इसकी सनद सहीह है; इब्ने अबी हातिम)

और रिवायत में है कि हमारे पास हुज़ूरे अकरम (सअव) आए और फ़र्माया, "अल्लाह तआला के लिए सब ता'रीफ़ है जो गुमराही से हिदायत पर लाता है और जिस पर चाहता है गुमराही ख़लत मलत कर देता है।" (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद ज़ईफ़ है, इसमें मज्हूल रावी हैं।) यह हदीस भी बहुत ही ग़रीब है।

***

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ⑨ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ
جَمِيْعًا ۭ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ۭ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ
السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَمَكْرُ اُولٰۗىِٕكَ هُوَ يَبُوْرُ ⑩ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا
يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑪

तर्जुमा : "अल्लाह ही हवाएँ चलाता है जो बादलों को उठाती हैं फिर हम बादलों को ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं और उससे उस ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देते हैं इसी तरह दोबारा जी उठना भी है। (9) जो शख़्स इज़्ज़त हासिल करना चाहता हो तो अल्लाह तआला ही की सारी इज़्ज़त है तमामतर सुथरे कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं और नेक अमल भी जिसे वह बुलंद करता है। जो लोग बुराईयों के दाव घात में लगे रहते हैं उनके लिए सख़्ततर अज़ाब है और उनका यह मकर बर्बाद हो जाएगा। (10) लोगों! अल्लाह तआला ने तुम्हें मिट्टी से फिर नुत्फ़े से पैदा किया है फिर तुम्हें मर्द औरत बना दिया है। औरतों का हामिला होना और बच्चों का पैदा होना सब उसके इल्म से ही है और जो बड़ी उम्र वाला उम्र दिया जाए और जिस किसी की उम्र घटे वह सब किताब में लिखा हुआ है अल्लाह तआला पर यह सब बिलकुल आसान है।" (11)

अल्लाह तआला की क़ुदरतों का बयान (आ. 9 से 11) : मौत के बाद ज़िन्दगी पर क़ुरआने करीम में उमूमन ख़ुश्क ज़मीन के हरा होने से इस्तिदलाल किया गया है। जैसे सूरह हज्ज वग़ैरह में है बन्दों के लिए इसमें पूरी इब्रत और मुर्दों को ज़िन्दा होने की पूरी दलील मौजूद है कि ज़मीन बिलकुल सूखी पड़ी है, कोई तरोताज़गी उसमें नज़र नहीं आती, लेकिन बादल उठते हैं, पानी बरसता है कि उसकी ख़ुश्की, ताज़गी और उसकी मौत, ज़िन्दगी से बदल जाती है। या तो एक तिनका भी नज़र न आता था या कोसों तक हरियाली ही हरियाली हो जाती है। इसी तरह बनी आदम के हिस्से क़ब्रों वग़ैरह में बिखरे पड़े होंगे एक से एक अलग होगा। लेकिन अर्श के नीचे से पानी बरसते ही तमाम जिस्म क़ब्रों में से उगने लगेंगे। जैसे ज़मीन से दाने उग आते हैं। चुनाँचे सहीह हदीस में है "इब्ने आदम तमाम का तमाम गल सड़ जाता है। लेकिन रीढ की हड्डी नहीं सड़ती। उसी से पैदा किया गया है और उसी से तर्तीब दिया जाएगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अम्म यतसाअलून : 4935; सहीह मुस्लिम : 2955; अबूदाऊद : 4743; इब्ने माजा : 4266; अहमद : 2/322; इब्ने हिब्बान : 3139) यहाँ भी निशान बताकर फ़र्माया। इसी तरह मौत के बाद की ज़ीस्त है। सूरह हज्ज की तफ़्सीर में यह हदीस गुज़र चुकी है कि "अबू रज़ीन (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (सअव) से पूछा कि हुज़ूर (सअव)! अल्लाह तआला मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा? और उसकी मख़्लूक़ में इस बात की क्या दलील है? आपने फ़र्माया, ऐ अबू रज़ीन! क्या तुम अपनी बस्ती के आसपास की ज़मीन के पास से इस हालत में नहीं गुज़रे कि वह ख़ुश्क बंजर पड़ी होती है। फिर जो तुम गुज़रते हो तो देखते हो कि वह सब्ज़ ज़ार बनी हुई है और ताज़गी के साथ लहलहा रही है। हज़रत अबू रज़ीन (रज़ि.) ने जवाब दिया हाँ! हुज़ूर (सअव)! यह तो अक्सर देखने में आया है। आपने फ़र्माया, बस इसी तरह अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा करेगा।" (अहमद : 4/11; और इसकी सनद हसन है; वक़ीअ बिन अदस हसनुल हदीस रावी है।) जो शख़्स दुनिया और आख़िरत में बाइज़्ज़त रहना चाहता हो उसे अल्लाह तआला की इताअतगुज़ारी करनी चाहिए वही इस मक़्सद का पूरा करने वाला है। दुनिया और आख़िरत का मालिक वही है। सारी इज़्ज़तें उसकी मिल्कियत में हैं।

चुनाँचे और आयत में है कि जो लोग मोमिनों को छोड़कर कुफ़्फ़ार से दोस्तियाँ करते हैं कि उनके पास

हमारी इज़्ज़त हो, इज़्ज़त से हाथ धो रखें। इज़्ज़तें तो अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में हैं। और जगह फ़र्मान है, तुझे इनकी बातें ग़मनाक न करें। तमामतर इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिए हैं। और आयत में अल्लाह जल्ल जलालुहू का फ़र्मान है (وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ) (63/मुनाफ़िक़ून : 8) यानी इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिए हैं और उसके रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए लेकिन मुनाफ़िक़ इल्म नहीं रखते। हज़रत मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं ''बुतों की पूजा में इज़्ज़त नहीं। इज़्ज़तों वाला तो अल्लाह तआला ही है।'' (तब्री : 20/443) पस बक़ौले क़तादा (रह़.) आयत का मतलब यह है कि तालिबे इज़्ज़त को अहकामे इलाही की ता'मील में मशग़ूल रहना चाहिए। (तब्री : 20/444) और यह भी कहा गया है कि जो यह जानना चाहता हो कि किसके लिए इज़्ज़त है वह जान ले कि सारी इज़्ज़तें अल्लाह तआला ही के लिए हैं। ज़िक्र, तिलावत, दुआ वग़ैरह पाक कलिमे उसी की तरफ़ चढ़ते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हम जितनी अहादीस तुम्हारे सामने बयान करते हैं। सबकी तस्दीक़ किताबुल्लाह से पेश कर सकते हैं। सुनो! मुसलमान बन्दा जब सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, तबारकल्लाह पढ़ता है तो इन कलिमात को फ़रिश्ते अपने पर तले लेकर आसमान पर चढ़ जाता है। फ़रिश्तों के जिस मज्मओ के पास से गुज़रता है वह मज्मअ उन कलिमात के कहने वाले के लिए इस्तिग़्फ़ार करता है। यहाँ तक कि रब्बुल आलमीन अज़्ज़ व जल्ल के सामने यह कलिमात पेश किये जाते हैं। फिर आपने (इलैहि यस्अदुल कलिमुत् तय्यिबुल अमलुस्सालेहु यरफ़उहू) की तिलावत की। (हाकिम : 2/425; और वह असर हसन है अब्दुर्रह़मान बिन अब्दुल्लाह मसऊदी हद्दस बिही क़ब्ल इख़्तिलातिही) (इब्ने जरीर)

हज़रत कअब अहबार (रह़.) फ़र्माते हैं ''सुब्हानल्लाहि और ला इलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अकबर अर्श के आसपास धीरे धीरे आवाज़ निकालते हैं जैसे शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट होती है। अपने कहने वाले का ज़िक्र अल्लाह तआला के सामने करते रहते हैं और नेक आमाल ख़ज़ानों में महफ़ूज़ रहते हैं। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (सअव) फ़र्माते हैं ''जो लोग अल्लाह तआला का जलाल उसकी तस्बीह उसकी हम्द उसकी बड़ाई उसकी वहदानियत का ज़िक्र करते रहते हैं। उनके लिए उनके यह कलिमात अर्श के आसपास अल्लाह तआला के सामने उनका ज़िक्र करते रहते हैं। क्या तुम नहीं चाहते कि कोई न कोई तुम्हारा ज़िक्र तुम्हारे रब के सामने करता रहे।'' (इब्ने माजा, किताबुल अदब, बाब फ़ज़्लुत्तस्बीह : 3809; और इसकी सनद हसन है; अहमद : 4/268) इब्ने अब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान है कि ''पाक कलिमों से मुराद ज़िक्रुल्लाह है और अमले सालेह से मुराद फ़राइज़ की अदायगी है। पस जो शख़्स ज़िक्रुल्लाह और अदाये फ़रीज़ा करे उसका अमल उसके ज़िक्र को अल्लाह तआला की तरफ़ चढ़ाता है और जो ज़िक्र करे लेकिन फ़रीज़ा अदा न करे उसका कलाम उसके अमल पर लौटा दिया जाता है।'' (तब्री : 20/445) इसी तरह हज़रत मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं कि कलिमा तय्यिबा को अमले सालेह ले जाता है। और बुज़ुर्गों से भी यही मन्क़ूल है।

बल्कि अयास बिन मुआविया क़ाज़ी (रह़.) फ़र्माते हैं ''अगर अमले सालेह न हो तो कलिमा तय्यिबा (ऊपर) को नहीं उठता।'' हसन और क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं ''क़ौल बग़ैर अमल के मर्दूद है।'' बुराइयों के

घात में लगने वाले वह लोग हैं जो मक्कारी और रियाकारी से आमाल करते हों। (तब्री : 20/447) लोगों पर भले यह ज़ाहिर हो कि वह अल्लाह तआला की फ़र्माबरदारी करते हैं लेकिन दरअसल अल्लाह तआला के नज़दीक वह सबसे ज़्यादा बुरे हैं। जो नेकियाँ वह करते हैं जो सिर्फ़ दिखावे की हैं। यह ज़िक्रुल्लाह बहुत ही कम करते हैं। अब्दुर्रहमान फ़र्माते हैं, इससे मुराद मुश्रिक हैं। लेकिन सहीह यह है कि यह आयत आम है मुश्रिक इसमें बतरीक़े औला दाख़िल हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब हैं और उनका मकर फ़ासिद व बातिल है। उनका झूठ आज नहीं तो कल खुल जाएगा। अक़्लमंद उनके मकर से वाक़िफ़ हो जाएँगे। जो शख़्स जो कुछ करे उसका असर उसके चेहरे से ज़ाहिर हो जाता है, उसकी ज़ुबान उसी रंग से रंग दी जाती है। जैसा बातिन होता है उसी का अक्स ज़ाहिर पर भी पड़ता है। रियाकार की बेईमानी लम्बी मुद्दत तक पोशीदा नहीं रह सकती। हाँ! कोई बेवक़ूफ़ उसके फ़रेब में फँस जाए तो और बात है। मोमिन पूरे अक़्लमंद और कामिल दाना होते हैं वह इन धोखेबाज़ों से बख़ूबी आगाह हो जाते हैं और उस आलिमुल ग़ैब अल्लाह तआला पर तो कोई बात भी छुप नहीं सकती। अल्लाह तआला ने तुम्हारे बाप हज़रत आदम (अ.) को मिट्टी से पैदा किया और उनकी नस्ल को एक ज़लील पानी से जारी रखा फिर तुम्हें जोड़ा जोड़ा बनाया। यानी मर्द व औरत यह भी उसका लुत्फ़ो करम और इन्आम व एहसान है कि मर्दों के लिए बीवियाँ बनाईं जो उनके सुकून व राहत का सबब हैं। हर हामिला के हमल की और हर बच्चे के पैदा होने की उसे ख़बर है। बल्कि हर पत्ते के झड़ने से और अंधेरे में पड़े हुए दाने से और हर तर व ख़ुश्क चीज़ से वह बाइल्म है बल्कि उसकी किताब में वह लिखा हुआ है। इसी आयत जैसी (اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى)(13/रअ़द : 8) वाली आयत भी है और वहीं इसकी पूरी तफ़्सीर भी गुज़र चुकी है।

इसी तरह अल्लाह तआला आलिमुल ग़ैब को यह भी इल्म है कि किस नुत्फ़े को लम्बी उम्र मिलने वाली है। यह भी उसके पास लिखा हुआ है। (वला युन्क़सु मिन उम्रिहीं) में ही की ज़मीर का मरजअ जिंस है। ऐन ही नहीं, इसलिए कि लम्बी उम्र किताब में है। और अल्लाह तआला के इल्म में उसकी उम्र से कमी नहीं होती। जिंस की तरफ़ भी ज़मीर लौटती है। जैसे अरब में कहा जाता है, इन्दी सौबुन व निस्फ़ुहू यानी मेरे पास एक कपड़ा है और दूसरे कपड़े का आधा है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''जिस शख़्स के लिए मैंने तूले उम्र मुक़द्दर की है वह उसे पूरी करके ही रहेगा। लेकिन वह लम्बी उम्र मेरी किताब में लिखी हुई है वहीं तक पहुँचेगी और जिसके लिए मैंने कम उम्र मुक़र्रर की है उसकी हयात उसी उम्र तक पहुँचेगी।'' यह सब कुछ अल्लाह तआला की पहली किताब में लिखी हुई मौजूद है और रब पर यह सब कुछ आसान है। (तब्री : 2/447) उम्र के नाक़िस होने का एक मतलब यह भी हो सकता है कि जो नुत्फ़ा तमाम होने से पहले ही गिर जाता है। वह भी अल्लाह तआला के इल्म में है। कुछ इंसान सौ सौ साल की उम्र पाते हैं और कुछ पैदा होते ही मर जाते हैं। साठ साल से कम उम्र में मरने वाला भी नाक़िस उम्र वाला है। यह भी कहा गया है कि माँ के पेट में उम्र की लम्बाई या कमी लिख ली जाती है। सारी मख़लूक़ की यक्साँ उम्र नहीं होती, कोई लम्बी उम्र वाला कोई कम उम्र वाला। यह सब अल्लाह तआला के यहाँ लिखा हुआ है और उसी के मुताबिक़ ज़ुहूर में आ रहा है। कुछ कहते हैं इसके मअनी यह हैं कि जो अजल लिखी गई है और उसमें से जो गुज़र रही है सब अल्लाह

तआला के इल्म में है और उसकी किताब में लिखी हुई है। बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है। हुज़ूरे अकरम (सअव) फ़र्माते हैं "जो चाहे कि उसकी रोज़ी और उम्र बढ़े वह सिला रहमी किया करे।" (सहीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मंय्यब्सुतु लहू फ़िरिज़्कि लि सिलतिर्रहम : 5986; सहीह़ मुस्लिम : 2557; अबूदाऊद : 1693)

इब्ने अबी ह़ातिम में है, हुज़ूरे अकरम (सअव) फ़र्माते हैं "किसी की अजल आ जाने के बाद उसे मोहलत नहीं मिलती। ज़्यादती उम्र से मुराद नेक औलाद का होना है। जिसकी दुआएँ उसे मरने के बाद उसकी क़ब्र में पहुँचती रहती हैं।" यही ज़्यादती उम्र है। (इसकी सनद में सुलेमान बिन अ़ता मतरूक रावी है। अल्मीज़ान : 2/215; रक़म : 3493) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) यह अल्लाह तआला पर आसान है, उसका इल्म उसके पास है। उसका इल्म तमाम मख़्लूक़ को घेरे हुए है। वह हर हर चीज़ को जानता है, उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं।

***

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾

तर्जुमा : "और बराबर नहीं दो दरिया ये मीठा है प्यास बुझाता है पीने में रचता पचता और यह दूसरा खारी है कड़वा। तुम इन दोनों में से ताज़ा गोश्त खाते हो और वह ज़ेवरात निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो। और तू देखता है कि बड़ी बड़ी कश्तियाँ पानी को चीरने फाड़ने वाली इन दरियाओं में हैं ताकि तुम उसका फ़ज़्ल ढूँढो और क्या अजब कि तुम उसका शुक्र भी करो।" (12)

अल्लाह तआला की अजीब क़ुदरत का बयान (आ. 12) : मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ों की पैदाइश को बयान करके अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत को साबित कर रहा है। दो क़िस्म के दरिया पैदा कर दिये एक का तो साफ़ सुथरा मीठा और उम्दा पानी जो आबादियों में जंगलों में बराबर बह रहा है और दूसरे साकिन दरिया जिनका पानी खारी और कड़वा है जिसमें बड़ी बड़ी कश्तियाँ और जहाज़ चल रहे हैं। और दोनों क़िस्म के दरिया में से क़िस्म क़िस्म की मछलियाँ तुम निकालते हो और तरोताज़ा गोश्त खाते रहते हो। फिर उनमें से ज़ेवर निकालते हो। यानी लूअ लूअ और मरजान। यह कश्तियाँ बराबर पानी को काटती रहती हैं। हवाओं का मुक़ाबला करके चलती रहती हैं ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश कर लो। तिजारती सफ़र उन पर तै करो। एक मुल्क से दूसरे मुल्क में पहुँच सको और ताकि तुम अपने रब का शुक्र करो कि उसने यह सब चीज़ें तुम्हारी

ताबेअ़ फ़र्मान बना दीं। तुम समुन्द्रों से, दरियाओं से, कश्तियों से नफ़ा हासिल करते हो। जहाँ जाना चाहो पहुँच जाते हो। इस क़ुदरत वाले अल्लाह तआला ने ज़मीनो आसमान की चीज़ों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है यह सिर्फ़ उसका ही फ़ज़्लो करम है।

***

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۝ۭ۱۳ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَاۗءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۭ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۭ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ۝۱۴

तर्जुमा :''रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है आफ़ताब (सूरज) व माहताब (चाँद) को उसी ने काम में लगा दिया है हर एक म्यादे मुअय्यन (फिक्स टाइम) पर चल रहा है। यही है अल्लाह तआला तुम सबका पालने वाला उसी की सल्तनत है। जिन्हें तुम उसके सिवा पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिल्के के भी मालिक नहीं। (13) अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और अगर बिल्फ़र्ज़ सुन भी लें तो क़बूल नहीं कर सकते हैं। बल्कि क़ियामत के दिन तुम्हारे इस शिर्क का साफ़ इंकार कर जाएँगे। तुझे कोई भी हक़ तआला जैसी ख़बरदार ख़बरें न देगा।'' (14)

दिन और रात की तख़्लीक़ क़ुदरते इलाही की निशानी है (आ. 13, 14) : अल्लाह तआला अपनी क़ुदरते कामिला का बयान फ़र्मा रहा है कि उसने रात को अंधेरे वाली और दिन को रोशनी वाला बनाया है। कभी की रातें बड़ी कभी के दिन बड़े, कभी दोनों एक जैसे। कभी जाड़े हैं, कभी गर्मियाँ हैं। उसी ने सूरज और चाँद को और थमे हुए और चलते फिरते सितारों को मुतीअ़ कर रखा है। मिक़्दारे मुअय्यन पर अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़र्ररशुदा चाल पर चलते रहते हैं। पूरी क़ुदरतों वाले और कामिल इल्म वाले अल्लाह तआला ने यह निज़ाम क़ायम कर रखा है जो बराबर चल रहा है और वक़्ते मुक़र्ररा यानी क़ियामत तक यूँ ही जारी रहेगा। जिस अल्लाह तआला ने यह सब किया है वही दरअसल लायक़े इबादत है और वही सबका पालने वाला है। उसके सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं। जिन बुतों को अल्ल्लाह तआला के सिवा जिन जिनको लोग पुकारते हैं ख़्वाह वह फ़रिश्ते ही क्यूँ न हों। और अल्लाह तआला के पास बड़े दर्जे रखने वाले ही क्यूँ न हों लेकिन सबके सब उसके सामने सिर्फ़ मजबूर और बिलकुल बेबस हैं। खजूर की गुठली के ऊपर के बारीक छिल्के जैसी चीज़ का भी उन्हें इख़्तियार नहीं, आसमान व ज़मीन की हक़ीर चीज़ के भी वह मालिक नहीं। जिन

जिनको तुम अल्लाह तआला के सिवा पुकारते हो वह तुम्हारी आवाज़ सुनते ही नहीं। तुम्हारे यह बुत वग़ैरह बेजान चीज़ें कान वाली नहीं जो सुन सकें। बेजान चीज़ें भी कहीं किसी की सुन सकती हैं? और बिल्फ़र्ज़ तुम्हारी पुकार सुन भी लें तो चूँकि इनके क़ब्ज़े में कोई चीज़ नहीं इसलिए वह तुम्हारी हाजत पूरी कर नहीं सकते। क़ियामत के दिन तुम्हारे इस शिर्क से वह इंकारी हो जाएँगे। तुमसे बेज़ार नज़र आएँगे।

जैसे फ़र्माया (وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ)(46/अहक़ाफ़ : 5) यानी उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह तआला के सिवा ऐसों को पुकारता है जो क़ियामत तक उनकी पुकार को न क़बूल कर सकें। बल्कि उनकी दुआ से वह सिर्फ़ बेख़बर और ग़ाफ़िल हैं और मैदाने महशर में वह उनके दुश्मन हो जाएँगे और उनकी इबादतों से मुंकिर हो जाएँगे। और आयत में है (وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا) (19/मरियम : 81) यानी अल्लाह तआला के सिवा और मअबूद बना लिये हैं ताकि वह उनके लिए बाइसे इज़्ज़त बनें। लेकिन ऐसा होने का नहीं बल्कि वह उनकी इबादतों से भी इंकारी हो जाएँगे और उनके मुख़ालिफ़ और दुश्मन बन जाएँगे। भला बताओ अल्लाह तआला जैसी सच्ची ख़बरें और कौन दे सकता है? जो उसने फ़र्माया वह यक़ीनन होकर ही रहेगा। जो कुछ होने वाला है उससे अल्लाह तआला पूरा ख़बरदार है। उस जैसी ख़बर कोई और नहीं दे सकता।

***

يَاۤ أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ إِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ۚ
وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۗ إِنَّمَا تُنْذِرُ
الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۚ وَمَنْ تَزَكّٰى فَإِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ۚ
وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : ''ऐ लोगों! तुम अल्लाह तआला की तरफ़ मोहताज हो और अल्लाह तआला बेनियाज़ ता'रीफ़ों वाला है। (15) अगर वह चाहे तो तुमको फ़ना कर दे। (16) और एक नई मख़लूक़ पैदा कर दे और यह बात अल्लाह तआला को कुछ मुश्किल नहीं। (17) कोई भी बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। अगर कोई गिराँ बार दूसरे को अपना बोझ उठाने के लिए बुलाएगा तो वह उसमें से कुछ भी न उठायेगा भले क़राबतदारी हो। तू सिर्फ़ उन्हीं को आगाह कर सकता है जो ग़ायबाना तौर पर अपने रब से डरते रहते हैं। और नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। जो भी पाक हो जाए, वह अपने ही नफ़ा के लिए पाक होगा लौटना अल्लाह तआला की तरफ़ है।'' (18)

अल्लाह तआला सबको फ़ना करने पर क़ादिर है (आ. 15 से 18) : अल्लाह तआला सारी मख़्लूक़ से बेनियाज़ है और तमाम मख़्लूक़ उसकी मोहताज है। वह ग़नी है और सब फ़क़ीर हैं। वह बेपरवाह है और सब उसके हाजतमंद हैं। उसके सामने हर कोई ज़लील है और वह अज़ीज़ है। किसी क़िस्म की हरकत व सुकून पर कोई क़ादिर नहीं। सांस तक लेना किसी के बस में नहीं। मख़्लूक़ बिलकुल ही बेबस है। ग़नी बेपरवाह और बेनियाज़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है तमाम बातों पर क़ादिर वही है। वह जो करता है उसमें क़ाबिले ता'रीफ़ है। उसका कोई काम हिक्मत व ता'रीफ़ से ख़ाली नहीं। अपने क़ौल में अपने काम में अपनी शरअ और तक़्दीरों के मुक़र्रर करने में। ग़र्ज़ हर तरह वह बुज़ुर्ग और लायक़े हम्दो सना है, लोगों अल्लाह तआला की क़ुदरत है अगर वह चाहे तो तुम सबको ग़ारत व बर्बाद कर दे और तुम्हारे बदले दूसरे लोगों को लाए। रब पर यह काम कुछ मुश्किल नहीं। क़ियामत के दिन कोई दूसरे पर लादना चाहे तो यह चाहत भी उसकी पूरी न होगी।

कोई न मिलेगा कि उसका बोझ बटाये। अज़ीज़ व अक़ारिब भी मुँह मोड़ लेंगे और पीठ फेर लेंगे, भले माँ बाप और औलाद हो। हर शख़्स अपने हाल में मशग़ूल होगा हर एक को अपनी अपनी पड़ी होगी। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं ''पड़ौसी पड़ौसी के पीछे पड़ जाएगा। अल्लाह तआला से अर्ज़ करेगा कि उससे पूछ तो सही कि उसने मुझसे अपना दरवाज़ा क्यूँ बंद कर लिया था। काफ़िर मोमिन के पीछे लग जाएगा और जो एहसान उसने दुनिया में किये थे वह याद दिलाकर कहेगा कि आज मैं तेरा मोहताज हूँ। मोमिन भी उसकी सिफ़ारिश करेगा और हो सकता है कि उसका अज़ाब क़द्रे कम हो जाए भले जहन्नम से छुटकारा महाल (असंभव) है। बाप बेटे को अपने एहसान जताएगा और कहेगा कि राई के दाने बराबर मुझे आज अपनी नेकियों में से दे दे। वह कहेगा अब्बा! आप चीज़ तो थोड़ी सी तलब कर रहे हैं लेकिन आज तो जो खटका आपको है वही मुझे भी है मैं तो कुछ भी नहीं दे सकता। फिर बीवी के पास जाएगा उससे कहेगा। मैंने तेरे साथ दुनिया में कैसे सुलूक किये हैं? वह कहेगी बहुत ही अच्छे। यह कहेगा आज मैं तेरा मोहताज हूँ, मुझे एक नेकी दे दे ताकि अज़ाबों से छूट जाऊँ। जवाब मिलेगा कि सवाल तो बहुत हल्का है लेकिन जिस डर में तुम हो वही डर मुझे भी लगा हुआ है। मैं तो कुछ भी सुलूक आज नहीं कर सकती।'' क़ुरआन करीम की और आयत में है (لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا) (31/लुक़्मान : 33) यानी आज न बाप बेटे के काम आए, न बेटा बाप के काम आये। और फ़र्मान है (يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ)(80/अबस : 34) आज इंसान अपने भाई से, माँ से, बाप से, बीवी से और औलाद से भागता फिरेगा। हर शख़्स अपने हाल में मस्त व बेख़ुद होगा। हर एक दूसरे से ग़ाफ़िल होगा। तेरे वअ़ज़ व नसीहत से वही लोग फ़ायदा उठा सकते हैं जो अक़्लमंद और साहिबे फ़रासत हों जो अपने रब से क़दम क़दम पर डरने वाले और इताअते इलाही करते हुए नमाज़ों को पाबन्दी से अदा करने वाले हों। नेक अमल ख़ुद तुम ही को नफ़ा देंगी। जो पाकीज़गियाँ तुम करो उनका नफ़ा तुम ही को पहुँचेगा। आख़िर अल्लाह तआला के पास जाना है उसके सामने पेश होना है। हिसाब किताब उसके सामने होना है। आमाल का बदला वह ख़ुद देने वाला है।

***

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرُ ⑲ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّورُ ⑳ وَلَا الظِّلُّ وَلَا
الْحَرُورُ ㉑ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَمَا
أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُورِ ㉒ إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ㉓ إِنَّا أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا
وَّنَذِيرًا ۚ وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ㉔ وَإِنْ يُّكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيرِ ㉕ ثُمَّ أَخَذْتُ
الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ㉖

तर्जुमा : "और अँधा और आँखों वाला बराबर नहीं। (19) और न तारीकी और रोशनी। (20) और न छाँव और न धूप। (21) और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह तआला जिसको चाहता है सुनवा देता है और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं। (22) आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं। (23) हम ही ने आपको हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुज़रा हो। (24) और अगर यह लोग आपको झुठला दें तो जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हों उन्होंने भी झुठलाया था उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े और सहीफ़े और रोशन किताबें लेकर आए थे। (25) फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया तो मेरा अज़ाब कैसा हुआ।" (26)

ज़िन्दा और मुर्दा बराबर नहीं (आ. 19 से 26) : इर्शाद होता है कि मोमिन और काफ़िर बराबर नहीं जिस तरह अंधा और देखता अंधेरा और रोशनी, साया और धूप, ज़िन्दा और मुर्दा बराबर नहीं। जिस तरह उन चीज़ों में ज़मीनों आसमान का फ़र्क़ है इसी तरह ईमानदार और बेईमान में भी बेइंतिहा फ़र्क़ है। मोमिन मिस्ल आँखों वाले के और उजाले के और साये के और ज़िन्दे के मानिन्द है। बरख़िलाफ़ काफ़िर मिस्ल एक अँधे के और अंधेरे के और लो वाली गर्मी के है। जैसे फ़र्माया (اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ) (6/अन्आम : 122) यानी जो मुर्दा था फिर उसे हमने ज़िन्दा कर दिया और उसे नूर दिया जिसे लिए हुए लोगों में चल फिर रहा है। ऐसा शख़्स और वह शख़्स जो अंधेरों में घिरा हुआ है जिनसे निकल ही नहीं सकता। यह दोनों बराबर हो सकते हैं? और आयत में है (مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ) (11/हूद : 24) यानी इन दोनों जमाअतों की मिसाल अंधे और बहरे और देखते सुनते की सी है...।

मोमिन तो आँखों और कानों वाला उजाले और नूर वाला है। फिर राहे मुस्तक़ीम पर है जो सहीह तौर पर सायों और नहरों वाली जन्नत में पहुँचेगा और उसके बरअक्स काफ़िर अँधा बहरा और अंधेरों में फँसा हुआ

है, जिनसे निकल ही नहीं सकता। और ठीक जहन्नम पहुँचेगा जो हरारत, तुंदी, तेज़ी और गर्मी वाली आग का मख़्ज़न है। अल्लाह तआला जैसे चाहे सुना दे यानी इस तरह सुनने की तौफ़ीक़ दे कि सुनकर क़बूल भी करता जाए। तू क़ब्र वालों को नहीं सुना सकता। यानी जिस तरह कोई मरने के बाद क़ब्र में दफ़ना दिया जाए तो उसे पुकारना बेकार है इसी तरह कुफ़्फ़ार हैं कि हिदायत व दावत उनके लिए बेकार है। इसी तरह उन मुश्रिकों पर उन्हीं की बदबख़्ती छा गई है और उनकी हिदायत की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रही तू इनको किसी तरह हिदायत पर नहीं ला सकता। तू सिर्फ़ आगाह करने वाला है। तेरे ज़िम्मे सिर्फ़ तब्लीग़ है हिदायत व ज़लालत अल्लाह की तरफ़ से है। हज़रत आदम (अ.) से लेकर आज तक हर उम्मत में रसूल आता रहा ताकि उनका उज़्र बाक़ी न रह जाए। जैसे और आयत में है (وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ) (13/रअद : 7) और जैसे फ़र्मान है (وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا) (16/नहल : 36) वग़ैरह। इनका तुझे झुठलाना कोई नई बात नहीं। इनसे पहले के लोगों ने भी अल्लाह तआला के रसूलों को झुठलाया। जो बड़े बड़े मोजिज़ात खुली खुली दलीलें साफ़ साफ़ आयतें लेकर आए थे और नूरानी सहीफ़े उनके हाथों में थे। आख़िर उनके झुठलाने वालों का नतीजा यह हुआ कि मैंने उन्हें अज़ाब व सज़ा में गिरफ़्तार कर लिया। देख ले कि फिर मेरे इंकार का नतीजा क्या हुआ? किस तरह तबाह व बर्बाद हुए, वल्लाहु आलम!

***

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआला ने आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उसके ज़रिये से मुख़्तलिफ़ रंगों के फल निकाले और पहाड़ों के भी मुख़्तलिफ़ हिस्से हैं सफ़ेद और लाल कि उनकी भी रंगतें अलग अलग हैं और बहुत गहरे स्याह (27) और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उनकी रंगतें मुख़्तलिफ़ हैं अल्लाह तआला से उसके वही बंदे डरते हैं जो इल्म रखते हैं। वाक़ेई अल्लाह तआला ज़बरदस्त बड़ा बख़्शने वाला है।" (28)

मुख़्तलिफ़ रंग भी अल्लाह तआला की क़ुदरत है (आ. 27, 28) : रब की क़ुदरतों के कमालात देखो

कि एक ही क़िस्म की चीज़ों में गो ना गूँ नमूने नज़र आते हैं। एक ही तरह का पानी आसमान से उतरता है और उसी से अलग अलग क़िस्म के रंग बिरंग के फल पैदा हो जाते हैं। लाल, हरा, सफ़ेद वग़ैरह। इसी तरह हर एक की ख़ुश्बू अलग अलग हर एक का ज़ायक़ा अलग अलग। जैसे और आयत में फ़र्माया (وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ) (13/रअ़द : 4) यानी कहीं अंगूर है, कहीं खजूर है, कहीं खेती है वग़ैरह इसी तरह पहाड़ों की पैदाइश भी क़िस्म क़िस्म की है कोई सफ़ेद है, कोई लाल है, कोई काला है। किसी में रास्ते और घाटियाँ हैं, कोई लम्बा है कोई नाहमवार है। इन बेजान चीज़ों के बाद जानदार चीज़ों पर नज़र डालो। इंसानों को जानवरों को चौपायों को देखो। इनमें भी क़ुदरत की तरह तरह की गुलकारियाँ पाओगे। बरबर, ह़ब्शी, तमातुम, बिलकुल काले होते हैं। सक़ालबा रूमी बिलकुल सफ़ेद रंग, अरब दरम्याना, हिन्दी उनके क़रीब क़रीब। चुनाँचे और आयत में है (وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ) (30/रूम : 2) तुम्हारी बोलचाल का इख़्तिलाफ़, तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़ भी एक आलिम के लिए तो क़ुदरत की कामिल निशानी है। इसी तरह चौपाये और दीगर हैवानात के रंग रूप भी अलग अलग हैं। बल्कि एक ही क़िस्म के जानवरों में उनकी रंगतें भी मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) हैं। बल्कि एक ही जानवर के जिस्म पर कई कई क़िस्म के रंग होते हैं।

सुब्हानल्लाह! सबसे अच्छा ख़ालिक़ अल्लाह तआला कैसी कुछ बरकतों वाला है। मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि "एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सअव) से सवाल किया कि अल्लाह तआला रंग आमेज़ी भी करता है? आपने फ़र्माया, हाँ! ऐसा रंग रंगता है जो कभी हल्का न पड़े, लाल ज़र्द और सफ़ेद।" (बज़्ज़ार : 2944; और इस ी सनद ज़ईफ़ है; हैसमी कहते हैं इसकी सनद में अ़ता बिन साइब मुख़्तलत़ रावी है (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/131) यह ह़दीस मुर्सल और मौक़ूफ़ भी मरवी है। इसके बाद ही फ़र्माया कि जितना कुछ ख़ौफ़े इलाही करना चाहिए उतना ख़ौफ़ तो उससे सिर्फ़ उ़लमा (इल्म रखने वाले) ही करते हैं। क्योंकि वह जानने बूझने वाले होते हैं, ह़क़ीक़तन जो शख़्स जिस क़द्र ज़ाते इलाही की निस्बत मालूमात ज़्यादा रखेगा, उसी क़द्र उस अ़ज़ीम, क़दीर, अ़लीम इलाही की अ़ज़्मत व हैबत उसके दिल में बढ़ेगी और उस क़द्र उसकी ख़शिय्यत उसके दिल में ज़्यादा होगी जो जानेगा कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है वह क़दम क़दम पर उससे डरता रहेगा। अल्लाह तआला के साथ सच्चा इल्म उसे ह़ासिल है जो उसकी ज़ात के साथ किसी को शरीक न करे। उसके ह़लाल किये हुए को ह़लाल और उसके ह़राम बताये कामों को ह़राम जाने, उसके फ़र्मान पर यक़ीन करे, उसकी वसिय्यत की निगहबानी करे। उसकी मुलाक़ात को बरह़क़ जाने अपने आमाल के ह़िसाब को सच समझे। ख़शिय्यत एक क़ुव्वत होती है जो बंदे के और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी के बीच ह़ाइल हो जाती है, आ़लिम कहते ही उसे हैं जो दरपर्दा भी अल्लाह तआला से डरता रहे और अल्लाह तआला की रज़ामंदी की रग़बत करे और उसकी नाराज़गी के कामों से नफ़रत रखे। ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं "बातों की ज़्यादती का नाम इल्म नहीं, इल्म नाम है बकसरत अल्लाह तआला से डरने का।" ह़ज़रत इमाम मालिक (रह़.) का क़ौल है कि "कसरते रिवायात का नाम इल्म नहीं, इल्म तो एक नूर है जिसे अल्लाह तआला अपने बंदे के दिल में डाल देता है।" ह़ज़रत अह़मद बिन स़ालेह़ मिस्री (रह़.) फ़र्माते हैं "इल्म कसरते रिवायात का नाम नहीं, बल्कि इल्म नाम है उसका जिसकी ताबेदारी अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़र्ज़ है यानी किताबो सुन्नत और जो

सहाबा और अइम्मा से पहुँचा हो। वह रूयत (ग़ौरो फ़िक्र) से ही हासिल होता है। नूर जो बंदे के आगे आगे होता है। वह इल्म को और उसके मतलब को समझ लेता है।'' मरवी है कि उलमा की तीन क़िस्में हैं, आलिम बिल्लाह, आलिम बि अम्रिल्लाह, और आलिम बिल्लाह व बि अम्रिल्लाह। आलिम बिल्लाह आमिल बिअम्रिल्लाह नहीं और आलिम बिअम्रिल्लाह आलिम बिल्लाह नहीं। हाँ! आलिम बिल्लाह व बि अम्रिल्लाह वह है जो अल्लाह तआला से डरता हो और हुदूद व फ़राइज़ को जानता हो। आलिम बिल्लाह वह है जो अल्लाह तआला से डरता हो लेकिन हुदूद व फ़राइज़ को न जानता हो। आलिम बिअम्रिल्लाह वह है जो हुदूद व फ़राइज़ को तो जानता हो लेकिन दिल उसका ख़शिय्यते इलाही से ख़ाली हो।

***

إِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ
اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ
عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ
اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : ''जो लोग किताबुल्लाह की तिलावत करते रहते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और जो कुछ हमने उनको अता किया उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च करते हैं वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी माँद न होगी। (29) ताकि उनको उनकी उज्रतें पूरी दें और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा दें बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला बड़ा क़द्रदान है। (30) और यह किताब जो हमने आपके पास वही के तौर पर भेजी है यह बिलकुल ठीक है जो कि अपने से पहली किताबों की भी तस्दीक़ करती है। अल्लाह तआला अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला ख़ूब देखने वाला है। (31) फिर यह किताब हमने उन लोगों के हाथों में पहुँचाई है जिनको हमने अपने बन्दों में से पसंद किया। फिर कुछ तो उनमें अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और कुछ उनमें बीच के दर्जे के हैं और कुछ उनमें अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से नेकियों में तरक़्क़ी किये चले जाते हैं, यह बड़ा अफ़ज़ल है।'' (32)

मोमिनों की सिफ़ात (आ. 29 से 32) : मोमिन बन्दों की नेक सिफ़तें बयान हो रही हैं कि वह किताबुल्लाह की तिलावत में मशग़ूल रहा करते हैं। ईमान के साथ बढ़ते रहते हैं, अमल भी हाथ से जाने नहीं देते। नमाज़ के पाबन्द, ज़कात, ख़ैरात के आदी, पोशीदा एलानिया, अल्लाह तआला के बन्दों के साथ सुलूक करने वाले होते हैं और अपने माल के सवाब के उम्मीदवार अल्लाह से होते हैं जिसका मिलना यक़ीनी है जैसे कि इस तफ़्सीर के शुरू में फ़ज़ाइले कुरआन के ज़िक्र में हमने बयान किया है कि कलामुल्लह शरीफ़ अपने साथी से कहेगा कि हर ताजिर अपनी तिजारत के पीछे है और तू तो सबकी सब तिजारतों के पीछे है। उन्हें उनके सवाब पूरे मिलेंगे बल्कि बहुत बढ़ा चढ़ाकर मिलेंगे जिसका ख़्याल भी नहीं। अल्लाह तआला गुनाहों का बख़्शने वाला और छोटे और थोड़े अमल का भी क़द्रदान है। हज़रत मुतर्रिफ़ (रह.) तो इस आयत को क़ारियों की आयत कहते हैं। मुस्नद की एक हदीस में है "अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से राज़ी होता है तो उस पर भलाइयों की सना करता है, जो उसने की न हो। और जब किसी से नाराज़ होता है तो उसी तरह बुराइयों की।" (अहमद : 3/40; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने हिब्बान : 368; मुस्नदे अबी यअला : 1331; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/272) लेकिन यह हदीस बहुत ही ग़रीब है।

कुरआन अल्लाह का सच्चा कलाम है : कुरआन अल्लाह का हक़ कलाम है जिस तरह अगली किताबें उसकी ख़बर देती रहीं यह भी उन अगली सच्ची किताबों की सच्चाई साबित कर रहा है। रब ख़बीर व बसीर है, हर मुस्तहिक़े फ़ज़ीलत को बख़ूबी जानता है, अम्बिया (अ.) को और इंसानों पर उसने अपने वसीअ इल्म से फ़ज़ीलत दी है फिर अम्बिया में भी आपस में मर्तबे मुक़र्रर कर दिये हैं। और अलल इत्लाक़ हज़रत मुहम्मद (सअव) का दर्जा सबसे बड़ा कर दिया है। अल्लाह तआला अपने तमाम अम्बिया (अ.) पर दुरूद व सलाम भेजे।

कुरआन पर अमल करने वाले लोग : जिस किताब का ऊपर ज़िक्र हुआ था उस बुज़ुर्ग किताब यानी कुरआने करीम को हमने अपने चुनिन्दा बन्दों के हाथों में दिया यानी इस उम्मत के हाथों। फिर इनमें तीन क़िस्म के लोग हो गए। कुछ तो ज़रा कुछ आगे पीछे हो गए वह ज़ालिमे नफ़्स कहलाये, उनसे कुछ हुर्मत वाले काम भी सरज़द हो गए। कुछ दरम्याना दर्जे के रहे जिन्होंने मुहर्रमात से इज्तिनाब किया, वाजिबात बजा लाते रहे। लेकिन कभी कभी कोई मुस्तहब काम उनसे छूट भी गया और कभी कोई हल्की सी नाफ़र्मानी भी सरज़द हो गई। कुछ दर्जों में बहुत ही आगे निकल गए। वाजिबात छोड़कर मुस्तहब्बात को भी उन्होंने न छोड़ा और मुहर्रमात छोड़कर मकरूहात से भी यक्सर अलग रहे बल्कि कुछ मर्तबा मुबाह चीज़ों को भी डरकर छोड़ दिया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "पसंदीदा बन्दों से मुराद उम्मते मुहम्मदिया है जो अल्लाह तआला की हर किताब की वारिस बनाई गई है। उनमें जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं उन्हें बख़्शा जाएगा और उनमें जो दरम्याना लोग हैं उनसे आसानी से हिसाब लिया जाएगा। उनमें जो नेकियों में बढ़ जाने वाले हैं उन्हें बेहिसाब जन्नत में पहुँचाया जाएगा।" (तब्री : 20/465) तब्रानी में है हुज़ूरे अकरम (सअव) ने फ़र्माया, "मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत के कबीरा गुनाह वालों के लिए है।" इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "साबिक़ लोग तो बग़ैर हिसाब किताब के दाख़िले जन्नत होंगे और अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म करने वाले और अस्हाबे आराफ़

मुहम्मद (सअव) की शफ़ाअत से जन्नत में जाएँगे।'' (तब्रानी : 11454; और इसकी सनद मौज़ूअ है; इसमें मूसा बिन अब्दुर्रहमान सिन्आनी दज्जाल वज़्ज़ाअ है।) अल्ग़र्ज़ इस उम्मत के हल्के फुल्के गुनहगार भी अल्लाह तआला के पसंदीदा बन्दों में दाख़िल हैं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह!

भले अक्सर सलफ़ का क़ौल यही है कि कुछ सलफ़ ने यह भी फ़र्माया है कि यह लोग न तो इस उम्मत में दाख़िल हैं और न चुनिन्दा और पसंदीदा हैं। न वारिसीने किताब हैं, बल्कि मुराद इससे काफ़िर मुनाफ़िक़ और बाएँ हाथ में नामा-ए-आमाल दिये जाने वाले हैं। पस यह तीन क़िस्में वही हैं जिनका बयान सूरह वाक़िया के पहले और आख़िर में है। यानी यह जो तीन अक़्साम गिनाई गई हैं, यह बरगुज़ीदा बन्दों की नहीं बल्कि बन्दों की हैं यानी (इबादिना) की कि वह किन किन क़िस्मों के होते हैं। लेकिन सही क़ौल यही है कि यह इसी उम्मत में हैं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी क़ौल को पसंद करते हैं। और आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ भी यही हैं। अहादीस से भी यही साबित होता है।

चुनाँचे एक हदीस में है कि ''यह तीनों गोया एक हैं और तीनों ही जन्नती हैं।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल मलाइकति : 3225; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू सुफ़्यान तुरैफ़ बिन शिहाब रावी ज़ईफ़ है। अहमद : 3/78) यह हदीस ग़रीब है और इसके रावियों में एक रावी हैं जिनका नाम मज़्कूर नहीं। इस हदीस का मतलब यह है कि इस उम्मत में होने के एतिबार से कि वह जन्नती हैं गोया एक ही हैं। हाँ! मर्तबों में फ़र्क़ होना लाज़मी है। दूसरी हदीस में है कि ''हुज़ूरे अकरम (सअव) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया, साबिक़ीन तो बग़ैर हिसाब जन्नत में जाएँगे और दरम्याना लोगों से आसानी के साथ हिसाब लिया जाएगा। और अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म करने वाले तूले महशर में रोके जाएँगे। फिर अल्लाह तआला की रहमत से तलाफ़ी हो जाएगी और यह कहेंगे कि अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने हमसे ग़म व रंज को दूर कर दिया है। हमारा रब ही ग़फ़ूर व शकूर है जिसने हमें अपने फ़ज़्लो करम से रिहाइश की ऐसी जगह अता की जहाँ हमें कोई दर्द दुख नहीं।'' (अहमद : 5/198; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में अली बिन अब्दुल्लाह और हज़रत अबुद् दर्दा (रज़ि.) के बीच इंतिक़ताअ है।)

इब्ने अबी हातिम की इस रिवायत में अल्फ़ाज़ में कुछ कमी बेशी है। इब्ने जरीर ने भी इस हदीस को रिवायत किया है, उसमें है कि हज़रत अबू साबित (रज़ि.) मस्जिद में आते हैं और हज़रत अबुद् दर्दा (रज़ि.) के पास बैठ जाते हैं और दुआ करते हैं कि ''ऐ अल्लाह! मेरी वहशत का सामान मेरे लिए मुहय्या कर दे और मेरी गुर्बत पर रहम कर और मुझे कोई अच्छा रफ़ीक़ (दोस्त) अता फ़र्मा। यह सुनकर सहाबी उनकी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और फ़र्माते हैं कि मैं तेरा साथी हूँ। सुन! मैं तुझे आज वह हदीसे रसूल (सअव) सुनाता हूँ जिसे मैंने आज तक किसी को नहीं सुनाया। फिर इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया (साबिक़ुन बिल ख़ैरात) तो जन्नत में बग़ैर हिसाब जाएँगे और (मुक़्तसिदुन) लोगों से आसानी के साथ हिसाब लिया जाएगा और (ज़ालिमुल् लि नफ़्सिही) गो उस मकान में ग़म व रंज पहुँचेगा, जिससे नजात पाकर कहेंगे, अल्लाह तआला का शुक्र है, जिसने हमसे रंजो ग़म को दूर कर दिया।'' तीसरी हदीस में है हुज़ूरे अकरम (सअव) ने इन तीनों की निस्बत फ़र्माया कि ''यह सब इसी उम्मत से हैं।'' (तब्रानी : 410; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/99;

हाकिम : 2/426; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला सीउल हिफ़्ज़ है। (अत्तक़रीब : 2/184; रक़म : 460) चौथी हदीस में है "मेरी उम्मत के तीन हिस्से हैं। एक बग़ैर हिसाब व बग़ैर अज़ाब जन्नत में जाने वाला दूसरा आसानी से हिसाब लिया जाने वाला और फिर बहिश्त नशीन होने वाला। तीसरी वह जमाअत होगी जिनसे बाज़पुर्स तो ज़रूर होगी। लेकिन फिर फ़रिश्ते हाज़िर होकर कहेंगे कि हमने उन्हें ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू कहते हुए पाया है। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, सच है मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, अच्छा उन्हें मैंने इनके इस क़ौल की वजह से छोड़ा, जाओ इन्हें जन्नत में ले जाओ और इनकी ख़ताएँ जहन्नमियों पर लाद दो।" इसी का ज़िक्र आयत (وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ) (29/अन्कबूत : 13) में है यानी वह उनके बोझ अपने बोझ के साथ उठायेंगे। इसकी तस्दीक़ इसमें है जिसमें फ़रिश्तों का ज़िक्र है। अल्लाह तआला ने अपने बन्दों में से जिन्हें वारिसीने किताब बनाया है उनका ज़िक्र करते हुए उनकी तीन क़िस्में बताई हैं। पस इनमें से जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं उनकी पूछताछ की जाएगी। (और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "इस उम्मत की क़ियामत के दिन तीन जमाअतें होंगी। एक बग़ैर हिसाब जन्नत में जाने वाली। एक आसानी से हिसाब लिए जाने वाली, एक गुनहगार जिसकी निस्बत अल्लाह तआला पूछेगा। हालाँकि वह ख़ूब जानता है कि यह कौन हैं? फ़रिश्ते कहेंगे, ऐ अल्लाह! इनके पास बड़े बड़े गुनाह हैं। लेकिन इन्होंने कभी भी तेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया। रब अज़्ज़ व जल्ल कहेगा, इन्हें मेरी रहमत में दाख़िल कर दो। फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने इसी आयत की तिलावत की।" (इब्ने जरीर) दूसरा असर, हज़रत आइशा (रज़ि.) से इस आयत के बारे में सवाल होता है तो आप फ़र्माती हैं "बेटा! यह सब जन्नती लोग हैं। (साबिक़ुन बिल ख़ैरात) तो वह हैं जो रसूलुल्लाह (सअव) के ज़माने में थे। जिन्हें ख़ुद आपने जन्नत की बशारत दी। (मुक़्तसिदुन) वह हैं जिन्होंने आपके नक़्शे क़दम की पैरवी की, यहाँ तक कि उनसे मिल गए और (ज़ालिमुल् लि नफ़्सिही) मुझ तुझ जैसे हैं।" (हाकिम : 2/426; और इसकी सनद ज़ईफ़ है व अख़्तअल हाकिम फ़ सह्हहू) (अबूदाऊद तयालिसी) ख़्याल कीजिए कि आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) बावजूद यह कि (साबिक़ुम् बिल ख़ैरात) में से बल्कि उनमें से भी बेहतरीन दर्जे वालों में से हैं, लेकिन किस तरह अपने आपको मुत्वाज़ेअ बनाती हैं। हालाँकि हदीस में आ चुका है कि तमाम औरतों पर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) को वही फ़ज़ीलत है जो फ़ज़ीलत सरीद को हर क़िस्म के खाने पर है। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले अस्हाबिन्नबी, बाब फ़ज़्ले आइशा (रज़ि.) : 3770; सहीह मुस्लिम : 2446) हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) फ़र्माते हैं "(ज़ालिमुल् लि नफ़्सिही) तो हमारे देहाती लोग हैं और (मुक़्तसिदुन) हमारे शहरी लोग हैं। और साबिक़ हमारे मुजाहिद हैं।" (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि "यह तीनों क़िस्म के लोग इसी उम्मत में से हैं और सब जन्नती हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने इन तीनों क़िस्मों के लोगों के ज़िक्र के बाद जन्नत का ज़िक्र करके फिर फ़र्माया है (وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ) (35/फ़ातिर : 36) पस यह लोग दोज़ख़ी हैं।" (इब्ने जरीर) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हज़रत कअब (रह.) से इस आयत के बारे में सवाल किया तो आपने फ़र्माया,

"कअ़ब के रब की क़सम! यह सब एक ही ज़ुमरे में हैं। हाँ! आमाल के मुताबिक़ इनके दरजात कमो बेश हैं।" अबू इस्हाक़ सबीई (रह.) भी इस आयत के बारे में फ़र्माते हैं कि यह तीनों जमाअ़तें कामयाब होने वाली हैं।

मुहम्मद बिन हनीफ़ा (रह.) फ़र्माते हैं "यह उम्मते मरहूमा है। इनके गुनहगारों को बख़्श दिया जाएगा और इनके मुक़्तसिद अल्लाह के पास जन्नत में होंगे और इनके साबिक़ बुलंद दर्जों में होंगे।" मुहम्मद बिन अ़ली बाक़िर (रह.) फ़र्माते हैं कि यहाँ जिन लोगों को (ज़ालिमुल लि नफ़्सिही) कहा गया है यह वह लोग हैं जिन्होंने गुनाह भी किये थे और नेकियाँ भी। इन अहादीस और आसार को सामने रखकर यह तो साफ़ मालूम हो जाता है कि इस आयत में उ़मूम है और इस उम्मत के इन तीनों क़िस्मों को यह शामिल है। पस उ़लमा ए किराम इस नेअ़मत के साथ सबसे ज़्यादा रश्क के क़ाबिल हैं और इस रहमत के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं।

जैसे कि मुस्नद अहमद में है कि, "एक शख़्स मदीने से दमिश्क़ में हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) के पास जाता है और आपसे मुलाक़ात करता है तो आप पूछते हैं कि प्यारे भाई! यहाँ कैसे आना हुआ? वह कहते हैं उस हदीस को सुनने के लिए आया हूँ, जो आप बयान किया करते हैं। पूछा, क्या किसी तिजारत की ग़र्ज़ से नहीं आए? जवाब दिया नहीं, पूछा फिर कोई और मतलब भी होगा? फ़र्माया, कोई मक़्सद नहीं, पूछा फिर क्या हदीस की तलब के लिए यह सफ़र किया है? जवाब दिया कि हाँ! फ़र्माया, सुनो! मैंने रसूलुल्लाह (सअव) से सुना है जो शख़्स इल्म की तलाश में किसी रास्ते को तै करे अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के बाग़ों में चलाएगा, अल्लाह तआ़ला की रहमत के फ़रिश्ते तालिबे इल्मों के लिए पर बिछा देते हैं क्योंकि वह उनसे बहुत ही ख़ुश हैं और उनकी ख़ुशी के ख़्वाहाँ हैं। आ़लिम के लिए आसमान व ज़मीन की हर चीज़ इस्तिग़फ़ार करती है। यहाँ तक कि पानी के अंदर की मछलियाँ भी। आ़बिद पर आ़लिम की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे चाँद की फ़ज़ीलत और तारों पर। उ़लमा नबियों के वारिस हैं। अम्बिया (अ.) ने अपने वर्से में दिरहम व दीनार नहीं छोड़े, उनका वर्सा दीने इल्म है जिसने उसे लिया उसने बड़ी दौलत हासिल कर ली।" (अबूदाऊद, किताबुल इल्म, बाब फ़ी फ़ज़्लिल इल्म : 3641; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; दाऊद बिन जमील और इसका शैख़ कसीर बिन क़ैस दोनों ज़ईफ़ रावी हैं। तिर्मिज़ी : 3682; इब्ने माजा : 223; अहमद : 5/196; इब्ने हिब्बान : 88) इस हदीस के तमाम तरीक़ और अल्फ़ाज़ और शरह मैंने सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म की शरह में मुफ़स्सल बयान कर दी है। फ़ल्हम्दु लिल्लाह! सूरह ताहा के शुरू में वह हदीस गुज़र चुकी है कि रसूलुल्लाह (सअव) फ़र्माते हैं कि "क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उ़लमा से फ़र्माएगा, मैंने अपना इल्म व हिक्मत तुम्हें इसलिए दिया था कि मैं बख़्श दूँ भले तुम कैसे ही हो मुझे उसकी कोई परवाह नहीं।" (तब्रानी: 381; और इसकी सनद मनगढ़त हैं।)

***

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ

فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝٣٣ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ

الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ۝٣٥

तर्जुमा : "वह बाग़ात हैं हमेशा रहने के जिनमें यह लोग दाख़िल होंगे, सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे। और पोशाक उनकी वहाँ रेशम की होगी। (33) और कहेंगे कि अल्लाह तआला का लाख लाख शुक्र है जिसने हमसे ग़म दूर किया। बेशक हमारा परवरदिगार बख़्शने वाला बड़ा क़द्रदान है। (34) जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने के मक़ाम में ला उतारा। जहाँ न हमको कोई तक्लीफ़ पहुँचेगी और न हमको कोई तंगी पहुँचेगी।" (35)

अहले जन्नत पर इन्आमात (आ. 33 से 35) : फ़र्माता है जिन बरगुज़ीदा बन्दों को हमने वारिसे किताबुल्लाह बनाया है उन्हें क़ियामत के दिन हमेशगी और दाइमी और अब्दी नेअमतों वाली जन्नतों में पहुँचाएँगे। जहाँ उन्हें सोने और मोतियों के कंगन पहनाये जाएँगे। ह़दीस में है "मोमिन का ज़ेवर वहाँ तक होगा जहाँ तक उसके वुज़ू का पानी पहुँचता है।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुत्तहारत, बाब तब्लगुल ह़िल्यतु हैसु यब्लगुल वुज़ूउ : 250) उसका लिबास वहाँ ख़ालिस़ रेशमी होगी जिससे दुनिया में वह मुमानिअत कर दिये गए थे। ह़दीस में है "जो शख़्स़ यहाँ दुनिया में ह़रीर व रेशम पहनेगा वह उसे आख़िरत में नहीं पहनाया जाएगा।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब लुब्सुल ह़रीर लिर्रिजालि व क़द्रि मा यजूज़ु मिन्ह : 5834; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2069; सुननुल कुब्रा : 9584) और ह़दीस में है यह रेशम काफ़िरों के लिए दुनिया में है और तुम मोमिनों के लिए आख़िरत में है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब लुब्सुल ह़रीर लिर्रिजालि व क़द्रि मा यजूज़ु मिन्ह : 5831; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2067) ह़दीस में है कि "हुज़ूरे अकरम (सअव) ने अहले जन्नत के ज़ेवरों का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया, इन्हें सोने चाँदी के ज़ेवर पहनाए जाएँगे जो मोतियों से जड़ाव किये हुए होंगे। उन पर याक़ूत के ताज होंगे जो बिलकुल शाहाना होंगे, वह नौजवान होंगे, बग़ैर बालों के शर्मिली आँखों वाले। (और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) वह जनाब बारी तआला का शुक्रिया अदा करते हुए कहेंगे कि अल्लाह तआला का एह़सान है जिसने हमसे डर ख़ौफ़ ज़ाइल कर दिया और दुनिया और आख़िरत की परेशानियों और पशेमानियों से हमें नजात दे दी।" ह़दीस शरीफ़ में है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह वालों पर क़ब्रों में मैदाने मह़शर में कोई दहशत व वह़शत नहीं। मैं तो गोया उन्हें अब देख रहा हूँ कि वह अपने सरों पर से मिट्टी झाड़ते हुए कह रहे हैं, अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने हमसे रंज व ग़म को दूर कर दिया।" (और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) (इब्ने अबी ह़ातिम) त़ब्रानी में है मौत के वक़्त भी उन्हें कोई घबराहट नहीं होगी। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "उनकी बड़ी बड़ी और बहुत सी ख़त़ाएँ माफ़ कर दी गईं और छोटी छोटी और कम मिक़्दार नेकियाँ क़द्रदानी के साथ क़बूल की गईं, यह कहेंगे कि अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने अपने फ़ज़्लो करम, लुत्फ़ो रह़म से यह पाकीज़ा बुलंदतरीन मक़ामात अ़त़ा किये। हमारे आ़माल तो इस क़ाबिल थे ही नहीं।" चुनाँचे ह़दीस शरीफ़ में है "तुममें से किसी को उसके आ़माल जन्नत में नहीं ले जा सकते। लोगों ने

पूछा, आपको भी नहीं? फ़र्माया मुझे भी नहीं, मगर उसी सूरत में कि अल्लाह तआला की रहमत की नज़र मुझ पर हो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ा, बाब तमन्नल मरीज़ुल मौत : 5673; सहीह मुस्लिम : 2816; अहमद : 2/264; इब्ने हिब्बान : 348) वह कहेंगे यहाँ तो हमें न किसी तरह की मशक़्क़त व मेहनत है, न थकान और तक्लीफ़ है, रूह अलग ख़ुश है, जिस्म अलग राज़ी है, बदला है उसका जो दुनिया में राहे इलाही की तक्लीफ़ें उन्हें उठानी पड़ती थीं आज राहत है, उनसे कह दिया गया है कि पसंद और दिल पसंद खाते पीते रहो, उसके बदले जो दुनिया में तुमने मेरी फ़र्मांबरदारियाँ कीं।

***

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۝٣٦ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ ۗ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۗ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝٣٧

तर्जुमा : ''और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है। न तो उनकी क़ज़ा ही आएगी कि मर ही जाएँ और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (36) और वह लोग उसमें चिल्लाते होंगे, कि ऐ हमारे रब! हमको निकाल लीजिए हम अच्छे काम करेंगे बरख़िलाफ़ उन कामों को जो किया करते थे। क्या हमने तुमको इतनी उम्र न दी थी कि जिसको समझना होता वह समझ जाता और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था तो अब मज़ा चखो कि ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।'' (37)

अहले जहन्नम की सज़ा (आ. 36, 37) : नेक लोगों का हाल बयान करके अब बुरे लोगों का हाल बयान हो रहा है कि यह दोज़ख़ की आग में जलते झुलसते रहेंगे। उन्हें वहाँ मौत नहीं आएगी जो मर जाएँ। जैसे और आयत में है (لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى) (87/आला : 13) न वहाँ उन्हें मौत आएगी न कोई अच्छी ज़िन्दगी होगी। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है रसूलुल्लाह (सअव) फ़र्माते हैं ''जो अब्दी जहन्नमी हैं उन्हें वहाँ मौत नहीं आएगी और न अच्छी ज़िन्दगी मिलेगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब इस्बातुश् शफ़ाअति व इख़राजिल मुवह्हिदीन मिनन्नारि, अहमद : 3/11; इब्ने माजा : 4309; इब्ने हिब्बान : 184) वह तो कहेंगे, ऐ दारोग़ा जहन्नम! तुम ही अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें मौत दे दे। लेकिन जवाब मिलेगा कि तुम तो यहीं पड़े रहोगे। पस वह तो मौत को अपने लिए राहत समझेंगे। लेकिन वह आएगी ही नहीं, न मरें, न अज़ाब में कमी देखें।'' जैसे और आयत में है (اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝ لَا

(يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 74, 75) यानी कुफ़्फ़ार हमेशा के अ़ज़ाबे जहन्नम में रहेंगे जो अ़ज़ाब कभी भी न हटेंगे, न कम होंगे। यह तमाम भलाई से सिर्फ़ मायूस होंगे और जगह फ़र्मान है (كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا) (17/बनी इस्राईल : 97) जहन्नम की आग हमेशा तेज़ ही होती रहेगी। फ़र्माता है (فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا) (78/नबा : 30) लो अब मज़े चखो, अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब तुम्हारे लिए बढ़ते रहेंगे काफ़िरों का यही बदला है। वह चीख़ पुकार करेंगे, हाय वाय करेंगे, दुनिया की तरफ़ लौटना चाहेंगे, इक़रार करेंगे कि अब हम गुनाह नहीं करेंगे, नेकियाँ करेंगे, लेकिन रब्बुल आलमीन ख़ूब जानता है कि अगर यह वापिस भी जाएँ तो वही सरकशी करेंगे, इसीलिए उनका यह अरमान पूरा न होगा। जैसे और जगह फ़र्माया कि उन्हें उनके इस सवाल पर जवाब मिलेगा कि तुम वही तो हो कि जब अल्लाह तआला की वहदानियत का बयान होता था तो तुम कुफ़्र करने लगते थे। वहाँ उसके साथ शिर्क करने में तुम्हें मज़ा आता था, पस अब भी अगर तुम्हें लौटा दिया गया तो वही करोगे जिससे मना किये जाते हो। पस फ़र्माया, दुनिया में तुम बहुत जी लिए, तुम उस लम्बी मुद्दत में बहुत कुछ कर सकते थे, मस्लन 70 साल जिए।

हज़रत क़तादा (रह़.) का क़ौल है कि ''लम्बी उ़म्र भी अल्लाह तआला की तरफ़ से हुज्जत पूरी करना है। अल्लाह तआला से पनाह माँगनी चाहिए कि उ़म्र के बढ़ने के साथ ही इंसान बुराइयों में बढ़ता चला जाए। देखो तो यह आयत जब उतरी है उस वक़्त कुछ लोग सिर्फ़ अठारह साल की उ़म्र के ही थे'' वहब बिन मुनब्बा (रह़.) फ़र्माते हैं मुराद बीस साल की उ़म्र है। हसन (रह़.) फ़र्माते हैं ''चालीस साल की उ़म्र में इंसान को होशियार हो जाना चाहिए। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, ''इस उ़म्र तक पहुँचना अल्लाह तआला की तरफ़ से उ़ज़्रबंदी हो जाता है।'' आप ही से साठ साल मरवी हैं और यही ज़्यादा सह़ीह़ भी है। जैसे एक ह़दीस में भी है।

भले इमाम इब्ने जरीर (रह़.) इसकी सनद में कलाम करते हैं लेकिन वह कलाम ठीक नहीं। हज़रत अ़ली (रज़ि.) से भी साठ साल ही मरवी हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''क़ियामत के दिन एक मुनादी यह भी होगी कि साठ साल की उ़म्र को पहुँच जाने वाले कहाँ हैं? लेकिन इसकी सनद सही नहीं।'' मुस्नद में है हुज़ूरे अकरम (सअव) फ़र्माते हैं ''जिसे अल्लाह तबारक व तआला ने साठ सत्तर साल की उ़म्र को पहुँचा दिया उसका कोई उ़ज़्र भी अल्लाह तआला के यहाँ नहीं चलेगा। (तब्री : 2/275) सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ में है ''उस शख़्स का उ़ज़्र अल्लाह तआला ने काट दिया जिसे साठ साल तक दुनिया में रखा।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब मन बलग़ा सित्तीना सना फ़क़द... : 6419; बैहक़ी : 3/370) इस ह़दीस की और सनदें भी हैं लेकिन अगर न भी होतीं तो भी सिर्फ़ इमाम बुख़ारी (रह़.) का इसे अपनी सह़ीह़ में वारिद करना इसकी सेह़त का काफ़ी सबूत था। इब्ने जरीर (रह़.) का यह कहना कि इसकी सनद की जाँच की ज़रूरत नहीं है, इमाम बुख़ारी (रह़.) के सही कहने के मुक़ाबले में एक जौ की भी क़ीमत नहीं रखता। वल्लाहु आलम! कुछ लोग कहते हैं अतिब्बा (डॉक्टर) के नज़दीक तब्ई उ़म्र एक सौ बीस बरस की है। साठ साल तक तो इंसान बढ़ोतरी में रहता है फिर घटना शुरू हो जाता है। पस आयत में भी इसी उ़म्र को मुराद लेना अच्छा है, और यही इस उम्मत में ग़ालिब उ़म्र है। चुनाँचे एक ह़दीस में है ''मेरी उम्मत की उ़म्रें साठ से सत्तर साल तक हैं और इससे तजावुज़ करने वाले कम हैं।'' (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअ़वात, बाब अ़अ़मारु उम्मती बैनस्सित्तीन इला सब्ईन :

3550; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4236)

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) तो इस हदीस की निस्बत फ़र्माते हैं इसकी और कोई सनद नहीं। लेकिन ताज्जुब है कि इमाम साहब (रह.) ने यह कैसे फ़र्मा दिया। इसकी एक दूसरी सनद इब्ने अबिद्दुनिया में मौजूद है। ख़ुद तिर्मिज़ी में भी यह हदीस दूसरी सनद से किताबुज़्ज़ुहद में मरवी है। एक और ज़ईफ़ हदीस में है, मेरी उम्मत में सत्तर साल की उम्र वाले भी कम होंगे। और रिवायत में है कि "हुज़ूरे अकरम (सअव) से आपकी उम्मत की उम्र के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़र्माया, पचास साठ साल तक की उम्र है। पूछा गया, सत्तर साल की उम्र वाले? फ़र्माया, बहुत कम अल्लाह तआला उन पर और अस्सी साल वालों पर अपना रहम करे।" (बज़्ज़ार)

इस हदीस का एक रावी उस्मान बिन मतर क़वी नहीं। सहीह हदीस में है कि "हुज़ूरे अकरम (सअव) की उम्र तरेसठ साल की थी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब वफ़ातिन्नबी (सअव) : 4466; सहीह मुस्लिम : 2349) एक क़ौल है कि साठ साल की थी। यह भी कहा गया है कि पेंसठ साल की थी। वल्लाहु आलम! (तत्बीक़ यह है कि साठ साल कहने वाले रावी दहाइयों को लगाते हैं इकाइयों को छोड़ देते हैं। पेंसठ साल वाले साले पैदाइश और साले वफ़ात को भी गिनते हैं और तरेसठ वाले इन दोनों बरसों को नहीं लगाते पस कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! मुतर्जिम)

और तुम्हारे पास डराने वाले आ गए। यानी सफ़ेद बाल या ख़ुद रसूलुल्लाह (सअव) ज़्यादा सहीह क़ौल दूसरा ही है। जैसे फ़र्मान है (هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى)(53/नज्म : 56) यह पैग़म्बर नज़ीर हैं। पस उम्र देकर, रसूल भेजकर, अपनी हुज्जत पूरी कर दी। चुनाँचे क़ियामत के दिन भी जब दोज़ख़ी मौत की तमन्ना करेंगे तो यही जवाब मिलेगा कि तुम्हारे पास हक़ आ चुका था। यानी रसूल की ज़ुबानी हम पैग़ामे हक़ तुम्हें पहुँचा चुके थे। लेकिन तुम न माने और आयत में है (وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا) (17/बनी इस्राईल : 15) हम जब तक रसूल न भेज दें अज़ाब नहीं करते। सूरह तबाकर में फ़र्मान है जब जहन्नमी जहन्नम में डाले जाएँगे तो वहाँ के दारोग़ा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाले नहीं आये थे? यह जवाब देंगे कि हाँ! आये तो थे लेकिन हमने उन्हें न माना, उन्हें झूठा जाना और कह दिया कि अल्लाह तआला ने तो कोई किताब वग़ैरह नाज़िल नहीं की। तुम यूँ ही बक रहे हो। पस आज क़ियामत के दिन उनसे कह दिया जाएगा कि नबियों की मुख़ालिफ़त का मज़ा चखो, मुद्दतुल उम्र उन्हें झुठलाते रहे, अब आज बदले उठाओ। सुन लो कोई न खड़ा होगा जो तुम्हारे काम आ सके, तुम्हारी कुछ मदद कर सके, और अज़ाबों से बचा सके और छुड़ा सके।

***

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ هُوَ الَّذِيْ

جَعَلَكُمْ خَلٰۗىِٕفَ فِي الْاَرْضِ ۭ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۭ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ

عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ
بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ
زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾

तर्जुमा : "बेशक अल्लाह तआला जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों का। बेशक वही जानने वाला है दिल की छुपी हुई बातों का। (38) वही ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में आबाद किया। तो जो शख़्स कुफ़्र करेगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके परवरदिगार के नज़दीक नाराज़गी ही बढ़ने का सबब होता है। और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र ख़सारा ही बढ़ने की वजह होता है। (39) आप कहिए कि तुम अपने शरीकों का हाल तो बतलाओ जिनको तुम अल्लाह तआला के सिवा पूजा करते हो। यानी मुझको यह बतलाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौनसा जुज़ (हिस्सा) बनाया है या उनका आसमान में कुछ साझा है। या हमने उनको कोई किताब दी है कि यह उसकी दलील पर क़ायम हों। बल्कि यह ज़ालिम और एक दूसरे से निरे धोखे की बातों का वादा करते आते हैं। (40) यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए हैं कि वह मौजूदा हालत को छोड़ न दें और अगर वह मौजूदा हालत को छोड़ भी दें तो फिर अल्लाह तआला के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता, वह हलीम ग़फ़ूर है।" (41)

अल्लाह तआला दिलों के भेदों को जानता है (आ. 38 से 41) : अल्लाह तआला अपने वसीअ और बेपायाँ इल्म का बयान कर रहा है कि वह तो आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का जानने वाला है। दिलों के भेद की बातें उस पर ज़ाहिर हैं। हर आमिल को उसके अमल का वह बदला देगा। उसने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का ख़लीफ़ा बनाया है। काफ़िरों के कुफ़्र का वबाल ख़ुद उन पर है। वह जैसे जैसे अपने कुफ़्र में बढ़ते हैं वहाँ अल्लाह तआला की नाराज़गी उन पर बढ़ती है और उनका नुक़्सान और ज़्यादा होता जाता है, बरख़िलाफ़ मोमिन के कि उसकी उम्र जिस क़द्र बढ़ती है नेकियाँ बढ़ती जाती हैं और दर्जे पाता है और अल्लाह तआला के यहाँ मक़्बूल होता जाता है।

बातिल (झूठे) मअबूदों ने कुछ भी पैदा न किया : अल्लाह तआला अपने रसूल (सअव) से फ़र्मा रहा है

कि आप मुश्रिकों से कहिए कि अल्लाह तआला के सिवा जिन जिनको तुम पुकारा करते हो, तुम मुझे भी तो ज़रा दिखाओ कि उन्होंने किस चीज़ को पैदा किया है? या यही साबित कर दो कि आसमानों में उनका कौनसा साझा है? जबकि न वह ख़ालिक़, न साझी, फिर तुम मुझे छोड़कर उन्हें क्यूँ पुकारो। वह तो एक ज़र्रे के भी मालिक नहीं। अच्छा यह भी नहीं तो कम अज़्कम अपने इस कुफ़्र व शिर्क की कोई किताबी दलील ही पेश कर दो लेकिन तुम यह भी नहीं कर सकते। हक़ीक़त यह है कि तुम सिर्फ़ अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों और अपनी राय के पीछे लग गए हो, दलील कुछ भी नहीं, झूठ और धोखेबाज़ी में मुब्तला हो, एक दूसरे को फ़रेब दे रहे हो। अपने इन झूठे मअबूदों की कमज़ोरी अपने सामने रखकर अल्लाह तआला की जो सच्चा मअबूद है, कुदरत व ताक़त देखो कि आसमान व ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं। हर एक अपनी अपनी जगह रुका हुआ और थमा हुआ है। इधर उधर जुंबिश भी तो नहीं कर सकता। आसमान को ज़मीन पर गिर पड़ने से अल्लाह तआला रोके हुए है। यह दोनों उसके फ़र्मान से ठहरे हुए हैं, उसके सिवा कोई नहीं जो इन्हें थाम सके, रोक सके। निज़ाम पर क़ायम रख सके, उस हलीम ग़फ़ूर अल्लाह तआला को देखो कि मख़्लूक़ व मम्लूक की नाफ़र्मानी, सरकशी कुफ़्र व शिर्क देखते हुए भी बुर्दबारी और बख़्शिश से काम ले रहा है। ढील और मोहलत दिये हुए, गुनाहों को माफ़ करता जाता है।

इब्ने अबी हातिम में इस आयत की तफ़्सीर में एक ग़रीब बल्कि मुंकर हदीस है कि हज़रत मूसा (अ.) का एक वाक़िया जनाब रसूलुल्लाह (सअव) ने एक बार मिम्बर पर बयान किया कि "आपके दिल में ख़्याल गुज़रा कि अल्लाह तआला कभी सोता भी है? तो अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता उनके पास भेज दिया जिसने उन्हें तीन दिन तक सोने न दिया। फिर उनके एक एक हाथ में एक एक बोतल दी और हुक्म दिया कि इनकी हिफ़ाज़त करो यह गिरे नहीं, टूटे नहीं। हज़रत मूसा (अ.) उन्हें हाथों में लेकर हिफ़ाज़त करने लगे। लेकिन नींद का ग़ल्बा था, ऊँघ आने लगी, कुछ झोंके तो ऐसे आए कि आप होशियार हो गए और बोतल गिरने न दी। लेकिन आख़िर नींद ग़ालिब आ गई और बोतलें हाथ से छूटकर ज़मीन पर गिर गईं और चूरा चूरा हो गईं. मक़्सद यह था कि सोने वाला दो बोतलें भी थाम नहीं सकता। फिर अल्लाह तआला सोता तो ज़मीन आसमान की हिफ़ाज़त उससे कैसे होती।" लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि यह हुज़ूरे अकरम (सअव) का फ़र्मान नहीं, बल्कि बनी इस्राईल की गढ़त है।

भला हज़रत मूसा (अ.) जैसा जलीलुल क़द्र पैग़म्बर यह तसव्वुर भी कर सकता है कि अल्लाह तआला सो जाता है बावजूद यह कि अल्लाह तआला अपनी सिफ़ात में फ़र्मा चुका है कि उसे न तो ऊँघ आती है न नींद। ज़मीन व आसमान की कुल चीज़ों का मालिक सिर्फ़ वही है। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हदीस है कि "अल्लाह तआला न सोता है, न सोना उसकी शायाने शान है। वह तराज़ू को ऊँचा नीचा करता रहता है। दिन के अमल रात से पहले और रात के आमाल दिन से पहले उसकी तरफ़ चढ़ जाते हैं। उसका हिजाब (पर्दा) नूर है या आग है। अगर उसे खोल दे तो उसके चेहरे की तजल्लियाँ जहाँ तक उसकी नज़र पहुँचती है सब मख़्लूक़ को जला दें।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही अलैहिस्सलाम (इन्नल्लाह ला यनाम...) : 179; इब्ने माजा : 195; अहमद : 4/395; इब्ने हिब्बान : 266) इब्ने जरीर में है कि एक

शख़्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के पास आया, "आपने उससे पूछा कि कहाँ से आ रहे हो? उसने कहा, शाम से। पूछा, वहाँ किससे मिले? कहा कअ़ब से। पूछा कअ़ब ने क्या बात बयान की? कहा, यह कि आसमान एक फ़रिश्ते के कँधे तक घूम रहे हैं। पूछा तुमने उसे सच जाना या झूठला दिया? जवाब दिया कुछ भी नहीं किया। फ़र्माया फिर तो तुमने कुछ भी नहीं किया। कहा सुनो! कअ़ब ने ग़लत कहा, फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।"

इसकी इस्नाद सहीह हैं, दूसरी सनद में आने वाले का नाम है कि वह हज़रत जुंदुब बजली (रज़ि.) थे। हज़रत इमाम मालिक (रह.) भी इसकी तर्दीद करते थे कि आसमान गर्दिश में हैं और इसी आयत से दलील लेते थे और इस हदीस से भी। जिसमें है मग़्रिब में एक दरवाज़ा है जो तौबा का दरवाज़ा है वह बंद न होगा जब तक कि आफ़ताब मग़्रिब से तुलूअ न हो। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लित्तौबा वल इस्तिग़फ़ार....: 3535; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4070; अहमद : 4/241; इब्ने हिब्बान : 1321) वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

***

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۙ﴿۴۲﴾ اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۳﴾

तर्जुमा : "और इन कुफ़्फ़ार ने बड़ी ज़ोरदार क़सम खाई थी कि अगर इनके पास कोई डराने वाला आये तो वह हर हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़बूल करने वाले हों, फिर जब इनके पास एक पैग़म्बर आ पहुँचा तो उनकी नफ़रत ही को तरक़्क़ी हुई। (42) दुनिया में अपने को बड़ा समझने की वजह से और उनकी बुरी तदबीरों की वजह से और बुरी तदबीरों का वबाल उन तदबीर वालों ही पर पड़ता है। तो क्या यह इसी दस्तूर के मुंतज़िर हैं जो अगले लोगों के साथ होता रहा है। तो आप अल्लाह तआला के दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएँगे। और आप अल्लाह तआला के दस्तूर को कभी मुंतक़िल होता हुआ न पाएँगे।" (43)

कुफ़्फ़ार का हिदायत को क़बूल करने की क़समें खाना (आ. 42 से 43) : क़ुरैश ने और अरब ने हुज़ूरे अकरम (सअव) की बिअ़सत से पहले बड़ी क़समें खा रखी थीं कि अगर अल्लाह का कोई रसूल हममें

आए तो हम तमाम दुनिया से ज़्यादा उसकी ताबेदारी करेंगे। जैसे और जगह फ़र्मान है (اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ) (6/अन्आम : 156) यानी इसलिए कि तुम यह न कह सको कि हमसे पहले की जमाअतों पर तो अल्बत्ता किताबें उतरीं लेकिन हम तो इनसे बेख़बर ही रहे। अगर हम पर किताब उतरती तो हम उनसे बहुत ज़्यादा राह पाने वाले हो जाते। तो लो अब तो ख़ुद तुम्हारे पास तुम्हारे रब की भेजी हुई दलील आ पहुँची। हिदायत व रह्मत ख़ुद तुम्हारे हाथों में दी जा चुकी। अब बतलाओ कि रब की आयतों की तक्ज़ीब करने वालों और उनसे चेहरा फेरने वालों से ज़्यादा ज़ालिम कौन है? और आयत में है कि यह कहा करते थे कि अगर हमारे अपने पास अगले लोगों के इब्रतनाक वाक़ियात होते तो हम तो अल्लाह तआला के मुख़्लिस बन्दे बन जाते। लेकिन फिर भी इन्होंने उसके उनके पास आ चुकने के बाद कुफ़्र किया। अब उन्हें अन्क़रीब इसका अंजाम मालूम हो जाएगा। उनके पास अल्लाह तआला के आख़िरी पैग़म्बर और रब की आख़िरी और अफ़ज़लतर किताब आ चुकी। लेकिन यह कुफ़्र में और बढ़ गए। इन्होंने अल्लाह तआला की बातें मानने से तकब्बुर किया, ख़ुद न मानकर फिर अपनी मक्कारियों से अल्लाह तआला के बन्दों को अल्लाह तआला की राह से रोका लेकिन उन्हें बावर कर लेना चाहिए कि इसका वबाल ख़ुद उन पर पड़ेगा। यह अल्लाह तआला का नहीं अल्बतता अपना बिगाड़ कर रहे हैं।

हुज़ूरे अकरम (सअव) फ़र्माते हैं "मक्कारियों से परहेज़ करो, मकर का बोझ मक्कार ही पर पड़ता है और उसकी जवाब देही अल्लाह के यहाँ होगी।" हज़रत मुहम्मद बिन कअब कुर्ज़ी (रह.) फ़र्माते हैं, तीन कामों का करने वाला नजात नहीं पा सकता। इन कामों का वबाल उस पर यक़ीनन आ पड़ता है, मकर और बग़ावत और वादों को तोड़ देना। फिर आपने यही आयत पढ़ी। उन्हें सिर्फ़ उसी का इंतिज़ार है जो उन जैसे उनसे अगलों का हाल हुआ कि अल्लाह तआला के रसूलों को झुठलाने और फ़र्माने रसूल की मुख़ालिफ़त की वजह से अल्लाह तआला के दाइमी अज़ाब उन पर आ गए पस यह तो अल्लाह तआला की सुन्नत ही है। और तू याद रख की रब की आदत न बदलती है, न पलटती है। जिस क़ौम पर अल्लाह अज़ाब का इरादा कर ले फिर उस इरादे के बदलने पर कोई क़ुदरत नहीं रखता, न अज़ाब उन पर से हटें, न वह उनसे बचें, न कोई उन्हें बचा सके, वल्लाहु आलम!

***

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا
اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ
كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿۴۴﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ
وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿۴۵﴾

तर्जुमा : "और क्या यह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं जिसमें देखते भालते कि जो लोग इनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अंजाम क्या हुआ, हालाँकि वह क़ुव्वत में इनसे बढ़े हुए थे। और अल्लाह तआला ऐसा नहीं है कि कोई चीज़ उसको हरा दे न आसमान में और न ज़मीन में। वह बड़े इल्म वाला है बड़ी क़ुदरत वाला है। (44) और अगर अल्लाह तआला लोगों पर उनके आमाल की वजह से दारोगीर (पकड़) फ़र्माने लगता तो रूए ज़मीन पर एक मुतनफ़्फ़िस को न छोड़ता लेकिन अल्लाह तआला उनको एक मुक़र्ररा वक़्त तक मोहलत दे रहा है तो जब उनका वह वक़्त पूरा हो जाएगा अल्लाह तआला अपने बन्दों को आप देख लेगा।" (45)

गुज़िश्ता क़ौमों के अंजाम से इब्रत पकड़ो (आ. 44, 45) : हुक्म होता है कि इन मुंकिरों से कह दीजिए कि ज़मीन में चल फिरकर देखें तो सही कि इन जैसे इनसे अगले लोगों के कैसे इब्रतनाक अंजाम हुए, उनकी नेअमतें छिन गईं, उनके महल्लात उजाड़ दिये गए, उनकी ताक़त ख़त्म हो गई, उनके माल तबाह हो गए, उनकी औलादें हलाक कर दी गईं, अल्लाह तआला के अज़ाब उन पर से किसी तरह न टले। आई हुई मुसीबत को वह न हटा सके, नोच लिये गए, तबाह व बर्बाद कर दिये गए। कोई कुछ काम न आया, कोई फ़ायदा किसी से न पहुँचा, अल्लाह तआला को कोई हरा नहीं सकता। उसे कोई अम्र आजिज़ (मजबूर) नहीं कर सकता। उसका कोई इरादा मुराद से जुदा नहीं, उसका कोई हुक्म किसी से टल नहीं सकता, वह तमाम कायनात का आलिम है, वह तमाम कामों पर क़ादिर है, अगर वह अपने बन्दों के तमाम गुनाहों पर पकड़ करता तो तमाम आसमानों वाले और ज़मीनों वाले हलाक हो जाते। जानवर और रिज़्क़ तक बर्बाद हो जाते। जानवरों को उनके घोंसलों और भट्टों में भी अज़ाब पहुँच जाता। ज़मीन पर कोई जानवर बाक़ी न बचता, लेकिन अब ढ़ील दिये हुए है, अज़ाबों को मुअख़्ख़र किये हुए हैं, वक़्त आ रहा है कि क़ियामत क़ायम हो जाए और हिसाब किताब शुरू हो जाए। ताअत का बदला और सवाब मिले, नाफ़र्मानी का अज़ाब और उस पर सज़ा हो। अजल आने के बाद फिर ताख़ीर नहीं मिलने की। अल्लाह तआला अपने बन्दों को देख रहा है और वह बख़ूबी देखने वाला है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह फ़ातिर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह यासीन

سورۃ یٰس

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह यासीन - 36

आयातः 77 मक्की सूरह, पैराग्राफः 6

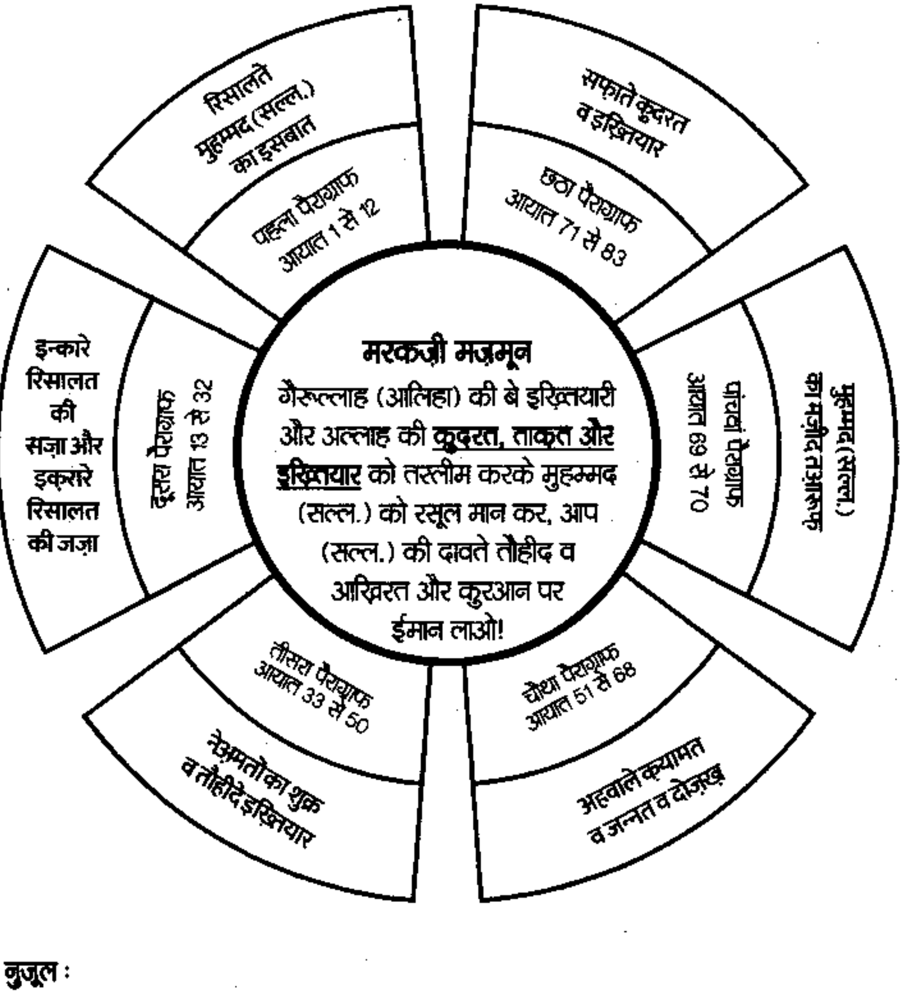

जमानए नुज़ूल :

सूरत यासीन, रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कयामे मक्का के तीसरे दौर 6 से 10 नबवी में नाज़िल हुई, जब आप पर शाइर होने का इल्ज़ाम था। ये एक जलाली सूरत है।

तफ़्सीर सूरह यासीन

सूरह यासीन की फ़ज़ीलत : तिर्मिज़ी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर चीज़ का दिल होता है और क़ुरआन शरीफ़ का दिल सूरह यासीन है। सूरह यासीन के पढ़ने वाले को दस क़ुरआन ख़त्म करने का सवाब मिलता है।" (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि यासीन : 2887; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; दारमी : 2/456; इसकी सनद में हारून अबू मुहम्मद मज्हूल रावी है। (अत्तक़रीब : 2/312; रक़म : 30) यह हदीस ग़रीब है और इसका एक रावी मज्हूल है। इस बाब में और रिवायतें भी हैं लेकिन सनदन वह भी कुछ ऐसी बहुत अच्छी नहीं। और हदीस में है कि "जो शख़्स रात को सूरह यासीन पढ़े उसे बख़्श दिया जाता है और जो सूरह दुख़ान पढ़े उसे भी बख़्श दिया जाता है।" (मुस्नदे अबी यअला : 6224; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ और मौज़ूअ है; अल्मौज़ूआत : 1/347; इसकी सनद में हिशाम बिन ज़ियाद बसरी मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 4/298; रक़म : 9223) इसकी इस्नाद बहुत उम्दा है। मुस्नद की हदीस में है "सूरह बक़रह क़ुरआन की कोहान है और इसकी बुलंदी है। इसकी एक एक आयत के साथ अस्सी अस्सी फ़रिश्ते उतरते हैं। इसकी एक आयत यानी आयतल कुर्सी अर्श के नीचे से लाई गई है। और इसके साथ मिलाई गई है। सूरह यासीन क़ुरआन का दिल है, इसे जो शख़्स नेक निय्यती से अल्लाह तआला की रज़ाजूई के लिए पढ़े उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।" इसे उन लोगों के सामने पढ़ो जो सक्रात की हालत में हों। (अहमद : 5/26; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू उस्मान रावी मज्हूल है।) कुछ उलमा ए किराम (रह.) का क़ौल है कि जिस काम के वक़्त सूरह यासीन पढ़ी जाती है अल्लाह तआला उसे आसान कर देता है। मरने वाले के सामने जब इसकी तिलावत होती है तो रहमत व बरकत नाज़िल होती है और रूह आसानी से निकलती है, वल्लाहु आलम! मशाइख़ ने भी फ़र्माया है कि ऐसे वक़्त सूरह यासीन पढ़ने से अल्लाह तआला तख़्फ़ीफ़ कर देता है और आसानी हो जाती है। बज़्ज़ार में फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) है कि "मेरी चाहत है कि मेरी उम्मत का हर हर फ़र्द को यह सूरत याद हो।" (बज़्ज़ार, कशफ़ुल अस्तार : 2305; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्राहीम बिन हकम बिन अबान ज़ईफ़ रावी है। देखिए तक़रीब वग़ैरह)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

يٰسٓ ۝١ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝٢ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٣ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤ تَنْزِيْلَ
الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٥ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٦ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى
اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٧

तर्जुमा : "यासीन (1) क़सम है कुरआन बाहिक्मत की (2) कि बेशक आप मिन्जुम्ला पैग़म्बरों के हैं। (3) सीधी राह पर हैं। (4) यह कुरआन अल्लाह तआला ज़बरदस्त मेहरबान की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। (5) कि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके बाप दादा नहीं डराये गए थे, सो उसी से यह बेख़बर हैं। (6) उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है, तो यह लोग ईमान न लाएँगे।" (7)

तफ़्सीर (आ. 1 से 7) : हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरू में होते हैं, जैसे यहाँ यासीन है, इनका पूरा बयान हम सूरह बक़रह की तफ़्सीर में ला चुके हैं। लिहाज़ा यहाँ इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं। कुछ लोगों ने कहा है कि 'यासीन' से मुराद 'ऐ इंसान' है। कुछ कहते हैं हब्शी ज़ुबान में "ऐ इंसान" के मआनी में यह लफ़्ज़ है। कोई कहता है यह अल्लाह तआला के नाम है। फिर फ़र्माता है क़सम है मुह्कम और मज़बूत कुरआन की जिसके आसपास भी बातिल फटक नहीं सकता कि बिल यक़ीन ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं, सच्चे अच्छे, मज़बूत और उम्दा सीधे और साफ़ दीन पर आप हैं। यह सिराते मुस्तक़ीम, रब रहमान और रहीम की है, यह दीन उसी का उतारा हुआ है जो इज़्ज़त वाला और मोमिनों पर ख़ास मेहरबानी करने वाला है।

जैसे फ़र्मान है (وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ) (42/शूरा : 52) तू यक़ीनन राहे रास्त की रहबरी करता है जो उस अल्लाह तआला की सीधी राह है जो आसमान व ज़मीन का मालिक है और जिसकी तरफ़ तमाम उमूर का अंजाम है ताकि तू अरबों को डराये जिनके बुज़ुर्ग भी होशियार नहीं किये गए जो सिर्फ़ ग़ाफ़िल हैं। इनका तंहा ज़िक्र करना इसलिए नहीं कि दूसरे इस तंबीह से अलग हैं, जैसे कि कुछ अफ़राद के ज़िक्र से आम की नफ़ी नहीं होती। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बिअसत आम थी सारी दुनिया की तरफ़, इसके दलाइल बस्तो व तफ़सील से आयत (قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا) (7/आराफ़ : 158) की तफ़्सीर में बयान हो चुके हैं। अक्सर लोगों पर अल्लाह तआला के अज़ाबों का क़ौल साबित हो चुका है, उन्हें तो ईमान नसीब नहीं होने का, वह तो तुझे झुठलाते ही रहेंगे।

إِنَّا جَعَلْنَا فِىٓ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَٰلًا فَهِىَ إِلَى ٱلْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ⑧ وَجَعَلْنَا مِنۢ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ⑨ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ
ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑩ إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلذِّكْرَ وَخَشِىَ
ٱلرَّحْمَٰنَ بِٱلْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ⑪ إِنَّا نَحْنُ نُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا
قَدَّمُوا۟ وَءَاثَٰرَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ فِىٓ إِمَامٍ مُّبِينٍ ⑫

तर्जुमा : "हमने इनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिये हैं फिर वह ठोड़ियों तक हैं जिससे इनके सिर ऊपर को उलट गए। (8) और हमने एक आड़ इनके सामने कर दी और एक आड़ इनके पीछे कर दी जिससे हमने इनको घेर दिया तो वह नहीं देख सकते। (9) और इनके हक़ में आपका डराना या न डराना दोनों बराबर हैं, यह ईमान नहीं लाएँगे। (10) बस आप तो सिर्फ़ ऐसे शख़्स को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और अल्लाह तआला से बग़ैर देखे डरे। तो आप उसको मग़फ़िरत और उम्दा बदले की ख़ुशख़बरियाँ सुना दीजिए। (11) बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे और हम लिखते जाते हैं और वह आमाल भी जिनको लोग आगे भेजते जाते हैं और उनके वह आमाल भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं और हमने हर चीज़ को एक वाज़ेह किताब में शुमार कर दिया था।" (12)

कुफ़्फ़ार की हटधर्मी का ज़िक्र और उनका बुरा अंजाम (आ. 8 से 12) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इन बदनसीबों को हिदायत तक पहुँचना बहुत मुश्किल बल्कि महाल (असंभव) है। यह तो उन लोगों की तरह हैं जिनके हाथ गर्दन पर बाँध दिये जाएँ और उनका सर ऊँचा जा रहा हो। गर्दन के ज़िक्र के बाद हाथ का ज़िक्र छोड़ दिया। लेकिन मुराद यही है कि गर्दन मिलाकर हाथ बाँध दिये गए हैं और सर ऊँचे हैं, और ऐसा होता है कि बोलने में एक चीज़ का ज़िक्र करके दूसरी चीज़ को जो उसी से समझ ली जाती है उसका ज़िक्र छोड़ देते हैं। अरब शायरों के शेअर में भी यह बात मौजूद है।" गुल कहते ही हैं दोनों हाथों को गर्दन तक पहुँचाकर गर्दन के साथ जकड़ बंद कर देने को। इसीलिए गर्दन का ज़िक्र किया और हाथों का ज़िक्र छोड़ दिया। मतलब यह है कि हमने उनके हाथ उनकी गर्दनों से बाँध दिये हैं, इसलिए वह किसी कारे ख़ैर की तरफ़ हाथ बढ़ा नहीं सकते। उनके सिर ऊँचे हैं, उनके हाथ उनके चेहरे पर हैं, वह हर भलाई से बेबस हैं, गर्दनों के उस तौक़ के साथ ही उनके आगे दीवार है, यानी हक़ से रोक दिये गए हैं। पीछे भी दीवार है यानी हक़ से रोक है, इस वजह से तरद्दुद में पड़े हुए हैं। हक़ के पास आ नहीं सकते। ज़लालतों में घिरे हुए हैं, आँखों पर पर्दे पड़े हुए हैं, हक़ को देख ही नहीं

सकते, न हक़ की तरह राह पाएँ न हक़ से फ़ायदा उठाएँ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की क़िरअत में (फ़अअशैनाहुम) ऐन से है, यह एक क़िस्म की आँख की बीमारी है जो इंसान को नाबीना कर देती है। (तब्री : 20/496) पस इस्लाम व ईमान के और उनके बीच चारों तरफ़ रोक है जैसे और आयत में है कि जिन पर तेरे रब का कलिमा हक़ हो चुका है वह तो ईमान लाने के ही नहीं। गो तू उन्हें सब आयतें बता दे यहाँ तक कि वह दर्दनाक अज़ाबों को ख़ुद देख लें। जिसे अल्लाह रोक दे वह कहाँ से रोक हटा सके। एक बार अबू जहल मल्ऊन ने कहा कि अगर मैं मुहम्मद (ﷺ) को देख लूँगा तो यूँ करूँगा और यूँ करूँगा। इस पर यह आयतें उतरीं। लोग उससे कहते थे यह हैं मुहम्मद (ﷺ)! लेकिन उसे आप दिखाई नहीं देते थे और पूछता था कि कहाँ हैं? कहाँ हैं? (तब्री : 20/495) एक बार इसी मल्ऊन ने एक मज्मअे में कहा था कि देखो यह कहता है कि अगर तुम उसकी ताबेदारी करोगे तो तुम बादशाह बन जाओगे। और मरने के बाद ख़ुल्द नशीं (जन्नती) हो जाओगे और अगर तुम उसका ख़िलाफ़ करोगे तो यहाँ ज़िल्लत की मौत मारे जाओगे और वहाँ अज़ाबों में गिरफ़्तार हो जाओगे। आज आने तो दो। उसी वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये, आपकी मुट्ठी में ख़ाक (रेत) थी।

आप यासीन के शुरू से (ला युब्सिरून) तक पढ़ते हुए आ रहे थे। अल्लाह तआला ने उन सबको अँधा कर दिया और आप उनके सरों पर ख़ाक डालते हुए तशरीफ़ ले गए। उन बदबख़्तों का गिरोह का गिरोह आपके घर को घेरे हुए था। उसके बहुत बाद एक साहब घर से निकले। उनसे पूछा कि तुम यहाँ कैसे घेरा डाले खड़े हो? उन्होंने कहा, मुहम्मद (ﷺ) के इंतिज़ार में हैं, आज उन्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। उसने कहा, वाह वाह वह तो गए भी और तुम सबके सरों पर ख़ाक डालते हुए निकल गए। यक़ीन न हो तो अपने सर झाड़ो। अब जो सर झाड़े तो वाक़ेई ख़ाक निकली। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने जब अबू जहल की यह बात दोहराई गई तो आपने फ़र्माया, उसने ठीक कहा, फ़िल्वाक़ेअ मेरी ताबेदारी उनके लिए दोनों जहान की इज़्ज़त का बाइस है और मेरी नाफ़र्मानी उनके लिए ज़िल्लत का मोजिब है और यही होगा। उन पर मोहरे इलाही लग चुकी है। यह नेक बात का असर नहीं लेते। सूरह बक़रह में भी इस मज़्मून का एक आयत गुज़र चुकी है। और आयत में है (إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ) (10/यूनुस : 96, 97) यानी जिन पर कलिमा अज़ाब साबित हो चुका है उन्हें ईमान नसीब न होने का भले तू उन्हें तमाम निशानियाँ दिखा दें यहाँ तक कि वह ख़ुद अज़ाबे इलाही अपनी आँखों से देख लें। हाँ! तेरी नसीहत उन पर असर कर सकती है जो भली बात की ताबेदारी करने वाले हैं, क़ुरआन को मानने वाले हैं, बिन देखे अल्लाह तआला से डरने वाले हैं और ऐसी जगह भी ख़ौफ़े इलाही रखते हैं जहाँ कोई और देखने वाला न हो। वह जानते हैं कि अल्लाह तआला हमारे हाल पर ख़बरदार है और हमारे अफ़आल को देख रहा है। ऐसे लोगों को तो गुनाहों की माफ़ी की, अज्रे अज़ीम व जमील की ख़ुशख़बरी पहुँचा दीजिए जैसे और आयत में है कि जो लोग पोशीदगी में भी ख़ौफ़े इलाही रखते हैं उनके लिए मग़्फ़िरत और सवाबे कबीरा है। हम ही हैं जो मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करते हैं। हम क़ियामत के दिन उन्हें नई ज़िन्दगी में पैदा करने पर क़ादिर हैं। और इसमें इशारा है कि मुर्दा दिलों के ज़िन्दा करने पर भी उस अल्लाह तआला को क़ुदरत है। वह गुमराहों को भी राहे रास्त पर डाल देता है जैसे और मक़ाम पर मुर्दा दिलों का ज़िक्र करके क़ुरआने हकीम ने फ़र्माया (اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ) (57/हदीद : 17) जान लो कि अल्लाह तआला ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है। हमने तुम्हारी समझ बूझ के लिए बहुत कुछ बयान कर दिया और हम उनके पहले

भेजे हुए आमाल लिख लेते हैं और उनके आसार भी। यानी जो यह अपने बाद बाक़ी छोड़ आये। अगर ख़ैर बाक़ी छोड़ आये तो जज़ा, वरना सज़ा पायेंगे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है ''जो शख़्स इस्लाम में नेक तरीक़ा जारी करे उसका और उसे जो करें उन सबका बदला मिलता है। लेकिन उनके बदले कम होकर नहीं। और जो शख़्स किसी बुरे तरीक़े को जारी करे उसका बोझ उस पर है और उनका भी जो उस पर उसके बाद कारबंद हों। लेकिन उनका बोझ घटाकर नहीं।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब अल्ह़स्सु अलस्सदक़ति वलौ बि शिक़्क़ि तम्रतिव...: 1017)

एक लम्बी ह़दीस में इसके साथ ही क़बीला मुज़र के चादर पोश लोगों का वाक़िया भी है। और आख़िर में (व नक्तुबु मा क़द्दमू) पढ़ने का ज़िक्र भी है। सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ की एक और ह़दीस में है ''जब इंसान मर जाता है तो उसके तमाम अमल कट जाते हैं, मगर तीन अमल, इल्म जिससे नफ़ा ह़ासिल किया जाए और नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करे और वह सदक़-ए-जारिया जो उसके बाद भी बाक़ी रहे।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल वसिय्यत, बाब मा यल्ह़क़ुल इंसान मिनस्सवाबि बअ़द वफ़ातिही : 1631) मुजाहिद (रह़.) से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है कि ''गुमराह लोग जो गुमराही बाक़ी छोड़ जाएँ।'' सईद बिन जुबेर (रह़.) से मरवी है कि ''हर वह नेकी और बदी जिसे उसने जारी किया और अपने बाद छोड़ गया।'' बग़वी भी इसी क़ौल को पसंद करते हैं। इस जुम्ला की तफ़्सीर में दूसरा क़ौल यह है कि मुराद आसार से निशाने क़दम हैं, जो इताअ़त या मअ़सियत की तरफ़ उठें। (तब्री : 20/497)

ह़ज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं ''ऐ इब्ने आदम! अगर अल्लाह तआला तेरे किसी काम से ग़ाफ़िल होता तो तेरे निशाने क़दम से ग़ाफ़िल होता जिन्हें हवा मिटा देती है। लेकिन अल्लाह तबारक व तआला उससे और तेरे किसी अमल से ग़ाफ़िल नहीं। तेरे जितने क़दम उसकी इताअ़त में उठते हैं सब उसके यहाँ लिखे हुए हैं। तुममें से जिससे हो सके वह अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदारी की तरफ़ क़दम बढ़ा ले।'' इसी मअ़नी की बहुत सी अह़ादीस भी हैं। पहली ह़दीस मुस्नद अह़मद में है। ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मस्जिदे नबवी के आसपास कुछ मकानात ख़ाली हुए तो क़बीला बनू सलमा ने इरादा किया कि वह अपने महल्ले से उठकर यही क़ुर्बे मस्जिद के मकानात में आ बसें। जब उसकी ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को हुई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे यह बात मालूम हुई है क्या यह ठीक है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ! आपने दो बार फ़र्माया, ''ऐ बनू सलमा! अपने मकानात में ही रहो, तुम्हारे क़दम अल्लाह तआला के यहाँ लिखे जाते हैं।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब फ़ज़्लु कस्रतिल ख़ुता इलल मसाजिद : 665; अह़मद : 3/332; इब्ने ह़िब्बान : 2042)

दूसरी ह़दीस : इब्ने अबी ह़ातिम की इसी रिवायत में है कि ''इसी बारे में यह आयत नाज़िल हुई और इस क़बीले ने अपना इरादा बदल दिया।'' बज़्ज़ार की इसी रिवायत में है कि बनू सलमा ने मस्जिद से अपने घर दूर होने की शिकायत हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से की। इस पर यह आयत उतरी और फिर वह वहीं रहते रहे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति यासीन : 3226; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू सुफ़्यान तरीफ़ बिन शिहाब ज़ईफ़ रावी है। ह़ाकिम : 2/428) लेकिन इसमें ग़राबत है। क्योंकि इसमें इस

आयत का इस बारे में नाज़िल होना बयान हुआ है और यह पूरी सूरत मक्की है, वल्लाहु आलम!

तीसरी हदीस : इब्ने जरीर में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जिन कुछ अंसार के घर से मस्जिदे नबवी दूर थी, उन्होंने मस्जिद के क़रीब के घरों में आना चाहा। इस पर यह आयत उतरी तो उन्होंने कहा, अब हम उन घरों को नहीं छोड़ेंगे। (इब्ने जरीर तब्री और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सिमाक बिन हर्ब सदूक़ रावी है लेकिन इक्रिमा से इनकी रिवायत ज़ईफ़ होती है।) यह हदीस मौक़ूफ़ है।

चौथी हदीस : मुस्नद अहमद में है कि "एक मदनी सहाबी का मदीना शरीफ़ में इंतिक़ाल हुआ तो आपने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाकर फ़र्माया, काश! कि यह अपने वतन के सिवा किसी और जगह फ़ौत होते। किसी ने कहा, यह क्यूँ? फ़र्माया इसलिए कि जब कोई मुसलमान ग़ैर वतन में फ़ौत होता है तो उसके वतन से लेकर वहाँ तक की ज़मीन का नाप करके उसे जन्नत में जगह मिलती है।" (नसाई, किताबुल जनाइज़, बाब अल्मौतु बिग़ैरि मौलिदिही : 1833; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 1614; अहमद : 2/177)

इब्ने जरीर में हज़रत साबित (रह.) से रिवायत है कि मैं हज़रत अनस (रज़ि.) के साथ नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ़ चला। मैं जल्दी जल्दी बड़े क़दमों में चलने लगा तो आपने मेरा हाथ थाम लिया और अपने साथ धीरे धीरे हल्के हल्के क़दमों से ले जाने लगे। जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपने फ़र्माया, मैं हज़रत ज़ेद बिन साबित (रज़ि.) के साथ मस्जिद को जा रहा था और तेज़ क़दम चल रहा था तो आपने मुझसे फ़र्माया, ऐ अनस! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह निशानाते क़दम लिखे जाते हैं। (तब्री : 20/498) इस क़ौल से पहले क़ौल की मज़ीद ताईद होती है क्योंकि जब निशाने क़दम तक लिखे जाते हैं तो फैलाई हुई बुराई भलाई क्यूँ न लिखी जाती होगी? वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माया, कुल कायनात, जमीअ मौजूदात, मज़बूत किताब लोहे महफ़ूज़ में दर्ज है जो उम्मुल किताब है (तब्री : 20/499) यही तफ़्सीर बुज़ुर्गों से आयत (يَوْمَ نَدْعُوْا) (17/बनी इस्राईल : 71) की तफ़्सीर में भी मरवी है कि उनका नामा ए आमाल जिसमें ख़ैर व शर्र दर्ज है। जैसे आयते क़ुरआन (وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ) (18/कहफ़ : 49) और आयत (وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِاىْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ) (39/ज़ुमर : 69) में है।

***

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ
اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾

तर्जुमा : "और आप इनके सामने एक क़िस्सा यानी एक बस्ती वालों का क़िस्सा उस वक़्त का बयान कीजिए जबकि उस बस्ती में कई रसूल आए। (13) यानी जबकि हमने उनके पास दो को भेजा तो उन लोगों ने पहले दोनों को झूठा बतलाया फिर तीसरे से ताईद की। सो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। (14) उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह मामूली इंसान हो। और अल्लाह तआला रहमान ने कोई चीज़ नाज़िल नहीं की तुम निरा झूठ बोलते हो। (15) उन रसूलों ने कहा, हमारा परवरदिगार अलीम है कि बेशक हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। (16) और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर पहुँचा देना था।" (17)

एक बस्ती वालों का वाक़िया (आ. 13 से 17) : अल्लाह तआला अपने नबी को हुक्म फ़र्मा रहा है कि आप अपनी क़ौम के सामने उन अगले लोगों का क़िस्सा बयान कीजिए जिन्होंने इनसे पहले अपने रसूलों को इनकी तरह झुठलाया था। यह वाक़िया शहर इंताकिया का है वहाँ के बादशाह का नाम इंतीख़स था। उसके बाप और दादा का भी यही नाम था यह सब राजा प्रजा बुतपरस्त थे। उनके पास अल्लाह तआला के तीन पैग़म्बर आए। स़ादिक़, स़दूक़ और शलूम, अल्लाह तआला के दुरूदो सलाम उन पर नाज़िल हों। लेकिन उन बदनसीबों ने सबको झुठला दिया। (तब्री : 20/500) अन्क़रीब यह बयान भी आ रहा है कि कुछ बुज़ुर्गों ने उसे नहीं माना कि यह वाक़िया इंताकिया का हो। पहले तो उनके पास दो पैग़म्बर आए, उन्होंने उन्हें न माना। उन दो की ताईद में फिर तीसरे नबी आए। पहले दो रसूलों का नाम शम्ऊन और यौहन्ना था और तीसरे रसूल का नाम बोलिस़ था। उन सबने कहा कि हम अल्लाह तआला के भेजे हुए हैं जिसने तुम्हें पैदा किया है। उसने हमारी मअरिफ़त तुम्हें हुक्म भेजा है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो। हज़रत क़तादा बिन दआमा का ख़्याल है कि यह तीनों बुज़ुर्ग जनाब मसीह (अ.) के भेजे हुए थे बस्ती के उन लोगों ने जवाब दिया कि तुम तो हम जैसे ही इंसान हो, फिर क्या वजह कि तुम्हारी तरफ़ अल्लाह तआला की वह्यी आए और हमारी तरफ़ न आये। हाँ! अगर तुम रसूल होते तो चाहिए था कि तुम फ़रिश्ते होते। अक्सर कुफ़्फ़ार ने यही शुब्हा अपने अपने ज़माने के पैग़म्बरों के सामने पेश किया था। जैसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इर्शाद है (ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ) (40/मोमिन : 22) यानी लोगों के पास रसूल आए और उन्होंने जवाब दिया कि इंसान हमारे हादी बनकर आए। और आयत में है (قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا) (14/इब्राहीम : 10) यानी तुम तो हम जैसे इंसान ही हो। तुम्हारी चाहत सिर्फ़ यह है कि हमें अपने बाप दादों के मअबूदों से रोक दो, जाओ कोई खुला ग़ल्बा ले आओ।

और जगह क़ुरआन पाक में है (وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ) (23/मोमिनून : 34) यानी काफ़िरों ने कहा कि अगर तुमने अपने जैसे इंसानों की ताबेदारी की तो तुम यक़ीनन बड़े ही नुक़्सान में पड़ गए। उससे भी ज़्यादा वज़ाहत के साथ आयत (وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا) (17/बनी इस्राईल : 94) में इसका बयान है। यही उन लोगों ने भी उन तीनों नबियों से कहा कि तुम तो हम जैसे इंसान ही हो और हक़ीक़त में अल्लाह तआला ने तो कुछ भी नाज़िल नहीं किया। तुम यूँ ही ग़लत सलत कह रहे हो। पैग़म्बरों ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि हम उसके सच्चे रसूल हैं अगर हम झूठे होते तो अल्लाह

तआला पर झूठ बाँधने की सज़ा हमें अल्लाह तआला दे देता। लेकिन तुम देखोगे कि वह हमारी मदद करेगा और हमें इज़्ज़त अता करेगा, उस वक़्त तुम्हें ख़ुद रोशन (मालूम) हो जाएगा कि कौन शख़्स बाएतिबार अंजाम के अच्छा रहा। जैसे और जगह इर्शाद है (قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا) (29/अन्कबूत : 52) मेरे तुम्हारे बीच अल्लाह तआला की शहादत काफ़ी है वह तो आसमान व ज़मीन के ग़ैब जानता है। बातिल पर ईमान रखने वाले और अल्लाह तआला से कुफ़्र करने वाले ही नुक़्सान याफ़्ता हैं। सुनो! हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ तब्लीग़ है। मानोगे तुम्हारा भला है, न मानोगे ख़ुद पछताओगे। हमारा कुछ नहीं बिगाड़ोगे। कल अपने किये का ख़मियाज़ा भुगतोगे।

***

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾
قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا
الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا
وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

तर्जुमा : "वह लोग कहने लगे कि हम तो तुमको मंहूस समझते हैं अगर तुम बाज़ न आए तो हम पत्थरों से तुम्हारा काम तमाम कर देंगे और तुमको हमारी तरफ़ से सख़्त सज़ा पहुँचेगी। (18) उन रसूलों ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ ही लगी हुई है क्या इसको नहूसत समझते हो कि तुमको नसीहत की जाए। बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (19) और एक शख़्स उस शहर की किसी दूरदराज़ मक़ाम से दौड़ता हुआ आया। कहने लगा कि, ऐ मेरी क़ौम! इन रसूलों की राह चलो। (20) ऐसे लोगों की राह पर चलो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते और वह ख़ुद राहे रास्त पर भी हैं।" (21)

अहले कुफ़्र रसूलों के बारे में बदशगूनी लेते रहे (आ. 18 से 21) : उन काफ़िरों ने रसूलों से कहा कि तुम्हारे आने से हमें कोई बरकत व ख़ैरियत तो मिली नहीं बल्कि और बुराई और बदी पहुँची। तुम हो ही बदशगून लोग। जहाँ जाओगे बलाएँ बरसेंगी। सुनो! अगर तुम अपने इस तरीक़े से बाज़ न आए और यही कहते रहे तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और सख़्त अलमनाक सजाएँ देंगे। रसूलों ने जवाब दिया कि तुम ख़ुद शरीर हो, तुम्हारे आमाल ही बुरे हैं और इसी वजह से तुम पर मुसीबतें आने की है, जैसा करोगे वैसा भरोगे यही बात फ़िरओनियों ने हज़रत मूसा (अ.) और उनकी क़ौम के मोमिनों से कही थी। जब उन्हें कोई राहत मिलती तो कहते हम तो इसके मुस्तहिक़ ही थे और अगर कोई रंज पहुँचाता तो हज़रत मूसा (अ.) और मोमिनों की

बदशगूनी पर उसे महमूल करते। जिसके जवाब में जनाब बारी तआला ने फ़र्माया (اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ) (7/आराफ़ : 131) यानी इनकी मुसीबतों की वजह इनके आमाले बद हैं जिनका वबाल हमारी जानिब से उन्हें पहुँच रहा है। क़ौमे सालेह ने भी अपने नबी से यही कहा था और यही जवाब पाया था। ख़ुद जनाब पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़माँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) से भी यही कहा गया। जैसे कि अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल का इर्शाद है (وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ) (4/निसाअ : 78)

यानी अगर इन काफ़िरों को कोई नुक़सान होता है तो कहते हैं यह तेरी तरफ़ से है। तू कह दे यह सब कुछ अल्लाह तआला की जानिब से है। इन्हें क्या हो गया है कि इनसे यह बात भी नहीं समझी जाती। फिर फ़र्माता है कि सिर्फ़ इस वजह से कि हमने तुम्हें नसीहत की तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की तुम्हें भली राह समझाई। तुम्हारी अल्लाह तआला की तौहीद की तरफ़ रहनुमाई की। तुम्हें इख़्लास व इबादत के तरीक़े सिखाए। तुम हमें मंहूस समझने लगे और हमें इस तरह डराने, धमकाने लगे और ख़ौफ़ज़दा करने लगे और मुक़ाबले पर उतर आए। हक़ीक़त यह है कि तुम मुसर्रफ़ लोग हो, हुदूदे इलाही से तजावुज़ कर जाते हो हमें देखो कि हम तुम्हारी भलाई चाहें। तुम्हें देखो कि तुम हमसे बुराई समझो। बतलाओ तो भला यह कोई इंसाफ़ की बात है। अफ़सोस! तुम इंसाफ़ के दायरे से निकल गए।

हज़रत हबीब का ज़िक्र : मरवी है कि उस बस्ती के लोग यहाँ तक सरकश हो गए कि उन्होंने पोशीदा तौर पर नबियों के क़त्ल का इरादा कर लिया। एक मुसलमान शख़्स जो उस बस्ती के आख़िरी हिस्से में रहता था। जिसका नाम हबीब था और रस्सी का काम करता था। था भी बीमार, जुज़ाम की बीमारी थी, बहुत सख़ी आदमी था जो कमाता था आधा हिस्सा अल्लाह की राह में ख़र्च कर देता था, दिल का नर्म और फ़ित्रत का अच्छा था। (तब्री : 20/504) लोगों से अलग थलग एक ग़ार में बैठकर इबादते इलाही किया करता था। उसने जब अपनी क़ौम के उस बुरे इरादे को किसी तरह मालूम कर लिया तो उससे सब्र न हो सका, दौड़ता भागता आया। कुछ कहते हैं यह बढ़ई थे एक क़ौल है कि यह धोबी थे। उमर बिन हकम फ़र्माते हैं कि यह जूती गाँठने वाले थे। अल्लाह तआला उन पर रहम करे, उन्होंने आकर अपनी क़ौम को समझाना शुरू किया कि तुम इन रसूलों की ताबेदारी करो, इनका कहना मानो, इनकी राह चलो, देखो तो यह अपना कोई फ़ायदा नहीं कर रहे। यह तुमसे तब्लीग़े रिसालत का कोई बदला नहीं माँगते। अपनी ख़ैरख़्वाही की कोई उज्रत तुमसे तलब नहीं कर रहे, दर्दे दिल से तुम्हें अल्लाह तआला की तौहीद की दावत दे रहे हैं और सीधे और सच्चे रास्ते की रहनुमाई कर रहे हैं ख़ुद भी उसी राह पर चल रहे हैं। तुम्हें ज़रूर इनकी दावत पर लब्बैक कहना चाहिए और इनकी इताअत करनी चाहिए। लेकिन क़ौम ने उनकी एक न सुनी, बल्कि उन्हें शहीद कर दिया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहू

अल्हम्दु लिल्लाह! तफ़्सीर इब्ने कसीर का 22वाँ पारा मुकम्मल हुआ।

***

وَمَالِيَ لَآ أَعْبُدُ ٱلَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾ ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ
ٱلرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾ إِنِّيٓ إِذًا لَّفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ
﴿٢٤﴾ إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَٱسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : "मुझे क्या हो गया है जो मैं उसकी इबादत न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (22) क्या मैं उसे छोड़कर ऐसों को मअ़बूद बनाऊँ कि अगर रब रहमान मुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मुझे कुछ भी नफ़ा न पहुँचा सके और न वह मुझे बचा सकें। (23) फिर तो मैं यक़ीनन खुली गुमराही में हूँ। (24) मेरी सुनो! मैं तो सच्चे दिल से तुम सबके रब तआ़ला पर ईमान ला चुका।" (25)

इबादत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का हक़ है (आ. 22 से 25) : वह नेकबख़्त शख़्स जो अल्लाह तआ़ला के रसूलों की तक्ज़ीब व तर्दीद और तौहीन होती देखकर दौड़ा हुआ आया था और जिसने अपनी क़ौम को नबियों की ताबेदारी की रग़बत दिलाई थी, वह अब अपने अ़मल और अ़क़ीदे को उनके सामने पेश कर रहा है और उन्हें हक़ीक़त से आगाह करके ईमान की दावत दे रहा है तो कहता है कि मैं तो सिर्फ़ अपने ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू की ही इबादत करता हूँ। जबकि सिर्फ़ उसी ने मुझे पैदा किया है तो मैं उसकी इबादत क्यूँ न करूँ? फिर यह नहीं कि अब हम उसकी कुदरत से निकल गए हैं, अब उससे हमें कोई रिश्ता न रहा हो? नहीं बल्कि सबके सब लौटकर फिर उसके सामने जमा होने वाले हैं। उस वक़्त वह हर भलाई बुराई का बदला देगा। यह कैसी शर्म की बात है कि मैं उस ख़ालिक़ व क़ादिर को छोड़कर औरों को पूजूँ, जो न तो यह ताक़त रखें कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आई हुई किसी मुसीबत को मुझ पर से हटा दें, न यह कि उनके कहने सुनने की वजह से मुझे कोई बुराई पहुँचे। अल्लाह तआ़ला अगर मुझे कोई ज़रर पहुँचाना चाहे तो उसको दूर नहीं कर सकते, रोक नहीं सकते, न मुझे उससे बचा सकते हैं। अगर मैं ऐसे कमज़ोरों की इबादत करने लगूँ तो मुझसे बढ़कर गुमराह और बहका हुआ और कौन होगा? फिर तो न सिर्फ़ मुझे बल्कि दुनिया के हर भले इंसान पर मेरी गुमराही खुल जाएगी। मेरी क़ौम के लोगों! अपने जिस हक़ीक़ी मअ़बूद और परवरदिगार से तुम मुंकिर हुए हो, सुनो! मैं उसकी ज़ात पर ईमान रखता हूँ।

और यह मअ़नी भी इस आयत के हो सकते हैं कि उस अल्लाह वाले मर्दे सालेह ने अपनी क़ौम से रूगर्दानी करके अल्लाह तआ़ला के उन रसूलों से यह कहा हो कि अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बरों! तुम मेरे ईमान के गवाह रहना, मैं ज़ाते बारी तआ़ला पर ईमान लाया जिसने तुम्हें बरहक़ रसूल बनाकर भेजा। पस गोया यह अपने ईमान पर अल्लाह तआ़ला के रसूलों को गवाह बना रहा है। यह क़ौल बनिस्बत अगले क़ौल के भी ज़्यादा वाज़ेह है, वल्लाहु आलम!

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि "यह बुज़ुर्ग इतना ही कहने पाये थे जो तमाम कुफ़्फ़ार टूट पड़े और ज़द व कूब करने लगे। कौन था जो उन्हें बचाता? फिर पत्थर मारते मारते उन्हें उसी वक़्त हाथो हाथ शहीद कर दिया। (त़ब्री : 20/508) रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हू व अरज़ाहू। यह अल्लाह तआला के बन्दे और यह सच्चे वलीउल्लाह पत्थर खा रहे थे लेकिन ज़ुबान से यही कहे जा रहे थे कि ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को हिदायत कर दे यह जानते नहीं।" (त़ब्री : 20/508)

***

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : "उससे कहा गया कि जन्नत में चला जा। कहने लगा, काश कि मेरी क़ौम को भी इल्म हो जाता (26) कि मुझे मेरे रब तआला ने बख़्श दिया और मुझे इ़ज़्ज़त वाले लोगों में से कर दिया। (27) उसके बाद हमने उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर न उतारा और न इस त़रह हम उतारा करते हैं। (28) वह तो स़िर्फ़ एक ज़ोर की चीख़ थी कि यकायक वह सबके सब बुझ बुझा गए।" (29)

मोमिन के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी (आ. 26 से 29) : हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "इन कुफ़्फ़ार ने उस मोमिने कामिल को बुरी त़रह़ मारा पीटा उसको गिराकर उसके पेट पर चढ़ बैठे और पैरों से उसे रोंदने लगे यहाँ तक कि उसकी आँतें उसके पीछे के रास्ते से बाहर निकल आईं। उसी वक़्त अल्लाह तआला की त़रफ़ से उसको जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई गई। उसे अल्लाह ने दुनिया के रंजो ग़म से आज़ाद कर दिया और अमन व चैन के साथ जन्नत में पहुँचा दिया। उनकी गवाही से अल्लाह तआला ख़ुश हुआ। जन्नत उनके लिए खोल दी गई और दाख़िला की इजाज़त मिल गई। अपने सवाब व अज्र को इ़ज़्ज़त व इकराम को देखकर फिर उसकी ज़ुबान से निकल गया काश कि मेरी क़ौम यह जान सकती कि मुझे मेरे रब तआला ने बख़्श दिया और मेरा बड़ा ही इकराम किया।" (त़ब्री : 20/509) फ़िल्वाक़ेअ मोमिन सबके ख़ैरख़्वाह होते हैं वह धोखेबाज़ और बदख़्वाह नहीं होते। उस अल्लाह वाले शख़्स ने ज़िन्दगी में भी क़ौम की ख़ैरख़्वाही की और मरने के बाद भी उनका ख़ैरख़्वाह रहा। यह भी मत़लब है कि वह कहता है कि काश कि मेरी क़ौम यह जान लेती कि मुझे किस बाइस मेरे रब ने बख़्शा और क्यूँ मेरी इ़ज़्ज़त की तो ला महाला वह भी उस चीज़ को हासिल करने की कोशिश करती अल्लाह पर ईमान लाती और रसूलों की पैरवी करती। अल्लाह तआला उन पर रह़मत करे और उनसे ख़ुश रहे। देखो तो क़ौम की हिदायत के किस क़द्र ख़्वाहिशमंद थे।

हज़रत उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी (रज़ि.) ने जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अर्ज़ की कि हुज़ूर! अगर इजाज़त दें तो मैं अपनी क़ौम में तब्लीग़े दीन के लिए जाऊँ और उन्हें दावते इस्लाम दूँ? आपने फ़र्माया, "ऐसा न हो कि वह तुम्हें क़त्ल कर दें। जवाब दिया कि हुज़ूर (ﷺ)! इस बात का एहतिमाल ही नहीं क्योंकि उन्हें मुझसे इस क़द्र उल्फ़त व अक़ीदत है कि अगर मैं सोया हुआ हूँ तो वह मुझे जगाएँगे भी नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा फिर जाइए। यह चले, जब लात व उज़्ज़ा बुतों के पास से उनका गुज़र हुआ तो कहने लगे अब तुम्हारी शामत आ गई। इस बात पर पूरा क़बीला सक़ीफ़ बिगड़ बैठा। उन्होंने कहना शुरू किया कि "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! तुम उन बुतों को तर्क करो। यह लात व उज़्ज़ा दरअसल कोई चीज़ नहीं। इस्लाम क़बूल करो तो सलामती हासिल होगी, ऐ मेरे भाई बन्दो! यक़ीन मानो कि यह बुत कुछ हक़ीक़त नहीं रखते, सारी भलाई इस्लाम में है।" वग़ैरह अभी तो तीन ही बार सिर्फ़ इस कलिमे को दोहराया था कि एक बदनसीब तन जले ने दूर से ही एक तीर चलाया जो रगे अक्हल पर लगा और आप उसी वक़्त शहीद हो गए। हुज़ूर (ﷺ) के पास जब यह ख़बर पहुँची तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह ऐसा ही था जैसे सूरह यासीन वाला जिसने कहा था "काश! मेरी क़ौम मेरी मग़्फ़िरत और इज़्ज़त को जान लेती।" (हाकिम : 3/615, 616; इब्ने अबी हातिम : 12/61; बिदूनिल आयत और इसकी सनद ज़ईफ़ है।)

हज़रत कअब अहबार (रह.) के पास जब हबीब बिन ज़ेद बिन आसिम (रज़ि.) का ज़िक्र किया गया जो क़बीला बनू माज़िन बिन नज्जार से थे जिनको जंगे यमामा में मुसैलिमा कज़्ज़ाब मल्ऊन ने शहीद कर दिया था तो आपने फ़र्माया अल्लाह तआला की क़सम! यह हबीब (रज़ि.) भी उसी हबीब की तरह थे जिनका ज़िक्र सूरह यासीन में है। उनसे उस कज़्ज़ाब ने हुज़ूर (ﷺ) के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया, "बेशक वह अल्लाह तआला के रसूल हैं।" उसने कहा मेरी निस्बत भी तू गवाही देता है कि मैं रसूलुल्लाह हूँ? तो हज़रत हबीब (रज़ि.) ने फ़र्माया "मैं नहीं सुनता? उसने कहा, मुहम्मद (ﷺ) की निस्बत तू क्या कहता है? आपने फ़र्माया कि मैं उनकी सच्ची रिसालत को मानता हूँ। उसने फिर पूछा, "मेरी रिसालत की निस्बत क्या कहता है? "जवाब दिया कि मैं नहीं सुनता। उस मल्ऊन ने कहा, "उनकी निस्बत तू सुन लेता है और मेरी निस्बत बहरा बन जाता है" चुनाँचे उसके बाद एक बार पूछता और उनके इस जवाब पर बदन का एक हिस्सा कटवा देता। फिर पूछता फिर यही जवाब पाता फिर एक हिस्सा कटवाता। इसी तरह जिस्म का एक एक जोड़ कटवा दिया और वह अपने सच्चे इस्लाम पर आख़िरी दम तक क़ायम रहे और जो जो जवाब पहले था वही आख़िर तक रहा। यहाँ तक कि शहीद हो गए। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहू)

उसके बाद उन लोगों पर जो ग़ज़बे इलाही नाज़िल हुआ और जिस अज़ाब से वह ग़ारत कर दिये गए उसका ज़िक्र हो रहा है। चूँकि उन्होंने अल्लाह तआला के रसूलों को झुठलाया, अल्लाह तआला के वली को क़त्ल किया, इसलिए उन पर अज़ाब उतरा और हलाक कर दिये गए लेकिन उन्हें बर्बाद करने के लिए अल्लाह तआला ने न तो कोई लश्कर आसमान से भेजा, न कोई ख़ास एहतिमाम करना पड़ा, न किसी बड़े से बड़े काम के लिए उसे उसकी ज़रूरत, उसका तो सिर्फ़ हुक्म कर देना काफ़ी है, न उन्हें उसके बाद कोई तंबीह की गई, न उन पर फ़रिश्ते उतारे गए, बल्कि बिला मोहलत अज़ाब में पकड़ लिये गए और बग़ैर उसके कि कोई नाम लेने

वाला बाक़ी रहा हो, पहले से आख़िर तक एक एक करके सब फ़ना के घाट उतार दिये गए। जिब्राईल (अ.) आए और उनके शहर इंताकिया के दरवाज़े की चौखट थामकर इस ज़ोर से आवाज़ लगाई कि कलेजे पाश पाश हो गए और दिल दहल गए और रूहें परवाज़ कर गईं।

हज़रत क़तादा (रह.) से मरवी है कि "उन लोगों के पास जो तीनों रसूल आए थे यह हज़रत ईसा (अ.) के भेजे हुए क़ासिद थे लेकिन इसमें क़द्रे कलाम है। पहला : तो यह कि क़िस्से के ज़ाहिर से यह मालूम होता है कि वह मुस्तक़िल रसूल थे। फ़र्मान है (इज़ अर्सल्ना) जबकि हमने उनकी तरफ़ दो रसूल भेजे, जब उन्होंने उन दोनों को झुठलाया तो हमने उनकी मदद के लिए तीसरा रसूल भेजा। फिर अल्लाह तआला के यह रसूल अहले इंताकिया से कहते हैं (इन्ना इलैकुम मुर्सलून) यानी हम तुम्हारी तरफ़ रसूल हैं।

पस अगर यह तीनों हज़रत ईसा (अ.) के हवारियों में से हज़रत ईसा (अ.) के भेजे हुए होते तो उन्हें यह कहना मुनासिब न था बल्कि वह कोई ऐसा जुम्ला कहते जिससे मालूम हो जाता कि यह हज़रत ईसा (अ.) के क़ासिद हैं, वल्लाहु आलम!

फिर यह भी एक क़रीना है कि कुफ़्फ़ारे इंताकिया उनके जवाब में कहते हैं (مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا) (36/यासीन : 15) तुम तो हम ही जैसे इंसान हो। देख लो यह कलिमा कुफ़्फ़ार हमेशा रसूलों को ही कहते रहे, अगर वह हवारियों में से होते तब तो उनका मुस्तक़िल दाव-ए-रिसालत का था ही नहीं। फिर उन्हें यह लोग यह इल्ज़ाम ही क्यूँ देते?

दूसरा : अहले इंताकिया की तरफ़ हज़रत मसीह के क़ासिद गए थे और उस वक़्त उस बस्ती के लोग उन पर ईमान लाए थे बल्कि यही वह पहली बस्ती है जो सारी की सारी जनाब मसीह पर ईमान लाई। इसीलिए नसरानियों के वह चार शहर जो समझे जाते हैं , उनमें एक यह भी है। बैतुल मक़्दिस की बुज़ुर्गी के वह क़ाइल इसलिए हैं कि वह हज़रत मसीह का शहर है और इंताकिया को हुर्मत वाला शहर इसलिए कहते हैं कि सबसे पहले यहीं के लोग हज़रत मसीह (अ.) पर ईमान लाए और इस्कन्द्रिया की अज़्मत की वजह यह है कि यहाँ उन्होंने अपने मज़हबी ओहदेदारों के तक़र्रुर (चुनने) पर इज्माअ किया और रूमिया की हुर्मत के क़ाइल इस वजह से हैं कि शाहे कुस्तुन्तीन का शहर यही है और इसी बादशाह ने उनके दीन की मदद की थी और यहीं उनके तबर्रुकात थे। फिर जब उसने कुस्तुन्तुनिया शहर बसाया तो उन तबर्रुकात को रूमिया से यहाँ ला रखा।

सअद बिन बतरीक़ वग़ैरह नसरानी मुअर्रिख़ीन की तारीख़ों में यह सब वाक़ियात मज़्कूर हैं। मुसलमान मुअर्रिख़ीन ने भी यही लिखा है। पस मालूम हुआ कि इंताकिया वालों ने हज़रत ईसा (अ.) के क़ासिदों की तो मान ली थी और यहाँ बयान है कि उन्होंने न मानी और उन पर अज़ाबे इलाही आया और तहस नहस कर दिये गए तो साबित हुआ कि यह वाक़िया और है। यह रसूल मुस्तक़िल रिसालत पर मामूर थे और उन्होंने न माना जिस पर उन्हें सज़ा हुई और वह बेनिशान कर दिये गए और चराग़े सेहरी की तरह बुझा दिये गए, वल्लाहु आलम!

तीसरा : इंताकिया वालों का क़िस्सा जो हज़रत ईसा (अ.) के हवारियों के साथ वक़ूअ में आया,

वह क़ुरआन तौरात के उतरने के बाद का है और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और सलफ़ की एक जमाअत से मंक़ूल है कि तौरात के नुज़ूल के बाद किसी बस्ती को अल्लाह तआला ने अपने आसमानी अ़ज़ाब से बिलकुल बर्बाद नहीं किया बल्कि मोमिनों को काफ़िरों से जिहाद करने का हुक्म देकर कुफ़्फ़ार को नीचा दिखाया है जैसा कि आयत (وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا) (28/क़सस : 43) की तफ़्सीर में है और बस्ती की आसमानी हलाकत पर आयाते क़ुरआनी गवाह हैं, जिनसे अ़दल वाज़ेह है। नीज़ इससे यह साबित होता है कि यह वाक़िया इंताकिया का नहीं, जैसे कि कुछ सलफ़ के क़ौल भी उसे मुत्लक़ और तअयीने मक़ाम से आज़ाद करते हैं। उनका क़ौल है कि इससे मुराद यह मशहूर शहर इंताकिया नहीं, हाँ! यह भी हो सकता है कि इंताकिया नामी कोई शहर और भी हो और यह वाक़िया वहाँ का हो। इसलिए कि जो इंताकिया मशहूर है उसका अ़ज़ाब अल्लाह तआला से नेस्त नाबूद होना मशहूर नहीं हुआ, न तो नसरानियत के ज़माने में और न उससे पहले, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। यह भी याद रहे कि त़ब्रानी की एक मरफ़ूअ ह़दीस में है कि दुनिया में तीन ही शख़्स सब्क़त करने में सबसे आगे निकल गए हैं। हज़रत मूसा (अ.) की तरफ़ सब्क़त करने वाले तो हज़रत यूशअ बिन नून थे और हज़रत ईसा (अ.) की तरफ़ सब्क़त करने वाले वह थे जिनका ज़िक्र सूरह यासीन में है और मुहम्मद (ﷺ) की ख़िदमत में आगे बढ़ने वाले हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे। (त़ब्रानी : 11152; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 9/102; इसकी सनद में हुसैन बिन अबी सिर्री और हुसैन बिन ह़सन सख़्त ज़ईफ़ रावी हैं (अल्मीज़ान : 1/531; रक़म : 1986, 1/536; रक़म : 2003) यह ह़दीस बिलकुल मुंकर है सिर्फ़ हुसैन इश्क़िरा से रिवायत करता है और वह शिया है और मतरूक है, वल्लाहु आलम!

***

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٠ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ
اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝٣١ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا
مُحْضَرُوْنَ ۝٣٢ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝٣٣
وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝٣٤ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ
وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝٣٥ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ
الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٦

तर्जुमा : "बन्दों पर अफ़सोस! कभी भी कोई रसूल उनके पास नहीं आया जिसकी हँसी उन्होंने न उड़ाई हो। (30) क्या इन्होंने नहीं देखा कि इनके पहले बहुत सी बस्तियाँ हमने ग़ारत कर दी हैं जो इनकी तरफ़ वापिस नहीं लौटते। (31) और नहीं है कोई जमाअत मगर यह कि वह जमा होकर हमारे सामने हाज़िर की जाएगी। (32) इनके लिए एक निशानी ख़ुश्क मुर्दा ज़मीन है जिसको हम ज़िन्दा कर देते हैं जिससे अनाज निकालते हैं जिसमें से वह खाते हैं। (33) और हम इसमें खजूरों के और अंगूरों के बाग़ात पैदा कर देते हैं जिनमें हम चश्मे भी जारी कर देते हैं। (34) ताकि लोग उसके फल खाएँ। उन्होंने अपने हाथों से उसे नहीं बनाया फिर क्यूँ शुक्रगुज़ारी नहीं करते। (35) वह पाक ज़ात है जिसने हर चीज़ के जोड़े पैदा किये और ख़्वाह वह ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हों, ख़्वाह ख़ुद उनके नुफ़ूस हों ख़्वाह वह चीज़ें हों जिन्हें यह जानते भी नहीं।" (36)

अम्बिया-ए-किराम की बात न मानने वालों पर हसरत व अफ़सोस (आ. 30 से 36) : बन्दों पर हसरत व अफ़सोस है। बन्दे कल अपने ऊपर कैसे शर्मिन्दा होंगे वह बार बार कहेंगे कि हाय! अफ़सोस हमने तो ख़ुद अपना बुरा किया। कुछ क़िरातों में (या हसरतल इबादि अला अन्फ़ुसिहा) भी है। (तबरी : 20/512) मतलब यह है कि क़ियामत के दिन अज़ाबों को देखकर हाथ मलेंगे कि उन्होंने क्यूँ रसूलों को झुठलाया और क्यूँ अल्लाह तआला के फ़र्मान के ख़िलाफ़ किया।

दुनिया में तो इनका यह हाल था कि जब कभी जो रसूल आया इन्होंने बिला ताम्मुल झुठलाया और दिल खोलकर उनकी बेअदबी और तौहीन की। वह अगर यहाँ ताम्मुल करते तो समझ लेते कि इनसे पहले जिन लोगों ने पैग़म्बरों की न मानी थी वह ग़ारत व बर्बाद कर दिये गए, उनकी भूसी उड़ा दी गई। एक भी तो उनमें से न बच सका, न उस दारे आख़िरत से कोई वापिस लौटा। इसमें उन लोगों का भी रद्द है जो दहरिया थे, जिनका ख़्याल था कि यूँ ही दुनिया में मरते जीते चले जाएँगे, लौट लौटकर इस दुनिया में आएँगे, तमाम गुज़रे हुए, मौजूद और आने वाले लोग क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के सामने हिसाबो किताब के लिए हाज़िर किये जाएँगे और वहाँ हर हर भलाई और बुराई का बदला पाएँगे। जैसे और आयत में फ़र्माया (وَ اِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ) (11/हूद : 111) यानी हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला तेरा रब अता करेगा। एक क़िरअत में (लमा) है तो इन इस्बात के लिए होगा और लम्मा पढ़ने के वक़्त इन नाफ़िया होगा और लम्मा मअनी में इल्ला के होगा तो मतलब आयत का यह होगा कि नहीं हैं सब मगर यह कि सबके सब हमारे सामने हाज़िरशुदा हैं। दूसरी क़िरअत पर भी मतलब यही रहेगा, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

वुजूदे बारी तआला की अज़ीम निशानी : अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्माता है कि मेरे वुजूद पर और मेरी ज़बरदस्त क़ुदरत पर और मुर्दों की ज़िन्दगी देने पर एक निशानी यह भी है कि मुर्दा ज़मीन जो बंजर ख़ुश्क पड़ी होती है जिसमें कोई रूइदगी, ताज़गी, हरयाली और घास वग़ैरह नहीं होती, मैं उस पर आसमान से पानी बरसाता हूँ और वह मुर्दा ज़मीन जी उठती है, लहलहाने लगती है, हर तरफ़ सब्ज़ा ही सब्ज़ा उग जाता है और

क़िस्म क़िस्म के फल फूल वग़ैरह नज़र आने लगते हैं तो फ़र्माता है कि हम इस मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं और इसमें क़िस्म क़िस्म के अनाज पैदा करते हैं। कुछ को तुम खाते हो और कुछ तुम्हारे जानवर खाते हैं। हम इसमें खजूरों के अंगूरों के बाग़ात वग़ैरह तैयार कर देते हैं, नहरें जारी कर देते हैं जो बाग़ों और खेतों को सैराब, सरसब्ज़ शादाब करती रहती हैं। यह सब इसलिए कि उन दरख़्तों के मेवे दुनिया खाये खेतों और बाग़ात से नफ़ा हासिल करे और हाजतें पूरी करे। यह सब अल्लाह तआला की रहमत और उसकी क़ुदरत से पैदा हो रहे हैं किसी के बस और इख़्तियार में नहीं। तुम्हारे हाथों की पैदाकर्दा चीज़ें नहीं, न तुममें इनको उगाने की ताक़त, न तुममें इनको बचाने की क़ुदरत, न इनको पकाने और तैयार करने का तुम्हें इख़्तियार। सिर्फ़ अल्लाह तआला के यह काम हैं और उसी की यह मेहरबानी है और उसके एहसान के साथ ही साथ यह उसकी क़ुदरत के नमूने हैं फिर लोगों को क्या हो गया है जो शुक्रगुज़ारी नहीं करते? और अल्लाह तआला की बेइंतिहा अनगिनत नेअमतें अपने पास होते हुए उसका एहसान नहीं मानते।

एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि बाग़ात के फल जो खाते हैं और अपने हाथों का बोया हुआ यह पाते हैं। चुनाँचे इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में (वमिम्मा अमिलत्हू अयदीहिम) है। पाक व बरतर और तमाम नुक़्सानात से बरी वह अल्लाह तआला है जिसने ज़मी की पैदावार को और ख़ुद तुमको जोड़ा जोड़ा पैदा किया है और तरह तरह की मख़्लूक़ के जोड़े बनाए हैं जिन्हें तुम जानते भी नहीं हो। जैसे और आयत में है (وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ) (51/ज़ारियात : 49) हमने हर चीज़ के जोड़े पैदा किये हैं ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

***

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝٣٧ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ
لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٣٨ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ
الْقَدِيْمِ ۝٣٩ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ
فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝٤٠

तर्जुमा : ''और इनके लिए एक निशानी रात है जिससे हम दिन को अलग कर देते हैं तो वह अचानक अंधेरे में रह जाते हैं। (37) और सूरज के लिए जो मुक़र्ररा राह है वह उसी पर चलता रहता है। यह है अंदाज़ा ग़ालिब बाइल्म अल्लाह तआला का। (38) और चाँद की हमने मंज़िलें मुक़र्रर कर रखी हैं यहाँ तक कि वह घूम फिरकर पुरानी टहनी की तरह हो जाता है। (39) न आफ़ताब की यह मजाल है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सके और सबके सब आसमान में तैरते फिरते हैं।'' (40)

एक और निशानी का ज़िक्र (आ. 37 से 40) : अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला की एक निशानी बयान हो रही है और वह दिन रात हैं जो उजाले और अंधेरे वाले हैं और बराबर एक दूसरे के पीछे आ जा रहे हैं। जैसे और जगह फ़र्माया (يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا) (7/आराफ़ : 54) रात को दिन से छुपाता है, रात दिन को जल्दी जल्दी ढूँढ़ती आती है। यहाँ भी फ़र्माया, रात में से हम दिन को खींच लेते हैं, दिन तो ख़त्म हुआ और रात आ गयी और चारों तरफ़ से अंधेरा छा गया। हदीस में है कि जब इधर से रात आ जाए और दिन उधर से चला जाए और सूरज गुरूब हो जाए तो रोज़ेदार इफ़्तार कर ले। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाब मता यहिल्लु फ़तरुस्साइम : 1954; सहीह मुस्लिम : 1100; अबूदाऊद : 2351; तिर्मिज़ी : 698; अहमद : 1/28; मुस्नदे अबी यअला : 225; सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 3005; इब्ने हिब्बान : 358; दारमी : 5/196; बैहक़ी : 4/216; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 7595; मुस्नदे हुमैदी : 1/23) ज़ाहिर आयत तो यही है लेकिन हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि इसका मतलब मिस्ल आयत (يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ) (35/फ़ातिर : 13) के हैं यानी अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) इस क़ौल को ज़ईफ़ बतलाते हैं और फ़र्माते हैं इस आयत में जो लफ़्ज़ ईलाज है उसके मअनी एक की कमी करके दूसरी में ज़्यादती करने के हैं और यह मुराद इस आयत में नहीं। इमाम साहब (रह.) का यह क़ौल हक़ है, मुस्तक़र से मुराद या तो मुस्तक़र्रे मकानी यानी जाए क़रार है और वह अर्श तले की वह ही सिम्त है। पस एक सूरज ही नहीं बल्कि कुल मख़्लूक़ अर्श के नीचे ही है इसलिए कि अर्श सारी मख़्लूक़ के ऊपर है और सबको एहाता किये हुए है और वह कुर्रह नहीं है जैसे कि हैयतदाँ कहते हैं बल्कि वह मिस्ल कुब्बे के है जिसके पाये हैं और जिसे फ़रिश्ते उठाए हुए हैं, इंसानों के सरों के ऊपर, ऊपर वाले आलम में है। पस जबकि सूरज फ़लकी कुब्बे में ठीक ज़ुहर के वक़्त होता है उस वक़्त वह अर्श से बहुत क़रीब होता है फिर जब वह घूमकर चौथे फ़लक में उसी मक़ाम के बिल मुक़ाबिल आ जाता है, यह आधी रात का वक़्त होता है जबकि वह अर्श से बहुत दूर हो जाता है पस वह सज्दा करता है और तुलूअ की इजाज़त चाहता है जैसे कि अहादीस में है।

सहीह बुख़ारी में है हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) कहते हैं कि "मैं सूरज के गुरूब होने के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मस्जिद में था।" आप (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, "जानते हो यह सूरज कहाँ गुरूब होता है?" मैंने कहा, अल्लाह तआला और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "वह अर्श के नीचे जाकर अल्लाह तआला को सज्दा करता है। फिर आप (ﷺ) ने आयत (वश्शम्सु) तिलावत की।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यासीन बाब क़ौलुहू (वश्शम्सु तज्री लि मुस्तक़र्रिल्लहा..) : 4802; सहीह मुस्लिम : 159; बिदूनिल आयात)

और हदीस में है कि आप (ﷺ) से हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने इस आयत का मतलब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "इसकी क़रारगाह अर्श के नीचे है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यासीन बाब क़ौलुहू (वश्शम्सु तज्री लि मुस्तक़र्रिल्लहा) : 4803; सहीह मुस्लिम : 159; अहमद : 5/158; इब्ने हिब्बान : 6152) मुस्नद अहमद में इससे पहले की हदीस में यह भी है कि "वह अल्लाह तआला से वापिस

होने की इजाज़त माँगता है और उसे इजाज़त दी जाती है गोया उससे कहा जाता है कि जहाँ से आया था वहीं लौट जा तो वह अपने तुलूअ होने की जगह से निकलता है और यही उसका मुस्तक़र है। फिर आप (ﷺ) ने इस आयत के इब्तिदाई फ़िक़रे को पढ़ा।" (अहमद : 5/152; सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तुश्शम्स वल क़मर : 3199; सहीह मुस्लिम : 159; तिर्मिज़ी : 2186; सुननुल कुब्रा : 11430; शरह मुश्किलुल आसार : 281; इब्ने हिब्बान : 6154; अल्अस्माउ वस्सिफ़ात पेज : 392; मुस्नदे तयालिसी : 460) एक और रिवायत में यह भी है कि "क़रीब है कि वह सज्दा करे लेकिन क़बूल न किया जाए और इजाज़त माँगे लेकिन इजाज़त न दी जाए बल्कि कहा जाएगा कि जहाँ से आया वहीं लौट जा पस वह मग़रिब (पश्चिम) से ही तुलूअ करेगा।" (सहीह बुख़ारी : 3199) यही इस आयते करीमा के मअनी हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "सूरज तुलूअ होता है उसे इंसानों के गुनाह लौटा देते हैं, वह गुरूब होकर सज्दे में गिर पड़ता है और इजाज़त तलब करता है, इजाज़त मिल जाती है। एक दिन यह गुरूब होकर बआजिज़ी सज्दा करेगा और इजाज़त माँगेगा लेकिन इजाज़त न दी जाएगी। वह कहेगा कि राह दूर है और इजाज़त नहीं मिली इसलिए पहुँच नहीं सकूँगा। फिर कुछ देर रोक रखने के बाद उससे कहा जाएगा कि जहाँ से गुरूब हुआ था वहीं से तुलूअ हो जा! यही क़ियामत का दिन होगा जिस दिन ईमान लाना बेकार होगा और नेकियाँ करनी भी उनके लिए जो इससे पहले ईमान वाले और नेकोकार न थे बेकार हों गी।" और यह भी कहा गया है कि मुस्तक़र से मुराद उसके चलने की इंतिहा है। पूरी बुलंदी जो गर्मियों में होती है और पूरी पस्ती जो सर्दियों में होती है पस यह एक क़ौल हुआ।

दूसरा क़ौल यह है कि आयत के इस लफ़्ज़ मुस्तक़र से मुराद उसकी चाल का ख़ात्मा है। क़ियामत के दिन उसकी हरकत बातिल हो जाएगी, यह बेनूर हो जाएगा और यह आलम कुल का कुल ख़त्म हो जाएगा। यह मुस्तक़र्रे ज़मानी है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "वह अपने मुस्तक़र पर चलता है यानी अपने वक़्त और म्याद पर जिससे तजावुज़ नहीं कर सकता। (तब्री : 20/517) जो उसके रास्ते जाड़ों के और गर्मियों के मुक़र्रर हैं उन ही रास्तों से आता जाता है।" इब्ने मसऊद और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की क़िरअत (ला मुस्तक़र्र लहा) है यानी उसके लिए सुकून व क़रार नहीं बल्कि दिन रात बहुक्मे इलाही गर्दिश करता रहता है न रुके, न थके, जैसे फ़र्माया (وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ) (14/इब्राहीम : 33) यानी उसने तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया है जो न थकें न ठहरें, क़ियामत तक चलते फिरते ही रहेंगे। यह अंदाज़ा उस अल्लाह तआ़ला का है जो ग़ालिब है जिसकी कोई मुख़ालिफ़त नहीं कर सकता, जिसके हुक्म को कोई टाल नहीं सकता। वह अ़लीम है हर हर हरकत व सकून को जानता है, उसने अपनी हिक्मते कामिला से उसकी रफ़्तार मुक़र्रर की है जिसमें न इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ हो सके और न उसके बरअ़क्स हो सके। जैसे फ़र्माया (فَالِقُ الْاِصْبَاحِ) (6/अन्आम : 96) सुबह का निकालने वाला जिसने रात को राहत का वक़्त बनाया और सूरज चाँद को हिसाब से मुक़र्रर किया। यह है अंदाज़ा ग़ालिब ज़ी इल्म का। हामीम सज्दा की आयत को भी इसी तरह ख़त्म किया, फिर फ़र्माता है कि चाँद की हमने मंज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं और वह एक जुदागाना चाल चलता है जिससे महीने मालूम हो जाएँ, जैसे सूरज की चाल से रात दिन मालूम हो जाते थे। जैसे फ़र्मान है कि

लोग तुझसे चाँद के बारे में सवाल करते हैं। तू जवाब दे कि वक़्तों और हज्ज के मौसम को बतलाने के लिए है। और इस आयत में फ़र्माया उसने सूरज को ज़िया और चाँद को नूर दिया है और उसकी मंज़िलें ठहरा दी हैं ताकि तुम बरसों को और हिसाब को मालूम कर लो।

एक आयत में है कि हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बना दी हैं। रात की निशानी को रोशन किया है ताकि तुम उसमें अपने रब की नाज़िलकर्दा रोज़ी को तलाश कर सको और बरसों का शुमार और हिसाब मालूम कर सको। हमने हर चीज़ को ख़ूब तफ़्सील से बयान कर दिया है, पस सूरज की चमक दमक उसके साथ मख़्सूस है और चाँद की रोशनी उसी में है उसकी रफ़्तार भी मुख़्तलिफ़ है। सूरज हर दिन तुलूअ व गुरूब होता है उसी रोशनी के साथ होता है। हाँ! उसके तुलूअ व गुरूब की जगहें जाड़े मेंऔर गर्मी में अलग अलग होती हैं। इसी सबब से दिन रात की तूलानी (लम्बाई) में कमी बेशी होती रहती है। सूरज दिन का सितारा है और चाँद रात का सितारा है, उसकी मंज़िलें मुक़र्रर हैं।

महीने की पहली रात तुलूअ होता है बहुत छोटा सा होता है, रोशनी कम होती है दूसरी रात रोशनी उससे बढ़ जाती है और मंज़िल भी तरक़्क़ी करती जाती है। फिर ज्यो ज्यों बुलंद होता जाता है रोशनी बढ़ती जाती है भले उसकी नूरानियत सूरज से मिली हुई होती है। आख़िर चौदहवीं रात को चाँद का पूरा हो जाता है और उसकी चाँदनी भी कमाल की हो जाती है। फिर घटना शुरू होता है और इसी तरह दर्जा ब दर्जा घटता हुआ मिस्ल खजूर के ख़ोशे की टहनी के हो जाता है जिस पर तर खजूरें लटकी हों और वह ख़ुश्क होकर बल खा गई हो। फिर उसे नए सिरे से अल्लाह तआला दूसरे महीने की इब्तिदा में ज़ाहिर करता है। अरब में चाँद की रोशनी के ऐतिबार से महीने की रातों के नाम रख लिए गए हैं मस्लन पहली तीन रातों का नाम 'ग़रर'(है उसके बाद की तीन रातों का नाम नफ़ल है और उसके बाद की तीन रातों का नाम तिस्अ है। इसलिए कि उनकी आख़िरी रात नवीं होती है उसके बाद की तीन रातों का नाम 'उश्र' है इसलिए कि उनका शुरू दसवीं से है। उनके बाद की तीन रातों का नाम बैज़ है इसलिए कि उन रातों में चाँद की रोशनी आख़िर तक रहा करती है। उसके बाद की तीन रातों का नाम उनके यहाँ दरअ है यह लफ़्ज़ दरआ की जमा है उनका यह नाम इसलिए रखा है कि सौलहवीं को चाँद ज़रा देर से तुलूअ होता है तो थोड़ी देर तक अंधेरा यानी स्याही रहती है और अरब में उस बकरी को जिसका सर स्याह हो, शाते दरआ कहते हैं।

उसके बाद की तीन रातों को ज़ुल्मन कहते हैं फिर तीन को हुनादस फिर तीन को दरारी फिर तीन को महाक़ इसलिए कि उसमें चाँद ख़त्म हो जाता है और महीना भी ख़त्म होता है। अबू उबेदा (रह.) उनमें से तिस्आ और उश्र को क़बूल नहीं करते, मुलाहिज़ा हो किताब ''ग़रीबुल मुसन्निफ़' सूरज और चाँद की हदें उसने मुक़र्रर की हैं नामुम्किन है कि कोई अपनी हद से इधर या उधर हो जाए या आगे पीछे हो जाए। उसकी बारी के वक़्त वह गुम है, इसकी बारी के वक़्त यह ख़ामोश है। हसन (रह.) कहते हैं कि यह चाँद रात को है। इब्ने मुबारक (रह.) का क़ौल है कि हवा के पर हैं और चाँद पानी के ग़िलाफ़ तले जगह करता है। अबू सालेह (रह.) फ़र्माते हैं कि इसकी रोशनी उसकी रोशनी को पकड़ नहीं सकती। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं रात को सूरज तुलूअ नहीं हो सकता, न रात दिन से सब्क़त कर सकती है यानी रात के बाद ही रात नहीं आ सकती

बल्कि दरम्यान में दिन आ जाएगा। पस सूरज की सल्तनत दिन को है और चाँद की बादशाहत रात को है, रात इधर से जाती है उधर से दिन आता है। एक दूसरे के तआकुब में हैं लेकिन न तसादुम (टकराव) का डर है, न बेनज़्मी का ख़तरा है, न यह कि दिन ही चला जाए, रात न आए, न उसके ख़िलाफ़ एक जाता है दूसरा आता है। हर एक अपने अपने वक़्त पर ग़ायब व हाज़िर होता रहता है। सबके सब यानी सूरज, चाँद, दिन, रात फ़लक आसमान में तैर रहे हैं और घूमते फिरते हैं। ज़ेद बिन आसिम का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन के बीच फ़लक में यह सब आ जा रहे हैं। लेकिन यह बहुत ही ग़रीब बल्कि मुंकर क़ौल है कुछ लोग कहते हैं वह फ़लक मिस्ल चर्ख़े के तक्ले के है। कुछ कहते हैं कि मिस्ल चक्की के पाट के लोहे के।

***

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا
يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا
وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : ''उनके लिए एक निशानी यह भी है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया। (41) और उनके लिए उसी जैसी और चीज़ें पैदा कीं जिन पर यह सवार होते हैं। (42) अगर हम चाहते तो उन्हें डुबो देते फिर न तो कोई उनका मददगार होता न वह रिहा किये जाते। (43) लेकिन हम अपनी तरफ़ से रहमत करते हैं और एक मुद्दत तक के लिए उन्हें फ़ायदा दे रहे हैं।'' (44)

कश्ती और क़ुदरते इलाही (आ. 41 से 44) : अल्लाह तबारक व तआला अपनी क़ुदरत की एक और निशानी बता रहा है कि उसने समुन्द्र को मुसख़्ख़र कर दिया है जिसमें कश्तियाँ बराबर आती जाती रहती हैं। सबसे पहली कश्ती हज़रत नूह (अ.) की थी जिस पर सवार होकर वह ख़ुद और उनके साथ ईमान वाले बन्दे नजात पा गए थे, बाक़ी रूए ज़मीन पर एक इंसान भी न बचा था। हमने उस ज़माने के लोगों के आबा व अज्दाद को कश्ती में बिठा लिया था और जो बिलकुल भरपूर थी क्योंकि उसमें ज़रूरत का कुल सामान भी था और साथ ही हैवानात भी थे जो अल्लाह तआला के हुक्म से उसमें बिठा लिये थे। हर क़िस्म के जानवर का एक एक जोड़ा था, बड़ा बा वक़ार, मज़बूत और बोझल वह जहाज़ था। यह सिफ़त भी सही तौर पर हज़रत नूह (अ.) की कश्ती पर सादिक़ आती है। इसी तरह की ख़ुश्की की सवारियाँ भी अल्लाह तआला ने उनके लिए पैदा कर दी हैं मस्लन ऊँट जो ख़ुश्की में वही काम देता है जो तरी में कश्ती काम देती है, इसी तरह दीगर चौपाये जानवर भी और यह भी हो सकता है कि नूह की कश्ती नमूना बनी और फिर उस नमूने पर और कश्तियाँ और जहाज़ बनने लगे, इस मतलब की ताईद आयत (لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً) (69/हाक़्क़ा : 12) से भी

होती है यानी जब पानी ने तुग़ियानी की हमने तुम्हें कश्ती पर सवार कर लिया ताकि उसे तुम्हारे लिए एक यादगार बना दें और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। हमारे इस एहसान को फ़रामोश न करो कि समुन्द्र से हमने तुम्हें पार कर दिया। अगर हम चाहते तो उसी में तुम्हें डुबो देते, कश्ती की कश्ती बैठ जाती कोई न होता जो उस वक़्त तुम्हारी फ़रियाद सुनता, न कोई ऐसा तुम्हें मिलता जो तुम्हें बचा सके लेकिन यह सिर्फ़ हमारी रहमत है कि ख़ुश्की और तरी के लम्बे चौड़े सफ़र तुम बाआराम व राहत से कर रहे हो और हम तुम्हें अपने ठहराये हुए वक़्त तक हर तरह सलामत रखते हैं।

***

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "इनसे जब कभी कहा जाता है कि अगले पिछले गुनाहों से बचो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (45) इनके पास तो इनके रब तआला की निशानियों में से कोई निशानी ऐसी नहीं आई जिससे यह बेरुख़ी न बरतते हों। (46) इनसे जब कहा जाता है कि अल्लाह तआला के दिये हुए में से कुछ दो तो यह कुफ़्फ़ार ईमान वालों को जवाब देते हैं कि हम इन्हें क्यूँ खिलाएँ? जिन्हें अगर अल्लाह तआला चाहता तो ख़ुद खिला पिला देता। तुम तो हो ही खुली ग़लती में।" (47)

कुफ़्फ़ार की हठधर्मी (आ. 45 से 47) काफ़िरों की सरकशी, नादानी और इनाद व तकब्बुर बयान हो रहा है कि जब इनसे गुनाहों से बचने को कहा जाता है कि जो कुछ कर चुके उन पर शर्मिन्दा हो जाओ और उनसे तौबा कर लो और आइन्दा के लिए उनसे एहतियात करो, उसके नतीजे में अल्लाह तआला तुम पर रहम करेगा और तुम्हें अपने अज़ाबों से बचा लेगा तो वह उस पर कारबंद होना तो एक तरफ़, और मुँह फुला लेते हैं। कुरआन ने इस जुम्ले को बयान नहीं किया क्योंकि आगे जो आयत है वह इस पर साफ़ तौर से दलालत करती है। इसमें है कि यही एक बात क्या, इनकी तो आदत हो गई है कि अल्लाह तआला की हर बात से मुँह फेर लें। न उसकी तौहीद मानते हैं और न रसूलों को सच्चा जानते हैं, न इनमें ग़ौरो ख़ोज़ की आदत, न इनमें क़बूलियत का माद्दा, न नफ़ा को हासिल करने का मलका। इनको जब कभी राहे अल्लाह में ख़ैरात करने को कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने जो तुम्हें दिया है उसमें फ़ुक़रा , मसाकीन और मोहताजों का हिस्सा भी है। तो यह जवाब देते हैं कि अगर अल्लाह तआला का इरादा होता तो इन ग़रीबों को ख़ुद ही खिला देता। जब अल्लाह तआला ही का

इरादा इन्हें देने का नहीं तो हम अल्लाह तआला के इरादे के ख़िलाफ़ क्यूँ करें? तुम जो हमें ख़ैरात की नसीहत कर रहे हो उसमें बिलकुल ग़लती पर हो। यह भी हो सकता है कि यह पिछला जुम्ला कुफ़्फ़ार की तर्दीद में अल्लाह तआला की तरफ़ से हो यानी अल्लाह तआला उन कुफ़्फ़ार से फ़र्मा रहा है कि तुम खुली गुमराही में हो लेकिन इससे यही अच्छा मालूम होता है कि यह भी कुफ़्फ़ार के जवाब का हिस्सा है, वल्लाहु आलम!

***

وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ إِلٰٓى أَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَإِذَا هُمْ مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْ
بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً
وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾

तर्जुमा : ''कहते हैं कि यह वादा कब आएगा सच्चे हो तो बतलाओ। (48) इन्हें सिर्फ़ एक सख़्त चीख़ का इंतिज़ार है जो इन्हें आ पकड़ेगी और यह बाहम लड़ाई झगड़े में ही होंगे। (49) उस वक़्त न तो यह वसिय्यत कर सकेंगे और न ही अपने वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50) सूर के फूँके जाते ही सबके सब अपनी क़ब्रों से अपने परवरदिगार की तरफ़ तेज़ तेज़ चलने लगेंगे। (51) कहेंगे कि हाय हाय हमें हमारी ख़्वाबगाहों से किसने जगा दिया। यही है जिसका वादा रहमान ने दिया था और रसूलों ने सच सच कह दिया था। (52) यह नहीं है मगर एक तुंद आवाज़ कि यकायक सारे के सारे जमा होकर हमारे सामने हाज़िर कर दिये जाएँगे। (53) पस आज किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा। तुम्हें नहीं बदला दिया जाएगा मगर सिर्फ़ उन ही कामों का जो तुम किया करते थे।'' (54)

मुंकिरीने क़ियामत का मुतालबा (आ. 48 से 54) : काफ़िर चूँकि क़ियामत के आने के क़ाइल न थे, इसलिए वह नबियों से और मुसलमानों से कहा करते थे कि फिर क़ियामत को लाते क्यूँ नहीं? अच्छा, यह तो बताओ कि कब आएगी? अल्लाह तआला इन्हें जवाब देता है कि उसके आने के लिए हमें कुछ सामान

नहीं करने पड़ेंगे, सिर्फ़ एक मर्तबा सूर फूँक दिया जाएगा। दुनिया के लोग रोज़मर्रा की तरह अपने अपने काम काज में मशग़ूल होंगे कि अल्लाह तआला हज़रत इस्राफ़ील (अ.) को सूर फूँकने का हुक्म देगा। वहीं लोग इधर उधर गिरने पड़ने शुरू हो जाएँगे। उस आमसानी तेज़ तुंद आवाज़ से सबके सब महशर में अल्लाह तआला के सामने जमा कर दिये जाएँगे। उस चीख़ के बाद किसी को इतनी भी मोहलत नहीं मिलेगी कि किसी से कुछ कह सुन सके, कोई वसिय्यत और नसीहत कर सके और न फिर उन्हें अपने घर वालों की तरफ़ वापिस जाने की ताक़त रहेगी।

इस आयत के बारे में बहुत से आसार और हदीसें मज़्कूर हैं जिनको हम दूसरी जगह वारिद कर चुके हैं। उस पहले नफ़्ख़ा (सूर) के बाद दूसरा नफ़्ख़ा होगा जिससे सबके सब मर जाएँगे। कुल जहान फ़ना हो जाएगा, सिवाय उस हमेशगी वाले अल्लाह तआला के जिसको फ़ना नहीं। उसके बाद फिर जी उठने का नफ़्ख़ा होगा।

दूसरा सूर फूँकने का वक़्त : इन आयतों में दूसरे नफ़्ख़े का ज़िक्र हो रहा है जिससे मुर्दे जी उठेंगे। (यंसिलून) का मसदर नस्लान से है और इसके मअनी तेज़ चलने के हैं, जैसे और आयत में है (يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا) (70/मआरिज : 43) जिस दिन यह क़ब्रों से निकलकर उस तेज़ी से चलेंगे कि गोया वह किसी निशान की तरफ़ लपके जा रहे हैं। चूँकि दुनिया में उन्हें क़ब्रों से जी उठने का हमेशा से इंकार रहा था इसलिए आज यह हालत देखकर कहेंगे कि हाय अफ़सोस! हमारे सोने की जगह से हमें किसने उठाया? इससे क़ब्र के अज़ाब का न होना साबित नहीं होता। इसलिए कि जिस होल व शिद्दत को जिस तक्लीफ़ और मुसीबत को यह अब देखेंगे उसकी बनिस्बत तो क़ब्र के अज़ाब बेहद ख़फ़ीफ़ ही थे गोया कि वह वहाँ आराम में थे। कुछ बुज़ुर्गों ने यह भी फ़र्माया है कि इससे पहले ज़रा सी देर के लिए फ़िल वाक़ेअ उन्हें नींद आ जाएगी। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "पहले नफ़्ख़े और उस दूसरे नफ़्ख़े के बीच यह सो जाएँगे इसलिए अब उठकर यूँ कहेंगे।" (तब्री : 20/532) इसका जवाब ईमान वाले लोग देंगे कि उसी अल्लाह तआला का वादा था और यही अल्लाह तआला के सच्चे रसूल (ﷺ) फ़र्माया करते थे। यह भी कहा गया है कि फ़रिश्ते यह जवाब देंगे। दोनों क़ौलों में इस तरह तत्बीक़ भी हो सकती है कि मोमिन भी कहें और फ़रिश्ते भी कहें, वल्लाहु आलम!

अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद (रह.) कहते हैं कि "यह कुल क़ौल काफ़िरों का ही है" लेकिन सहीह बात वह है जिसे हमने पहले नक़्ल किया है। जैसे कि सूरह साफ़्फ़ात में है कि यह कहेंगे कि हाय अफ़सोस हम पर, यह जज़ा का दिन है, यही फ़ैसले का दिन है जिसे हम झुठलाते थे। और आयत में है (وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ) (30/रूम : 55)

जिस दिन क़ियामत बरपा होगी। गुनहगार क़समें खा खाकर कहेंगे कि वह सिर्फ़ एक साअत ही रहे हैं। इसी तरह वह हमेशा हक़ से फिरे रहे। उस वक़्त ईमान वाले और उलमा फ़र्माएँगे तुम अल्लाह तआला के लिखे हुए के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक रहे। यही क़ियामत का दिन है लेकिन तुम सिर्फ़ बेइल्म हो, तुम तो इसे अनहोनी मानते थे हालाँकि वह हम पर बिलकुल आसान है। एक आवाज़ की देर है कि सारी मख़्लूक़ हमारे सामने मौजूद हो जाएगी। जैसे और आयत में है कि डाँट के साथ ही सब मैदान में जमा हो जाएँगे।

और आयत में फ़र्माया अम्रे क़ियामत तो मिस्ल आँख झपकाने के बल्कि उससे भी ज़्यादा क़रीब है। और जैसे फ़र्माया (يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ) (17/इसा : 52) जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा और तुम उसकी ता'रीफ़ करते हुए उसे जवाब दोगे और यक़ीन कर लोगे कि तुम बहुत ही कम मुद्दत रहे। अल्ग़ज़ हुक्म के साथ ही सब हाज़िर सामने मौजूद, उस दिन किसी का कोई अमल मारा न जाएगा। हर एक को उसके किये हुए आमाल का ही बदला दिया जाएगा।

***

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فٰكِهُونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوٰجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ
مُتَّكِـُٔونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فٰكِهَةٌ وَلَهُمْ مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾

तर्जुमा : "जन्नती लोग आज के दिन अपने दिलचस्प मशग़लों में हश्शाश व बश्शाश हैं। (55) वह और इनकी बीवियाँ सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (56) उनके लिए जन्नत में हर क़िस्म के मेवे होंगे और भी जो कुछ वह तलब करें। (57) मेहरबान परवरदिगार की तरफ़ से उन्हें सलाम कहा जाएगा।" (58)

अहले जन्नत पर इन्आमात (आ. 55 से 58) : जन्नती लोग मैदाने क़ियामत से फ़ारिग़ होकर जन्नतों में बसद इकराम व हज़ारों ताज़ीम के साथ पहुँचाए जाएँगे और वहाँ की अनगिनत नेअ़मतों और राहतों में इस तरह मशग़ूल होंगे कि किसी दूसरी जानिब न इल्तिफ़ात होगा न किसी और तरफ़ का ख़याल। यह जहन्नम से और जहन्नम वालों से बेफ़िक्र होंगे। अपनी लज़्ज़तों और मज़ेदारियों में इस क़द्र मसरूर होंगे और हर एक चीज़ से बेख़बर हो जाएँगे। निहायत हश्शाश बश्शाश होंगे, कुँवारी हूरें उन्हें मिली हुई होंगी। जिनसे वह लुत्फ़ अंदोज़ हो रहे होंगे। तरह तरह की राग रागनियाँ और ख़ुश आवाज़ियाँ दिल फ़रेबी से उनके दिलों को लुभा रही होंगी। उनके साथ ही उस लुत्फ़ व सुरूर में उन की बीवियाँ और उनकी हूरें भी शामिल होंगी। जन्नती मेवेदार दरख़्तों के ठण्डे और घने सायों में बाआराम तख़्तों पर तकियों से लगे बेग़मी और बेफ़िक्री के साथ अल्लाह तआ़ला की मेहमानदारी उठा रहे होंगे। हर क़िस्म के मेवे बकसरत उनके पास मौजूद होंगे और भी जिस चीज़ को जी चाहे जो ख़्वाहिश हो पूरी हो जाएगी।

सुनन इब्ने माजा की किताबुज़्ज़ुहद में और इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया "क्या तुममें से कोई उस जन्नत में जाने का ख़्वाहिशमंद और उसके लिए तैयारियाँ करने वाला और मुस्तअ़दी ज़ाहिर करने वाला है? जिसमें कोई ख़ौफ़ व ख़तर नहीं। रब्बे कअ़बा की क़सम! वह सरासर नूर ही नूर है, उसकी ताज़गियाँ बेहद हैं, उसका सब्ज़ा लहलहा रहा है, उसके बालाख़ाने बुलंद और पुख़्ता हैं, उसकी नहरें पुर हैं और रवाँ हैं, उसके फल ज़ायक़ेदार और पके हुए और बकसरत हैं, उसमें ख़ूबसूरत नौजवान हूरें हैं, उनके

लिबास रेशमी और बेश क़ीमती हैं, उसकी नेअ़मतें अबदी और ला ज़वाल हैं, वह सलामती का घर है, वह सब्ज़ और ताज़े फलों का बाग़ है, उसकी नेअ़मतें बकसरत और उ़म्दा हैं, और उसके महल्लात बुलंद व बाला और मुज़य्यन हैं। यह सुनकर जितने स़ह़ाबा (रज़ि.) थे सबने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! हम उसके लिए तैयारियाँ करने और उसके ह़ासिल करने की कोशिश करने वाले हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इंशाअल्लाह कहो। चुनाँचे उन्होंने कहा, इंशाअल्लाह! (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब सिफ़तुल जन्ना : 4332; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ज़ह़्ह़ाक मुआफ़िरी रावी मज्हूल है।)

अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से उन पर सलाम ही सलाम है। ख़ुद अल्लाह तआ़ला अहले जन्नत के लिए सलाम है। जैसे फ़र्माया (تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ) (33/अह़ज़ाब : 44) उनका तोह़फ़ा जिस दिन वह अल्लाह तआ़ला से मिलेंगे, सलाम होगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जन्नती अपनी नेअ़मतों में मशग़ूल होंगे कि ऊपर की त़रफ़ से एक नूर चमकेगा। यह अपना सिर उठाएँगे तो अल्लाह तआ़ला के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे और रब कहेगा, अस्सलामु अ़लैकुम या अहलल जन्नति यही मअ़नी हैं इस आयत (سَلَامٌ قَوْلًا) (36/यासीन : 58) के जन्नती ख़ास़ त़ौर से अल्लाह तआ़ला को देखेंगे और अल्लाह तआ़ला उनको देखेगा। किसी नेअ़मत की त़रफ़ वह उस वक़्त आख भी न उठाएँगे यहाँ तक कि ह़िजाब ह़ाइल हो जाएगा और नूर व बरकत उनके पास बाक़ी रह जाएगी।" यह ह़दीस इब्ने अबी ह़ातिम में है लेकिन सनद कमज़ोर है। इब्ने माजा में भी किताबुस्सुन्ना में यह रिवायत मौजूद है। (इब्ने माजा, मुक़द्दमा, बाब फ़ीमा इंकर्तिल जहमिया : 184; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; शरीअ़त लिल आजुरी : 616; सिफ़तुल जन्नत लि अबी नुऐ़म : 88) ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह़.) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआ़ला जब दोज़ख़ियों और जन्नतियों से फ़ारिग़ होगा तो अब्र के साये में मुतवज्जह होगा। फ़रिश्ते उसके साथ होंगे, जन्नतियों को सलाम करेगा और जन्नती जवाब देंगे।" क़ुरज़ी (रह़.) फ़र्माते हैं "यह अल्लाह का फ़र्मान (सलामुन क़ौलन) में मौजूद है। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला कहेगा मुझसे जो चाहो माँगो। यह कहेंगे परवरदिगार! सब कुछ तो मौजूद है क्या माँगें? अल्लाह कहेगा, हाँ! ठीक है फिर भी जो जी में आए त़लब करो। यह कहेंगे बस तेरी रज़ामंदी मत़्लूब है। अल्लाह तआ़ला कहेगा वह तो मैं तुम्हें दे चुका और उसी की बिना पर तुम मेरी इस मेहमानखाने में आए हो और मैंने तुम्हें इसका मालिक कर दिया। जन्नती कहेंगे, फिर ऐ अल्लाह! हम तुझसे क्या माँगे? तूने हमें इतना दे रखा है कि अगर तू ह़ुक्म दे तो हममें से एक शख़्स़ कुल इंसानों और जिन्नों की दावत कर सकता है और उन्हें पेट भरकर खिला पिला और पहना ओढा सकता है बल्कि उन सबकी ज़रूरियात पूरी कर सकता है और फिर भी उसकी मिल्कियत में कोई कमी नहीं आ सकती। अल्लाह कहेगा अभी मेरे पास और ज़्यादती है चुनाँचे फ़रिश्ते उनके पास अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से नए नए तोह़फ़े लाएँगे।" (त़ब्री : 20/541) इमाम इब्ने जरीर (रह़.) इस रिवायत को बहुत सी सनदों से लाए हैं लेकिन यह रिवायत ग़रीब है, वल्लाहु आ़लम!

***

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا
الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّ اَنِ اعْبُدُوْنِيْ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ
اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۭ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : "ऐ गुनहगारों! आज तुम यक्सू हट जाओ अलग हो जाओ। (59) ऐ औलादे आदम! क्या मैंने तुमसे यह क़ौलो क़रार नहीं लिया था कि तुम शैतान की ताबेदारी न करना। वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60) और मेरी ही इबादत करते रहना। सीधी राह यही है। (61) शैतान ने तो तुममें से बहुत सारी मख़्लूक़ को बहका दिया। क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?" (62)

क़ियामत के दिन नेक और बद में इम्तियाज़ (आ. 59 से 62) : फ़र्माता है कि नेककारों से बदकारों को छांट दिया जाएगा। काफ़िरों से कह दिया जाएगा कि मोमिनों से दूर हो जाओ। फिर हम उनमें इम्तियाज़ कर देंगे, उन्हें अलग अलग कर देंगे।

इसी तरह सूरह रूम में है (وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ)(30/रूम : 14) जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन सबके सब जुदा जुदा हो जाएँगे यानी उनके दो गिरोह बन जाएँगे।

सूरह साफ़्फ़ात में फ़र्मान है कि (اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَ اَزْوَاجَهُمْ) (37/साफ़्फ़ात : 22) यानी ज़ालिमों को और उन जैसों को और उनके झूठे मअबूदों को जिन्हें वह अल्लाह तआला के सिवा पूजते थे जमा करो और इन्हें जहन्नम का रास्ता दिखाओ। जन्नतियों पर जिस तरह की नवाज़िशें हो रही होंगी, उसी तरह जहन्नम वालों पर तरह तरह की सख़्तियाँ हो रही होंगी, उनको बतौर डाँट डपट के कहा जाएगा कि क्या मैंने तुमसे वादा नहीं लिया था कि शैतान की न मानना वह तुम्हारा दुश्मन है। लेकिन इसके बावजूद तुमने मुझ रहमान की नाफ़र्मानी की और उस शैतान की फ़र्मांबरदारी की। ख़ालिक़, मालिक, राज़िक़ मैं, और फ़र्मांबरदारी की जाए राँदा दरगाह (शैतान) की। मैं तो कह चुका था कि एक मेरी ही मानना और सिर्फ़ मुझ ही को पूजना और मुझ तक पहुँचने का सीधा क़रीब का और सही रास्ता यही है। लेकिन तुम उल्टे चले, यहाँ भी उल्टे हो जाओ। उन नेक बख़्तों की और तुम्हारी राह अलग अलग है। यह जन्नती हैं तुम दोज़ख़ी हो।

(जिबिल्लन) से मुराद ख़ल्क़े कसीर, बहुत सी मख़्लूक़ है। लुग़त में जुबल भी कहा जाता है, और जुब्ल भी कहा जाता है। शैतान ने तुममें से बकसरत लोगों को बहकाया और सही रास्ते से हटा दिया तुममें इतनी भी अक़्ल न थी कि तुम इसका फ़ैसला कर सकते कि रहमान की मानें या शैतान की? अल्लाह तआला को पूजें या मख़्लूक़ को!

इब्ने जरीर में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह के हुक्म से जहन्नम अपनी गर्दन निकालेगी

जिसमें सख़्त अंधेरा होगा और बिलकुल ज़ाहिर होगी। वह भी कहेगी कि ऐ इंसानों! क्या अल्लाह ने तुमसे वादा नहीं किया था कि तुम शैतान की इबादत न करना? वह तुम्हारा ज़ाहिर दुश्मन है और मेरी इबादत करना, यह सीधी राह है।

उसने तुममें से अकसरों को गुमराह कर दिया है। क्या तुम समझते न थे? ऐ गुनहगारों! आज तुम अलग हो जाओ। उस वक़्त नेक व बद अलग अलग हो जाएँगे, हर एक घुटनों के बल गिर पड़ेगा। हर एक को उसके नामा-ए-आमाल की तरफ़ बुलाया जाएगा। आज वही बदले पाओगे जो करके आए हो। (तब्री : 20/542; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है; इसकी सनद में इस्माईल बिन राफ़ेअ मतरूकुल हदीस है। (अल्मीज़ान : 1/227; रक़्म : 872)

***

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۞ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۞ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۞ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۞ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۞

तर्जुमा : "यही वह दोज़ख़ है जिसका तुम्हें वादा दिया जाता था। (63) अपने कुफ़्र का बदला पाने के लिए आज इसमें दाख़िल हो जाओ। (64) हम आज के दिन उनके मुँह पर मुहरें कर देंगे और उनके हाथ हमसे बातें करेंगे और उनके पैर गवाहियाँ देंगे उन कामों की जिन्हें वह करते थे। (65) अगर हम चाहते तो उनकी आँखें बेनूर कर देते फिर यह रास्ते की तरफ़ दौड़ते फिरते लेकिन उन्हें कैसे दिखाई देता। (66) और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें मस्ख़ कर देते फिर न वह चल फिर सकते और न लौट सकते।" (67)

मुजिरमों के मुँह बंद कर दिये जाएँगे (आ. 63 से 67) : जहन्नम भड़कती हुई और शोले मारती हुई चीख़ती हुई और चिल्लाती हुई सामने होगी और कुफ़्फ़ार से कहा जाएगा कि यही वह जहन्नम है जिसका ज़िक्र मेरे रसूल किया करते थे, जिससे वह डराया करते थे और तुम उन्हें झुठलाते थे। लो अब अपने कुफ़्र का मज़ा चखो, उठो इसमें कूद पड़ो। चुनाँचे और आयत में है (يَوْمَ يُدَعُّوْنَ) (52/तूर : 13) जिस दिन यह जहन्नम की तरफ़ धकेले जाएँगे और कहा जाएगा यही वह दोज़ख़ है जिसका तुम इंकार करते रहे, बतलाओ यह जादू है? या तुम अँधे हो गए हो?

क़ियामत के दिन जब यह कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन अपने गुनाहों का इंकार करेंगे और उस पर क़समें खा लेंगे तो अल्लाह उनकी ज़ुबानों को बंद कर देगा और उनके बदन के हिस्से सच्ची गवाही देना शुरू कर देंगे।

हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''हम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास थे जो आप यकायक हँसे और इस क़द्र कि मसूड़े खुल गए फिर हमसे पूछने लगे कि जानते हो मैं क्यूँ हँसा? हमने कहा, अल्लाह और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। फ़र्माया जो बन्दा अपने रब से क़ियामत के दिन झगड़ेगा उस पर कहेगा कि बारी तआला! क्या तूने मुझे ज़ुल्म से बचाया न था? अल्लाह तआला कहेगा, हाँ! तो यह कहेगा कि बस फिर मैं किसी गवाह की गवाही अपने ख़िलाफ़ मंज़ूर नहीं करूँगा। बस मेरा अपना बदन तो मेरा है बाक़ी सब मेरे दुश्मन हैं। अल्लाह कहेगा अच्छा! यूँ ही सही, तू ही अपना गवाह सही और मेरे बुज़ुर्ग फ़रिश्ते गवाह न सही। चुनाँचे उसी वक़्त ज़ुबान पर मुहर लगा दी जाएगी और अअज़ा (बदन के हिस्सों) से फ़र्माया जाएगा, बोलो! तुम ख़ुद ही गवाही दो कि तुमसे इसने क्या क्या काम लिए? वह साफ़ साफ़ खोल खोलकर सच सच एक एक बात बतला देंगे। फिर उसकी ज़ुबान खोल दी जाएगी तो यह अपने जिस्म के जोड़ों, अअज़ा से कहेगा तुम्हारा सतियानाश हो जाए तुम ही मेरे दुश्मन बन बैठे, मैं तो तुम्हारे ही बचाव की कोशिश कर रहा था, और तुम्हारे फ़ायदा की ख़ातिर हुज्जतबाज़ी कर रहा था।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुल मोमिन व जन्नतुन लिल काफ़िर : 2969; सुननुल कुब्रा : 11653; इब्ने हिब्बान : 7482; शुअबुल ईमान : 263; मुस्नदे अबी यअला : 3870; अल्अस्माउ वस्सिफ़ात : 454)

नसाई की एक और हदीस में है कि ''तुम्हें अल्लाह तआला के सामने बुलाया जाएगा जबकि ज़ुबान बंद होगी। सबसे पहले रानों और हथेलियों से सवाल होगा। (सुननुल कुब्रा : 11469; अहमद : 5/5; और इसकी सनद हसन है; शुअबुल ईमान : 9058; मुतव्वलन; तब्री : 21/451; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 20115; तब्रानी : 16328) क़ियामत की एक तवील हदीस में है कि ''फिर तीसरे मौक़े पर उससे कहा जाएगा कि तू क्या है? यह कहेगा कि तेरा बन्दा हूँ, तुझ पर तेरे नबी (ﷺ) पर, तेरी किताब पर ईमान लाया था, रोज़े, नमाज़, ज़कात वग़ैरह का पाबन्द था और भी बहुत सी अपनी नेकियाँ बयान कर जाएगा। उस वक़्त उससे कहा जाएगा अच्छा! ठहर जा हम गवाह लाते हैं। यह सोचता ही होगा कि किसे गवाही में पेश किया जाएगा। यकायक उसकी ज़बान बंद कर दी जाएगी और उसकी रान से कहा जाएगा कि तू गवाही दे! अब रान और हड्डियाँ और गोश्त बोल उठेगा और उस मुनाफ़िक़ के सारे निफ़ाक़ को और तमाम पोशीदगियों को खोलकर रख देगा। यह सब इसलिए होगा कि फिर उसकी हुज्जत बाक़ी न रहे और उसका उज़्र टूट जाए। चूँकि रब तआला उस पर नाराज़ था, इसलिए उस सख़्ती से बाज़पुर्स हुई।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल मोमिन व जन्नतुन लिल काफ़िर : 2968; इब्ने हिब्बान : 4726; शुअबुल ईमान : 264)

एक दूसरी हदीस में है कि मुँह पर मुहर लगने के बाद सबसे पहले इंसान की बाईं रान बोलेगी। (अहमद : 4/151; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसमें मज्हूल रावी है।) हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''क़ियामत के दिन अल्लाह तआला मोमिन को बुलाकर उसके गुनाह उसके सामने पेश करके कहेगा, कहो यह ठीक है? यह कहेगा, हाँ! ऐ अल्लाह! सब दुरुस्त है बेशक मुझसे यह ख़ताएँ सरज़द हुई हैं।

अल्लाह कहेगा, अच्छा हमने सब बख़्श दीं। लेकिन यह बातचीत इस तरह होगी कि किसी एक को भी इसका मुत्लक़ इल्म न होगा, उसका एक गुनाह भी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ाहिर न होगा। अब उसकी नेकियाँ लाई जाएँगी और उन्हें खोल खोलकर सारी मख़्लूक़ के सामने जता जताकर रखी जाएँगी।''

(ऐ सत्तारुल उयूब! ऐ ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूब! तू गुनहगारों की पर्दापोशी कर और हम मुज्रिमों से दरगुज़र फ़र्मा, ऐ अल्लाह! उस दिन हमें रुस्वा और ज़लील न कर, अपने दामने रहमत में हमें ढाँप ले। ऐ ज़र्रा नवाज़ अल्लाह तआला! अपनी बेपायाँ बख़्शिश की मूसलाधार बारिश का एक क़तरा इधर भी बरसा दे और हमारे तमाम गुनाहों को धो डाल, परवरदिगार! एक नज़रे रहमत इधर भी, मालिकुल मुल्क हम भी तेरी चश्मे रहमत के मुंतज़िर हैं। ऐ ग़फ़ूरुर रहीम अल्लाह तआला! क्या तेरे दर से भी कोई सवाली ख़ाली झोली लेकर नाउम्मीद होकर आज तक लौटा है। रहम कर रहम कर, ऐ मालिक व ख़ालिक़ रहम कर, अपने इंतिक़ाम से बचा, अपने गुस्से से नजात दे, अपनी रहमतों से नवाज़ दे, अपने अज़ाबों से छुटकारा दे, अपनी जन्नत में पहुँचा दे, अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़र्मा, आमीन! आमीन! आमीन!)

और काफ़िर व मुनाफ़िक़ को बुलाया जाएगा, उसके आमाले बद उसके सामने रखे जाएँगे और उससे कहा जाएगा, कहो यह ठीक है? यह साफ़ इंकार कर जाएगा और कड़कड़ाती हुई क़समें खाने लगेगा कि ऐ अल्लाह! तेरे इन फ़रिश्तों ने झूठी तहरीर लिखी है मैंने हर्गिज़ यह गुनाह नहीं किये। फ़रिश्ता कहेगा, हाय हाय! यह क्या कह रहा है? क्या फ़लाँ दिन फ़लाँ जगह तूने फ़लाँ काम नहीं किया? यह कहेगा, ऐ अल्लाह! तेरी इज़्ज़त की क़सम! यह महज़ झूठ है, मैंने हर्गिज़ नहीं किया। अब अल्लाह उसकी ज़ुबान बंद कर देगा। ग़ालिबन सबसे पहले उसकी दाहिनी रान उसके ख़िलाफ़ गवाही देगी। यही मज़्मून इस आयत में बयान हो रहा है। फिर फ़र्माता है कि अगर हम चाहते तो उन्हें गुमराह कर देते और फिर यह कभी हिदायत हासिल न कर सकते। अगर हम चाहते तो उनकी आँखें अंधी कर देते तो यह यूँ ही भटकते फिरते। इधर उधर रास्ते टटोलते, हक़ को न देख सकते, न सहीह रास्ते पर पहुँच सकते और अगर हम चाहते तो उन्हें उनके मकानों में ही मस्ख़ कर देते, उनकी सूरतें बदल देते, उन्हें हलाक कर देते, उन्हें पत्थर के बना देते, उनकी टाँगें तोड़ देते, फिर न वह चल सकते, यानी आगे को, न वह लौट सकते, यानी पीछे को, बल्कि बुत की तरह एक ही जगह बैठे रहते, आगे पीछे न हो सकते।

***

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۚ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۚ إِنْ
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : ''जिसे हम बूढ़ा करते हैं उसे पैदाइशी हालत की तरफ़ फिर लौटा देते हैं। क्या फिर भी वह नहीं समझते। (68) न तो हमने इस पैग़म्बर को शेअर सिखाए, और न यह इसके लायक़ है। वह तो सिर्फ़ नसीहत और वाज़ेह क़ुरआन है। (69) ताकि वह हर उस शख़्स को आगाह कर दे जो ज़िन्दा है और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाए।'' (70)

जवानी और बुढ़ापा (आ. 68 से 70) : इंसान की जवानी ज्यों ज्यों ढलती जाती है, पीरी (बुढ़ापा), ज़ईफ़ी, कमज़ोरी, और नातवानी आती जाती है। जैसे सूरह रूम की आयत में है (اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ) (30/रूम : 54) अल्लाह तआला वह है जिसने तुम्हें नातवानी की हालत में पैदा किया, फिर नातवानी के बाद ताक़त अता की, फिर ताक़त व कुव्वत के बाद ज़ुअफ़ और बुढ़ापा कर दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है और वह ख़ूब जानने वाला, पूरी कुदरत वाला है।

और आयत में है तुममें से कुछ बहुत बड़ी उम्र की तरफ़ लौटाए जाते हैं ताकि इल्म के बाद वह बेइल्म हो जाएँ। पस मतलब आयत से यह है कि दुनिया ज़वाल और इंतिक़ाल की जगह है, यह पायदार और क़रारगाह नहीं। फिर भी क्या यह लोग अक़्ल नहीं रखते कि अपने बचपन पर फिर जवानी पर फिर बुढ़ापे पर ग़ौर करें और इससे नतीजा निकाल लें कि इस दुनिया के बाद आख़िरत आने वाली है और इस ज़िन्दगी के बाद नई ज़िन्दगी में दोबारा पैदा होना है।

शायरी पैग़म्बर की शायाने शान नहीं : फिर फ़र्माया, न तो हमने अपने पैग़म्बर (ﷺ) को शायरी सिखाई, न शायरी उसके शायाने शान, न उसे शेअरगोई से मुहब्बत, न शेअर अश्आर की तरफ़ उसकी तबीयत का मैलान, इसी का सबूत आप (ﷺ) की ज़िन्दगी में नुमायाँ तौर पर मिलता है कि किसी का शेअर पढ़ते थे तो भी सहीह तौर पर अदा नहीं होता था, या पूरा याद नहीं होता था। हज़रत शअबी (रह.) फ़र्माते हैं, "औलादे अब्दुल मुत्तलिब का हर मर्द व औरत शेअर कहना जानता था मगर रसूलुल्लाह (ﷺ) उससे कोसों दूर थे।" (इब्ने असाकिर)

एक बार अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ) ने यह बैत पढ़ी (कफ़ा बिल इस्लामि वशशैबि लिल मर्अि नाहियन) इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! यह इस तरह नहीं बल्कि यूँ है कफ़ा अश्शैबु वल इस्लामु लिल मर्अि नाहियन फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने ही या हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, सचमुच आप (ﷺ) अल्लाह तआला के रसूल हैं, अल्लाह तआला ने सहीह फ़र्माया (وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ) (36/यासीन : 69) (तब्क़ात : 1/382; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।)

दलाइलुन्नबुव्वा बैहक़ी में है कि "आप (ﷺ) ने एक बार अब्बास बिन मिरदास सुलमी (रज़ि.) से फ़र्माया, तूने ही तो यह शेअर कहा है (अतज्अलु नहबी व नहबुल उबैदि बैनल अक़्रइ व उयेयनत उन्होंने कहा हुज़ूर (ﷺ)! दरअसल यूँ है बैन उयेयनतल अक़्रइ आपने फ़र्माया, चलो सब बराबर है मतलब तो फ़ौत नहीं होता? सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि। सुहैली (रह.) ने (रौज़ुल अन्फ़) में इस तक़्दीम ताख़ीर की एक अजीब तौजीह की है, वह कहते हैं हुज़ूर (ﷺ) ने अक़्रइ को पहले और उयेयना को बाद में इसलिए ज़िक्र किया कि उयेयना ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में मुर्तद हो गया था बख़िलाफ़े अक़्रइ के कि वह साबित क़दम रहा था, वल्लाहु आलम! (अद्दलाइल : 5/179; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

मग़ाज़ी उमवी में है कि बद्र के मक़्तूल काफ़िरों के बीच गश्त लगाते हुए हुज़ूर (ﷺ) की ज़बाने मुबारक से निकला (नफ़्लिक़ हामन....) (आगे कुछ न फ़र्मा सके) इस पर जनाब अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने

पूरा शेअर कर दिया।

...मिर रिजालिन अइज़्ज़तिन अलैना वहुम कानू अअक़क़ व अज़्लमा

(हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. ने इस रिवायत को तफ़्सीर के अलावा सीरतुन्नब्विया : 2/449; अल्बिदाया वन्निहाया : 3/357 में बिला सनद ज़िक्र किया है।)

यह किसी अरब शायर का शेअर है जो हिमासा में मौजूद है। मुस्नद अहमद में है कि "कभी कभी रसूलुल्लाह (ﷺ) तरफ़ा का यह बैत पढ़ते थे। (व यातीक बिल अख़बारि मल्लम तुज़व्विदी) (अहमद : 6/31; सुननुल कुब्रा : 10833; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में इरसाल है जबकि तिर्मिज़ी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़ी इंशादिश्शेअर : 2848; और इसकी सनद भी ज़ईफ़ है; शुरैक बिन अब्दुल्लाह अल्क़ाज़ी मुदल्लस है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं। सुननुल कुब्रा : 10834; में मुत्तसिल सनद के साथ भी मौजूद है।) उसका पहला मिस्रआ यह है सतुब्दी लकल अय्यामु मा कुन्त जाहिलन यानी ज़माना तुझ पर वह उमूर ज़ाहिर कर देगा जिनसे तू बेख़बर है और तेरे पास ऐसा शख़्स ख़बर लाएगा जिसे तूने तौशा नहीं दिया। हज़रत आइशा (रज़ि.) से सवाल हुआ कि क्या हुज़ूर (ﷺ) शेअर पढ़ते थे? आप (रज़ि.) ने जवाब दिया कि सबसे ज़्यादा बुग़्ज़ आपको शेअरों से था। हाँ! कभी कभी बनू क़ैस वाले का कोई शेअर पढ़ते, लेकिन उसमें भी ग़लती करते, तक़्दीम ताख़ीर कर दिया करते। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) फ़र्माते, हुज़ूर (ﷺ)! यूँ नहीं बल्कि यूँ है तो आप(ﷺ) फ़र्माते, न मैं शायर हूँ न शेअरगोई मेरे शायाने शान है।" (तब्री : 20/549; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) (इब्ने अबी हातिम)

दूसरी रिवायत में शेअर और आगे पीछे का ज़िक्र भी है यानी व यअतीक बिल अख़बारि मा लम तुज़व्विदी को आपने मल्लम तुज़व्विद बिल अख़बारि पढ़ा था। बैहक़ी की एक रिवायत में है कि पूरा शेअर आप (ﷺ) ने कभी नहीं पढ़ा, ज़्यादा से ज़्यादा एक मिस्रा पढ़ लेते थे। (बैहक़ी : 7/43; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में उमर बिन अहमद और अब्दुल्लाह बिन हिलाल मज्हूल रावी हैं।) सहीह हदीस में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ंदक़ खोदते हुए हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) के अश्आर पढ़े। सो याद रहे कि आपका यह पढ़ना सहाबा (रज़ि.) के साथ था, वह अश्आर यह हैं,

ला हम्मा लौ ला अन्ता महत दैना वला तसद्दक़ना वला सल्लैना

फ़अन्ज़िलन सकीनतन अलैना व सब्बितिल अक़्दाम इल्लाक़ैना

इन्नल ऊला क़द बग़ौ अलैना इज़ा अरादू फ़ित्नतन अबैना

हुज़ूर (ﷺ) लफ़्ज़ अबैना को खींचकर पढ़ते और साथ ही बुलंद आवाज़ से पढ़ते। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा ख़ंदक़ : 4104; सहीह मुस्लिम : 1803; अहमद : 28214; सुननुल कुब्रा : 10367; इब्ने हिब्बान : 4618; दारमी : 2611; मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 6/181; दलाइलुन्नबुव्वत लिल बैहक़ी : 1299; मुस्नदे अबी अवाना : 6921)

तर्जुमा इन अश्आर का यह है कि,

''कोई ग़म नहीं अगर तू न होता तो हम हिदायत याफ़्ता न होते, न सदक़ा देते और न नमाज़ पढ़ते। अब तू हम पर तस्कीन नाज़िल फ़र्मा और जब दुश्मनों से लड़ाई छिड़ जाए तू हमें साबित क़दमी अता फ़र्मा। यही लोग हम पर सरकशी करते हैं, हाँ! यह जब कभी फ़ित्ने का इरादा करते हैं तो हम इंकार करते हैं।'' इसी तरह साबित है कि हुनैन के दिन आप (ﷺ) ने अपने ख़च्चर को दुश्मनों की तरफ़ बढ़ाते हुए फ़र्माया,

अनन्नबिय्यु ला कज़िब अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व यौम हुनैनि इज़ा अअजबत्कुम कसरतुकुम) : 4315; सहीह मुस्लिम : 1776; तिर्मिज़ी : 1688; अहमद : 4/280; इब्ने हिब्बान : 4770; मुस्नदे अबी अवाना : 7658; मज्मउज़्ज़ वाइद : 6/182; बैहक़ी : 7/43; सुननुल कुब्रा : 8238; मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 5/279)

इसके बारे में यह याद रहे कि इत्तिफ़ाक़िया एक कलाम आप (ﷺ) की ज़ुबान से निकल गया जो वज़ने शेअर पर पूरा उतरा, न कि क़सदन आप (ﷺ) ने शेअर कहा हो।

हज़रत जुंदुब बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं हम हुज़ूर (ﷺ) के साथ एक ग़ार में थे कि आप (ﷺ) की उँगली ज़ख़्मी हो गई थी तो आपने फ़र्माया,

(हल अन्ति इल्ला इस्बउन दमीती व फ़ी सबिलिल्लाहि मा लक़ीती)

यानी ''तू एक उँगली ही तो है और तू राहे इलाही में ख़ून आलूद हुई है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यजूज़ु मिनश्शेअरि वर्रजज़ु वल हुदाइ वमा यक्रहू मिन्ह : 6146; सहीह मुस्लिम : 1796; तिर्मिज़ी : 3345; बैहक़ी : 7/44; इब्ने हिब्बान : 6697; अहमद : 4/313; मुस्नदे हुमैदी : 776; मुस्नदे अबी यअला : 1533; मुअजमुल कबीर : 1703) यह भी इत्तिफ़ाक़िया है क़सदन नहीं। इसी तरह एक हदीस (اِلَّا اللَّمَمَ) (53/नज्म : 32) की तफ़्सीर में आएगी कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया।

(इन तग़्फ़िरिल्लाहुम्म तग़्फ़िर जम्मा व अय्यु अब्दिल्लक मा अलम्मा)

यानी ''ऐ अल्लाह! तू जब बख़्शे तो हमारे तमाम गुनाह बख़्श दे, वरना यूँ तो तेरा कोई बन्दा नहीं जो छोटी छोटी लग़्ज़िशों से भी पाक हो।'' पस यह सबके सब इस आयत के मनाफ़ी नहीं। क्योंकि अल्लाह तआला की ता'लीम आप (ﷺ) को शेअरगोई की न थी बल्कि रब्बुल आलमीन ने तो आप (ﷺ) को क़ुरआने अज़ीम की ता'लीम की थी जिसके पास भी बातिल फटक नहीं सकता। क़ुरआने हकीम की यह पाक नज़्म शायरी से मंज़िलों दूर थी, इसी तरह कोहानत से और गढ़ लेने से और जादू के कलिमात से जैसे कि कुफ़्फ़ार के मुख़्तलिफ़ गिरोह मुख़्तलिफ़ बोलियाँ बोलते थे। आपकी तो तबीयत इन सनाअतों से मासूम थी, (ﷺ)। अबूदाऊद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मेरे नज़दीक यह तीनों बातें बराबर हैं तिरयाक़ (एक ज़हरीली चीज़) का पीना, गण्डे का लटकाना और शेअर बनाना।'' (अबूदाऊद, किताबुत्तिब्ब, बाब फ़ि

फ़ितिरियाक़ : 3869; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; बैहक़ी : 9/355; इब्ने अबी शैबा : 5/457; अहमद : 2/223; इसकी सनद में अ़ब्दुर्रहमान बिन राफ़ेअ़ तनूख़ी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/568) हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "शेअ़रगोई से आपको तब्अ़न नफ़रत थी। (अहमद : 6/134; और इसकी सनद सहीह है।) दुआ में आप (ﷺ) को जामेअ़ कलिमात पसंद आते थे और उसके सिवा छोड़ देते थे।" (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब अद्दुआ : 1482; और इसकी सनद सहीह है; अहमद : 6/189; इब्ने हिब्बान : 864)

अबूदाऊद में है कि "किसी का पेट पीप से भर जाना उसके लिए शेअ़रों से भर लेने से बेहतर है।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़िश्शेअ़र : 5009; वहुव सहीहुन; इस मतन की रिवायत इन जगहों में भी है सहीह बुख़ारी : 6155; सहीह मुस्लिम : 2258; तिर्मिज़ी : 2851; इब्ने माजा : 3760; दारमी : 2/384; मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 5/282; अहमद : 1/175; इब्ने हिब्बान : 5777) मुस्नद अहमद की एक ग़रीब हदीस में है कि "जिसने इशा की नमाज़ के बाद शेअ़र का एक मिसरा भी बाँधा तो उसकी उस रात की नमाज़ नामक़्बूल है।" (अहमद : 4/125; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुस्नदे बज़्ज़ार : 2094; मुअजमुल कबीर : 7133; इसकी सनद में क़ुज़्अ़ा बिन सुवैद ज़ईफ़ रावी है।) याद रहे कि शेअ़रगोई की कई क़िस्में हैं मुश्रिकों की हिजू में शेअ़र कहना मशरूअ़ हैं। हस्सान बिन साबित, हज़रत कअ़ब बिन मालिक, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) वग़ैरह जैसे अकाबिरीन सहाबा ने कुफ़्फ़ार की हिजू में अश्आ़र कहे हैं।

कुछ अश्आ़र नसीहत, अदब और हिक्मत के लिए होते हैं जैसे कि जाहिलियत के ज़माना के शुअ़रा के कलाम में ऐसे अश्आ़र पाये जाते हैं। चुनाँचे उमय्या बिन सुल्त के अश्आ़र की बाबत फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि "उसके अश्आ़र तो ईमान ला चुके हैं लेकिन उसका दिल काफ़िर ही रहा।" (अल्जामेउस्सग़ीर लिस्सुयूति वक़ाल ज़ईफ़) एक सहाबी (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को उमय्या के एक सौ बैत सुनाए। हर बैत के बाद आप (ﷺ) फ़र्माते थे, "और कहो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुश्शेअ़र, बाब फ़ी इंशादिल अश्आ़र व बयानु अश्अ़रिल कलिमति... : 2255; इब्ने हिब्बान : 5876; अहमद : 4/390; मुस्नदे हुमैदी : 844) अबूदाऊद में हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है कि "कुछ बयान मिस्ल जादू के है और कुछ शेअ़र सरासर हिक्मत वाले हैं।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़िश्शेअ़र : 5010; वहुव इन्दल बुख़ारी : 6145, 5011, वहुव हसन : 5012; और इसकी सनद ज़ईफ़ है। और यह रिवायत मुख़्तलिफ़ हिस्सों के साथ सहीह बुख़ारी : 5767, 6145; तिर्मिज़ी : 2028; अहमद : 2/59; इब्ने हिब्बान : 5795 में भी मौजूद है।) पस फ़र्मान है कि जो कुछ हमने इन्हें सिखाया है वह सरासर ज़िक्र व नसीहत और वाज़ेह साफ़ और रोशन क़ुरआन है। जो शख़्स ज़रा सा भी ग़ौर करे उस पर यह खुल जाता है ताकि रूए ज़मीन पर जितने लोग मौजूद हैं यह उन सबको आगाह कर दे और डरा दे। जैसे फ़र्माया (لِأُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ) (6/अन्आ़म : 19) ताकि मैं तुम्हें इसके साथ डरा दूँ और जिसे भी यह पहुँच जाए। और आयत में है (وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ) (11/हूद : 17) यानी जमाअ़तों में से जो भी इसे न माने वह सज़ावारे जहन्नम है। हाँ! इस क़ुरआन

से और नबी (ﷺ) के फ़र्मान से असर वही लेता है जो ज़िन्दा दिल और साफ़ बातिन हो, अक़्ल व बसीरत रखता हो और क़ोले अज़ाब तो काफ़िरों पर साबित ही है। पस कुरआन मोमिनों के लिए रहमत और काफ़िरों पर इत्मामे हुज्जत है।

***

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ۝٧١ وَذَلَّلْنٰهَا
لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ۝٧٢ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۚ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝٧٣
وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝٧٤ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ
جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ۝٧٥ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝٧٦

तर्जुमा : **"क्या वह नहीं देखते? कि हमने अपने हाथों बनाई हुई चीज़ों में से उनके लिए चौपाये जानवर भी पैदा कर दिये जिनके यह मालिक हो गए हैं। (71) और इन मवेशियों को हमने इनका ताबेअ़ फ़र्मान बना दिया है जिनमें से कुछ तो इनकी सवारियाँ हैं और कुछ का गोश्त खाते हैं। (72) इन्हें इनसे और भी बहुत से फ़ायदे हैं ख़ुसूसन (दूध का) पीना। क्या फिर भी यह शुक्रगुज़ारी नहीं करेंगे। (73) अल्लाह तआला के सिवा दूसरों को मअ़बूद बनाने में इस ख़याल से कि इनकी मदद की जाए। (74) यक़ीनन इनमें इनकी मदद की ताक़त ही नहीं, लेकिन फिर भी मुश्रिकीन इनके लिए हाज़िर बाश लश्करी हैं। (75) पस तुझे इनकी बात ग़मनाक न करे। हम इनकी पोशीदा और ऐलानिया सब बातों को बख़ूबी जानते हैं।" (76)**

जानवरों की पैदाइश, अल्लाह का बंदों पर इन्आम हैं (आ. 71 से 76) : अल्लाह तआला अपने इन्आम व एहसान का ज़िक्र फ़र्मा रहा है कि उसने ख़ुद ही यह चौपाये पैदा किये और इंसान की मिल्कियत में दे दिये। एक छोटा सा बच्चा भी ऊँट की नकेल थाम ले, ऊँट जैसा क़वी और बड़ा जानवर उसके साथ साथ है। सौ ऊँटों की एक क़तार हो, एक बच्चे के हाँकने से सीधी चलती रहती है। इस मातहती के अलावा कुछ लम्बे लम्बे मशक़्क़त वाले सफ़र बाआसानी जल्दी जल्दी तै होते हैं। ख़ुद सवार होते हैं, सामान लादते हैं, बोझ ढोने के काम आते हैं और कुछ के गोश्त खाये जाते हैं। फिर सूफ़, ऊन, बालों और खालों वग़ैरह से फ़ायदा उठाते हैं। दूध पीते हैं और बतौर इलाज पेशाब काम में आते हैं और भी तरह तरह के फ़वाइद हासिल किये जाते हैं। क्या फिर इनको न चाहिए कि इन नेअ़मतों के मुन्इम, इन एहसानों के मुहसिन, इन चीज़ों के ख़ालिक़, इनके हक़ीक़ी मालिक का शुक्र बजा लाएँ? सिर्फ़ उसी की इबादत करें, उसकी तौहीद को मानें और उसके साथ किसी को शरीक न करें।

अल्लाह सब कुछ जानता है : मुश्रिकीन के इस बातिल अक़ीदे की तर्दीद हो रही है जो वह समझते थे कि जिन जिनकी अल्लाह तआला के सिवा यह इबादत करते हैं वह इनकी इम्दाद व नुसरत करेंगे। इनकी रोज़ियों में बरकत देंगे और अल्लाह तआला से तक़र्रुब हासिल होगा। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि वह इनकी मदद करने से आजिज़ हैं, इनकी मदद तो कुजा वह तो ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते बल्कि यह बुत तो अपने दुश्मन के नुक़्सान से भी अपने आपको नहीं बचा सकते। कोई आये और तोड़ मरोड़कर चला जाए तो यह उसका कुछ नहीं कर सकते। बल्कि बोलचाल पर भी क़ादिर नहीं, समझ बूझ नहीं। यह बुत क़ियामत के दिन जमा शुदा हिसाब के वक़्त अपने आबिदों के सामने लाचारी और बेकसी के साथ मौजूद होंगे ताकि मुश्रिकीन की पूरी ज़िल्लत व ख़्वारी हो और उन पर हुज्जत तमाम हो। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "मतलब यह है कि बुत तो इनकी किसी तरह की इम्दाद नहीं कर सकते लेकिन फिर भी यह बेसमझ मुश्रिकीन इनके सामने इस तरह मौजूद रहते हैं, जैसे कोई हाज़िर बाश लश्कर हो।" वह न उन्हें कोई नफ़ा पहुँचा सकें, न किसी नुक़्सान को दूर कर सकें, लेकिन यह हैं कि उनके नाम पर मरे जाते हैं। यहाँ तक कि उनके ख़िलाफ़ आवाज़ सुनना भी पसंद नहीं करते और ग़ुस्से से बेक़ाबू हो जाते हैं। ऐ नबी (ﷺ)! इन कुफ़्फ़ार की बातों से आप ग़मनाक न हों, हम पर इनका ज़ाहिर और बातिन रोशन है। वक़्त आ रहा है कि गिन चुनकर हम इन्हें बदले दें।

***

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا
وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ
مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ
مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

तर्जुमा : "क्या इंसान को इतना भी मालूम नहीं कि हमने उसे नुत्फ़े से पैदा किया है? फिर भी यह तो सरीह झगड़ालू बन बैठा। (77) और हमें बातें मारने लगा और अपनी असल पैदाइश को भूल गया। कहने लगा कि इन सड़ी गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है? (78) तू जवाब दे कि इन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया है। जो सब तरह की पैदाइश का बख़ूबी जानने वाला है। (79) वही जिसने तुम्हारे लिए सब्ज दरख़्त से आग पैदा कर दी जिससे तुम और आग सुलगाते हो।" (80)

पहली पैदाइश का सानेअ दोबारा ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है (आ. 77 से 80) : उबय बिन ख़ल्फ़ मल्ऊन एक बार अपने हाथ में एक बोसीदा खोखली सड़ी गली हड्डी लेकर आया और उसको अपनी चुटकी में

मलते हुए जबकि उसके रेज़े हवा में उड़ रहे थे, हुज़ूर (ﷺ) से कहने लगा, आप कहते हैं कि इन हड्डियों को अल्लाह तआला ज़िन्दा करेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! अल्लाह तआला तुझे हलाक कर देगा फिर ज़िन्दा करेगा, फिर तेरा हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा।" उस मौक़े पर इस सूरत की आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं। (तब्री : 20/554) और रिवायत में है कि यह एतिराज़ करने वाला आस़ बिन वाइल था, और इस आयत से लेकर ख़त्म सूरह तक की आयतें नाज़िल हुईं। (तब्री : 20/554) और रिवायत में है कि यह वाक़िया अब्दुल्लाह बिन उबय से हुआ था। (इसकी सनद में अतिया बिन सअद औफ़ी मशहूर ज़ईफ़ रावी है।) लेकिन यह ज़रा ग़ौरतलब है। इसलिए कि यह सूरह मक्की है और अब्दुल्लाह बिन उबय तो मदीना में था। बहर सूरत ख़्वाह उबय के सवाल पर यह आयतें उतरी हों या आस़ के सवाल पर, हैं आम। लफ़्ज़े इंसान पर जो अलिफ़ लाम है वह जिंस का है। जो शख़्स भी दूसरी ज़िन्दगी का इंकारी हो उसे जवाब है। मतलब यह है कि इन लोगों को चाहिए कि अपनी शुरू पैदाइश पर ग़ौर करें। जिसने एक हक़ीर व ज़लील क़तरे से इंसान को पैदा कर दिया हालाँकि इससे पहले वह कुछ न था, फिर उसकी क़ुदरत पर हर्फ़ रखने के क्या मअनी? इस मज़्मून को बहुत सी आयतों में बयान किया है जैसे (اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ) (77/मुर्सिलात : 20) और जैसे (اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ) (76/दहर : 2) वग़ैरह।

मुस्नदे अहमद में है कि एक बार हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी हथेली में थूका फिर उस पर उँगली रखकर फ़र्माया कि "अल्लाह तआला फ़र्माता है, ऐ इब्ने आदम! क्या तू मुझे भी आजिज़ कर सकता है? मैंने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है। फिर जब ठीक ठाक दुरुस्त और चुस्त कर दिया और तू ज़रा कस बल वाला हो गया तो तूने माल जमा करना और मिस्कीनों से माल रोक रखना शुरू कर दिया। हाँ! जब दम हलक़ में अटका तो कहने लगा कि अब मैं अपना तमाम माल अल्लाह की राह में स़दक़ा करता हूँ भला अब स़दक़े का वक़्त कहाँ?" (अहमद : 4/210; इब्ने माजा, किताबुल वसा़या, बाब अन्नही अनिल इम्साक फ़िल हयात वत्तब्ज़ीरु इन्दल मौत : 2707; और इसकी सनद स़हीह है; तब्क़ात : 7/427) अलग़र्ज़ नुत्फ़े से पैदा किया हुआ इंसान हुज्जत बाज़ियाँ करने लगा और अपना दोबारा जी उठना महाल जानने लगा। अल्लाह तआला की क़ुदरत से नज़रें हटा लीं जिसने आसमान व ज़मीन को और तमाम मख़्लूक़ को पैदा कर दिया। यह अगर ग़ौर करता तो अलावा इस अज़ीमुश्शान मख़्लूक़ की पैदाइश के ख़ुद अपनी पैदाइश को भी दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत का एक निशाने अज़ीम पाता लेकिन इसने तो अक़्ल की आँखों पर ठीकरी रख ली। इसके जवाब में कह दो कि पहली बार इन हड्डियों को जो अब सड़ी गली हैं जिसने पैदा किया है, वही दोबारा इन्हें पैदा करेगा। जहाँ जहाँ भी यह हड्डियाँ हों वह ख़ूब जानता है।

मुस्नदे अहमद की हदीस में है कि एक बार हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से उक़्बा बिन अम्र ने कहा कि आप हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी हुई कोई हदीस सुनाइए तो आपने फ़र्माया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि "एक शख़्स पर जब मौत की हालत तारी हुई तो उसने अपने वारिसों को वसिय्यत की कि जब मैं मर जाऊँ तो बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करके मेरी लाश को जलाकर ख़ाक कर देना, फिर उसे समुन्द्र में बहा देना। चुनाँचे उन्होंने यही किया। अल्लाह तआला ने उसकी राख जमा करके जब उसे दोबारा ज़िन्दा किया तो

उससे पूछा, कि तूने ऐसा क्यूँ किया? उसने जवाब दिया कि सिर्फ़ तेरे डर से। अल्लाह तआला ने उसको बख़्श दिया।'' हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हुज़ूर (ﷺ) ने राह चलते चलते यह हदीस बयान की जिसे मैंने ख़ुद आप (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से अपने कानों से सुना।'' (अहमद : 5/395; सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब मा ज़िक्रु अन बनी इस्राईल : 3452; सहीह मुस्लिम : 2756; अन अबी हुरैरा (रज़ि.), इब्ने हिब्बान : 651; शुअबुल ईमान : 7160)

एक और रिवायत में है कि उसने कहा था कि मेरी राख को हवा के रुख़ उड़ा देना। कुछ तो हवा में कुछ दरिया में बहा देना। समुन्द्र ने बहुक्मे इलाही जो राख उसमें थी उसको जमा कर दिया और उसी तरह हवा ने भी। फिर अल्लाह तआला के फ़र्मान से वह खड़ा कर दिया गया....। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब 54; हदीस रक़म : 3479; सहीह मुस्लिम : 2757; अन अबी सईद ख़ुदरी (रज़ि.)

क़ुदरते इलाही के मुशाहिदा की दलील : फिर अपनी क़ुदरत के मुशाहिदा के लिए और इस बात की दलील क़ायम करने के लिए कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है, मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है, हैबत को वह मुंक़लिब कर सकता है, फ़र्माया कि तुम ग़ौर करो कि पानी से मैंने दरख़्त उगाये जो सरसब्ज़ और शादाब हरे भरे फल वाले हुए। फिर वह सूख गए और उन लकड़ियों से मैंने आग निकाली, कहाँ वह तरी और ठण्डक, कहाँ यह ख़ुश्की और गर्मी? पस मुझे कोई चीज़ करनी भारी नहीं। तर को ख़ुश्क करना, ख़ुश्क को तर करना, ज़िन्दा को मुर्दा करना और मुर्दे को ज़िन्दा कर देना सब मेरे बस की बात है। यह भी कहा गया है कि मुराद इससे मर्ख़ और अफ़ार के दरख़्त हैं जो हिजाज़ में होते हैं। उनकी सब्ज़ टहनियों को आपस में रगड़ने से चक़्माक़ की तरह आग निकलती है। चुनाँचे अरब में एक मशहूर मसल है कि लि कुल्लि शजरिन नारुन वस्तम्जदल मर्ख़ु वल अफ़ारु। हुकमा का क़ौल है कि सिवाय अंगूर के दरख़्त के हर दरख़्त में आग है।

***

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلٰى ۚ وَهُوَ
الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ إِنَّمَآ أَمْرُهٗٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ
الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

तर्जुमा : ''जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है क्या वह इन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक क़ादिर है और वही तो पैदा करने वाला दाना बीना है। (81) वह जब कभी किसी चीज़ का इरादा करता है उसे इतना फ़र्मा देना काफ़ी है कि हो जा वह उसी वक़्त हो जाती है। (82) पस पाक है वह अल्लाह तआला जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और जिसकी तरफ़ सब लौटाये जाओगे।'' (83)

आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ मर्द व ज़न को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है (आ. 81 से 83) : अल्लाह तआला अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत का बयान कर रहा है कि उसने आसमानों को और उनकी सब चीज़ों को पैदा किया। ज़मीन को और उसके अंदर की सब चीज़ों को भी उसी ने बनाया। फिर इतनी बड़ी क़ुदरतों वाला, इंसानों जैसी छोटी मख़्लूक़ को पैदा करने से आजिज़ आ जाए यह तो अक़्ल के भी ख़िलाफ़ है। जैसे फ़र्माया (لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ) (40/मोमिन : 57) यानी आसमान व ज़मीन की पैदाइश इंसानी पैदाइश से बहुत बड़ी और अहम है। यहाँ भी फ़र्माया कि वह अल्लाह तआला जिसने आसमान व ज़मीन को पैदा किया वह क्या इंसानों जैसी कमज़ोर मख़्लूक़ को पैदा करने से आजिज़ आ जाएगा? और जब वह क़ादिर है तो यक़ीनन उन्हें मार डालने के बाद फिर वह उन्हें जिला देगा जिसने इब्तिदाअन पैदा किया है, उस पर दोबारा पैदा करना बहुत आसान है। जैसे और आयत में है (اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ) (46/अहक़ाफ़ : 33) क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह तआला ने ज़मीनो आसमान को बना दिया और उनकी पैदाइश से आजिज़ न आया न थका, तो क्या वह मुर्दों के ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक क़ादिर है बल्कि वह तो हर चीज़ पर क़ादिर है, वही पैदा करने वाला और बनाने वाला, ईजाद करने वाला और ख़ालिक़ है। साथ ही दाना बीना और रत्ती रत्ती से वाक़िफ़ है। वह तो जो कुछ करना चाहता है उसका सिर्फ़ हुक्म दे देना ही काफ़ी होता है।

मुस्नदे अहमद की हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है ''ऐ मेरे बन्दों! तुम सब गुनहगार हो मगर जिसे मैं माफ़ कर दूँ तुम मुझसे माफ़ी तलब करो, मेरा वादा है कि माफ़ कर दूँगा, तुम सब फ़क़ीर हो मगर जिसे मैं ग़नी कर दूँ, मैं जव्वाद हूँ, मैं माजिद हूँ, मैं वाजिद हूँ, मैं जो चाहता हूँ करता हूँ मेरा इन्आम भी एक कलाम है और मेरा अज़ाब भी कलाम है। मैं जिस चीज़ को करना चाहता हूँ, कह देता हूँ कि ''हो जा और वह हो जाती है। (अहमद : 5/177; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब 48; हदीस रक़म : 2495; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4257; मुस्नदे बज़्ज़ार : 4052) हर बुराई से उसी हय्युन व क़य्यूम की ज़ात पाक है। जो ज़मीनो आसमान का बादशाह है जिसके हाथ में आसमानों और ज़मीनों की चाबियाँ हैं। वह सबका ख़ालिक़ है, वही असल हाकिम है, उसी की तरफ़ क़ियामत के दिन सब लौटाए जाएँगे और वही आदिल व मुन्इम अल्लाह तआला उन्हें सज़ा व जज़ा देगा।'' और जगह फ़र्मान है पाक है वह अल्लाह तआला जिसके हाथ में हर चीज़ की मिल्कियत है। और आयत में है कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है। और फ़र्मान है (تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ) (67/मुल्क :1) पस मुल्क व मलकूत दोनों के एक ही मअनी हैं। जैसे रहमत व रहमूत और रहबत व रहबूत और जबर व जबरूत। कुछ बुज़ुर्गों ने कहा है कि मुल्क से मुराद जिस्मों का आलिम और मलकूत से मुराद रूहों का आलिम है। लेकिन सही बात पहली ही है और यही क़ौल जुम्हूर मुफ़स्सिरीन का है।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''एक रात मैं तहज्जुद की नमाज़ में अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) की इक़्तिदा में खड़ा हो गया। आप (ﷺ) ने सात लम्बी सूरतें (यानी पोने दस पारे) सात रकअतों में पढ़ीं। समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहकर रुकूअ से सर उठाकर आप (ﷺ) ये पढ़ते थे (अल्हम्दु

लिल्लाहि ज़िल मलकूति वल जबरूति वल किब्रियाइ वल अज़्मति) फिर आप (ﷺ) का रुकूअ क़ियाम के मुनासिब ही लम्बा था और सज्दा भी मिस्ल रुकूअ के था। मेरी तो यह हालत हो गई थी कि पैर टूटने लगे।'' (अहमद : 5/388; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने अम्मुल हुज़ैफ़ा मज्हूल है।) इन ही हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को आपने रात की नमाज़ पढ़ते हुए देखा। आपने यह दुआ पढ़कर क़िरअत शुरू की (अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ज़िल्मलकूति वल जबरूति वल किब्रियाइ वल अज़्मति) फिर पूरी सूरह बक़रह पढ़कर रुकूअ किया और रुकूअ में भी क़रीब क़रीब इतनी ही देर ठहरे रहे और सुब्हान रब्बियल अज़ीम पढ़ते रहे, फिर अपना सिर रुकूअ से उठाया और तक़रीबन इतनी ही देर खड़े रहे और लि रब्बियल हम्द पढ़ते रहे फिर सज्दा में गए वह भी तक़रीबन क़ियाम के बराबर था और सज्दा में हुज़ूर (ﷺ) सुब्हान रब्बियल आ'ला पढ़ते रहे, फिर सज्दे से सिर उठाया। आप (ﷺ) की आदते मुबारक थी कि दोनों सज्दों के बीच भी इतनी देर बैठे रहते थे जितनी देर सज्दों में लगाते थे और रब्बिग़्फ़िर ली रब्बिग़्फ़िर ली पढ़ते रहे। चार रकअतें आप (ﷺ) ने अदा कीं।''

सूरह बक़रह, सूरह आले इमरान, सूरह निसाअ, सूरह माइदा की तिलावत की। हज़रत शुअबा (रह.) को शक है कि सूरह माइदा कहा या सूरह अन्आम? नसाई वग़ैरह में है (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलुर्रजुल फ़ी रुकूइही व सुजूदिही : 874; वहुव सहीहुन; नसाई : 1070; मुख़्तसरन शमाइले तिर्मिज़ी : 270) कि हज़रत औफ़ बिन मालिक अश्जई (रज़ि.) से रिवायत है कि ''एक रात मैंने हुज़ूर (ﷺ) के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने सूरह बक़रह की तिलावत की। हर उस आयत पर जिसमें रहमत का ज़िक्र होता आप (ﷺ) ठहरते और अल्लाह तआला से रहमत तलब करते और हर उस आयत पर जिसमें अज़ाब का ज़िक्र होता आप (ﷺ) ठहरते और अल्लाह से पनाह तलब करते। फिर आप (ﷺ) ने रुकूअ किया वह भी क़ियाम से कुछ कम न था, और रुकूअ में यह फ़र्माते थे (सुब्हान ज़िल जबरूति वल मलकूति वल किब्रियाइ वल अज़्मति) फिर आप (ﷺ) ने सज्दा किया, वह भी क़ियाम के क़रीब क़रीब था और सज्दा में भी यही पढ़ते रहे, फिर दूसरी रकअत में सूरह आले इमरान पढ़ी, फिर इसी तरह एक एक सूरह एक एक रकअत में पढ़ते रहे। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलुर्रजुल फ़ी रुकूइही व सुजूदिही : 873; वहुव सहीहुन)

अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से सूरह यासीन की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***